॥ अथ टीकावार्त्तिकसंवलितं समवायाख्यं चतुर्थाङ्गसूत्रं प्रारभ्यते ॥

बनारस जैनप्रभाकर छापाखाने मे

॥ विज्ञापनम् ॥

सकल समान धर्मी श्रावक महाशयों से विनय पूर्वक निवेदन करता हूं कि दशविध दृष्टांत दुर्लभ मनुष्य शरीर पाके ज्ञान वृद्धि के हेतु यत्न करना बहुत आवश्यक है, क्योंकि जिस्सें जुआरी मद्यप चोर और व्यभिचारी इत्यादि दुष्कीर्त्ति और परभव में अंध पंगु कुष्ठी काक कृमि और कीट इत्यादि नरक पीडा देनेवाले अकर्तव्य कर्म, धर्मी दयालु दाता सत्यवक्ता सुशील और सज्जन इत्यादि सुकीर्त्ति और परभव में धनसंपत्ति सुख सुन्दर शरीर आरोग्य पुत्र कलत्र सुख इत्यादि स्वर्गसुख मोक्षसुख देने वाले कर्त्तव्य कर्म जाने जाते हैं।

ज्ञानी से ज्ञान मिलता है, यद्यपि ज्ञान और ज्ञानी दोनों अनादि अनंत है तथापि एक पुरुष की अपेक्षा से परस्पर कार्य कारण सम्बन्ध सिद्ध है. क्यों कि ज्ञान विना ज्ञानी और ज्ञानी विना ज्ञान होना असंभव है। ज्ञान होने में श्रुत व्याकरण काव्य कोश ज्योतिष न्याय और अन्य अन्य दर्शन इनका सद्गुरु अध्ययन

अध्यापन श्रवण और मनन इत्यादि सामग्री अपेक्षित होती है. ऐसी आख्यायिका प्रसिद्ध है कि प्राचीन समय में मनुष्यों की धारणशक्ति ऐसी विलक्षण थी कि जिससे शृंखलाबद्ध अनेक ग्रंथ उनको कंठाग्र रहते थे । अन्य मतमें उनके वंशीय लोग अब भी प्रसिद्ध हैं जैसे चौबे दुबे त्रिपाठी यजुर्वेदी सामवेदी और अपने मतमें पाठक, वाचक, वाचनाचार्य औ उपाध्याय कहलाते हैं । प्रसिद्ध है कि उस समय में अठारह प्रकार की लिपि प्रचलित थी परन्तु ग्रंथकंठस्थ रहने के कारण पुस्तक लिखने का परिश्रम व्यर्थ समझते थे । और भी जो प्रथम गणधर तीर्थंकर महाराज के मुख से (उप्पन्ने इवा विगमे इवा धुवे इवा) त्रिपदी सुन के १२ अंग की रचना कर देते थे और स्मरण रखते थे इसमें केवल श्रुतज्ञान बलके सिवाय और कोई कारण नही समझा जासकता । अधुनातन मनुष्यों को जो अहर्निश अभ्यस्त भी ग्रंथ और उनका तात्पर्य नही याद रहता है ज्ञानावरणीय के सिवाय कौन कारण कहेंगे । ज्ञानावरणीयकर्म का उदय भी कुछ एकही समय नही हुआ किन्तु क्रमसें जों जों देश क्षेत्र काल और भाव विपरीत आते गये तों तों ज्ञानकी भी न्यूनता होती चली, होते होते श्री भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण से ९८० वर्ष (ईसवी सन् ४५४ । विक्रम संवत ५१०) बीत जाने पर देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमणने सोचा कि पुस्तक विनालिखे यह स्मरणशक्ति

जाती रहैगी इसलिये वल्लभी पुरमें साधु समुदायके कंठस्थ जो सूत्रादि ग्रन्थ थे पुस्तकों में लिखे, परन्तु उस समय कागद और स्याही बनानेकी रीति न होनेके कारण ताडपत्रके ऊपर लोह लेखनी से खुदवाके पुस्तकालय स्थापन किए, (यह बात कुछ मेरेही लिखने पर नहीं हर कोई स्वमती परमती जानते हैं और इतिहास प्रसिद्ध है, अबतक भी ताडपत्र के ऊपर लिखे ग्रन्थ देखने में आते हैं) पीछे जब कागद स्याही बनानेकी कला प्रसिद्ध हुई तब ताडपत्र से कागद पर लिखाके पुस्तकालय किए ताडपत्र के ऊपर लिखने से कागद के ऊपर लिखने में कम मेहनत है शीघ्रही लोगोंने अंगीकार कर लिया, कागद पर लिखने में एक ग्रंथ चिरकाल में लिखके तयार होगा जब कि बहुत ग्रंथ लिखाना होय तो बहुत से लेखक चाहियें द्रव्य व्यय भी अधिक होगा तिस्सें नी यदि कोई तरह का विघ्न आय पड़े कार्य पूर्ण नहीं. क्योंकि एकतो आयांसि बहुविघ्नानि, दूसरे मनुष्यायु अल्प, जब तक कार्य समाप्त नहीं चिंता लगी रहती है और पुण्योपार्जनभी तत्कर्म समाप्ति में है. ग्रंथ संग्रह किये विना अध्ययन अध्यापन श्रवण मननादि जिनसे ज्ञान वृद्धि होती है सर्वथा नष्ट हो जांयगे पहलेही द्वादश १२ वर्षके तीन दुर्भिक्ष होने से कितने ही ग्रंथ लुप्त होगये, और पीछे से मुसलमानोंने नष्ट किये. जो बचे हैं लिखने लिखाने की अशक्तता से वर्त्तमान काल में पैंतालीस आगम एक

जगह नही मिलता है, और अभ्यास करना तो एक कहानी सा होगया (वाहरे काल महिमा,) इस हेतु वर्त्तमान कालाश्रित जितने ज्ञान वृद्धि के उपाय हैं देखा तो सर्वोत्कृष्ट मुद्रायन्त्र है इस कला से मेरा मनोरथ जो के ५०० ठिकाने ४५ आगम का भंडार करने की इच्छा है शीघ्रही सिद्ध होगी, लिखने लिखाने के परिश्रम से बचेंगे प्रायः लिखी पुस्तकों से छपी हुई पुस्तकें शुद्ध होगी यदि कोई गुणी अधिकारी होगा तो, यह कला हमको कृतार्थ करने को ही प्रचलित हुई है, कोई उपाय ज्ञानवृद्धि के लिए सहज और सुंदर पृथ्वी पर इसके सेवाय नही है ग्रंथ छपवाना सुरूकिया । यह कला युरुप देशीय अन्य धर्मियों से प्राप्त हुई है, अग्राह्य है, ग्रंथ छपवाने में आशातना होती है, इत्यादि असूया करना अनुचित है, क्योंकि वस्तु का उत्पत्तिस्थान और उत्पादक चाहै कोई हो सर्वोपकारिता, अल्पकालक्षेप, ज्ञानवृद्धि, पुस्तकशुध्धतादिक, महाकार्य के लिये अवश्य ग्रहण करनी चाहिये इस के ग्रहण करने में तथा पुस्तक छपवाने में वडा उपकार पुण्यबंधन है दोष कुछ भी नही है, पक्षपात छोड के ग्रहण करें। यदि वस्तुके उत्पत्तिस्थान की ओर देखियेगा जातक तथा पारसी जो यावनी विद्या है आप क्यों पढते हैं ? जो चीज उन लोगोंकी पैदा की है बहुतसी आपके परिभोग में आती है, कस्तूरी गोलोचनादि कहां पैदा होता है और किस काममें आप खरच

करते है ? केवल वस्तु में जो गुण हैं ग्रहण करना और दोषकों छोडदेना उचित है । इसलिए पुस्तक सुलभता, ज्ञानवृद्धि की अति उत्कृष्ट अत्यंत सहज सुगम रीति को अस्वीकार करके ज्ञानहानि नही करनी चाहिये, और मध्यस्थ बुद्धिसे विचारिये तो पूर्वाचार्योंने बडे परिश्रम से परोपकारार्थ जो ग्रन्थ बनाये हैं किसी के देखने में न आवें ऐसा गुप्त रखना कि कुछ दिन में कीडे खाजांय और ग्रन्थ का नाममात्रही शेष रह जाय उनका परिश्रम व्यर्थ होजावे इसके सवाय कोई अविनय और आशातना 'कर्मबंधका हेतु, नही है, वही ग्रन्थ छपवाके प्रसिद्ध करना हरएक विद्वानोंको देना तद्द्वारा वह लोक ज्ञान पावें इससे अधिक कोई विनय और श्रेष्ठकार्य नही है, यही सर्व कारण सोच मैं इस शुभ कार्यमें प्रवृत्त हुआ हूं आप लोगभी यथा शक्ति प्रवृत्त होंय कि जिस्से पुन जैनमत युवावस्था को प्राप्त होय इति शम् ॥

राय धनपतिसिंह बहादुर

मकसुदाबाद अजीमगंज

भूमिका ।

समवाय नामक चउथे अङ्ग का अनयोग स्याननाम तृतीय अङ्गानुयोग के अनन्तरही क्रमसें प्राप्तहै ,

और अनुयोग की प्रवृत्ति, फल योग मङ्गल समुदायार्थ द्वारभेद निरुक्तिक्रम और प्रयोजन आदिक द्वारों के निरूपण से होती है सो सब इहांभी स्थानाङ्ग के समान है ॥

समवाय चतुर्थ अङ्गानुयोग, राग तथा द्वेष आदि विषम भाव शत्रुओं की सेना के समूल उन्मूलन करने में, तथा त्रिभुवन के समस्त पदार्थों को हस्तामलक समान देखना और जानना तत्पूर्वक विसंवाद रहित वचन होने से त्रिभुवनरूप भवन के आंगन में सुधासमान निर्मल जिनके यश की राशि फैल रही है ऐसे जिनेन्द्र परम कारुणिक श्री श्रमण भगवन्त महावीर वर्द्धमान स्वामी ने जैसा कहा उन के पांचवें गणधर आर्य सुधर्मास्वामीने श्रमणसंघ और अपनी साधुसंतति के लिये सूत्ररूप से संकलित किया, समवाय इस पदका समुदायार्थ यह है कि–सम्यक् प्रकार अधिकता करके जीव अजीव आदि अनेक पदार्थों का ज्ञान है जिसमें, अथवा समवाय सम्यक् ज्ञान इसग्रंथ मे कहाहै, समवाय शब्दसे आत्मा आदि कितने ही पदार्थ एक दो तीन चार इत्यादि एकोत्तर अर्थात् एक के बाद दो और दो के बाद तीन इस क्रमसे सौ पर्यंत और अनेकोत्तर अर्थात् अनेक की वृद्धि कोटा कोटि पर्यंत संख्या विशेषित इस ग्रंथ में कहे हैं, और द्वादशांग गणिपिटक के समाचार तथा आत्मादि पदार्थों को एकेंद्रियादि पर्याप्त अपर्याप्त नारक

तिर्यंच मनुष्य देव भेदमें और इनके आहार लेश्या आवास नुपपात च्यवन अवगाहना उपधि वेदना उपयोग योग इंद्रिय कषायादि, मेरु आदि पर्वतों का विष्कंभादि, कुलकर तीर्थंकर गणधर चक्रधर बलदेव वासुदेव इत्यादि अनेक पदार्थ विशेषतया इस ग्रंथ में कहने से समवाय ऐसा नाम हुआ. वही समवाय क्षायोपशमिक भावरूप प्रवचन पुरुष के अंगकी तरह अंग है इसलिए समवायांग नाम हुआ. इस ग्रंथ में भाव समवायांग कानी अधिकार है, यह समवायांग एक अध्ययन रूप एक श्रुतस्कंध एक उद्देशक और एक समुद्देश है. इस समवायांग के पदार्थोंका तात्पर्य शीघ्र जानने के लिये उपक्रम १ निक्षेप २ अनुगम ३ और नय ४ अनुयोग अर्थात् सूत्रका अर्थसे संबंध अथवा अनुकूल व्यापार अर्थात् सूत्रार्थ प्ररूपण रूप क्रियाविशेष कहे हैं, यही चारों जैसें नगर मे सुखसें प्रवेश करने मे चार द्वार होते हैं वैसे इस प्रवचनमें प्रवेश करने के चार अनुयोग रूप द्वार (प्रवेशमुख) हैं. इन अनुयोगों से जीवाजीवादि पदार्थ ज्ञान होने से तत्त्वज्ञानरूप परम पुरुषार्थ सिद्ध होता है इसलिये इसके पढने पढाने में अवश्य यत्न करना चाहिये. परंतु पढने का अधिकारी वही होगा जोकि मोक्ष मार्ग का अभिलाषी गुरु का आज्ञाकारी और दीक्षा लिये आठ वर्ष जिसको व्यतीत हुआ होगा समवायाङ्ग सूत्र देनेका अवसर भी वहीहै. अन्यथा देनेमें तीर्थंकराज्ञा भङ्गादि दोषापत्ती होतीहै; इति.शम्॥

| ८ ||

नकल चिठी १

श्रीमज्जिनवरप्रसादलब्धसद्बुद्धिप्रकाशितधर्मरत्नेषु श्री ५ रायधनपतिसिंहबहादुरेषु सविनयमावेदनम् ।

आगे, मैंने सुनाहै आप की ऐसी इच्छाहै कि पैंतालिसों जैनागम की पुस्तकें मूल टीका और भाषाटीका सहित पांच २ सौ कापी छपैं और साधु श्रावकों के पठन पाठन के लिये पांच सौ स्थानमें पुस्तकालय स्थापित होंं सो यह अति आनंदकी बातहै, परन्तु जिन महाशयों को द्रव्य देके पुस्तक लेने की इच्छा हो उन लोगों के निमित्त भी यदि आप की आज्ञा हो तो बचने के वास्ते पांचसौ कापी जैन बुक सुसाइटी की ओर से भी छपवा ली जावें यह पुस्तकें में अजीमगज से प्रकाश करूंगा अग्रे शुभम्, संवत् । १८३३ । मि० । चै० । शु० । ११

अजीमगज — द० जैन बुक सुसाइटी

शहर मुरसीदाबाद — कार्यसम्पादक

सुबुद्धिसेठ

नकल चिठी २

श्रीविविधविद्याविचारतत्परेषु जैन बुक सुसाइटीकार्यसम्पादक महाशयेषु प्रतिनिवेदनम् ।

जो कि पत्र आपका द्रव्य देके खरीदनेवाले लोगों के लिये सुसाइटी की ओर से पैंतालिसों जैनागम की पांचसौ पुस्तकें छपवा लेने की आज्ञा के विषय में आया सो मैं स्वीकार करता हूं कि आप जैन बुक सुसाइटी की तरफ से आगम की प्रत्येक पांच २ सौ पुस्तकें बचने के वास्ते छपवा लेवें, परन्तु पांचसौ से अधिक छपनेकी आज्ञा में नहीं देता, यदि और कोई छपवाना चाहै तो उचित है कि पहले मुज से आज्ञा लेलेवे क्योंकि इन ग्रन्थों पर रजस्टरी हुईहै, अग्रे शुभम् ।

संवत् । १८३३ । मि० । चै० । शु० । १३

अजीमगंज

शहर मुरसीदाबाद

द० रायधनपतिसिंह बहादुर

॥ विज्ञापनम् ॥



श्रीमज्जिनवरपदकमलभ्रमधुकरायमाण याचककल्पद्रुमायमाण वङ्गदेशभूषण कृतदम्भुतोषणा जीमगञ्जवास्तव्य गुणगणसंस्तव्य ज्ञातसार मानसारी सवाल दीनहीनपाल धृतव्यापारधुर रायबहादुर क्षितिपति धनपति सिंहस्य धर्मोपदेशेन शुभाशयेन ज्ञानवृद्धये मोहनिवृत्तये ध्यातजिनपतीनां सकलयतीनां श्रेयोग्राहकाणां श्रावकाणां चोपकाराय सकलविद्याकरे कल्याणकपुरे वाराणसीनगरे रुचिराचरतन्त्रे जैनप्रभाकरयन्त्रे कृतसम्यग्व्याख्यं समवायाख्यं जीवाजीवपरिच्छेदबोधकं हृदयमलशोधकं प्रवचनपुरुषस्याङ्गमिव तुरीयमङ्गं तपोधनिना मुनिना सदाऽतन्द्रेण नानकचन्द्रेण सुन्दरं मुद्रितमभूत् ॥

समवायाख्यंसूत्रं तुरीयमङ्गंमयातिसंशोध्य ॥
मुद्रितमेतज्जनितं पुण्यंभविकान्सदापातु ॥ १ ॥

॥ टीका ॥

॥ श्रीजिनायनमः ॥ श्रीवर्द्धमानमानम्य समवायांगवृत्तिका । विधीयतेन्यशास्त्राणां प्रायःसमुपजीवनात् ॥ १ ॥ दुःसंप्रदायादसदूहनाद्वा भणिष्यतेयद्वितथं मयेह । तद्धीधनैर्मामनुकंपयद्भिः शोध्यंमतार्थक्षतिरस्तुमैव ॥ २ ॥ इहस्थानाख्यतृतीयांगानुयोगानंतरं क्रमप्राप्तएवसमवायाभिधानचतुर्थांगानुयोगोभवतीति- सोऽधुनासमारभ्यते तत्रचफलादिद्वारचिंतास्थानांगानुयोगवत्क्रमादवसेया नवरं समुदायार्थोयमस्य समिति सम्यक् अवेत्याधिक्येन अयनमयः परिच्छेदो- जीवाजीवादिविविधपदार्थसार्थस्य यस्मिन्नसौसमवायः समवयंतिवा समवतरंति सं ंति नानाविधाआत्मादयोभावाअभिधेयतयायस्मिन्नसौ समवायइति सचप्रवचनपुरुषस्यांगमिवांगमितिसमवायांगं तत्रकिलश्रीश्रमणमहावीर वर्द्धमानस्वामिनःसंबंधी पंचमोगणधरआर्यसुधर्मस्वामीस्वशिष्यंजंबूनामानमभिसम वायांगार्थमजिज्ञासुः भगवतिधर्माचार्येबहुमानमाविर्भावयन् स्वकीयवचनेनच समस्तवस्तुविस्तारस्वभावभासिकेवलालोककलितमहावीरवचननिश्रिततयावि गमेनप्रमाणमिदमिति । शिष्यस्यमतिंचारोपयन्निदमादावेवसंबंधसूत्रमाह ॥ सुयंमेइत्यादि श्रुतमाकर्णितंमेमयाहेआयुष्मन्चिरंजीवितजंबूनामन् तेणंति यो सोनिर्मूलोन्मूलितरागद्वेषादिविषमभावरिपुसैन्यतया भुवनभावावभासनसहसवेदनपुरस्सराविसंवादिवचनतयाच त्रिभुवनभवनप्रांगणप्रसर्पत्सुधाधवलयशोरा शिस्तेनमहावीरेणभगवतासमग्रैश्वर्यादियुक्तेन एवमितिवक्ष्यमाणेन प्रकारेणाख्यातं अभिहितमात्मादिवस्तुतत्वमितिगम्यते, अथवा आउसंतेणंति भगवतेत्यस्य

॥ मूल ॥

॥र्दं॥ श्रीविघ्नराजायनमः ॥ सुयंमेआउसंतेणं भगवयाएवमक्खायं इहखलुसमणेणं भगवयामहावीरेणं

॥ भाषा ॥

॥ देवदेवंजिनंनत्वा पार्श्वचन्द्रादिसद्गुरून् । समवायांगसूत्रस्य वार्त्तिकंविदधाम्यहम् ॥ १ ॥ पांचमोगणधरसुधर्मास्वामीजंबूशिष्यप्रतेकहेछे सांभल्योमैंभगवंतनें समीप ॥ हेसंयमसुहमाउखानाधणीजंबू तेणे भगवंतज्ञानवंतरूपवंते एहवोजेश्रागलकहीस्यैंतेकह्यो एहवोजिनप्रवचननेविषेनिश्चे तेभगवंतकेहवाछे श्रमण

॥ टीका ॥

विशेषणमायुष्मतांचिरजीवितवताभगवतेति अथवापाठांतरेणमयेत्यस्यविशेषणमिदं आवसतामयागुरुकुलेआमृशतावासंस्पृशतावामयाविनयनिमित्तंकरतलाभ्यांगुरोः क्रमकमलयुगलमिति यद्वा आउसंतेणंति आयुष्माणेनप्रीतिप्रणवमनसेति। यदाख्यातंतदधुनोच्यते एगेआयाइत्यादि कस्यांचिद्वाचनायामपरमपिसंबंधसूत्रमुपलभ्यते यथा इहखलु समणेणं भगवयाइत्यादि तामेववाचनांग्रहत्तरत्वाद्व्याख्यास्यामः इदंचद्वितीयसूत्रं संग्रहरूपप्रथमसूत्रस्यैवप्रपंचरूपमवसेयमस्यचैवंगमनिका इहास्मिन्लोके निर्ग्रंथतीर्थेवा खलुवाक्यालंकारे अवधारणेवा यथाचइहैव नान्याश्यादिप्रवचनेषु श्राम्यतितपस्यतीति श्रमणस्तेनेदंचातिमजिनस्यसहसन्मतिसमन्त्रनामांतरमेवयदाह सहसंमईयामणेत्ति। भगवतेतिपूर्ववत् महांश्चासौ वीरश्चेतिमहावीरस्तेनेदंच महासात्विकतया प्राणप्रहाणप्रवणपरीषहोपसर्गनिपातेप्यप्रकंपत्वेनपीयूषपानप्रभुभिराविर्भावितमाहच अयलेभयभेरवाणंखंतिखमेपरीसहावयवग्गाणंपडिमाणंपारंदेवेहिंकएमहावीरेत्तिकथंभूतेनेत्याह आदौप्राथम्येनश्रुतधर्ममाचारग्रंथात्मकंकरोतितदर्थप्राणायकत्वेनप्रणयतीत्येवंशीलआदिकरस्तीर्थकरस्तेन तरंतितेनसंसारसागरमितितीर्थंप्रवचनंतद्व्यतिरेकादिहसंघस्तीर्थंतस्यकरणशीलत्वात्तीर्थकरस्तेन तीर्थकरत्वंचतस्यनान्योपदेशबुद्धत्वपूर्वकमित्यतआह स्वयमात्मनैवनान्योपदेशतः सम्यग्बुद्धोहेयोपादेयवस्तुतत्त्वंयेनइतिगानितिस्वयंसंबुद्धस्तेन स्वयंसंबुद्धत्वंचास्यप्राकृतस्येवसंभाव्यं पुरुषोत्तमत्वादस्येत्यतआह पुरुषाणांमध्येतेनतेन अतिशयेनरूपादिनोद्गतत्वा

॥ मूल ॥

आइगरेणं तित्थगरेणं सयंसंबुद्धेणं पुरिसुत्तमेणं पुरिससीहेणं पुरिसवरपुंडरीएणं पुरिसवरगंधहत्थिणा लोगत्त

॥ भाषा ॥

तपस्वीतेणे भगवंतऐश्वर्यादिकगुणेकरीसहिततेणेकर्मरूपवैरीने विदारेतेमहावीरकहीयेतेणे श्रुतधर्मनीआदिनाकरणहारतेणे तीर्थचतुर्विधसंघनाकरणहारतेणे परनाउपदेशविनापोतेजप्रतिबोधपाम्यातेणेकरी स्वामीसर्वपुरुषमांहिउत्तमतेणे पुरुषमांहिसिंहसरीखातेणेकल्यानजाइतेणे पुरुषमांहिप्रवरप्रधान-

॥ १ ॥

॥ टीका

दूर्द्धवर्त्तित्वादुत्तमः पुरुषोत्तमस्तेन अथपुरुषोत्तमत्वमेवसिंहाद्युपमानत्रयेणास्यसमर्थयन्नाह सिंहइवसिंहःपुरुषश्चासौसिंहश्चेतिपुरुषसिंहः लोकेनहिसिंहेशौर्यं मतिप्रकृष्टमभ्युपगतमतःशौर्येसउपमानंकृतः शौर्यंतुभगवतोबाल्येप्रत्यनीकदेवेनभाप्यमानस्याप्यभीतत्वात् कुलिशकठिनमुष्टिप्रहारप्रहतिप्रवर्द्धमानामरशरीर कुब्जताकरणाच्चेत्यतस्तेन तथा वरंचतत्पुण्डरीकञ्चवरपुंडरीकंधवलंसहस्रपत्रं पुरुषएववरपुंडरीकं धवलताचास्यभगवतःसर्वाऽशुभमलीमसरहितत्वात् सर्वैश्च शुभैरनुभावैःशुद्धत्वादित्यतस्तेन तथा वरश्चासौगंधहस्तोएववरगंधहस्तीपुरुषएववरगंधहस्तीयथागंधहस्तिनोगंधेनैवसर्वंगजाभज्यन्ते तथाभगवतस्तद्देशविहरणेन ईतिपरचक्रदुर्भिक्षजनडमरिकादीनिदुरतानिनश्यंतीतिशतयोजनमध्येऽतस्तेनपुरुषवरगंधहस्तिनानभगवान्पुरुषाणामेवोत्तमःकिंतुसकलजीवलोकस्यापीत्यत आहलोकस्यतिर्यग्नरनारकिनाकिलक्षणजीवलोकस्योत्तमश्चतुस्त्रिंशद्बुद्धातिशयाद्यसाधारणगणोपेततयासकलसुरासुरखचरनरनिकरनमस्यतयाचप्रधानोलोको त्तमस्तेनलोकोत्तमत्वमेवास्यपुरस्कुर्वन्नाहलोकस्यसंज्ञिभव्यलोकस्यनाथःप्रभुर्लोकनायस्तेननाथत्वश्चास्ययोगक्षेमकृत्त्वान्नाथइतिवचनादप्राप्तसम्यग्दर्शनादेर्योगकर णेनलब्धस्यतस्यैवपालनेनचेतिलोकनाथत्वञ्चतात्विकंतद्धितत्वेसतिसंभवतीत्याह लोकस्यैकेंद्रियादिप्राणिगणस्यहितआत्यंतिकतद्रक्षाप्रकर्षप्ररूपणेनानुकूलवृत्ति र्लोकहितस्तेन यद्वेतन्नाथत्वंहितत्वंवातद्यथार्थानांयथावस्थितसमस्तवस्तुस्तोमप्रदीपणेननान्यथेत्य ाहलोकस्यविशिष्टतिर्यग्जन्मजरामरणरूपस्यांतरतिमिरनि करनिराकरणेनप्रकृष्टपदार्थप्रकाशकारित्वात्प्रदीपइवप्रदीपोलोकप्रदोपस्तेनइदंचविशेषणं दृष्टलोकमाश्रित्योक्तमथदृश्यंलोकमाश्रित्याह लोकस्य लोक्यतेइति

पुंडरीककमलसमानजिमकमलपंकपांणीयेंनलीपैंतिमभगवंतकामभोगेंनलीपैंतणे पुरुषमांहिवरप्रधानगंधहस्तीसमानअन्यतीर्थीमदछ छेईतिमारीनासेभगवं तमेदेखीनेतेणे लोकसमस्तमांहिउत्तमतणे लोक ८४ लाखजीवायोनितेहनांनाथधणीतणे लोकभव्यलोकतेहनेहितनाकरणहारतणे लोक १४ राजप्रमाण ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

लोक इतिव्युत्पत्यालोकालोकरूपस्यसमस्तवस्तुस्तोमस्यभावस्याखंडमार्तण्डमण्डलमिव निखिलभावस्वभावावभासनसमर्थः केवलालोकपूर्वप्रवचनप्रभापटल
प्रवर्त्तनेनप्रद्योतं प्रकाशंकरोतीत्येवंशीलोलोकप्रद्योतकरस्तेन ननुलोकनाथत्वादिविशेषणयोगो हरिहरहिरण्यगर्भादिरपि तत्तीर्थिकमतेनसंभवतीतिको
स्यविशेषइत्याशङ्कायांतद्विशेषाभिधानायाह नभयंदयतेप्राणापहरणरसिकोपसर्गकारिण्यपिप्राणिनि दद्यातीत्यभयदयः अभयावा सर्वप्राणिभयपरिहार
वतीदयाघृणायस्यासावभयदयो हरिहरादिस्तुनैवमितितेनाभयदयेन नकेवलमसावपकारकारिणामप्यनर्थपरिहारमात्रं करोत्यपित्वर्थप्राप्तिं करोती
तिदर्शयन्नाह चक्षुरिवचक्षुः श्रुतज्ञानंशुभाशुभार्थविभागकारित्वा त्तद्दयते इतिचक्षुर्दयस्तेन यथाहिलोकेचक्षुर्दत्वावांछितस्थानमार्गदर्शयन्महोपकारी
भवत्येवमिहापीतिदर्शयन्नाह मार्गंसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रात्मकंपरमपदपथंदयत इतिमार्गदयस्तेन मार्गदर्शयन्महोपकारीभवत्येवमिहापीति यथाहिलोकेच
क्षुरुद्घाटनंमार्गदर्शनंचकृत्वा चौरादिविलुप्तान् निरुपद्रवंस्थानंप्रापयन् परमोपकारी भवत्येव मिहापीतिदर्शयन्नाह शरणंत्राणमज्ञानोपद्रवोपहतानांतद्र
क्षास्थानंतच्चपरमार्थतोनिर्वाणं तद्दयतइतिशरणदयस्तेन यथाहि लोकेचक्षुर्मार्गशरणदानादूर्द्ध्वस्थानजीवितव्यं ददातीत्येव मिहापीतिदर्शयन्नाह जीवनं

॥ मूल ॥

माणं लोगनाहाणं लोगहिएणं लोगपईवेणं लोगपज्जोअगरेणं अभयदएणं चक्खुदएणं मग्गदएणं सरणदएणं

॥ भाषा ॥

तिहांदीवासमानमिथ्यात्वअंधकारटाले लोकगणधरलोकनेहनेप्रद्योतनाप्रकाशनाकरणहार [illegible]सहित सर्वजीवनेअभयदाननादातारतेणे सम्यक्तिनरूपलो-
चनानादातारतेणे भूलाप्राणीनेमोक्षमार्गनादातारतेणे सर्वजीवनेशरणनादातारतेणे संयमरूपजीवितव्यनादातारतेणे बोधिबीजसम्यक्तनादातारतेणे धर्म

जीवोभावप्राणधारणमनरणधर्मत्वमित्यर्थस्तं दयतइति जीवदयोजीवेषुया दयायस्यसजीवदयोऽतस्तेन इदंचानंतरोक्तं विशेषणकदंबकं भगवतोधर्ममयत्वात् ॥ टीका ॥
संपन्नमिति धर्मात्मकतामस्यविशेषणपंचकेनाह धर्मंश्रुतचारित्रात्मकं दुर्गतिप्रपतज्जंतुधारणस्वभावंदयतेददातीतिधर्मदयस्तेन तद्दानंचास्यतद्देशनादेवेत्यतो
ग्राह धर्ममुक्तलक्षणं देशयति कथयतीतिधर्मदेशकस्तेन धर्मदेशकत्वंचास्य धर्मस्वामित्वेसति नपुनर्यथानटस्येतिदर्शयन्नाह धर्मस्यक्षायिकज्ञानदर्शनचारित्र
लक्षणस्यनायकः स्वामी यथावत्पालनाद्धर्मनायकस्तेन तथाधर्मस्यसारथिर्धर्मसारथिः यथारथस्यसारथी रथंरथिकं अश्वांश्चरक्षति एवंभगवांश्चारित्रधर्मांगानांसं
यमात्मप्रवचनाख्यानां रक्षणोपदेशाद्धर्मसारथिर्भवतीति तेनधर्मसारथिना तथात्रयःसमुद्राश्चतुर्थोहिमवान् एतेचत्वारः अंताः पृथिव्याःपर्यन्तास्तेषु स्वामि
तयाभवतीति चातुरंतः सचासौचक्रवर्त्तीच चातुरंतचक्रवर्त्ती वरश्चासौचातुरंतचक्रवर्त्तीचेति वरचातुरंतचक्रवर्त्ती राजातिशयः धर्मविषये वरचातुरंतचक्रव
र्त्ती धर्मवरचातुरंतचक्रवर्त्ती यथाहि पृथिव्यांशेषराजातिशायी वरचातुरंतचक्रवर्त्ती भवति तथाभगवान्धर्मविषये शेषप्रणेतॄणांमध्ये सातिशयत्वात्तथो

जीवदएणं बोहिदएणं धम्मदएणं धम्मदेसएणं धम्मनायगेणं धम्मसा ॥ मूल ॥
रहिणा धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टिणा अप्पडिहयवरनाणदंसणधरेणं

नादातारतेणेकह्यो धर्मोपदेसनाकहणहारतेणे धर्मनानायकअधिकारीतेणे धर्मनासारथीभूलाप्राणीनेमार्गआणेतेणे च्यारिगतिनोअंतकारकधर्मतेणेकरीच
क्रवर्त्तिसरीखात्रिभुवननोराज्यपालेतेणे द्वीपनीपरेंसरणानात्राणआधारदेणहार चातुर्गतिकसंसारतेहनिवारिवानेविषेआधारभूत अप्रतिहतअस्खलित ॥ भाषा ॥

यतइति तेनधर्मश्वरचातुरंतचक्रवर्तिना एतच्च धर्मदायकत्वादिविशेषणपंचकत्वं प्रकृष्टज्ञानादियोगेसति. भवतीत्यत आह अप्रतिहतेकटकुड्यपर्वतादिभिर ॥ टीका
स्खलिते अविसंवादकेवा अतएवचायिकत्वाद्वा वरेप्रधाने ज्ञानदर्शने केवललक्षणे धारयतीति अप्रतिहतवरज्ञानदर्शनधरस्तेन एवंविध संवेदनसंपदुपेतो
पि छद्मवान् मिथ्योपदेशित्वान्नोपकारीतिनिश्छद्मता प्रतिपादनायास्याह अथवाकथमस्याप्रतिहतसंवेदनत्वं संपन्नमत्रोच्यते आवरणाभावादेतदेवाहव्याव
त्तं निवृत्तमपगतं छद्मशठत्वमावरणंवा यस्यसतथातेन व्यावृत्तछद्मना मायावरणयोश्चाभावो ऽस्यरागादिजयाज्जातमित्यतआह जयतिनिराकरोति रागद्वे
षादिरूपानरातीनितिजिनस्तेन रागादिजयश्चास्यरागादिस्वरूपतज्जयोपायज्ञानपूर्वकएवभवतीत्येतदस्याह जानातिछाद्मस्थिकज्ञानचतुष्टयेनेति ज्ञायक
स्तेन अनंतरमस्यस्वार्थसंपत्युपायउक्तोऽधुनास्वार्थसंपत्तिपूर्वकं परार्थसंपादकत्वंविशेषणषट्केनाह तीर्णइवतीर्णः संसारसागरमितिगम्यते तेनतथातारयति
परानप्युपदेशवर्त्तिन इतितारकस्तेन तथाबुद्धेनजीवादितत्वं तथाबोधकेन जीवादितत्वमेवाऽपरेषां तथामुक्तेनबाह्याभ्यंतरग्रंथिबंधनात् मोचकेन ततएवपरे

वियट्टछउमेणं जिणेणं जावएणं तिन्नेणं तारएणं बुद्धेणं बोहिएणं मुत्तेणं मोयगेणं सव्वन्नुणा सव्वदरिसिणा ॥ मूल ॥

वरप्रधानज्ञानदर्शनतेहनाधरणहारतेणे छद्मस्थपणाथीकपटपणाथकीनिवर्त्यावीतरागथयातेणे रागद्वेषनेजीपणहारतेणे अनेरानेरागद्वेषजीपावेतेणे पोतेसं
सारसमुद्रतरातेणे अनेरानेंसंसारसमुद्रतारेतेणे आपणपेंतत्वनाजाणतेणे अनेरानेप्रतिबोधेतेणे आपणपेंकर्मथकीमूंकाणातेणे अनेरानेकर्मथकीमूंकावेतेणे ॥ भाषा ॥
सर्वपदार्थना जाणतेणे सर्ववस्तुदेखणहारतेणे एहवामहावीरमोक्षजाइवावांछे छेतेमोक्षकेहवोछै उपद्रवरहितठामथकोचालेनहींतेणे जिहांरोगनहींजेह

॥ टीका ॥

चांतथामुक्तावेपि सर्वज्ञेनसर्वदर्शिना नतुमुक्तावस्थायांदर्शनांतरा इतिमतपुरूपेणैवभाविजडत्वेन तथाशिवंसर्वाबाधारहितत्वात् अचलंस्वाभाविकप्रायोगिक चलनहेत्वभावात् अरुजमविद्यमानरोगंशरीरमनसोरभावात् अनंतमनंतार्थविषयज्ञानस्वरूपत्वात् अक्षयमनाशं साद्यपर्यवसितस्थितिकत्वात् अक्षतंवापरि पूर्णत्वात् पूर्णिमाचंद्रमण्डलवत् अव्याबाधमपीडाकारित्वात् अपुनरावर्तक मविद्यमानपुनर्भवावतारं तद्बीजभूतकर्माभावात् सिद्धिगतिरितिनामधेयंयस्यतत् सिद्धिगतिनामधेयंतिष्ठतियस्मिन्कर्मक्षयात् विकाररहितत्वेन सदा वस्थितो भवति तत्स्थानंचक्षीणकर्मणांजीवस्य स्वरूपंलोकाग्रंवाजीवस्वरूपविशेषणानितुलोका धस्याधेयधर्माणामाधारेध्यारोपादवसेयानि तदेवंभूतंस्थानं संप्राप्तुकामेनयातुमनसा नतुतत्प्राप्तेन तत्प्राप्तस्याकरणत्वेन प्रज्ञापनाभावात् प्राप्तुकामेनेति यदुच्यते तदुपचारादन्यथाहि निरभिलाषाएवभगवंतःकेवलिनो भवंति मोक्षेभवेचसर्वत्र निस्पृहोमुनिसत्तम इतिवचनात् तदेवमगणितगुणगणसंपदुपेतेन भगवताइमेति इदंवक्ष्यमाणतया प्रत्यक्षमासन्नंद्वादशांगानियस्मिंस्तद्द्वादशांगं गणिनआचार्यस्य पिटकमिवपिटकं गणिपिटकं यथाहिवालंजुकवाणिजक

॥ मूल ॥

सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणराविति्तिसिद्धिगइनामधेयं ठाणंसंपाविउकामेणं इमे दुवालसंगे गणिपिडगे पन्नत्ते ॥ तंजहा ॥

॥ भाषा ॥

नोचंतनथी जेहनोक्षयनथी जिहांकिसीआबाधानथी जिहांथकीऊपराठोआविवोनथी सिद्धिगतिएहवो जेहनोनामधेयछै एहवेठामें मोक्षेंजाइवानोवांछा करेछेतेणेमहावीरेंएहवाद्वादशांगीसूत्रगणीकहियेआचार्यतेहनेपेटीसरिखाछे जिमव्यापारीयांनेपेटीरत्नादिकधननीआधारहोइ तिम आचार्यनेएहद्वादशां

॥ टीका ॥

स्यापिपिटकं सर्वस्वाधारभूतंभवतिएवमाचार्यस्य द्वादशांगं ज्ञानादिगुणरत्नसर्वस्वाधारकल्पं भवति इतिभावः प्रथमं तीर्थंकरनामकर्मोदय वर्तितयाप्रायः कृतार्थेनापिपरोपकारायप्रकाशितंतद्यथेत्युदाहरणोपदर्शनेआचारइत्यादि द्वादशपदानि वक्ष्यमाणानि निर्वचनानीतिकंठ्यानि तत्थणंति तत्रद्वादशांगेषु

॥ मूल ॥

आयारे १ सूयगडे २ ठाणे ३ समवाए ४ विवाहपन्नत्ती ५ नायाधम्मकहाउ ६ उवासगदसाउ ७ अंतगडदसाउ ८ अणुत्तरोववाइदसाउ ९ पण्हावागरणं १० विवागसुए ११ दिठिवाए १२

॥ भाषा ॥

गोसूत्रज्ञानादिकगुणरत्ननोआधारछे कह्योछे तेकहेछे आचारांगसूत्रप्रथम १ जेहमांहिसाधुनोआचारपामीये । बीजुंसूत्रकृतांग जेहमांहिस्वसमयपरसमयनी वक्तव्यतापामीये २ त्रीजूंस्थानांग तेमांहिएकथकीमाडीदसलगेंसंख्यानादसअध्ययनछे ३ । चोथोसमवायांगजिहांएकथकीमाडीकोडाकोडिनीसंख्या ४ पांचमोविवाहप्रज्ञप्तीजेहमांहिछत्रीससहस्रप्रश्नपांमीयेएतलेभगवतीसूत्र ५ छट्ठोज्ञाताधर्मकथांगजिहां १९ न्यायअनेअंठकोडिधर्मकथाएछट्ठो ६ सातमोउपासकदशांगउपासकश्रावकतेहनादशअध्ययनछे ७ आठमोअंतकृतदशांगजेणेयतीएसंसारनोअंतकीधोतेहनाआठवर्गजेमांहिछे नवमोअणुत्तरोपपातिकासूत्रजेहयतीअनुत्तरविमानेऊपनातेहनातीनवर्गजिहांपामीये ९ दशमोप्रश्नव्याकरणजेहमांहिअंगुष्टादिकप्रश्ननोअधिकारहुंतोहिवडांपांचआश्रवपांचसंवरद्वारइम १० अध्ययनछे १० इग्यारमोविपाकसूत्रजिहांसुखदुःखनोविपाकछेएतले १० सुखविपाकीया १० दुखविपाकीयाअध्ययनछे ११ बारमोदृष्टिवादते १४ पूर्वएक

मियलंकारे यतश्चतुर्थमंगं समवायइत्याख्यातं। तस्यायमर्थः आत्मादिरभिधेयोभवतीतिगम्यतेतदर्थेतिवाउनांतरद्वितीयसंबंधात्सूत्रस्यास्येति । इहचविदु षाम्पदार्थमभिदधता सक्रमेणवासा वभिधातव्यइति व्याख्येयस्तत्राचार्यःएकत्वादिसंख्याक्रमसंबद्धानर्थान् वक्तुकामआदावेकत्वविशिष्टानात्मनश्चसर्वपदार्थाभा अग्रत्वेनप्रधानत्वादात्मादीन्सर्वस्यवस्तुनः सप्रतिपक्षत्वेनसप्रतिपक्षानेव एगेआयाइत्यादिभिरष्टादशभिःसूत्रैराह स्थानांगेएकार्थानिप्रायस्तथापिकिंचिदुच्यते एकआत्माकथंविदितमितिगम्यते इदञ्चसर्वसूत्रेष्वनुगमनीयं तत्रप्रदेशार्थतयाअसंख्यातप्रदेशोपिजीवद्रव्यार्थतया एकः अथवाप्रतिक्षण पूर्वस्वभावक्षयाऽपरस्वरूपो त्पादयोगेनानंतभेदोपि कालत्रयानुगामिचैतन्यमात्रापेक्षयाएकएवआत्मा अथवा प्रतिसंतानं चैतन्यभेदेनाऽनंतत्वेप्यात्मना संग्रहनयाश्रितसामान्यरूपापेक्ष येकत्वमात्मनइति तथानआत्मा अनात्माघटादिपदार्थः सोपिप्रदेशार्थतया ऽसंख्येयानंतप्रदेशोपि तथाविधैकपरिणामरूपद्रव्यार्थापेक्षयाएकएवसंतानापेक्ष ॥ टीका ॥

तत्थणं जेसेचउत्थेअंगे समवाएत्तिआहिते तस्सणंअयमट्ठे पं० तंजहा एगेआया एगेअणाया ॥ मूल ॥

अंगएद्वादशांगीतेद्वादशांगीमांहिजेहतेह चौथोअंगएतलेप्रवचनरूपपुरुषनेअंगसरीखोअंग समवायांगसूत्र आह्यियेकह्योसमवायांगकहतांसम्यक्प्रकारेअधि- कपणेजीवाजीवादिपदार्थजेहनेविषे तेसमवायांगकहियेअर्थाधिकारसूत्रेकहेतेमाटेप्रधानसकलपदार्थनोभोक्तारआत्माछेतेमांटेप्रधानपणाथकोआत्माप्रथम अवतस्योचेतनावंतआत्माकहोयेयद्यपिसंसारमांहिजोवअनंताछेपरंपट्द्रव्यनोअपेक्षाएजोवद्रव्यएकजकहोयेएमआगलेसगलेपदेजाणिवो १ तेसमवायांगनोएअ र्थकहियेछे १ तेअनुक्रमेकहेछे एकआत्माजोवसामान्यप्रकारेएकपणेएमसर्वत्र एकअनात्माजीवरहितघटादिकपदार्थ एकदंडभूंडोव्यापारवोयोगअणिनोतिदंड ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

नापि तुल्यरूपापेक्षयातु अनुपयोगलक्षणैकस्वभावयुक्तत्वात्कथंचिद्भिन्नस्वरूपाणामपि धर्मास्तिकायादीनामनात्मनामेकत्वमवसेयमिति तथा एकोदंडोदुःप्र
युक्तमनोवाक्कायलक्षणै हिंसामात्रं एकत्वंवास्यसामान्यतयोद्देशादेवं सर्वत्रैकत्वमवसेयं तथा एकोऽदंडः प्रशस्तयोगत्रयमहिंसामात्रं वा तथाएकाक्रियाकायि
क्यादिका श्रास्तिक्यमात्रंवा तथा एकाअक्रिया योगनिरोधलक्षणा नास्तिकत्वंवा तथा एकोलोक स्त्रिविधोप्यसंख्येयप्रदेशोपिवा द्रव्यार्थतया तथा एकोऽलो
कोऽनंतप्रदेशोपिद्रव्यार्थतया अथचैते लोकालोकयोर्बहुत्वव्यवच्छेदेनपरैसूत्रैरभ्युपगम्यंतेच केश्चिदहवोलोका अतस्तद्विलक्षणाअलोका अपितावंतएवेति एवंसर्वत्र
गमनिकाकार्या। नवरंधर्मोधर्मास्तिकायः अधर्मोऽधर्मास्तिकायः पुण्यंशुभंकर्म पापमशुभंकर्म वंधोजीवस्यकर्मपुद्गलसंश्लेषः सचैकः सामान्यतः सर्वकर्मबंधव्य
वच्छेदावसरेया पुनर्बंधाभावादनेनोद्देशेन मोक्षाश्रवसंवरवेदनानिर्जराणामप्येकत्वमवसेयमिति इहचानात्मग्रहणेन सर्वेषामनुपयोगवतामेकत्वं प्राप्यपुन

॥ मूल ॥

एगेदंडेएगेअदंडे एगाकिरिया एगाअकिरिया एगेलोए एगेअलोए एगेधम्मे एगे
पुण्णे एगेपावे एगेबंधे एगेमोक्खे एगेआसवे एगेसंवरे एगावेयणा एगाणिज्जरा

॥ भाषा ॥

एकअदंडभलामनोप्रभृतियोगत्रणि एकक्रियाकरिवोतेक्रियाकायिक्यादि एकअक्रियायोगविरोधलक्षण एकलोकयद्यपित्रणिलोकछेपरंद्रव्यार्थपणेएक एकअ
लोकपंचास्तिकायरहित एकधर्मास्तिकायचलनस्वभाव एकअधर्मास्तिकायस्थिरस्वभाव एकपुण्यशुभकर्म्म एकपापअशुभकर्म्म एकबंधजीवनेअने कर्मपुद्गलनेजो
डिवो एकमोक्षसर्वकर्मबंधथकोमूंकावणो एकआश्रवकर्मबंधनोउपाय । एकसंवरकर्म्मबंधनाउपायनोनिरोधक एकवेदनाशुभाशुभकर्मनोउदयकालेभोग

॥ टीका ॥

लोकादितयाएकत्वप्ररूपण तत्सामान्यविशेषोपि नमवगंतव्यमिति एवंचात्मादीनां सकलशास्त्रप्रपंच्यानामर्थानां प्रत्येकमेकत्वमभिधायाधुनात्मनामात्मपरिणा
मरूपाणामर्थानांतरेवाह जंबूइत्यादिसूत्रसप्तकमाश्रयविशेषाणां तथा इमीसेरयणमित्यादिसूत्राष्टादशकमाश्रयिणांस्थित्यादिधर्माणां प्रतिपादनपरं सुबोधं
नवरं जंबुद्दिवेदीवे इहसूत्रेआयामविक्खंभेणंतिक्वचित्पाठोदृश्यते क्वचित्तुचक्कवालविक्खंभेणंति तत्र प्रथमःसंभवत्यपि तथाश्रवणात्सुगमश्च द्वितीयस्त्वेवंव्याख्ये
यश्चक्रवालविष्कंभेणवृत्तव्यासेन इदंचप्रमाणयोजनमवसेयं यदाह आयंगुलेणवत्थुं उस्सेहपमाणओमिणसुदेहं नगपुढविविमाणाइं मिणसुपमाणंगुलेणंतु ॥ १ ॥
तथा पालकंयानविमानं सौधर्मेंद्रसंबंध्यपि आभियोगिकपालकाभिधान देवकृतं वैक्रियं यानंगमनंतदर्थंविमानं यायतेऽनेनेतियानं तदेवविमानं यानविमा

॥ मूल ॥

जंबुद्दीवेदीवे एगंजोयणसयहस्सं आयामविक्खंभेणंपन्नत्ते अप्पइठाणे
नरएएगंजोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं पं० पालए जाणविमाणे

॥ भाषा ॥

विशे एकनिर्जरा आत्मानाप्रदेशथीकर्मपुद्गलनूंवेगलूंकरिवो एजंबूद्वीपसकलद्वीपमांहिमुख्यद्वीप एकयोजनशतसहस्रएतले। एकलाखयोजनप्रमाणांगुले।
लांबपणेअनेपिहुलपणेकह्योतीर्थंकरे । सातमीनरकपृथिवीये पांचनरकावासाछे तेमाहिविचलो अपइठाणनामनरकावासोएकयोजनशतसहस्रएतलेएक
लाखयोजन लांबपणेअनें पिहुलपणेकह्यो । पालकयांनविमानसौधर्म्मेंद्रसंबंधिअभियोगीदेवताएनीपजाविओगमननेअर्थंते एकलाखयोजनजाणवो लां
बपणेअनेपिहुलपणेकह्योछे पंचानुत्तरविमानमांहिविचलोसर्वार्थसिद्धनामेविमानछेतेमांहिएकाभवतारीजीवउपजेतेमाटे महाविमानकहियेंतेएकलाखयो

नं पारियानिकमितियदुच्यते भत्थोत्यादि भस्तिविद्यते ऐकेषांचिन्नैरयिकाणा मेकंपल्योपमं स्थिति रितिक्षत्वाप्रज्ञप्ताप्रवेदितामया मन्यैश्वजिनैः साचचतुर्थप्र ॥ टीका ॥

॥ ६ ॥ गेएजोयणसयसहस्संआयामविक्खंभेणं प० सव्वठसिद्धेमहाविमाणेएगंजोयणसयसहस्संआयामविक्खंभेणं प० अद्दानक्खत्तेएगतारे प० चित्तानक्खत्तेएगतारे प० सातिनक्खत्तेएगतारे प० इमीसेरयणप्पभाएपुढवीए अत्थेगइआणंनेरइआणं एगंपलिउवमंठिई प० इमीसेणंरयणप्पहाएपुढवीए नेरइआणं उक्कोसेणंएगंसागरोवमंठिई प० दोच्चाएणंपुढवीएनेरइयाणं जहन्नेणंएगंसागरोवमंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइआणं एगंपलिउवमंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं उक्कोसेणंएगंसाहियं सागरोवमंठिई प० ॥ ॥ मूल ॥

जनलांबपणेंअनेपिहुलपणेंकह्यो। आर्द्रानक्षत्रनोएकतारोकह्योछे । चित्रानक्षत्रनोएकतारोकह्योछे। स्वातिनक्षत्रनोएकतारोकह्यो । एहतेरत्नप्रभापहिलीनरकपृथिवीनेविषे केतलाएक नारकोनी एकपल्योपमस्थितिआउखोभगवंतेकह्योछे । एणीयेरत्नप्रभापहिलीनरकपृथवीने नारकीयांनो उत्कृष्टोए- कसागरोपमस्थितिआउखोकह्योछेभगवंते बोजोयेनरकपृथवीने नारकीयांनोजघन्यपणे एकसागरोपमस्थितिआउखोकह्यो अनंतज्ञानवंतेअसुरकुमारभवन पतीप्रथमनिकायना देवतानो केतलाएकनो एकपल्योपमस्थितिआउखोकह्योभगवंते असुरकुमारदेवनो उत्कृष्टोभाभेरोएक सागरोपमस्थितिआउखो ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

स्तट मध्यमावसर्यात एवमर्कसागरोपम वयादग्रप्रस्तटउत्कृष्टास्थातागत असुरस्त्वाज्ञयाणांतिचमरवलिवर्जितानां भोमेज्जाणंति भवनवासिनांभूमोपृथि व्यांरत्नप्रभाभिधानायां भवत्वात्तेषामिति तेषांचैकंपल्योपमं मध्यमास्थितिर्यतउत्कृष्टा देशोनेद्विपल्योपमे साआहच दाहिणदिवड्ढ पलियं दोदेसूणुत्तरिल्लाणं ति असंखेज्जेत्यादि असंख्येयानिवर्षाण्यायुर्येषांते तथा तेचतेसंज्ञिनश्चसमनस्कास्तेचते पंचेंद्रियतिर्यग्योनिकाश्चेत्यसंख्येयवर्षायुः संज्ञिपंचेंद्रियतिर्यग्योनिकास्तेषांकेषांचिद्येहैमवतैरण्यवतवर्षयो रत्यथा स्तेषा मेकंपल्योपमस्थिति रेवंमनुष्यसूत्रमपि नवरं गर्भगर्भाशयेव्युत्क्रांतिरुत्पत्तिर्येषांतेगर्भव्युत्क्रांतिका नसमूर्छन

॥ मूल ॥

असुरकुमारिंदवज्जियाणं भोमिज्जाणंदेवाणंअत्थेगइआणं एगंपलिउवमंठिई प० । असंखिज्जवासाउय सन्निपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं अत्थेगइआणं एगंपलिउवमंठिई प० । असंखिज्जवासाउयगब्भवक्कंति यमणुयाणं अत्थेगइयाणंएगंपलिउवमंठिई प० । वाणमंतराणंदेवाणं उक्कोसेणंएगंपलिउवमंठिई प० ।

॥ भाषा ॥

कह्यो असुरकुमारेंद्रचमरेन्द्रवलेन्द्रवर्जीने भवनपतीदेवतानो एकेकनोकेतलाएकनो एकपल्योपमस्थितिआउखोकह्यो । असंख्यातावर्षनाआउखानासंज्ञी गर्भजपंचेंद्रियतिर्यंचनोएतलेंहैमवंतऐरण्यवंतयुगलचे वनागर्भजतिर्यंचनोयुगलियागर्भजमनुष्यतिर्यंचनो आउषोउत्कृष्टोजहुवे अने जीवाभिगमनेविषे नपुंसकगर्भजमनुष्यनूंआउषंपूर्वकोडिनूंपणिकह्योछेतेमाटे अत्थेगइयाणंपाठयह्योकेतलाएकनूंएकपल्योपमस्थितिआउखोकह्यो। असंख्यातावर्षनाआउखानागर्भज

॥ टीका ॥

॥ ७ ॥

जाइत्यर्थः वाणमंतराणंदेवाणंति देवानामेव नतुदेवीनां तासामर्द्धपल्योपमस्यप्रतिपादितत्वात्‌जोइसियाणंदेवाणंति चन्द्रविमानदेवानां न सूर्यादिदेवानां मापिचन्द्रादिदेवीनां पलियंचमयसहस्सं चन्दाणठिआउजाणो इतिवचनात्‌ सोहम्मेकप्पेदेवाणंति इहदेवशब्देन देवादेव्योगृहीताःसौधर्मेहिपल्योपमाद्धीनत राष्थितिर्जघन्यतोपिनास्ति इयंचप्रथमप्रस्तटेऽवसेया सोहम्मेकप्पे अत्थेगइयाणं देवाणंएगंसागरोवममित्यत्र देवानामेवग्रहणं नतुदेवीनांउत्कृष्टतोपितत्रतासां पंचाशत्पल्योपमस्थितिकत्वात्‌ तथा एकंसागरोपममितिमध्यमस्थित्यपेचया उत्कर्षतस्तत्रसागरोपमद्वयसद्भावात्‌ प्रस्तटापेचयास्त्वेषां सप्तमेप्रस्तटेमध्यमावसे

॥ मूल ॥

जोइसियाणं देवाणंउक्कोसेणं एगंपलिउवमं वाससयसहस्समब्भहियं ठिई प०। सोहम्मेकप्पेदेवाणं जहन्नेणं एगंपलिउवमंठिई प०। सोहम्मेकप्पे देवाणंअत्थेगइयाणं एगंसागरोवमंठिई प०। ईसाणेकप्पेदेवाणं जह

॥ भाषा ॥

संज्ञीपंचेन्द्रियमाणसनंएतलेहिमवंतएरणवतक्षेत्रसंबंधीयुगलियांमाणसनोकेतलाएकनोपल्योपमस्थितिआउषूंकह्योभगवंतेवाणव्यंतरदेवनो उत्कृष्टोएकपल्यो पम जघन्य १० सहस्रवरसनोकह्योजोतिषीचंद्रमाविमानवासीदेवतानोउत्कृष्टोएकपल्योपमएकवर्षलाखेअधिकएवडोस्थितिकहीतीर्थंकरदेवे। सौधर्मेप्रथम देवलोकेदेवनो जघन्यएकपल्योपमस्थितिआउखोकह्यो सौधर्मदेवलोकेदेवतानोकेतला एकनो एकसागरोपमस्थितिआउखो देवीनोसागरोपमनकहिवोउत्कृ ष्टोपंचासपल्योपमकह्यो ईशानबीजेदेवलोके देवनोजघन्यभाभेरो एकपल्योपमएवडोस्थितअनंतग्यानीये कहो ईशानेदेवलोके देवनोकेतलाएकनो एकसाग

या। ईसाणेकप्पेदेवाणमित्यत्र देवग्रहणेनदेवादेव्यश्चगृह्यंते यतस्तत्रसातिरेकपल्योपमादन्याजघन्यतः स्थितिर्देवनास्ति ईसाणेकप्पेदेवाणं अत्थेगइयाणमित्यत्रदे वानामेवग्रहणंनदेवीनां तत्रतासामुत्कर्षतोपिपंचपंचाशत्पल्योपमस्थितिकत्वादिति तथा येदेवाः सागरं सागराभिधानमेवं सुसागरंसागरकांतं भवंमनुंमानु षोत्तरं लोकहितं भिन्नचकारोद्रष्टव्यः समसमुच्चयस्यद्योतनीयत्वादिमानं देवनिवासविशेषमासाद्येतिरिति एतानिचविमानानि समप्रस्तटेवसेयानिस्थित्यनु सारेणच देवानामुच्छ्वासादयो भवंति तान्दर्शयन्नाह तेणमित्यादि येषांदेवानामेकंसागरोपमंस्थिति स्तेदेवा णमित्यलंकारे अर्द्धमासस्यांते इतिशेषः आनंति प्राणंति एतदेवक्रमेणव्याख्यानयन्नाह उच्छ्वसंतिनिःश्वसंति वाशब्दोविकल्पार्थः तथा तेषामेववर्षसहस्रस्यान्ते इतिशेषआहारार्थः आहारप्रयोजनमाहारपुद्

वेणंसाइरेगंएगंपलिउवमंठिई प०। ईसाणेकप्पेदेवाणं अत्थेगइयाणं एगंसागरोवमंठिई प०। जेदेवासागरं सुसागरं सागरकंतं भवं मणुं माणुसोत्तरं लोगहियं विमाणंदेवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणंउक्कोसेणंएगंसाग

रोपमनोस्थितकही। ईशान देवलोके सातमेप्रतरेजेदेवताना सागर १ सुसागर २ सागरकांत ३ भव ४ मणुष ५ मानुषोत्तर ६ लोगहित ७ एणेविमांणे देवतपणेउपनाछे। ते देवतानी उत्कृष्टी एकसागरोपमनी स्थितिकही । तेदेवताएकअर्द्धमासेएतलेएकपखवाडे आणमंतिथोडोस्वासलै पाणमंतिघणो लेभाषमंतिप्राणमंतिएहबंतहत्तिस्वासउसरसंतिनोससंतिएहवाह्यवृत्तिकेडकआचार्यएमकहेछे जेदेवतानेजेतलासागरोपमआउखोतेहनेतेतलेपखवाडेसासो

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

लानांग्रहणमाभोगतोभवति ग्रनाभोगतस्तुप्रतिसमयमेव विग्रहादन्यत्रभवतीति गाथेइ जस्सजइसागरोवमा ठिइतस्सतत्तिएहिंपक्खेहिं ऊसासो देवाणंवा ससहस्सेहिंग्राहारोत्ति संतिविद्यन्तेएगइयाएकेकेचनभवसिद्धियत्ति भवा भाविनोसिद्धिर्मुक्तिर्येषांते भवसिद्धिका भव्याः भवग्गहणेणंति भवस्यमनुष्यजन्मनो ग्रहणमुपादानं भवग्रहणंतेनसेत्स्यंति ग्रष्टविधमहर्द्धिप्राप्त्याभोत्स्यंते केवलज्ञानेनतत्वं मोचंतेकर्मराशेःपरिनिर्वास्यंति कर्मकृतविकाररहाच्छीतीभविष्यन्ति किमुक्तंभवतिसर्वदुःखानामंतङ्करिष्यन्तीति ॥ १ ॥ सामान्यतयाश्रयणादेकतया वस्तून्यभिधायाधुना विशेषमप्याश्रयणाद्दित्वेनाह दोदंडेत्यादि सुगममाहि

॥ मूल ॥

रोवमंठिई प० । तेणंदेवाएगस्सग्रद्धमासस्स ग्राणमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणंएगस्सवाससहस्स ग्राहारठेसमुपज्जइ संतेगइयाभवसिद्धियाजेजीवा तेएगेणंभवग्गहणेणं सिज्झिस्सं ति वुज्झिस्संति मुच्चिसंति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ १ ॥ दोदंडापन्नत्ता तं०

॥ भाषा ॥

सासकहे तेतले सहस्रेवर्षे ग्राहारनोइच्छाजपजे। ऊंचोस्वास ते उत्स्वास नीचोमेल्हिवोतेनीसास तेहदेवने ऐकसहस्रवर्षे ग्राहारनोग्रर्थजपजे । संतेकह तांछेएकेकभवसिद्धियाकहतांभाविनोहोणारोछे ढंकडोसिद्धिजेहनेतेभवसिद्धिकाभव्यजीव संसारमांहितेहलघुकर्मोएकभवनेग्रांतरेसीझस्ये ज्ञातार्थथास्ये बूझस्ये केवलज्ञानेकरीसकलसंसारनांपरमार्थजाणिस्ये कर्मकोधोविकारतेहनारहितपणाथकोठाढाहोस्ये । सकलशारीरीदुःखनोमानसीदुःखनोग्रंतकरिस्ये- ऐतलेरकठाणोकहियो ॥ १ ॥ हिवेबीजोग्रविकारकहेछेबेदंडकह्या भगवंतेजेणेकरीपरनाप्राणदंडीयेहणीयेतेदंडकह्या तेकहेछे ग्रर्थदंड तेग्रात्मानेग्रर्थे पर

स्थानकप्रमाणेनैवरमिह दंडराशि बंधनार्थसूत्राणांचयंनक्षत्रार्थंचतुष्टयं स्थित्यर्थंचत्रयोदमकमुक्त्वामाद्यार्थंत्रयमिति तत्रार्थेनस्वपरोपकारलक्षणेन प्रयोजनेनदंडो हिंसाअर्थदंडएतद्विपरीतोऽनर्थदंडइति तथा रत्नप्रभायांद्विपल्योपमास्थितिश्चतुर्थप्रस्तटेमध्यमाद्वितीयायांद्विसागरोपमेस्थिति:षष्टप्रस्तटेमध्यमाज्ञेया तथाअसु

अट्ठादंडेचेव अणट्ठादंडेचेव दुवेरासी प० । तंजहा ॥ जीवरासीचेव अजीवरासीचेव दुवि हेबंधणे प० । तंजहा ॥ रागबंधणेचेव दोसबंधणेचेव पुव्वाफग्गुणीनक्खत्तेदुतारे प० । उत्तराफग्गुणीनक्खत्तेदुतारे प० पुव्वाभद्दवयानक्खत्तेदुतारे प० उत्तराभद्दवयानक्खत्तेदुतारे प० इमीसेणंरयणप्पहाएपुढवीए अत्थेगइआणंनेरइयाणं दोपलिउवमंठिईप० । दुच्चाएपुढवीए अत्थेगइआणं नेरइआणं दोसागरोवमाइंठिई प० । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइ

नेअर्थेआगलानापाणहणीये तेऽर्थदंड निरर्थकपणेपरप्राणनेहणीये तेअनर्थदंडनिश्चे बेराशिसमूहकह्यो तेकिसो कहेछे । जीवराशिजोवनासमूह अजीवराशि अजोवनासमूह बेप्रकारे बंधनकह्या तेकहेछे रागबंधण रागेकरीकर्मनोबंधपडे एमज द्वेषबंधणपडे पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रनाबेताराकह्या भगवंते उत्तराफाल्गुनीनक्षत्रना बेताराकह्या पूर्वाभाद्रपदनक्षत्रतणा बिताराकह्या । उत्तराभाद्रपदनक्षत्रनाबेताराकह्या एणीइये रत्नप्रभापहिलीनरकपृथवीये केतलाएकनारकीनो चोथेपाथडे बेपल्योपमस्थितआउखंमध्यमकह्या बीजी नरकपृथवीनेविषे केतलाएक नारकीनो छट्ठेपाथडे बेसागरोपममध्यस्थितआ

॥ टीका ॥ ॥ मूल ॥ ॥ भाषा

5774

॥ मूल ॥

आणंदोपलिउवमाइंठिई प० असुरिंदवज्जिआणं जोमिज्जाणंदेवाणं उक्कोसेणंदेसूणाइं दोपलिउवमाइंठिई प० असंखिज्जवासाउयतिरिक्खजोणिआणं अत्थेगइआणं दोपलिउवमाइंठिई प० असंखिज्जवासाउयसन्निमणुस्साणं अत्थेगइयाणंदोपलिउवमाइंठिई प० सोहम्मेकप्पेअत्थेगइआणंदेवाणं दोपलिउवमाइंठिई प० ईसाणेकप्पेअत्थेगइयाणंदेवाणं दोपलिउवमाइंठिई प० सोहम्मेकप्पेअत्थेगइआणंदेवाणं उक्कोसेणंदोसागरोवमाइंठिई प० ईसाणेकप्पेदेवाणं उक्कोसेणं साहियाइं दोसागरोवमाइंठिई प० सणंकुमारेकप्पेदेवाणं जहन्नेणं दोसागरोवमाइं ठिई प० माहिंदेकप्पे देवाणं जहन्नेणं साहियाइंदोसागरोवमाइं ठिई प० ।

॥ भाषा ॥

जपं कह्यो । असुरकुमारभवनपतीदेवनो । केतलाएकनो बेपल्योपमनूं आउखो कह्यो । असुरेंद्रचमरेंद्र बलेंद्रटालोने बीजोभूमिसंबंधि उत्तरदिशिनानागदेवतानो उत्कृष्टोकांइकओछोबेपल्योपमनोआउखो कह्यो असंख्यातावर्षना आउखाना गर्भजमानुष्यनां एतले हरिवर्ष रम्यकक्षेत्रसंबंधी युगलियामनुष्यनुं केतलाएकनो बेपल्योपमआउखो कहिउ सौधर्म पहिलेदेवलोके केतलाएकदेवनो बेपल्योपममध्यमआउखो कह्यो । ईशानबीजेदेवलोके केतलाएक देवतानूं बेपल्योपमआउखोकह्यो । सौधर्मदेवलोकेदेवतानोउत्कृष्टो बेइसागरोपमआउखो कह्यो । ईशानबीजेदेवलोके देवतानो उत्कृष्टोभाझेरो

॥ टीका ॥

रेंद्रवर्जितभवनवासिनांहिदेशोनपल्योपमस्थितिरौदीच्यनागकुमाराणामित्यावसेयायतआह दोदेसुणुत्तरिल्लाणंति तथाअसंख्येयवर्षायुषांपंचेंद्रियतिरिश्चांमनु

ष्याणांचइहरिवर्षरम्यकवर्षजन्मनांद्विपल्योपमास्थितिरिति ॥ २ ॥ अथत्रिस्थानकंतओइत्यादिसर्वंसुगमं नवरमिहदंडगुप्तिशल्यगौरवविराधनार्थंसूत्राणां

॥ मूल ॥

जेदेवा सुभं सुभकंतं सुभवणं सुभगंधं सुभलेसं सुभफासं सोहम्मवडिंसगं विमाणंदेवत्ताएउववन्ना तेसिणं

देवाणंउक्कोसेणंदोसागरोवमाइंठिई प० । तेणंदेवा दोण्हंअद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा उससं

तिवा नीससंतिवा तेसिणंदेवाणंदोहिंवाससहस्सेहिं आहारठेसमुपज्जइ अत्थेगइयाभवसिद्धियाजीवा जे

दोहिंभवग्गहणेहिंसिज्झिस्संति मुच्चिस्संति बुज्झिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ २ ॥

॥ भाषा ॥

बिहुसागरोपमआउषोकह्यो सनत्कुमार त्रीजेदेवलोकेदेवतानं जघन्यबेसागरोपमआउषोकह्यो माहेंद्रचोथेदेवलोकेदेवतानो जघन्य बिसागरोपमझाझेरो-

आउषानोस्थितिकहीसौधर्मेदेवलोकेतेरमेप्रतरेजेदेवतानानाम शुभ १ शुभकांत २ शुभवर्ण ३ शुभगंध ४ शुभलेश ५ शुभस्पर्श ६ सौधर्मावतंसक ७ एहसातवि

मांनेदेवतापणेउपनाछे तेहदेवनो उत्कृष्टो बेसागरोपमआउषोकह्यो तेहदेवनेबिहुंअर्धमासेएतलेबिहुपखवाडे आणप्राणहुयेंआणथोडोस्वासप्राणतेघणोउ

त्स्वास उत्स्वासतेउचोलेवोस्वास नीसासतेसासनोचो मेल्हवो तेहदेवताने बिहुंयें वर्षसहस्रे तेहने आहारनोअर्थउपजे आभोगआहारल्ये संसारमांहिकेत

लाएकभवसिद्धीयाभव्यजीव जेबिहुंयेभवग्रहणे बेभवनेआंतरेसीझस्ये ज्ञातार्थथास्ये तत्वनाजांणथास्ये कर्मबंधथकीमूंकास्येकर्मकृततापटालवाथकीठाढायास्ये

॥ १० ॥

॥ टीका ॥

पंचकं नवमार्थंसप्तकं स्थित्यर्थंनवकं मुक्त्वासाधर्यंत्रयमिति । तत्रदंड्यतेचारित्रैश्वर्यापहारतोऽसारीक्रियते एभिरात्मेतिदंडादु:प्रयुक्तमन:प्रभृतय: मनएवदंडो मनोदंडो मनसावादु:प्रयुक्तेनात्मनोदंडो दंडेनमनोदंडएवमितरावपि तथा गोपनानिगुप्तय: मन:प्रभृतीनामशुभप्रवृत्तिनिरोधनानि शुभप्रवृत्तिकरणानि चेति तथा तोमरादिशल्यानीवशल्यानिदु:खदायकत्वात्मायादीनि तत्र मायानिकृति: सैवशल्यं मायाशल्यंणमित्यऽलंकारे एवमितरेऽपि नवरंनिदानं देवादिरिद्धीनांदर्शनश्रवणाभ्या मितो ब्रह्मचर्यादेरनुष्ठानाम्ममैताभूयासु रित्यध्यवसायो मिथ्यादर्शन मत्वार्थश्रद्धानमिति तथा गौरवाणिअभिमान

॥ मूल ॥

तउदंडा प० तं० मणदंडे वयदंडे कायदंडे । तउगुत्तीउ प० तं० मणगुत्ती वयगु
त्ती कायगुत्ती । तउसल्ला प० तं० मायासल्लेणं नियाणसल्लेणं मिच्छादंसणसल्लेणं ॥

॥ भाषा ॥

सर्वदु:खसारीरी तथा मानसी तेहनोअंत करिस्ये ऐतले बीजोठाणो पूरोथयो ॥ ॥ २ ॥ ॥ हिवे तीजोठाणो कहेछे । तीनदंडकह्या जेणेकरी आत्मादंडीये चारित्ररूपधनगमाडीये ते दंडकहीये ३ मनेकरी आत्मादंडीये असारकरीये ते मनोदंड १ एम वचनदंड २ कायदंडपणिइमज ३ त्रिणिगुप्ती गोपविवो ते गुप्ति कहिये तेकहेछे मननो गोपवो ते मनोगुप्ती १ इम वचनगुप्ति २ कायगुप्ति ३ त्रिणिशल्यकहे तीरनोपरे शल्यसरीखा श ल्य भाल दुखदायकपणाथकी ते कहेछे मायाकपटतेहीजशल्य तेमायाशल्य १ निदानशल्य ते तपसंजमेकरी इन्द्रादिकपदवीनो वांछवो २ मिथ्यातशल्य

॥ टीका ॥

भाभ्यामात्मनोऽशुभभावगुरुत्वानि तानिचसंसारचक्रवालपरिभ्रमणहेतुकर्मनिदानानि तत्रऋद्ध्यानरेंद्रादि पूज्याचार्यतादिरूपयागौरवमृद्धिप्राप्त्यभिमानतदप्राप्तिप्रार्थनद्वारेणात्मनोऽशुभभावगौरवमित्यर्थः एवंरसेनगौरवंरसगौरवं सातयागौरवं सातागौरवंचेति तथाविराधनाः खंडनास्तत्रज्ञानस्यविराधनाज्ञानविराधना ज्ञानप्रत्यनीकतानिन्हवादिरूपाएवमितरेपि नवरं दर्शनंसम्यग्दर्शनंचायिकादिचारित्रंसामायिकादीनि । तथाऋस ख्यातवर्षायुषांपंचेंद्रि

॥ मूल ॥

तउगारवा प० तं० । इड्ढीगारवेणं रसगारवेणं सायागारवेणं तउविराहणा प० तं० । नाणविराहणा दंसणविराहणा चरित्तविराहणा मिगसिरनक्खत्तेतितारे प० । पुस्सनक्खत्तेतितारे प० । जेठानक्खत्तेतितारे प० । अभीइनक्खत्तेतितारे प० । सवणनक्खत्तेतितारे प० । अस्सिणिनक्खत्तेतितारे प० भरणीनक्खत्तेतितारे प० इमीसेणंरयणप्पभाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणंतिन्निपलिउवमाइंठिई प० । दो

॥ भाषा ॥

तेगुरुदेवगुरुधर्मनोअसद्दहिवोविपरीतमोकरिवो ३ त्रिणिगारवकह्येजेणेकरीआत्माभारीथाय संसारचक्रवालमांहिभमवानोकारणकर्मतेकहेछे । ऋद्धिगारवतेनरेंद्रादिकनोऋद्धितथाआचार्यादिकनीऋद्धितेणेकरीअभिमानकरतोआत्माभारीकरे रसेकरीमधुरादिकस्वादेकरीआत्माभारीकरवो तेरसगारवकहियेर सातानेगारवेकरीसातागारव ३ त्रिणि विराधनाखंडनाकह्यो तेकहेछे सूत्रादिकज्ञानतेहनीविराधना प्रत्यनीकपणोकरिवोतेज्ञानविराधना दंसणतेसम्यकदर्शनक्षायकादिकसम्यक्त्वतेहनूंविराधवूंअवर्णवादनूंबोलिवूंतेदर्शनविरधना २ सामायिकादिकचारित्रनूंविराधवूंखंडवूंतेचारित्रविराधना ३ मृगसरनक्षत्र

॥ मूल ॥

त्र्याएणंपुढवीएनेरइयाणं उक्कोसेणंतिन्निसागरोवमाइंठिई प० । तच्चाएणंपुढवीए नेरइयाणं जहन्नेणंतिन्नि
सागरोवमाइंठिई प० । असुरकुमाराणंदेवाणं अत्थेगइयाणंतिन्निपलिउवमाइंठिई प० । असंखिज्जवासा
उयसन्नि पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेणं तिन्निपलिउवमाइंठिई प० । असंखिज्जवासाउयसन्निग
भ्भवक्कंतियमणुस्साणं उक्कोसेणं तिन्निपलिउवमाइंठिई प० । असंखिज्जवासाउयसन्निग
तिन्निपलिउवमाइंठिई प० सणंकुमारमाहिंदेसुकप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं तिन्निसागरोवमाइंठिई प०

॥ भाषा ॥

त्रणितारा कह्या केवलज्ञानीये पुष्यनक्षत्रना त्रणितारा कह्या । जेठानक्षत्रना त्रणितारा कह्या अभिजित् नक्षत्रनातीनतारा कह्या श्रवणनक्षत्रना त्रणितारा क
ह्या अश्विनीनक्षत्रना त्रणितारा कह्या भरणीनक्षत्रना त्रणतारा कह्या एणीयेरत्नप्रभापहिलीपृथवीनेविषे केतलाएकनारकीनो त्रणिपल्योपममध्यमआउषूंकह्युं
बीजोसक्करप्रभापृथवीनेविषे नारकीनोउत्कृष्टो त्रणिसागरोपमनूंआउखोकह्यो त्रीजीवालुकप्रभापृथवीनेविषे नारकीनो जघन्य त्रणिसागरोपमआउ खोक
ह्यो असुरकुमारभवनपतीनी पहिलीनिकायनादेवतानोकेतलाएकनो त्रणिपल्योपममध्यमआउखोकह्योछे असंख्यातवर्षनाआउखाना संज्ञीगर्भज पंचेंद्रिय
तिर्यंच एतलेदेवकुरू उत्तरकुरूनागर्भज तिर्यंचनो उत्कृष्टो तीनपल्योपमनो आउखोकह्यो । असंख्यातवर्षना आउखाना गर्भजमनुष्य देवकुरुउत्तरकुरुना

यतिर्यग्मनुष्याणांदेवकुरूत्तरकुरुजन्मनां त्रीणिपल्योपमानीति । तथाआभंकरं प्रभंकरं आभाकरंप्रभाकरं चंद्रचंद्रावर्त्त चंद्रप्रभ चंद्रकांत चंद्र[illegible] ध्वजं चंद्रशृंगं चंद्रसिद्धं चंद्रकूटं चंद्रोत्तरावतंसकं विमानमित्यादि ॥ ४ ॥ चतुःस्थानकमपिसुगममेव नवरं कषायध्यानविकथासंज्ञाबंधयोजनार्थं सूत्राणांषट्

॥ मूल ॥

जेदेवा आभंकरं पभंकरं आभाकरं पभाकरं चंदंचंदावत्तं चंदप्पभं चंदकंतं चंदवन्नं चंदलेसं चंदज्झयं चंदसिंगं चंदसिद्धं चंदकूडं चंदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणं तिन्निसागरोवमाइंठिई प० । तेणंदेवातिण्हंअद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणं तिहिंवाससहस्सेहिंआहारट्ठेसमुपज्जइ संतेगइयाभवसिद्धियाजीवा जे तिहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संतिपरिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ ३ ॥ चत्तारिकसाया

॥ भाषा ॥

युगलियातेहनो उत्कृष्टो तीनपल्योपम आउखो कह्यो । सौधर्मईशानदेवलोकनेविषे केतलाएकदेवनो त्रणिपल्योपमआउखो कह्यो सनत्कुमारमाहेंद्रची जेचोथेदेवलोके केतलाएक देवनो त्रणिसागरोपममध्यमआउखोकह्योजेदेवताआभंकर १ प्रभंकर २ आभाकर ३ प्रभाकर ४ चंद्र ५ चंद्रावर्त्त ६ चंद्रप्रभ ७ चंद्रकांत ८ चंद्रवर्ण ९ चंद्रलेस १० चंद्रध्वज ११ चंद्रशृंग १२ चंद्रसिद्ध १३ चंद्रकूट १४ चंद्रोत्तरावतंसक १५ विमानेंसनत्कुमारमाहेंद्रदेवलोकेंदेवतापणे उपनाछे तेहदेवतानोउत्कृष्टोत्रणि सागरोपमआउखो कह्यो तेहदेवतानेंतिहुंपखवाडे थोडोस्वासले घणोस्वास जं चोस्वासतेउस्वासनोचोस्वासमूंकवोते

॥ मूल ॥

ढनरकन्नेचउत्तारे प० इमीसेणंरयणप्पन्नाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चत्तारिपलिउवमाइंठिई प०
तच्चाएणंपुढवीए अत्थेगइणंनेरइयाणंचत्तारिसागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणंदेवाणं अत्थेगइयाणंच
त्तारिपलिउवमाइंठिई प० सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्थेगइआणं देवाणं चत्तारिपलिउवमाइंठिई प० सणं
॥ १३ ॥ कुमारमाहिंदेसुकप्पेसु अत्थेगइआणं देवाणं चत्तारिसागरोवमाइंठिई प० जेदेवाकिठिंसुकिठिं किठियाप
त्तंकिठिप्पन्नं किठिजुत्तं किठिलेसं किठिज्झयं किठिसिंगं किठिसिठं किठिकूडं किठुत्तरवडिंसगंविमाणंदे
वत्ताएउववन्ना तेसिंणंदेवाणं उक्कोसेणं चत्तारिसागरोवमाइंठिई प० । तेणंदेवाचउराहठमासाणं आणमं

॥ भाष्य ॥

इरत्नप्रभापहिलीपृथिवीनेविषेकेतलाएक नारकीनो च्यारपल्योपम आउषूंकहिंउ कह्या त्रीजीवालुकप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो च्यारिसा
गरमध्यआउषूंकह्योछे । असुरकुमारभवनपतीदेवनं केतलाएकनं च्यारिपल्योपमआउषूं कह्या सौधर्मईशानदेवलोकनेविषेकेतलाएकनो देवतानोच्यारपल्यो
पममध्यआउषूंकह्यो सनत्कुमारमाहेंद्रत्रीजाचौथादेवलोकने विषेकेतलाएकदेवतानूं च्यारसागरोपममध्यआउषूंकह्यो त्रीजेचौथेदेवलोकेजेदेवता कृष्टि१ सु
कृष्टि २ कृष्टिकापत्र ३ कृष्टिप्रभ ४ कृष्टियुक्त ५ कृष्टिलेश्य ६ कृष्टिध्वज ७ कृष्टिशृंगः ८ कृष्टिसिद्ध ९ कृष्टिकूट कृष्टिकावतंसकएणेविमाननें विषेदेवताप

त्कृष्टसुकृष्टादीनिद्वादशविमामानिपूर्वोक्तविमाननामानुसारवतीनि । पंचस्थानकमपिसुगमं नवरं क्रियामहाव्रतकामगुणाश्रवसंवरनिर्जरास्थानसमित्य स्तिकायार्थसूत्राणामष्टकं नवचार्थपंचकं स्थित्यर्थषटकं उच्छ्वासाद्यर्थत्रयमेवेति । तथाक्रियादुर्व्यापारविशेषाः तत्रकायेननिवृत्ताकायिकीकायचेष्टेत्यर्थः मधिक्रियतेआत्मानरकादिषुयेनतदधिकरणं । तेननिवृत्ताआधिकरणिकी खड्गादिनिर्वर्त्तनादिलक्षणेति । प्रद्वेषोमत्सर स्तेननिवृत्ताप्राद्वेषिकी परिताप- ॥ टीका ॥

तिवापाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिंदेवाणं चउहिंवाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ अत्थेगइ आभवसिद्धियाजीवा जेचउहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जावसव्वदुक्खाणंअंतंकरिस्संति ॥ ४ ॥ ॥ मूल ॥
पंचकिरिया प० तं० काइया अहिगरणिया पाउसिआ पारितावणिया पाणाइवायाकिरिया पंचमहव्वया

णेउपनाछे तेहदेवतानो उत्कृष्टपणे च्यारसागरोपमआउषं कह्यो तेदेवताचिहुंअर्धमासवाडेएतलेचोथेपखवाडे थोडोसासलेइ घणोसासले मोचोमेलवोतेनि श्वास जंवालेअवोतेजसासतेहदेवताने विहुंवर्ष सहस्से आभोगआहारनोअर्थउपजे केतलाइकछे भव्यजीव चिहुंनेभवगृहणेच्यारभवनेअंतरे सीझस्येबूझस्ये मुकास्येसंसारथकी सर्वदुक्खनो अंतकरिस्ये इतिचोथोठाणंसमत्तं ४ हिवेपांचनोअधिकारलिखीयेछे पांचक्रियाकही क्रियाते कायादिकनोव्यापारतेकहेछे कायायेंनोपजावीतेकायिकीक्रियाकायचेष्टा आत्मानरकादिकनेविषेजेणेकरीस्थापीयेंतेअधिकरणकीषड्गादिकनोपजाविवालक्षण प्रद्वेषमत्सरतेणेनोपिजा ॥ भाषा ॥

॥ १४ ॥

॥ टीका ॥

नताडनादिदुःखविशेषलक्षणं तेननिवृत्तापारितापकी प्राणातिपातक्रिया प्रतीतेति। तथाकाम्यंतेअभिलष्यंते इतिकामास्तेचतेगुणाश्चपुद्गलधर्माः शब्दाद यइतिकामगुणाः कामस्यवादर्पस्योद्दीपकागुणाः शब्दादयइति तथाआश्रवद्वाराणिकर्मोपादनोपाया मिथ्यात्वादीनि संवरस्यकर्मानुपादानस्यद्वाराण्युपा याःसंवरद्वाराणि मिथ्यात्वाद्याश्रवद्वारविपरीतानिसम्यक्त्वादीनि तथा निर्जरादेशतःकर्मक्षपणात्तस्याःस्थानान्याश्रयाः कारणानीतियावदिर्जरास्थानानि प्राणातिपातविरमणादीनि एतान्येवसर्वशब्दविशेषितानि महाव्रतानिभवंति तानिचपूर्वसूत्रेभिहितानि स्थूलशब्दविशेषितानि अणुव्रतानिभवंति नि

॥ मूल ॥

प० तं० सव्वाउपाणाइवायाउवेरमणं सव्वाउमुसावायाउवेरमणं सव्वाउअदत्तादाणाउवेरमणं सव्वाउमेहु णाउवेरणं सव्वाउपरिग्गहाउवेरमणं पंचकामगुणा प० तं० सद्दा रूवा रसा गंधा फासा पंचआसवदारा प० तं० मिच्छत्तं अविरई पमाया कसाया जोगा पंचसंवरदारा प० तं० सम्मंत्तं विरई अप्पमत्तया

॥ भाषा ॥

वीतेप्राहे[illegible] परितापवो ताडनादिकदुखनों उपजाववो ते पारितापनकोक्रिया परप्राणनो अतिपातविनाश तेणे नीपजावीक्रिया ते प्राण ातिपातकी पंचमहाव्रतश्रावकनांव्रत नी अपेक्षायें घणोमोटो व्रत तेमहाव्रत कह्या तेकहेछे सर्वथकी मन वचन कायानेकरी तथा करण कारण अनुमती भेदे करी छकायनां प्राणतेहने अतिपात विनाश तेहथकी विरमवो उसरवो तेसर्व प्राणातिपातविरमणपहिलामहाव्रत १ सर्व क्रोधें लोभें मृषा झूंठोबोल वाथी विरमवो तेसर्व मृषावादविरमण दूजोव्रत २ जीव स्वामि गुरु अदत्तथकोविरमवो ते सर्वादत्तादानविरमण तीजोव्रत ३ सर्व नवभेदथको औदारिक

॥ टीका ॥

जंरास्थानत्वंपुनरेषांसाधारणमिति । तदिहैषामभिहितं । तथासमितयः संगताः प्रवृत्तयः तत्रेर्यासमिति गमने सम्यक् सर्वपरिहारतः प्रवृत्तिर्भा षासमितिर्निरवद्यवचनप्रवृत्तिः एषणासमिति र्दि चत्वारिंशद्दोषवर्जनेनभक्तादिग्रहणेप्रवृत्तिः आदानेग्रहणे भांडमात्रयो रुपकरणपरिछदस्य निक्षेपणा वस्था पादानसमितिः सुप्रत्युपेक्षितादिसांगतेनप्रवृत्तिस्वतुर्थी १ । तथोच्चारस्य पुरीषस्य प्रश्रवणस्य मूत्रस्य खेलस्य निष्टीवनस्य सिंघाणस्य नासिकाश्लेषणं।

॥ मूल ॥

अकसाया अजोगया पंचनिज्जरठाणा पं० तं० पाणाइवायाउवेरमणं मुसावायाउ अदिन्नादाणाउ मेहुणा उवेरमणं परिग्गहाउवेरमणं । पंचसमिईउ प० तं० ईरियासमिई भासासमिई एसणासमिई आयाणभंडम

॥ भाष ॥

मैथुन नवभेदेवैक्रियमैथुनएवं १८ भेदेमैथुनथकीविरमवो तेसर्वमैथुनविरमणचोथोमहाव्रत नवविधपरिग्रहथीविरमवो तेसर्वपरिग्रहविरमणपांचमोमहा व्रत पांचकामगुण कामियेअभिलखीयेते कामकहीये तेहीज गुणपुद्गलस्वभावतेकामगुण अथवा काममदनतेहना दीपावक ते कामगुणकह्या तेकहेछे शब्दतेसांभलवो रूपते देखवो रसते आस्वाद गंधतेनाकनोविषय फरसतेकायनोविषय आश्रवते कर्मआववानोउपाय तेहनेद्वारसरीखाद्वारतेह नेआश्रवद्वारकह्या तेकहेछे मिथ्यात्वतेविपरीतसद्दहणा तेहपापआविवानो उपाय १ एमअविरतिअप्रत्याख्यान २ प्रमादतेप्रमत्तपणो ३ कषायतेक्रो धादिक ४ योगतेमनोयोगादिक ५ पंचसंवरद्वारजेणेकरी कर्मनोआगमनलिवो तेसंवर तेहनाद्वार तेउपायपांचकह्यातेकहेछे सम्यक्तशुद्धदर्शन १ वि- रतितेप्रत्याख्यान २ अप्रमादपणूं ३ कषायनेटालिवो ४ अजोगतामनोजोगादिकनेरोधवो निर्ज्जरातेदेशथकीजीवनाप्रदेशहुंती कर्मपुद्गलनूंखपाव- णं जूआंकरिवो तेनाथानककहितांउपाय तेनिर्ज्जराठाणकह्यापांचभेदे तेकहेछे जीवमारिवाथकीविरमवोजसरिवो एहकर्मखपाविवानोउपाय १

॥ टीका ॥

जल्लस्यदेहमलस्य परिष्ठापनायाः परित्यागेसमितिः स्थंडिलादिदोषपरिहारतः प्रवृत्तिरितिपंचमी । अस्तिकायाः प्रदेशराशयः धर्मास्तिकाया-
दयोगतिस्थित्यवगाहोपयोगस्पर्शादिलक्षणास्थितिः सूत्रेषुउत्कृष्टादिविभागएवमनुगंतव्यः । यदुतः । सागरमेगं १ सिय २ सत्त ३ । दसय ४ सत्तरस ५ त
इयबावीसा ६ ॥ तेत्तीसंजावठिई । सत्तसुविकमेणपुढवीसु ॥ १ ॥ जापढमाएसुजेट्ठा । साबीयाएकणिट्ठियाभणिया ॥ तरतमजोगोएसो । दसवाससहस्सरय

॥ मूल ॥

त्तनिक्खेवणासमिई उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिठावणियासमिई । पंचअत्थिकायाप० तं० धम्मत्थि
काए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए रोहणीनक्खत्तेपंचतारे प० पुणव्वसु

॥ भाषा ॥

एकमृषावादविरमणं २ इम अदत्तादानविरमण ३ इममैथुनवेरमण ४ परिग्रहरोविरमण ४ सावधानपणेप्रवर्त्तवोतेसमितिपांचप्रकारकही तेकहेछे-
चालतोसर्वजीवनेजोईप्रवर्त्तवोतेईर्यासमिति १ निरवद्यवचननीप्रवृत्तिभाषासमिति २ । ४२ दूषणटालीभातेपणीनूंलेवोतेएषणासमतिकही ३ । आदानक
हतांभांडमात्रउपकरणने मूंकतां समति पूंजीजोईलेवो जोईमूंकिवो तेचोथीसमतिकही उच्चार विष्टा प्रश्रवण मूत्र खेल थूक सिंघाण नाकनोमल रिंट
जल्लमैलएतलापरठतांसमतितेस्थंडलदोषटालीप्रवर्त्तवो एपांचमीसमतिजाणवी ५ पांचअस्तिकायअस्तिकहतांप्रदेशतेहनाकाय तेराशितेअस्तिकायकहीये
तेकहेछे धर्मकहियेचलनस्वभावएहवाप्रदेशराशितेधर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकायस्थितिस्वभाव २ आकाशास्तिकाय जीवने पुद्गलनेविषे अवकासदेवा
नोस्वभाव जीवास्तिकायउपयोगलक्षण ४ पुद्गलास्तिकायस्पर्शलक्षणजाणिवो ५ रोहिणीनक्षत्रनापांचताराकह्या पुनर्वसुनक्षत्रना पांचताराकह्या ह

णाए ॥ २ ॥ तथा । दो १ साहि २ सत्त ३ साहिय ४ । दस ५ चोदस ६ सत्तरेवअयराइं ॥ सोहम्मजावसुक्को । तदुवरिंइक्किक्कमारोवा ॥ ३ ॥ पलियं १ दोसार २ साहिय ३ सत्त ४ साहिय ५ दस ६ चउद्दस ७ सत्तरस ८ सहस्सारे तदुवरिंइक्किक्कमारोवेत्ति तथावातंसवातमित्यादीनिद्वादशवाताभिलापेनविमानना ॥ टीका ॥

नक्खत्ते पंचतारे प० हत्थनक्खत्ते पंचतारे प० विसाहधणिठानक्खत्ते पंचतारे प० इमीसेणंरयणप्पभाएपुढवीए अत्थेगइआणंनेरइयाणं पंचपलिओवमाइं ठिई प० तच्चाएणंपुढवीएअत्थेगइआणं नेरइयाणंपंचसागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणंपंचपलिओवमाइंठिई प० सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्थेगइयाणंदेवाणं पंचपलिओवमाइंठिई प० सणंकुमारमाहिंदेसुकप्पेसु अत्थेगइयाणंदेवाणं पंचसागरोवमाइंठिई प० जेदेवा वायं सुवायं वायप्पभं पञ्चंतरं वायावत्तं वायकंतं वायप्पहं वायवन्नं वायलेसं वायज्झयं वा ॥ मूल ॥

स्तनचत्रना पांचताराकह्या विशाखानक्षत्रनांपांचताराकह्याधनिष्टानक्षत्रनापांचताराकह्या इणीरत्नप्रभापहिलीपृथवीने केतलाएक नारकीनीं पांचपल्यो पममध्यआउखूंकहियै तीजोवालुकापृथवीनेविषे केतलाएकनारकीनो पांचसागरोपममध्यआउखोकहियै असुरकुमारभवनपतीकेतलाएकनोदेवतानोंपांच पल्योपमआउखोकह्यो भगवंतें सोधर्मईशान पहिले वीजेदेवलोके केतलाएकदेवतानो पांचपल्योपम आउखोकह्यो तीजेसनत्कुमारमाहेंद्रचउथेदेवलोकनेविषेकेतलाएकदेवलोकना देवताने पांचसागरोपमआउखूंकह्यो भगवंते तीजेचउथे देवलोके जेदेवता वात १ । सुवात २ । वातप्रभ ३ । वीजेप्रतरे ४ । वाताववर्तनामके ४ । वातकांत ४ । वातप्रभ ५ । वातवर्ण ६ । वातलेश ७ । वातध्वज ८ । वातशृंग ८ । वातसिद्ध १० । वातकूट ११ । वातोत्तरावतंसक १२ ए ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

मानितास्थेवंसूराभिलापेनेति ॥ ५ ॥ षट्स्थानकमथतत्त्वसुबोधं नवरमिहलेश्या १ जीवनिकाय २ बाह्य ३ ऽभ्यंतरतपः ४ समुद्घाता ५ व्यग्रहार्थानिस
गाबि षट् नयत्नार्थेहिस्थित्यर्थानिषट्उच्छासाद्यर्थंनयमेवेति तत्रलेश्यानांस्वरूपमिदं। कृष्णादिद्रव्यसाचिव्यात्परिणामोयआत्मनः स्फटिकस्येवतत्रायंलेश्या

॥ मूल ॥

यसिंगं वायसिद्धं वायकूडं वाउत्तरवडिंसगं सूरं सुसूरं सूरावत्तं सूरप्पभं सूरकंतं सूरवन्नं सूरलेसं सूरज्झयं
सूरसिंगं सूरसिद्धं सूरकूडं सूरुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणं पंचसागरोव
माइंठिई प० तेणंदेवापंचरहंअद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंति ऊससंतिनीससंतिवा तेसिणंदेवाणं पंच
हिंवाससहस्सेहिं आहारठेसमुपज्जइ संतगइयाभवसिद्धियाजीवाजे पंचहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव
अंतंकरिस्संति ॥ ५ ॥ छलेसाउपन्नत्ता तंजहा कण्हलेसा नीललेसा काउलेसा तेउलेसा

॥ भाषा ॥

ह १२ विमाने तथावली। सूर १। सुसूर २। सूरावर्त्त ३। सूरप्रभ ४। सूरकांत ५। सूरवर्ण ६ सूरलेश ७। सूरध्वज ८। सूरशृंग ९। सूरसिद्ध १०। सूरकू
ट ११। सूरोत्तरावतंसक १२। एह २४ विमानेदेवतापणेऊपनाछे तेहदेवतानें उत्कृष्टपणे पांचसागरोपमआऊखोकह्यो तेहदेवतापांचपखवाडे पांचअर्द्ध
मासे थोडोसासले घणोसासले नोचोसासमूंके तेहदेवताने पांचवर्षसहस्रेंगये आहारनोअर्थऊपजेंछे केतलाएक संसारमांहिभव्यजीव जेहपांचभवने आंतरे
सीझस्यें बूझस्यें मूंकास्ये संसारसागरथकी सर्वदुःखनोअंतकरिस्यें मोचजास्यें इति पांचमूंठाणोसम्मत्तं ॥ ५ ॥ छट्ठोठाणोकहेछे। छलेश्याकही

शब्दःप्रयुज्यतइति तथाबाह्यतपः बाह्यशरीरस्यपरिशोषणेनकर्मक्षपणहेतुत्वादिति । आभ्यंतरंचित्तनिरोधप्राधान्येनकर्मक्षपणहेतुत्वा[illegible] तथाछद्मस्थोऽकेव ॥ टीका ॥

पम्हलेसा सुक्कलेसा छजीवनिकाया प० तं० पुढवीकाए आउकाए तेउकाए वाउकाए वणस्सइकाए तस काए छव्विहे बाहिरेतवोकम्मे प० तं० अणसणे उणोयरिया वित्तीसंखेवो रसपरिच्चाउ कायकलेसो संली णया छव्विहेअभ्भिंतरेतवोकम्मे प० तं० पायच्छित्तं विणउ वेयावच्चं सज्झाउ झाण उस्सग्गो छठाउ ॥ मूल ॥

कृष्णादिकपुद्गलनासंसर्गथकीआत्मानोपरिणाम अन्यथापणेपरिणमे ते लेश्याकहीये उक्तंच कृष्णादिद्रव्यसाचिव्यात्परिणामोयआत्मनः स्फटिकस्येवतत्रायं लेश्याशब्दः प्रयुज्यते । मषाकाले पुद्गलेनीपनोकृष्णलेश्या १ । नीलासूडानें वर्णतेनीललेश्या २ । अलसीनाफूलसरीषोकापोतलेश्या ३ । हींगलूपरेत्यासरीखा तेजोलेश्याजांणिये हरतालसरीषीपद्मलेश्या ५ । संखसारीषीउजलीशुक्ललेश्या ६ । संसारमांहि छप्रकारे जीवनिकाय जीवसमूहकहेछे तेकहेछे पृथवीकाय पृथवीमाटीकायसमूह १ । एमज अपजलकायपाणी २ । तेयकायअगनि ३ वायुकाय वायरो वनस्पतीकायतृणवृक्षादिक ५ त्रसकायबेंद्रियादिक पचेंद्रियलग छप्रकारे बाह्यशरीरने शोषेकर्मखपावे तेबाह्यतप तेहनोकरिवो तेहबाह्यतपकर्मकहिये तेकहेछे अणसण उपवासएकथकीमांडी छमासलगे ऊणोदरीऊणे पेटेजमिवो पूरोआहारनलेवो २ । वृत्तिसंक्षेप वृत्तिन करिवो ३ । रसनोपरित्याग आंबिलनिवी प्रमुखकरिवो कायशरीरे कृशतादितापलोचआतापनादि ॥ भाषा ॥ कनोकरिवोसंलीनताअंगउपांगसंवरी अणशनादिकनोकरिवो छप्रकारेअभ्यंतरतप अंतरंगमलनो सोधणहारतप तेहनो कर्मकरिवो तेतपकर्मकह्यो तेस

॥ टीका ॥

लोतत्र भवाश्छाद्मस्थिका: समेकोभावेनोत्प्राबल्येनघातानिनिर्जरणानिसमुद्घातावेदनादिपरिणतोहिजीवोबहून् वेदनीयादिकर्मप्रदेशान्कालांतरानुभाव योग्यानुदीरणेनाकृष्योदयेप्रक्षिप्यानुभूयनिर्जरयति आत्मप्रदेशै: संश्लिष्टान्शातयतीत्यर्थस्तेचेहवेदनादिभेदेनषडुक्ता: तत्रवेदनासमुद्घातो ऽसावद्यकर्माश्रय कषायसमुद्घात:। कषायाख्यचारित्रमोहनीयकर्माश्रय: मारणांतिकसमुद्घातोंऽतर्मुहूर्तशेषायुष्ककर्माश्रयो वैकुर्विकतैजसाहारकसमुद्घाता: शरीरनामकर्मा श्रयास्तत्रवेदनासमुद्घातसमुद्धतआत्मावेदनीयकर्मपुद्गलशातंकरोति । कषायसमुद्घातसमुद्धत: कषायपुद्गलशातं मारणांतिकसमुद्घातसमुद्धत आयु:कर्मपु द्गलावात: वैकुर्विकसमुद्घातसमुद्धतस्तुजीवप्रदेशान् शरीराद्बहिर्निष्काश्यशरीरविष्कंभबाहल्यमात्रमायामतश्च संख्येयानियोजनानि दंडंनिसृजतिनिसृज्य

॥ मूल ॥

॥ १७ ॥ मणुस्सियासमुग्घाया प० तं० वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतिअसमुग्घाए विउव्वियसमुग्घाए ते यसमुग्घाए आहारसमुग्घाए छव्विहेअत्थुग्गहे प० तं० सोइंदियअत्थुग्गहे चक्खुइंदियअत्थुग्गहे घाणिं

॥ भाषा ॥

गलेश्रागलितरवाणस्ये अनुक्रमेकहेछे प्रायछित तेश्रतोचारदूसण निवारवा भणी आलोचनादिकनोंदेवो विनयतेवडेश्राव्यांजठिवो वेयावच्च आहारादिक दानेकरी श्रोउंभवो कालवेलायें सूत्रभणिवो ध्यानतेशुभध्याननों ध्याववो उत्सर्गते कायोत्सर्गकरिवो छद्मस्थना छ समुद्घातकह्या सातमोकेवलिसमुद्घात तेकेव लीनो एकाभावे प्रवलपणे जीवप्रदेशथी कर्मपुद्गलनों हणिवो निर्ज्जरवो तेसमुद्घातकहिये तेकहेछे प्रथमवेदनासमुद्घात १ वेदनाव्याप्योजीवघ णावेदनीयकर्म नाप्रदेशकालांतरेअनुभववायोग्यछें तेउदीरणाकरिने आक्षेपोउदयावलिकायें प्रक्षेपीभोगवीने निर्जरेआत्मानाप्रदेशथीसंवद्धछे वेदनीयकर्मना पुद्गलतेवेगला कषायसमुद्घातसमुद्धतजीवकषायना पुद्गलनिर्जरावे मारणांतिकसमुद्घात समुद्धतजीव आउखाकर्मपुद्गलनिर्जरे ३ विकुर्वणासमुद्घातसमुद्धतजीवना प्रदेश शरीरथकी

॥ टीका ॥

यथास्थूलोवैक्रियशरीरनामकमपुद्गलान्प्राग्बद्धान्शातयति एवंतैजसाहारकसमुद्घातावपिव्याख्येयाविति । तथाअर्थस्यसामान्यनिर्देश्यस्वरूपस्यशब्दादे रवेतिप्रथमव्यंजनावग्रहानंतरं ग्रहणं परिच्छेदनमर्थावग्रहः सचैकसामयिको नैश्चयिको व्यावहारिकस्त्वसंख्येयसामयिकः सचषोढा श्रोत्रादिभिरिंद्रियैर्न

॥ मूल ॥

दिअत्थुग्गहे जिब्भिंदियअत्थुग्गहे फासिंदियअत्थुग्गहे कत्तियानक्खत्ते छतारे प० असलेसानक्खत्ते छतारे प० इमीसेणंरयणप्पभाएपुढवीए अत्थेगइआणंनेरइआणं छपलिओवमाइंठिई प० तच्चाएणंपुढवीए अत्थेगइया णंनेरइआणं छसागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणंअत्थेगइयाणंछपलिओवमाइंठिई प० सोहम्मी

॥ भाषा ॥

वाहिरकाढीशरीरनेंबाहल्यपणेविष्कंभपणे ऊंचपणें संख्यातायोजनदंडकरी वैक्रियशरीरनामकर्मना स्थूलपुद्गलनेनिर्जरे ४ तेजोलेश्यामूंकेतिवारे तेजसपुद्गल निर्जरे ५ पूर्वधरसंदेहटालिवानेअर्थे आहारकशरीरकरे आहारसमुद्घातकरतो आहारकशरीर पुद्गलनिर्जरावे ६ छ प्रकारेंअर्थावग्रह व्यंजनावग्रहानंतर अर्थनो सामान्यपणेंग्रहिवोते अर्थावगृह ते एकसमयरहै व्यवहारें असंख्यातसमयेंरहै तेकहैछै श्रोत्रेंद्रियकान तेणेकरी सामान्यप्रकारें शब्दरूपअर्थनोगृहिव तेश्रोत्रेंद्रियोअर्थावगृह १ चक्षुकहिये आंखतेणेकरी सामान्यप्रकारेंरूपनोगृहिवो तेचक्षुरिंद्रिय अर्थावग्र २ एमनासिकायें गंधनोगृहण ते घ्राणेंद्रियअर्थाव गृह ३ जीभनेस्वाद गृहिवोतेजिभ्येंद्रिय अर्थावगृह ४ शरीरेंकरी स्पर्शनोगृहिवो तेस्पर्शेंद्रियार्थावगृह ५ मनेंकरी अर्थनोगृहिवो ते मनोइन्द्रिय अर्थावहगृ ६ कृत्तिकानक्षत्रनाछताराकह्या असलेषा नक्षत्रना छताराकह्या एणीयें रत्नप्रभापहिली पृथवीने विषेंकेतला एकदेवतानोंछपल्योपम मध्यआउखोकह्यो।

॥ मूल ॥

साणेसु कप्पेसु ऋत्थेगइऋाणंदेवाणंछपलिउवमाइंठिई प० सणंकुमारमाहिंदेसुकप्पेसु ऋत्थेगइऋाणंदेवाणं छसागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा सयंवाई सयंनू सयंनूरमणं घोसं सुघोसं महाघोसं किठिघोसं वीरं सुवीरं वीरगतं वीरसेणियं वीरवत्तं वीरप्पन्नं वीरकंतं वीरवन्नं वीरज्झयं वीरसिंगं वीरसिद्धं वीरकूडं वीरुत्तरव डिंसगं विमाणं देवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणंछसागरोवमाइंठिई प० तेणंदेवाछराहंऋछमासाणं ऋाणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणंदेवाणं छहिंवाससहस्सेहिं ऋाहारठेसमुपज्जइ

॥ भाषा ॥

तीजोवालुकप्रभा पृथवीनेंविषें केतलाएक नारकीनीं छ सागरोपम आउखोंकह्यो। असुरकुमारदेवतानीं केतलाएकनीं छपल्योपमआउखोकह्यो । सौधर्मईशान देवलोकने विषें केतला एकदेवतानीं छपल्योपम आउखोकह्यो। तीजेसनत्कुमार चौथे माहेंद्र देवलोके केतलाएकदेवतानो छसागरोपम आउखो कह्यो। तीजेचौथे देवलोके जेदेवलोके जेदेवता स्वयंवादी १। स्वयंभू २। स्वयंभूरमण ३ घोस ४। सुघोस ५। महाघोस ६। कृष्टिघोस ७। वीर ८। सुवीर ९। वीरगत १०। वीरसेनिक ११। वीरावर्त्त १२। वीरप्रभ १३। वीरकांत १४। वीरवर्ण १५। वीरध्वज १६। वीरशृंग १७। वीरसिद्ध १८। वीरकूट १९। वीरोत्तरावतंसक २०। एहवेविमाने देवतापणे ऊपनाछे तेहदेवतानो उत्कृष्टो छसागरोपम आउखोकह्यो तेदेवता छठे अर्द्धमासे एतले छठेपखवाडेसासो सासले घणोसासले उंचोलेवोतेऊसास नीचोमेल्हिवोतेनीसास तेदेवताने छहजारवर्षे आहारनी अर्थऊपजे छेकेतलाएकभव्यजीव जेछेभवनेआंतरे सीभस्यें

इन्द्रियेणचमनसाजन्यमानत्वादिति स्थितिसूत्रेलयंभ्वादीनिविंशतिविमानानीति ॥ ६ ॥ अथसप्तमस्थानकंविव्रियते तत्रकंठा
नवरंनिहभयसमुद्घातमहावोरोवर्षधरवर्षयोणमोहार्थानिचसूत्राणिषट् नत्रवार्थानिपंच स्थित्यर्थानिनव उच्छ्वासाद्यर्थानिचोक्षेवेति तत्रेहलोकभयंयत्स ॥ टीका ॥

संतेगइयाभवसिद्धियाजीवाजेछहिंभवग्गहणेहिंसिज्झिस्संति जावसव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ ६ ॥ ॥ मूल ॥
सत्तभयठाणा प० तं० इहलोगभए परलोगभए आदाणभए अकम्हाभए आजीवभए मरणभए असिलो
गभए सत्तसमुग्घाया प० तं० वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाए
तेयससमुग्घाए आहारसमुग्घाए केवलिसमुग्घाए समणेभगवंमहावीरे सत्तरयणीउ उड्ढंउच्चत्तेणंहोत्था स

बूझस्यें मूकासे भवमांहियो सर्वदुखनो अंतकरिस्ये मोक्षजासे इतिछट्ठोठाणोसमत्त ॥ ६ ॥ हिवेसातनो अधिकारकहेछे सातभयनाठामकह्या तेकहेछे ॥ भाषा ॥
स्वजातीयथकीभय उपजेतेइहलोकभय परजातीयथकी भयउपजेतेपरलोकभय द्रव्यथाथीउपजेते आदानभयबाह्यनिमित्तविना अकस्मात् भयउपजेते आक
स्मिकभय आजीविका जीयकानो उपायतेहनो भय तेआजीविकाभय मरणनोभय तेमरणभय अश्लोकअकीर्तितेहनोभय उपजेतेअश्लोकभय सातसमुद्घातपद
नो अर्थछठाणेकह्योछे तेकहेछे वेदनासमुद्घात कषाय समुद्घात मारणांत समुद्घात वैक्रियसमुद्घात तैजससमुद्घात आहारकसमुद्घात सातमोंकेवलीसमुद
घाततेहकोइक केवलोच्यार अघातीयाकर्मखपाववेअर्थे केवलीसमुद्घातकरे पोतानां प्रदेशलोकांतलगें विस्तारी कर्मपुद्गलनिर्जरे श्रमण तपस्वी भगवंतमहा

जातीयात् परलोकभयंयद्विजातीयात् आदानभयं द्रव्यमाश्रित्यजायते अकस्माद्भयंबाह्यनिमित्तनिरापेक्ष्यंस्वविकल्पाज्जातं शेषाणिप्रतीतानि नवरं मर्म्मो ॥ टीका ॥
॥ १५ ॥ कोऽकोर्त्तिरिति । समुद्घाताःप्रागेव नवरं केवलिसमुद्घातो वेदनीयनामगोत्राश्रयइति । तथा रत्नि विततांगुलिर्हस्तइति जर्द्धोच्चत्वेनेतिद्योत्याबभूवेति तथा

त्तवासहरपव्वया प० तं० चुल्लहिमवंते महाहिमंते निसढे नीलवंते रूपी सिहरी मंदरे सत्तवासा प० ॥ मूल ॥
तं० ज्ञरहे हेमवंत हरिवासे महाविदेहे रम्मए एरन्नवए एरवए खीणमोहेणं ज्ञगवया मोहणिज्जवज्जाज स
त्तकम्मपयमीज वेएई महानरकत्तेसत्ततारे प० कत्तिआइआसत्तनरकत्ता पुव्वदारिआ प० महाइआसत्तन

वीर सातरत्निविततांगुलहाथ रत्निकहिये एतलेसातहाथऊंचापणेहुया । सातवर्षधरपर्वतकहिये भरतादिकक्षेत्र तेहनाधरणहारकह्या । मर्यादाकारीतिकहे ॥ भषा ॥
छे । भरतक्षेत्र हिमवंतक्षेत्र मर्यादाकारीतेलघुहिमवंतपर्वत हिमवंतक्षेत्र हरिवर्षक्षेत्र मर्यादाकारी तेमहाहिमवंत पर्वत हरिवर्षक्षेत्र महाविदेह मर्यादा
कारी रूपीनिषधपर्वत महाविदेह रम्यकक्षेत्रमर्यादाकारी निषधनीलवंतपर्वत रम्यक ऐरण्यवतक्षेत्र मर्यादाकारीरूपीपर्वत ऐरण्यवतऐरवत क्षेत्र मर्यादा
कारी शिखरीपर्वत । पूर्वापर महाविदेह मर्यादाकारी मेरुपर्वत । जंबूद्वीपमांहिसातवासाकहिये सातक्षेत्रछे तेकहेछे भरतक्षेत्र मनुष्यनो १ हेमवंतक्षेत्रय
गलियांनूं२ हरिवर्षक्षेत्रयुगलियांनूं ३ महाविदेहक्षेत्रचोथो कर्मभूमियामनुष्यनो ४ रम्यकक्षेत्रयुगलियांनूं ५ एरण्यवंतक्षेत्रयुगलियांनो ६ एरवतक्षेत्रमनुष्यनो ७
क्षीणसर्वथापिक्षयगयोछे मोहनीकर्म जेहनों एहवभगवंतपूज्यती मोहनीयकर्म वरजोनें सातकर्मनी प्रकृति ज्ञानावरणीय १ । दर्शनावरणीय २ । वेदनी

अभिजिदादीनि सप्तनक्षत्राणि पूर्वद्वारिकाणि पूर्वदिशि येषु गच्छतः शुभंभवति । एव मश्विन्यादीनि दक्षिणद्वारिकाणि पुष्यादीन्य परद्वारिकाणि स्वा त्यादी न्युत्तरद्वारिकाणीति सिद्धांतगतमिहतुमतान्तरमाश्रित्यकृत्तिकादीनिसप्तपूर्वद्वारिकादीनिभणितानि चंद्रप्रज्ञप्तौतुबहुतराणिमतानि दर्शितानीहार्थं ॥ टीका ॥

स्कन्नादाहिणदारिआ प० अणुराहाइआसत्तनक्खत्ताअवरदारिया प० धणिठाइआसत्तनक्खत्ता उत्तरदारि या प० पाठांतरेण । अभीयाइयासत्तनक्खत्ता प० इमीसेणंरयणप्पभाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सत्तपलिउवमाइंठिई प० तच्चाएणंपुढवीएनेरइयाणंउक्कोसेणंसत्तसागरोवमाइंठिई प० चउत्थीएणंपुढवीए नेरइयाणं जहन्नेणंसत्तसागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणंदेवाणंअत्थेगइयाणं सत्तपलिउवमाइंठिई प० ॥ मूल ॥

य ३ । आउखो ४ । नामकर्म ५ । गोत्रकर्म ६ । अंतरायकर्म ७ । एहउदयकालेंवेदे भोगवें मघानक्षत्रना सातताराकह्या कृत्तिकाआदिलेईनें सातनक्षत्र पूर्वद्वारिकाकह्या पूर्वदिशिजाणहारने भलुंथाय । मघादिकसातनक्षत्र दक्षिणद्वारिकाकह्या । अनुराधादिक सातनक्षत्र पश्चिमद्वारिकाकह्या । धनिष्ठादिक सातनक्षत्रउत्तरद्वारिकाकह्या । पाठांतरेकरीकहियेछे । अभिजिदादिक सातनक्षत्रपूर्वद्वारिका अश्विनीथी सातनक्षत्र दक्षिणद्वारिका पुष्यादिकसातनक्षत्र पश्चिमद्वारिका स्वातिआदिक सातनक्षत्र उत्तरद्वारिकायहमूलमतजांणिवो एणीयेरत्नप्रभापहिली पृथिवीनेविषें केतलाएक नारकीनोसातपल्योपममध्यम आउखोकह्यो । तीजीनरकपृथिवीनेविषें नारकीनोउत्कृष्टोसातसागरोपम आउखोकह्यो । चउथीनरक पृथिवीनेविषें नारकीनो सातसागरोपमजघन्य आउखोकह्यो । असुरकुमार भवनपती केतलाएकदेवतानो सातपल्योपम आउखोकह्यो । सौधर्मईशानदेवलोकनेविषें केतला एकदेवतानूंसातपल्योपम ॥ भाषा ॥

सोहम्मीसाणेसुकप्पेसुत्र्प्रत्येगइयाणं देवाणंसत्तपलिउवमाइंठिई प० सणंकुमारेकप्पे देवणंउक्कोसेणंसाइरेइंगा सत्तसागरोवमाइंठिई प० मांहिंदेकप्पेउक्कोसेणंसाइरेगाइंसत्तसागरोवमाइंठिई प० बंभलोएकप्पेत्र्प्रत्येगइ याणंदेवाणंसत्तसागरोवमाइंठिई प० जे देवा समं समप्पभं महप्पभं पभासं भासुरं विमलं कंचणकूडं सणं कुमारवडिंसगं विमाणं देवत्ताउएववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणंसत्तसागरोवमाइंठिई प० तेणं देवा सत्तएहं त्र्प्रद्धमासाणं त्र्प्राणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं सत्तहिंवाससहस्सेहिं त्र्प्रा हारठे समुपज्जइ संतेगइयाभवसिद्धियाजीवा जे सत्तहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति जावसव्वदु ॥ मूल ॥

आउखोकह्यो । बीजासनत्कुमार देवलोके देवतानोउत्कष्टो सातसागरोपम आउखोकह्यो । माहेंद्रचउथे देवलोके देवतानोउत्कष्टो झांझेरोसातसागरोप म आउखोकह्यो । ब्रह्मपाचमे देवलोके केतलाएकदेवतानो सातसागरोपमआउखोकह्यो । सनत्कुमारदेवलोके जेदेवता सम १ । समप्रभ २ । महाप्रभ ३ । प्रभास ४ । भासुर ५ । विमल ६ । कंचनकूट ७ । सनत्कुमारावतंसक विमान ८ । एहआठविमाननेविषें जेदेवताउपनाछे तेहदेवतानों उत्कष्टोसात साग रोपम आउखोकह्यो । तेहदेवता सातमें पखवाडे सासोसासले घणीमासलेवे नीचोसासलेवे । तेहदेवताने सातवे वर्षसहस्त्रे सातहजारवर्षे आहारनीं अ पेक्षाउपजेछे केतलाएकभव्यजीव जेहसातभवनेआंतरे सीझस्ये बूझस्यें मूंकास्ये सर्वदुक्खनो अंतकरिस्ये मोक्षजास्ये॰इति सातमोठाणोसमत्तं ॥ ७ ॥ ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

इति स्थितिसूत्रेसमादीनिमष्टौविमानानामानीति ॥ ७ ॥ अथाष्टमस्थानकंव्याख्यायते। सुगमंचैत नवरं मिहमदस्थानप्रवचनमातृचैत्यसूत्रजंबू शाल्मलीजगतीकेवलिसमुद्घातगणधरनक्षत्रार्थानिसूत्राणिनव स्थित्यर्थानिषट् उच्छ्वासाद्यर्थानिचोणीति। तत्रमदस्याभिमानस्य स्थानानिजात्यादीनितान्येव मदप्रधानतयादर्शयन्नाह जाइमएइत्यादि जात्यामदोजातिमदएवमन्यान्यपि अथवामदस्यस्थानानितान्येवाह जाइमएइत्यादिव्यपदेशःतथैव तथाप्रवचनस्यद्वादशां गस्य तदाधारस्यवा संघस्य मातरइव प्रवचनमातर ईर्यासमित्याद्यो द्वादशांगेभिहिता आश्रित्य साच्चात्प्रसंगतोवाप्रवर्त्तते भवतिचयतो यत्प्रवर्त्तते तस्यतदा श्रित्वमातृकल्पतेति संत्रपचेतु यथा शिशुर्मातरममुंच नात्मलाभंलभते एवंसंघस्तामुंचत्संघत्वंलभते नान्यथेतोर्याभिमित्यादीनांप्रवचनमातृकल्पमेवेति तथा

॥ मूल ॥

रक्काणमंतंकरिस्संति ॥ ७ ॥ अठमयठाणा प० तं० जातिमए कुलमए बलमए रूवमए तवमए सुय मए लाभमए इस्सरियमए अठपवयणमायाउ प० तं० ईरियासमिई भासासमिई एसणासमिई आयाण

॥ भाषा ॥

हिवे आठमोठाणोकहेछे। आठमदनास्थानकआश्रय तेमदस्थानककह्या। तेकहेछे जातिमदजातितेमातृपक्ष तेणेकरीमद अभिमान तेजातिमद १। इमकु लजेपितृपक्षतेणेकरीमद तेकुलमद २। बलते शरीरनो सामर्थ्यपणो ३। रूपतेसौंदर्यपणो ४। तपतेछठ आठमादिक ५। श्रुतजेशास्त्र घणोंभणे तेणेकरीम द ६। लाभतेफलप्राप्ति तेणेकरीमद ७। ऐश्वर्यतेठकुराई ८। यह आठमदकह्या। आठप्रवचनमाता प्रवचनद्वादशांगी अथवाद्वादशांगनं आधारतेसंघ तेह ने मातासरिखो माताहितकारणी ते प्रवचनमाता कहीये। तेकहेछे ईर्यासमिति चालतांजीवने जोईचाले तेईर्यासमिति १। भाषानिवद्यबोलेते भाषासमिति २। ४२ दूषणटालो आहार भातपाणीलेवे तेएषणासमिति ३। उपकरणपूंजोलेवो मूंकवोते आदानसमिति ४ मलमूत्र पूंजोनिर्दोष थंडिले

|| टीका ||

व्यंतरदेवानांचैत्यवृक्षास्तन्नगरेषु सुधर्मादिसभानामग्रतो मणिपीठिकानामुपरि सर्वरत्नमया छत्रचामरध्वजादिभिरलंकृताभवन्ति। तेचैवंश्लोकाभ्यामवगन्त

व्याः कलंबोउपिसायाणं वडोजक्खाणचेइय। चुलसीभूयाणंभवे रक्खसाणंतुकंडउय १ असोगोकिंनराणंच किंपुरिसाणयचंपओ नागरुक्खोभुयंगाणं गंधव्वाण

|| २१ || यतुंबुरुत्ति || २ || तथा जंबुत्ति उत्तरकुरुषु जंबूवृक्षः पृथिवीपरिणामः सुदर्शनेतितन्नाम एवंकूटशाल्मलीवृक्षविशेषः एवं देवकुरुषु गरुडजातीयस्यवेणुदेवाभि

|| मूल ||

जंऽमत्तनिक्खेवणासमिई उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपारिठावणियासमिई मणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती

वाणमंतराणंदेवाणंचेइयरुक्खाअठजोयणाइंउड्ढं उच्चत्तेणं प० जंबूणंसुदंसणाअठजोयणाइंउड्ढं उच्चत्तेणं प०

कूडसामलीणं गरुलावासे अठजोयणइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० जंबुद्दीवस्सणं जगई अठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं

प० अठसामइए केवलिसमुग्घाए प० तं० पढमेसमएदंडंकरेइ बीएसमए कवाडंकरेइ तइएसमए मंथंकरेइ

|| भाषा ||

परिठवे तेपारिठावणियासमिति ५। मननोगोपिवो ठामेराखवो तेमनोगुप्ति १ इमवचननोगोपिवो २ इमजकायानो गोपिवो ३ । वाणमंतरदेवतानाचैत्य

वृक्ष तेहने निकटवरत्तोवृक्षतेचैत्यवृक्ष जेहव्यंतरेंद्रना घरआगलवृक्ष छत्रकरीरह्याछे तेहचैत्यवृक्ष आठयोजनऊंचा ऊंचपणेकह्या। हिवे उत्तरकुरुक्षेत्र नेमां

हि जंबूवृक्ष पृथिवीपरिणाम सुदंसणाएहवेनामे अणाढियादेवनोठाम आठयोजनऊंचोऊंचपणेकह्यो निषधपर्वतहेठे देवकुरुक्षेत्रमांहि शाल्मलीवृक्ष गरुड

जातीय वेणुदेवतानो आवासभूत तेहआठयोजनऊंचोऊंचपणेकह्यो जंबूद्वीपनें चउफेरजगतीछे जिमनगरनेचउफेर गढहोये तिमतेजगती आठयोजनऊं

चोकह्यो। केवलो छेहडे अंतर्मुहूर्त्त आउखोबके अघातियाकर्म वेदनो १। नाम २। गोत्र ३। आयु ४। बराबर करिवानेअर्थे आठसमयनो केवलसमुद्घा

धामस्यदेवस्याशामदति । जगतीजंबूद्वीपनगरस्यप्राकारकल्पापालीति । तथा पार्श्वस्यार्हतस्त्रयोविंशतितमस्तीर्थंकरस्य पुरिषादाणीयस्सत्ति पुरुषाणांमध्ये आदानीयआदेयः पुरुषादानीय स्तस्याष्टौगणाः समानवाचनाक्रिया साधुसमुदायाः अष्टौगणधरास्तन्नायकाः सूरयः । इदंचैतत्प्रमाणं स्थानांगे पर्यूषणकल्पे च श्रूयते केवलमावश्यके अन्यथा तदप्युक्तम् । दसनवगंगणाणमाणं जिणंदाणंति । कोर्थः पार्श्वस्यदशगणाः गणधराश्च । तदिह द्वयोरल्पायुष्कत्वादिना का

॥ टीका ॥

चउत्थेसमए मंथंतराइपूरेई पंचमेसमए मंथंतराइपडिसाहरई छट्ठेसमए मंथंपडिसाहरई सत्तमेसमएकवाडं परिसाहरई अट्ठमेसमए दंडंपडिसाहरई ततोपच्छा सरीरत्थेभवइ पासस्सणंअरिहापुरिसादाणिअस्स अट्ठ गणा अट्ठगणहराहोत्था तं० सुभेयसुभघोसेय वासिट्ठेबंभयारिय ॥ सोमेसिरीधरेचेव वीरभद्देजसेइय ॥ १

॥ मूल ॥

तकरे । तेकहेछे केवलीपहिलेसमे आत्मप्रदेशवाहिरकाढी दंडाकारकरे हेठेसातमीलगे ऊपरलोकांतलगे विस्तारितेकहेछे । वीजेसमेकपाटकरेदक्षिणलोकांत लगेप्रदेशेकरीपूरे तीजेसमये मंथानकरेच्यारपांखडीनारवाइयानीपरे पूर्वपश्चिम लोकांतलगेपूरे । आत्मप्रदेशविस्तारे । चउथेसमए च्यारविदिशिनाभाग आंतराप्रदेशेकरीपूरे । पांचमेसमयेमंथानना आंतराविदिशे जेपदेशपूर्याछे तेनुकाम.ना प्रदेशनें कान्हे पाछाले छठ्ठेसमये मंथानसंहरे । सातमे समये कपाटसंहरे ९ । आठमेसमये दंडप्रतेसाहरे ८ । तिवारपछे शरीरस्थथाये मूलगेशरीरहोये । श्रीपार्श्वनाथ अरिहंतने पुरुषामांहि आदेयहुकमनाधणीजेह नोवचनसहुनेग्राह्यमानतेह पुरुषादानीय तेहने आठगछने आठगणधरहुया सामान्य वाचना क्रियासाधु समुदाय तेगछतेहना नायक ते गणधर यद्यपि पार्श्वनाथना १०। गणधर आवश्यके कह्याछे परं वे अल्पायुषहुआ तेमाटे आठलख्याछे तेकहेछे शुभेय १ । शुभघोष २ । वासिष्ट ३ । ब्रह्मचारी ४ । सोम ५

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

रणेनाविवक्षानुमंतव्येति सुभेत्यादिश्लोकः तथा अष्टौनक्षत्राणि चन्द्रेणसार्द्धम्प्रमर्दं चन्द्रोमध्येनतेषांगच्छतीत्येवंलक्षणंयोगंसंबंधंयोजयन्ति कुर्वन्ति अत्रार्थेऽभिहि
तं श्लोकत्रियम् पुणव्वसुरोहिणीचित्ता महाजेट्ठणुराहकत्तियविसाहा चंदस्सयजोगति । यानिच दक्षिणोत्तरयोगीनि तानि प्रमर्दयोगीन्यपिकदाचिद्भवन्ति
यतोलोकश्रीटीकाक्षतोक्तं । एतानिनक्षत्राण्युभययोगीनि चन्द्रस्योत्तरेणदक्षिणेनच युज्यन्ते कदाचिच्चंद्रेण भेदमप्युपयान्तीति ॥ तथार्चिरादीन्येकादशविमान

॥ मूल ॥

अट्ठनक्खत्ताचंदेणं सद्धिंपमद्दंजोगंजोएति तं० कत्तिया १ रोहिणी २ पुणव्वसु ३ महा ४ चित्ता ५ ।
विसाहा ६ अणुराहा ७ जेट्ठा ८ । इमीसेणंरयणप्पहाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठपलिओवमा
इं ठिई प० चउत्थीएपुढवीए अत्थेगइयाणंनेरइयाणंअट्ठसागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थे
गइयाणं अट्ठपलिओवमाइंठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं अट्ठपलिओवमाइंठिई प०
बंभलोएकप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं अट्ठसागरोवमाइंठिई प० जेदेवा अच्चिं १ अच्चिमालिं २ वइरोयणं

॥ भाषा ॥

श्रीवर ६ । वीरभद्र ७ । यशोभद्र ८ । आठनक्षत्रचंद्रमासाथे प्रमर्दकयोगयोगे साथकरे तेकहैछे । कृत्तिका १ । रोहिणी २ । पुनर्वसु ३ । मघा ४ । चित्रा ५
विशाखा ६ । अनुराधा ७ । ज्येष्ठा । एणीयेरत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो आठपल्योपम आउखोकह्यो । चउथीनरक पृथिवीने विषेकेतलाएक
नारकीनो । आउसागरोपमआउखूंकह्यो असुरकुमारदेवतानोकेतलाएकनो आठपल्योपमआउखोकह्यो सौधर्मईशान देवलोकनेविषे केतलाएकदेवतानो

नामानोति ॥ ८ ॥ अथ नवमस्थानकं सुखावबोधम् । नवरमिह ब्रह्मगुप्ति १ तद्गुप्ति २ ब्रह्मचर्याध्ययन ३ पाखोयंसूत्राणांचतुष्टयम् ज्योतिष्कार्थंच यमस्य १ भोम २ सभा ३ दर्शनावरणार्थंचतुष्टयं खित्याद्यर्थानि तथैव तत्र ब्रह्मचर्यगुप्तयो मैथुनविरति परिरक्षणोपायाः नोस्त्रीपशुपंडकैः संसक्तानि संकी ॥ टीका ॥

पभंकरं ३ चंदाभं ४ सूराभं ५ सुपइठाभं ६ अग्गिग्गाभं ७ रिठाभं ८ अरुणाभं ९ अरुणुत्तरवडिंसगं वि माणं देवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणं अठसागरोवमाइंठिई प० तेणंदेवा अठण्हंअठमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणंदेवाणं अठहिंवाससहस्सेहिं आहारठेसमुपज्जइ संतेगइयाभवसिद्धियाजीवा जे अठहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति जावअंतंकरिस्संति ॥ ८ ॥ नवबंभचेरगुत्तीउ प० तं० नोइत्थीपसुपंडगसंसत्ताणिसिज्जासणाणि सेवित्ताभवइ नोइत्थीणंकहंकहित्ता भ ॥ मूल ॥

आठपल्योपमआउखोकह्यो ब्रह्मलोके पांचमे कल्पे केतलाएक देवतानों आठसागरोपमआउखोकह्यो । पांचमेदेवलोकें जेदेवता अर्चि १ । अर्चिमाली २ । वैरोचन ३ । प्रभंकर ४ । चंद्राभ ५ सूराभ ६ । सुप्रतिठाभ ७ । अग्निगाध ७ रिष्टाभ८ । अरुणाभ १० । अरुणोत्तरावतंसक ११ । एम ११ विमाने देवता पणे उपनाछे । तेहदेवतानो उत्कृष्टो आठसागरोपम आउखोकह्यो तेहदेवता आठपखवाडे श्वासोस्वासले ऊंचोसासले नीचोस्वासले नीचोस्वासमूके तेहदेव ताने आठवर्षसहस्रे गये आहारनोअर्थउपजे केतलाएकभव्यजीव जेआठभवनेआंतरे सोभस्ये बूझस्ये मूकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरीस्ये । इति आठमोठाणोस मस्तो ॥ ८ ॥ हिवेनवमोअधिकार लिखियेछे । नवब्रह्मचर्य गुप्ति ब्रह्मचर्यरूप वृक्षने वाडिमोपरें राखिवानो उपाय ते ब्रह्मचर्य गुप्ति कहिये ॥ भाषा ॥

र्वाणि शय्यासनानि शयनीय विष्टराणि वसत्यासनानि वासेवसयिता भवतीत्येका १ नोस्त्रीणां कथा कथिताभवतीति द्वितीया २ नोस्त्रीगणान् स्त्रीसमुदा ॥ टीका ॥
यान् सेवयिता उपासयिता भवतीति तृतीया ३ नोस्त्रीणा मिंद्रियाणि नयननासा वेशादीनि मनोहराणि आक्षेपकरत्वात् मनोहराणि रम्यतया आलो
कयिता दृष्टामि ध्याता तदेकाग्रचित्ततया दृष्टैवभवतीति चतुर्थी १४ नोप्रणीतरसभोजी गलत्स्नेहरस बिंदुकस्य भोजनस्य भोजको भवतीति पंचमी। नो
पानभोजनस्यातिमात्रमप्रमाणं यथा भवत्येव माहारकः सदाभवतीति षष्टी। नोपूर्वरतं पूर्वक्रीडित मनुस्मर्त्ताभवति रतंमैथुनंक्रीडितंस्त्रीभिः सहतदन्याक्री
डेतिसप्तमी। नोशब्दानुपाती नोरूपानुपाती नोगंधानुपाती नोरसानुपाती नोस्पर्शानुपाती नोऽ्भोकानुपाती कामोद्दीपकान् शब्दादीन् आत्मनोवर्णवादंच

वइ नोइत्थीणं गणाइं सेवित्ता नवइ नो इत्थीणं इंदियाणि मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता निज्झाइत्ता ॥ मूल ॥
नो पणीयरसभोई नो पाणभोयणस्स अइमायाए आहारइत्ता नो इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं समर

ते कहेछे। नहो स्त्रीपशुपंडक संसक्त व्यासशयनपल्यंकादिक आसन ते बाजोटादिकसेविताहुये। स्त्रीनीकथावार्तानकहे। स्त्रीना समुदायने सेवेनहो ॥ भाषा ॥
स्त्रीना इन्द्रिय नयन नासिकादिक मनोहर मनोरमनदेखे एकाग्रचित्तध्यायेंनहो। प्रणीतरसभोजी नहोय गलत्स्नेहरसबिंदुजिमेनहो पाणीसरस भोज
न अधिकमात्राएअधिकजीमे नहीं बत्रीसकवलउपरांत जीमेनहो स्त्रीने पाछल्यासंभोगपूर्वक्रीडा संभारे नहो नशब्दानुपाती शब्दसरागी गीतादिकप्रते
अनुरागीथायनसांभले एमजरूडारूपजोवे नहो रूडागंधनलेवे न रूडारसनोस्वादकरे न रूडास्पर्शपोताने शरीरेलगाडे आत्मानी आघा नवांछे एतलेश्रृं

मानुसरतीत्यर्थः इत्यष्टमी । सोमातसौख्ये प्रतिबद्धश्चापि भवति सातासातवेदनीयादुदयमाप्य प्रोद्यत्सौख्यं तत्तया अनेनच प्रशमसुखस्य व्यदास इतिनवमो इदंच व्याख्यानंवाचनाद्वयानुसारेणकृतं प्रत्येकं वाचनयोरेवंविधस्त्वभावादिति तथा कुशलानुष्ठान ब्रह्मचर्यं तत्प्रतिपादकान्यध्ययनानि ब्रह्मचर्याणि तानि चा चारांगप्रथमश्रुतस्कंध प्रतिबद्धानीति तथा अभिजित् नक्षत्रं सातिरेका नवमुहूर्त्तांश्चंद्रेण सार्द्धयोगं संबंधं योजयति करोति सातिरेकत्वंच तेषां चतुर्विंशो त्यामुहूर्त्तस्य द्विषष्ठिभागैः षट् षष्ट्याच द्विषष्टिभागस्य सप्तषष्ठिभागानामिति । तथाअभिजिदादीनि नवनक्षत्राणि चंद्रस्योत्तरेण योगंयोजयंति तत्रोत्तर

॥ टीका ॥

इत्तान्नवइ नोसद्दाणुवाई नोरूवाणुवाई नोगंधाणुवाई नोरसाणुवाइ नोफासाणुवाई नोसिलोगाणुवाई नो सायासोक्खपडिबद्धेयाविभवइ नवबंभचेरअगुत्तिउ प० तं० इत्थीपसुपंडगसंसत्ताणं सिज्जासणाणंसेवणया जावसायासुक्खपडिबद्धेयाविभवइ नवबंभचेरा प० तं० सत्थपरिन्ना लोगविजउ सीउसणिज्जं सम्मत्तं आयंती धुतं विमोहायणं उवहाणसुत्तं महपरिन्ना पासेणंअरहापुरिसादाणीए नवरयणीउ उड्ढं उच्चत्तेणंहो

॥ मूल ॥

गार नकरे साता सुखनेंविषे प्रतिबद्ध नहोयें न डूबीरहै नवब्रह्मचर्यनी अगुप्ति नवेप्रकारे ब्रह्मचर्य नरहै तेकहैछे । स्त्रीपशुपंडके संसक्तथ्यासजे शय्यापल्यंका दिक आसनबाजोटादिक तेहनेसेवे नही एमपाछल्या नवबोल वखाण्याछे ते उपराठालीजे एतले ब्रह्मचर्यनी अगुप्तिथाय नउमूंबोले जेसातासुखनेविषे प्रतिबद्ध खूंचीरहे नवब्रह्मचर्य एतले आचारांगसूत्रना प्रथमश्रुतस्कंधना नवअध्ययन कह्या तेकहैछे । शस्त्रपरिज्ञा १ । लोकविजय २ । शीतोष्णीय ३ सम्य क्त ४ । आयंती ५ । मतांतरे लोकसार धूताध्ययन ६ । मोहाध्ययन ७ । उपधानसूत्र ८ । महापरिज्ञा ९ । पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषमांहि प्रधाननवरत्नि

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

स्वांदिग्विस्थितानि दक्षिणार्धास्थित चंद्रेण सहयोगमनुभवंतीतिभावः बहुसमरमणिज्जाओ इति अत्यंतसमो बहुसमो ऽत एवरमणीयो ऽयतस्माद्भूमिभा गात्तेपर्वतापेक्षया नापि स्वाधारापेक्षयेति तात्पर्यं आबाहाएत्ति अंतरेकृत्वेतिशेषः उवरिल्लेत्ति उपरितनं ताराख्पं तारकजातीयं चारंभ्रमणं चरतिकरोति नवजोयणियत्ति नवयोजनायामा एवप्रविसन्ति लवणसमुद्रे यद्यपि पंचयोजनसत्कामत्स्याः संभवंति तथा नदीमुखेषु जगतीरंध्रभित्त्यैनैव तावत्प्रमाणाः ज

॥ मूल ॥

त्या अभीजिनक्खत्तेसाइरेगेनवमुहुत्ते चंदेणंसद्धिंजोगंजोएइ अभीजियाइयानवनक्खत्ता चंदस्सउत्तरेणंजोगं जोएइ तं० अभीजिसवणोजावभरणी इमीसेणंरयणप्पभाएपुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ नवजो यणसए उड्ढं अबाहाएउवरिल्लेताराख्वे चारंचरइ जंबूद्दीवेणंदीवे नवजोयणियामच्छापविसिंसुवा ३ विजय

॥ भाषा ॥

नवहाथ जंचपणे देहहुया अभीचनक्षत्राभेरी नवमुहूर्तलगे चंद्रमासाथेंयोग जोजे संबंधकरे अभीचिथकी मांडीनव नक्षत्र चंद्रमाने उत्तरदिसेयोगजोजेसं बंधकरें चाले तेकहेछे। अभीचि १। श्रवण २। धनिष्ठा ३। शतभिषा ४। पूर्वभाद्रपद ५। उत्तराभाद्रपद ६। रेवती ८। अश्विनी ८। भरणी ९। एनव नक्षत्रजाणिवा। एणीयेरत्नप्रभा पहिलो पृथिवीनो घणोसमो घणोरमणीक जे भूमिभाग भूमिनोऊपरलोभाग तेहथकी नवशतयोजनऊंचे आंतरेएतले पृथि वीथकी नवशतयोजनऊंचो जइयें तिहांऊपरलो ताराख्प एतलेशनैश्वरनोतारोऊंचोछे भ्रमणकरेछे पृथिवीथकी सातसेनेउयोजन तारामंडलछे। ७९० योजने तारा १०। योजनेसूर्य ८०। योजनेचंद्रमा ४। योजनेअठ्ठावीस नक्षत्र ४ योजनबुधनोतारो ३ योजनमंगल ३ योजनशनैश्वर सर्वमिली नवसेयोजन थया। जंबूद्दीपमांहीं नवयो जनलांबामच्छपेसेछे लवणसमुद्रमांहि पांचसेयोजननांमच्छछे एणेजगतीनेछिद्रे नदीमुखें नवयोजननामच्छ जंबूद्दीपमांही

गतौरंध्रो चिंत्येनएतावानेव प्रवेशइति लोकानुभावोवायमिति विजय द्वारस्यजंबूद्वीपसंबंधिन: पूर्वदिग्व्यवस्थितस्य एगमेगाएत्ति एकैकस्मिन् बाहाएत्ति बाहौ ॥ टीका ॥

रस्सणंदारस्सएगमेगाए बाहाए नवनवभोमा प० वाणमंतराणं देवाणं सभाउसुहम्माउनवजोयणाइंउड्ढं उ च्चत्तेणं प० दंसणावरणिज्जस्सणंकम्मस्सनउत्तरपगडीउ प० तं० निद्दा निद्दानिद्दा पयला पयलापयला थीणद्धी चक्खुदंसणावरणे अचक्खुदंसणावरणे उहिदंसणावरणे केवलदंसणावरणे इमीसेणं रयणप्पभाएपुढ वीए अत्थेगइयाणंणेरइयाणं नवपलिउवमाइंठिई प० चउत्थीएपुढवीए अत्थेगइयाणंनेरइयाणं नवसागरो वमाइंठिई प० असुरकुमाराणंदेवाणं अत्थेगइयाणं नवपलिउवमाइंठिई प० सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्थे ॥ मूल ॥

बाहोमांहीआवे जंबूद्वीपना विजयद्वारने एकेक बाहानेपासे नवनवभोमानगरछे तथा उत्तठामकह्याछे वाणमंतरदेवनी सभा सुधर्मा नवयोजन उंचीउंच पणेंकहीजाणवी। दर्शनावरणीयबीजोकर्म तेहकर्मनी नव उत्तरप्रकृतिकही तेकहेछे सुखें जागे तेनिद्रा बइठांआवे ते प्रचला २ दुखेजागे तेनिद्रानिद्रा ३ चालतां आवे ते प्रचलाप्रचला ४। थीणद्धी अर्द्धवासुदेवनो बलहुवे ५। चक्खुदंसणकहिये आंखतेहनो आवरण पडल तेचक्षुदंसणावरण ६। चक्षुविनाशेष थाकतां च्यारइन्द्रिय तेहनां आवरण तेअचक्षुदंसणावरण ७। अवधि दंसणावरण ८। केवलदंसणावरण ९। एणीयेरत्नप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएक नार कीनो नवपल्योपम आउखोकह्यो। चउथी नरकपृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो नवसागरोपम आउखोकह्यो असुरकुमार देवनो केतलाएकनो नवपल्यो पमआउखोकह्यो। सौधर्मईशानदेवलोकनेविषे केतलाएक देवतानो नवपल्योपम आउखोकह्यो। ब्रह्मदेवलोकनेविषे केतलाएक देवतानो नवसागरोपम ॥ भाषा ॥

॥ २५ ॥

पाद्मं भोमानि नवभूमिकानि नगराणीति एकोननगराणीत्येके विशिष्टस्थानानीत्यन्ये तथा व्यंतराणां सभा सुधर्मा नव योजनानिऊर्द्ध्वमुच्चत्वेन तथा पद्मा ॥ टीका ॥

गइयाणं देवाणं नवपलिउवमाइं ठिई प० बंभलोएकप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं नवसागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा पम्हं सुपम्हं पम्हावत्तं पम्हप्पभं पम्हकंतं पम्हवण्णं पम्हलेसं पम्हज्झयं पम्हसिंगं पम्हसिद्धं पम्हकूडं पम्हुत्तरवडिंसगं तहा सुज्जं सुसुज्जं सुज्जावत्तं सुज्जकंतं सुज्जप्पभं सुज्जलेसं सुज्जवण्णं सुज्जज्झयं सुज्जसिंगं ॥ मूल ॥ सुज्जसिद्धं सुज्जकूडं सुज्जुत्तरवडिंसगं रुइल्लं रुइल्लावत्तं रुइल्लप्पभं रुइल्ललेसं रुइल्लवण्णं जावरुइल्लुत्तरवडिंसगं विमाणंदेवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणं नवसागरोवमाइंठिई प० तेणंदेवा नवण्हंअद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणंदेवाणं नवहिंवाससहस्सेहिं आहारठे समुपज्जइ संतेगइयाभव

आउखोकह्यो। ब्रह्मलोके जेदेवता पद्म १। सुपद्म २। पद्मावर्त ३। पद्मप्रभ ४। पद्मकांत ५। पद्मवर्ण ६। पद्मलेश्य ७। पद्मध्वज ८। पद्मशृंग ९। प द्मसिद्ध १०। पद्मकूट ११। पद्मोत्तरावतंसक १२। एम १२ विमाने तथावली। सूर्य १। सूर्यावर्त २। सूर्यप्रभ ३। सूर्यकांत ४। सूर्यवर्ण ५। सूर्यलेश्य ६ ॥ भाषा ॥ सूर्यध्वज ७। सूर्यशृंग ८। सूर्यसिद्ध ९ सूर्यकूट १०। सूर्योत्तरावतंसक ११। तथावली रुचिर १। रुचिरावर्त २। रुचिरप्रभ ३। रुचिरकांत ४। रुचिरवर्ण ५ रुचिरलेश्य ६। रुचिरध्वज ७ रुचिरशृंग ८ रुचिरसिद्ध ९ रुचिरकूट १० रुचिरावतंसक ११ एणेविमाने जेहदेवतापणे ऊपमाछे। तेहदेवतानी नवसागरो पमआउखोकह्यो। तेहदेवता नवअर्द्धमासे पखवाडे स्वासोस्वासले घणोस्वासोस्वासले ऊंचोस्वासले नीचोस्वासले तेहदेवताने नववर्ष सहस्रे आहारनो अर्थ

दीनिहादश सूर्याद्यपि हादशैव कविरादीन्येकादश ॥ ९ ॥ दशस्थानकं सुबोधमेव तथापि किंचिल्लिख्यते इहपंचविंशतिसंभाणि तत्रलाघवं ॥ टीका ॥
द्रव्यतो ल्पोपधिना भावतो गौरवत्यागः संविग्नमनोज्ञ साधुदानं वा ब्रह्मचर्येण वसनमवस्थानं ब्रह्मचर्यवास इति तथाचित्तस्य समस्तसमाधानं प्रशांतता

सिझियाजीवा जे नवहिंनवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ ९ ॥ ॥ मूल ॥
दसविहेसमणधम्मे प० तं० खंती १ मुत्ती २ अज्जवे ३ मद्दवे ४ लाघवे ५ सच्चे ६ संजमे ७ तवे ८ चि
याए ९ बंभचेरवासे १० । दसचित्तसमाहिठाणा प० तं० धम्मचिंतावासे असमुप्पन्नपुव्वेसमुप्पज्जिज्जा स

उपजे । केतलाएक भव्यजीव नवें भवग्रहणे नवभवने आंतरें सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनोअंतकरिस्ये २५८ इति नवमू ठाणूंसम्मत्तं ॥ ९ ॥ ॥ भाषा ॥
हिवेदशनोंअधिकारलिखेछे श्रमणकहिये साधुतेहनो धर्मदशप्रकारे तेश्रमणधर्मकह्यो तेकहेछे । क्षमाक्रोधनिग्रह १ । मुक्तिनिर्लोभपणो २ आर्जवमायानिग्र
ह ३ । मार्दवमाननिग्रह ४ । लाघव हलुआपणूं द्रव्यथकोहलको जेअल्पउपधि भावहलको गौरवत्रयत्याग ५ । सत्यभाषो ६ । संयम १७ प्रकारे ७ । तप १२
प्रकारे ८ । त्याग साधूनेआहारादिकदेवो ९ । ब्रह्मचर्यनेविषेवसिवो १० । दशप्रकारेंचित्तना मननां समाधि प्रशांतपणो तेहनास्थानक आश्रय तेचित्तसमा
धिस्थानक कहिये तेकहेछे धर्मनोचिंता जीवादिकपदार्थनो उपयोग तथा उपजिवो मरवो तेहनो स्वभावतेधर्म तेहनो चिंतविवो अथवाश्रुत चारित्रलक्षणध
र्मनो चिंतावासे कहतां जेहपुण्यवंतने एहवोचिंतनहोयतेधर्मनो चिंताकहीछे । असमुत्पन्नपूर्वा पूर्वेंअतीतकाले नहो उपनी तेहधर्मनोचिंता उपन्यापछे सव
र्धमजोवादिद्रव्यस्वभाव अथवाश्रुतचारित्र जाणिवए ज्ञपरिज्ञायेकरी जाणे प्रत्याख्यानपरिज्ञायेकरी छांडवायोग्य कर्महुए तेछांडीये तेधर्मचिंतापहिलो स

तस्यस्थानान्याश्रया भेदावा चित्तसमाधिस्थानानि तत्रधर्माजीवादिद्रव्याणामनुयोगोत्पादादय: स्वभावास्तेषां चिंतानुप्रेक्षा धर्मस्यवाश्रुतचारित्रात्मकस्य सर्व ॥ टीका ॥
ज्ञभाषितस्य हरिहरादिनिगदितधर्मेभ्य: प्रधानोयमित्येवचिंताधर्मचिंतावा शब्दोवक्ष्यमाणसमाधिस्थानांतरापेक्षया विकल्पार्थ: सइति य:कल्याण भागी
तस्यसाधोरसमुत्पन्नपूर्वा पूर्वस्मिन्नादावतीतकाले ऽनुपजाता तदुत्पादेह्ययार्द्धपुद्गलपरावर्त्तान्ते कल्याणस्यावश्यंभावात् समुत्पद्येत जायेतसकिं प्रयोजनाय चेयम
तन्ताह सर्वं निरवशेषंधर्मं जीवादि द्रव्यस्वभाव मुपयोगोत्पादादिकं श्रुतादिरूपंवा जाणित्तए ज्ञपरिज्ञयाज्ञातुं ज्ञात्वाच प्रत्याख्यान परिज्ञया परिहरणीय
कर्मपरिहर्त्तुमिदमुक्तंभवति धर्मचिंताधर्मध्यानकारणभूता जायतइति इयंच समाधेरुक्तलक्षणस्य स्थानमुक्तलक्षणमेव भवतीति प्रथमं तथास्वप्नस्य निद्रावशवि
कल्पज्ञानस्यदर्शनंसंवेदनंस्वप्नदर्शनं तद्वाकल्याणप्राप्ति सूचकसमुत्पन्नपूर्वं समुत्पद्यते यथाभगवतो महावीरस्याऽस्थिकग्रामे शूलपाणियक्षोपसर्गावसाने किंप्रयो
जनंचेद मित्याह अहातच्चं सुमिणंपासित्तएत्ति यथा येनप्रकारेणतथ्य: सर्वथानिर्व्यभिचार इत्यर्थ: तंस्वप्नं स्वप्नफलमुपचारात्तंद्रष्टुंज्ञातुंअवश्यंभाविनोमुक्त्यादे:
शुभस्वप्नफलस्यदर्शनायसाधो: स्वप्नदर्शनमुपजायत इतिभाव: क्वचित्सुजाणंतिपाठ स्तत्रावितथमवश्य भाविसुयानंसुगतिंद्रष्टुंज्ञातुं सुज्ञानंवा भाविशुभार्थपरि

वुंधम्मंजाणित्तए सुमिणदंसणेवासे असमुप्पन्नपुव्वेसमुपज्जिज्जा अहातच्चंसुमिणंपासित्तए सन्निनाणवासे ॥ मूल ॥

माजि १ तथास्वप्ननोदेखवो जेस्वप्नदीठे महाकल्याणनी प्राप्तिहोस्ये तेकहैछे असमुत्पन्नपूर्वक एहवो पूर्वेदीठोनथी तेस्वप्ननो स्यूंप्रयोजन अहातच्चं सुमिणंपासित्त ॥ भाषा ॥
ए यथातथ्यजूठोनहो एहवोस्वप्ननो फलजाणि वानेअर्थे अवश्यमोक्षजाणहार शुभस्वप्नदेखो चित्तसमाधिपामे जिम श्रीमहावीरस्वामीए छेहलीराजियें १०
स्वप्नपाम्या प्रभाते केवलज्ञानऊपनूं एहबोजूं समाधिठाणूं २ । संज्ञा ज्ञान तेचित्तसमाधि स्थानक मनसहितनें संज्ञीकहियें तेहनूंज्ञान तेजातिस्मरण

॥ टीका ॥

च्छेदसंवेदितुमिति कल्याणसूचका वितथस्वप्नदर्शनाच्चभवति चित्तसमाधिस्थानमिदं द्वितीयं तथासंज्ञानंसंज्ञा साचयद्यपि हेतुवाददृष्टियादः दीर्घकालिकोपदे
शभेदेनक्रमेण विकलेन्द्रिय सम्यगदृष्टिसमनस्क संबंधित्वात्त्रिधाभवति तथाचाह दीर्घकालिकोपदेश संज्ञायाग्राह्येति सायस्यास्ति ससंज्ञीसमनस्कस्तस्यज्ञानं
संज्ञिज्ञानं तच्चेहाविवक्षितसूत्रान्यथा सपपत्तेर्जातिस्मरणमेव से तस्याममुत्पन्नपूर्वंसमुत्पद्येत कस्मैप्रयोजनायेत्याह पुव्वभवेसुमरिएत्ति पूर्वभावांत्स्मर्तुं स्मृतपूर्व
भवस्यसंवेगात्समाधि रुत्पद्यतेइतिसमाधिस्थानमेतत् तृतीयमिति। तथादेवदर्शनं वा [illegible] तस्याममुत्पन्नपूर्वंसमुत्पद्यते देवाहितस्यगुणित्व दर्शनंददति किंफलमि
त्याह दिव्यांदेवर्द्धिप्रधानपरिवारादिरूपां दिव्यांदेवद्युतिंविशिष्टां [illegible] दिव्यं देवानुभावंउत्तमवैक्रियकरणादिप्रभावं द्रष्टुमेतद्दर्शनायेत्यर्थः दे
वदर्शनाच्चागमार्थेषुश्रद्धानाद्यं धर्मेबहुमानश्चभवति ततश्चित्त [illegible] मितिचतुर्थं तथाअवधिज्ञानंवासेतस्यासमुत्पन्नपू

॥ मूल ॥

समुप्पन्नपुव्वे समुपज्जिज्जा पुव्वभवेसुमरित्तए देवदंसणेवासे अग्नमुप्पन्नपुव्वे समुपज्जिज्जा दिव्वं देवाढ्ढि दिव्वं
देवजुत्तं दिव्वंदेवाणुभावंपासित्तए ओहिनाणेवासे असमुप्पन्नपुव्वे समुपज्जिज्जा ओहिणालोगंजाणित्तए ओहिदं

॥ भाषा ॥

कहिये से कहतां तेहने असमुत्पन्नपूर्व पूर्वेऊपनंनथी सेइ अर्थेऊपजे पूर्वभवसंभारवाने अर्थे पूर्वभवसंभरे विशेष संवेगउपजे एत्रीजंचित्तसमाधि स्थानक ३
तथा देवदर्शन सेकहतां तेहनेअसमुत्पन्न पूर्वं पूर्वेउपनो नथी तेहजेने उपजे ते संअर्थेउपजे। दिव्यप्रधान देवतानो ऋद्धिपरिवाररूप प्रधानदेवतानो द्युति
विशिष्ट शरीराभरणदीप्ति प्रधान देवतानो अनुभाव वैक्रिय करिवानी समर्थाई देखवानेअर्थे देवदर्शनथी धर्मनेविषे विशेषआदरहोय तेहथीचित्तसमाधिहु
इ एहचउथूठाणुं ४। अवधिज्ञान तेहजेने पूर्वेनथी ऊपनूं तेहजेने ऊपजे अवधिज्ञानेकरी लोकस्वरूप जाणवाने अर्थे विशिष्टज्ञानथी चित्तसमाधिहोय एणां

॥ टीका ॥

र्वंसमुत्पद्येतकिमर्थंमतआह मणोगतेजाणित्तएइत्याह अवधिनामर्यादया नियतद्रव्यक्षेत्रकालरूपेण लोकंज्ञातुं लोकज्ञानायेत्यर्थः भवतिचविशिष्टज्ञानाच्चित्तस माधिरिति पंचमंतदिति। एवमवधिदर्शनसूत्रमपीतिषष्ठं। तथा मनःपर्यवज्ञानं वासेतस्यासमुत्पन्नपूर्वं समुत्पद्येतकिमर्थमतआह मणोगतभावेजाणित्तए अ र्द्धतृतीयद्वीपसमुद्रेषु संज्ञिनांपंचेन्द्रियाणां पर्याप्तकानांमनोगतान् भावान्ज्ञातुमेतत्ज्ञानायेत्यर्थः इतिसप्तमं। तथाकेवलज्ञानं वासेतस्यासमुत्पन्नपूर्वं समुत्पद्ये त केवलंपरिपूर्णंलोक्यतेदृश्यते केवलालोकेनेति लोकालोकस्वरूपं वस्तुतत्वंज्ञातुं केवलज्ञानस्यच समाधिभेदत्वाच्चित्तसमाधिस्थानता इहवामनस्कतया केवलि नश्चित्तं चैतन्यमवसेय मित्यष्टमं। एवंकेवलदर्शनं सूत्रंनवरंद्रष्टु मितिविशेष इतिनवमं। तथाकेवलिमरणंवाम्रियतेकुर्यात् इत्यर्थः किमर्थमतआह सर्वदुःखप्र

॥ मूल ॥

सणेवासे असमुप्पन्नपुव्वे समुपज्जिज्जा ओहिणालोगंपासित्तए मणपज्जवनाणेवासे असमुप्पन्नपुव्वेसमुपज्जि ज्जा। जावमणोगएभावेजाणित्तए केवलनाणेवासे असमुप्पन्नपुव्वेसमुपज्जिज्जा केवलं लोगं जाणित्तए केवलदं सणावासे असमुप्पन्नपुव्वे समुपज्जिज्जा केवललोयंपासित्तए केवलिमरणंवामरिज्जा सव्वदुक्खप्पहीणाए।

॥ भाषा ॥

चमूंठाणूं ५ अवधिदर्शन सेतेहनेपूर्वे उपनूं नथी तेहजेहने उपजे तेसेअर्थेउपजे अवधिदर्शनेकरी लोकस्वरूपदेखवाने अर्थ एछट्ठंठाणं ६ मनपर्यवज्ञानसेजेहने पूर्वे उपनूंनथी तेहजेहने उपजे तेसेअर्थेउपजे अढाईद्वीपमांही संज्ञी पंचेंद्रियना मनोगतभावजाणे एहवूंज्ञानपामी चित्तसमाधिहोय एसातमूंठाणूं ७ केव लज्ञान सेजेहने पूर्वेउपनूंनथी तेहजेहने उपजवाने अर्थे केवलसकललोकजाणिवानेअर्थे एहचित्तसमाधिनूं आठमूंठाणूं ८ केवलदंसण सेजेहने पूर्वेउपनूंनथी तेह जेहने उपजशाने अर्थेउपजे परिपूर्णलोक देखवाने अर्थे एहचित्तसमाधि नवमूंठाणूं ९ केवलीनेमरणे एतलेकेवलज्ञान उपार्जीनेमरे तेसे अर्थे सर्वदुःख

हाथायेति इदंतुकेवलिमरणं सर्वोत्तमसमाधिस्थानमेवेति दशममिति। तथाअकर्मभूमिकानां भोगभूमिजन्मनां मनुष्याणां दशविधावृक्षक्ति कल्पद्रुमाः। उवभोगत्ताएत्ति उपभोग्यत्वाय उवत्थियत्ति उपस्थिताउपनताइत्यर्थः तत्रमत्तांगकाः मद्यकारणभूताः भिंगत्ति भाजनदायिनः तुडियंगत्ति तुर्यांगसंपादकाः ॥ टीका ॥

मंदरेणपुब्वएमूले दसजोयणसहस्साइं विक्खंभेणं प० अरिहाणं अरिट्ठनेमीदसधणुइंउड्ढं उच्चत्तेणंहोत्या कण्हेणंवासुदेवे दसधणुइंउड्ढंउच्चत्तेणं होत्या रामेणंबलदेवेदसधणुइंउड्ढं उच्चत्तेणंहोत्या दसनक्खत्ता नाणवुड्ढिकरा प० तं० मिगसिरअद्दापुस्सो। तिन्निअपुव्वाइमूलमस्सेसा। हत्योचित्तायतहा। दसवुड्ढिकरायनाणस्स १ अकम्मभूमयाणंमणुस्साणं दसविहारुक्का उवभोगत्ताए उवत्थियाप० तं० मत्तंगयाय भिंगाय तुडि ॥ मूल ॥

थयकेवलिमरणे एह केवलोमरणते सर्वोत्तमचित्तसमाधिस्थानकदशम १० मेरुपर्वत मूलनेविषे दशसहस्रयोजन विष्कंभपणेविहुलपणेकह्यो अरिहंतअरिष्टनेमो बावीसमोतोर्थंकर दशधनुषऊंचपणेहुया कृष्णवासुदेव नवमो तेहनो देहदशधनुषऊंचोऊंचपणेहुयो रामबलदेव बलभद्र दशधनुषऊंचा ऊंचपणेहुया दशनक्षत्र ज्ञाननां वृद्धिकरणहार कह्या भगवंते तेकहेछे मृगशिर १। आर्द्रा २। पुष्य ३ त्रणिपूर्वा पूर्वाफाल्गुनी ४। पूर्वाषाढ ५। पूर्वाभाद्रपद ६। मूल ७ आश्लेषा ८। हस्त ९ चित्रा १०। एह दशनक्षत्र ज्ञाननें वधारेएह मांहि भणवाबेसे तो कांहीं विघ्ननउपजे अकर्म भूमिजिहां धर्मतथा कर्मसंबंधी क्रिया नही तेअकर्मभूमि ५७ अंतरद्वीप अनेत्रीस अकर्मभूमि एवं ८६ क्षेत्र युगलियानां सास्वतांछे। तिहांनां माणसें युगलियानें दशप्रकारेवृक्ष एतले कल्पद्रुम। उपभोगनें अर्थे उपस्थिता समीप आईरह्या यथाभोग्यभावे वांछापूरवे एहवा कह्यातेकहेछे। मत्तंगका मद्यनाकारणभूत आपिवा १ भाजनदातार २ ॥ भाषा ॥

दीवत्ति दीपशिखा: प्रदीपकार्यकारिण: जोइत्ति ज्योतिरग्निस्तत्कार्यकारिणइति चित्तंगत्तिचित्रांगा: पुष्पदायिन: चित्ररसाभोजनदायिन: मण्यंगाआभरण दायिन: गेहाकारा: भवनत्वेनोपकारिण: अनग्नत्वंसवस्त्रत्वं तद्धेतुत्वादनग्नाइति घोषादीन्येकादशविमाननामानीति। अथैकादशस्थानं तदपिगतार्थं नवरं

॥ २८ ॥ अंगा दीव जोइ चित्तंगा चित्तरसा मणिअंगा गेहागारा अनिगिणाय १ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं जहन्नेणं दसजोयणसहस्साइंठिई प० इमीसेणंरयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइ आणं नेरइआणं दसपलियउवमाइंठिई प० चउत्थीएपुढवीए दसनिरयावाससहस्साइं प० चउत्थीएपुढ वीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं उक्कोसेणं दससागरोवमाइंठिई प० पंचमीएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइ याणं जहन्नेणं दससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं जहन्नेणं दसवाससहस्सा

वाजित्रना संपादक ३ दीवा ४ तथा जोतिअग्नि तेहना कार्यकारी ५ फूलदायक ६ भोजनदातार ७ आभरणनादातार ७ घरनेकामआवनार ८ वस्त्रना दातार १० एणीएरत्नप्रभा पहिली पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो जधन्यनो दशसहस्रवर्षनो आउखोकह्यो। एहरत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएकनो दशपल्योपम आउखोकह्यो। चउथीपंकप्रभा पृथिवीनेविषे दसलाख नरकावासा कह्या। चउथी पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनोउत्कृष्टो दससागरोपमो आउखोकह्यो। पांचमो धूमप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो जघन्यनो दससागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमार भवनपतिदेवनूं केतलाएकनूं जघ न्य दशसहस्रवर्षनो आउखोकह्यो। असुरेंद्र चमरेंद्र बलेंद्र वर्जीने बीजाभवनपती देवतानो जघन्य दससहस्रवर्षनो आउखोकह्यो चमरेन्द्र बलेन्द्रनो उत्कृ

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

॥ मूल ॥

इं ठिई प० असुरिंदवज्जाणं भोमिजाणं अत्थेगयाइणं जहन्नेणं दसवास सहस्साइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं दसपलिउवमाइंठिई प० बायरवणस्सइ काइएणं उक्कोसेणं दसवाससहस्साइंठिई प० वाणमंतराणं देवाणं अत्थेगइयाणं जहन्नेणंदसवाससहस्साइंठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं दसपलिउवमाइंठिई प०बंभलोएकप्पे देवाणं उक्कोसेणं दससागरोवमाइंठिई प० लांतकप्पेदेवाणं अत्थेगइयाणं जहन्नेणं दससागरोवमाइंठिई प० जेदेवा घोसं सुघोसं महाघोसं नंदिघोसं सुसरं मणोरमं रम्मं रम्मगं रमणिज्जं मंगलावत्तं बंभलोगवडिंसगं विमाणंदेवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणं दससागरोवमाइंठिई प० तेणंदेवाणंदसण्हंअद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणं

॥ भाषा

ष्ट जघन्य आउखो एकसागरोपम झाझेरोछे। असुरकुमार देवनीकेतलाएकनो मध्यमआउखो दसपल्योपमकह्यो। बादर प्रत्येक वनस्पतीकायनो उत्कृष्ट दससहस्रवर्ष आउखोकह्यो भगवंते। वानव्यंतर देवतानो केतलाएकनो जघन्य दससहस्रवर्ष आउखोकह्यो। सौधर्म ईशानदेवलोकनेविषे केतलाएक देवतनो दसपल्योपम आउखोकह्यो। पांचमे ब्रह्मदेवलोकें केतलानो उत्कृष्टो दससागरोपम आउखोकह्यो। छठेलांतक देवलोकनेविषे केतलाएक देवतानो जघन्य दससागरोपम आउखोकह्यो। पांचमे देवलोके जेहदेवता घोष १ सुघोष २ महाघोष ३ नंदिघोष ४ सुस्वर ५ मनोरम ६ रम्य ७ रम्यक ८ रमणीक ९ मंगलावर्त १० ब्रह्मलोकावतंसक ११ एवंविमाणे देवतापणेउपना तेहनो देवतानो उत्कृष्टो दससहस्रवर्षनो आउखोकह्यो भगवंते। तेहदेवता दसपखवाडे स्वा

निहप्रतिमाद्यर्थानि सूत्राणिसन्ति त्यायार्थानितुतदेति तत्रउपासंतेसेवंते श्रमणान्येते उपासका: श्रावकास्तेषांप्रतिमा: प्रतिज्ञाभिग्रहरूपा: उपासकप्र तिमा: तत्रदर्शनंसम्यक्त्वं तत्प्रतिपन्नश्रावकोदर्शनश्रावक: इहचप्रतिमानांप्रक्रांतत्वेपि प्रतिमाप्रतिमावतोरभेदोपचारा त्प्रतिमावंतोनिर्देश: क्षत: एवमुत्तरपदे

ष्वपि प्रथमश्चश्रावकोदर्शनश्रावक: इहचप्रतिमानां प्रक्रांतत्वेपि प्रतिमाभावार्थ: सम्यग्दर्शनस्य शंकादिशल्यरहितस्याणुव्रतादि गुणविकलस्यायमभ्युपगम: सा प्रतिमाप्रथमेति। तथाक्षतमनुष्ठितं व्रतादीनांकर्म तत्राणुव्रतंज्ञानवांच्छाप्रतिपत्तिलक्षणं येनप्रतिपन्नदर्शनेन सक्षतव्रतकर्माप्रतिपन्नाणुव्रतादिरिति भाव:

देवाणंदसहिंवाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइआ भवसिद्धियाजीवा तेहदसहिंभवग्गहणेहिं सि ज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ १० ॥ एक्का रसउवासगपडिमाउ प० तं० दंसणसावए कयव्वयकम्मे सामाइअकडे पोसहोववासनिरए दियाबंभया

सोश्वास घणोलेइ। उंचोश्वासले नीचोश्वासमूंके तेहदेवतानो दशसहस्रवर्ष गएथके आहारनो अर्थउपजेछे केतलाएक भव्यजीव तेहदशभवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदु:खनो अंतकरिस्ये मोक्षजास्ये इति दशमूठाणूं सम्मत्तं ॥ १० ॥ हिवे ग्यारमो अधिकार लिखियेछे इग्यार उपासक कहतां श्रावकसाधुनो सेवाना करणहार तेहनी प्रतिमा तपविशेष तेकहेछे अनुक्रमे आगलो दंसणते सम्यक्त ते जे आदरे तेदर्शन श्रावककहिये इहां प्रतिमावंत वोचेंभेद नजाणिवो तेमाटे प्रतिमापाठ उचरीने दर्शनश्रावकनो नामलिधोंएम आगलोएतले सम्यक्तना अतिचार शंकादिकटाले तपनो अधिकार यथांत रथी जाणवो एहपहिली दर्शनप्रतिमा १ क्षतव्रतकर्म अणुव्रत जेउचराछे तेहना अतीचार विशेषपणेटाले बीजोप्रतिमा २ सावद्ययोगनो टालिवो निरवद्य

॥ टीका ॥

द्वितीयंद्वितीया। तथासामायिकं सावद्ययोगपरिवर्जन निरवद्ययोगोपसेवनस्वभावं कृतंविहितंदेशतोयेनसामायिककृत श्राहिताग्न्यादिदर्शनात् क्तांतस्योत्त
रपदत्वं तदेवमप्रतिपन्नपौषधस्य दर्शनव्रतोपेतस्यप्रतिदिन मुभयसंध्यंसामायिककरणं मासत्रयंयावदिति तृतीयाप्रतिमेति। तथापोषंपुष्टिंकुशलधर्माणंधत्ते
यदाहारत्यागादिक मनुष्ठानंतत्पौषधं तेनोपसेवनमवस्थान महोरात्रंयावदिति पौषधोपवासइति अथवा पौषधंपर्वदिन मष्टम्यादि तत्रोपवासउक्तार्थः पौष
धोपवासइति इयंव्युत्पत्तिरेव प्रवृत्तिस्तस्यशब्दस्य आहारशरीरसत्कारा ब्रह्मचर्यव्यापारपरिवर्जनेष्विति तत्रपौषधोपवासे निरतआसक्तः पौषधोपवासनिर
तः सएवंविधस्य श्रावकस्यचतुर्थीप्रतिमेति प्रक्रमः अयमत्रभावः पूर्वप्रतिमात्रयोपेतः अष्टमीचतुर्दश्यमावस्या पौर्णमासीष्वाहार पौषधादिचतुर्विधं पौषधंप्रतिप
द्यमानस्यचतुरोमासान् यावत्चतुर्थी प्रतिमाभवतीति तथापंचमीप्रतिमायामष्टम्यादिषु पर्वस्वेकरात्रिकप्रतिमाकारी भवत्येतदर्थंच सूत्रं अधिकृतसूत्रपुस्त
केषुनदृश्यते दशादिषुपुनरुपलभ्यते इतितदर्थउपदर्शितः तथाशेषदिनेषु दिवाब्रह्मचारी रत्तीति रात्रौकिमतआह परिमाणं स्त्रीणातद्भोगानांवा प्रमाणंकृतं
येनसपरिमाणकृतइति अयमत्रभावोदर्शनव्रत सामायिकाष्टम्यादि पौषधोपेतस्यपर्वस्वेकरात्रिक प्रतिमाकारिणः शेषदिनेषुदिवाब्रह्मचारिणो रात्रौब्रह्मपरि

॥ भाषा ॥

योगनो सेविवो तेसामायिकव्रत एतले उभयकाले सामायिककरे मासत्रिणलगे एत्रीजी प्रतिमा ३ कुशलधर्मनो पोखवो तेपौषध आहारादिकनो त्यागरूप
अनुष्ठान तेपौषधतेणेकरी उपवसवो रहिवो अहोरात्रिलगेते पौषधोपवासनिरंत पाछिलीत्रिणि प्रतिमासहित अष्टम्यादिक पर्वनेविषे मासच्यारलगे चतु
र्विध पौषधकरे चउथी पौषधप्रतिमा ४ पांचमीप्रतिमानेविषे अष्टम्यादिकपर्वनेविषे एकरात्रि काउसग्गकरे शेषदिनेदोहे ब्रह्मचर्यपाले रात्रेंपरिमाणकरे
अरात्रिभोजी अणानीकाछडी नबांधे पांचमासलगे एतले एपांचमीप्रतिमा ५ छट्ठीप्रतिमाएं दिवसे अनेरात्रिएंपिण ब्रह्मचर्यपाले अस्नायीस्नाननकरे विकट

॥ ३० ॥

माणकृतोऽस्नातस्याऽरात्रिभोजिन: अबद्धकच्छस्यपंचमासान् यावत्पंचमीप्रतिमाभवतीति उक्तंच अट्ठमिचउद्दसी सुपडिमठ्ठाएगराईया। पचार्थं असिणाणवि यडभोई मउलियडोदिवसबंभयारीएय। रत्तिंपरिमाणकडो पडिमावज्जेदिगुज्जहेसुत्ति ५। तथा दिवापिरात्रावपि ब्रह्मचारी असिणाइत्ति अस्नायीस्नानपरि वर्जक: क्वचित्पठ्यते अनिसाइत्ति ननीशायामत्तीत्यनिशादी वियडभोईत्ति विकटे प्रकटप्रकाशेदिवानरात्रावित्यर्थ: दिवापि एवाऽप्रकाशदेशेनभुंक्तेऽशनाद्यभ्य वहरतीति विकटभोजी मोलिकडेत्ति अबद्धपरिधानकच्छइत्यर्थ: षष्ठीप्रतिमेतिप्रक्रतं अयमत्रभाव: प्रतिमापंचकोक्तानुष्ठानयुक्तस्य ब्रह्मचारिण: षण्मासान्या वत्षष्ठीप्रतिमाभवतीति तथा सचित्तइति सचेतनाहारपरिज्ञात: तत्स्वरूपादिप्रतिज्ञानात्प्रत्याख्यातोयेन ससचित्ताहारपरिज्ञात: श्रावक: सप्तमीप्रतिमेति प्रक्रतं इयमत्रभावना पूर्वोक्तप्रतिमाषट्कानुष्ठानयुक्तस्य प्रासुकाहारस्य सप्तमासान् यावत्सप्तमी प्रतिमाभवतीति तथाआरंभ: पृथिव्याद्युपमर्दनलक्षण: परि ज्ञातस्तथैव प्रत्याख्यातोयेनासावारंभपरिज्ञात: श्राद्धोऽष्टमीप्रतिमेति। इहभावना समस्तपूर्वोक्तानुष्ठानयुक्तस्यारंभवर्जन मष्टौमासान् यावदष्टमीप्रतिमेति तथाप्रेष्याआरंभेषु व्यापारणीया: परिज्ञातास्तथैव प्रत्याख्यातायेन सप्रेष्यपरिज्ञात: श्रावको नवमीति भावार्थश्चेह पूर्वोक्तानुष्ठायिन: आरंभपरै रप्यकारयतो ॥ टीका ॥

री रत्तिपरिमाणकडे दिआविराओविबंभयारीअसिणाई वियडभोई मोलिकडे सचित्तपरिन्नाए आरं ॥ मूल ॥

भोजीदिवसेजिमे मौलिकृतनथी बांध्योपहिरणानो कछजेणिमासछलगे छठ्ठीप्रतिमा ६ सचित्त आहारनो परिज्ञा पच्चक्खाण माससातलगेकरे प्रासुकआहा रकरे सातमी प्रतिमा ७ आरंभपृथिव्यादिक उपमर्दनलक्षणते जेणिपरिज्ञात पच्चख्यो ते आरंभपरिज्ञात श्रावक आठमासलगेकरे एआठमी प्रतिमा ८ पेष्या रंभनेविषे परिज्ञात पच्चखाणछे जेहनेते प्रेष्यपरिज्ञा श्रावककहिये एतलेनवमासलगे परपाछिं कामनकरावे एनवमीप्रतिमा ९ तेश्रावकने निमित्ते उद्देसी ॥ भाषा ॥

नवमासान् यावन्नवमी प्रतिमेति । तथाउद्दिष्टं तमेवश्रावक मुद्दिश्यकृतं भक्तमोदनादि उद्दिष्टभक्तं तत्परिज्ञातं येनासावुद्दिष्ट भक्तपरिज्ञातः प्रतिमेतिप्रकृतं ॥ टीका ॥
इहायंभावार्थः पूर्वोदित गुणयुक्तस्याधाकर्मिकभोजन परिहारवतः क्षुरमुंडितशिरसः शिखावतोवा केनापिकिंचित्प्रष्टव्यतिकरे पृष्टस्यतत् ज्ञानेसतिजानामी
त्यज्ञानेचसति नजानामीति ब्रुवाणस्य दशमसान् यावदेवंविधविहारस्य दशमीप्रतिमेति । तथा श्रमणाति निर्ग्रंथस्तस्येवस्तदनुष्टान करणात् संश्रमणभूतः सा
धुकल्पइत्यर्थः चकारःसमुच्चये अपिसंभावनेभवति श्रावकइतिप्रकृतं हेश्रमण हेआयुष्मन्निति सुधर्मस्वामिना जंबूस्वामिन मामंत्र्यतोक्त मित्येकादशीति । इहचे
यंभावना पूर्वोक्त समग्रगुणो पेतस्य क्षुरमंडस्य कृतलोचस्यवा गृहीतसाधुनेपथ्यस्य इर्यासमित्यादिकं साधुधर्म मनुपालयतो भिक्षार्थंगृहिकुल प्रवेशेसति श्रमणो
पासकाय प्रतिपन्नाय भिक्षांदेयेति भाषमाणस्य कस्त्वमिति कस्मिंश्चित्पृच्छति प्रतिपन्नश्रमणोपासकोहमिति ब्रुवाणस्यैकादशमासान् यावदेकादशी प्रतिमा
भवतीति पुस्तकांतरेत्वेवंवाचना दंसणसावएप्रथमा कयव्वयकद्वितीया । कयसामाइए तृतीया । पोसहोयवासनिरए चतुर्थी । राइभत्तपरिणाए पंचमीसचित्त

न्नपरिन्नाए पेसपरिन्नाए उद्दिठ्ठभत्तपरिन्नाए समणभूएआवित्नमइ समणाउसो लोगंताउ इक्कारसएहिं एक्का ॥ मूल ॥

भातकरो तेजेणेपरिज्ञात पञ्चख्यो तेउद्दिष्टभक्त परिज्ञात दशमासलगें दशमीप्रतिमा १० सघलीप्रतिमाएं पाछिली २ प्रतिमानीकिरिया साथलेता जइये
एतलेइग्यारमी प्रतिमाएंश्रमण भूतहुए यतीनीपरी आधाकर्मी आहारटाले क्षुरमुंडितशिरहोय शिखामस्तकेराखे पांचघरनी भिक्षालेइ उपासकरे आवी ॥ भाषा ॥
जोमे मासइग्यारलगें इग्यारमीप्रतिमा साधुनोवेशवहे भिक्षाएजाए तिवारेकहिये मुझश्रमणोपासकने भिक्षाद्योकोणकपूछ्योथोको कहेहूं श्रावकछूं एतलेइग्या
रमीप्रतिमाकही ११ श्रीमहावीर सुधर्मास्वामीने आमंत्रेछे हेआयुष्मन् चिरंजीवी सांभलि लोकनाछेहडाथको इग्यारयोजनअधिक इग्यारसेयोजनेआबा

॥ टीका ॥

परिवाणषष्ठी दियाबंभयारी राओपरिमाणकडेसत्तमी दियाविराओवि बंभयारी। असिणाणपयाविभवति वोसट्ठकेसरोमनहेअष्टमी आरंभपरिवाएनवमी उद्दिष्टभक्तवर्जकः उद्दिठभत्तवज्जएदशमी समणभूएयाविभवइति समणाउसोएकादशीति क्वचित्तुआरंभपरिज्ञातइतिनवमी प्रेष्यारंभपरिज्ञातइतिदशमी उद्दिष्टभक्तवर्जकः श्रमणभूतश्चैकादशीति तथा जंबूद्वीपेमंदरस्यपर्वतस्यएकादश एगविंसत्ति एकविंशतियोजनाधिकानियोजनशतानि अबाहाए अबाधयाव्यवधानेनकृत्वेतिशेषः ज्योतिषंज्योतिश्चक्रंचारंपरिभ्रमणं। चरत्याचरति तथालोकांतान् णमित्यलंकारे एकादशशतानि एक्कारेत्ति एकादशयोजनाधिकानि अबाधयाबाधारहित याकृत्वेतिशेषः ज्योतिसंतेति। ज्योतिश्चक्रपर्यंतः प्रज्ञप्तइति इदंचवाचनांतरं व्याख्यातं उक्तंच एक्कारएक्कारीसा मयएक्कारसाहियायएक्कारा। मेरुअलोगावाहे जोइसचक्कंचरइठाइइत्ति। अधिकृतवाचनायां पुनरिदमनंतरं व्याख्यातमालापकद्वयं व्यत्ययेनदृश्यते विमाणसयंभवतित्तिमक्खायन्ति इहमकारस्यागामिकत्वा

॥ मूल ॥

रेहिंजोयणसएहिं अबाहाएजोइसंतेपन्नत्ते जंबूदीवेदीवे मंदरस्सपव्वयस्स एक्कारसहिंएक्कवीसेहिं जोयणसए हिं जोइसेचारंचरइ समणस्सणंभगवओमहावीरस्स एक्कारसगणा एक्कारसंगणहराहोत्था तं० इंदभूई अग्गि भूई वायभूई विअत्ते सोहम्मे मंडिए मोरपुत्ते अकंपिए अयलभाए मेअज्जे पभासे मूलेनक्खत्तेएक्कारसतारे प०

॥ भाषा ॥

धार्येपर्वतेकह्यतांकह्यो भगवंते। एतलेअलोकथी इग्यारयोजने ज्योतिषचक्ररह्योछे। ज्योतिषनोछेहडोकह्यो भगवंते। जंबूद्वीपनेविषे मेरुपर्वतथकी वेगलोचो पखेर इग्यारसेयोजने उपरि एकवीसयोजन ज्योतिश्चक्रचारचरे भ्रमणकरे। श्रमणने भगवंतने महावीरने इग्यारगणधर साधुनासमुदायतेगण तेहनाधर पहारहुया। तेअनुक्रमे कहेछे आगुलै। इन्द्रभूति १। अग्निभूति २। वायुभूति ३। व्यक्तनामे ४। सौधर्मा ५। मंडित। ६। मौर्यपुत्र ७। अकंपित ८। अच

दयमर्वी विमानग्रतंभवतीतिकृत्वा व्याख्यातंप्ररूपितं भगवता अन्यैश्चकेवलिभिरिति सुधर्मस्वामिवचनम् तथामन्दरेणंपव्वए धरणितलाओसिहरतलेएकारस भागपरिहीणे उच्चत्तेणंपन्नत्ते। अस्यायमर्थः मेरुर्भूतलादारभ्य शिखरतलमुपरिभागं यावद्विष्कंभापेक्षया अंगुलादेरेकादशभागेन परिहीणोहानिमुपगतस्स उच्चत्वेनोपर्युपरिप्रश्नः इयमत्रभावना मन्दरोभूतले दशयोजनसहस्राणिविष्कम्भतः ततस्तांच्चत्वेनांगुलेगतेंगुलस्यैकादशभागो विष्कम्भतोहीयते एवमेकादशस्वं गुलेष्वंगुलंहीयते एतेनैवन्यायेनैकादशसुयोजनेषु योजनं एवंसहस्रेषुसहस्रं ततोनवनवत्यांयोजनसहस्रेषु नवसहस्राणिहीयंते। ततोभवतिसहस्रविष्कम्भ शिखरेइति अथवा धरणीतलाद्धरणीतलविष्कम्भात्सकाशाच्छिखरतलं शिखरविष्कम्भमाश्रित्य मेरुरेकादशभागेन परिहीणोभवति कस्यैकादशभागेनेत्याह उच्चत्तेणंति उच्चत्वस्यतथाहि मेरोरुच्चत्वं नवनवतिसहस्राणि तदेकादशभागोनवतेर्हीनोमूलं विष्कम्भापेक्षया शिखरतलेशिखरस्य साहस्रिकत्वान्मूलविष्कम्भ

हेठिमगेविज्जयदेवायं एक्कारसमुत्तरंगेविज्जाविमाणसतंनवइत्तिमक्खायं मंदेरणंपव्वए धरणितलाओसिहरतले

लभ्राता ८। मेतार्य १०। प्रभास ११। मूलनववचना इग्यारतारा कह्या नवग्रैवेयकमानमाहें सघले हेठल्योत्रिक तेह त्रिकविमानवासी देवतानां इग्यारस धिकएकसो विमानभवनछे भगवंतेकह्या मेरुपर्वत भूतलथकी शिखरतिहां उपरिलोभाग जिहां पंडगविमानछे तिहांलगे विखंभनी अपेक्षाएं एकारसभाग परिहीन उपरिउपरिकीजे एतले मेरुपर्वत मूलेंदशयोजनपिहुलो मूलथकी इग्यार अंगुलऊंचा वडीये तिहां विखंभपणें एकअंगुलहीन करीये एमइग्यार गाऊयेगाऊ हीनकरिये। इग्यारयोजने इग्यारसहस्र योजन उगरा। पिहुलपणे एकसहस्र योजन घटाडिये। इमकरता नेउंसहस्र योजने ऊंचीवडिये तिहां नवसहस्रयोजन घटीयां उपरि एकसहस्र योजन उगरां। पिहुलपणे मेरुपर्वत एकसहस्र जाणिवो ऊर्द्धोभूमिमध्ये नेउंसहस्र भूमिथकी ऊंचोस

॥ टीका ॥ ॥ मूल ॥ ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

खेति ब्रह्मादीनिद्वादशविमाननामानि। द्वादशस्थानमथतच्चसुगमं। नवरंस्थितिसूत्रेभ्योऽर्वागेकादशसूत्राख्याह। तत्रभिक्षुप्रतिमाविशिष्ट संहननश्रुतवतां प्रति

॥ मूल ॥

एक्कारसन्नागपरिहीणे उच्चत्तेणं प० इमीसेणं रयणप्पन्नाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइआणं एक्कारसपलिउव माइंठिई प० पंचमीएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कारससागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एक्कारसपलिउवमाइंठिई प० सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एक्कारसपलिउवमा इंठिई प० लंतकप्पेअत्थेगइयाणं देवाणं एक्कारसागरोवमाइंठिई प० जेदेवा बंभं सुबंभं बंभावत्तं बंभप्प भं बंभकंतं बंभवसं बंभलेसं बंभज्झयं बंभसिंगं बंभसिठं बंभकूडं बंभुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताएउववन्ना तेसिणं देवाणं एक्कारस सागरोवमाइंठिई प० तेणंदेवाएकारसण्हं अद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा उ

॥ भाषा ॥

वंमिली एकलाख योजननो मेरुपर्वत। मूलेदससहस्र पिहुलो। शिखरनेविषे एकसहस्र पिहुलो जाणिवो। एहअर्थ श्रीमहावीरें सुधर्मास्वामी पांचमे गण धर आगले वखाण्यो। एणीए रत्नप्रभा पहिली पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो इग्यार पल्योपम आउखोकह्यो। पंचमी धूमप्रभा पृथिवीनेविषे केतला एक नारकीनो इग्यार सागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमार भवनपतीनोकेतलाएक देवतानो इग्यार पल्योपम आउखोकह्यो। सौधर्म इशानदेवलोक नेविषे केतलाएकदेवनो इग्यार पल्योपम आउखोकह्यो। लांतक छट्ठेदेवलोकें केतलाएक देवनो इग्यार सागरोपम आउखोकह्यो। छट्ठेदेवलोकें जेहदेवता ब्रह्म १ सुब्रह्म २ ब्रह्मावर्त ३ ब्रह्मप्रभ ४ ब्रह्मकांत ५ ब्रह्मवर्ण ६ ब्रह्मलेश ७ ब्रह्मध्वज ८ ब्रह्मशृंग ९ ब्रह्मसिद्ध १० ब्रह्मकूट ११ ब्रह्मोत्तरावतंसक १२ एणे विम

माअभिग्रहाभिक्षुप्रतिमा तत्रमासिक्यादयः सप्तमासिक्यन्ताः सप्तमासेनमासेनोत्तरोत्तरं वृद्धाएकादिभिर्भक्तपानदत्तिभिश्चेति तथासप्तसप्तरात्रिंदिवान्याद्यो ॥ टीका ॥

स्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणंदेवाणं एक्कारसएहं वाससहस्साणं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइआजवसिद्धि आजीवा एक्कारसहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंक रिस्संति ॥ ११ ॥ बारसभिक्खुपडिमाउ पन्नत्ता तंजहा मासिआभिक्खूपडिमा दोमासिआ भिक्खूपडिमा तिमासिआभिक्खूपडिमा चउमासियाभिक्खूपडिमा पंचमासियाभिक्खूपडिमा छमासियाभि क्खूपडिमा सत्तमासियाभिक्खूपडिमा पढमासत्तराइंदिआभिक्खूपडिमा दोच्चासत्तराइंदिआभिक्खूपडिमा त ॥ मूल ॥

ने देवतापणे उपनाछे। तेहदेवतानो इग्यार सागरोपम आउखोकह्यो। तेहदेवता इग्यार पखवाडे अर्द्धमासे स्वासोस्वास घणोले ऊर्द्धा स्वासले नीचोस्वास मूके तेहदेवतानो इग्यार सहस्रवर्षे आहारनोअर्थ वंछाउपजेछे। संसारमाहि केतलाएक भव्यजीव जेह इग्यारभव ग्रहणकरी एतले इग्यारभवने आंतरे सी झस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये। इतिइग्यारमुंठाणुंसमाप्तं ॥ ११ ॥ हिवे बारमो अधिकार लिखियेछे। भिक्षु उत्तमसंहनननो धणी तथा जघन्य नवमा पूर्वनूं त्रीजूंवस्तु तेहनो पारगामीहोय। उत्कृष्टो दसपूर्व कांइएकगुरुनी आज्ञा मांगी गच्छमांहि पिणहोइ महासत्वनो धणीजे यति तेहनी बारप्रतिमा अभिग्रह रूपकही तेकहेछे। पहिली भिक्षुप्रतिमा एकमासिकी एकमासलगे भात पाणीनी एकदात्रीले एकमासदीठ भातपाणी नी एकेकदाती वधारे सातमासलगे सातमेंमासे सातसात भातपाणीनीदातीले लवणखंड मात्रदाती कहिये १। बीजी प्रतिमा बिमासिकी २। त्रीजीप्रति ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

चाथियासृता: सप्तराचिंदिवास्तावतिस्रोभवंतीति समानामुपरि अष्टमीप्रथमासप्तराचिंदिवा एवंनवमीद्वितीया दशमीतृतीया आसांचतिसृणामप्यनुष्ठा नकृतोविशेष: तथाहिअष्टम्यांचतुर्थभक्तंतप: ग्रामा [illegible] उत्कटुकाद्यासनेनविशेष: दशम्यांवीरासनादिना तथा अहोरात्रप्रमाणाहोरात्रिकी एकादशीयाथषष्ठभक्तेन भवतीतिविशेष: एकरात्रिकीरात्रिप्रमाणासाचाष्टमभक्तेन रात्रौप्रलंबभुजस्य संहतपादावनतकायस्या निमेषोदयास्येति तथासमेकीभूय: समान:समाचाराणां साधुनांभोजनंसंभोग: सचोपध्यादिलचणविषयभेदात् द्वादशधा तत्रउक्तहोत्यादिरूपकद्वयं तत्रोपधि

॥ मूल ॥

चासत्तराइंदिआनिकूपडिमा अहोराइआनिकूपडिमा एगराइआनिकूपडिमा दुवालसविहेसंभोगे

॥ भाषा ॥

मा त्रिथिमासिकी ३ । चउथी प्रतिमा च्यारमासिकी ४ । पांचमी पांचमासनी प्रतिमा ५ । छठो छमासनी प्रतिमा ६ । सातमी सातमासनी प्रतिमा ७ आठमी पहिली प्रतिमा सातदिवसरात्रिनी आठमी प्रतिमाए सातदिनलगे अष्ठमीए चतुर्थभक्त तपकरे ग्रामबाहिररहे उत्तराशनकरे ८ । नवमी बीजी पणिसात अहोरात्रनी भिक्खुप्रतिमा नवमी प्रतिमाए उकडासनकरे ९ । दशमी त्रीजी पणिसात अहोरात्रनी तिहां वीरासनकरे १० । इग्यारमी एकअ होरात्रिनी भिखुप्रतिमाते षष्ठभक्ते उपवासे पूरिये ११ । बारमी भिखु प्रतिमा एकरात्री प्रमाणे अष्टमभक्त उपवासे समाप्तिहोइ रात्रिए प्रलंबभुजाकरि का उसग्गकरे कांइककाया नमाडे नेत्रमेखनकरे १२ । बारे प्रकारे संभोग एकसमाचारी साधनो एकभोजनादिकनो विचारहारकह्यो । उपधिवस्त्र पात्रादि कनो संभोग लेवोदेवो संभोगी साधुसाथें तुभमोत्पादन दोषेविशुद्धकहोये अशुद्धलेई त्रिणिवेला प्रायश्चितलेई तोहोते संभोगीकरी चउथी वेलाप्रायश्चित्तलेतो

॥ टीका ॥

र्वस्त्रपात्रादिस्तंसंभोगिकः संभोगिकेनसार्द्धंतुभ्रमोत्पादनैषणादोषैर्विशुद्धं गृह्णन्शुद्धः अशुद्धंगृह्णन्प्रेरितः प्रतिपन्नप्रायश्चित्तो यावत्त्रयंयावत्संभोगार्हस्ततुर्थवेला

याः प्रायश्चित्तप्रतिपद्यमानोपिविसंभोगार्हइति। विसंभोगिकेनपार्श्वस्थादिनावा संयत्यवासार्द्ध मुपधिशुद्धमशुद्धंवा निःकारणं गृह्णन्प्रेरितः प्रतिपन्नप्रायश्चि

त्तोपि वेलात्रयस्योपरिनेसंभोग्य एवमुपधेः परिकर्मपरिभोगंवाकुर्वन् संभोग्योविसंभोग्यश्चेति उक्तंच एगंचदोवितिन्निच आउट्टंतस्सहोइ पच्छित्तं। आलोचयतइत्य

र्थः आउट्टंतेवितओ परेणतिण्हं विसंभोगोत्ति सुयस्ससम्भोगिकस्य विसम्भोगिकस्य चोपसंपन्नस्यश्रुतस्य वाचनाप्रच्छनादिकं विधिनाकुर्वन् शुद्धस्तस्यैवाऽविधिनोप

सम्पन्नस्यऽनुसम्पन्नस्यवा पार्श्वस्थादेर्वाश्रयवाचनादि कुर्वंस्तथैववेलात्रयोपरिसम्भोग्यः तथा भत्तपाणेत्ति। उपधिद्वारवद्वसेया नवरमिहभोजनंदातुंच परिक

र्मपरिभोगयोः स्थानेवाच्यमिति तथा अंजलीपग्गहेइत्ति इहेतिग्रन्थउपदर्शनार्थः चकारः समुच्चयार्थः तत्उपलक्षणत्वा दंजलिप्रग्रहस्यवंदनादिकमपीहद्रष्टव्यं

तथाहिसम्भोगिकानामन्यसम्भोगिकानांवा संविग्नानांवन्दनकं प्रणाममंजलिप्रगृहं नमःक्षमाश्रमणेभ्यइतिभणनं आलोचनासूत्रार्थनिमित्तनिषद्याकरणंच कुर्वन्

शुद्धः पार्श्वस्थादेस्तानिकुर्वंस्तथैवसम्भोग्यो विसम्भोग्यश्चेति। तथा दायणायत्ति दानन्तत्रसंभोगिकायवस्त्रादिभिः शिष्यमाणोपग्रहासमर्थे सम्भोगिकेऽन्यसम्भोगि

केऽन्यसम्भोगिकं यथाशिष्यगणंयच्छन्शुद्धः निःकारणंविसम्भोगिकस्य पार्श्वस्थादेर्वासंयत्यावा तंयच्छंस्तथैव सम्भोग्योविसम्भोग्यश्चेति तथा निकाएयत्ति नि

प० तं० उवहिसुअभत्तपाणे अंजलिपग्गहेइ अदायणेअ निक्काएअ अब्भुट्ठाणेतिआवरे किअकम्मस्सय

॥ मूल ॥

शी तेहसंभोगीनकरीये १। श्रुतकहिये सिद्धांत तेहनी वाचना पृच्छादिककरतो संभोगी तेहोज सिद्धांत अवधिएं भणतो कोधोनें तथा पासथानें भणावो

विसंभोगीकहिये २ भात पाणी शुद्धमान लेतो देतो संभोगी अन्यथा विसंभोगी ३ अंजलि प्रग्रहमाहोमाहीं नमस्कारनो करवो उपासत्यानेकरतो विसंभो ॥ भाषा ॥

॥ ३४ ॥

॥ टीका ॥

निकाचनंछंदनं निमंत्रणमित्यनर्थांतरं तत्रशय्योपध्याहारैः शिष्यगणप्रदानेनस्वाध्यायेनच सम्भोगिकं निमंत्रयन्शुद्धः शेषंतथैव तथाअब्भुट्ठाणेतियावदेत्ति अभ्यु त्थानमासनत्यागरूपमित्यपरं सम्भोगासम्भोगस्थानमित्यर्थः तत्राभ्युत्थानं पार्श्वस्थादेःकुर्वं स्तद्विसम्भोग्यउपलक्षणत्वाच्चाभ्युत्थानस्य किंकरतांचप्राघूर्णकग्लानाद्यव स्थायां किंविश्रामणादि करोमीत्येवंप्रश्नलक्षणं। तथा अभ्यासकरणं पार्श्वस्थादिधर्माच्युतस्य पुनस्तत्रैवसंस्थानलक्षणं तथा अविभक्तिंवापृथग्भावलक्षणं कुर्वन्न शुद्धो सम्भोग्यश्चाप्येतान्येवंयथागम्यं कुर्वन्शुद्धः सम्भोग्यश्चेति तथाकिइकम्मस्सयकरणेत्ति कृतिकर्मवन्दनकम्तस्य करणंविधानं तद्विधिनाकुर्वन्शुद्धः इतरथा तथैवासम्भोग्यस्तत्रचायंविधिर्यः साधु र्वातिनस्तब्धदेहउत्थानादिकर्तुमशक्तः ससूत्रमेवास्खलितादिगुणोपेतमुच्चारयति एवमावर्त्तशिरोनयनादियच्छक्नोति तत्क रोत्येवंचायंशठप्रवृत्तिर्वंदन विधिरितिभावः वेयावच्चकरणेइयत्ति वैयावृत्त्य माहारोपधिदानादिना प्रश्रमणादिमात्रकार्पणादिना अधिकरणोपशमनेनचोपष्ट म्भकरणं तस्मिंश्चविषयेसम्भोगोभवतीति। तथासमोसरणंति जिनस्तवनरथानुयानपट्टयात्रादयोबहवः साधवोमिलन्ति तत्समवसरणं इहचचैत्रमाश्रित्यसाधूनां साधारणोवग्रहोभवति वसतिमाश्रित्यसाधारणो ऽसाधारणोवेति अनेनचान्येप्यवग्रहाउपलक्षितातेचानेके तथा वर्षावग्रह ऋतुबद्धावग्रहो वृद्धवासावग्र हश्चेति एकैकश्चायंसाधारणावग्रहः प्रत्येकावग्रहश्चेतिद्विधा तत्रयत्क्षेत्रंवर्षोपकल्पाद्यर्थं युगपत्द्यादिभिः साधुभिर्भिन्नगच्छस्थैरनुज्ञाप्यते ससाधारणोयत्क्षेत्रम

॥ मूल ॥

करणे वेश्रावेच्चकरणेश्र समोसरणं संनिसिज्जाय कहाएश्रपबंधणे दुबालसावत्तेकित्तिकम्मे प० तं० दुउणयं

॥ भाषा ॥

गो। ४। संभो.गी साधुभणी वस्त्रशिष्यादिकदेतो संभोगी पासत्थानेदेतो विसंभोगी ५ निकांचन निमंत्रण माहोमांहो शिष्यउपाध्यायादिके करतोशुद्ध ६। व डेश्रावाएथके उठीउभा थाइवो ७। अपरकहतां अनिरतबोल तथा विविधंकरी कृतिकर्म वांदणानो करवो बडांनेवांदणानो देवो ८। वेयावच्चनो करवो

कसाधवोनुज्ञाप्याश्रिताः सप्रत्येकांवगृहइति । एवंचैतेष्ववगृहेषु आकुञ्चादिना अभाव्यंसचित्तंशिष्य मचित्तंवस्त्रादिगृह्णन्तोऽनाभोगेनचगृहीतं मदनर्पयतः समनोज्ञा अमनोज्ञाश्च प्रायश्चित्तिनोभवंत्यसम्भोग्याः पार्श्वस्थादीनांचावगृह एवनास्ति तथापियदितत् नेचं कुलकमन्यत्रैवचसंविग्नानिर्वहंतिततस्तत्क्षेत्रंपरिहरं त्येवायं पार्श्वस्थादीनांचावगृहस्तेषं शिस्तोर्णं संविग्नायाग्यमन निर्वहंति ततस्तत्रापि प्रविशंति सचित्तादिगृह्णंति प्रायश्चित्तिनोपिनभवंतीति आहच समणु समसमणुन्ने अहिन्नंअणा भवगिगहमाणेवामम्भोगवीसुकरणं पृथक्करणमित्यर्थः इयरेंयअलंभिणंक्विन्ति इतरान्पार्श्वस्थादीनित्यर्थः तथा सन्निसिज्जायत्ति निषद्या आसनविशेषः साचसम्भोगकारणंभवति तथाहि संनिषद्यागत आचार्यो निषद्यागतेन सम्भोगिकाचार्येण सह श्रुतपरिवर्त्तनां करोतिशुद्धः अथामनोज्ञापा र्श्वस्थादिसाध्वीगृहस्थैः सह तदाप्रायश्चित्तीभवति तथाकहाणयपबंधणेत्ति कथावादाद्यनिषद्यां विनानुयोगंकुर्वतः शृण्वतः प्रायश्चित्तं तथानिषद्यायामुपवि ष्टः सूत्रार्थौप्रच्छति अतिचारान्वालोचयति तदातथैवेति । तथाकहाणयपबंधणेत्ति कथावादादिकापंचधातस्याः प्रबंधनंप्रबंधेनकरणं कथाप्रबंधनंतत्रसम्भो गाऽसम्भोगोभवतः तत्रसमभ्युपगम्यपंचावयवेन त्रयावयवेनवाक्येन यत्तत्समर्थनंसछलजाति विरहितो भूतार्थान्वेषणापरोवादः सएवछलजाति निर्गतस्थानप रोजल्पः यत्रैकस्यपक्षपरिग्रहोऽस्तिनापरस्य सादूषणमात्रप्रवृत्ताविंतण्डा तथाप्रकीर्णकथाचतुर्थी सार्चोत्सर्गकथास्तिकनयकथावा तथानिश्चयकथापंचमी । सा चापवादकथा पर्यायास्तिकनयकथाचेति तत्राद्यास्तिस्रः कथाश्रमणीवर्जैः सहकरोति श्रमणोभिस्तुसहकुर्वन् प्रायश्चित्तीचतुर्थवेलायांवा लोचनापिविसम्भोगा हइति रूपकद्वयस्य संक्षेपार्थोविस्तारार्थस्तु निशीथपंचमोद्देशकभाष्यादवसेयइति तथादुवालसावत्ते किइकम्मेत्ति द्वादशावर्त्तंकृतिकर्मवन्दनकं प्रव्रसंद्वाद शावर्त्तंतामेवास्यानुवन्दनमेषांच तद्धर्मानभिधित्सितंरूपकमाह दुओणयमित्यादि अवनतिरवनमुत्तमांगप्रधानं प्रणमनमित्यर्थः द्वेऽवनतेयस्मिंस्तद्द्व्यवनतं तच्चैकंय

|| टीका ||

दाप्रथममेव इच्छामिखमासमणो वंदिउंजावणिज्जाएनिसीहियाएत्ति अभिधायावग्रहानुज्ञापनायावनति द्वितीयं। पुनर्यदावग्रहानुज्ञापनायैवावनमतीति यथाजातं श्रमणत्वभवनलक्षणं जन्माश्रित्य योनि:क्रमणलक्षणंच तत्ररजोहरणमुखवस्त्रिका चोलपट्टमात्रया श्रमणोजातोरचितकरपुटस्तुयोन्यानिर्गतएवंभू तएवंवन्दते तद्व्यतिरेकाद्वा यथाजातंभण्यते कृतिकर्मवंदनकं। बारसावयंति द्वादशावर्त्ताः सूत्राभिधानगर्भाः कायव्यापारविशेषाः यतिजनप्रसिद्धायस्मिं

|| ३५ ||

स्तद्द्वादशावर्त्तते। तथाचउसिरन्ति चत्वारिशिरांसियस्मिंस्तच्चतुःशिरः प्रथमप्रविष्टस्यक्षामणाकाले शैष्याचार्यशिरोद्वयंपुनरपिनिःक्रम्यप्रविष्टस्यद्वयमेवेति भावना। तथातिहिंगुत्तंति तिसृभिर्गुप्तिभिर्गुप्तः पाठांतरेपि तिसृभिःग्रहागुप्तिभिरेवेति तथादुपवेसन्ति द्वौप्रवेशौयस्मिंस्तद्द्विप्रवेशं तत्रप्रथमोवग्रहमनुज्ञाप्य प्रविशतो द्वितीयः पुनर्निर्गत्यप्रविशतइति एगनिक्खमणंति एकनिःक्रमणमवग्रहादावसिक्यानिर्गच्छतः द्वितीयवेलायां ह्यवग्रहान्ननिर्गच्छति पादपतितएव

|| मूल ||

जहाजायं कितिकम्मं बारसावयं चउसिरं तिगुत्तं दुपवेसं एगनिक्कमणं विजयाणंरायहाणी दुवालसजोय

|| भाषा ||

आहार पाणी संभोगीने आणीदेतो मात्रादिक परठवतो संभोगी अन्यथा विसंभोगी ९। समोसरण तेत्रणा यतीएकठा मिलिए तिहां समोसरण संभोग साधुनो अवग्रहलेई एकठोरहिवो १०। संनिषद्यागत संभोगीसाथें एके बैसती येसी शास्त्रचिंतन करतो पासत्यासाथे करतो विसंभोगी ११ संभोगीसाथें क थाप्रबंध करतोशुद्ध १२। पासत्यासाथें करतो विसंभोगी॥ बारें आवर्तमाहें तेकृतिकर्म वांदणाकह्या भगवंते श्रीवर्द्धमानसामी एं तेकहेछे बेअवनत बेवेला मस्तकनमाडवो गुरुनी थापनाकीजे तेहथकी अजठहाथ वेगला रहीपडिकमीए अजठहाथमाहीं अवग्रहकहिये उभांथका इच्छामिखमासमणो कहिये बिहु वांदणे बिहुंवेला मस्तकनमाडिये पछेअवग्रहमांहि आंविये यथाजातमुद्रा जन्मअवसरी बालकनीपरें बलीटोभरीहाथजोडीरही कृतकर्मवांदणा १२ आ।

॥ टीका ॥

सूत्रंसमापयतीति तथाविजय राजधानी असंख्यातत्तमेजंबूद्वीपे आद्य जंबूद्वीपविजयाभिधान पूर्वद्वाराधिपस्य विजयाभिधानस्य पल्योपमस्थितिकस्य देवस्यसं बंधिनीति तथारामोनवमोबलदेव: देवत्तिंगयत्ति देवत्वंपंचमदेवलोके देवत्वंगत: तथासर्वजघन्यागात्रि रुत्तरायणपर्यंताहोरात्रस्यरात्रि: साचद्वादशमौहूर्ति

॥ मूल ॥

णसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं प० रामेणं बलदेवे दुवालसवासमसयाइंसव्वाउयं पालित्तादेवत्तिंगए मंद रस्सणं पव्वयस्सचूलिआमूले दुवालसजोयणाइं विक्खंभेणं प० जंबूदीवस्सणंदीवस्स वेइआमूले दुवालस जोयणाइं विक्खंभेणं प० सव्वजहन्निआराइ दुवालसमुहुत्तिआ प० एवंदिवसोविनायव्वो सव्वठसिद्धस्सणं

॥ भाषा ॥

वर्त छवेला गुरुनेपगें वांदणाकीजे। यहीकाय एपाठकहे विहुवेलाथई १२ आवर्तथया चोसरां ४ वेला गुरुनेंपगें मस्तकनमाडिये। त्रिणीगुप्ती मनवचन कायानी गुप्तिकीजे। उपवेसवींवेला वांदणानेअर्थे अवग्रहमांहिं आवीने एकनिष्क्रमण अवग्रहथकीबाहिर पहिलेवांदणे एकवेला नीकली बीजीवेला गुरुपगें बेठा ज वांदणो समापीएपाठकह्यो एहसमवयांग वृत्तिनोभाव। जंबूद्वीपनो पूर्वनो पोलीनोधणी विजयदेवता तेहनीराजधानी असंख्यातमे जंबूद्वीपेंछे बारयोज नसहस्र एतले १२ लाखयोजन लांबपणेंपिहुलपणेंकह्यो रामबलदेव कृष्णवासुदेवनो वडोभाई बारसेवर्ष सर्वआउखुंपालीने देवपणुंपाम्या पांचमेदेवलोके पहुंता मेरुपर्वत उपरि सहस्रयोजन पिहुलोछे। तेहनेसेविचि ४०० योजनऊंची चूलिकाछे। तेहनोमूल १२ योजनबीचो आठउपरि शिखरे च्यारयोजन पिहुलपणो कह्यो। जंबूद्वीपनो चोपखेर गढरूप वेदिका आठयोजन ऊंचीछे। जेहवेदिकानोमूल १२ योजनविचि ८ उपरि ४ योजन पिहुलपणेंकह्यो भगवंते सर्वजघ न्यरात्रि उत्तरायणने छेहडे कर्कसंक्रांतिनो आसाढीपूनिमनो घणीनान्हीरात्रि बारहमूहूर्तहुई एतले २४ घडीनो रात्रिकह्यो। एमदिवसपणिजाणिवो।

॥ टीका ॥

श्चतुर्विंशति घटिकाप्रमाणा लोकप्रसिद्धासातिरेका सामान्या एवंदिवसोविति। सर्वजघन्योद्वादश मौहूर्त्तिकएवेत्यर्थः सचदक्षिणायनपर्यंतदिवसत्ति।

॥ मूल ॥

॥ ३६ ॥

महाविमाणस्स उवरिल्लाउचूलिआउ दुवालसजोयणाइं उड्ढंउप्पइत्ता इसिपब्भारनामपुढवी प० इसिपब्भाराएणंपुढवीए दुवालसनामधिज्जा प० तं० इसित्तिवा इसिपब्भारात्तिवा तणूइवा तणूअरित्तिवा सिद्धित्तिवा सिद्धालएत्तिवा मुत्तीवा मुत्तालएत्तिवा बंभेत्तिवा बंभवडिंसएत्तिवा लोकपडिपूरणात्तिवा लोगग्गचूलिआइ

॥ भाषा ॥

क्षिणायननो छेहल्योदिवस मकरसंक्रांति पोसीपूनिमनो १२ मुहूर्तनो २४ घडीनो दिवसकह्यो सर्वअर्थ जिहांगई थकेंसीधा एकावतारीपणामाटे तेहसी र्वार्थसिद्ध महाविमान कह्यो तेहनी उपरिली चूलिका शिखराग्रथकी १२ योजनछे ऊंचो उत्पत्तिने जईने ईषत्प्राग्भार नामपृथिवी सिद्धिशिलाकही रत्नप्रभा दिक बीजी पृथिवीनो अपेक्षाये ईषत् थोडोछे प्राग्भार विस्तार तथा पिण्ड जेहनो तेहईषत्प्रग्भार सिद्धिशिलाछे तेहना १२ नामधेय कहता नामकह्या ते कहेछे। ईषत् कहीये थोडो ४२ लाखयोजन प्रमाणमाटे १ ईषत्प्राग्भार बीजी पृथिवीनो अपेक्षाएं थोडा २ तनूपातलीविचि ८ योजन जाडीछे छेडेमाखि नाश्रांख सरीखी पातली ३ तनुतरीघणीज पातली ४ तिहां पहुंतेथके जीवनाकार्य सोझे तेसिद्धिकहिये ५ सिद्धहुआछे तेहनूं आलयकहतां घरते सिद्धाल य ६ तिहां जीवपहुंताथको कर्मथकी मूंकाणातेमुक्ति ७ मुक्तजेसिद्ध तेहनूं आलयघरते मुक्तालय ८ ब्रह्मसकललोक तेहमय ९ ब्रह्मावतंसक ब्रह्मसकललोक ते हनो मुगटरूप १० लोक १४ राजलोक तेजेणेकरी प्रतिपूर्णथया तेलोक प्रतिपूरण ११ लोक १४ राजलोक तेहनेसाथें चूलिकाचोटी रूपशिखररूप तेलो काग्रचूलिका १२ एणीएरत्नप्रभा पहिलीपृथिवीनेंविषे केतलाएक नारकीनो बारपल्योपम आउखोकह्यो। पंचमी धूमप्रभा पृथिवीनेंविषे केतलाएक नारक

॥ मूल ॥

वा इमीसेणं रयणप्पभाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइआणं बारसपलिओवमाइंठिई प० पंचमीएपुढवीए अत्थे गइयाणं नेरइआणं बारसागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइआणं बारसपलिओवमाइं ठिईप० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइआणं देवाणं बारसपलिओवमाइं ठिई प० लंतेकप्पेसु अत्थेगइ आणं देवाणं बारससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा महिंदे महिंदज्झयं कंबु कंबुग्गीवं पुंखं सपुंखं महापुंखं पुंडं सपुंडं महापुंडं नरिंदं नरिंदकंतं नरिंदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्को सेणं बारससागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा बारसण्हं अद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा उस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं बारसहिंवाससहस्सेहिं आहारठे समुप्पज्जइ संतगइआ भवसिद्धिआ जीवा

॥ भाषा ॥

नो बारसागरोपम आऊखोकह्यो । असुरकुमार भवनपती देवतानो बारपल्योपम आऊखोकह्यो । सौधर्म ईशानकल्पें देवलोकें केतलाएक देवतानो बार पल्योपम आऊखोकह्यो । लांतक छट्ठादेवलोके केतलाएक देवतानो बारसागरोपम आऊखोकह्यो । लांतककल्पे जेदेवता महेन्द्र १ महेन्द्रध्वज २ । कंबु ३ । कंबुग्रीव ४ । पुंख ५ । सपुंख ६ । महापुंख ७ । पुंड्र ८ । सपुंड्र ९ । महापुंड्र १० । नरेन्द्र ११ । नरेन्द्रकांत १२ । नरेन्द्रोत्तरावतंसक १३ । एणे १३ विमाने दे वतापणे उपनाछे । तेहदेवतानो उत्कृष्टो बारसागरोपम आऊखोकह्यो । तेहदेवतानो बारअर्द्धमासे पखवाडे स्वासोस्वास घणाले ऊंचोले नीचोउस्वासले

॥ टीका ॥

महेन्द्रमहेन्द्रध्वज कंबुकंबुग्रीवादीनि त्रयोदशविमानानीति ॥ अथ त्रयोदशस्थानके किंचिल्लिख्यते इहस्थिति सूत्रेभ्योऽर्वागष्टसूत्राणि । तत्रकरणंक्रियाकर्मनिबं धनचेष्टातस्याः स्थानानिभेदाःपर्यायाः क्रियास्थानानि तत्रअर्थाय शरीरस्वजनधर्मादिप्रयोजनाय दण्डस्त्रसथावरहिंसा अर्थदण्डः क्रियास्थानंइतिप्रथमः १। तद्विलचणोऽनर्थदण्डः २ । तथाहिंसामाश्रित्य हिंसितवान्हिनस्ति हिंसिष्यतिवा अयंवैरिकादिर्मामित्येवं प्रणिधानेनदण्डोविनाशनं हिंसादण्डः ३ । तथा ऽकस्मादनभिसंधिना न्यवधार्यप्रवृत्त्यादण्डो ऽन्यस्यविनाशोऽकस्माद्दण्डः ४ । तथादृष्टेर्विपर्यासितावादृष्टिर्विपर्यासिका दृष्टिविपर्यासितावा मतिभ्रमइत्यर्थस्त

॥ मूल ॥

जेबारसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ १२ ॥ तेरसकरीयाठाणा प० तं० ॥ अट्ठादंडे अणट्ठादंडे हिंसादंडे अकम्हादंडे दि

॥ भाषा ॥

तेहनो बारेवर्षसहस्रे आहारनो अर्थजपजे । केतलाएक संसारमाहे भव्यजीव बारभवग्रहणे १२ भवनेआंतरे सीभस्ये बूभस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरस्ये मोक्षजास्ये ॥ इति बारमूंठाणं सम्मत्तं २० ॥ १२ ॥ हिवे तेरक्रियानो अधिकार लखियेछे । तेरक्रियाठाणां कह्याकरिवो तेक्रिया कर्मबन्ध नचेष्टा तेहना स्थानकभेद तेक्रियास्थानकह्या तेकहेछे शरीरस्वजन धर्मादिकनेअर्थे त्रस थावरने दंडेंहणिये तेअर्थदंड १ अनर्थक जीवहणिये तेअनर्थदंड २ एह मुभनेहणतोहुतोहणस्ये अथवा हणेछे तेमाटे हुंज एने पहिले हणूं ए हिंसादण्ड ३ अकस्मात् अनेराने वधवा प्रवर्त्योहुतो अने अनेरोहणाणो तेअ कस्मात्दंड ४ । दृष्टिविपर्यास तेमतिभ्रम तेणेप्राणिवध तेदृष्टिविपर्यासदंड अमित्रनेबुद्धि मित्रनोहणिवो ५ आत्मपरोभयार्थ जूठोबोलवो तेजप्रत्ययकारणछे जेहदंडनो तेमृषावाद प्रत्यया ६ । एमअदत्तादानप्रत्यया ७। अध्यात्ममन तेहनेंविषेहो तेआध्यात्मिक मनमाहिं दुष्टभावनोचिंतवो ८। मानप्रत्ययअ

याऽदृष्टः प्राणिवधोऽदृष्टिविपर्यासिताया एकोदण्डोऽदृष्टिविपर्यासितादण्डोवा मित्रादेरमित्रादिबुद्ध्या हननमितिभावः ५। तथमृषावादे आत्मपरोभयार्थम ॥ टीका ॥
लोकव्यवनंतदेवप्रत्ययः कारणंयस्यदंडस्य समृषावादप्रत्ययः ६। एवमदत्तादानप्रत्ययोपि ७। तथाअध्यात्मनिमनसिभव आध्यात्मिको वाह्यनिनिमित्तानापेक्ष
शोकाभिभवइतिभावः ८। तथामानप्रत्ययो जात्यादिमदहेतुकः ९। तथामित्रद्वेषप्रत्ययः मातृपित्रादीनामल्पेप्यपराधे महादंडनिर्वर्त्तनमितिभावः १०।

ठिविपरियासियादंडे मुसावायवत्तिए अदिन्नादाणवत्तिए अज्झत्थिए मानवत्तिए मित्तदोसवत्तिए मा ॥ मूल ॥
यावत्तिए लोभवत्तिए इरियावहिए नामंतरसमे सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु तेरसविमाण।एपत्थडा प० सोहम्म

भिमानिकरी आगव्याने दंडदेवो ९। मित्रद्वेषप्रत्यय मातापितानें थोडाअपराधे घणोदंडदेवो १०। मायाप्रत्यय मायाकपट तेणेनिवर्तायोदंड ते ॥ भाषा ॥
मायाप्रत्यय ११। एमलोभप्रत्यय १२। ऐर्यापथिकीनामे तेरमोक्रियास्थानक कायर्योग प्रत्ययसंयोगी केवलीने पहिलोसमें क्रियालागे बीजेसमेवेदे तीजेस
मेनिर्जरे १३। सौधर्मपहिलो देवलोक ईशानबीजोदेवलोक एहदोदेवलोक लगडाकारेछे तेमाटे विहुंदेवलोके तेरविमान प्रस्तटछे उपराउपरि पावडोरूप
कह्यो। पहिलो सौधर्मलोक मेरुथकी दक्षिणदिसें अर्द्धचंद्राकारछे। पूर्वपश्चिमेलांबो दक्षिणउत्तरेपिहुलो। तेहने तेरमेप्रस्तरे शक्रेंद्रनो आवासभूतविमान
अथवा सौधर्मदेवलोकनो अवतंसकमुकुटरूप तेसौधर्मावतंसक विमान साढीबारलाख योजनलांबपणें पिहुलपणेंकह्यो। एममेरुथकी उत्तरदिसें अर्द्धचंद्राका
रईशानदेवलोक तेहने तेरमेप्रस्तटे ईशानावतंसक विमान साढीबारलाखयोजननोकह्यो। जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनीना जीवनी साढीबारजातिनेविषे
कुलकोटिनो योनिप्रमुखउत्पत्तिस्थानक शतसहस्रकह्या एतलेसढीबार कुलकोटि जलचरपंचेन्द्रिय तिर्यंचनीछे। योनितेउत्पत्तिस्थानक जिमगोबर कुलते

॥ टीका

मायाप्रत्ययो मायानिबंधनः ११ । एवंलोभप्रत्ययोपि १२ । ऐर्यापथिकः केवलयोगप्रत्ययःकर्मबंध उपशांत मोहादीनां सातवेदनीयबंधः १३ । तथाविमाणप त्थडत्ति विमानप्रस्तटाउत्तराधर्यव्यवस्थिता तथासोहम्मवडिंसएत्ति सौधर्मस्यदेवलोकस्यार्द्धचन्द्राकारस्य पूर्वापरायतस्य दक्षिणोत्तरविस्तीर्णस्य मध्यभागेत्रयोद शप्रस्तटे शक्रावासभूतंविमानं सौधर्मदेवलोकस्याऽवतंसकः शिखरकः सद्दवप्रधानत्वादित्येवं यथार्थनामकमिति णंकारोवाक्यालंकारे अर्द्धत्रयोदशंयेषुतान्य र्द्धत्रयोदशानि तानिचतानि योजनशतसहस्त्राणिचेतिविग्रहः सार्द्धानिद्वादशेत्यर्थः तथाअर्द्धत्रयोदशानिजातौ जलचरपंचेंद्रिय तिर्यग्गतौकुलकोटिनां योनि प्रमुखान्युत्पत्तिस्थानप्रभवानि शतसहस्त्राणि तानितथोच्यंतेइति तथापाणाउस्सत्ति यत्रप्राणिनामायुर्विकथनं सभेदमभिधीयते तत्प्राणायुर्द्वादशं पूर्वंतस्यत्र योदशवस्तूनि अध्ययनवद्विभागविशेषाः तत्रागर्भेगर्भाशये व्युत्क्रांतिरुत्पत्तिर्येषांते गर्भव्युत्क्रांतिकाः तेचते पंचेंद्रियतिर्यग्योनिकाश्चेतिविग्रहः प्रयोजने मनोवा

॥ मूल ॥

वडिंसगेणं विमाणे अद्धतेरसजोयणं सयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं प० जलयरपंचिंदिअ तिरिक्खजोणि आणं अद्धतेरसजाइ कुलकोडीजोणीपमुह सयसहस्सा प० पाणाउस्सणं पुव्वस्सतेरसवत्थू प० गब्भवक्कंति अपंचेंदिअतिरिक्ख जोणिआणं तेरसविहेपओगे प० तं० सच्चमणपओगे मोसमणपओगे सच्चामोसमणपओगे

॥ भाषा ॥

छीजयोनिनेविषे अनेकआकारे जीवजिमगोवरमांहि अनेकप्रकार जेजीवउपजेछे तेकुलकहीये । जिहांप्राणीना आउखाना भेदकहिये तेप्राणीनोबारमो पूर्व तेहनेविषे अध्ययनना विभागविशेषकह्या गर्भोत्पन्नपंचेंद्रिय तिर्यंचजोनिना जीवने तेरप्रकारेप्रयोग मनवचनकायानो व्यापार एतले १३ योगकह्या तेक हेछे । सत्यमनोयोग तेसांचेमनेचिंतवो १ । जूठमनमनो व्यापारते मृषामनोयोग २ । सत्यासत्यमनोयोग ते मिश्रभावनो चिंतवो ३ । असत्यामृषामनोयोग ते

कायानां व्यापाराणांप्रयोगः सत्रयोदशविधः पंचदशानांप्रयोगाणांमध्ये आहारकाहारकमिश्रलक्षणकायप्रयोगद्वयस्य तिरश्चामभावात् तेहिसंयमिनाम ॥ टीका ॥
वस्तुः संयमवंतश्चसंयतमनुष्याणामेव नतिरश्चामिति तत्रसत्यासत्योभयानुभयस्वभावा चत्वारो मनःप्रयोगाः वाक्प्रयोगाश्चेति,, अष्टौपुनरौदारिकादयः पञ्च
कायप्रयोगाः एवंत्रयोदशेति । तथासूर्यमण्डलस्यादित्यविमानवृत्तस्य योजनं सूर्यमंडलयोजनं तत् । णमित्यलंकारेचत्रयोदशभिरेकषष्ठिभागै यैषां भागानामेकष
ष्ठायोजनंभवति तैर्भागैर्योजनस्य संबंधिभिरूनंप्रज्ञप्त मष्टचत्वारिंशद्योजनभागाइत्यर्थः वत्राभिलापेनद्वादश वइराभिलापेन लोकाभिलापेन चैकादशविमा

॥ मूल ॥
असच्चामोसमणपत्तगे सच्चवइपत्तगे मोसवइपत्तगे सच्चामोसवइपत्तगे असच्चामोसवइपत्तगे उरालिअसरीरका
यपत्तगे उरालिअमीससरीरकायपत्तगे वेउव्विअसरीरकायपत्तगे वेउव्विअमीससरीरकायपत्तगे कम्मसरीरकाय
पत्तगे सूरमंडलं जोयणतेरसेहिं एगसठिभागेहिं जोयणस्सऊणंइमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइआणं

मनोव्यापार सांचोनही जूठोपिणनही ४ वचनयोग सांचोबोलवो तेसत्यवचनयोग १ एममृषावचनयोग तेहनुंकारण २ । सत्यासत्य तेमिश्रभाषाएं बोलवो ॥ भाषा ॥
३ । असत्यामृषा तेव्यवहारवचनयोग जाइआवो लेदे एहवीभाषा ४ । कायाना सातयोगछे तेमांहि आहारक १ । आहारकमिश्र २ । एह तिर्यंचनेनहोय
तेहोय तेहपूरवधरनेहोई तेमाटे पांचकाययोगलीजे औदारिक शरीरकाययोग १ औदारिकमिश्र शरीरकाययोग २ वैक्रियशरीरकाययोग ३ वैक्रियमिश्रश
रीरकाययोग ४ अपर्याप्तावस्थाएं। कार्मणशरीर काययोग ५ । एममनोयोग ४ वचनयोग ४ काययोग ५ सर्वमिली १३ थया सूर्यनंमांडलू योजननं एकसठीएतेरभा
गेऊणोकह्यो । एतले एकयोजनना ६१ भागकीजे तेहवा १३ भाग सूर्यनंमंडलछे । एतले एकसठीया ४८ भागसूर्यनूंमांडलूं पिह्लूंछे । एणीएरत्नप्रभा पहिली

नेरइआणं तेरसपलिउवमाइं ठिई प० पंचमीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइआणं तेरससागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइआणं तेरसपलिउवमाइंठिई प० सोहम्मीमाणेसु कप्पेसु अत्थेगइआणं देवाणं तेरसपलिउवमाइं ठिई प० लंतएकप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं तेरससागरोवमाइंठिई प० जेदेवा वज्जं सुवज्जं वज्जावत्तं वज्जप्पत्रं वज्जकंतं वज्जवसं वज्जलेसं वज्जरूवं वज्जसिंगं वज्जसिठं वज्जकूडं वज्जुत्तरवडिंसगं वइरं सुवइरं वइरावत्तं वइरप्पत्रं वइरकंतं वइरवसं वइरलेसं वइररूवं वइरसिंगं वइरसिठं वइरकूडं वइरुत्तरवडिंसगं लोगं सुलोगं लोगावत्तं लोगप्पत्रं लोगकंतं लोगवसं लोगलेसं लोगरूवं लो

नरकपृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनी तेरपल्योपम आउखोकह्यो । पांचमी पृथिवीए केतलाएक नारकीनी तेरसागरोपम आउखोकह्यो । असुरकुमार देवनीकेतलाएकनी तेरपल्योपम आउखोकह्यो । सौधर्मईशान देवलोके केतलाएक देवतानी तेरपल्योपम आउखोकह्यो । लांतककल्पेकेतलाएकदेवनो तेरसागरोपम आउखोकह्यो । छट्ठेदेवलोके जेहदेवता वज्र १ । सुवज्र २ । वज्रावर्त ३ । वज्रप्रभ ४ । वज्रकांत ५ । वज्रवर्ण ६ । वज्रलेश ७ । वज्ररूप ८ । वज्रशृंग ९ । वज्रसिद्ध १० । वज्रकूट ११ । वज्रोत्तरावतंसक १२ । एम सामन्नी ॥ वइर १ । सुवइर २ । वइरावर्त ३ । वइरप्रभ ४ । वइरकांत ५ ।०वइरवर्ण ६ । वइरलेश ७ । वइररूप ८ । वइरशृंग ९ । वइरसिद्ध १० । वइरकूट ११ । एमवज्रनो परिवैरसाथे १२ विमानकरी छेहिलो वैरोत्तरावतंसक १३ । वली ॥ लोक १ । सुलोक २ । लोकावर्त ३ । लोकप्रभ ४ । लोककांत ५ । लोकवर्ण ६ । लोकलेश ७ । लोकरूप ८ । लोकशृंग ९ । लोकसिद्ध १० । लोककूट ११ ।

मानीति। अथचतुर्दशस्थानकंसुबोधंच नवरमिहाष्टौसूत्राणि पृथक् स्थितिसूत्रादिति तत्रचतुर्दशभूतग्रामाः समूहाः भूतग्रामास्तत्र सूक्ष्मासूक्ष्मनामकर्मोदयव
र्त्तित्वात् पृथिव्यादयएकेन्द्रियाः किंभूताअपर्याप्तकासत्कर्मोदयाः परिपूर्णस्वकीयपर्याप्तयइत्येकोग्रामः एवमेतेएवपर्याप्तकास्तथैव परिपूर्णस्वकीयपर्याप्त इति
द्वितीयः एवंबादराबादरनामोदयात् पृथिव्यादयएव तेपिपर्याप्ततरभेदाद्द्विधा एवंद्वींद्रियादयोपि नवरंपंचेंद्रियाः संज्ञिनोमनःपर्याप्त्युपेताइतरेत्वसंज्ञिनइति

गसिंगं लोगसिठ्ठं लोगकूडं लोगुत्तरवडिंसगं विमाणं देवताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं तेरससा ॥ मूल ॥
गरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवातेरसहिं अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा
तेसिणं देवाणं तेरसहिं वाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धिआजीवा जेतेरसहिं भवग्गह
णेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ १३ ॥
चउद्दसभूअग्गामा प० तं० ॥ सुहुमाअपज्जत्तया सुहुमापज्जत्तया बादराअपज्जत्तया बादरापज्जत्तया

लोकोत्तरावतंसक १२। एम छवीसविमाने देवतापणें ऊपनाछे तेदेवतानोउत्कृष्टो तेरसागरोपम आऊखोकह्यो। तेदेवता तेरअर्द्धमासे श्वासोश्वास घणोले ॥ भाषा ॥
ऊंचोले नीचोमूके। तेदेवताने तेरवर्षसहस्रे आहारनो अर्थउपजे। केतलाएक भव्यजीव तेरेंभवग्रहणे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखना अंतकरिस्ये इति
तेरमूंठाणूं सम्मतं ॥ १३ ॥ हिवे चौदमो अधिकार लिखेछे। चौदभूतांनांग्रामभूतकहतां जीवनो ग्रामसमूह तेभूतग्रामकह्या तेकहेछे। सूक्ष्मए
केंद्रिय अपर्याप्त सूक्ष्मनामकर्मोदयथकी सूक्ष्मपणूंपाम्या एहवापृथिव्यादिक एकेंद्रिय तेकेहवाछे अपर्याप्तके आहार १ शरीर २ इन्द्रिय ३ श्वासोश्वास ४

॥ टीका ॥

तथाउप्पायपुव्वेत्यादिगाथात्रयं तत्रउप्पायमग्गेणियंचत्ति यत्रोत्पादमाश्रित्य द्रव्यपर्यायाणां प्ररूपणाकृतातदुत्पादपूर्वं यत्रतेषामेवाग्रम्परिमाणमाश्रित्यतदग्रेणीयं तद्दयंचवीरियंपुव्वंति। यज्जीवादीनांवीर्यं प्रोच्यतेप्ररूप्यतेतद्वीर्यप्रवादं अत्थिनत्थिपवायंति यद्यथा लोकेअस्तिनास्तिचतद्यत्रप्रोच्यते तदस्तिनास्तिप्रवादं तत्तो

॥ ४० ॥ ॥ मूल ॥

बेंदियाअपज्जत्तया बेंदियापज्जत्तया तेंदियाअपज्जत्तया तेंदियापज्जत्तया चउरिंदिआअपज्जत्तया च उरिंदियापज्जत्तया पंचिंदिआअसन्निअपज्जत्तया पंचिंदियाअसन्निपज्जत्तया पंचिंदिआसन्निअपज्जत्तया पंचिंदियासन्निपज्जत्तया चऊद्दसपुव्वा प० तं० उप्पायपुव्वंमग्गेणीयंच तइयंचवीरियंपुव्वं अत्थीनत्थिप्प

॥ भाषा ॥

लक्षणपरिचारें पर्याप्तनथीकीधा तेमाटे अपर्याप्त एहवा सूक्ष्मएकेंद्रियनोभेद १। सूक्ष्मएकेंद्रियपर्याप्ता जेणेंआहारादिक चारपर्याप्त पूरीकीधी तेपर्याप्ता २। बादरएकेंद्रिय अपर्याप्ता ३। बादरएकेंद्रियपर्याप्ता ४। बेंद्रियअपर्याप्ता ५। बेंद्रियपर्याप्ता ६। तेंद्रियअपर्याप्ता ७। तेंद्रियपर्याप्ता ८। चतुरिंद्रिअपर्याप्ता ९ चतुरिंद्रियपर्याप्ता १०। पंचेंद्रियअसंज्ञी अपर्याप्ता ११। पंचेंद्रियअसंज्ञीपर्याप्ता १२। पंचेंद्रियसंज्ञीअपर्याप्ता १३। पंचेंद्रियसंज्ञीपर्याप्ता १४। एकेंद्रियमाहि ४ पर्याप्ताहोय आहार १ शरीर १ इन्द्रिय ३ स्वासोस्वास ४ एचारपर्याप्ति जेणेपूरीकरी तेपर्याप्ता विणिकरी मरेते अपर्याप्त। बेंद्रिय १ तेंद्रिय २ चउरींद्रिय असंज्ञीसमूर्छिम पंचिंद्रियमाहि पांचपर्याप्ति च्यारमूलनी पांचमीभाषाअधिकी संज्ञीगर्भजमांहि मनवध्यो जेमांहि सतलीकही तेमांहीएक उछीहोय तेअपर्याप्तिकहिये। चौदपूर्वकह्या तेआगलिविस्तरपणे वखाणीस्येकहीस्ये अनुक्रमे। उत्पातपूर्व जेमांही द्रव्यपर्याप्तानोउत्पादछे १। बीजोअग्र णीय जेमांहि तेहिजपूर्वनो अग्रपरिमाणपाम्यो २। त्रीजोप्रवाद जिहांजीवादिकनो वीर्यप्ररूप्यो ३। अस्तिनास्तिप्रवाद जेहमांहि अस्तिनास्ति भाव

॥ टीका ॥

नाणप्पवायंचत्ति यत्रज्ञानंमत्यादिकं स्वरूपभेदादिभिः प्रोच्यते तत्ज्ञानप्रवादमिति । सच्चप्पवायपुव्वंति यत्रसत्यः संयमः सत्यवचनंवा सभेदेनयत्र प्रोच्यते तत्सत्यप्रवादपूर्वं तत्तोआयप्पवायपुव्वंवत्ति यत्रात्मजीवोनेकनयैः प्रोच्यते तदात्मप्रवादमिति कम्मप्पवायपुव्वन्ति यत्रज्ञानावरणादिकर्म प्रोच्यते तत्कर्मप्रवादमिति पच्चक्खाणंभवेनवमन्ति यत्रप्रत्याख्यानस्वरूपंवर्ण्यते तत्प्रत्याख्यानमिति । विज्जाअणुप्पवायन्ति यत्रानेकविधा विद्यातिशयाःवर्ण्यते तद्विद्यानुप्रवादं अवंझपाणाउ बारसंपुव्वन्ति यत्रसम्यग्ज्ञानादयोऽवंध्याः सफलावर्ण्यन्ते तदवंध्यमेकादशं यत्रप्राणाजीवाआयुश्चानेकधावर्ण्यन्ते तत्प्राणायुरितिद्वादशंपूर्वं तत्तो किरियविसालंति यत्रक्रियाः कायिक्यादिकाः विशालाविस्तीर्णाः सभेदत्वादभिधीयंते तत्क्रियाविशालापुव्वं तह बिंदुसारवत्ति लोकशब्दोत्रलुप्तोद्रष्टव्यः तत

॥ मूल ॥

वायं तत्तोनाणप्पवायंच सच्चप्पवायपुव्वं तत्तोआयप्पवायंपुव्वंच कम्मप्पवायपुव्वं पच्चक्खाणं भवेनवमं विज्जाणुप्पवायं अवंझपाणाउ बारसंपुव्वं तत्तोकिरियविसालंपुव्वं तहबिंदुसारंच अग्गेणीअस्सणंपुव्वस्स चऊ

॥ भाषा ॥

प्रवृ यो ४ । ज्ञानप्रवाद जेमांहि मत्यादिकज्ञानस्वरूपभेदेंकह्यो ५ । सत्यप्रवादपूर्व सत्यसंयम तथा सत्यवचन तेह जेहमां विस्तुभेदेंकह्यो ६ । तिवारपछे आत्मप्रवादपूर्वं जिहां आत्मजीव अनेकनयकरीकह्यो ७ । कर्मप्रवाद जिहां ज्ञानावरणीयादिककह्यो ८ । प्रत्याख्यानपूर्वनवमुं प्रत्याख्यान स्वरूप जिहांवर्णवीयो ९ । विद्यानुप्रवाद जिहां अनेकविद्यानाअतिशयवर्णव्याछे १० । अवध्य इग्यारमू जिहां सम्यक् ज्ञानादिक अवध्यसफलवर्णव्या ११ । प्राणायु बारमूं पूर्वजिहां प्राणजीव अने आउखो अनेकधावर्णव्यो १२ । तिवार पछेक्रियाविशाल जिहांकायिक्यादिक क्रियाविशाल विस्तीर्णसातेकह्या १३ बिंदुसार जेह

॥ ४१ ॥ ॥ टीका ॥ सलोकस्य बिन्दुरिवाचरस्य सारं सर्वोत्तमंयत्तल्लोकबिंदुसारमिति तथाचोद्दसवत्थूणित्ति। द्वितीयपूर्वस्यवस्तूनि विभागविशेषास्तानिच चतुर्दशसूत्रवस्तूनि त थासाहस्सिओत्ति। सहस्राण्येवसाहस्त्रं तथाकम्मविसोहीत्यादि कर्मविशोधिमार्गणां प्रतीत्य ज्ञानवरणादिकर्मविशुद्धिगवेषणामाश्रित्य चतुर्दशजीवस्थानानि जीवभेदाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा मिथ्याविपरीतादृष्टिर्यस्यासौ मिथ्यादृष्टिः उदितमिथ्यात्वमोहनीयविशेषः तथासासायणसम्मदिट्ठित्ति। सहेषत्तत्वश्रद्धानरसास्वाद नेन वर्त्ततेइतिसास्वादनः घण्टालालान्यायेनप्रायः परित्यक्तसम्यक्त स्तदुत्तरकालंषडावलिकस्तथाचोक्तं। उवसमसम्मत्ताउवयउमित्थअपाउपाणस्स। सासायण सम्मत्तं तदंतरालंमिच्छबलियंति। सास्वादनश्चासौसम्यग्दृष्टिश्चेतिविग्रहः सम्मामिच्छदिट्ठित्ति सम्यक्तमिथ्याचदृष्टिरस्येति सम्यग्मिथ्यादृष्टिरुदितदर्शनमोहनी

॥ मूल ॥ द्दसवत्थू प० समणस्सणं भगवउमहावीरस्स चउद्दसमणसाहस्सिउ उक्कोसियासमणसंपया होत्था कम्मवि सोहिमग्गणं पडुच्चचउद्दसजीवठाणा प० तं० मिच्छदिट्ठी सासायणसम्मदिट्ठी सम्मामिच्छदिट्ठी अविरयस

॥ भाषा ॥ लोकने बिंदुनोपरि अक्षरनोसार सर्वोत्तम ते बिंदुसार चौदमोपूर्वकह्यो १४। अग्रणीयबीजुंपूर्वजाणिवुं तेहना चौदवस्तु भागविशेषभूतावस्तुनीतिकह्या। श्रम णतपस्वीभगवंत ज्ञानवंत श्रीमहावीरने चौदश्रमणयतीनासहस्र एतले सहस्रपतीनो उत्कृष्टी साधुनी संपदाऋद्धिहुइ। ज्ञानावरणीयादिकर्म विशोधि गवेषणा पडुच आश्रीने चौद जीवमास्थानक भेदकह्या एतले चौदगुणठाणा तेकहेछे। मिथ्याविपरीतछे दृष्टिजेहनी तेमिथ्यादृष्टि प्रथम १। थोडोतत्व श्रद्धानरूपरसास्वादेकरी सहितवर्ते तेस्वादन सम्यग् दृष्टि बीजोगुणठान २। सम्यग् मिथ्या दृष्टिजेहनीछे ते सम्यग् मिथ्यादृष्टि एतले कांइकसम्यक्त रुचि कांइक मिथ्यात्वे रुचिएतले मिश्रगुणठाणुंत्रीजुं ३। अविरतिसम्यग् दृष्टिविरतिरहित सम्यग् दृष्टिचौथोगुणठान ४। विरताविरतिश्रावक ५ प्रमत्तसंयती

॥ टीका ॥

यत्रिशेष: तथा अविरतसम्यग्दृष्टिर्देशविरतोदेशविरत: श्रावकइत्यर्थ: प्रमत्तसंयत: किंचित्प्रमादवान् सर्वविरत: अप्रमत्तसंयत: सर्वप्रमादरहित: सएव
नियट्टि इहक्षपकश्रेणिमुपशमश्रेणिंवा प्रतिपन्नोजीव: क्षीणदर्शनसप्तकउपशांतदर्शनसप्तकोवा निवृत्तिबादरउच्यते तत्रनिवृत्तिस्तद्गुणस्थानकं समकालप्रतिप
न्नानां जीवानामध्यवसाय भेदतत्प्रधानोबादरो बादरसंपरायोनिवृत्तिबादर: अणियट्टिबायरेत्ति अनिवृत्तिबादर: सचकषायाष्टकक्षपणारम्भान्नपुंसकवेदोपश
मनारम्भादारभ्य बादरलोभखंडं क्षपणोपशमनेयावद्भवतीति सुहुमसंपराएत्ति सूक्ष्म: संज्वलनलोभासंख्येयखण्डरूप: संपराय: कषायोयस्यससूक्ष्मसंपरायो लो
भानुवेदकइत्यर्थोयंद्विविधाइत्याह उपशमकोवाउपशमश्रेणीप्रतिपन्नक्षपकोवाक्षपकश्रेणिप्रतिपन्न इतिदशमंजीवस्थानमिति तथा उपशांत: सर्वथानुदयावस्थो
मोहो मोहनीयकर्मयस्यउपशांतमोह: उपशमवीतरागइत्यर्थोऽयंचोपशमश्रेणि समाप्तावंतर्मुहूर्तंभवति तत:प्रच्यवतएवेति तथाक्षीणो नि:सत्ताकीभूतोमोहोय

॥ मूल ॥

सम्मद्दिठी विरयाविरए पमत्तसंजए अप्पमत्तसंजए निअट्टिअनियट्टिबायरे सुहुमसंपराय उवसमएवाखव

॥ भाषा ॥

कांइक प्रमादवंत ६ । अप्रमत्तसंयतसर्वप्रमादरहित ७ । आठमोठाणाथी क्षपकश्रेणि तथा उपशमश्रेणी जडतनुजीव अणंतानुबंधीया ४ । क्रोध १ मान २
माया ३ लोभ ४ । अणिमोहनी सम्यक्त १ मिथ्या २ मिश्र ३ एम ७ । दर्शनसप्तक्षयकरतो क्षपकश्रेणी आरूढकहो अने निवृत्ति बादर आठमूगुणठाणुंकह्यूं ८
नवमूं अनिवृत्ति बादरतिहां पहिलोकषायाष्टखपायव्यानंतर नपुंसकवेदोदयोपशमाव्यानंतर बादर लोभखंडखपावे केउपशमावे ९ । सूक्ष्मसंपराय दसमूं
तिहांसूक्ष्मसंज्वलन लोभासंख्येय खंडरूपसंपराय कषायनो सूक्ष्मलोभनो वेदशोछे जिहां सूक्ष्मसंपराय गुणठाणेठाणो जीव उपशमश्रेणी प्रतिपन्नहोय के क्षप
कश्रेणी प्रतिपन्नहोय १० । इग्यारमूं उपसंतमोह सर्वथापि उपशांत अनुदयछे मोहनीयकर्म तिहां इग्यारमूं गुणठाणे अंतमुहूर्तरही कालकरतो अनुत्तर

स्वस तयाश्चयवीतरागइत्यर्थोऽयमप्यंतर्मुहूर्त्तं एवेति तथासंयोगीकेवली मनःप्रभृत्यतिव्यापारवान् केवलज्ञानीति तथाश्चयोगीकवली निरुद्धमनःप्रभृतियोगः शै ॥ टीका ॥
लेशीगतोह्रस्वपंचाक्षरोद्गिरणमात्रंकालंयावदिति चतुर्दशंजीवस्थानमिति भरहेत्यादि भारतैरवतोर्जीवे इहभरतमैरवतंचारोपितगुणको दंडाकारपनस्तयज्जी
वेभवतः तत्रभरतस्यहिमवतोऽर्वागनन्तराः प्रदेशाः येपिजीवाः ऐरवतस्यचशिखरिणः परतोनंतरप्रदेशाश्रेणीति भरतैरावतजीवा चाउरंतचक्कवट्टिस्सत्ति च

एया उवसंतमोहेवा खीणमोहे संजोगीकेवली अरहेवयाउणजीवाउ चउद्दसचउद्दसजोयणसहस्साइं चत्तारि ॥ मूल ॥
यएऊत्तरेजोयणसए छव्वएकूणवीसेन्नागेजोयणस्स आयामेणं प० एगमेगस्सणंरन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स चउ

त्रिमाने अवतरे अने पाछोपडेतो छट्ठेआवी पहिले एउपशमश्रेणीनो धणी जोक्षपकश्रेणी करतो दशमगुणठाणाथी इग्यारमोमूंकी बारमेवडेतेह ११। बार ॥ भाषा ॥
मोक्षीणमोह सर्वथापि क्षीणछे मोहजिहांछिणयोतराग १२। तेरमो संयोगी केवली मनोप्रभृति योगव्यापारवंत केवलज्ञानी १३। चौदमो असंयोगी केव
लो मनप्रभृतियोगरुंधि जिहांरुंध्याछे ह्रस्वपंचअक्षरकालमान १४ गुणठानकालमान मिछे१ सासण२ अविरय३ परभवियाउणसे सगुणठाणमिछस्सति
सेभंगछावलियाहोय सासणे १ तित्तीसयरचाउत्थ ४ पुव्वाणकोडिपणग ५ तेरसमं १३। लहुपंचक्खरचरमं १४ अंतहुसे सगुणठाणा १८ भरतऐरवत एहबिहुं
क्षेत्रना जीव तिहां हिमवंतपर्वतथकी ओरहे पूर्वपश्चिमसमुद्रलगी लांबीभरजोवा प्रत्यंचाकारे अने ऐरवतक्षेत्रनाजीव शिखरीपर्वतथकी परहीश्रेणी जाणी
वी एहबेहुंजीव चौदचौदयोजन सहस्रनो चारसेएकोत्तरयोजन एकयोजनना ओगणीसहाइयाछभागआयाम लांबापणेकह्या एकएकने राजाने पूर्वादिक
दक्षिणसमुद्र चउथोहिमवंत पर्वत एतलालगी भूमिना अंतभाग ४ छे। जिहांतेह भूमिनोधणी एहवो चक्रवर्ती तेहने १४ रत्नहोय पोतानो जातिमांहि जे

त्वारोन्ताविभागा यस्यांसाचतुरंताभूमिः तत्रभवः स्वामितयेतिचातुरंतः सचासौचक्रवर्त्तीचेतिविग्रहः रत्नानिस्वजातीयमध्ये समुत्कर्षयंतिवस्तूनीति यदाह ॥ टीका ।
रत्नंनिगद्यते तज्जातीयदुत्कृष्टमिति गाहावइत्तिगृहपतिः कोष्ठागारिकः पुरोहियत्ति पुरोहितः शांतिकर्मादिकारी वड्ढइत्ति वर्द्धकिरथादिनिर्मापयिता मणिः
पृथिवीपरिणामः काकिणीसुवर्णमयी अधिकरणीसंस्थानेति इहसप्ताद्यानिपंचेंद्रियाणि शेषाण्येकेंद्रियाणीति शीकांतमित्यादीन्यष्टौविमानानांनामानीति

इस्सरयणा प० तं० इत्थीरयणे सेणावइरयणे गहावइरयणे पुरोहियरयणे वड्ढइरयणे आसरयणे हत्थिरयणे ॥ मूल ।
असिरयणे चक्करयणे छत्तरयणे चम्मरयणे मणिरयणे कागिणिरयणे जंबूद्दीवेणंदीवे चउद्दसमहानईओ पुव्वा
वरेणलवणसमुद्दं समुप्पंति तं० गंगा सिंधु रोहिआ रोहिअंसा हरिया हरिकंता सीआ सीओदा नरकंता
नारिकांता सुवण्णकूला रुप्पकुला रत्ता रत्तवई इमीसेणंरयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइआणं

उत्कृष्टवस्तु तेहनेरत्नकहिये तेकहेछे। स्त्रीरत्न १। सेनापतिरत्न २। गृहपतिरत्नतेकोठारी ३। पुरोहितशांतिक कर्मकारी ४। वार्द्धकीसूत्रधार ५। अश्व ॥ भाषा
घोडोरत्न ६। हस्तिरत्न ७। एहसातपंचेंद्रियरत्न। असिखड्गरत्न ८। दंडरत्न ९। चक्ररत्न १०। छत्ररत्न ११। चर्मरत्न १२। मणिरत्न ६ पृथिवीपरिणाम १३।
काकिणी सुवर्णमयी अहिरणसंठाणि ७ एह एकेन्द्रियरत्न चौद १४ कह्या। जंबूद्वीपनेविषे चौद महानदीजाणवी। पूर्वपश्चिम समुद्रेसमर्प्पे पहुंचेछे। पूर्वलव
णसमुद्रे ७ पश्चिमसमुद्रे ७ पहुंचे तेकहेछे। गंगा १। सिंधु २। रोहिता ३। रोहितंसा ४। हरिता ५। हरिकांता ६। सीता ७। सीतोदा ८। नरकांता
९। नारिकांता १०। सुवर्णकूला ११। रूप्यकूला १२। रक्ता १३। रक्तवती १४। एणीएरत्नप्रभा पहिली पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो चौदपल्योप

॥ मूल ॥

॥ ४३ ॥ चऊद्दसपलिउवमाइं ठिई प० पंचमीएणं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउद्दससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अात्थेगइयाणं चऊद्दसपलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं चउद्दसपलिउ वमाइं ठिई प० लंतएकप्पेसुदेवाणं अत्थेगइयाणं चउद्दससागरोवमाइं ठिई प० महासुक्केकप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं जहन्नेणं चउद्दससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा सिरिकंतं सिरिमहिअं सिरिसोमनसं लंतयं काविठं महिंदं महिंदकंतं महिंदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं चऊद्दससागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा चऊद्दसहिं अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणंदेवाणं चऊद्दसहिंवाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइआत्न

॥ भाषा ॥

म आउखोकह्यो पंचमीधूमप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो चौदसागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमारदेवतानो केतलाएकनो चौदपल्योपमआउखोकह्यो। सौधर्म ईशानदेवलोके केतलाएक देवतानो चउदपल्योपम आउखोकह्यो। लांतक देवलोके केतलाएक देवतानो चौदसागरोपम आउखोकह्यो महाशुक्र सातमे देवलोके केतलाएक देवतानो जघन्यो चौदसागरोपम आउखोकह्यो छठेदेवलोके जेहदेवता श्रीकांत १ श्रीमहातक २ श्रीसोमनस १ लांतक ४ काविष्ठ ५ महेंद्र ६ महेंद्रकांत ७ महेन्द्रोत्तरावतंसक ८ एह आठविमानेदेवतापणे उपनाछे। तेहदेवतानो उत्कृष्टो चौदसागरोपम आउखोकह्यो। तेह देवता चौदेअर्द्धमासे पखवाडे घणोस्वासले थोडोस्वासले ऊंचोस्वासले नीचोस्वासमूके तेहदेवताने चौदवर्षसहस्त्रे आहारनो अर्थउपजे। केएक भव्यजीव चौ

॥ टीका ॥

भवपंचदशस्थानकं सूत्रमेविर्जिवविलिख्यते इत्यस्थितेर्वाकमत्तेमथाणि । तत्र परमाधर्मिकाश्र संक्लिष्टपरिणामत्वात् परमाधार्मिकाः असुरविशेषा येतिसृषु पृथिवीषु नारकान् कदर्थयंतीति तत्रांबेत्यादिश्लोकद्वयं एतेषव्यापारभेदेन पंचदशभवंति तत्रअंबेत्ति यःपरमाधार्मिकदेवो नारकान् हंतिपातयति बध्नाति नीत्वावारं २ खतलेविमुंचति सद्त्वंमभिधीयते १ अंबरिसीचेवत्ति यस्तुनारकान्विहता कल्पनिकाभिः खंडशः कल्पयित्वा भ्राष्ट्रपाकयोग्यान् करोति सोंबरीषोति २ सामेत्ति यस्तुरज्जुहस्तः प्रहारादितानधःशातनपतनादिकरोति वर्णतश्चश्यामइति ३ सबलेत्तियावरेत्ति शबलइतिचापरः परमाधार्मिकाइति प्रक्रमः सचांत्रवसाहृदयकालेयकादीन्युत्पाटयति वर्णतश्चशबलः कर्बुरइत्यर्थः ४ रुद्दोवरुद्दोत्ति यःशक्तिकुन्तादिषुनारकनान् प्रोतयतिसरौद्रत्वाद्रौद्रइति

॥ मूल ॥

यसिझिश्चा जीवाजेचऊद्दसाहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ १४ ॥ पन्नरसपरमाहम्मीश्चा प० तं० ॥ श्चंबे श्चंबरिसीचेव सामसबलेत्तिश्चावरे रुद्दोवरुद्दकालेश्च महाकालेत्तिश्चावरे श्चसिपत्तेधणूकुंभे वालुए वेश्चरणीत्तिय खरस्सरेमहाघोसे

॥ भाषा ॥

दभवग्रहणे सीझस्ये बूझस्ये मूकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये मोक्षजास्ये इति चौदमोठाणो सम्मतो ॥ १४ ॥ हिवे पनरनो अधिकार लिखियेछे पनरभेद परमाधर्मीक असुरदेव विशेष महाअधर्मी संक्लिष्ट परिणामनाधणी त्रिणिनरकलगे नारकीने वेदनानादेणहारकह्या तेकहेछे । जेपरमाधर्मी देव नारकीने हणेपाडे अंबर आकाशे उछाले तेअंबकहिये १ । हण्यानारकीने रापशस्त्रेकरि अनेक खंडकल्पीभावे पचिवायोग्यकरे तेअंबरीषकहिये २ । जेहनारकीनें हाथपगनें प्रहारेंकरी मारीनेहेठापाडे तेहने श्यामकहिये वर्णथकीकाला तेश्याम ३ । कर्बुरअनेरा नारकीना हृदयाकालिजा उपाडेंतेशबलक कहि

५ यस्तुतेषामंगोपांगानि भनक्ति सोत्यंतरौद्रत्वादुपरौद्रइति ६ कालेत्ति यःकंद्वादिषुपचतिवर्णतः कालस्सकालः ७ महाकालेइतिचापरे परमाधार्मिक इति प्रक्रमः सचश्लक्ष्णमांसानि खण्डयित्वाखादयति वर्णतश्चमहाकालइति असिपत्तेत्ति असिः खड्गस्तदाकारपत्रवद्दनंविकुर्व्य यस्तत्समाश्रितनारकानसिपत्र पातनेन तिलशश्छिनत्तिसोऽसिपत्रः ८ धणुत्ति योधनुर्विमुक्तार्द्धचन्द्रादिबाणैः कर्णादीनां च्छेदनभेदनादिकरोतिसधनुरिति १० कुंभेत्तियः कुंभादिषुतान् पचतिसकुंभः ११ वालुत्ति यः कदंबपुष्पाकारासुवज्राकारासुवा वैक्रियवालुकाकारासु तप्तमासुचणकानिवतान् पचतिसवालुकाइति १२ वेतरणीयत्ति वेतरणोत्तिचपरमाधार्मिकः सचपूयरुधिरत्रपुतांम्रादिभिरतितापात्कलकलायमानैर्भृतां विरूपंतरणंप्रयोजनमस्यांते वेतरणीति यथार्थांनदींविकुर्वंस्तत्तारणेन कदर्थयतिनारकानिति १३ खरस्सरेति योवज्रकण्टकाकुलं शाल्मलीवृचं नारकमारोप्य खरस्वरं कुर्वंतंकुर्वन्वा कर्षतिसखरस्वरेति १४ महाघोसेत्ति योभी

ये ४ खड्गभालानेविषे नारकीनेपाडे तेरुद्रपणायकी रुद्र ५। नारकीना आंगोपांग भाजेते अत्यंतरौद्र ६। नारकीने कडाहीमां घालीनें पचावे तेकाल ७। महाकाल अपर अनेरो तेहनारकीना सूक्ष्ममासनां खंडकरीखाय वर्णकरी पिणमहाकाल ८ शाल्मलीवृच्च हेठीं नारकीने बेसारी तेहनापत्र असिखड्गाकारे विकुर्वी तेह असिपत्रने पाडे वेकरी तिलतिलमात्र छेदेते असिपत्र परमाधर्मी ९। तेहना धनुपथकी अर्द्धचंद्रबाण तेणेकरी नारकीना कर्णनासादिकने छेदे भेदे तेधनुषनाम १०। कुंभत्ति कुंभीमांहि तेहनारकीने पचावे तेकुंभ ११। कदंबपुष्पाकारे वैक्रिय तातीवेलूकरी तेमांहि भाटीनाचणानेपरी पचावे तेवालुक १२। वैतरणीनदी विकुर्वी पूतिरुधिरतरुंतांबो महातम कलकलायमानेभरी तेमांहि नारकीने बोलिकदर्थे तेहवैतरणीनाम १३। खरस्वरइति वज्रमय कांटासहित शाल्मलीवृच्च विकुर्वी तेह उपरिनारकीने चढावीनेताणे जिमकांटा ऊपरि लूगडूंनाखीने तांणे तेखरस्वर १४ महाघोसेति वीहता नासता

तयत् पलायमानान् नारकान् पशुनृदववाटकेषु महापाप कुर्वा-वर्कणाद्‌समहावापिडा त १२ ...

दशाख्याताः कथिताजिनैरिति ॥ ध्रुवराहुणमित्यादि द्विविधोराहुः पर्वराहुर्ध्रुवराहुश्च तत्रयः पर्वणिपोर्णमास्याममावास्यायांवा चन्द्रादित्ययोरुपरागंकरोति

सपर्वराहु यस्तुचन्द्रस्यसदैवसन्निहितः संचरति सध्रुवराहुः आहच । किण्हंराहुविमाणं निच्चंचदेणहोइअविरहियं । चउरंगुलमप्पत्तं हेट्ठाचन्दस्सतंचरइत्ति ततो

ऽसौध्रुवराहुः णमित्यलंकारे बहुलपक्षस्यप्रतीत्यस्य पाडिवयन्तिप्रतिपदं प्रथमतिथिमादौकृत्वेतिवाक्यशेषः पञ्चदशभागंपंचदशभागेनेति वीप्सायांद्विर्वचनादि

एतेपन्नरसाहिआ णेमीणंअरहा पन्नरसधणूइंउड्ढं उच्चत्तेणंहोत्था णिच्चराहूणं बहुलपक्खस्सपडिवए पन्नरसति ॥ मूल ॥

भागेणं चंदलेसआवरेत्ताणं चिट्ठन्ति तं० पढमाएपढमंभागं बीआएदुभागं तइयाएतिभागं चउत्थीएचउभागं

पंचमीएपंचभागं छट्ठीएछभागं अट्ठमीएअट्ठभागं नवमीएनवभागं दसमीएदसभागं एक्कारसीए एक्कारसमं

नारकोने पशुनीपरि इधाडेघालीमेले पोकारकरे तानेकुंभीमेले तेमहापाप परमाधर्मी एते पनरजातीना परमाधर्मीकह्या १५। नेमिनाथ अरिहंतएकवीस ॥ भाषा ।

मा पनरधनुषऊंचा ऊंचपणेकह्या । राहुना दोहिभेद पर्वराहु ध्रुवराहु पर्वराहु पर्वविशेषे पोर्णमासीएं अमावास्याएं चंद्रादित्यनेआवरे ध्रुवराहु अंधारापख

नीरातीएं चंद्रमाने पनरमभागे चंद्रमानी लेश्यादीप्ति आवरीने आच्छादीने तिष्ठरहे तेकहेछे । एक पडिवामांडि प्रतिदिनें राहुचंद्रमानी एकएककला आ

छादे पहिली पडिवाहोय १ । बीजेदिने बीजोभाग २ । त्रीजेदिने त्रीजोभाग ३ । चउथें चोथोभाग ४ । पंचमीए पांचमोभाग ५ । छट्ठेछट्ठोभाग ६ । सातमे

सातमोभाग ७ । आठमेदिने आठमोभाग ८ । नवमीए नवभाग ९ । दशमीए दशमभाग १० । एकादशीए इग्यारभाग ११ । बारसे बारभाग १२ । तेरसे

॥ टीका ॥

यथापदं पर्दैनगच्छतीत्यादिषु प्रतिदिनंपञ्चदश भागमितिभाव: चन्द्रस्यप्रतीतस्यलेश्यामिति लेश्यादीप्तिस्तत्कारणत्वात् मण्डलंलेश्यातामावृत्याच्छाद्यतिष्ठति एतदेवदर्शयन्नाह तद्यथेत्यादि पढमाइत्ति प्रथमायांतिथ्यां प्रथमंभागं पंचदशांशलचणं चंद्रलेश्यायाआवृत्यतिष्ठतीति प्रक्रम: अनेनक्रमेणयावत् पन्नरसेसुत्ति

॥ ४५ ॥ पञ्चदशसुदिनेषु पञ्चदशंभागमावृत्यतिष्ठति तंचेवत्ति तमेवपञ्चदशभागं शुक्लपचस्य प्रतिपदादिषु चंद्रलेश्यायाउपदर्शयन् पंचदशभागत: स्वयमपसरणत: प्रकटयन् २ तिष्ठतिध्रुवराहुरिति इहचायंभावार्थ: षोडशभागीकृतस्यचंद्रस्य षोडशभागोऽवस्थितएवास्ते येचान्येभागास्तद्राहु: प्रतिदिनमेकैकंभागं कृष्णपचे आवृणोतिशुक्लपचेतु विमुंचतीति उक्तंचज्योतिष्करण्डके सोलसभागेकाऊण उलुवइहायएत्थपन्नरसं। तत्तियमेत्तेभागे पुणोविपरिवठ इजोण्हंति। ननुचन्द्रविमा

॥ मूल ॥

बारसमीए बारमन्नागं तेरसीए तेरसन्नागं चउद्दसीए चउद्दसन्नागं पन्नरसेसु पन्नरसन्नागं सुक्कपरकस्स उवद सेमाणे चिठत्ति तं० पढमाएपढमंन्नागं जावपन्नरसेसु पन्नरसन्नागं छणरकत्ता पन्नरस मुक्तत्तसंजुत्ता प० तं० सतन्निसय न्नरणि अद्दा असलेसा साइ तहाजेठाय एतेछणरकत्ता पन्नरसमुक्तत्तसंजुत्ता चेत्तासोएसुणं

॥ भाषा ॥

तरमोभाग १३। चौदसीए चौदभाग १४। पनरमेदिने पनरमो कलाढाके १५। तेहीज चन्द्रनो पनरमोभाग शुक्लपचे राहुमूंकतो चंद्रनेप्रकटतो तिष्ठेरहे शुक्लपचने पहिले दिने पहिलो एकभाग बीजेदिनेबीजोभाग एमयावत् पनरमेदिने पनरमोभागमूंके। छनचत्र पनरमूहूर्तलगे चंद्रमा साथे चंद्रसंयुक्तथका रहे तेह तुलासंक्रांति जाणिवो तेकहेछे। शतभिषा १। भरणी २। आर्द्रा ३। आश्लेषा ४। स्वाती ५। तथाज्येष्ठा ६। एह छनचत्र पनरमूहूर्त संयुक्तकहीये १५ मुहूर्तलगे चंद्रमासाथेचाले। चैत्रआसो मसवाडे पनरमुहूर्तनो दिवस ३० घडीनोहुओ। तेणेमसवाडे पनरमुहूर्तनी ३० घडीनीरात्रीहोय। विद्या

॥ टीका ॥

नस्यपंचैकषष्ठिभागन्यूनयोजनप्रमाणत्वात् राहुविमानस्य ग्रहविमानत्वेनाऽर्द्धयोजनप्रमाणत्वा त्कथंपंचदशेदिनेचंद्रविमानस्य मण्डलेनेतरस्यच लघुत्वेनसर्वा वरणंस्यादित्यत्रोच्यते । यदिदंग्रहविमानोऽर्द्धयोजनमिति प्रमाणंतत्प्रायिकमिति । राहोर्यहस्वयोजनप्रमाणमपिविमानंसभाव्यते लघीयसोपिवाराहुवि मानस्यमहतातमिस्त्ररश्मिजालेन तस्यावरणाददोषइति तथा षण्नक्षत्राणि पंचदशमूहूर्त्तानि यावचंद्रेण संयोगोयेषांतानि पंचदशमुहूर्त्तसंयोगानि तद्य था सयभिसयाभरणीओ अद्दाअस्सेसयाइजेठाय । एएछवक्खत्ता पन्नरसमुहुत्तसंजुत्ता । संयुक्तं संयोगइति तथाचेत्तासोएसुमासेसुत्तिस्थूलन्यायमाश्रित्यचैत्रेऽश्व युजिचमासे पंचदशमुहूर्त्तो दिवसोभवति रात्रिश्च नियतमुमेषसंक्रांतिदिनेचेदहष्टव्यमिति पय्रोगेत्ति प्रयोजनंप्रयोगः परिस्पंदआत्मनः क्रियापरिणामोव्यापा रइत्यर्थः अथवा प्रकर्षेणयुज्यते संबध्यतेऽनेनक्रियापरिणामेनात्मनाकर्मणेत्यसौ प्रयोगः तत्रसत्यार्थालोचननिबंधनंमनः सत्यमन स्तस्यप्रयोगोव्यापारः स

॥ मूल ॥

मासेसुपन्नरसमुहुत्ते दिवसोभवति सइच्चपन्नरसमुहुत्ताराईभवति विज्जाअणुप्पवायस्सणं पुव्वस्सपन्नरसव त्थू प० मणूसाणंपन्नरसविहेपओगे प० तं० सच्चमणपओगे मोसमणपओगे सच्चमोसपओगे असच्चामोसमणप

॥ भाषा ॥

अनुप्रवाद दसमी पूर्वतेहनी १५ वस्तुअध्ययन विशेषकह्या । मनुष्यने पनरप्रकारें प्रयोगकहतांयोगकह्या । तेकहेछे । सत्यमनोयोग मननोसांचोव्यापार १ । एमज मृषामननोव्यापार २ । सत्यमृषामनोयोगमिश्र ३ । असत्यअमृषा मनोयोग ४ । एमज व्यापार वचनयोग सत्यवचनयोग ५ । मृषावचनयोग ६ । मिश्रवचनयोग ७ असत्यामृषावचनयोग ८ कायानासातयोग औदारिककाययोग पर्याप्तावस्थाहुई ९ औदारिकमिश्रकाययोग अपर्याप्तावस्थाहुई उत्पत्ति समय औदारिकपुद्गल अने कार्मणपुद्गलमिश्रीभावे अंतर्मुहूर्तलगे रहेतेभाटे औदारिक मिश्रकाययोग १० । एमज वैक्रियकाययोग ११ । वैक्रियमिश्रकाय

त्यमनःप्रयोगः एवंशेषेष्वपि । नवरमौदारिकशरीरकायप्रयोग औदारिकशरीरमेव पुद्गलस्कंधसमुदायत्वेनोपचीयमानत्वात् कायस्तस्यप्रयोग इतिविग्रहः अयंचपर्याप्तकस्यैव वेदितव्यः तथौदारिकमिश्रकायप्रयोगः अयंचापर्याप्तकस्येति इहचोत्पत्तिमाश्रित्यौदारिकस्य प्रारब्धस्य प्रधानत्वादौदारिको वैक्रियेणमि श्रोयावद्वैक्रियपर्याप्त्यानपर्याप्तिंगच्छति एवमाहारकेण चौदारिकस्यमिश्रतावसेयेति तथा वैक्रियपर्याप्तकस्य तथा वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगादपर्याप्तकस्य ॥ टीका

ओगे सच्चवइपओगे मोसवइपओगे सच्चमोसवइपओगे असच्चामोसवइपओगे उरालियसरीरकायपओगे उरालिअ मीससरीरकायपओगे वेउव्वियसरीरकायपओगे वेउव्विअमीससरीरकायपओगे आहारयसरीरकायप्पओगे आहा ॥ मूल ॥

योग १२ । आहारक काययोग १३ । आहारकमिश्र काययोग १४ कार्मणकाययोग १५ । जिवारें केवली ८ समयक केवलसमुद्घातकरे केवलीनेत्रीजे चौथे पांचमेकार्मणकायहुया । एणीए रत्नप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो पनरपल्योपमआउखोकह्यो । पांचमी धूमप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकी नो पनरेंसागरोपमआउखोकह्यो । असुरकुमारदेवताने केतलाएकनो पनरपल्योपम आउखोकह्यो । सौधर्मईशानदेवलोके केतलाएकदेवनो पनरपल्योपम आउखोकह्यो । महाशुक्रसातमे देवलोके केतलाएकदेवनो पनरेंसागरोपम आउखोकह्यो । सातमेदेवलोके जेदेवतानंद १ । सुनंद २ । नंदावर्त ३ । नंदप्रभ ४ । नंदकांत ५ । नंदवर्ण ६ । नंदलेश ७ । नंदध्वज ८ । नंदमित्र १० । नंदकूट ११ । नंदोत्तरावतंसक १२ । एहबारविमाने देवतापणे उपनाछे । तेहदेवता ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

देवस्य नारकस्यवा कर्मणि नैवलब्धि वैक्रियपरित्यागे वा औदारिके प्रवेश्याहारयामौदारिको पादानायप्रवृत्ते वैक्रियाप्रधान्यादौ दारिकेणापि मिश्रतेत्येकेत्वा हारकशरीरकाय प्रयोगस्तदनिनिवृत्तौ सत्यां तस्यैवप्रधानत्वा त्तथाहारकमिश्रशरीरकायप्रयोग: औदारिकेणसह आहारकपरित्यागे नेतरग्रहणायोद्यतस्य एतदुक्तं भवति यदाहारकशरीरी भूत्वाकृतकार्य: पुनरप्यौदारिकंगृह्णाति तदाहारकस्य प्रधानत्वा दौदारिकप्रवेशं प्रतिव्यापार भावाद्यावत् सर्वथैनंपरित्य जत्याहारकं तावदौदारिकेण सहमिश्रतेति आहमतत्तेनसर्वथामुक्तं पूर्वनिर्वर्त्तितं हिन्त्येवंत्वकायं गृह्णाति सत्यं तथाप्यौदारिकशरीरोपादानार्थं प्रवृत्तइतिगृ ह्यात्येवं तथाकर्मण:शरीरकायप्रयोगे विग्रहेसमुद्घातगतस्यच केवलिनस्तृतीय चतुर्थ पंचसमयेषु भवतीति ॥ १५ ॥ अथ षोडशस्थान मुच्यते सुगमंचेदं नवरं

॥ मूल ॥

रयमीसयसरीरकायप्पउगे कम्मयसरीरकायपउगे इमीसेणंरयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइआणं पन्नरस पलिउवमाइं ठिई प० पंचमीएपुढवीए अत्थेगइआणं नेरइआणं पन्नरससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं पन्नरसपलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं पन्नरसपलिउवमाइं ठिई प० महासुक्केकप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं पन्नरससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा णंदं सुणदं णंदावत्तं णंदप्पभं णंदकंतं णंदवसं णंदलेसं णंदज्झयं णंदसिंगं णंदसिट्ठं णंदकूडं णंदुत्तर

॥ भाषा ॥

ने उत्कृष्टो पनरेसागरोपम आउखोकह्यो । तेदेवतापनरे पखवाडे सासोसासघर्णाले ऊंचोस्वासले नीचोस्वासमूंके तेहदेवतानो पनरवर्षसहस्रे आहा रनो अर्थउपजे। केतलाएक भव्यजीव पनरभवनेआंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदु:खना अंतकरस्ये मोक्षजास्ये इति पनरमूंठाणूंसमाप्तं ॥ १५ ॥

॥ टीका ॥

गाथाषोडशकादीनि स्थितिसूत्रेभ्यआरात्मसूत्राणि तत्रसूत्रकृतांगस्य प्रथमेश्रुतस्कंधे षोडशाध्ययनानि तेषांच गाथाभिधानं षोडशमिति गाथा भिधान म ध्ययनं षोडशयेषांतानि गाथाषोडशकानि तत्रसमयेयत्ति नास्तिकादि समय प्रतिपादपरमध्ययनं समयएवोच्यते वैतालीयछंदोजातिवद्वं वैतालीयमेवशेषा

॥ मूल ॥

॥ ४७ ॥ वडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं पन्नरससागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवापन्नर सएहं अद्धमासाणं आणमंतिवापाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं पन्नरसहिं वाससह स्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जेपन्नरसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ १५ ॥ सोलसयगाहासोलसगा प० तं० । समए वेयालिये उवसग्गपरिन्ना इत्थीपरिन्ना निरयविभत्ती महावीरथुई कुसीलपरिभासिए वीरएधम्मे

॥ भाषा ॥

हिवेसोलमो अधिकार लिखियेछे । सूगडांगने पहिलेश्रुतखंधेसोल अध्ययन मांहि गाथा एहवोनाम सोलमोछे । तेकहेछे । समएति नास्तिकादिमतनो कथक प्रथम अध्ययन समयकहिये १ । वेतालिकछंदेबांध्यातेवैतालिय २ । उपसर्गपरिज्ञा ३ । स्त्रीपरिज्ञा ४ नरकविभक्ति ५ । वीरस्तव ६ । कुशीलपरिभाषा ७ वीर्याध्ययन ८ । धर्माध्ययन ९ । समाधिअध्ययन १० । मार्गाध्ययन ११ । त्रिणिसय त्रिसठीपाखंडीनोमत जिहांतेसमोसरण १२ । सत्यभाषकहीते यथातथा नाम १३ । ग्रंथतेअध्ययन १४ । ग्रंथनोकथक यमकछंदेबांध्योतेयमक १५ । पूर्वोक्तपनर अध्ययननो जिहांभावपामीये तेगाथानाम १६ । सोलकषायकह्याभग वंते कषकहियेसंसार तेहनो आयलाभहोय जेहथी तेकषायकह्या तेकहेछे । अनंतानुबंधी क्रोध जेह अनंतोभवनो अनुबंधकरे जावजीवरहे सम्यक्त्वभाविवा

र्णा यथाभिधेयनामानि समोसरणेत्ति समवसरणं चयाणां षच्चधिकानां प्रवादिशतानां मतपिंडनरूपं अहातहिएत्ति यथावस्तु तथाप्रतिपाद्यते तच्चतथ्या तथिका ग्रंथाभिधायकंग्रंथ: जमइत्ति यमकीयं यमकनिवद्धंसूत्रं गाहंतिप्राक्तनपंचदशाध्ययनार्थस्य गानाद्गाथागाथावातत्प्रतिभूतत्वादिति मेरुनामसूत्रे गाथा ॥ टीका ॥

समाही मग्गे समोसरणे आहातहिए गंथे जमइए गाहा सोलसकसाया प० तं० अणंताणुबंधीकोहे अणंताणु बंधीमाणे अणंताणुबंधीमाया अणंताणुबंधीलोभे अपच्चक्खाणकसाएकोहे अपच्चक्खाणकसाएमाणे अपच्चक्खा णकसाएमाया अपच्चक्खाणकसाएलोभे पच्चक्खाणावरणेकोहे पच्चक्खाणावरणेमाणे पच्चक्खाणावरणामाया पच्च क्खाणावरणेलोभे संजलणेकोहे संजलणेमाणे संजलणेमाया संजलणेलोभे मंदरस्सणं पव्वयस्स सोलसनामधे या प० तं० मंदरे मेरू मणोरमे सुदंसणे सयंपभेय गिरिराया रयणुच्चए पियदंसणे मज्झलोगस्सनाभीय अ ॥ मूल ॥

नदे १ एम अनंतानुबंधीमान २। अनंतानुबंधीमाया २। अनंतानुबंधीलोभ ४। एमज अप्रत्याख्यानक्रोध अणुव्रतआवीवा नदे वरसेलगेरहे १। अप्रत्याख्यानमान २। अप्रत्याख्यानमाया ३। अप्रत्याख्यानलोभ ४। प्रत्याख्यान वरणक्रोधसर्वविरती यतीधर्मने आविवानदे चारमासलगेरहे १। एमज प्रत्याख्यानमान २। प्रत्याख्यानमाया ३। प्रत्याख्यानलोभ ४। संज्वलनक्रोध यथाख्यातचारित्र आविवानदेपनरेदिनरहे १ एम संज्वलनमान २ संज्वलनमाया ३ संज्वलनलोभ ४ सर्वमिली १६ कषायथया। मेरुपर्वतनासोलह नामकह्या तेकहेछे। मंदर १। मेरु २। मनोरम ३। सुदंसण ४। स्वयंप्रभ ५। गिरिराज ६। रत्नोच्चय ७। प्रियदर्शन ८। मध्यम लोकनीनाभि १०। अर्थ ११। सूर्यावर्त सूर्यमेरुनेपासेप्रदक्षिणादे १२। सूर्यावरण रात्रे सूर्यने आवरेआछादे १३। ॥ भाषा ॥

॥ ४८ ॥

॥ टीका ॥

ल्लोकस्य मज्झेलोगस्सनाभीयत्ति लोकमध्ये लोकनाभिरिवेत्यर्थः उत्तरयति भरतादीना मुत्तरदिग् वर्त्तित्वाद्यदाह सव्वेसिंउत्तरोमेरुत्ति दिसाईयत्ति दिग्रामादि रित्यर्थः वडिंसेइयत्ति अवतंसः शेखरः सद्दवावतंस इतिचेति पुरिसादाणीयत्ति पुरुषाणांमध्ये आदेयस्येत्यर्थः तथाआत्मप्रवादपूर्वस्य सप्तमस्य तथाचमरब ल्योर्दक्षिणोत्तरयो रसुरकुमारराजयोः उवारियालेयत्ति चमरचंचावली चंचाभिधान राजधान्योर्मध्योदताऽदतरत्वार्द्धपीठरूपेऽवतारिकल्पयने षोडशयोज नसहस्राण्यायामविष्कंभाभ्यांवृत्तत्वात्तयोरिति तथालवणसमुद्रे मध्यमेषुदशसु सहस्रेषु नगरप्राकार इवजलमूर्द्ध गतंतस्यचोत्सेधवृद्धिः षोडशसहस्राण्यऽतउ च्यते लवणसमुद्रः षोडशयोजनसहस्राण्युत्सेधपरिवृद्धा प्रज्ञप्तइति आवर्त्तादीन्येकादश विमानानामानि ॥ १६ ॥ अथसप्तदशस्थानकं तद्व्यक्तं

॥ मूल ॥

त्थेअ सूरिआवत्ते सूरिआवरणेतिअ उत्तरेय दिसाइअ वडिंसेइअ सोलसमे पासस्सणंअरहतो पुरिसादाणी यस्स सोलससमणसाहस्सीउ उक्कोसीआणंसंपदाहोत्था आयप्पवायस्सणं पुव्वस्ससोलसवत्थू प० चमरवली णं उवारियालेणेसोलसजोयणसहस्साइं आयामविरकंभेणं प० लवणेणंसमुद्देसोलसजोयण सहस्साइं उस्से

॥ भाषा ॥

भरतादिकक्षेत्रथकी उत्तरदिशाके तेमाटे उत्तरकह्यो १४। दिशानी आदिकेजेहथकी तेदिगादि १५। अवतंस सर्वपर्वतनो मुगटरूपके एम १६ नामक या। पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषमांहि प्रधान आदानीय महासोभागी तेहनेसोले श्रमण सहस्र उत्कृष्टोसाधुनी संपदाहुई जाणवी। आत्मप्रवादनंपूर्व तेहना सोलह वस्तुकह्या। भगवंते अधिकार विशेषेकह्या। चमर चंचावली चंचानाम राजधानीने मध्यभागे उपकारीकयन तेहअवासनी पीठीका सोलसहस्र योजनलांबपणे पिहुलपणेकह्यो। लवणसमुद्रथकी जगतीथकी पंचाणू सहस्रयोजनेईइतिहां मध्यभागेदशमाले दससहस्र योजननेविषे नगरना गढनीपरि

॥ मूल ॥

हपरिवड्ढीए प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सोलसपलिउवमाइं ठिई प० पंच
मीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सोलससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइया
णं सोलसपलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं सोलसपलिउवमाइंठिई प०
जेमहासुक्केकप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं सोलससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा आवत्तं विआवत्तं नंदिआव
त्तं महाणंदियावत्तं अंकुसं पलंबं भद्दं सुभद्दं महाभद्दं सव्वतोभद्दं भद्दुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना
तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं सोलससारोवमाइं ठिई प० तेणंदेवासोलसहिं अद्धमासाणं आणमंतिवा पाण
मंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं सोलसवाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइयान्न

॥ भाषा ॥

पाणी ऊंचोगयोछे। तेहनो ऊंचपणानीवृद्धि सोलसहस्र योजननीकही। एहरत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो सोलेपल्योपम आउखोकह्यो। पां
चमी पृथिवीनेविषे केतला एकनारकीनो सोलेसागरोपमआउखोकह्यो। असुरकुमार देवनो केतला एकनोसोलेपल्योपम आउखोकह्यो। सौधर्म ईशानदे
वलोके केतलाएकदेवनो सोलेपल्योपम आउखोकह्यो। महाशुक्रदेवलोके केतलाएक देवनोसोलेसागरोपम आउखोकह्यो। जेदेवता आवर्त १। विदावर्त २
नंदिकावर्त ३। महानंदिकावर्त ४। अंकुश ५। प्रलंब ६। भद्र ७। सुभद्र ८। महाभद्र ९। सर्वतोभद्र १०। भद्रोत्तरावतंसक ११। एह इग्यारविमाने देव
तापणेउपनाछे। तेहदेवतानो उत्कृष्टो सोलेसागरोपम आउखोकह्यो। तेदेवता सोलपखवाडेस्वासोस्वासघणोले ऊंचोस्वासले नीचोस्वासमूंके तेदे

नवरमिहस्थितिसूत्रेभ्योऽर्वागुद्दत्र तथा अजीवकायासंयमो विकटसुवर्णबहुमूल्यवस्त्रपात्रे पुस्तकादिग्रहणं प्रेक्षायामसंयमोयः सतथा सचस्थानोपकरणादीनि

घसिठ्ठियाजीवा जेसोलसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदु
क्खाण मंतंकरिस्संति ॥ १६ ॥ सत्तरसविहेअसंजमे प० तं० । पुढविकायअसंजमे आउका
यअसंजमे तेउकायअसंजमे वाउकायअसंजमे वणस्सइकायअसंजमे वेइंदियअसंजमे तेइंदियअसंजमे च
उरिंदियअसंजमे पंचिंदिअसंजमे अजीवकायअसंजमे पेहाअसंजमे उपेहाअसंजमे अवहट्टूअसंजमे अप्प

बतानो सोलसहस्रवर्षेआहारनो अर्थउपजे । केतलाएकभव्यजीव सोलभवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये ॥ इतिसो
लमुंठाणं सम्मत्तम् ॥ १६ ॥ हिवे सतरमो अधिकारलिखियेछे । सतरप्रकारे असंजमकह्यो तेकहेछे । पृथिवीकायनो पांचवोसंघटवो हणवोते
पृथिवीकाय असंजम १ । एम अपकाय पाणीतेहनो असंजमते अपकाय असंजम २ । एम तेजकाय असंजम ३ । वायुकाय असंजम ४ । वनस्पतिकाय
असंयम ५ । वेइन्द्रियअसंयम ६ । तेइन्द्रियअसंयम ७ । चउरिंदियअसंयम ८ । पचेंद्रियअसंयम ९ । वस्त्रप्रात्र अणपुंजीलेवो मेलवो तेअजीवकाय असंयम
१० । अथवा बहुमूल्यवस्त्रपुस्तकनोलेवो ११ । उपकरणनोअविधि पडिलेहवो तेप्रेक्षासंयम १२ । असंयमयोगनेविषे व्यापारवो संयमयोगनेविषे अव्यापारवो
तेउपेक्षा असंयम १३ । अवधिए परिठवणोमात्रादिकनो अवधिएपडिलेहवो तेअप्रमार्जन असंयम १४ । मननोभूंडोव्यापार तेमनअसंयम १५ । एमवचननो

अप्रत्युपेक्षणमविधि प्रत्युपेक्षणंवा उपेक्षाऽसंयमयोगेष्वव्यापारणं संयमयोगेष्वव्यापारणंवा तथाऽपहृत्यसंयमः अविधिनोच्चारादीनां परिष्ठापनंतायः तथाऽप्र- ॥ टीका ॥
मार्जनाऽसंयमः पात्रादेरप्रमार्जनयावेति मनोवाक्कायाऽसंयमास्त्रयमकुशलानामुदीरणानीति असंयमे विपरीतः संयमः वेलंधरानुवेलंधरावासपर्वतस्व

मज्जणाअसंजमे मणअसंजमे वइअसंजमे कायअसंजमे सत्तरसविहेसंजमे प० तं० पुढवीकायसंजमे ॥ मूल ॥
आउकायसंजमे तेउकायसंजमे वाउकायसंजमे वणस्सइकायसंजमे बेइंदिअसंजमे तेइंदिअसंजमे चउरिंदि
यसंजमे पंचिंदिअसंजमे अजीवकायसंजमे पेहासंजमे उपेहासंजमे अवहटूसंजमे अप्पमज्जणासंजमे मण
संजमे वइसंजमे कायसंजमे माणुसुत्तरेणंपव्वए सत्तरसएक्कवीसजोयणसए उड्ढं उच्चत्तेणं प० सव्वेविणंवेलं
धरअणुवेलंधरणागराईणं आवसपव्वया सत्तरसएक्कवीसाइं जोयणसयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं प० लवणेणंसमुद्दे

असंयम १६ । कायानोअसंयम १७ ॥ सतरप्रकारेसंयमकह्यो तेकहेछे । पृथिवीकायनो राखवो तेपृथिवीकायसंजय १ । एम अपकायसंजय २ । तेजकायस ॥ भाषा
जम ३ । वायुकायसंजम ४ । वनस्पतिकाय संजम ५ । बेइन्द्रियसंजम ६ । तेइन्द्रियसंजम ७ । चउरिंदियसंजम ८ । पचेंद्रियसंजम ९ । वस्त्रपात्रपूंजीन
लीजे तेअजीवसंजम १० । प्रेक्षासंजम ११ । उपेक्षासंजम १२ । अपहृत्यासंजम १३ । अप्रमार्जनसंजम १४ । मनसंजम १५ । वयणसंजम १६ । कायसंज
म १७ ॥ जंबूद्वीपआखो धातकीखंडआखो पुष्करार्द्धअर्द्धो एमअढाईद्वीप रूपनगरने चउपखेरगढरूप माणुषोत्तरपर्वतछे तेहसतरसे एकवीसयोजन ऊंचो
छेपणेकह्यो, सगलेवेलंधर अनुवेलंधर देवतानागकुमार भवनपति तेहना आवास जगतीथकी चिहुंपासेछे बातीससहस्र योजनलवणसमुद्र मांहिजई

॥ टीका ॥

रूपं चेवसमासागाथाभिरवगंतव्यमेताः। दसजोयणसहस्सा लवणसिहाचक्कवालउरुंदा। सोलससहस्सउच्चा सहस्समेगंतुउगाढा। देसूणमद्धजोयण लवणसिहोवरिदगंतुकालदुगे। अतिरेगं२ परिवड्ढइहायएवावि। अब्भं तरियवेलं धारंतिलवणोदहिम्मनागाणं। बायालीयसहस्सा अोसत्तरिसहस्सावाहरियं। सट्ठीनागसहस्सा धरंतिअग्गोदयसमुद्दस्स। वेलंधरआवासा लवणेयचउदिसिंचउरो। पुव्वादि अणुक्कममो गोथुभ १ दगभास २ संख ३ दगसीम ४। गोथुभ १ सितए २ संखे ३ मणोसिले ४ नागरायाणो। अणुवेलंधरवासा लवणेविदिसासुसंठियाचउरो। कक्कोडे १ विज्जुप्पभे २ केलासरुणप्पभेचेव। कक्कोडयकद्दमए केलसरुणप्पभेय नागरायाणो। बायालीससहस्से गंतुंउवहिंमिसव्वेवि। चत्तारिजोयणसए तीसिकोसंचउग्गयाभूमी। सत्तरसजोयणसए इगवीसेऊसियासव्वे

॥ मूल ॥

सत्तरस जोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसम रमणिज्जाउ भूमिभागाउ

॥ भाषा ॥

तिहांवेलंधरदेवताना आवासपर्वतछेगोथुभ १। एम दक्षिणादिकेदगभास २। संख ३। दगसीम ४। तेहनाधणीगोथूभ १ शिव २। भद्र ३। मणसिल अनुवेलंधरनापर्वतविदिशिएं ईशानकोणेंककोट १। एमजअग्निकोणेंविद्युतप्रभ २। केलाश ३। अरुणप्रभ ४। एहनाधणीनागराजककोंट १ कर्दम २ केलास ३ अरुणप्रभ ४ नाम लवणसमुद्रे मध्यभागे दशसहस्रयोजन चक्रवालओटलाकारे समपाणीछे तेहउपरि सोलसहस्रछगाज जघापाछे तिहां दिनप्रति एवेटकवेलवधे तेहनेधरेराखे तेवेलंधर वेलमांहिलेपासे जंबूद्वीपभणी ४२ सहस्रबाहिरी धातकीखंडभणी ७२ सहस्रदेवता छसहस्रशिखें वाटेकरी पाणीबांधता उपराठांमारेछे। वेलंधरअनुवेलंधरनागराजना आवासपर्वत एकवीसयोजन अधिकसतरसेयोजन ऊंचाऊंचपणेकह्या। जगतीथकी पंचाणूं योजनसहस्रजइये समुद्रमांहि तिहां दससहस्रजोजन चक्रबालसमुद्रपाणीछे तिहांथकी सोलसहस्रयोजन शिखारूपपाणी ऊंचाआकाशेंगयाछे तोसमुद्रपाता

चारिणयंति जंघाचारणानां विद्याचारणानांच तिर्यग् रुचकादि द्वीपगमनायेति तिगिंछिकूट उत्पातपर्वतो यत्रागत्य मनुष्यलोकागमनायोत्पतति सचेतो ऽसंख्याततमे ऽरुणोदयसमुद्रे दक्षिणतोद्विचत्वारिंशतं योजनसहस्राण्यतिक्रम्यभवति रुचकेंद्रोत्पातपर्वतस्त्वरुणोदयसमुद्रएव उत्तरत्यएवमेवभवतीति आ ॥ टीका ॥

सातरेगाइं सत्तरसजोयण सहस्साइं उड्ढंउप्पातित्ता ततोपच्छा चारणाणं तिरिअगती यावत्तती चमरस्सणं असुरिंदस्स असुररन्नो तिगिंछिकूडेउप्पायपव्वए सत्तरसएक्कवीसाइं जोयणसयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं प० बलिस्सणं असुरिंदरुअगिंदे उप्पायपव्वए सत्तरसजोयणसयाइं सातिरेगाइं उड्ढंउच्चत्तेणं प० सत्तरसविहेमरणे प० ॥ मूल ॥

समांहिजंडो एकयोजनसहस्रऊंचो सोलहस्रसव्वगोणंसर्वमिलो १७ सहस्रयोजनसमुद्रकह्यो। एणीएरत्नप्रभा पृथिवीनेविषे घणोरमणीकसमोभूमिभागछे तेहथकोझाझेरीबीकोसअधिकसत्तरयोजन सहस्रलगेऊंचोउत्पति उडीनेएंतलेलवणसमुद्रनी शिखालगेऊंचाउत्पतितियारेपछे जंघाचारण विद्याचारणनी तिरछोगति पर्वततले तिरछिद्वीपे रुचिकवरद्वीपे एमनंदीश्वरद्वीपें जीवप्रतिमावांदिवाजाइ चमरेंद्रनो असुरकुमारदेवतानोइन्द्रतेहनो असुरनाजानो तिगिछकूट। उत्पातपर्वत जिहां चमरेंद्रादिकपातालथको आवीनेमनुष्यक्षेत्रे आविवाभणीउत्पते उडेतेमाटे उत्पातपर्वतकहिये। तेअसंख्यातमे अरुणसमुद्रथको दक्षिणदिशे ४२ सहस्रयोजनजइये तिहां पांमिएते तिगिछकूट। १७२१ योजन ऊंचोऊंचपणेकह्यो। बलींद्रनो असुरेंद्रनो वलीरुचकेंद्रनो उत्पातपर्वत सतरसे एकवीस ऊंचोऊंचपणे तेद्वीपथि अरुणसमुद्र असंख्यातमो तेहमांहि उत्तरदिसे ४२ सहस्रयोजन जइयेतिहांरुचकेंद्र उत्पातपर्वतपामियेकह्यो। सतरप्रकारेमरणकह्यो तेकहेछे। क्षणक्षणविषेतिएं आउखानोदल उछायायते आवीचिमरण १। अवधिमर्यादातेणेकरी मरवोते अवधिमरण जिमनारकी नरका ॥ भाषा ॥

दे ॥ टीका ॥
वीइमरणेति आसमंताद्वीचयइव वीचयश्रायुर्दलिकविच्युतिलक्षणाश्रयस्था यस्मिं स्तदावीचि अथवावीचिर्विच्छेद स्तदभावादवीची दीर्घत्वंतुप्राक्वतत्वात्तदे
वंभूतंमरणंऽवीचिमरणं प्रतिक्षणमायुर्द्रव्यविचेटनलक्षणं तथाअवधिर्मर्यादा तेनमरण मवधिमरणं यानिहि नारकादिभवनिबंधनतया युःकर्मदलियान्यनुभूय
म्रियते यदि पुनस्तान्येवानुभूय मरिष्यति तदातदवधिमरणमुच्यते तद्द्रव्यापेक्षया पुनस्तद्ग्रहणावधिं यावज्जीवस्य मृतत्वादिति तथा आयंतियमरणेत्ति आ
॥ ५१ ॥ त्यंतिकमरणं यानिमारकाद्यायुष्कतया कर्मदलिकान्यनुभूय म्रियते मृतश्च नपुनस्तान्यनुभूय मरिष्यतीत्येवं यन्मरणम् तद्द्रव्यापेक्षया अत्यंतभावित्वा दात्यंति
कमिति वलायमरणेत्ति संयमयोगेभ्यश्चलतां भग्नव्रतपरिणतीनां व्रतिनांमरणं बलान्मरणं। तथा वशेनेंद्रियविषयपारतंत्र्येण ऋताबाधितावशार्त्ताः स्नि
ग्धदीपकलिकावलोकना कुलशभवन् तथा अंतर्मध्येमनसीत्यर्थः शल्यमिव शल्यमपराधपदंयस्य सोंतःशल्योभिमानादिभिरनालोचितातीचार स्तस्यमरणमंतः
शल्यमरणं तथायस्मिन् भवेतिर्यग् मनुष्यभवलक्षणेवर्त्तते जंतुस्तद्भवयोग्य मेवायुर्बध्नाति ततः यदिन क्रियमाणस्ययद्भवति तत्तद्भवमरणमेतच्चतिर्यङ् मनुष्याणामेव
तदेवनारकाणां तेषां तेष्वेवोत्पादाभायादिति तथाबालाइव बालाअविरता स्तेषां मरणं बालमरणं तथापंडिताः सर्वविरता स्तेषांमरणं पंडितमरणं बालपंडि

आवीइमरणे उहिमरणे आयंतियमरणे वलायमरणे वसट्टमरणे अंतोसल्लमरणे तब्भवमरणे बालमरणे पंडि ॥ मूल ॥

युभवने बंधनकार्मदल अनुभवीमरेपर मारा नमरे २ आत्यंतिक मरण तेजेनरकनुंपूर्वुं आउखुं भोगवीओवलतो फरीने बीजेभवें तेहीजभावे ३ व्रतभांजीम ॥ भाषा ॥
रेते वलातमरण ४। पतंगादिकनो परीइन्द्रियनेवशे मरेतेवशार्तमरण ५। अपराधअणालोई मरेतेअंतःशल्यमरण ६। जेआउखुंभोगवी मरेवलीउपराठो बी
जेभवेतेहीजआवे जिममनुष्यतिर्यंच पोतानुं आउखुं भोगवीकरी वलीबीजेभवेतेहीजमुं आउखुंपामे ७। अविरतीनुं मरणतेबालमरण ८। सर्वविरतीयतीन

॥ टीका ॥

तादेशविरतास्तेषांमरणं बालपंडितमरणं। तथाछद्मस्थमरणमेव केवलिमरणंतु प्रतीतं। वेहासमरणंति विहायसि व्योमनिभवं वेहायसं विहायोभवत्वंच त स्य वृक्षशाखाद्युद्बद्धत्वेसति भवेत् तथागृद्धैः पक्षिविशेषै रुपलक्षणत्वाच्छकुनिकाशिवादिभिदंष्ट स्पृष्टं स्पर्शनंयस्मिन् स्तद्गृध्रस्पृष्टं अथवागृध्राणांभक्ष्यं पृष्टमुपलक्षण त्वाउंदरादियत्र तद्गृध्रपृष्ट मिदंचकरिकरभादिशरीरमध्यपातादिनागृध्रादिभिरात्मानं भक्षयतो महासत्वस्य भवतीति भक्तस्ययावज्जीवं प्रत्याख्यानं यस्मिन् तत्तथा इदंच त्रिविधाहारस्य चतुर्विधाहारस्यवा नियमरूपं सप्रतिकर्मच भक्तपरिज्ञेतियदूहं। तथा इंग्यते प्रतिनियते देशएववेष्ट्यते आसामनशनक्रि यामितींगिनी तया मरणमिंगिनीमरणं तच्चिचतुर्विधाहारस्य प्रत्याख्यातुर्निःप्रतिकर्मशरीरस्यें गितदेशाभ्यंतर वर्तिनएवेति तथा पादपस्येवोपगमनमवस्था नं यस्मिन् तत्पादपोपगमनं तदेव मरणमितिविग्रहः इदंच यथापादपः कथंचित् पतितः सममसममिति भाविभावयन्निश्चलमेवास्ते तथायोवर्त्तते तस्य

॥ मूल ॥

तमरणे बालपंडितमरणे छउमत्थमरणे केवलिमरणे वेहासमरणे गिद्धिपिठमरणे भत्तपच्चक्खाणमरणे इंगि णीमरणे पाउवगमणमरणे सुहुमसंपराएणंभगवं सुहुमसंपरायभावेवट्टमाणो सत्तरसकम्मपगडीउ णिवंध

॥ भाषा ॥

मरणतेपण्डितमरण ८। श्रावकनूंमरणते बालपण्डितमरण१०। छद्मस्थपणेमरेते छद्मस्थमरण११। केवलीपणेमरेते केवलमरण१२। गलेफांसोलेईमरे तेविहा सकमरण १३। गृध्रपक्षी तेणे सियालियादिके श्रांपणोश्रात्माखवाडोमरेते गृध्रपुष्टमरण १४। भातपाणीपच्चखीमरेते भक्तप्रत्याख्यानमरण १५। चारेश्राहा रपच्चखी भूमिनियमीसंस्थारेमूये भवतोवेयावचनकरावेते इंगिनीमरण १६। पादपवृक्षनीशाखाछेदी भूमिएंपडेचलतोहालेनही तिमसंथारेकह्या पछीसा धुहाले बोलेनहीपासुंपालटे नहीतेपादपमरण१७। सूक्ष्मसंपराय दशमूंठाणुं सूक्ष्मसंलोभनोश्रसंख्यातमोभाग किट्टिरूपजेहनेछुएते सूक्ष्मसंपरायभावेवर्ततोथ

॥ टीका ॥

तन्नवतीति । तथासूक्ष्मसंपरायउपशमकः क्षपकोवासूक्ष्मलोभकषाय किट्टिकावेदको भगवान् पूज्यत्वात् सूक्ष्मसंपरायभावे वर्त्तमानस्तत्रैव गुणस्थानकेऽवस्थि त नातीतागत सूक्ष्मसंपराय परिणामइत्यर्थः सप्तदशकर्म प्रकृतीर्निबध्नाति विंशत्युत्तरे बंधप्रकृतिशते अन्यानबध्नातीत्यर्थः पूर्वतरे गुणस्थानकेषुबंधंप्रतीत्या न्यासांव्यवच्छिन्नत्वात्तथोक्तानां सप्तदशानां मध्यादेका सातप्रकृतिरुपशांतिमोहादिषु बंधमश्रित्यनुयाति शेषाः षोडशैवैवव्यवच्छिद्यंते । यदाह नाणं ५

॥ ५२ ॥ तराय ५ दसगं दंसणचत्तारि ४ उच्च १५ जसकित्ती १६ । एयासोलसपयडी सुहुमकसायं मिवोच्छिन्ना । सूक्ष्मसंपरायात्परेनबध्नंतीत्यर्थः ॥ साबानादीनि सप्त

॥ मूल ॥

ति तं० आभिणिबोहियणाणावरणे सुयनाणावरणे उहिनाणावरणे मणपज्जवनाणावरणे केवलिनाणावरणे चक्खु दंसणावरणं अचक्खुदंसणावरणं उहीदंसणावरणं केवलदंसणावरणं सायावेयणिज्जं जसाकित्तिनामं उच्चागो यं दाणंतरायं लाभंतरायं भोगंतरायं उवभोगंतरायं वीरिअअंतरायं इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थे गइयाणं नेरइआणं सत्तरपलीउवमाइं ठिई प० पंचमीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं उक्कोसेणं सत्त

॥ भाषा ॥

को तथा क्षपभावेंवर्त्ततोथको एकसोवीसप्रकृतिबंधके तेमाहिली सतरकर्म प्रकृतिनोबंधपाडे तेकहेछे । आभिनिबोध ज्ञानावरण मतिज्ञानावरण १ । एमश्रु तज्ञानावरण २ । अवधिज्ञानावरण ३ । मनपर्यवज्ञानावरण ४ । केवलज्ञानावरण ५ । चक्षुदंसणावरण ६ । अचक्षुदंसणावरण ७ । अवधिदंसणावरण ८ । केवलदंसणावरण ९ । सातावेदनी १० । यशकीर्तिनामकर्म ११ । उच्चैर्गोत्र १२ । दानांतराय १३ । लाभांतराय १४ । भोगांतराय १५ । उपभोगांतराय १६ । वीर्यांतराय १७ ॥ एणीएरत्नप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो सतरपल्योपमआउखोकह्यो । पांचमीधूमप्रभा पृथिवीएं केतलाएकनारकीनो उत्कृष्टोस

रससागरोवमाइं ठिई प० छठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं जहन्नेणं सत्तरससागरोवमाइं ठिई प० असुरकु माराणं देवाणं अत्थेगइयाणं सत्तरसपलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं सत्तरसपलिउवमाइ ठिई प० महासुक्केकप्पेदेवाणं उक्कोसेणं सत्तरसागरोवमाइं ठिई प० सहस्सारेकंप्पे देवाणं जहन्नेणं सत्तरससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा सामाणं सुसमाणं महासामाणं पउमं महापउमं कुमदं महाकुमदं नलिणं महानलिणं पोंडरीअं महापोंडरीअं सुक्कं महासुक्कं सीहं सीहकंतं सीहविअं भाविअं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं सत्तरससागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा सत्तरसहिं अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं सत्तरसहिं वाससहस्से

॥ मूल ॥

तरसागरोपमआउखोकह्यो। छठीतमापृथिवीएं केतलाएकनारकीनो जघन्यो सतरसागरोपमआउखोकह्यो। असुरकुमारदेवतानो केतलाएकनो सतरपल्योपमआउखुंकह्यो। सौधर्मईशानदेवलोके केतलाएकदेवतानो सतरपल्योपमआउखोकह्यो महाशुक्रदेवलोके सातमेदेवतानोउत्कृष्टो सतरसागरोपमआउखोकह्यो। सहस्रार आठमेदेवलोके देवताने जघन्यो सतरसागरोपम आउखोकह्यो। सातमेदेवलोके जेदेवता सामायिक १। सुसामायिक २। महासामायिक ३। पदम ४। महापदम ५। कुमद ६। महाकुमद ७। नलिन ८। महानलिन ९। पौंडरीक १०। महापौंडरीक ११। शुक्र १२। महाशुक्र १३। सिंह १४ सिंहकांत १५। सिंहविद १६। भाविक १७॥ एवेविमानेदेवतापणे उपनाछे। तेहदेवतानो उत्कृष्टोसतर सागरोपमआउखोकह्यो। जेहदेवतासतरे

॥ भाषा ॥

|| टीका ||

दशविमानानां नामानीति ॥ १७ ॥ अथाष्टादशस्थानक मिहचाष्टौसूत्राणि स्थितिसूत्रेभ्यो ऽर्वाक्सुगमानिच नवरंबंभेत्ति ब्रह्मचर्यं तथौदारिकका म भोगान् मनुष्यतिर्यंग् संबंधिविषयान् तथादिव्यकामभोगान् देवसंबंधिनइत्यर्थः तथासखुड्डगवियत्ताणंति सहक्षुद्रकैर्व्यक्तैश्च येक्षुद्रकव्यक्ता तेषां तत्रक्षुद्र

|| ५२ || || मूल ||

हिं आहारट्ठेसमुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धिआजीवा जेसत्तरसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण मंतंकरिस्संति ॥ १७ ॥ अट्ठारसविहेबंभे प० तं० । उरालिएकामभोगे णेवसयं मणेणं सेवइ नोविअन्नंमणेणं सेवावेइ मणेणंसेवंतंविअन्नं नसमणुजाणाइ उरालि एकामभोगे नेवसयं वायाएसेवइ नेविअन्नंवायापसेवावेइ वायाएसेवंतंवि अन्नंनसमणुजाणाइ उरालिएका मभोगे नेवसयंकाएणंसेवइ नोविअन्नंकाएणं सेवावेइ काएणं सेवंतंवि अन्नंनसमणुजाणाइ दिव्वेकामभोगे नेव

|| भाषा ||

अर्द्धमासे पखवाडे स्वासोस्वासघणोले ऊंचोले नीचोस्वासमेले तेहदेवताने सतरथसहस्रे आहारनोअर्थउपजे । केतलाएकभव्यजीव जेसतरभवने आंतरे सीभ स्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनोअंतकरिस्ये मोक्षजास्ये ॥ इतिसतरमूंठाणुंसम्पूर्णं ॥ १७ ॥ हिवेअठारमोठाणोलिखियेछे । अठारभेदब्रह्मव्रतकह्योतिकहे छे । उदारिककामभोग तेमनुष्यनास्त्रीअनेतिर्यंचनीस्त्रीतेसाथेपंचेंद्रियानाविषयशब्दरूपतिकामप्राणरस स्पर्शतेभोगमनेकरीपोतेसेवेनही १ । मनेकरीअनेरा नेपिणसेवाडेनही २ । मनेकरी अनेराएंमैथुनसेवतांप्रति अनुभावनामकरे ३ । औदारिक कामभोगनपोतेवचनेकरीसेवे ४ । ननिश्चयेंअनेरानेप्रतिवचनेकरी वसेडे ५ वचनेकरी पनेराने प्रतिसेवतांथकां अनुमोदनानकरे ६ । औदारिक कामभोगपोतेकायाएंनकरे ७ । अनेराने कायाएंनसेवाडे ८ । कायाएंकरीअ

सकं चोतिरद्विमाननामानीति ॥ २१ ॥ द्वाविंशतितमंतुस्थानं प्रसिद्धार्थमेव नवरं सूत्राणिषट्स्थितेरर्वाक् तत्रमार्गच्यवननिर्ज्जरार्थं परिषह्यंते इति परीषहाः दिगिंछति बुभुक्षासैवपरीषहो दिगिंछापरीषहइति सहनंचास्यमर्यादानुल्लंघनेन एवमन्यत्रापि १ तथा पिपासातृट् २ शीतोष्णेप्रतीते ४ तथादं शाश्चमशका दंशमशकाउभयाप्येते चतुरिन्द्रियामहत्वामहत्वकृततद्भेदाविशेषो ऽथवा दंशोदशनंभक्षणमित्यर्थः तत्प्रधानामशका दंशमशकाः एतेचयूकामत्कु णमत्कोटक अविकादोना मुपलक्षणमिति ५ तथाचेलानांवस्त्राणांवासमंतनवीनाऽवदात मुप्रमाणानां सर्वेषांवाअभावः अचेलत्वमित्यर्थः ६ अरतिर्मानसोवि ॥ टीका ॥

ज्झिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ २१ ॥ बावीसपरीसहा प० तं०। ॥ मूल ॥

दिगिंछापरीसहे पिवासापरीसहे सीतपरीसहे उसिणपरीसहे दंसमसगपरीसहे अचेलपरीसहे अरइपरीसहे

मोक्षजास्ये इतिएकवीसमं ठाणंसम्पत्तं ॥ २१ ॥ हिवे बावीसमो समवाय लिखियेछे। बावीस परीसह परिसामस्तपणे निर्जराने अर्थेसहिवो खमवो तेपरीसहकह्या। तेकहेछे। दिगिंछा परीसह दिगंछाशब्द देशीभाषणं क्षुधा तेहनो सहिवो साधुमर्यादानो अनुल्लंघिवो तेदिगिंछापरीसह १। एम पिपासा तृषापरीसह २। शीतठाढ तेहनोपरीसह ३। उष्णतापनोपरीसह ४। डांस मसा तथा जू माकणनो परीसहवो ५। आंचलवस्त्रनो अभावनोपरी सह ६। अरतिमानसी विकारपरीसह ७। स्त्रीनोपरीसह ८। चर्याग्रामादिकनेविषे अनियत विहारनोपरीसह ९। सोपद्रवस्वाध्यायपरीसह १०। अम ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

कार: ७ स्त्रीप्रतीता ८ चर्या ग्रामादिष्वनियतविहारित्वं ९ नैषेधिकोसोपद्रवेतराचस्वाध्यायभूमि: १० शय्यामनोज्ञा ऽमनोज्ञवसति: संस्तारकोवा ११ आक्रो शोदुर्वचनं १२ वधोयष्ट्यादिताडनं १३ याञ्चाभिचणं तथाविधे प्रयोजनेमार्गणंवा १४ अलाभरोगौप्रतीतौ १६ तृणस्पर्श: संस्तारकाभावे तृणेपुशयानस्य १७ ज ल्ल:शरीरवस्त्रादिमल: १८ सत्कारपुरस्कारौ वस्त्रादि पूजनाभ्युत्थानादिसंपादनेन २ सत्कारेणवापुरस्करणं सम्मानन सत्कारपुरस्कर: १९ ज्ञानंसामान्येनम त्यादि कश्चिदज्ञानमितिश्रूयते २० दर्शनंसम्यग्दर्शनंसहनंचास्यक्रियादिवादिनां विवर्जनत: शर्मोपिनिश्चलचित्ततयाधारणं २१ प्रज्ञास्वयंविमर्शपूर्वको वस्तुप रिच्छेदोमतिज्ञानविशेषइति २२ दृष्टिवादोद्वादशांग:सचपंचधा परिकर्म १ सूत्र २ पूर्वगत ३ प्रथमानुयोग ४ चूलिका ५ भेदात्तत्रदृष्टिवादस्य द्वितीयेप्रस्थाने

॥ मूल ॥

इत्थीपरीसहे चरियापरीसहे निसीहियापरीसहे सिज्जापरीसहे अक्कोसपरीसहे वहपरीसहे जायणापरीसहे अलाभपरीसहे रोगपरीसहे तणफासपरीसहे जल्लपरीसहे सक्कारपुरक्कारपरीसहे पन्नापरीसहे अन्नाणपरी सहे दंसणपरीसहे दिट्ठिवायस्सणंबावीसंसुत्ताइं छिन्नछेयणाइयाइं ससमयसुत्तपरिवाडीए बावीसंसुत्ताइं

॥ भाषा ॥

नोज्ञ तथामनोज्ञवसती उपाश्रय तथा संथारानो परीसह ११। आक्रोश वा दुर्वचनपरीसह १२। वधयष्टिआदिकें ताडवो तेहनोपरीसह १३। याचनाभिक्षानो मांगिवो तेपरीसह १४। आहारादिकनी अप्राप्ति तेपरीसह १५। रोगमंदवाड तेहनोपरीसह १६। संथारासंबंधी तृणतेनोपरीसह १७। जल्लशरीर वस्त्रा दिकनोमल तेहनो परीसह १८। सत्कार तेवस्त्रादिकनी पूजाऊठी ऊभोथाइवो तेणेकरी पुरस्कार सम्मान तेहनोपरीसह १९। प्रज्ञातेमतिज्ञाननोभेद तेह नोपरीसह २०। ज्ञानमतिश्रुत तेनही तेअज्ञानपरीसह २१। दंसणतेसम्यक्त्व तेहथकी अचलवो तेदंसणपरीसह २२। दृष्टिवाद बारमो अंगतेहना पांचभेद

द्वाविंशति:सूत्राणि तत्र सर्वद्रव्यद्रव्यपर्याय नयादिस्तवनासूत्राणि च्छिन्नच्छेयणाइयाइंति इहयोनय: सूत्रंच्छिन्नंच्छेदनेच्छति सच्छिन्नच्छेदनयो यथा धम्मोमंगल मुक्कट्ठमित्यादिश्लोक: सूत्रार्थत: च्छेदनमिती नर्तीयादिश्लोकानपेच्यते इत्येव यानिसूत्राणिच्छिन्नच्छेदनयवंति तानिच्छिन्नच्छेदनयिकानि तानित्वस्वसमयाया: जिनमताश्रितायाः सूत्राणांपरिपाटि: पद्धतिस्तस्या: स्वसमयसूत्रपरिपाट्यांभवन्ति तयावाभवंतीति तथा अच्छिन्नच्छेयणपियाइंत्ति इहयोनय: सूत्रमच्छिन्नंच्छेदेनच्छतिर्मोच्छिन्नच्छेदनयोयथा ॥ धम्मोमंगलमुक्कट्ठमित्यादिश्लोको र्थतोद्वितीयादिश्लोकमापेचमाण इत्येवंयान्यच्छेदनयवंति तान्यच्छिन्नच्छेदनयिकानिता निचाजीविकसूत्रपरिपाट्या गोशालकमतानुसारिण्याऽभिधीयन्ते यस्मात्तेसर्वंत्र्यात्मकप्रतिबद्धसूत्रपद्धत्यां तयावाभवन्ति अचररचनाविभागस्थितानप्यर्थतोन्यो ॥ टीका ।

अछिन्नछेअणाइयाइं आजीवियसुत्तपरिवाडीए बावीसंसुत्ताइं तिणकणइयाइं तेरासिअ सुत्तपरिवाडीए ॥ मूल ॥

परिकर्म १ । सूत्र २ । पूर्वगत ३ । प्रथमानुयोग ४ । चूलिका ५ । तिहां बीजेभेद दृष्टिवादना बावीससूत्र सर्वद्रव्यपर्याय सूत्रवाचकौ सूत्रकहिये छिन्नछेयनया इतिनयक सूत्रतेछिन्न कहतांछेद्यांखंड्यांछेदियेकरीने तेछिन्नछेदनय कहिये जिमधम्मोमंगलमुक्किट्ठं इत्यादिश्लोक सूत्रार्थथकी छेदवेकरीयद्यांबीजाश्लोकनी अपेचा वांछानकरे एहवा जेसूत्र छिन्नछेदनयवंत तेछिन्नछेदनयकानि कहिये स्वसमय जिनमत आश्रितभूत परिपाटी सूत्रपद्धतिने विषेछे । बावीससूत्र अछिन्नछेदनयकछे नयकहतां सूत्रछेदवेकरी छिन्नथी खंडितनथी तेअछिन्न छेदनय कहिये जिमधम्मोमंगल इत्यादिश्लोक अर्थथकी बीजाश्लोकनी वांछाकरी तेबावीससूत्र अछिन्नछेदनयक आजीविक गोसालमत प्रतिबद्धसूत्र परिपाटी सूत्रपद्धतिनेविषेछे । बावीससूत्र चिकनयवंत तेहगोसालकमतानुसारीय ॥ भाषा ।

॥ टीका ॥

न्यापेक्षमाणानि भवन्तीति भावना तथातिकनइयाइन्ति नयत्रिकाभिप्रायाश्चिन्त्यन्ते यानि नयद्विकत्रिकनयिकानीत्युच्यन्ते त्रैराशिकसूत्रपाट्या इह त्रैराशिकागो शालकमतानुसारिणोऽभिधीयंते यस्मात्तं सर्वं त्र्यात्मकमिच्छन्ति तद्यथा जीवोऽजीवो जीवाजीवश्चेति तथा लोकोऽलोको लोकालोकश्चेत्यादि नयचिंतायामपि ते त्रिविधनयमिच्छंति तद्यथा द्रव्यास्तिकः पर्यायास्तिकः उभयास्तिकश्चेति एतदेव नयत्रयमाश्रित्य त्रिकनयिकानीत्युक्तमिति तथा चउक्कनइयाइंति नयचतुष्का भिप्रायात्ते चिंत्यंते यानि तानि चतुष्कनयिकानि नयचतुष्कं चैवं नैगमनयो द्विविधः सामान्यग्राही विशेषग्राही च तत्रयः सामान्यग्राही स संग्रहेऽन्तर्भूतो विशेषग्रा हीतु व्यवहारे तदेवं संग्रहव्यवहार ऋजुसूत्राः शब्दादित्रयं चैक एवेति चत्वारो नया इति स्वसमयेत्यादि तथैवेति तथा पुद्गलानामण्वादीनां परिणामो धर्मः पुद्गलप रिणामः सच पंचवर्णगंधद्वयरसपंचस्पर्शाष्टकभेदाद्विंशतिधा तथा गुरुलघुरगुरुलघुइति भेदद्वयक्षेपाद्द्वाविंशतिः तत्र गुरुलघुद्रव्यं यत्तिर्यग्गामवाय्वादिः अगुरुल

॥ मूल ॥

बावीसंसुत्ताइं चउक्कणइयाइं समयसुत्तपरिवाडीए बावीसइविहे पोग्गलपरिणामे प० तं० कालवण्णप रिणामे नीलवण्णपरिणामे लोहियवण्णपरिणामे हालिद्दवण्णपरिणामे सुक्किल्लवण्णपरिणामे सुब्भिगंधपरि

॥ भाषा ॥

सूत्रपरिपाटीएछे। जिम नयचिंतानेविषे त्रिणिराशी द्रव्यास्तिक १ पर्यायास्तिक २ उभयास्तिक ३ तथा जीव १ अजीव २ जीवाजीव ३ लोक १ अलोक २ लोकालोक ३ एहवा ३ छे। राशीना बावीससूत्रछे। बावीससूत्र चतुष्कनयवंतकह्या नैगमनय १ संग्रह २ व्यवहार ३ सूत्र ४ एम ४ नयसूत्रक २२ सूत्र स्वसमय जैनमतानुसारी सूत्रपरिपाटीनेविषेछे। बावीसभेदें पुद्गलपरिणाम जेपरमाणवादिक तेहने परिणामधर्म तेपुद्गलपरिणामकह्या तेकहेछे। कालव र्णकरी परिणतश्याम तेकालवर्णपरिणाम १। एमजनीलवर्ण परिणाम २। लोहितरक्तवर्ण परिणाम ३। हालिद्रपीतवर्णपरिणाम ४। शुक्लश्वेतवर्णपरिणा

णामे दुब्भिगंधपरिणामे तित्तरसपरिणामे कडुयरसपरिणामे कसायरसपरिणामे अंबिलरसपरिणामे महुरर
सपरिणामे कक्खडफासपरिणामे मउयफासपरिणामे गुरुफासपरिणामे लहुफासपरिणामे सीतफासपरिणा
मे उसिणफासपरिणामे णिद्धफासपरिणामे लुक्खफासपरिणामे अगुरुलहुपरिणामे गुरुलहुपरिणामे इमी
सेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बावीसंपलिओवमाइं ठिई प० छठीए पुढवीए उक्कोसे
णं बावीस सागरोवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं जहन्नेणं बावीसं साग
रोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं बावीसंपलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु

म ५ सुरभिसुगंध परिणाम ६। दुरभि दुर्गंधपरिणाम ७। तीखेंरसे परिणत तेतीक्ष्णरस परिणाम ८। कटुकरस परिणाम ९। कषायरस परिणाम १०।
अंबिलरस परिणाम ११। मधुररस परिणाम १२। कर्कशस्पर्श करी परिणतपुद्गल ते कर्कशस्पर्शपरिणाम १३। मृदुस्पर्शपरिणाम १४। गुरुस्पर्श परिणाम
१५। लघुस्पर्शपरिणाम १६। शीतस्पर्श परिणाम १७। उष्णस्पर्श परिणाम १८। स्निग्धस्पर्श परिणाम १९। रूक्षस्पर्श परिणाम २०। अगुरुलघुस्पर्श परिण
तद्रव्य तेस्थिरसिद्धिक्षेत्र घंटाकारेरह्यामनुष्यक्षेत्र बाहिर जोतिषविमान २१ गुरुलघुस्पर्श परिणतद्रव्य तेतिर्यग्गामि जोतिषविमान जाणिवो तथा वालुआ
दिक २२ एणीयेंरत्नप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो बावीसपल्योपम आउखोकह्यो छठीतमापृथिवीयेंउत्कृष्टो बावीससागरोपमआउखोकह्यो हेठेसातम
पृथिवीयें केतालाएकनारकीनो जघन्योबावीससागरोपमआउखोकह्यो असुरकुमारकेतलाएक देवतानो बावीसपल्योपम आउखोकह्यो सौधर्मईशानदेवलोके

॥ टीका ॥ धुर्यः स्थिरसिंहलेवंघण्टाकारत्वयवस्थिता ज्योतिष्कविमामादीनि। तथामहितादीनिषट्विमानानि ॥ २२ ॥ त्रयोविंशतिस्थानकं सुगममेवनवरं

॥ मूल ॥ कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं वावीसं पलिउवमाइं ठिई प० अच्चुत्ते कप्पेदेवाणं वावीसंसागरोवमाइं ठिई प० हेठिमहेठिमगेवेज्जगाणं देवाणं जहन्नेणं वावीसं सागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा महियं विसूहियं विमलं पन्नासं वणमालं अच्चुतवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं वावीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवाणं वावीसाएअद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं वावीसं वाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जेवावीसंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणं अंतंकरिस्संति ॥ २२ ॥

॥ भाषा ॥ केतलाएकदेवतानो वावीसपल्योपम आउखोकह्यो। अच्युतबारमेलोकेदेवतानोउत्कृष्टोबावीस सागरोपमआउखोकह्यो नवग्रैवेयकमांहिसगलाहेठिलोग्रैवेयक एतलेपहिलेग्रैवेयकना देवतानोजघन्य बावीससागरोपम आउखोकह्यो । बारमेदेवलोके जेदेवता महित १ । विश्रुत २ । विमल ३ । प्रभास ४ । वनमाल ५ अच्युतावतंसक ६ । एहछविमाने देवतापणे उपनाछे । तेहदेवतानोउत्कृष्टो बावीससागरोपम स्थितिकही। तेहदेवताबावीस अर्द्धमासेपखवाडे स्वासोस्वास घणाले नीचोमूंके तेहदेवतानो बावीससहस्रवर्षे आहारनो अर्थउपजे। केतलाएकभव्यजीवजे बावीसभवनेअांतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये मोक्षजास्ये ॥ इति बावीसमो ठाणूंसमाप्तम् ॥ २२ ॥ हिवेतेवीसमोसमवायलिखियेछे। तेवीससूत्रकृतांगबीजूंअंग तेहना अध्य

॥ मूल ॥

तेवीसंसुयगडज्झयणा प० तं० । समए वेतालिए उवसग्गपरिन्ना त्थीपरिन्ना नरयविभत्ती महावीरथुई कुसीलपरिभासिए विरिए धम्मे समाही मग्गे समोसरिए आहत्तहिए गंथे जमईए गाथा पुंडरीए किरियाठाणा आहारपरिन्ना पच्चक्खाणकिरिया अणगारसुयं अद्दइज्जं णालंदइज्जं जंबूद्दीवेणंदीवे भारहेवासे इमीसेणं उसप्पिणीए तेवीसाएजिणाणं सूरुग्गमणमुहुत्तंसि केवलवरनाणदंसणेसमुप्पन्ने जंबूद्दीवेणंदीवे इमीसेणंउसप्पिणीए तेवीसं तित्थकरा पुव्वभवे एक्कारसंगिणो होत्था तं० अजितसंभवअभिणंदणसुमई जाव पासोवद्धमाणोय उसभेणं अरहा कोसलिए चोद्दसपुव्वी होत्था जंबूद्दीवेणंदीवे इमीसे उसप्पिणीए तेवीसं

॥ भाषा ॥

यनकथा तेकहेछे । समय १ । वैतालिक २ । उपसर्गपरिज्ञा ३ । स्त्रीपरिज्ञा ४ । नरकविभक्ति ५ महावीरस्तुति ६ । कुशीलपरिभाषा ७ । वीर्याध्ययन ८ धर्माध्ययन ९ । समाधिनाम १० । मतनाम ११ । समोसरण १२ । याथातथ्यनाम १३ । ग्रंथनाम १४ । जमक १५ । गाथा १६ । एहसोल अध्ययन प्रथम श्रुतस्कंधे बीजेश्रुतस्कंधे सात अध्ययनछे तेकहेछे । पुंडरीक १७ । क्रियाठाणो १८ । आहारपरिज्ञा १९ । प्रत्याख्यानक्रिया २० । अणगारश्रुत २१ । आर्द्रकुमार २२ । नालंदीनो २३ । जंबूद्वीपनेविषे भरतक्षेत्रने विषेएणी अवसर्पिणीने । आदिनाथथकीमांहि पार्श्वनाथलगे तेवीस जिनने तीर्थंकरने सूर्यनेउदय मुहूर्ते एतले प्रभाति केवलवर प्रधानज्ञान दर्शन उपनोज्ञानतेविशेषाववोध दर्शनतेसामान्याववोध गाथाचाव तेवीसाएनाणा उप्पन्नजिणवराणपुव्वण्हे । वीरस्सपच्छिमन्हा पमाणपत्ताइचरिमदेह ॥ १ ॥ जंबूद्वीप नामद्वीप इण अवसर्पिणीयें आदिनाथविना बीजाचेवीसतीर्थंकर पहिलेभवे एकादशांगीहुया इग्यारअं

तित्थंकरा पुव्वे मंडलिरायाणो होत्था तं० अजितसंभव अभिणंदण जावपासोवद्धमाणोय उसभेणं अरहा कोसलिए पुव्वभवे चक्कवट्टी होत्था इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाएणं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं तेवीसं पलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणाणं देवाणं अत्थेगइयाणं तेवीसं पलिउवमाइं ठिई प० हेट्ठिम मज्झिमगेविज्जाणं देवाणं जहन्नेणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिई प० जे देवा हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जयविमाणंसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं तेवीसं सागरोवमाइं

गत रगामीहुया । तेकहेछे । अजित १। संभव २। अभिनंदन ३। सुमति ४। जावत्शब्दें पार्श्वनाथ छेहडे वर्द्धमानस्वामीलगें ऋषभनाथआदिअरिहन्त कोशल देशना ऊपना पहिलेभवें वज्रनाभचक्रवर्तिपणे चौदपूर्वीहुया । जंबूद्वीपे भरतक्षेत्र एणी अवसर्पिणीयें त्रेवीसतीर्थंकर पहिलेभवे मंडलीक राजाहुया ते कहेछे अजितनाथ संभव अभिनंदन यावत् वर्द्धमानस्वामीलगें ऋषभ अरिहंत कोशलदेशना उपना पहिलेभवे वज्रनाभचक्रवर्तिहुया । एणीयें रत्नप्रभा पृथिवीयें केतलाएक नारकीनातेवीस पल्योपम आउखोकह्यो । हेठेसातमी पृथिवीयें केतलाएक नारकीनो तेवीस सागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमारदेवतानो केतलाएकनो तेवीस पल्योपम आउखोकह्यो । सौधर्म ईशान देवलोकें केतलाएक देवतानो तेवीस पल्योपम आउखोकह्यो । हेठिममध्यम ग्रैवेयके एतले त्रीजा ग्रैवेयके देवतानो जघन्यतेवीससागरोपम आउखोकह्यो जेदेवता हेठिम ग्रैवेयके पहिले ग्रैवेयके विमाने देवतापणे उपनाछे । तेहदेवतानो उत्कृ

षत्वारिसूत्राणि अर्वाक्स्थितिसूत्रेभ्यः सप्तमूत्रकृतांगस्य प्रथमेश्रुतस्कंधेषोडशाध्ययनानि द्वितीयेसप्ततेषांचान्वर्थस्तदधिगमाधिगम्यइति ॥ २३ ॥ च तुर्विंशतिस्थानके षट्सूत्राणिस्थितेःप्राक् सुगमानिच नवरं देवानामिन्द्रादीनामधिकादेवाः पूज्यत्वाद्देवाधिदेवाइति तथाजीवाउत्ति जंबूद्वीपलक्षणक्षेत्रस्य ॥ टीका ॥

ठिई प० तेणं देवा तेवीसाए अद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिंणं दे वाणं तेवीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे तेवीसाए भवग्गहणे हिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण मंतंकरिस्संति ॥ २३ ॥ चउव्वीसं देवाहिदेवा प० तं० । उसभ अजित संभव अभिनंदण सुमइ पउमप्पह सुपास चंदप्पह सुवि धि सीअल सिज्जंस वासपूज्ज विमल णंत धम्म संति कुंथु अर मल्ली मुणिसुव्वय नमि नेमी पास वद्धमाण ॥ मूल ॥

छे तेवीस सागरोपमनी स्थितिकही । तेहदेवता तेवीसे पखवाडे स्वासोस्वासादिक बोलकरे ऊंचाले नीचासके तेहदेवताने तेवीसवर्ष सहस्रे आहारनी वां छाउपजे । केतलाएक भव्यजीव जेत्रेवीसभवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मुंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये मोक्षजास्ये ॥ इति तेवीसमो समवाय मम्पत्तम् ॥ २३ ॥ हिवे चोवीसमो समवाय लिखियेछे । चोवीस देवाधिदेव देवइंद्रादिक तेमांहि अधिकादेव पूज्यपणाथकीते देवाधिदेवकह्या तेकहेछे ऋषभ १ अजित २ । संभव ३ । अभिनंदन ४ । सुमति ५ । पद्मप्रभ ६ । सुपार्श्व ७ । चंद्रप्रभ ८ । सुविधि ९ । शीतल १० । श्रेयांस ११ । वासुपूज्य १२ । विमल १३ अनंत १४ । धर्म १५ । शांति १६ । कुंथनाथ १७ । अरनाथ १८ । मल्लिनाथ १९ । मुनिसुव्रत २० । नमिनाथ २१ । नेमिनाथ २२ । पार्श्वनाथ २३ । वर्द्धमान ॥ भाषा ॥

वर्षाणांवर्षधराणां ऋद्दिसीमाजीवोच्यते आरोपितस्याधनुर्जीवाकल्पत्वात्तयोश्चलघुहिमवच्छिखरिसलकयोः प्रमाणं २४ ९ ३२। अष्टत्रिंशद्भागश्चयोजनस्य किं ॥ टीका ॥
चिद्विशेषाधिकः अत्रगाथा चउवीससहस्साइं नवयसएजोयणाणबत्तीसे चुल्लहिमवंतजीवा आयामेणंकलद्धंचत्ति ॥ १ ॥ कलार्द्धमितिएकोनविंशतिभागस्यार्द्धं
॥ ६७ ॥ तस्मादष्टत्रिंशद्भाग एवभवतीति चतुर्विंशतिर्देवस्थानानिदेवभेदा दशभवनपतीनांअष्टौव्यन्तराणां पञ्चज्योतिष्कानां एकंकल्पोपपन्न वैमानिकानां एवंचतुर्विंशतिः
सेंद्राणिचमरेंद्राद्यधिष्ठितानिशेषाणिच ग्रैवेयकानुत्तरसुरलक्षणानि अहं २ इत्येवं इन्द्रायेषुतान्यहमिंद्राणि प्रत्यामिंद्रकाणीत्यर्थः अतएव अनिंद्राणि अवि
द्यमाननायकानि अपुरोहितानि अविद्यमानशांतिकर्मकारीणि उपलक्षणत्वात्पुरंदरस्य अविद्यमानसेवकजनानीति तथाउत्तरायणगतः सर्वाभ्यंतरमण्डल
प्रविष्टः सूर्यःकर्कसंक्रांतिदिनइत्यर्थः चतुर्विंशत्यंगुलिकांपौरुष्यां प्रहरेभवाच्छाया पौरुषीया तांछायां हस्तप्रमाणशंकोरितिगम्यते निर्वर्त्यकृत्वा णंवाक्यालंका

चुल्लहिमवंतसिहरीणं वासहरपव्वयाणं जीवाउ चउव्वीसं चउव्वीसं जोयणसहस्साइं णवयबत्तीसे जोयणस ॥ मूल ॥
ए एगं अठतीसइभागंजोयणस्स किंचिविसेसाहिआउ आयामेणं प० चउवीसंदेवठाणा सइंदिया प० से

२४। मेरुथको तीनपर्वत दक्षिणदिसेछे तेमांहि छेहल्यो लघुहिमवंत उत्तरदिसे तीनपर्वत तेमांहि छेहल्योशिखरिए बिहुंवर्षधरपर्वतनी जीवाछेतेनी अने ॥ भाषा ॥
वर्षधर पर्वतनी सरलसीमाते जीवाकही ते २४९३२ योजन नवसे बत्तीस योजनना उगणीसभागकीजे तेहना अडतीया ३८ थाय एहवी अर्द्धकला कांईक
विशेषाधिक लांबपणेकही। चोवीस देवनास्थानक देवतानाभेद भवनपति १० व्यन्तर ८ ज्योतिषी ५ वैमानिक सर्वमिली एकभेदे एह २४ भेदे देवता सेंद्र

रनिवर्त्तते सर्वाभ्यन्तरमंडलात् द्वितीयमण्डलमागच्छति आह च आमाढमासेदुपयेत्यादि पवहइति यतः स्थानान्नदीप्रवहति वोढुंप्रवर्त्तते सचपद्मह्रदात्तोरणेन ॥ टीका

साअहमिंदा अपुरोहिआ उत्तरायणगतेणंसूरिए चउवीसंगुलिए पोरिसीछायंणिवत्तइत्ताणं णिअट्टति गंगा सिंधूउणं महाणदीउपवाहे सातिरगेणं चउवीसं कोसे विव्थारेणं प० रत्ता रत्तवती उणंमहाणदीउ पवाहे सातिरगे चउवीसं कोसे वित्थारेणं प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउवीसं पलिउवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं चउवीसं पलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेणं देवाणं अत्थेगइया ॥ मूल

क इन्द्रसहितकह्या। शेषथाकता नव ग्रैवेयक पांचअनुत्तरना देवता अहमिंद्र सेवक स्वामीनोभावनही। उत्तरायणगत सूर्यहुए एतलेनिषधने माथे सर्वाभ्यन्तरमांडले कर्कसंक्रांतिदिने सूर्य चोवीस अंगुले हस्तप्रमाणे वणनोछाया एपोरुषीछाया प्रहरदिवसनो छाया प्रतिनिवर्तावीने निवर्तरहे। आसाढेसि दुपयाइति वचनात्। गंगापूर्वसमुद्र गामिनी सिन्धुपश्चिमसमुद्रगामिनी महानदी। प्रवहे तोजेस्थानकथको पद्मद्रहथको निकली तेप्रवाहनेविषे सातिरेकझाझेरी चौवीसकोस विस्तारे पिहुलपणेकह्यो झाझेरापणाथको २५ कोसहुइ। रक्तारक्तवती ऐरवतक्षेत्र संबंधिनी महानदी प्रवाहनेविषे पुंडरीकद्रहनेविषे सातिरेक झाझेरा २४ कोसविस्तार पिहुलपणेकह्यो झाझेरापणाथको २५ कोस। एणीएरत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो चौवीसपल्योपम आउखोकह्यो। हेठीएं सातमी पृथिवीएं केतलाएक नारकीनो चौवीस सागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमार देवनो केतलाएकनो चौवीस पल्योपम आउखा ॥ भाषा

॥ टीका ॥

निर्गमइत्तसंभाव्यते नपुनर्यदृत्यचप्रवहशब्देन मकरमुखप्रणालनिर्गमः प्रपातकुंडे निर्गमोवाविदसाचितसूत्रंहि जंबूद्वीपप्रज्ञप्त्यामिह चतुर्विंशतिक्रोसप्रमाणा ॥

॥ मूल ॥

णं चउवीसं पलिउवमाइं ठिई प० हेठिमउवरिमगेवेज्जाणं देवाणं जहन्नेणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिई
प० जेदेवा हेठिममज्झिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं चउवीसं सागरोव
माइं ठिई प० तेणं देवा चउवीसाए अद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसि
णं देवाणं चउवीसाए वाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जे चउवीसाए भव
ग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण मंतंकरिस्संति ॥ २४ ॥
पुरिमपच्छिमगाणं तित्थकराणं पंचजामस्सपणवीसं भावणाउ प० तं० इरिआसमिई मणगुत्ती वयगुत्ती आ

॥ भाषा ॥

कह्या। सौधर्म ईशान देवलोके केतलाएक देवनो चोवीस पल्योपम आउखोकह्यो। हेठिम उपरिम ग्रैवेयक तेत्रीजूं ग्रैवेयक तिहांना देवतानो जघन्यो चौ
वीस सागरोपम आउखोकह्यो। जेदेवता हेठिम मध्यम ग्रैवेयक विमाने देवतापणे उपनाछे तेहदेवनो उत्कृष्टो चोवीस सागरोपम आउखोकह्यो। तेहदेवता
चोवीस पखवाडे स्वासोस्वासादिक चारिबोलकरे तेहदेवताने चउवीसवर्ष सहस्रे आहारनो अर्थउपजे। केतलाएक भव्यजीव जेचोवीस भवने आंतरे सोझ
स्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरस्ये मोक्षजास्ये॥ इति चोवीसमो समवाय पूर्णथयो ॥ २४ ॥ हिवे पचीसमो समवाय लिखियेछे। प
हिला श्रीआदिनाथनेवारे छेहल्या महावीर तीर्थंकरनेवारे यतीना पंचमहाव्रतनी पंचवीस भावनाकही महाव्रतराखिवाना उपाय तिहां पहिला महा

|| टीका ||

२४ || पञ्चविंशतिस्थानकमपिसुबोधंनवरमिहस्थितेरवांगभयसूत्राणि तत्रपञ्चजामस्मत्ति पञ्चानांयामानां महाव्रतानांसमाहारस्तत्पंचयामंतस्यभावणा

श्रोत्ति प्राणातिपातादिनिवृत्तिलक्षणमहाव्रतसंरक्षणायभाव्यन्ते इतिभावनास्ताश्च प्रतिमहाव्रतं पंचपंचेति तत्रेर्यासमित्याद्याःपञ्च प्रथमस्यमहाव्रतस्य तत्रा

लोकभाजनभोजनं आलोकनपूर्वंभाजनपात्रेभोजनं भक्तादेरभ्यवहरणं अनालोक्यभाजनभोजनेहि प्राणिहिंसासम्भवतीति तथानुविचिंत्यभाषणतादिकाइती

यस्यतत्रक्रोधविवेकः परित्यागः तथाऽवग्रहानुज्ञापनादिकास्तृतीयस्य तत्रावग्रहानुज्ञापना १ तत्रचानुज्ञातेसीमापरिज्ञानं ज्ञातायांचसीमायांस्वयमेव उग्गह

मिति अवगृहस्यानुगृहणता पश्चात्स्वीकरणमवस्थानमित्यर्थः ३ साधर्मिकाणां गीतार्थसमुदायविहारिणां संविग्नानामवगृहो मासादिकालमानतः पंचक्रो

|| मूल ||

लोयणभायणभोयणं आदाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिई ५ अणुवीइभासणया कोहविवेगे लोभविवेगे भयवि

वेगे हासविवेगे ५ उग्गहअणुणवता उग्गहसीमंजाणणया सयमेवउग्गहंअणुगेराहणया साहम्मियउग्गहंअ

|| भाषा ||

व्रतनो पांचभावनाकही तेकहेछे। ईर्यासमितीयें मार्गे जोईचालवो एहप्राणातिपात निवर्तन लक्षण प्रथममहाव्रतने राखवानो उपाय १। एमसगलेकहेछे

मनोगुप्ति २। वचनगुप्ति ३। आलोकभोजने विपुलठामडे जिमवो ४। आदानलेवो भांडकहतां पात्रादिकनो निक्षेप मूकवो तिहां समिति पूंजीकरी पछे

लेवो मंकिवो ५। हिवे बीजा महाव्रतनो भावना पांच विचारी बोलवो १। क्रोधनो त्यागछांडिवो २। लोभनोत्याग ३। भयनोत्याग ४। हासजो छांडिवो

५। हिवे त्रीजा महाव्रतनो भावना पांच। गृहस्थने ओटलादिके रहिवानोअर्थ अवगृह आज्ञानो जणावणो १। अवगृहगृहस्थेदीधेथके सीमामर्यादानो ज

णावणो २। सीमाजाणेथके स्वयमेवपोतेज अवगृहनो अनुगृाहकता अंगीकारकरिवो रहिवो ३। साधर्मिक अनेरा यतीने अवगृहमागिएं तथा उपाश्रयने

॥ टीका ॥

गादिश्चैवरूप: साधर्मिकावग्रहस्ततोनचानुज्ञाप्यतस्यैव परिभोजनवतांस्थानं साधर्मिकाणां चैत्वेवसतौवा तैरनुज्ञातएववास्तव्यमितिभाव: ४ साधारणं सामा न्यं यदन्नादितदनुज्ञाप्याचार्यादिकं तस्यपरिभोजनंचेति ५ ॥ तथास्त्र्यादिसंसक्तशयनादिवर्जनादिकाश्चतुर्थस्य प्रणीताहारातिस्नेहवानिति । तथाश्रोत्रेंद्रिय रागोपरत्यादिका: पंचमस्य अयमभिप्रायोयोयत्रसजनितस्य तत्परिगृहेवतरति ततश्चशब्दादौरागंकुर्वता तेपरिगृहीताभवंतीति परिगृहविरतिर्विराधिता

॥ मूल ॥

णुन्नवियपरिभुंजणया साहारणभत्तपाणं अणुन्नविय पडिभुंजणया ५ इत्थीपसुपंडगसंसत्तगसयणासणवज्ज णया इत्थीकहविवज्जणया इत्थीणंइंदियाणमालोयणवज्जणया पुव्वरत्तपुव्वकीलियाणंअणुस्सरणया पणीता हारविवज्जणया ५ सोइंदियरागोवरई चक्खिंदियरागोवरई घाणिंदियरागोवरई जिब्भिंदियरागोवरई

॥ भाषा ॥

विषे तेहीज साधर्मीकयतीने अनुज्ञाप्य जणावीने परिभोजनतारहिवो ४ । साधारण सहुने समुदायें भातपाणी विहरयोहोय तेह आचार्यादिकने अनु ज्ञाप्य जाणवीने भोजनता जिमिवो ५ । हिवे चौथाव्रतनी भावना ५ स्त्री पशु पंडकनपुंसके संसक्तव्याप्त शय्यासननो वर्जिवो १ । स्त्रीसाथे कथानो वर्जिवो १ । स्त्रीनाइन्द्रियनो मुखकुचादिकनो आलोकन जोइवो तेहनोवर्जवो ३ । पूर्वेंगृहस्थपणे संभोगे क्रीडाकीधीहुइ तेहनो अनसंभारवो ४ । प्रणीत आहार घृतदुग्धादिके अति सरस आहारनो वर्जिवो ५ । हिवे पांचमा महाव्रतनी पांचभावना । श्रोत्रेंद्रिय राग मधुरगीतादिक कर्णनो विषय तेह उपरि राग तेहनी उपरति छांडवी १ । चक्षुरिंद्रियराग २ । घ्राणेंद्रियराग ३ । जिह्वेन्द्रियराग ४ । स्पर्शइन्द्रियराग एम पांचइन्द्रियनो वियषरागतेहनो छांडियो ५ । जेह

॥ मूल ॥

फासिंदियरागोवरई ५ मल्लीणंअरहापणवीसंधणुउढंउच्चत्तेणंहोत्था सव्वेविदीहवेयड्ढपव्वयापणवीसंजोयणाणि उढंउच्चत्तेणं प० पणवीसंगाऊआणिउव्विढेणं प० दोच्चाएणं पुढवीए पणवीसं णिरयावाससयसहस्सा प० आयारस्सणंभगवत्त सचूलिआयस्स पणवीसं अज्झयणा प० तं० सत्थपरिण्णा लोगविजत्त सीउसणीअ सम्मत्तं । आवंति धुय विमोह उवहाणसुयं महपरिण्णा ॥ १ ॥ पिंडेसण सिज्जिरिआ भासज्झयणायवत्थ पए

॥ भाषा ॥

परिग्रहने भोगवोए तेपरिग्रह मांहिलेखवीयें ५ मल्लिनाथ उगणीसमा तीर्थंकर अरिहंत पंचवीसधनुष ऊंचाऊंचपणेहुया । सघलाइ दीर्घवैताव्य जंबूद्वीप मांहिल्या ३४ धातकी खंडना ६८ पुष्करार्द्धभाग ६८ एवं १७० दीर्घवैताव्यपर्वत पंचवीस योजन ऊंचोऊंचपणेकह्या । पंचवीस पंचवीसगाऊ ऊंडपणे भूमिमांहि कह्या । बीजी नरक पृथिवीयें पंचवीस शतसहस्र एतले पंचवीसलाख नरकावासाकह्या । आचारांगना प्रथम पूर्ण्यना पांचचूलिकासहितना पंचवीस अध्ययनकह्या तेकहेछे । शास्त्रपरिज्ञा १ । लोकविजय २ । शीतोष्णीय ३ । सम्यक्त ४ । आवंती ५ । मतांतरे लोकसार । धूताध्ययन ६ । विमोचाध्ययन ७ । उपधानश्रुत ८ । महापरिज्ञा ९ । पिंडेषणाध्ययन १० । सिज्जा ११ । ईर्या १२ । भाषाध्ययन १३ । वस्त्रेषणा १४ । पात्रेषणा १५ । अवग्रह प्रतिमा १६ । सातासातक्रिया एवं २३ भावनाध्ययन २४ विमुक्तिनाम २५ बीजा श्रुतस्कंधना अध्ययन १६ उद्देशा २५ चारचूलिकामांहि अंतर्भव्याछे अनेपांचमानी

॥ टीका ॥

भवत्यन्यथावारोधितेतिवाचनांतरे आवश्यकानुसारेणदृश्यंते तथामिथ्यादृष्टिरेव तिर्यग्गत्या संक्लिष्टपरिणामइत्युक्तमयमपि द्वींद्रियाद्यपर्याप्तादिका: कर्म्मप्रकृतीर्बध्नातिनसम्यग्दृष्टिस्तासां मिथ्यात्वप्रत्ययत्वादिति मिथ्यादृष्टिग्रहणं विकलेंद्रियोद्वित्रिचतुरिंद्रियाणामन्यतम: णमित्यलंकारे पर्याप्तोन्याअपिबध्नातीत्यपर्याप्तग्रहणमपर्याप्तकणवध्नेता अप्रशस्तपरिवर्त्तमानद्वयेतररूपावध्नातिमोप्येता: संक्लिष्टपरिणामोवध्नातीति संक्लिष्टपरिणामइत्युक्त मयमपिद्वींद्रियाद्यपर्याप्त

॥ मूल ॥

सा उग्गहपडिमा सत्तिकसत्तया जावण विमुत्ती ॥ २ ॥ निसीहज्झयणंपणवीसइमं मिच्छादिट्ठिविगलिंदिए

॥ भाषा ॥

सीथ चूलिकानो अधिकारनथी परचूलिकाकही सूत्रमांहि तेमाटे इहांनिसीथपद ग्रह्याख्य विमुक्त अध्ययन पणिनिसीथ चूलिकासहित पंचवीसनो जाणिवो आचारांग बीजोश्रुतस्कंधछे तेमांहि पहिलेश्रुतस्कंधे नवअध्ययन तेमांहि नवमोअध्ययन महापरिज्ञानामे तेहना उद्देशा १६ तेहदेवर्द्धिगणि क्षमाश्रमणे विछेदोपल्यापूछ्यांथें आठअध्ययन उगर्‍यां तेहना उद्देशा ४४ के एकावनमे ठाणिलिख्याछे । हिवे बीजे श्रुतस्कंधे अध्ययन १६ उद्देशा २५ तेचूलिकामांहि अंतर्भव्याछेतो पहिला श्रुतस्कंधना नवअध्ययन बीजे श्रुतस्कंधे अध्ययन १६ एवं पंचवीस अध्ययनकह्या । अने पहिला श्रुतस्कंधना ८ अध्ययनना उद्देसा ६० बीजा श्रुतस्कंधना उद्देशा २५ सर्वमिलो ८५ उद्देशाथया । हिवे बीजे श्रुतस्कंधे १६ अध्ययनछे तेमांहि पहिला सात अध्ययन पहिली चूलिका रूपछे आगल्या ७ अध्ययन एकसरा बीजी चूलिकारूप पनरमं अध्ययन त्रीजी चूलिकारूप सोलमुं अध्ययन चौथी चूलिकारूप पांचमा निशीथाध्ययननो इहां अधिकारनथी । मिथ्यादृष्टि । विकलेंद्रिय बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चउरिन्द्रिय अपर्याप्तयका संक्लिष्टपरिणामे महाभूंडा अध्यवसायें उपार्ज्योकर्म तेहनी पंचवीस उत्तरप्रकृतिबांधे तेकहेछे । तिर्यंचगति नामकर्म १ । विकलेंद्रिय जातिनाम २ । औदारिक शरीरनाम ३ । तैजस शरीरनाम ४ । कार्मण शरीरनाम ५ । हुंडक

॥ टीका ॥

कप्रायोग्यंबध्नाति तत्रविगलिंदियजायनामंति कदाचित् द्वींद्रियजात्यामह पंचविंशतिः कदाचित्त्रींद्रियजात्या एवमितरथापीति । गंगेत्यादि पंचविंशतिगं
व्यूतानि पृथुत्वेनयः प्रपातस्तेनेतिशेषः दुहश्रोत्ति द्वयोर्दिशोः पूर्वतोगंगा अपरतः सिंधुरित्यर्थः पद्मद्रहादिहिनिर्गते पंच २ योजनशतानि पर्वतोपरिगत्वादच्चि

॥ मूल ॥

णं अपज्जत्तएणं संकिलिठपरिणामेणामस्सकम्मस्सपणवीसंउत्तरपगडीउणिबंधति तिरियगतिनामं विगलिं
दियजातिनामं उरालियसरीरनामं तेअगसरीरनामं कम्मगसरीरनामं हुंडगसंठाणनामं उरालियसरीरंगोवंग
नामं छेवठसंघयणनामं वस्रनामं गंधनामं रसनामं फासनामं तिरियाणुपुव्विनामं अगुरुलहुनामं उवघाय
नामं तसनामं बादरनामं अपज्जत्तयनामं पत्तेयसरीरनामं अथिरनामं असुभनाम दुभगनामं अणादेज्जना
मं अजसोकित्तिनामं निम्माणनामं २५ गंगासिंधूउगंमहाणदीउपणवीसंगाऊयाणि पोहत्तेणं घडमुहपवित्तिए

॥ भाषा ॥

संस्थाननाम ६ । औदारिक शरीरना अंगोपांग ७ । छेवठ्ठसंघयणनाम ८ । वर्णनाम ९ । गंधनाम १० । रसनाम ११ । स्पर्शनाम १२ । तिर्यंचनी आनुपूर्वी
१३ । अगुरु लघुनाम १४ । उपघातनाम १५ । त्रसनाम १६ । बादरनाम १७ । अपर्याप्तकनाम १८ । प्रत्येककायनाम १९ । अस्थिरनाम २० । अशुभनाम
२१ । दौर्भाग्यनाम २२ । अनादेयनाम २३ । अजस अकीर्तिनाम २४ । निर्माणनामकर्म २५ । गंगासिंधूनदीपंचवीस पंचवीस गाऊनेप्रवाहे पिहुलपणे पद्म
द्रहथकी निकली पांचसय योजन हिमवंतपर्वत उपरचालीने दक्षिणदिशि प्रवर्त्ती घडमुहपवत्तिएणं घडानामुखनीपरी पंचवीसकोस पिहुलीजीभीयें मगर
मुखप्रणालीयें मुक्तावलीहारसंठाणे संस्थितप्रपात सययोजनोच्च हिमवंतपर्वतथकी हेठीउतरी गंगानदी गंगाप्रपात कुंडमां पडेछे सिंधुनदी सिंधुप्रपाते पडे

याभिमुखेप्रवृत्ते घडमुहपवित्तिएणंति घटमुखादिव पंचविंशतिक्रोशि पृथुलजिह्वाकात् मकरमुखप्रणालात् प्रवृत्ते नमुक्तावलीनाम मुक्ताशरीराणां योहारस्तत्सं स्थितेन प्रपतज्जलसंतानेन योजनशतोच्छ्रितस्य हिमवतोऽधोवर्त्तिनोः स्वकीययोः प्रपातकुण्डयोः प्रपततः एवंरक्तारक्तवत्यौ नवरंशिखरिवर्षधरोपरि प्रतिष्ठित

॥ ७१ ॥ णं मुत्तावलिहारसंठिएणंपवातेणपडंति रत्तारत्तवईउत्तणं महाणदीउपणवीसंगाऊयाणिपोहत्तेणं मकरमुहपवि

त्तिएणं मुत्तावलिहारसंठिएणंपवातेणपडंति लोगबिंदुसारस्सणं पुव्वस्स पणवीसंवत्थू प० इमीसेणं रयणप्प

भाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं पणवीसं पलिउवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइया

णं नेरइयाणंपणवीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं पणवीसं पलिउवमाइं

ठिई प० सोहम्मीसाणेणं देवाणं अत्थेगइयाणं पणवीसं पलिउवमाइं ठिई प० मज्झिमहेट्ठिमगेवेज्जाणं दे

छे। रक्तारक्तवती ऐरवतचेत्र संबंधिनी महानदी पचवीसगाऊ पिहुलपणे पुंडरीकद्रहथकी निकली शिखरी पर्वतउपरि पांचसय योजन चालीने मगरमु खप्रणालीयें मुक्ताहारसंठाणप्रपातेकरि हेठोउतरीछे रक्ता रक्तकुंडमांहिपडेछे रक्तवती रक्तवतीकुंडमांहि पडेछे। लोकबिंदुसार चौदमा पूर्वना पंचवीसव स्तुअधिकार विशेषकह्या। एणीये रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो पंचवीस पल्योपम आउखोकह्यो। हेठीयें सातमी पृथिवीयें केतलाएकनो २५ सागरोपम आउखोकह्यो। असुर कुमार देवतानो केतलाएकनो २५ पल्योपम आउखोकह्यो। सौधर्म ईशान देवलोके केतलाएक देवनो २५ पल्योप म आउखोकह्यो। मध्यम हेठिम ग्रैवेयकें एतले ऊंचेग्रैवेयक विमाने देवतानो जघन्य २५ सागरोपम आउखोकह्यो। जेदेवता हेठिम उपरिम ग्रैवेयके त्रौ

पुंडरीकइदाअपततइति तथालोकबिन्दुसारं चतुर्दशपूर्वमिति ॥ २५ ॥ षड्विंशतिस्थानकंव्यक्तमेव नवरं उद्देशनकालायत्रश्रुतस्कन्धेऽध्ययनेच याव ॥ टीका ॥

वाणं जहन्नेणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिई प० जेदेवाहेठिमउवरिमगेवेज्जगविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना ते सिणं देवाणं उक्कोसेणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा पणवीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाण मंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं पणवीसं वाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइया भ वसिद्धियाजीवा जेपणवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदु क्खाण मंतंकरिस्संति ॥ २५ ॥ छव्वीसंदसकप्पववहाराणं उद्देसणकाला प० तं० । दसदसाणं ॥ मूल ॥

जेग्रैवेयक विमाने देवतापणे उपनाछे तेहदेवतानो उत्कृष्टो २५ सागरोपम आउखोकह्यो तेहदेवता पंचवीसे पखवाडे स्वासोस्वास घणोले ऊंचोले नीचोमूंके तेहदेवताने २५ वर्ष सहस्रे आहारनो अर्थउपजे । छेकेतलाएक भव्यजीव जेपंचवीस भवनें आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये संसारना परितापथकी ठाढाथा स्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये इति पंचवीसमो ठाणो सम्मत्तम् ॥ २५ ॥ हिवे छब्बीसमो समवाय लिखेछे । छवीस दशाकल्प व्यवहारना उद्देश नकाल जेह श्रुतस्कंधे जेतला अध्ययनइया तेतला उद्देसनकाल उद्देशनना अवसरकह्या तेकहेछे । दशदशानां उद्देशनकाल १० छकल्पना ६ दशव्यवहारना ॥ भाषा ॥

॥ ७२ ॥

॥ मूल ॥

छकप्पस्स दसववहारस्स अभवसिद्धियाणं जीवाणंमोहणिज्जस्स कम्मस्स छव्वीसंकम्मंसासंतकम्मा प० तं० मिच्छत्तमोहणिज्जं सोलसकसाया इत्थीवेदे पुरिसवेदे नपुंसकवेदे हासं अरति रति भयं सोगं दुगंछा इमी सेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं छव्वीसंपलिओवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं छव्वीसंसागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं छव्वीसंपलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेणं देवाणं अत्थेगइयाणं छव्वीसंपलिओवमाइं ठिई प० मज्झिम मज्झिम गेवेज्जयाणं देवाणं जहन्नेणं छव्वीसंसागरोवमाइं ठिई जेदेवा मज्झिम हेठिम गेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना

॥ भाषा ॥

सर्वमिली २६ उद्देगन कालथया । जेहने अनादि अनंत अभव्यपणो सिद्धिनिष्पन्नछे ते अभव्यसिद्ध कहिये तेहजीवने मोहनीकर्म चौथो तेहनोमूल २८ प्रकृतिछे तेमांहि अभव्यजीवने विपुंजो करणतो आवरे छव्वीसकर्मना अंशकर्मनो प्रकृति सत्ताकर्मपणे रहे तेकहेछे । मिथ्याल मोहनीय १ अनेसोले कषाय अनंतानुबंधी क्रोध मान माया लोभ ४ एम अप्रत्याख्यानी ४ प्रत्याख्यानीय ४ संज्वलन ४ सर्वमिली १६ कषाय अनेमिथ्याल मोहनी भेलतां १७ । प्रकृति स्त्रीवेद १८ । पुरुषवेद १९ । नपुंसकवेद २० । हास्य २१ । अरति २२ । रति २३ भय । २४ । शोक २५ । दुगंछा २६ । एणीयेरत्नप्रभा पृथिवीयें केतलाएक नारकीनो छब्बीस पल्योपम आउखोकह्यो । हेठोयें सातमीपृथिवीयें केतलाएक नारकीनो २६ सागरोपम आउखोकह्यो । असुरकुमार केतलाएक देवतानो २६ पल्योपम आउखोकह्यो । सौधर्म ईशानें केतलाएक देवनो २६ पल्योपम आउखोकह्यो । मध्यम २ ग्रैवेयके एतले पांचमे ग्रवेयके देवतानो जघन्य २६

॥ टीका ॥

स्यध्ययमान्युद्देशकावा तत्रतावंतएवउद्देशमकाला उद्देशावसरा:श्रुतोपचाररूपाइति। तथा अभव्यानांत्रिपुंजीकरणाभावेन सम्यक्तमिश्ररूपंप्रकृतिद्वयं सत्तायांनभवतीति षड्विंशतिः सत्कर्मांशाभवंतीति ॥ २६ ॥ सप्तविंशतिस्थानकमपिव्यक्तमेव केवलं षट्सूत्राणिस्थितेरर्वाक् तत्रअनगाराणां साधूनां गुणाश्चारित्रविशेषा: अनगारगुणा: तत्रमहाव्रतानि पंचेंद्रियनिगृहाश्चपंच क्रोधादिविवेकाश्चत्वार: सत्यानित्रीणि तत्रभावसत्यंशुद्धांतरात्मना करणसत्यंयत्

॥ मूल ॥

तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं छव्वीसंसागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवा छव्वीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं छव्वीसंवाससहस्सेहिं आहारट्ठेसमुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जेछव्वीसेहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण मंतंकरिस्संति ॥ २६ ॥ सत्तावीसंअणगारगुणा प० तं०। पाणाइवायाउ वेरमणं मुसावायाउ वेरमणं अदिन्नादाणाउ वेरमणं मेहुणाउ वेरमणं परिग्गहाउ वेरमणं सोइंदियनिग्गहे चक्खिं

॥ भाषा ॥

सागरोपम आउखोकह्यो। जेदेवता मध्यम हेठिम एतले चउथे ग्रैवेयक विमाने देवतापणे उपनाछे तेहदेवतानो उत्कृष्टो२६ सागरोपम आउखोकह्यो। तेहदेवता छव्वीसे पखवाडे स्वासोस्वास घणोले ऊंचोले नीचोमेले तेहदेवताने २६ वर्ष सहस्रे आहारनो अर्थउपजे। केतलाएक भव्यजीवजे२६ भवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये संसारदु:खनो अंतकरस्ये मोक्षजास्ये इति छव्वीसमो समवाय पूरोथयो ॥ २६ ॥ हिवे सत्तावीसमो समवाय लिखेछे सत्तावीस अणगारना साधूना चारित्र विशेषरूपगुणकह्या तेकहेछे। प्राणातिपातनो विरमण १। मृषावादनो विरमण २। अदत्तादाननो विरमण ३।

॥ टीका ॥

तिलेखनादिक्रियां यथोक्तांसम्यगुपयुक्तःकुरुते योगसत्यंयोगानांमनःप्रभृतीनामवितथत्वं १७ क्षमाऽनभिव्यक्तक्रोधमानस्वरूपस्य द्वेषसंज्ञितस्याप्रीतिमात्रस्याभा
वः अथवाक्रोधमानयोरुदयनिरोधः क्रोधमानविवेकशब्दाभ्यांतदुदयप्राप्तयोर्निरोधः प्रागेवाभिहितइति नपुनरुक्ततापीति १८ विरागता अभिष्वंगमात्रस्य
भावः अथवामायालोभयोरनुदयो मायालोभविवेकशब्दाभ्यांतूदयप्राप्तयोस्तयोर्निरोधः प्रागभिहित इतोहापिनपुनरुक्ततेति १९ मनोवाक्कायानां समाहरण
तापाठांतरतः समत्वाहरणता अकुशलानांनिरोधास्त्रयः २२ ज्ञानादिसंपन्नतास्तिस्रः २५ वेदनातिसहताशीताद्यतिसहनं २६ मारणांतिकातिसहनता क

॥ मूल ॥

दियनिग्गहे घाणिंदियनिग्गहे जिब्भिंदियनिग्गहे फासिंदियनिग्गहे कोहविवेगे माणविवेगे मायाविवेगे लो
भविवेगे भावसच्चे करणसच्चे जोगसच्चे खमाविरागया मणसमाहरणया वयसमाहरणया कायसमाहरणया
नाणसंपन्नया दंसणसंपन्नया चरित्तसंपन्नया वेयणअहियासणया मारणंतियअहियासणया जंबूद्दीवेदीवेअन्नि

॥ भाषा ॥

मैथुननो विरमण ४ । परिग्रहनो विरमण ५ । श्रोत्रेंद्रियनिग्रह ६ । चक्षुरिंद्रिय निग्रह ७ । घ्राणेंद्रिय निग्रह ८ । रसनेंद्रिय निग्रह ९ । स्पर्शनेंद्रिय निग्रह १०
क्रोधनो विवेकत्याग ११ । मान विवेक १२ । माया विवेक १३ । लोभ विवेक १४ । भावसत्य शुद्धआत्मारा खिवो १५ । करणसत्यइन्द्रियनिरोधप्रतिलेखनादि
क क्रियानेविषे सावधानपणे प्रवर्तिवो १६ । योगसत्य मनःप्रभृतियोगत्रिक कुशलतानुष्ठाने प्रवर्तिवो १७ । खमा क्रोधनोमाननो उदयनिरोध १८ । विराग
ता केहसाथेप्रसंगनहो १९ । मननो समाहरणता अकुशल व्यापारथको रुविवो २० एम वचन समाहरणता २१ । काय समाहरणता २२ । ज्ञानकरी स
म्पन्नता सहितपणो २३ । एम दंसण सम्यक्त्वसंपन्नता २४ । चारित्र संपन्नता २५ । वेदना अधिसहनता सातादिकनो सहिवो २६ । मारणांतिक अधिसहन

॥ टीका ॥

स्याणमित्रबुद्धामारणांतिकोपसर्गसहनमिति २७ तथा जंबूद्वीपेनधातकीखण्डादौ अभिजिद्वर्जैः सप्तविंशत्यानक्षत्रैर्व्यवहारः प्रवर्त्तते अभिजिन्नक्षत्रस्योत्तराषा
ढचतुर्थपादानुप्रवेशनादिति । तथामासोनक्षत्रचन्द्राभिवर्द्धित ऋत्वादित्यमासभेदा त्पंचविधान्योक्तनक्षत्रमासः चंद्रस्यनक्षत्रमण्डलभोगकाललक्षणः सप्तविं
शतिरात्रिंदिवानि अहोरात्राणीति रात्रिंदिवाग्रेणत्यहोरात्रपरिमाणापेक्षदेदंपरिमाणं ननुसर्वथातस्याधिकतरत्वादाधिक्यंवाहोरात्रसप्तषष्ठिभागानामेकविं
शत्येति । विमाणपुढवित्ति विमानानांपृथिवीभूमिका । तथावेदकसम्यक्त बंधाः क्षायोपशमिकसम्यक्त्वहेतुभूतशुद्धदलिकपुंजरूपा दर्शनमोहनीयप्रकृतिस्तस्य

॥ मूल ॥

इयज्जोहिं सत्तावीसाएणक्खत्तेहिं संववहारेवट्टति एगमेगेणंणक्खत्तमासे सत्तावीसाहिंराइंदियाहिं राइंदियग्गे
णं प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु विमाणपुढवी सत्तावीसं जोयणसयाइं बाहल्लेणं प० वेयगसम्मत्तबंधोवरयस्स

॥ भाषा ॥

ता मारणांतिकोपसर्गनो सहिवो २७ साधुगुण । जंबूद्वीपनेविषे अभिजिन्नक्षत्र तेउत्तराषाढाना चौथापायामांहि पइठोछे तेमाटे अभीचिनक्षत्र वर्जीने अ
ख्विनी प्रमुख सत्तावीस नक्षत्रेकरी व्यवहार प्रवर्त्तेछे । नक्षत्रमास १ । चंद्रमास २ । अभिवर्द्धितमास ३ । ऋतुमास ४ । आदित्यमास ५ । एवं पांचमासछे
तेमांहि एके नक्षत्रमासें सत्तावीस रात्रिदिवस एतले सत्तावीस अहोरात्रि । रात्रिदिवाग्रें सत्तावीस अहोरात्रि प्रमाणें पूरोथाय । सौधर्म ईशान देवलोके
विमाननी पृथिवी सत्तावीस योजनसय बाहुल्यपणे जाडपणेकही सत्तावीसमया इपुढवी पिंडोइति वचनात्कह्या । वेदकसम्यक्त बंध तेक्षायोपशमिक सम्य
क्तनो कारणभूत शुद्धदलिक रूप दर्शनमोहनीय प्रकृतिछे तेहनो उपरांति विदोजक वेगलानो करणहार तेहने मोहनीय कर्मनी प्रकृति २८ छे तेमांही
सत्तावीस उत्तर प्रकृति सत्ताकर्म्मे सत्तापणेकही १६ कषाय ९ नोकषाय एवं २५ थई मिश्रमोहनी एवं १७ प्रकृतिसत्तायें हुए एकसम्यक्त मोहनीटली २८

॥ टीका ॥

उवरउत्ति प्राकृतत्वादुद्दलकोविर्योजकोजनुः तस्यमोहनीयकर्मणोष्टाविंशतिविधस्यमध्ये सप्तविंशतिरुत्तरप्रकृतयः सत्कर्मांशाः सत्तायामित्यर्थः एकस्योद्दलितत्वादिति । तथाश्रावणमासस्य शुद्धसप्तम्यांसूर्यः सप्तविंशत्यंगुलिकां हस्तप्रमाणशंकोरितिगम्यते पौरुषींछायां निर्वर्त्य दिवसक्षेत्रंरविकरप्रकाशमाकाशंनिवर्द्धयन् प्रकाशहान्याहानिंनयन् रजनीक्षेत्रमंधकाराक्रांतमाकाशमभिवर्द्धयन् प्रकाशहानिवृद्धिंनयन् चारञ्चरति व्योममण्डलेभ्रमणङ्करोति अयमत्रभावार्थः इहाकिलस्थूलन्यायमाश्रित्य आषाढ्यांचतुर्विंशत्यंगुलप्रमाणा पौरुषीछायाभवति दिनसप्तके सातिरेकच्छायांगुलंवर्द्धते ततश्चश्रावणशुद्धसप्तम्यामंगुलत्रयंवर्द्धते सातिरेकैकविंशतितमदिनत्वात्तस्याः तदेवमाषाढ्याः सातिरेकैरंगुलैः सहसप्तविंशतिरंगुलानिभवन्ति निश्चयतस्तुकर्कसंक्रांतेरारभ्य यत्सातिरेकैकविंशति

॥ मूल ॥

णं मोहणिज्जस्स कम्मस्स सत्तावीसं उत्तरपगडीउ संतकम्मंसा प० सावणसुद्धसत्तमीएणं सूरिएसत्तावीसंगुलियं पोरिसिच्छायं णिव्वत्तइत्ताणं दिवसखेत्तंनियट्टमाणे रयणिखेत्तंअभिणिवट्टमाणेचारंचरइ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सत्तावीसं पलिउवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थे

॥ भाषा ॥

मोहिनी मांहियो । श्रावणसुदि सातमदिने सूर्यहस्तप्रमाणं त्रणनी छायायेंनांपियें तेमांहि २७ अंगुलीयें पोरसीनी छायाने निवर्तावी करीने दिवसनूंक्षेत्र सूर्यनाप्रकाश घटाडतोथको रात्रिनोक्षेत्र अंधकारनोक्रांत आकाशने वधारतोथको चारभ्रमण प्रतिचरे एतले आषाढी पुनिमथकी पोसीपुनिमलगे मासे मुहूर्तना ६१ भागकरी दिनप्रतिविभाग दिवसघटाडी रात्रिवधारे । एणीयेरत्नप्रभा पृथिवीविषे केतलाएक नारकीनो सत्तावीस पल्योपम आउखोकह्यो हेठिं सातमी पृथिवीयें केतलाएक नारकीनो सत्तावीस सागरोपम आउखोकह्यो । असुरकुमार देवतानो केतलाएकनो सत्तावीस पल्योपम आउखोकह्यो

॥ टीका ॥ त्समंहिनं तत्रोत्कृष्टपापौत्स्पौष्ठायाभवति ॥ २७ ॥ अष्टाविंशतिस्थानकमपिव्यक्तं नवरंनिहपंच स्थितिःप्राक्सूत्राणि तत्रआचारः प्रथमांगस्तस्य

॥ मूल ॥ गइयाणं नेरइयाणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं सत्तावीसं पलि ओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं सत्तावीसंपलिओवमाइं ठिई प० मज्झिम उवरिमगेवेज्जयाणं देवाणं जहन्नेणं सत्तावीससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा मज्झिमगेवेज्जयविमाणेसु देव त्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा सत्तावीसाए अद्धमासे हिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं सत्तावीसं वाससहस्सेहिं आहारठे स मुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जेसत्तावीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संतिसव्वदुक्खाण मंतंकरिस्संति ॥ २७ ॥ अट्ठावीसविहे आयारपकप्पे प० तं० ।

॥ भाषा ॥ सौधर्म ईशान देवलोके केतलाएक देवतानी सत्तावीस पल्योपम आउखोकह्यो। मध्यमउपरिम ग्रैवेयके एतले छट्ठे विमाने देवतानी जघन्य सत्तावीस सागरो पम आउखोकह्यो । जेदेवता मध्यम ग्रैवेयके एतले पांचमे ग्रवेयक विमाने देवतापणे उपनाछे तेदेवतानी उत्कृष्टी सत्तावीस सागरोपमनी स्थितिकही । ते हदेवताने सत्तावीसे वर्षसहस्से आहारनो अर्थउपजे । केतलाएक भव्यजीव सत्तावीस भवनेआंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये मोक्षजा स्ये इति सत्तावीसमूं समवाय संपूर्ण ॥ २७ ॥ हिवे अठ्ठावीसमो समवाय लिखिछे । अठ्ठावीस प्रकारे आचारप्रथमांग तेहना प्रकल्प अध्ययन विषिग्र

॥ टीका ॥

प्रकल्पोध्ययनविशेषोनिशीथमित्यपराभिधानस्यवाचारस्य वासाध्वाचारस्य ज्ञानादिविषयस्य प्रकल्पोध्यवसायमित्याचारप्रकल्पः तत्रकश्चित्ज्ञानाद्याचारविषयेऽपराधमापन्नस्यकस्यचित् प्रायश्चित्तंदत्तं पुनरन्यमपरावविशेषमापन्नस्तत स्तत्रैवप्राक्तनेप्रायश्चित्ते मासवहनयोग्यंमासिकं प्रायश्चित्तमारोपितमित्येवं मासिक्यारोपणाभवति तथापंचरात्रिकशुद्धियोग्यंमासिकश्चशुद्धियोग्यंचापराधद्वयमापन्न स्ततःपूर्वदत्तप्रायश्चित्ते सपंचरात्रिमासिकप्रायश्चित्तारोपणात्सपंचरात्रमासिक्यारोपणाषट् ६ एवंद्विमासिक्यः ६ त्रिमासिक्यः ६ चतुर्मासिक्यः ६ चतुर्विंशतिरारोपणाःतथासार्द्धदिनद्वयस्य पत्तस्यचोपघातनेनलघूनांमासादीनांप्राचीनप्रायश्चित्ते आरोपणाउपघातिकारोपणा यदाह ॥ अद्धेणछिन्नसेसं पुव्वद्देणंतुसंजुयंकाउं॥ देज्जायलहुपहाण गुरुदाणंतत्तियंचेवत्ति ॥ यथामासार्द्धं १५ पंचविंशतिकार्द्धंच सार्द्धद्वादशत्रयंसर्वमीलने सार्द्धसप्तविंशतिरित्ति लघुमासाः तथामासद्वयार्द्धं मासोमासिकस्यार्द्धंपच्च उभयमीलनेसार्द्धोमासइति लघुद्विमासिकं २५ तथातेषामेवमार्द्धदिनद्वयाद्यनुत्रातनेनगुरुणामारोपणा आनुघातिकारोपणा २६ तथायावतानपराधानापन्नस्तावतीनांतच्छुद्धीनामारोपणाकृत्स्नारोपणा

॥ मूल ॥

मासियाआरोवणा सपंचराइमासियाआरोवणा सदसराइमासियाआरोवणा सपक्खरसराइमासियाआरोव

॥ भाषा ॥

अथवा आचार तेसाधुनाआचार ज्ञानादिकविषय तेहनो प्रकल्पस्थापिवो तेआचारप्रकल्प अठावीसभेदेंकह्या तेकहेछे । किहांएक ज्ञानाचारविषे अपराधपाम्यो तेहनो कांइक प्रायश्चित्तदीधो वली अनेरो अपराध सेव्यो तेवारे तिहां पूर्वप्रायश्चित्तनेविषे मासवहवायोग तेमासिको प्रायश्चित्त आरोप्यो तेमासिकारोपणाइई पहिली १ । सपंचराचेति पंचरात्रीयें शुद्धियोग्य तथा मासें शुद्धियोग्य एहवा अपराध प्राप्तने पूर्वदत्त प्रायश्चित्तनेविषे पंचरात्रिसहित मासप्रायश्चित्त आरोपणाथको सपंचरात्रि मासिको आरोपणाकही बीजी २ । एमज दसरात्रिसहित मासिक प्रायश्चित्तनो पूर्वप्रायश्चित्तनेविषे आरोपवो तेदसरात्रि

णा सवीसइराइमासियाआरोवणा सपंचवीसराइमासियाआरोवणा एवंचेवदोमासियाआरोवणा सपंचराइ दोमासियाआरोवणा एवंतिमासियाआरोवणा चउमासियाआरोवणा उवघाइयाआरोवणा अणुघाइया ॥ मूल ॥

मासिकारोपणा ३। एमज सपनरसरात्रि मासिकारोपणा ४। सवीसरात्रि मासिकारोपणा ५। संपंचवीसरात्रि मासिकारोपणा ६। एमज पूर्वनेप री कहीने एकअपराधनो प्रायश्चित्तलाग्यो वली बीजो अपराधसेव्यो तेहने पूर्वप्रायश्चित्तनेविषे बेमासयोग्य प्रायश्चित्त आरोप्यो तेबेमासिकारोपणाकही ७। पंचरात्रि प्रायश्चित्तयोग्य अनेवली २ मास प्रायश्चित्तयोग्य एहवा बीये अपराधे प्राप्तनेपूर्वदत्त प्रायश्चितने पंचरात्रिसहित बेमासिक आरोपणाकर वी तेसपंचरात्रि बेमासिकारोपणाकही ८। एमज सदसरात्रि बेमासिकारोपणा नोमो ९। सपनरसरात्रि बेमासिकारोपणा १०। सवीसरात्रि बेमासि कारोपणा ११। सपंचवीसरात्रि बेमासिकारोपणा १२। पूर्वनीपरीछे त्रिमासिकारोपणा एवं १८। चोमासिकारोपणा एवं २८ मासनोअर्द्ध १५। अनेपूर्व पूर्वपंचवीसनोअर्द्ध १२॥ उभयमिली साढासत्तावीस उपरि १ मास एतले लघुद्विमासिक प्रायश्चित्तकह्यो तथा मासनुंअर्द्ध मासवली मासार्द्ध १५ बिहुंमि लो देढमास एह लघुद्विमासिक प्रायश्चित्तकह्यो तेहनेविषे साढाबेदिनसहित १५ दिनएतले साढासतरे १७॥ दिनआरोपो तेहउपघातकारोपणा पंचवी समो २५। यदाह। अद्धेणछिन्नसेसं पुव्वद्धेणंतु संजुओकाओ। देज्जायलहुपहाणं गुरुदाणंतत्तियंचेव॥ बेमाससमांहियको अढोदिनकाढो एतले १ मासदिन साढासत्ताईस एहने उपघातकारोपणाकही तेमांहि अढोदिनघाति एतले पूराबेमासथया एहअनुघातिकारोपणा २६ तथा जेहने जेतलो अपराधला ग्योहोय तेहने तेतलोपूरी आलोयणा आरोपी तेहकृत्स्नारोपणा २७ जेहने घणाजघणा अपराधलाग्याछे परंछमासी उपरांत आलोयणनथी तोबीजा सग ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

२६ तथाबहुनपराधानापन्नस्य षण्मासांतंतेषु इतिषण्मासाधिकतपःकर्मं तेष्वेवांतर्भाव्यंशेषांतर्भाव्यशेषमारोप्यते यत्र साअकृत्स्नारोपणेत्यष्टाविंशतिरेतच्च सम्यग्निशीथविंशतितमोद्देशकावगम्यमत्रैवनिगमनमाह एतावांस्तावदाचारप्रकल्प इहस्थानके आरोपणामाश्रित्यविवक्षितोऽन्यथा तद्व्यतिरेकेणापितस्यैत द्धातिकरूपस्यभावात् अथचैतावानेवायंतावदाचारप्रकल्पः शेषस्यात्रैवांतर्भावात्तथापलालवत्तावदाचरितव्यमित्यपितथैव देवगतिसूत्रेस्थिरास्थिरयोः शुभा

॥ मूल ॥

आरोवणा कसिणाआरोवणा अकसिणाआरोवणा एतावताआयारकप्पे एतावताय आयरियव्वे नव सिद्धियाणं जीवाणं अत्थेगइयाणं मोहणिज्जस्स कम्मस्स अठावीसं कम्मंसासंतकम्मा प० तं० सम्मत्तवेअ णिज्जं मिच्छत्तवेयणिज्जं सम्मामिच्छत्तवेयणिज्जं सोलसकसाया णवणोकसाया आभिणिबोहिअणाणे अठा

॥ भाषा ॥

लायेंकर्म छमासीमांहि अंतर्भव्याछे एमजाणी छमासीप्रते आरोपीये तेअकृत्स्नारोपणा १८ एतावता एतले आचार प्रकल्पनास्थानक आश्रीने एतलोओ आचार आचरिवोकह्यो। जेहने सिद्धिमुक्ति होणारीछे तेभवसिद्धिका तेहजीवने केतलाएकने चोथामोहनीयकर्मनी अठावीस कर्मनाअंशकर्मनीप्रकृतिसत्ताये कही तेकहेछे। सम्यक्त वेदनीय सम्यक्तमोहनीय १। मिथ्यात्व वेदनी मिथ्यात्वमोहनी २। सम्यक्त मिथ्यात्व वेदनी एतले मिश्रमोहनी ३। सोलकषाय अणंतानुबंधी यादिक कषकही संसार तेहनोआय लाभहोय जेहथकी तेकषाय कषायसरीखुं फलदे तेहास्यादिकनव नोकषायकह्या सर्वमिली २८ प्रकृति मोहनी कर्मनी एहसघली २७ में ठाणेंलिखीछे। आभिनिबोधिक ज्ञान ते मतिज्ञान अठावीसप्रकारेंकह्यो तेकहेछे। श्रोत्रेंद्रियनो अर्थावग्रह अर्थनो सामान्य

॥ टीका ॥

श्रुतमयोरादेयानादेययोश्च परस्परं विरोधित्वेनैकदावस्थभावादत्यभन्दुरङ्घ्रातोत्युक्तं तत्रचैकशब्दग्रहणंभाषामात्रएवावसेयमिति नारकसूत्रेविंशतिस्ताएव प्रक्रतयो

॥ मूल ॥

वीसइविहे प० तं० सोइंदियअत्थावग्गहे चक्खिंदियअत्थावग्गहे घाणिंदियअत्थावग्गहे जिब्भिंदियअत्थावग्गहे फासिंदियअत्थावग्गहे णोइंदियअत्थावग्गहे सोइंदियवंजणोग्गहे घाणिंदियवंजणोग्गहे जिब्भिंदियवंजणोग्गहे फासिंदियवंजणोग्गहे सोतिंदियईहा चक्खिंदियईहा घाणिंदियईहा जिब्भिंदियईहा फासिंदियईहा नोइंदियईहा सोतिंदियावाए चक्खिंदियावाए घाणिंदियावाए जिब्भिंदियावाए फासिंदियावाए नोइंदियावाए सोतिंदिय

॥ भाषा ॥

प्रकारें ग्रहिवो तेश्रर्यावग्रह १ समयरहे १ चक्षुरिंद्रियकरी कांइक अर्थनो ग्रहिवो तेचक्षुरिंद्रियार्थावग्रह २। एम घ्राणेंद्रियार्थावग्रह ३। जिह्वेंद्रियार्थावग्रह ४। स्पर्शेन्द्रियार्थावग्रह ५। नोइंद्रियमन तेहनो अर्थावग्रह तेह नोइंद्रियार्थावग्रह ६। शब्दना पुद्गलआवी कानना इंद्रियमांहि भराइ तिवारपछी शब्दज्ञान उपजे तेश्रोत्रेंद्रिय व्यंजनावग्रह ७। गंधपुद्गल नासिकामांहि आवी भराइ तिवारपछी गंधज्ञान उपजे तेघ्राणेंद्रिय व्यंजनावग्रह ८। एम जिह्वेंद्रियव्यंजनावग्रह ९। स्पर्शेन्द्रियव्यंजनावग्रह १०। आंखीने अने मननोव्यंजनावग्रह नहोय तेमाटे ४ व्यंजनावग्रह जाणिवा। श्रोत्रेंद्रियेकरी शब्दनेविषे ईहा देवो आलोचवो जेह पुरुषनो शब्दकरेस्त्रीनो एहश्रोत्रेंद्रियईहा ११। आखेंकरी आलोचवो स्थाणुर्वापुरुषोवा एहचक्षुरिंद्रियईहा १२। एमघ्राणेंद्रियईहा १३ जिह्वेंद्रियईहा १४। स्पर्शनेंद्रियईहा १५। नोइंद्रियईहा १६। तेमनकरी आलोचवो। ईहा १ मुहूर्त्तलगेरहै। श्रोत्रेंद्रियावाय श्रोत्रेंद्रियेंकरी निश्चयकरिये ते श्रोत्रेंद्रियावाय १७। एम चक्षुरिंद्रियावाय तेखीलाने ऊपरिकागवइठो एखीलोज एहवो निश्चयार्थ तेचक्षुरिंद्रियावाय १८। इमघ्राणेंद्रियावाय १९। जिह्वें

॥ ७७ ॥ धारणा चक्खिंदियधारणा घाणिंदियधारणा जिभ्भिंदियधारणा फासिंदियधारणा नोइंदियधारणा ईसाणेणं कप्पे अठावीसंविमाणवाससहस्सा प० जीवेणंदेवगइम्मिबंधमाणे नामस्सकम्मस्स अठावीसंउत्तरपगडी उ णिबंधति तं० देवगतिनामं पंचिंदियजातिनामं वेउव्वियसरीरनामं तेयगसरीरनामं कम्मणसरीरनामं समचउरंसमंठाणणामं वेउव्वियसरीरंगोवंगनामं वन्ननामं गंधनामं रसनामं फासनामं देवाणुपुव्विनामं अगुरुलहुनामं उवघायनामं पराघायनामं जसोनामं पसत्थविहायोगइनामं तसनामं बायरनामं पज्जत्तनामं ॥ मूल ॥

द्रियावाय २० । स्पर्शनेंद्रियावाय २१ । नोइंद्रियावाय तेमनेंकरी निश्चयार्थकरिवो २२ । अवाय अर्द्धमुहूर्त्तरहै । पूर्वेकाननेकरी शब्दसांभल्योहोय तेसांभलि ये तेर्श्रोत्रेंद्रियधारणा २३ । नेत्रेंकरी संभारिये तेचक्षुरिंद्रिय धारणा २४ । एमज घ्राणेंद्रिय धारणा २५ । जिह्वेंद्रियधारणा २६ । स्पर्शनेंद्रियधारणा २७ नोइंद्रियधारणा जेमनेकरीसंभारवो २८ । एहधारणा कालसंख्याता असंख्यातालगेंरहै । एहमतिज्ञानना २८ भेदकह्या । ईशान वीजे देवलोके अठावीसला खविमान भगवंतेकह्या । जीवदेवतानों भवबांधतोथको नामकर्मछठो तेहनी १०३ उत्तर प्रकृतिछे तेमांहियी २८ उत्तरप्रकृतिबांधे तेकहेछे । देवगतिना मकर्म १ । पचेंद्रिय जातिनाम २ । वैक्रियशरीर नाम ३ । तैजसशरीर नाम ४ कार्मणशरीर नाम ५ । समचउरंससंस्थान ६ । वैक्रिय शरीरांगोपांग ७ । वर्णनाम ८ गंधनाम ९ । रसनाम १० । फरसनाम ११ । देवानुपूर्वीनाम १२ । अगरुलघुनाम १३ । उपघातनाम १४ । पराघातनाम १५ । यशनाम १६ प्रशस्त विहायोगतिनाम १७ । त्रसनाम १८ । वादरनाम १९ । पर्याप्तनाम २० । प्रत्येकशरीरनाम २१ । स्थिर तथा अस्थिर एहविहुंमाहे अन्यतर अनेरो ॥ भाषा ॥

पत्तेयसरीरनामं थिराथिराणंदोराहं अस्मयरंएगनामंणिबंधइ सुनासुन्नाणंदोराहं अस्मयरंएगनामंनिबंधइ सुन्न गनामं सुस्सरनामं आइज्जअणाइज्जनामेणं दोराहंअस्मयरं एगंनामंणिबंधइ जसोकित्तिनामं निम्माणनामं एवंचेवनरइयाविनाणत्तं अप्पसत्थविहायोगइनामं हुंडगसंठाणनामं अथिरनामं दुम्भगनामं असुन्ननामं दुस्स रनामं अणादिज्जनामं अजसोकित्तीणामं इमीसेणं रयणप्पन्नाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अठावी सं पलितवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अठावीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं अठावीसंपलितवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं

॥ मूल ॥

एकनामबांधे २२ शुभतथा अशुभ एहबिहुंमांहे एकबांधे २३। शुभगनाम २४। सुस्वरनाम २५। आदेयनाम अनादेयनाम एहबिहुंमांहे एकनामबांधे २६ यशकीर्त्तिनाम २७। निर्माणनाम २८। एमज जीवनरक गतिनो बंधकरतो एहीज २८ नाम कर्मनी प्रकृतिनो बंधकरे। एतलो विशेष जाणिवो इहां अप्र शस्त विहायोगतिनाम १। हुंडकसंस्थान २। अस्थिरनाम ३। दुर्भगनाम ४। अशुभनाम ५। दुस्वरनाम ६। अनादेयनाम ७। अजस अकीर्त्तिनाम ८। नरक गती ९। नरकानुपूर्वी १०। एह १० प्रकृति बीजो प्रकृति १८ देवगतिमांहिली लीजे एतले २८ प्रकृति नरकगतियें नामकर्मनी होय। एणीयें रत्नप्रभा प हिली नरक पृथिवीनेविषें केतलाएक नारकीनो अठावीस पल्योपम आउखोकह्यो। नीचे सातमी पृथिवीनेविषें केतलाएक नारकीनो अठावीस सागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमार देवतानी केतलाएकनों अठावीस पल्योपम आउखोकह्यो। सौधर्म ईशान देवलोकने विषें केतलाएक देवतानो अठावीस

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

ऽष्टानांतुस्थाने अष्टावल्याबध्नातिएतदेवाह एवंचेवेत्यादि नानात्वंविशेषः ॥ २८ ॥ एकोनत्रिंशत्तमस्थानकमपिव्यक्तमेव नवरं नवेहसूत्राणि स्थितिःप्राक् तत्रपापोपदानानिश्रुतानि तेषांप्रसंगस्तथासेवनारूपः पापश्रुतप्रसंगः । सचपापश्रुतानामेकोनत्रिंशद्विधत्वात् तद्विधउक्तः पापश्रुतविषयतया

॥ मूल ॥

अत्थेगइयाणं अठावीसंपलिउवमाइं ठिई प० उवरिम हेठिम गेवेज्जयाणं देवाणं जहन्नेणं अठावीसंसा गरोवमाइं ठिई प० जेदेवा मज्झिम उवरिम गेवेज्जएसु विमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उ क्कोसेणं अठावीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवा अठावीसाए अठमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं अठावीसाए वाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइया भवसि ठियाजीवा जेअठावीस भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण मंतंकरिस्संति ॥ २८ ॥ एगूणतीसइविहेपावसुयपसंगेणं प० तं । भोमे उप्पाए सुमिणे अं

॥ भाषा ॥

पल्योपमनी स्थितिकही । उपरिम हेठिम एतले सातमें ग्रैवेयक विमाने देवतानी जघन्य २८ सागरोपमनी स्थितिकही। मध्यम उपरिम एतले सातमे छठेग्रैवे यक विमाने जेदेवतापणे उपनाछे तेदेवतानी उत्कृष्टी अठावीस सागरोपमनी स्थितिकही । तेदेवता अठावीस पखवाडे सासोस्वास ऊंचाले घणीले नीचोमे ले तेदेवताने अठावीस वर्षसहस्रगये आहारनो वंछा उपजै । केतलाएक भव्यजीव जेअठाईस भवने आंतरे सीभस्ये बूझस्ये मूकास्ये सर्वदुःखनो अंतकार स्ये मोक्ष जास्ये अठावीसमो समवाय पूर्णथयो ॥ २८ ॥ हिवे गुणतीसमो समवाय लिखियेछे । उगुणतीस प्रकारे पापश्रुत पापनाकारण जेहश्रु

पापश्रुतान्येवोच्यते। अतएवाह भोमेत्यादि तत्र भौमं भूमिविकारफलाभिधानप्रधानं निमित्तशास्त्रं तथा उत्पातं सहजरुधिरवृष्ट्यादिलक्षणोत्पातफलनिरूपकं निमित्तशास्त्रं एवं स्वप्नं स्वप्नफलाविर्भावकं अन्तरिक्षमाकाशप्रभवग्रहयुद्धभेदादिभावफलनिवेदकं अंगं शरीरावयवप्रमाणस्पंदितादिविकारफलोद्भावकं स्वरं जीवाजीवाश्रितस्वरस्वरूपफलाभिधायकं व्यञ्जनं मषादिव्यंजनफलोपदेशकं लक्षणं लांछनाद्यनेकविधलक्षणव्युत्पादकमित्यष्टावेतान्येव सूत्रवृत्तिवार्त्तिकभेदाच्चतुर्विंशतिः तत्रांगवर्जितानामन्येषां सूत्रं सहस्रप्रमाणं वृत्तिर्लक्षप्रमाणा वार्त्तिकं तु तद्व्याख्यानरूपं कोटिप्रमाणं अंगस्य तु सूत्रं लक्षं वृत्तिः टीकावार्त्तिकमपरिमितमिति तथा विकथानुयोगोऽर्थकामोपायप्रतिपादनपराणि कामन्दकवात्स्यायनादीनि भारतादीनि वा शास्त्राणि २५ तथा विज्जानुयोगो रोहिणीप्रभृतिविद्या ॥ टीका

तरिक्खे अंगे सरे वंजणे लक्खणे नोमेतिविहे प० तं० सुत्ते वित्ती वत्तिए एवंएक्केक्कंतिविहं विकहाणुजोगे ॥ मूल

तशास्त्र ते पापश्रुत तेहनो प्रसंग सेवारूप ते पापश्रुतप्रसंग कह्या । ते कहेछे । भौमशास्त्र जे भूमिकंपादिक फलनो सूचकशास्त्र १ । उत्पातशास्त्र जे आकाशथी रुधिर वृष्ट्यादि लक्षण उत्पात तेहना फलनो सूचक २ । शुभाशुभ स्वप्न फलनो सूचक शास्त्र ३ । अंतरिक्ष आकाशथी ऊपनो ग्रहादिकनो युद्ध तेहनो फल सूचक ४ । अंगफुरकण विचारसूचक शास्त्र ५ । जीवना स्वरस्वरूप फलसूचक स्वरशास्त्र ६ । व्यंजनमसतिलक फलसूचक ७ । लक्षण सामुद्रिक शास्त्र ८ । प्रथम भौमशास्त्र कह्या ते त्रिहुंभेदे कहेछे । सूत्र १ । वृत्ति २ । वार्त्तिक ३ । भेदेकरी एमजपूर्वे अष्टांग निमित्तकह्या ते त्रिणभेदे । एवं सर्व मिली २४ भेदथया विकथानुयोग अर्थकामना उपायशास्त्र व्यासायन कोकशास्त्रादिक २५ । विद्यानुयोग रोहिणी प्रज्ञप्त्यादि विद्यासाधन शास्त्र २६ । मंत्रानुयोग चेडादि ॥ भाषा

॥ टीका ॥

साधनाभिधायकानिशास्त्राणि २६ मंत्रानुयोगश्चेटकादिमंत्रसाधनाभिधायकानिशास्त्राणिपापशास्त्राणि २७ योगानुयोगो वशीकरणादिकानि हरमेखलादि योगाभिधायकानिशास्त्राणि २८ अन्यतीर्थिकेभ्य: कापिलादिभ्य: सकाशाद्य:प्रवृत्त: स्वकीयाचारवस्तुतत्वानामनुयोगो विचारस्तत्करणार्थं शास्त्रसन्दर्भइत्यर्थ: सोऽन्यइति २९ तथाषाढादयएकांतरितापक्षमासा एकोनत्रिंशद्रात्रिंदिवसपरिमाणनभवंति स्थूलन्यायेनकृष्णपक्षे प्रत्येकंरात्रिंदिवसैकस्यक्षयादाहच। आसाढब हुलपक्खे भद्दवएकत्तिएयपोसेय फग्गुणवइसाहेसुय बोधव्वाओमरत्ताओत्ति १ इयमत्रभावना चन्द्रमासोहि एकोनत्रिंशद्दिनानि दिनस्यचद्विषष्टिभागानां द्वात्रिं शत् ऋतुमासस्य त्रिंशदेवदिनानिभवन्तीति चन्द्रमासापेक्षया ऋतुमासोऽहोरात्रद्विषष्टिभागानां त्रिंशतामाधिकोभवति ततश्चप्रत्यहोरात्रं चंद्रदिनमेकैकेनद्विष

॥ मूल ॥

विज्जाणुजोगे मंताणुजोगे जोगाणुजोगे अण्णतित्थियपवत्ताणुजोगे आसाढेणंमासे एगूणतीसराइंदिआइंरा इंदियग्गेणं प० भद्दवएणंमासे कत्तिएणंमासे पोसेणंमासे फग्गुणेणंमासे वइसाहेणंमासे मासोचंददिणाणं

॥ भाषा ॥

कमंत्रसाधनोपायशास्त्र २७। योगानुयोग योग वशीकरणोपायादिशास्त्र हरमेखलादि २८। अन्यतीर्थिकप्रवृत्तानुयोग अन्य तीर्थी कपिलादिक थी प्र वर्त्यो पोतानो आचार तेहनो अनुयोग मिथ्यात्वीना शास्त्रसमूह अर्थ २८। आसाढमास गुणत्रीस रात्रिदिवसनो २९ रात्रीदिवस परिमाणे पूरोथाय एकतिथि ओछा पखवाडानी घटै एम एकांतरित छपखवाडा गुणतीस रात्रिदिवसना थाय। यदाह ॥ आसाढबहुलपक्खे । भद्दवएकत्तिएअपोसेअ ॥ फग्गुणवेसाहेसुअबोधव्वाओमरत्ताओ ॥ १ ॥ भाद्रवो मास २९ रात्रिदिवसनो। कार्तिक मास २९ रात्रि दिवसनो । पोसमास २९ रात्रि दिवसनो। फागुणमास २९ रात्रिदिवसनो। वैशाखमास २९ रात्रिदिवसनो। चंद्रदिवस पडिवातिथि एगूणत्रीसमुहूर्त्त झाझेरानो २९ मुहूर्त्तनो कह्यो। जीवभला

॥ टीका ॥

ठिभागेनहीयते इत्यवसीयते एवंविधश्चात्रचंद्रदिवसानामेकपक्ष्यहोरात्राणांभवतीति विशेषस्त्विहचंद्रप्रज्ञप्तेरवसेयइति तथाचन्द्रदिनानीति चंद्रदिनं प्रतिपदादि कातिथिः तच्चैकोनत्रिंशन्मुहूर्त्ताः सातिरेकमुहूर्त्तपरिमाणेनेति कथंयतः किलचंद्रमासएकोनत्रिंशद्दिनानि द्वात्रिंशच्चदिनद्विषष्ठिभागाभवन्ति ततश्चंद्रदिनं चंद्र मासस्यत्रिंशतागुणनेनमुहूर्त्तराशीकृतस्यत्रिंशताभागहारे एकोनत्रिंशन्मुहूर्त्ता द्वात्रिंशच्चमुहूर्त्तस्यद्विषष्ठिभागालभ्यंतइतिजीवः प्रशस्ताध्यवसानादिविशेषे णवैमानिकेषूत्पत्तुकामोनामकर्मण एकोनत्रिंशदुत्तरप्रकृतीर्बध्नाति ताश्चेमाः देवगतिः १ पंचेंद्रियजातिः २ वैक्रियद्वयं ४ तैजसकार्मणशरीरे ६ समचतु रस्रसंस्थानं ७ वर्णादिचतुष्कं ११ देवानुपूर्वी १२ अगुरुलघुः १३ उपघातं १४ पराघातं १५ उच्छ्वासं १६ प्रशस्तविहायोगतिः १७ त्रसं १८ बादरं १९ पर्याप्तं २० प्रत्येकं २१ स्थिरास्थिरयोरन्यतरत् २२ शुभाशुभयोरन्यतरत् २३ सुभगं २४ सुस्वरं २५ आदेयानादेययोरन्यतरत् २६ यशः कीर्त्तिः २७ निर्माणं २८ तीर्थं

॥ मूल ॥

एगूणतीसंमुहुत्ते सातिरेगेमुहुत्तग्गेणं प० जीवेणंपसत्थज्झवसाणजुत्ते भविएसम्मदिट्ठी तित्थकरनामसहियाउ णामस्सणियमा एगूणतीसंउत्तरपगडीउनिबंधित्ता वेमाणिएसु देवेसु देवत्ताए उववज्जइ इमासेणं रयणप्प

॥ भाषा ॥

अध्यवसाय युक्तथको भव्यक सम्यग्दृष्टि तीर्थंकर नामकर्म सहित नामकर्मनी निश्चे २८ उत्तर प्रकृति बांधीने वैमानिक देवतानेंविषे देवतापणे उपजे। ते कहेछे। देवगति १। पंचेंद्रिय जाति २। वैक्रिय शरीर ३। वैक्रियांगोपांग ४। तेजस ५। कार्मण ६। समचउरंससंस्थान ७। वर्ण ८। गंध ९। रस १०। स्पर्श ११। देवानुपूर्वी १२। अगुरुलघु १३। पराघात १४। उपघात १५। यशनाम १६। प्रशस्तविहायोगति १७। त्रस १८। बादर १९। पर्याप्त २०। प्रत्येक २१। स्थिर अस्थिर मांहियेक २२। शुभ अशुभ मांहियेक २३। शुभग २४। सुस्वर २५। आदेय अनादेय मांहियेक २६। यशः कीर्त्ति २७। निर्माण

भाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणतीसंपलिउवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं ॥ मूल ॥
नेरइयाणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणतीसंपलिउवमाइं
ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणतीसं पलिउवमाइं ठिई प० उवरिम मज्झिम
गेवेज्जयाणं देवाणं जहन्नेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा उवरिम हेट्ठिम गेवेज्जयविमाणेसु
देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवा एगूणतीसाए अ
द्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं एगूणतीसं वाससहस्सेहिं
आहारट्ठे समुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जेएगूणतीसंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मु

२८। तीर्थंकरनामकर्म २९। एणीयें रत्नप्रभा पहिली नरक पृथिवीनेविषें केतलाएक नारकीनों २९ पल्योपमनो आउखो कह्यो। हेठें सातमी पृथिवीयें ॥ भाषा ।
केतलाएक नारकीनों २९ सागरोपमनो आउखो कह्यो। असुरकुमार केतलाएक देवतानीं गुणत्रीस पल्योपमनो स्थितिकही। सौधर्म ईशानेंकल्पें केत
लाएक देवतानीं २९ पल्योपम आउखोकह्यो। उपरिम मध्यम ग्रैवेयकें एतले आठमें ग्रैवेयकें देवतानो जघन्यतः २९ सागरोपमनो स्थितिकही। जेहदेव
ता उपरिम हेठिम ग्रैवेयकें एतले सातमे विमाने देवतापणे ऊपनाछे तेदेवतानो उत्कृष्टी २९ सागरोपमनो स्थिति कही। तेहदेवताने २९ पखवाडे सासो
सास च्यार प्रकारेंहोय। तेहदेवताने २९ सहस्त्र वर्षगए आहारनो इच्छा उपजे। छे केतलाएक भव्यजीव जे २९ भवने आंतरे सीभस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सं

॥ टीका ॥

कांक्षेति ॥ २८ ॥ त्रिंशत्तमंस्थानकंसुगमं नवरं स्थविरैर्वागष्टौसूत्राणि तत्रमोहनीयंसामान्येनाष्टप्रकारं कर्मविशेषतश्चतुर्थीप्रकृतिः तस्यस्थानानिनि मित्तानि मोहनीयस्थानानि तथाश्चित्तसेत्यादिश्लोकः यश्चायंत्रसान्प्राणान्स्त्र्यादीन् वारिमध्येविगाह्य प्रविश्योदकेन शस्त्रभूतेनमारयति कथमाक्रम्यपादा दिनामइतिगम्यते मार्यमाणस्यमहामोहोत्पादकत्वात्ससंक्लिष्टचित्तत्वाच्चभवशतदुःखवेदनीयमात्मनोमहामोहंप्रकरोति १ तदेवंभूतंत्रसमारणेनैकं मोहनीय स्थानमेवंमर्वत्रेति १ सीसाश्लोकः शीर्षावेष्टेनार्द्रचर्मादिमयेनयः कश्चिद्वेष्टयतिस्त्र्यादित्रमानितिगम्यते अभीक्ष्णंभृशंतीव्रोऽशुभः समारःसइति इत्यस्यगम्यमानत्वा त्सनार्यमाणस्य महामोहोत्पादकत्वेनत्रात्मनो महामोहंप्रकुरुतइति यावत्करणात् केषुचित्सूत्रपुस्तकेषु शेषमोहनीयस्थानाभिधानपराः श्लोकाः सूचिताः केषु

॥ मूल ॥

च्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण मंतंकरिस्संति ॥ २९ ॥ तीसंमोहणियठाणा प० तं०। जेयावितसेपाणे। वारिमज्झेविगाहिया॥ उदएणकम्ममारेइ। महामोहंपकुव्वइ॥ १॥ सीसावेढेइजेकेई।

॥ भाषा ॥

मारना परितापथी ठांढायासे सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये मोक्षजास्ये। इति गुणत्रीसनों ठाणो समस्तम् ॥ २८ ॥ हिवे तीसमो ठाणो लिखियेछे त्रीस मोहनीकर्मना ठाणाकह्या। तिहां सामान्येंकर्म आठप्रकारना विशेषथी चतुर्थकर्म प्रकृति तेमोहनीयकर्म तेहना स्थानक त्रीसकह्या। तेकहेछे। जेकोइ स्त्रीआदिक त्रस प्राणीने पांणीमांहि बोलीनें उदक शस्त्रं करीने आक्रमें तेमहामोहनीय कर्मबांधे। भवनाशतसहस्रलगें वेदनीयकर्म उपार्जें १। शीर्षा वेष्टनंकरी चर्ममय बांधेकरी जेकोइ प्राणीनो मस्तक अत्यर्थं बीटै तीव्र अशुभ समाचारनो धणी आगला मारतांनें महामोह उपजाविवा पणाथकी आत्मानें

॥ टीका ॥

चितृद्गच्छंत एवेतितेव्याख्यायन्ते २ पाणिनाहस्तेनसंपिधाय स्थगयित्वाकिंतत् श्रोतारंभ्रंमुखमित्यर्थः तथाआहत्यावरुद्धा प्राणिनंततः अंतर्नदंगलमध्येरवंकुर्वंतं
घुरुघुरायमाणमित्यर्थः मारयतिमहदितिगम्यते महामोहंप्रकरोतीतिद्वतीयं ३ जाततेजसंवैश्वानरं समारभ्यप्रज्वाल्यबहुंप्रभूतं अवरुध्यमहामण्डपवाटादिषुप्रचि
प्यजनंलोकं अंतर्मध्यंधूमेन। वह्निलिंगेन अथवा अंतर्धूमोयस्यामावंतर्धूमस्तेनजाततेजसा विभक्तिपरिणामात् मारयति योसौमहामोहंप्रकरोतीति चतुर्थं ४
शीर्षशिरसिय: प्रहंतिखड्गमुद्गरादिना प्रहरतिप्राणिनमितिगम्यते किंभूतस्वभावतः शिरसिउत्तमांगे सर्वावयवानां प्रधानावयवे तद्विघातेऽवश्यंमरणा च्चेतसा

॥ मूल ॥

श्रावद्दैइअन्निरुकणं ॥ तिव्वासुन्नसमायारं । महामोहंपकुव्वइ ॥ २ ॥ पाणिणासंपहित्ताणं । सयमाचारियपा
णिणं ॥ अंतोनदंतंमारेइ । महामोहंपकुव्वइ ॥ ३ ॥ जायतेयंसमारब्भ । बऊनरुंन्नियाजणा ॥ अंतोधूमेण
मारेइ । महामोहंपकुव्वइ ॥ ४ ॥ सीसम्मिजेपहणइ । उत्तमंगम्मिचेयसा ॥ विभज्जमत्थयंफाले । महामोहंप
कुव्वइ ॥ ५ ॥ पुणापुणापणिधिए । हरित्ताउवहसेजणं ॥ फलेणअदुवदंडेणं । महामोहंपकुव्वइ ॥ ६ ॥ गूढा

॥ भाषा ॥

महामोह उपाजें २। हाथेंकरी आगलानां मुखरूंधी आच्छादी भींचीने गलामांहे घुर्घुराट शब्दकरताथकानेंमारे तेमहामोहनीय कर्मउपार्जें ३। जाततेजा
अग्नि वहीत प्रज्वालीने वाडादिकनें अवरूंधीने रोकीने अनो मडप.दिकमां धूंनेकरी मारे तेमहा मोहनीय कर्मकरें ४। जेप्राणी दुष्टपरिणामे करी प्राणी
ना उत्तमांगनें मांथानेविषे खड्गादिकेंकरी मारे विहचीनेमस्तकनें काटीने मारे तेपुरुष महामोहनीयकर्म उपार्जे ५। पुनः पुनः वारंवार कपटें करीनें जि
नवाटपाडा वाणियांनो वेषकरीने मार्ग परनै साथेचालीनेमारे मारीनें आनंदपणायको उपहसे विजोरादिक फलेकरी अथवा दंडेकरी हन्यमान मूर्खज

॥ ७१ ॥

॥ टीका ॥

संक्लिष्टेनमनसा यथाकथंचिदित्यर्थः तथाविभज्यमस्तकं प्रकृष्टप्रहारदानेन स्फोटयतिविदारयति ग्रीवादिकं कायादपीतिगम्यते सहत्वस्यगम्यमानत्वात् मह मोहंप्रकरोतीतिपंचमं ५ पौनःपुन्येनप्राणिविनामायातः यथा ? वागिजकादिवेषं विधाय गलावर्त्तकाःपथिगच्छतांसहगत्वा विजनेमारयंति तथाहत्वा विना श्यथइतिगम्यते उपहसेत् आनन्दातिरेकात् जनंमूर्खलोकं हन्यमानं केनहत्वा फलेन योगविभावितेनमातुलिंगादिना अथवा तथादण्डेन प्रसिद्धेनसइतिगम्यते महामोहंप्रकरोतीतिषष्ठं ६ गूढाचारीप्रच्छन्नाचारवान् निगूहयतेगोपयेत् स्वकीयंप्रच्छन्नंदुष्टमाचारं तथामायांपरकीयां माययास्वकीययाच्छादयेत् यथा शकुनिमारकाश्छद्मनात्मानमावृत्यशकुनीन् गृह्णन्तः स्वकीयमायया शकुनिमायांछादयन्ति । तथाअसत्यवादीनिह्नवी अपलापकः स्वकीयायामूलगुणोत्तर गुणप्रतिसेवायाः सूत्रार्थयोर्वामहामोहंप्रकरोतीति सप्तमं ७ ध्वंसयतिमाययाभ्रंशयति इतियःपुरुषाभूतेनासद्भूतेनकं अकर्मकमविद्यमानंदुश्चेष्टितं आत्मकर्मणा त्मकृता ऋषिघातादिना दुष्टव्यापारेण अदुवा अथवायदात्मनः कृतंतदाश्रित्य परस्यममत्तेमचत्वमकार्षीरिव तन्महापापमिति ददति वदिक्रियायोगः गम्य

॥ मूल ॥

यारीनिगूहिज्जा । मायंमायाएछायए ॥ असच्चवाईणिरहाइ । महामोहंपकुव्वइ ॥ ७ ॥ धंसेइजोअभूएणं । अ

॥ भाषा ॥

नेने हसे ते महामोहनीयकर्म उपार्जन करे ६ । गुप्तछे आचार कपट जेहनो तेगूढाचारी पोतानुं प्रच्छन्न दुष्टाचारप्रते गोपवे परनी मायाप्रते पोतानी माया करीढांके असत्यवादी झूठबोलिवो मूलगुण उत्तरगुण खंडीने गोपवे ते महामोहनीयकर्म उपार्जे ७ । नथी चेष्टितजेकर्म जेहनो एहवा पुरुषप्रते पोताना कीधा ऋषिघातादिक अणहुते कर्मकरीमारे अथवा पोतानुं कीधुं कर्म तेहने आश्रयणकरी परसमर्थकहे जे एह खोटोकर्म एहनेहीज कीधो तेमहा मोहनो

॥ टीका ॥

मानत्वात् सद्व्यस्यापि गम्यमानत्वात् महामोहंप्रकरोतीत्यष्टमं ८ जानानः यथा अनृतमेतत्परिषदः सभायांबहुजनमध्येइत्यर्थः सत्यामृषा किंचित्सत्यानि बह
सयानिअसत्यनिशाक्यानिवाभाषते अचीणझंझः अनुपरतकलहः यःसइतिगम्यते माहामोहम्प्रकरोतीति नवमं९ अनायकोऽविद्यमाननायको राजातस्यनयवान्
नीतिमानमात्यः सतस्यैवराज्ञोदारान् कलत्रं दारंवा अर्थागमस्योपायं ध्वंसयित्वा भोगभोगान् विदारयतीति संबंधः किंकृत्वा विपुलं प्रचुरमित्यर्थः विचोभ्य
सामंतादिपरिकरभेदेन मंचोभनादनायकं तस्यचोभंजनयित्वेत्यर्थः कृत्वाविधाय णमित्यलंकारे । प्रतियाह्या मनधिकारिणीं दारेभ्योऽर्थागमद्वारेभ्यो वादार
न् राज्यंवास्वयमधिष्ठायेत्यर्थः । तथाउपगंतमपि समीपमागच्छंतमपि सर्वस्वापहारित्वेन प्रावृतेना तुल्योपमैः करुणैर्वचनैरनुकूलयितुमुपस्थितमित्यर्थः झं
पयित्वाऽनिष्टवचनावकाशंकृत्वा प्रतिलोमाभिस्तस्य प्रतिकूलाभिर्वाग्भि र्वचनै रेताद्दशस्ताद्दशस्त्वमित्यादिभि रित्यर्थः भोगभोगान् विशिष्टान् शब्दादीन्

॥ मूल ॥

कम्मंज्ञत्तकम्मणा ॥ अदुवातुममकासित्ति । महामोहंपकुव्वइ ॥ ८ ॥ जाणमाणोपरिसत्रे । सच्चमोसाइंभासइ
अज्झीणझंझेपुरिसे । महामोहंपकुव्वइ ॥ ९ ॥ अणायगस्सनयवं । दारंतस्सेवधंसिया ॥ विउलंविक्खोभइत्ताणं

॥ भाषा ॥

यकर्म उपार्जे ८ । जाणतोथको पर्षदामांहि बेसीने सत्यामृषा कांइक सांची कांइएक झूठी वाणीबोलि कलहथको ओसर्योनथी निवर्त्यो नथी तेपुरुष महामो
हनीयकर्म उपार्जे ९ । नथी विद्यमान जेहनो नायकराजा तेहना राज्यना नयवंत अमात्यमंत्री तेहराजाना दारा कलत्रप्रति अथवा अर्थआयवाना उपाय
प्रति ध्वंसे विनसाडि स्युं करी ध्वंसे प्रचुर सामंतादिकप्रति विक्षोभीने भेदपाडीने वली करीने स्युं करीने कलत्रथको अथवा अर्थागमद्वारथको लेवाने योग्य
नथी एहवी राज्य लक्ष्मीयें पोतेंज अधिष्ठान करीने तथा समीपें आवताने एतले सर्वधन लीधेंथकें दीनस्वरेंकरी चाटुवचनबोलतो एहवाने झांपीने सामो

॥ टीका ॥

विप्रारयतियोमोमहामोहं प्रकरोतीतिदशमं १० अकुमारभूतो ऽकुमारब्रह्मचारीमन् यः कश्चित् कुमारभूतोहं कुमारब्रह्मचारी अहमिति वदति अथचस्त्रीषु गृद्धोवमकस्त्रीणा मेवायत्तइत्यर्थः अथवावसतिआस्ते समहामोहंप्रकरोतीत्येकादशं ११ अब्रह्मचारी मैथुनादनिवृत्तोयः कश्चित्तत्कालएवाभिव्यात्ब्रह्मचर्यं ब्रह्मचारी सांप्रतमित्यतिधूर्त्ततया परप्रपंचनायवदति तथाच एवमयोभावहं सतामनादेयं भणन् गर्दभइवगवांमध्ये विस्वरंनवृषभवन्मनोज्ञं नदतिमुञ्चति नदंनादशब्दमित्यर्थः तथायएवंभणनात्मनो ऽहितो नहितकारी बालोमूढो मायामृषावादगर्गाव्यावृतं प्रभूतंभाषते यश्चैवंनिंदितंभाषते कया स्त्रीविषयगृद्धया

॥ मूल ॥

किच्चाणंपडिबाहिरं ॥ १० ॥ उवगंतंपिझंपित्ता । पडिलोमाहिंवग्गुहिं ॥ भोगभोगेवियारेइ । महामोहंपकुव्वइ ॥ ११ ॥ अकुमारभूएजेकेई । कुमारभूएत्तिहंवए ॥ इत्थीहिगिद्धेवसए । महामोहंपकुव्वइ ॥ १२ ॥ अबंभयारीजेकेई बंभयारीत्तिहंवए ॥ गद्दहेव्वगवंमज्झे । विस्सरंनयइनदं ॥ १३ ॥ अप्पणोअहिएबाले । माया

॥ भाषा ॥

भांतियालो करीने प्रतिकूलवचने करी रे तुं एहवो नीचछे एहवा वचनेंकरी भोग विशिष्ट शब्दादिकने भोगविवाने अर्थे विदारे हणे तेमहामोहनीय कर्म करे १० । नथी कुमार भूत एतले परण्यो छे जेकोई लोकमांहि हुं कुमारभूतछुं एतले बालब्रह्मचारी हुं छुं एहवुं कहे वली स्त्रीसाथे गृद्ध लोलुप वली स्त्रीने आधीन अथवा स्त्रीमाथेंवसे ते महामोहनीयकर्मकरे ११ । अब्रह्मचारीथको जेकोई लोकमांहि हुं ब्रह्मचारी एतले मैथुन विरत छुं एहवो कहे ते शोभा रहित साधुजनने अग्राह्य गर्दभनीपरे गायना टोलामां वृषभनीपरें मनोज्ञ नथी एहवो शब्दकरे बोले एहवो जे बोले ते आपणा आत्मानो अहितकारी अने बाल अज्ञानी स्त्रीसाथे लंपट थईने माया सहित मृषा घणुं बोले ते महामोहनीय कर्मकरे १२ । जेराजादिकप्रति आश्रितहोइ जीविकाने लाभेकरी

॥ टीका ॥

हेतुभूतया सद्दृत्थंभूतोमहामोहंप्रकरोतीति द्वादशं १२ यंराजानंराजामात्यादिकं वा निश्रितश्राश्रितउद्वहते जीविकालाभेनात्मानंधारयति कथंयशसातस्य राजादेः सत्कोयमितिप्रसिद्धाअभिगमनेन वासेवया आश्रितराजादे स्तस्यनिर्वाहकारणस्य राजादेर्लुभ्यतिवित्तेद्रव्येयः समहामोहंप्रकरोतीति त्रयोदशं १३ ईश्वरेणप्रभुणा अदुवा अथवा ग्रामेणजनसमूहेन अनीश्वरईश्वरीकृतः तस्यपूर्वावस्थायामनीश्वरस्य संप्रगृहीतस्य पुरस्कृतस्य प्रभ्वादिनाश्रीर्लक्ष्मीरतुलाअसाधारणाआगताप्राप्ता अतुलंवाययाभवतीत्येवं श्रोः समागता आगता श्रीकस्यप्रभ्वाद्युपकारकविषये ईर्ष्यादोषेणाविष्टोयुक्तः कलुषेण द्वेषलोभादिलक्षणपापेनाविलमाकुलंवाचेतोयस्य सतथा योंतरायंव्यवच्छेदं जीवितश्रीभोगानां चेतयतेकरोति प्रभ्वादे रसौमहामोहंप्रकरोतीति चतुर्दशं १४ सर्पीनागीयथाअण्डउडं

॥ मूल ॥

मोसंअकुव्वसे ॥ इत्थीविसयगेहीए । महामोहंपकुव्वइ ॥ १४ ॥ जंनिस्सिएउव्वहइ । जससाहिगमेणवा ॥ तस्सलुब्भइवित्तम्मि । महामोहंपकुव्वइ ॥ १५ ॥ ईसरेणअदुवागामेणं । अणिस्सरेईसरीकए ॥ तस्ससंपयहीणस्स । सिरीअतुलमागया ॥ १६ ॥ ईसादोसेणआविठे । कलुसाविलचेयसे ॥ जेअंतराअंचेएइ । महामोहंपकु

॥ भाषा ॥

पामानेधारे अने राजसंबंधनी प्रसिद्धियकी तथा सेवायकी तेआश्रित राजाना धननेविषे लोभकरे तेमहा मोहनीय कर्मकरे १३। ईश्वरें ठाकुरें अथवा ग्रामें जनसमूहें अनीश्वरहुतो तेईश्वरकीधो असमर्थहुतो तेसमर्थकीधो ते जेपूर्वे अनीश्वरहंतो संपदा रहितहुतो तेहने ठाकुरादि प्रसादेकरी श्रीलक्ष्मी अतुल असाधारण आवी पामीछे जेहनेते उपकारी मूलगो ठाकुर तेहनेविषे ईर्ष्यादोषें मच्छरदोषेंकरी आविष्ट सहित द्वेष लोभादिकलक्षण पापेंकरी आकुल व्याप्योछे चित्त जेहनो एहवो जेकोइ उपकारी प्रभुने अंतरायप्रति चेतेकरे तेहनी आजीविकानो विछेदकरे ते महामोहनीय कर्मकरे १४। सर्पिणी जिम पोता

अण्डककूटं स्वकीयमण्डकसमूहमित्यर्थः अण्डस्यवापुटं संबद्धदलद्वयरूपंहिनस्ति एवंभर्त्तारंपोषयितारं योविहिनस्ति सेनापतिंराजानं प्रशास्तारममात्यं धर्मपा ठकंवासमहामोहंप्रकरोतीति तन्मरणेबहुजनदुःस्थताभवतीति पंचदशं १५ योनायकंवाप्रभुंराष्ट्रस्य राष्ट्रमहत्तरादिकमितिभावः नेतारं प्रवर्त्तयितारं प्रयोजनेषु निगमस्यवाणिजकसमूहस्य कं श्रेष्ठिनं श्रीदेवताङ्कितपट्टबद्धांकितभूतं बहुरवंभूरियशसं प्रभुतरयशसमित्यर्थः हत्वा महामोहम्प्रकुरुतेइतिषोडशं १६ बहुंजनस्यपंच पादीनांलोकानां नेतारंनायकं द्वीपइवद्वीपः संसारसागरगतानामाश्वासस्थानं अथवादीपइवदीपो ऽज्ञानांधकाराहतबुद्धिदृष्टिप्रसराणां शरीरिणांईयोपादे यवस्तुस्तोमप्रकाशकत्वात् तं अतएवत्राणमापद्रक्षणंप्राणिनां एतादृशं यादृशागणधरादयोभवंति नरं प्रावचनिकादिपुरुषंहत्वामहामोहम्प्रकरोतीति सप्तदश ॥ टीका ॥

वुइ ॥ १७ ॥ सप्पीजहाण्डंऽउडं । भत्तारंजोविहिंसइ ॥ सेणावइपसत्थारं । महामोहंपकुव्वइ ॥ १८ ॥ ॥ मूल ॥
जेनायगंचरठ्ठस्स । नेयारंनिगमस्सवा ॥ सेठ्ठिंबहुरवंहंता । महामोहंपकुव्वइ ॥ १९ ॥ बहुजणस्सनेयारं ।
दीवंताणंचपाणिणं ॥ एयारिसंनरंहंता । महामोहंपकुव्वइ ॥ २० ॥ उवठ्ठियंपडिविरयं । जेनिक्खुंजगजीवणं ॥

ना ईण्डानापुट समूह हणेमारे। तिम पोताना भर्तार पोषकने हणेमारे सेनापतिये राजाये प्रशस्त प्रधानने धर्मशास्त्रपठिकने हणेमारे तेमहामोहनीय कर्म करे १५। जेकोइ राष्ट्रना देशना नायकने तथा निगम वणिक्समूह तेहना नेताने प्रवर्त्तकने तथा श्रेष्ठि नगरमुख्य लक्ष्मीअंकित पट्टबद्ध तथा घणायशनो धणी एहवाने हणेमारे ते महामोहनीय कर्मकरे १६। बहुजननो घणालोकनो नेता नायकहोइ एहवाने तथा द्वीपसरीखा संसारसागरमां आश्रयभूत आपदाथकी रक्षक एहवा प्राणीने हणे ते महामोहनीय कर्मकरे १७। प्रव्रज्यानेविषे उपस्थित सावधान थयोछे तथा सर्वसावद्य थकी निवर्त्यो जे कोइ ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

श्रितमा १७ उपस्थितंप्रव्रज्यायांप्रविव्रजिषुमित्यर्थः प्रतिविरतं सावद्ययोगेभ्योनिवृत्तं प्रव्रजितमेवेत्यर्थः संयतंसाधुंसुतपस्विनं तपांसिकृतवंतंशोभनंवातपः श्रितमा
धर्मांच्छुतधा श्रितं क्वचित् जेभिक्खुंजगजीवणंतिपाठः तत्रजगन्ति जंगमानि अहिंसकत्वेनजीवयतीति जगज्जीवनस्तं विविधैः प्रकारैरुपक्रम्य बलादित्यर्थः धर्मांच्छुतधा
अनंतज्ञानिनां ज्ञानस्यानंतविषयत्वेन अक्षयत्वेनवाजि रित्वलक्षणाद्भ्रंशयतियः समहामोहम्प्रकरोतीति अष्टादशं १८ यथैवप्राक्तनं मोहनीयस्थानं तथैवेदमपि अनंतज्ञानिनां ज्ञानस्यानंतविषयत्वेन अक्षयत्वेनवाजि
यथाना मानामर्हतां वरदर्शिनां चायिकदर्शनत्वात् तेषां येज्ञानाद्यनेकातिशयसंपदुपेतत्वेनभुवनत्रयेप्रसिद्धाः अवश्यंअवर्णवादीवक्तव्यत्वेनयस्यास्तिसो ऽवर्णवान् यथाना
अस्तिकवान् सर्वज्ञेयस्यानंतत्वात् उक्तंच अज्ञविधावद्दनाणं अज्जवियअणंतओअलोगोवि अज्जविनकोइविउहं पावंतिसव्वसुयंजोवो महपावतितोसंभोहोइ अ
लोउनवेयमठंतित्ति अदूषणंचैतदुत्पत्तिसमयएव केवलज्ञानं युगपल्लोकालोकौ प्रकाशयदुपजायते यथापवरकांतर्वर्त्तिदीपकशिखापवरकमध्यमित्यभ्युपगमा
दिति बालोऽज्ञोमहामोहं प्रकरोतीति एकोनविंशतितमं १९ नैयायिकस्यन्यायमनतिक्रांतस्य मार्गस्य सम्यग्दर्शनादेः मोक्षपथस्यदुष्टोद्विष्टोवा ऽपकरोति

॥ मूल ॥

कम्माधम्माउभंसेइ । महामोहंपकुव्वइ ॥ २१ ॥ तहेवाणंतणाणीणं । जिणाणंवरदंसिणं ॥ तेसिंअवस्सवंबा ले । महामोहंपकुव्वइ ॥ २२ ॥ नेआइअस्ससमग्गस्स । दुठेअवयरईवज्जं ॥ तंताप्पियंतोभासेइ । महामोहंप

॥ भाषा ॥

तिमज भिक्षु जगजीवन अहिंसादि धर्मे जगतना जीवनभूत एहवा यतीने विविधप्रकारे करी बलात्कारे धर्मथकी भ्रंसे पाडे तेमहामोहनीय कर्मकरे १८। तिमज
पूर्वनीपरो अनंतज्ञानी अनंत ज्ञानना धणी राग द्वेषना जयकरणहार वरप्रधान दर्शन चायक सम्यक्तना धणी एहवाने अवर्णवाद बोले बाल अज्ञानी ते
महामोहनीय कर्मकरे १९। जे न्यायानुसार मार्गनो दुष्टप्राणी अपकारकरे द्रोहकरे घणो तथा ते मार्गने निंदाकरी भासे बोले मिथ्यात्वे घाले ते महा

॥ टीका ॥

अपकारंकरोतीति बहुमत्यर्थपाठांतरेणापह्नरति बहुजनं विपरिणमयतीतिभावः तंमार्गंतिप्पयंतोति निंदन्भावयति निंदयाद्वेषेणवावासयति आत्मानंपरं चयःसमहामोहंप्रकरोतीति विंशतितमं २० आचार्योपाध्यायैः श्रुतंस्वाध्यायंविनयंच चारित्रंग्राहितः शिक्षितः तेनैवखिंसतिनिन्दति अल्पश्रुताएतेइत्यादि ज्ञानतः अन्यतीर्थिकसंसर्गकारिणइत्यादिदर्शनतः मन्दधर्माणः पार्श्वस्थादिस्थानवर्त्तिनः इत्यादि चारित्रतः यःसएवंभूतोबालो महामोहंप्रकरोतीत्येकविंश तितमं २१ आचार्यादीन्श्रुतदानात् ग्लानावस्थाप्रतिचरणादिभिनिस्तर्पितवतः उपकृतवतः सम्यक्नतानप्रतितर्पयति विनयाहारोपध्यादिभि र्नप्रत्युपकरोतीति तथा अप्रतिपूजको न पूजाकारी तथास्तब्धोमानवान् समहामोहम्प्रकरोतीति द्वाविंशतितमं २२ अबहुश्रुतश्चयः कश्चिच्छ्रुतेन प्रविकत्थते आत्मानंश्लाघते श्रुत वानहमनुयोगधरोहमित्येवं अथवा कस्मिंश्चित्त्वमनुयोगाचार्यो वाचकोवेति पृच्छति प्रतिभणति आत्मनःस्वाध्यायवादं वदति विशुद्धपाठकोहमित्यादिकंयः स

॥ मूल ॥

कुव्वइ ॥ २३ ॥ आयरियउवज्झाएहिं । सुयंविणयंचगाहिए ॥ तेचेवखिंसईबाले । महामोहंपकुव्वइ ॥ २४ ॥ आयरियउवज्झायाणं । सम्मंनोपडितप्पइ ॥ अप्पडिपूयएथद्धे । महामोहंपकुव्वइ ॥ २५ ॥ अबहुस्सुएयजे

॥ भाषा ॥

मोहनीय कर्मकरे २० । जेणे आचार्य उपाध्याये श्रुतशास्त्र तथा विनय चारित्र शिखवाड्यो शिखाड्यो तेहीज आचार्यने खींसे निंदे बाल अज्ञानी ते महामो हनीय कर्मकरे २१ । जेकोइ आचार्य उपाध्यायने श्रुतदानादिकना महा उपकारीने सम्यक् प्रकारे तर्पेनही उपरांठो उपकार नकरे तथा ते आचार्यनी पूजा नकरणहार तथा स्तब्ध अभिमानी ते महामोहनीय कर्मकरे २२ । अबहुश्रुत अपंडितथको जेकोइ श्रुतेंकरी शास्त्रेंकरी आत्माने प्रविकथे श्लाघायेहुं श्रु तवंतछु एम कहे वली स्वाध्यायवादवदे विशुद्धशास्त्रनोहुं पाठकछु एमकहे ते महामोहनीय कर्मकरे २३ । अतपस्वी थको जेकोइ तपेकरी पोताना आत्माने

। ८५ ॥

महामोहं श्रुतालाभहेतुं प्रकरोतीति त्रयोविंशतितमं २३ सुगमं पूर्वार्द्धं पूर्ववत् नवरम् सर्वलोकात् सर्वजनात् सकाशात्परः प्रकृष्टस्तेनः चौरो भावचौरत्वात् ॥ टीका ॥
पकुव्वइ अतपस्विनोहेतुं प्रकरोतीति चतुर्विंशतितमं २४ साधारणार्थं मुपकारार्थं यःकश्चित् आचार्यादि ग्लानरोगवति उपस्थिते प्रत्यासन्नीभूतेप्रभुःसमर्थ उ
पदेशेनौषधादिदानेनच स्वतोन्यतश्चोपकारं नकरोति कृतमुपेक्षते इत्यर्थः केनाभिप्रायेणेत्याह नमाप्येषनकरोति किंचनापिकृत्यम् समर्थोपिसन्निहिशेषेणा सम
र्थोवाऽयं बालत्वादिना किंकृतेनान्यंपुनरुपकर्तुमशक्तत्वादितिलोभेनेति शठः कैतवयुक्तः शक्तिलोपनात् निकृतिर्मायातद्विषये प्रज्ञानंयस्य तथा ग्लानःप्रतिचर
णीया माभवत्विति ग्लानवेषमहंकरोमीति विकल्पवानित्यर्थः अतएवकलुषाकुलचेताः आत्मनश्चाबोधिकी भवांतराप्राप्तव्य जिनधर्मलाभाप्रतिजागरेणाश्री

केई । सुएणंपविकत्थई ॥ सज्झायवायंवयइ । महामोहंपकुव्वइ ॥ २६ ॥ अतवस्सीएउजेकेई । तवेणपवि ॥ मूल ॥
कत्थइ ॥ सव्वलोयपरेत्तेणे । महामोहंपकुव्वइ ॥ २७॥ साहारणठाजेकेई । गिलाणम्मिउवठिए ॥ पन्नूणकुणई
किच्चं । मज्झंएसेनकुव्वइ ॥ २८ ॥ सढेनियइपण्णाणे । कलुसाउलचेयसा ॥ अप्पणोयअबोहीए । महामोहंप

विकथे आवाकरे हुंतपस्वी छुं एमकहे ते सर्वलोकथकी परमस्तेन चोरछे ते महामोहनीय कर्मकरे २४। साधारणने अर्थे उपकारने अर्थे जेकोइ आचार्या ॥ भाषा ॥
दिकने ग्लानपणे तथा रोगीपणे उपस्थित ढुंकडो आव्यो निकट आव्यो तेहने उपदेश औषधादि दानेंकरी उपकार करवामां समर्थछे पणि मुझने एह
न करतोहुतो एमाटेहुं कांइक नकरूं एह शठधूर्त निकृति मायातेहनेविषे चतुरथइ ग्लानीनूं हुं औषधोपचार करूंछुं एहवी कल्पनायेंकरी कलुषितछे चित्त
जेहनो आपणा आत्मानो अबोधक भवांतरें धर्मनो अर्थीनथी ते महामोहनीय कर्मकरे २५। जेकोइ कथा प्रबंध शास्त्र तद्रूप जे अधिकरण एतले प्राणिना

॥ टीका ॥

त्रिबोधना श्रमशास्त्ररेषांवा अबाधिक: अविद्यमानो बाधोऽस्मादितिव्युत्पादनात् येहि तदीयं ग्लानाप्रतिचरणमुपलभ्य जिनधर्मपराङ्मुखाभवंति तेषामबो त्रिकस्तथेति सएवंभूतो महामोहम्प्रकरोतीति पञ्चविंशतितमं २५ य: कथावाक्यप्रबंध:शास्त्रमित्यर्थ स्तद्रूपाण्यधिकरणानि कथाधिकरणानिकौटिल्यशास्त्रा दीनि प्राण्युपमर्दनप्रवर्त्तकत्वेन तेषामात्मदुर्गतावधिकारित्वकरणात् कथया वा येनापि क्षपत शानममृयतेत्यादि तया अधिकरणानि तथाविधंप्रवृत्तिरू पाणि अथवा कथा राजकथादिका अधिकरणानिच यंत्रादीनिकलहा वा कथाधिकरणानितानि संप्रयुंक्ते पुन:पुनरेवं सर्वतीर्थानां भेदायसंसारसागरतरण कारणत्वात् तीर्थानिज्ञानादीनि तेषांसर्वथानाशायप्रवर्त्तमान: समहामोहंप्रकरोतीति षड्विंशतितमं २६ । कंठ्यं नवरं अधार्मिकायोगानिमित्तवशीकरणा दिप्रयोग: किमर्थंश्लाघार्हेतो: सखिहेतोर्मित्रनिमित्तमित्यर्थ: इतिसप्तविंशतितमं २७ । यश्चमानुष्यकान्भोगान् अथवापारलौकिकान् तेत्ति विभक्तिपरिणाम:

॥ मूल ॥

कुव्वइ ॥ २९ ॥ जेकहाहिगरणाइं । सपउंजेपुणोपुणो ॥ सव्वतित्थाणभेयाणं । महामोहंपकुव्वइ ॥ ३० ॥ जेअधम्मिएजोए । संपउंजेपुणोपुणो ॥ साहाहेउसहीहेउ । महामोहंपकुव्वइ ॥ ३१ ॥ जेयमाणुस्सएभोए ।

॥ भाषा ॥

उपमर्दहेतु आत्माने दुर्गतीमांहि अधिकार कारी एमाटे अधिकरण कौटिल्यशास्त्र तेहने वली वली प्रयुंजे विस्तारे ते सर्वतीर्थ ज्ञानादिकना सर्वथा नाश प्रवर्त्तमान महामोहनीय कर्मकरे २६ । जेकोइ अधार्मिक प्रयोग निमित्त वशीकरणादिक प्रयोगप्रतें श्लाघाने अर्थे वली मित्रने अर्थे संप्रयुंजे वली वली व्या पारे ते महामोहनीय कर्मकरे २७ । जेकोइ मनुष्य संबंधी अथवा परलोक संबंधी भोग विषयादिकनेविषे अतृप्तछुओथको भोगप्रते आस्वादे अभिलासे आश्र यणकरे ते महामोहनीय कर्मकरे २८ । जेकोइ बाल अधर्मी ऋद्धि विमानादिकनी संपत् द्युति शरीराभरणनीदीप्ति यशकीर्त्ति वर्ण शुक्लादि शरीर संबंधी

॥ टीका ॥

अष्टाविंशतितमं । २८ । ऋद्धिविमानादिसम्पत् द्युतिः शरीराभर
तेषुवा अतृप्यतृत्प्तिमगच्छत् आस्वादते अभिलषति आश्रयतिवा समहामोहं प्रकरोतीति
णादीनि: यशःकीर्त्ति वर्णः शुक्लादिः शरीरसंबन्धी देवानां वैमानिकानांबलंशारीरं वीर्यंजीवप्रभवंअस्त्यत्यध्याहारः तेषामिहअपेक्ष्यमानत्वात् तेषामपिदेवाना
मनेकातिशायिगुणवतामवर्णवान् अश्लाघाकारी अथवा अवर्णवान् केनोल्लापेन देवानामृद्धिर्देवानांद्युतिरित्यादिका काश्लाघ्येयं नकिंचिद्देवानामृद्ध्यादि
कमस्तीत्यवर्णवादवाक्यभावार्थः यएवंभूतः समहामोहं प्रकरोतीति एकोनत्रिंशत्तमं २९ । अपश्यन्योब्रूतेपश्यामिदेवानित्यादिस्वरूपेणाज्ञानी जिनस्येवपूजाम
र्थयतेयः सजिनपूजार्थी गोशालकवत् समहामोहं प्रकरोतीति त्रिंशत्तम ३० । रौद्रादयोमुहूर्त्ताआदित्योदयादारभ्य क्रमेण भवन्ति एतेषांचमध्येमध्यमाः षट्

॥ मूल ॥

अदुवापारलोइए ॥ तेतिप्पयंतोआमयइ । महामोहंपकुव्वइ ॥ ३२ ॥ इड्ढीजुईजसोवन्नो । देवाणंबलवी
रियं ॥ तेसिंअवन्नवंबाले । महामोहंपकुव्वइ ॥ ३३ ॥ अपस्समाणोपस्सामि । देवेजक्खेयगुज्झगे ॥ अन्नाणी
जिणपूयठी । महामोहंपकुव्वइ ॥ ३४ ॥ थेरेणंमंडियपुत्ते तीसंवासाइंसामन्नपरियायंपाउणित्ता सिद्धे बुद्धे

॥ भाषा ॥

देवतानो बल शरीर प्रभव वीर्य जीवप्रभव एहवा देवतानो अवर्णवाद बोले ते महामोहनीय कर्मकरे २९ । देवताने तथा यक्षने व्यंतर विशेषने गुह्यकने अ
नादरतो थको हुंआदरुछुं एमकहे तेस्वरूपथी अज्ञानी केवल जिननी अरिहंतनी पूजानो अर्थीछे गोशालानीपरे ते महामोहनीय कर्मकरे ३० । एह ३०
मोहनीय स्थानकह्या । स्थविर मंडितपुत्र छठो गणधर तीस वर्षलगे सामान्य पर्याय दीक्षा पालीने सिद्धथयो । कृतार्थथयो तत्वनो जाणकारथयो यावत्

॥ मूल ॥

जावसव्वदुक्खप्पहीणे एगमेगेणंअहोरत्ते तीसंमुहुत्ते मुहुत्तगेणंप० एएसिणंतीसाएमुहुत्ताणं तीसंनामधेज्जा प० तं० रोद्दे सत्ते मित्ते वाऊ सुपीए अभिचंदे माहिंदे पलंबे बंभे सच्चे आणंदे विजए विस्ससेणे पाया वच्चे उवसमे ईसाणे तट्ठे भाविअप्पा वेसमणे वरुणे सतरिसभे गंधव्वे अग्गिवेसायणे आतवे आवत्ते तट्ठवे भूमहे रिसभे सव्वठ्ठसिद्धे रक्कसे ३०। अरेणंअरहा तीसंधणु उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था सहस्सारस्सणं देविंदस्स देवरन्नो तीसं सामाणियसाहस्सीउ प० पासेणंअरहा तीसंवासाइं आगारवासमज्झे वसित्ता आगाराउ अणगारियं पव्वइए समणेभगवं महावीरे तीसंवासाइं आगारवासमज्झे वसित्ता आगाराउ अणगारियं पव्वइए

॥ भाषा ॥

मुक्तिकरी कर्मथको मूकाणा सर्वदुःखथको प्रक्षीणहुआ। एकेक अहोरात्र त्रीस महूर्त्तनो होय। ते त्रीसमुहूर्त्तना त्रीसनामधेयनामकह्या। तेकहेछे। रौद्र १ शक्त २। मित्र ३। वायु ४। सुपीत ५। अभिचंद्र ६। माहेंद्र ७। प्रलंब ८। ब्रह्म ९। सत्य १०। आनंद ११। विजय १२। विश्वसेन १३। प्राजापत्य १४। उपशम १५। ईशान १६। नष्ट १७। भाविताका १८। वैश्रमण १९। वरुण २०। शतऋषभ २१। गांधर्व २२। अग्निवैश्यायन २३। आतप २४। आवर्त्त २५। नष्टवान् २६। भूमहान् २७। ऋषभ २८ सर्वार्थसिद्ध २९। राक्षस ३०। अरनाथ अठारमा तीर्थंकर त्रीस धनुष ऊंचपणेथया। सहस्रार नामा आठमा देवेंद्रना त्रीस हजार सामानिक देवताकह्या। पार्श्वनाथ अरिहंत त्रीस वर्षलगे गृहस्थावास मांहि वसीने गृहस्थथकी अनगारपणो यतीपणो पाम्या श्रमण भगवंत श्री महावीर तीसवर्षलगे गृहस्थावासे वसीने घरवास छांडीने यतीपणो पाम्या। रत्नप्रभा पृथिवीना त्रीस लाख नरकावास कह्या। एणीयें र

रयणप्पन्नाएणं पुढवीए तीसं निरयावाससयसहस्सा प० इमीसेणं रयणप्पन्नाएपुढवीए च्युत्थेगइयाणं नेरइ याणं तीसंपलिउवमाइं ठिई प० च्युहेसत्तमाएपुढवीए च्युत्थेगइयाणं नेरइयाणं तीसंसागरोवमाइं ठिई प० च्युसुरकुमाराणं देवाणं च्युत्थेगइयाणं तीसंपलिउवमाइं ठिई प० उवरिमउवरिमगेवेज्जयाणं देवाणं जहन्नेणं तीसंसागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा उवरिममज्झिमगेवेज्जएसु विमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं तीसंसागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवा तीसाए च्युद्धमासेहिं च्याणमंतिवा पाणमंतिवा उस्ससंतिवा निस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं तीसाएवाससहस्सेहिं च्याहारठे समुप्पज्जइ संतेगइया नवसिद्धियाजीवा जे तीसाए नवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करि

त्नप्रभा पृथिवीने विषें केतलाएक नारकीनो त्रीस पल्योपमनो आउखोकह्यो। हेठे सातमी पृथिवीयें केतलाएक नारकीनो त्रीस सागरोपमनी स्थितिकही केतलाएक असुरकुमार देवतानो त्रीस पल्योपमनी स्थितिकही। उपरिम उपरिम ग्रैवेयकें एतले नवमे ग्रैवेयक विमानें देवतानी जघन्य त्रीस सागरोपम नी स्थिति कही। जे देवता उपरिम मध्यम ग्रैवेयके आठमे ग्रैवेयक विमानें देवतापणे उपनाछे ते देवतानी उत्कृष्टी त्रीस सागरोपमनी स्थिति कही। ते देवता त्रीसें पखवाडें स्वासोस्वास घणाले ऊंचाले नीचो मूके ते देवताने त्रीसवर्ष सहस्त्रगये आहारनो अर्थ उपजे। छे केतलाएक भव्यजीव जे त्रीसभवने अंत

कदाचिद्दिनेऽस्तंभवंति कदाचिद्रात्राविति ॥ ३० ॥ एकत्रिंशत्तमंस्थानकं सुगमं नवरं सिद्धानामादौ सिद्धत्वप्रथमएवसमयेगुणास्तेचाभिनिबोधिका ॥ टीका ॥

स्संति ॥ ३० ॥ एक्कतीसंसिद्धाइगुणा प० तंजहा खीणे आभिणिबोहियणाणावरणे खीणे सुयणाणावरणे खीणे ओहिणाणावरणे खीणे मणपज्जवनाणावरणे खीणे केवलनाणावरणे खीणे चक्खुदंसणावरणे खीणे अचक्खुदंसणावरणे खीणे ओहिदंसणावरणे खीणे केवलदंसणावरणे खीणे निद्दा निद्दानिद्दा खीणे पयला पयलापयला खीणे थीणद्धी खीणे सायावेअणिज्जे खीणे असायावेयणिज्जे खीणे दंसणमो ॥ मूल ॥

रे सीझस्ये बूझस्ये मुंकास्ये सर्वदुःखनो अंत करिस्ये मोक्षजास्ये ॥ इति त्रीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ३० ॥ हिवे एकत्रीसमो समवाय लिखे छे। एकत्रीस सिद्धना आदिगुण प्रथमसमयमांहो ऊपना जे गुण ते सिद्धादिगुण कह्या ॥ ते कहेछे। क्षीण थयोछे आभिनिबोधिक ज्ञाननो आवरण एतले सर्वथापि मतिज्ञानावरण क्षय गयो छे जेहनो १। क्षीणथयो छे श्रुतज्ञानावरण २। वली अवधिज्ञानावरण क्षय ३। मनःपर्यवज्ञानावरण क्षय ४। केवलज्ञानावरणक्षय ५। चक्षुदर्शनावरणक्षय ६। अचक्षुदर्शनावरणक्षय एतले आंखटाली बीजा च्यारइंद्रिय अचक्षु तेहना आवरणनो क्षय ७। अवधिदर्शनावरणक्षय ८। केवलदर्शनावरण क्षय ९। सुखेंजागे ते निद्रा तेहनोक्षय १०। दुःखेजागे ते निद्रानिद्रा तेहनो क्षय ११। बेठांऊभां आवे ते प्रचला तेहनोक्षय १२। चालतां आवे ते प्रचलाप्रचला तेहनोक्षय १३। थीणद्धी अर्द्धवासुदेवनो बल तेहनोक्षय १४। सातावेदनीयकर्मक्षय १५। असातावेदनीयकर्मक्षय १६ ॥ भाषा ॥

वरणादिचयस्वरूपाइति मन्दरोमेरुः सचधरणीतलेदशसहस्रविष्कंभइति कृत्वा यथोक्तपरिधिप्रमाणोभवतीति जयाणंसूरिएइत्यादि किलसूर्यस्य चतुरशी त्यधिकमण्डलशतंभवति मण्डलंचज्योतिष्कमार्गोभिधीयते तत्रजंबूद्वीपस्यांतराशीत्यधिकेयोजनशते पंचषष्ठि सूर्यमण्डलानिभवंति तथालवणसमुद्रेत्रीणित्रिं

हणिज्जे खीणे चरित्तमोहणिज्जे खीणे नेरइयाउए खीणे तिरिख्खाउए खीणे मणुस्साउए खीणे देवाउए खीणे उच्चागोए खीणे निच्चागोए खीणे सुन्ननामे खीणे असुन्ननामे खीणे दाणंतराए खीणे लाभंतराए खीणे भोगांतराए खीणे उवभोगांतराए खीणे वीरिअंतराए ३१ मंदरेणंपव्वए धरणितले एक्कतीसंजोय णसहस्साइं छच्चेवतेवीसे जोयणसए किंचिदेसूणापरिक्खेवेणं प० जयाणं सूरिए सव्वबाहिरियमंडलं उव

दर्शनमोहनीय एतले सम्यक्त मोहनीय चय १७। चारित्रमोहनीय चय १८। नरकायुचय १९। तिर्यंचायुचय २०। मनुष्यायु चय २१। देवायु चय २२। उच्चैर्गोत्रचय २३। नीचैर्गोत्र चय २४ शुभनाम चय २५। अशुभनाम चय २६। दानांतराय चय २७ लाभांतरायचय २८। भोगांतराय चय २९ वीर्यांतराय चय ३०। उपभोगांतरायचय ३१। मेरुपर्वत भूमितले एकत्रीसहजार छसे त्रेवीस योजन कांइक न्यून परिधीये कह्यो। मेरुपर्वत भूमिने ऊपरे दसहजार योजन पिहुल पणेछे तेहनो परिधी त्रिगुणित एतले एकत्रीस हजार छसे त्रेवीस योजन कह्यो। सूर्यना पेंसठ मांडला निषधपर्वत उपरछे तेमांहिं सगला पहिलो एतले सर्वाभ्यंतर मंडल जगतीथकी एकसो अस्सी योजन छे। अने लवणसमुद्र मांहि तीन से तीस योजन अवगाहीने एकसो ओगणीस मांडला छे। सर्वमिली जंबूद्वीप मांहि एकसो चौरासी मंडल छे तेमांहि सर्वबाह्यमंडलें उपसंक्रमी आवीने सूर्य मकर संक्रांतिदिने भ्रमण करे। तेणें दिनें भरतक्षे

...योजनशतान्यवगाह्यकानाविंशत्याधिकं सूर्यमण्डलशतंभवति तत्रचसर्वबाह्यं समुद्रांतर्गतमंडलानांपर्यंतिमं तस्यचायामविष्कम्भो लक्षंषट्शतानि चयोजनानांषष्ट्यधिकानि परिधिसुवृत्तक्षेत्रगणितन्यायेनत्रीणि लक्षाणि अष्टादशसहस्राणि त्रीणिशतानिपंचदशोत्तराणि ३१८३१५ एतावत्क्षेत्रमादित्योऽहोरात्रद्वयेनगच्छति तत्रचषष्ठिमुहूर्त्ताभवन्ति षष्ट्याभागापहारे यल्लब्धंतन्मुहूर्त्तगम्यक्षेत्रप्रमाणं भवति तच्च पंचसहस्राणित्रीणिचपंचोत्तराणिशतानि ५३०५। १५। ६० मुहूर्त्ते एतत्चटिवमार्हेनगुण्यते यदाचसर्वबाह्येमंडलेसूर्यश्चरति तदादिनप्रमाणं द्वादशमुहूर्त्ताः तदर्द्धंचषट् अतः षड्भिर्मुहूर्त्तैर्गुणितं मुहूर्त्तगतिप्रमाणं चक्षुः स्पर्शगतिप्रमाणंभवति एकत्रिंशत्सहस्राणि अष्टौचशतान्येकत्रिंशदधिकानि त्रिंशच्चयोजनद्विषष्टिभागाः ३१८३१। ३० अभिवर्द्धितमासोऽभिवर्द्धितसंवत्सर ॥ टीका ॥

संकमित्ता चारंचरइ तयाणं इहगयस्स मणुस्सस्स एक्कतीसाए जोयणसहस्सेहिं अठहिंयएक्कतीसेहिं जोयणसएहिं तीसाएसठिभागे जोयणस्स सूरिएचक्खुफासं हव्वमागच्छइ अभिवड्ढिएणं मासे एक्कतीसं ॥ मूल ॥

चगत मनुष्यने एकतोसहजार आठसे एकतीस योजन ऊपर एकयोजनना साठिया पंचत्रीसभाग अधिक वेगलोथको सूर्य चक्षुस्पर्श शीघ्र आवे । एतलेपो ॥ भाषा ॥
सी पूनिमि मकर संक्रांतिदिने एकतोसहजार आठसे एकतीस योजन ऊपर योजनना साठीया तीसभाग वेगलो होय सूर्य लवणसमुद्र मांहि तिवारे इहां नां मनुष्यने दृष्टिगोचर आवे । अभिवर्द्धितमास जोजे वर्ष आवे तेरहमासनो वर्ष होय । ते ऊ... मास एकत्रीस रात्रिदिवस प्रमाणेंसातिरेक कांइएक झा झेराजाणिवो । एतले अहोरात्रिना १२४ भागना १२१ अधिक एकत्रीस रात्रिदिवस परिमाणे पूरोथाय । जेणे काले सूर्य राशिभोगवे तेआदित्यमास सूर्यमा

॥ टीका ॥

स्य चतुश्चत्वारिंशदधिकद्विषष्टिभागाधिकत्र्यशीत्यधिकशतत्रयरूपस्य ३८३ । ४४ द्वादशोभागोऽभिवर्द्धितसंवत्सरस्यासौ यत्राधिकमासकोभवति तत्रत्रयोदशचंद्र मासात्मकत्वाच्चन्द्रमासस्य एकोनत्रिंशतादिनानां द्वात्रिंशताचदिनद्विषष्टिभागानांभवतीति साइरेगाइंति अहोरात्रस्यच चतुर्विंशत्युत्तरशतभागानामेकविंशत्यु

॥ मूल ॥

सातिरेगाइं राइंदियाइं राइंदियग्गेणं प० आइच्चेणं मासे एक्कतीसं राइंदियाइं किंचि विसेसूणाइं राइं दियग्गेणं प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कतीसं पलिउवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कतीसंसागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एक्कतीसंपलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एक्कतीसंपलिउव माइं ठिई प० विजय वेजयंत जयंत अपराजिययाणं देवाणं जहन्नेणं एक्कतीसंपलिउवमाइं ठिई प० जे

॥ भाषा ॥

स कहिये एकत्रीसरात्रिदिवस कांइक विशेषाधिक जाणा ओछा अहोरात्रिअर्द्ध जाणा एकत्रीस रात्रिदिवस परिमाणें पूरा कह्यो । एणीयें रत्नप्रभा पहिली नरक पृथिवी यें केतलाएक नारकीनी एकत्रीस पल्योपमनीस्थितिकही । हेठिम सातमीनरक पृथिवीयें केतलाएक नारकीनी एकत्रीससागरोपम आउखो कह्यो । केतलाएक असुरकुमार देवतानी एकत्रीस पल्योपमनीस्थिति कही । सौधर्मईशाने कल्पें केतलाएक देवतानी एकत्रीस पल्योपम आउखोकह्यो ॥ पूर्वदिशायकीमांडीकरीने विजय १ वेजयंत २ जयंत ३ अपराजित ४ एचार अनुत्तरविमाननादेवतानी जघन्यएकत्रीससागरोपमनी स्थितिकही । जेदेवता उपरिमउपरिम ग्रैवेयके एतले नवमे ग्रैवेयकविमाने देवतापणेउपनाछेतेहदेवतानीउत्कृष्टी एकत्रीससागरोपमनी स्थितिकही । तेदेवता एकत्रीसें पखवाडे

तिंच कायषट्‌ ॥ टीका ॥ ... व्रतषट्कं महाव्रतानि रात्रिभोजनाविरतिश्च कायषट्‌
कायषट्‌मायुतेनवा व्यक्ता: व्रतासु येवय:श्रुताभ्यांपरिणता: स्थानानिपरिहारा: सेव्यतेसचाश्रयवस्तूनि व्रतषट्कं महाव्रतानि रात्रिभोजनाविरतिश्च कायषट्‌
कं पृथिवीकायादि अकल्पोऽल्पनीयः पिंडशय्या वस्त्रपात्र रूपपदार्थः गृहिभाजनं स्थाल्यादिः पल्यंकंखट्वादि निषद्या स्त्रियासहासनं। स्नानंशरीरक्षालनं ॥ मूल ॥

दिव्वेकामभोगे नेवसयंवायाएसे
सयंमणेणंसेवइ नोविअन्नंमणेणंसेववाइ मणेणंसेवंतंविअन्नंनसमणुजाणइ दिव्वेकामभोगे नेवसयंकाएणंसेवइ नोवि
वइ नोविअन्नंवायाएसेवावेइ वायाएसेवंतंवि अन्नंनसमणुजाणाइ दिव्वेकामभोगे नेवसयंकाएणंसेवइ नोवि
अन्नंकाएणंसेवावेइ काएणंसेवंतंविअन्नंनसमणुजाणाइ अरहतोणंअरिठनेमिस्स अठारससमणसाहस्सीउ
उक्कोसया समणसंपयाहोत्था समणेणं भगवयामहावीरेणं समणाणंविग्गंथाणं सखुड्डयवियत्ताणं अठारस
ठाणा प० तं० वयछक्कं कायछक्कं अकप्पोगिहिभाणयं पलियंकनिसेज्जाय सिणाणं सोभवज्जणं आयारस्सणंभ ॥ भाषा ॥

नेरा प्रतिसेवतांथकां अनुमोदनाकरे ९। देवांगनासंबंधी कामभोगस्वयंपोतेसेवेनही १०। अनेरानेमनेकरी सेवाडेनही ११। मनेसेवतां आगिलाने पिण
अनुमोदेनही १२ दिव्यतेकहतां कामभोग देवांगनासंबंधी वचनेसेवेनही १३ अनेरानेवचनेकरी सेवावेनही १४ वचनेसेवतां प्रतिबीजाने अनुमोदेनही १५
देवांगनासंबंधी कामभोगकायाएंसेवेनही १६ अनेरापाहिकायाएंसेवावेनही १७ कायएंसेवतांथकां अनुमोदेनही १८ अरिहंत अरिष्टनेमी बावीसमातीर्थंक
ने अठारश्रमणसहस्रनी उत्कृष्टीसाधूनी संपदाहुई। श्रमणनेतपस्वीने निग्रंथने बाह्याभ्यंतर गांठीरहितने क्षुद्रव्यक्तसाधेजेह तेसक्षुद्रव्यक्तएतले क्षुद्रबालिकव्य
क्त तेव्यकरी वडोतयाश्रुतेकरीप्रसिद्ध तेहने अठारस्थानकपरिहारसेवाश्रयविशेष कांइकक्षांडवो कांइकआदरवो तेकहेछे। व्रतषट्क पंचमहाव्रत छट्ठोरात्रि

॥ ५४ ॥

॥ टीका ॥

शोभावर्जनं प्रतीतं तथाआचारस्य प्रथमांगस्य सचूलिकाकस्य चूडासमन्वितस्य तत्र पिंडैषणाद्याः पंचचूलाः द्वितीयश्रुतस्कंधात्मिकाः सचनववब्रह्मचर्याभिधाना ध्ययनात्मक प्रथमश्रुतस्कंध रूपस्तस्यैवचेदं पदप्रमाणं नचूलानां यदाह। नवबंभचेरमइओ अठारसपयसहस्सीओ। हवइसपंचचूला बहुबहुतरओपयग्गेणंति यच्च सचूलिकाकस्येति विशेषणं तत्तस्य चूलिकासत्ता प्रतिपादनार्थं नतु पदप्रमाणाभिधानार्थं यतोवाचि नंदीटीकाकृता अठारसपयसहस्साणि पुव्वपढमसुय खंधस्सनवबंभचेरमइयस्स पमाणं विचित्तत्थाणीय सुत्ताणि गुरुवए सवोतेसिं अत्थोजाणियव्वोत्ति पदसहस्राणीह यत्रार्थोपलब्धि स्तत्पदं पदोग्रेति पदपरिमाणे नेति तथा बंभित्ति ब्राह्मीआदिदेवस्य भगवतो दुहिता ब्राह्मीवा संस्कृतादिभेदा वाणी तामाश्रित्यैव यादर्शितावरलेखनप्रक्रिया साब्राह्मीलिपि रतस्तस्या

गयतो सचूलिआगस्स अठारस पयसहस्साइं पयग्गेणं प० बंभीएणंलिवीए अठारसविहलेखविहाणे प०तं० ॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

भोजनविरति एमकायषट्क पांचप्रावरणनेछठो उत्तमकाय एम १२ अकल्पी अकल्पनीयपिंडशय्यावस्त्रपात्ररूप पदार्थ १३ गृहस्थनेभाजन १४। पल्यंकोमां चादिक १५। निषद्यासिंहासन १६। स्नानशरीरधोइवो १७। शोभावर्जन शरीरशृंगाररचना १८। आचारांग प्रथमअंगने पहिले श्रुतस्कंधे नवअध्ययनछे तहनां पूठ्यनांबीजे श्रुतस्कंधे पांचचूलिकाछे तेपांचचूलिकामांही १६ अध्ययन अवताराछे तो तेपांचचूलिकासहितना अठारपदसंहस्रजेतले अर्थनीसमा प्ति तेहपदक हीए। पदार्थसर्वसंख्याएंकह्या आचारांगे प्रथमश्रुतस्कंधे ब्रह्मचर्याभिधान नवअध्ययन तेहनीसंख्या १८ सहस्रपद परंचूलिकाछे। पांचबीजेश्रु तस्कंधे १८ सहस्रपदमांहिनहो उक्तंच। नवबंभचेरमइओ अठारसपयसहस्सीओ। हवइयपंचचूला बहुबहुतरओपयग्गेणंति। अनेसूत्रमांहि चूलिकाग्रहीछे ते एकसूत्रनासबंधीमाटे परंतेहनोप्रमाण १८ पदमांहिनलेवो। ब्राह्मीश्रीआदिनाथ भगवंतनीपुत्री तेहने अठारप्रकारे लेखविधान लिखिवानाभेदकह्या।

॥ टीका ॥

ब्राह्मालिपेर्यंमित्यलंकारे लखाखरन तस्याविधानमेदा लेखविधानं प्रथमं तद्यथा एतत्स्वरूपं नष्टमिति नदर्शितम् । यथायत्रोके यथास्ति यथावानाः स्ति अथवास्याद्वादाभिप्रायसत्तदेवास्तिनास्तिचेत्येवं प्रवदतीत्यस्तिनास्तिप्रवादं तच्चतुर्थपूर्वंतस्य । तथा धूमप्रभापंचमी । अष्टादशोत्तर अष्टादशयोजनसह स्राधिकमित्यर्थः वाहुल्येनपिंडेन पोसासाढेत्यादि रेवंयोजना आषाढमासेसकृदिति सकृदेकदा कर्कसंक्रांतावित्यर्थः उत्कर्षेणोत्कर्षतोऽष्टादशमुहुर्त्तोदिवस

॥ मूल ॥

बंभी जवणालिया दोसऊरिया वरोहिया खरसाविया पहाराइया उच्चत्तरिया अक्खरपुट्टिया भोगवयत्ता वेयणतिया णिराहइया अंकलिवि गणिअलवि गंधव्वलिवि आदस्सलिवि माहेसरलिवि दामिलिवि बोलिदि लिवि अत्थिनत्थिप्पवायस्सणं पुव्वस्सअट्ठारसवत्थू प० धूमप्पभाएणं पुढवीए अट्ठारसुत्तरंजोयण सयसह स्सं बाहल्लेणं प० पोसासाढेसुणं मासेसु सइ उक्कोसेणं अट्ठारसमुहुत्तादिवसेभवइ सइउक्कोसेणं अट्ठारस

॥ भाषा

तेकहेछे । ब्राह्मीसंस्कृतादि भेदेंकरी लिपिअक्षरस्थापना देखाडी तेब्राह्मीलिपि १ । जवनलिपि २ । दोषऊपरिका ३ । वरोहिकाप्रभृति निण्हइयापर्यंत नामविशेषजाणिवा ११ । अंकलिपि १२ गणितलिपि १३ । गांधर्वलिपि १४ । आदर्शलिपि १५ । माहेश्वरलिपि १६ । दामलिपि १७ । बोलिदिलिपि १८। आस्तिनास्तिलोएसासएविअसासएवि एहवो स्याद्वादाभिप्रायआस्तिनास्ति प्रकर्षपणे प्रवदेकहे तेआस्तिनास्तिप्रवादचउथूंपूर्व तेहना १८ वस्तु अधि कारविशेषकह्या । धूमप्रभापांचमीपृथिवी अष्टादशसहस्रअधिक एकलाखयोजन बाहल्यपणे जाडपणेकही । पोसाआसाढमासइति एकदाउत्कृष्टपणेअ ठारमुहुर्त्तोदिवसहुए एतलेकर्क संक्रातिएं आषाढेपुनीमे अठारमुहुर्तोदिवसहुए सतिति एकवार मकरसंक्रांति अठारमुहूर्तो रात्रिहुई । एवीए रत्नप्र

मुज्जत्तारात्तीजवइ इमीसेणंरयणप्पन्नाए पुढवीए ऋत्थेगइयाणं नेरइयाणं ऋठारसपलिऊवमाइं ठिई प०
छठीए पुढवीए ऋत्थेगइयाणं नेरइयाणं ऋठारससागरोवमाइं ठिई प० ऋसुरकुमाराणं देवाणं ऋत्थेगइया
णं ऋठारसपलिऊवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु ऋत्थेगइयाणं देवाणं ऋठारसपलिऊवमाइं ठिई
प० सहस्सारेकप्पेसु देवाणं उक्कोसेणं ऋठारससागरोवमाइं ठिई प० ऋाणएकप्पेसु देवाणं ऋत्थेगइयाणं
जहन्नेणं ऋठारससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा कालं सुकालं महाकालं ऋंजणं रिठिसालं समाणं दुमं म
हादुमं विसालं सुसालं पउमं पउमगुम्मं कुमुदं कुमुदगुम्मं नलिणं नलिणगुम्मं पुंडरीऋं पुंडरीयगुम्मं सह
स्सारवडिंसगं विमाणं देवत्ताएउववन्ना तेसिणं देवाणं ऋठारससागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवाणं ऋठा

भा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो अढारपमल्योपम आउखोकह्यो छठीतमा पृथिवीयें केतलाएकनारकीनो अढारसागरोपम आउखोकह्यो । असुरकु
मारदेवतनो केतलाएकनो अढारपल्योपम आउखोकह्यो । सौधर्मईशानकल्पे केतलाएकदेवतानो अढारपल्योपम आउखोकह्यो । सहस्रार आठमेदेवलोके
केतलाएकनोजवन्यो अढारसागरोपम आउखोकह्यो । आठमेदेवलोके जेदेवता काल १ । सुकाल २ । महाकाल ३ । अंजन ४ । रिष्ट ५ । साल ६ । समान
७ । द्रुम ८ । महाद्रुम ९ । विशाल १० । सुसाल ११ । पद्म १२ । पद्मगुल्म १३ । कुमुद १४ । कुमुदगुल्म १५ । नलिन १६ । नलिनगुल्म १७ । पौंडरीक
१८ । पौंडरीकगुल्म १९ । सहस्रारावतंसक २० ॥ एम वीसविमाने देवतापणेंउपनाछे । तेहदेवतानो अढारसागरोपम आउखोकह्यो । तेहदेवता अढारच

भवति षविंशघटिकाइत्यर्थः तथापौषमासे सकृदिति मकरसंक्रांतौ रात्रिरेवंविधेति कालसुकालादीनि विंशतिर्विमानमनामानि ॥ १८ ॥ टीका

अथैकोनविंशतितमस्थानं तत्र स्थितिसूत्रेभ्यः पंचसूत्राणि सुगमानिच नवरं ज्ञातानि दृष्टांता स्तत्प्रतिपादकान्यध्ययनानि षष्ठांगप्रथमश्रुतस्कंधवर्त्तीनि उक्खि

रसेहिं अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंति तेसिणं देवाणं अठारसवास सहस्से हिं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धिया जेअठारसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चि स्संति परनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण मंतंकरिस्संति ॥ १८ ॥ एकूणवीसणायज्झयणा प० तं० । ॥ मूल

उक्खित्तणाए संघाडे अंडेकुम्मेअ सेलए तुंबेअ रोहिणी मल्ली मागंदी चंदमातिअ दावद्दवे उदगणाए मंडुक्के ते

मासे पखवाडे स्वासोस्वासले वर्णले उंचोस्वासले नीचोस्वासमूंके तेहदेवतनो अठारहर्षसहस्से आहारनो अर्थउपजे । केतलाएकभव्यजीव अठारभवनेअंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनोअंतकरिस्ये मोक्षजास्ये ॥ इति अठारमूंठाणूं सम्पत्तम् ॥ १८ ॥ हिवेइगुणवीसनो अधिकारलिखियेछे । ॥ भाषा

ज्ञाताछठोअंग तेहने प्रथमश्रुतस्कंधे १९ न्यायरूपनौतेमार्ग सूचकअध्यनकह्या । तेकहेछे यथाक्रमे । उत्क्षिप्तन्याय जेहाथीएं पगउपाड्यो पगहेठिशशलोराख्यो तेहमेघकुमारहुयो १ । धनावहसेठीनो संघाडकन्याय २ । त्रीजोमोरडीनाईडानो ३ । चउथोकाछवानो ४ । पांचमो सेलकाचार्यनो ५ । छट्ठोतूंबडानो ६ सातमो रोहिणीलघुवहूनो ७ । आठमोमल्लिकुमारीनो ८ । माकंदीसुतजिनरक्षतेजिनपालक ९ । दशमोचंद्रमानो १० । इग्यारमोदावद्ववृक्षनो ११ । बा रमोउदकथीयजितशत्रु सुबुद्धिमंत्रीनो १२ । मंडुकदेडकानो नंदमणीयारनो १३ चौदमोतेतलीपुत्रमुहुतानो १४ । पनरमोनंदिफलनो १५ । सोलमो अमरकंका

तिव्वादित्यादिकंप्रकरणमिदं च वह्नांगाधिगमावसेयमिति । तथा जंबुद्दीवेणं इत्यादौभावनात्वयं सूत्र्यानादुपरियोजन शतंतपतोऽधश्चाष्टादश शतानि । तच्च समभूतलेऽष्टौभवंति इयंचापरविदेहजगतीप्रत्यासन्नदेशे जंबूद्वीपापरविदेहेहि निम्नीभवत्क्षेत्रं तिमविजयदयस्यदेशे अधोलोकदेशेसहस्रमिति हीपांतरसूर्यो सूर्यशतमधोष्टशतानि क्षेत्रस्यसमत्वादिति तथा शुक्रसूत्रेनक्षत्ताइति विभक्तिपरिणामाच्चत्वैः समंसहचारंचरणं चरित्वाविधियेइति तथाकलाभोत्ति पं

तलीइश्च नंदिफले श्चवरकंका श्चाइस्रे सुंसमाइश्च श्चवरेश्च पोंमरीएणाए एकूणवीसमे जंबूद्दीवेणंदीवे सूरिश्चा उक्कोसेणं एगूणवीसजोयणसयाइं उद्धंमहातवयइ सुक्केणंमहग्गहेश्चवरेणं उइश्चसमणे एकूणवीसंणक्खत्ताइं स मंचारंचरित्ता श्चवरेणं श्चत्थमणं उवागच्छइ जंबूद्दीवस्सणंदीवस्स कलाउ एगूणवीसंछेश्चणाउ प० एगूणवीसं

राजधानीनो द्रुपदीनो १६ । सतरमो आकीर्णघोडानो १७ । अठारमो सुसामाधनावह सेठीपुत्रीनो १८ । अपरअनेरो पुंडरीक कुंडरीकनो न्यायउगणीसमो १९ जंबूद्वीपनेविषे सूर्यउत्कृष्टो इगुणवीस योजणसत उपरिहेठि मिलीनेतपे एतले पोतानाविमानथी एकसोयोजन ऊंचोतपे प्रकासे अनेसमभूतलेगढ आठसे योजन नीचोतपे वलीपश्चिममहाविदेहे जगतीपासे छेहलो विजयछे जिहां तिहां मेरुनो अपेक्षा एकसहस्रयोजन भुंईऊंडीछे तिहां प्रकाशे एतले एक सो आठसे दससे सर्वमिली उगणीससय योजनलगे उपरिहेठि प्रकाशे । शुक्रमहाग्रह पश्चिमदिसें ऊगीयको उगणवीस नक्षत्रसाथे चारचरीने भ्रमणकरीने पश्चिमदिसें अस्तमनप्रति पामे जंबूद्वीपद्वीपनीकला उगणीसछेदना भागरूपएतलें भरथक्षेत्र ५२६ योजन अनेंउपरि छकलातेह एकयोजनना १९ छेदनाभा

षसएछब्बीसे छचकलावित्यादि भरहवासमित्यादिषु जंबूद्वीपगणितेषु याःकलाउच्यंते तायोजनस्यैकोनविंशतिभागच्छेदना एकोनविंशतिभागरूपा इतिभावः
आगारमज्झेवसित्तत्ति अगारंगेहं अस्यैकोनविंशति चिरकालंराज्यपरिपालनतः आमर्यादायदीर्घां वसित्वाउषित्वा तत्रावासंविधायेति अभ्येत्यप्रव्रजिताः श्री
वासुपंच कुमारभावएवेत्याह । वीरंअरिठ्ठनेमिं पासंमल्लिंचवासपुज्जंच । एएमोत्तूणजिणे अवसेसाआसिरायाणोत्ति ॥ १८ ॥ अथविंशति तमस्था

तित्थयरा आगारवासमज्झेवसित्ता मुंडेभवित्ताणं आगाराओअणगारिअंपव्वइआ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणवीसपलिओवमाइं ठिई प० छठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणवीससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणवीसपलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एगूणवीसंपलिओवमाइं ठिई प० आणयकप्पे उक्कोसेणं एगू

गरूप एतलेभाग करी एहवो छकला प्रमाकह्यो । श्रीमहावीर १ । नेमिनाथ २ । पार्श्वनाथ ३ । मल्लिनाथ ४ । वासुपूज्य ५ । एपांचतीर्थंकरविना बीजा
उगणीसतीर्थंकर गृहस्थाश्रमेंवसीने मुंडपणुंपाम्या द्रव्यमुंडलोचादिकभावमुंड तेकषायत्याग गृहस्थाश्रमथकी अनगारपणाथकी प्रव्रज्याघरनथी जेहनेते
अनगारीतेहपणुंपाम्या । एणी एरत्नप्रभापहिली पृथिवीनेविषे केतला एकनारकीनो उगणीसपल्योपम आउखोकह्यो । छठीतमा पृथिवीनेविषे केतलाएक
नारकीनो उगणीसपल्योपम आउखोकह्यो । असुरकुमार देवतानो केतलाएकनो उगणीसपल्योपम आउखोकह्यो । सौधर्मईशानकल्पे केतलाएक
देवतानोउगणीस पल्योपम आउखोकह्यो । आनतनवमेकल्पेउत्कृष्टो उगणीससागरोपम आउखोकह्यो । प्राणतदशमे कल्पे केतला एकदेवतानो

॥ ५७ ॥ णवीससागरोवमाइं ठिई प० पाणएकप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं जहन्नेणं एगूणवीससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा आणतं पाणतं णतं विणतं पणं सुसिरं इंदं इंदकंतं इंदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसि णंदेवाणं उक्कोसेणं एगूणवीससागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा एगूणवीसाए अद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं एगूणवीसाए वास्ससहस्सेहिं आहारट्ठेसमुप्पज्जइ संते गइया भवसिद्धियाजीवा जेएगूणवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणं अंतंकरिस्संति ॥ १९ ॥ वीसंअसमाहिठाणा प० तं० । दवदवचारिआ ॥ मूल ॥

जघन्यो उगणीससारोपम आउखोकह्यो । जेदेवता आनत १ । प्राणत २ । नत ३ । विनत ४ । पणक ५ । सुषिर ६ । इन्द ७ । इन्द्रकांत ८ । इन्द्रोत्तरावतंसक ९ । विमाने देवतापणेउपनाछे । तेहदेवतानोउत्कृष्टो उगणीससागरोपम आउखोकह्यो । तेहदेवतानो उगणीसे अर्द्धमासे पखवाडे स्वासोस्वाले घणोले ऊंचोले नीचोमूंके तेहदेवतानो उगणीसवर्षसहस्रेगए आहारनीइच्छाउपजे केतला एकभव्यजीव उगणीसभवनेअंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखना अंतकरीसे मोक्षजासे ॥ इति उगणीसमूंठाणूं सम्प्रत्तम् ॥ १९ ॥ हिवे वीसनो अधिकारलिखियेछे । वीस असमाधिस्थानककह्या । तेसूचित्तठामिराखिवूं मोक्षमार्गेरहिवो तेसमाधि नहीसमाधि तेअधिकार तेहनास्थानकभेद तेअसमाधिस्थान तेकहेछे अनुक्रमे । द्रवद्रवउतावलो चालतो व्यग्रचित्तपणेघणा जीवनेहणे तेमाटे संयमने अबाधाउपजावे अनेपडेतो आत्माने असमाधिउपजावे १ । अणपूञ्जेचालेअर्द्ध ॥ भाषा ॥

मे किंचिल्लिख्यते । तथस्थितिसूत्रेभ्यो ऽर्वाक्समसूत्राणि तत्रसमाधानं समाधिश्चेतसः स्वास्थ्यंमोक्षमार्गेवस्थानमित्यर्थः नसमाधिरसमाधिस्तस्याः स्थानान्याश्र यभेदा पर्याया वा असमाधिस्थानानि तत्र दवदवचारित्ति योहिद्रुतंचरतिगच्छति सोऽनुकरणशब्दतोदवदवचारीत्युच्यते वापीत्युत्तरासमाधिस्थानापेक्षया समुच्चयार्थो भवतीतिसिद्धम् । सचद्रुतं २ संयमात्मनिरपेक्षेवव्रजन्नात्मानं प्रपतनादिभिरसमाधौ योजयति अन्यांश्चसत्वान् घ्नन्ऽसमाधौयोजयति सत्वबधजनि तेनचकर्म्मणापरलोकेप्यात्मानमसमाधौ योजयत्यतोद्रुतगंतृत्व मसमाधिकारणत्वादसमाधिकं स्थान मेवमन्यत्रापियथायोगमवसेयं १ तथा अप्रमार्जितचारी २ दुप्रमार्जितचारी ३ स्थाननिषीदनत्वग्वर्त्तनादिष्वात्मादिविराधनांलभते तथा अतिरित्ता अतिप्रमाणाशय्यावसतिरासनानिच पीठकादीनि यस्यसंति सोतिरि त्त शय्यासनिकः सचातिरिक्तशय्या सनिकरः सचातिरिक्तायां शय्यायां घंघशलादिरूपाया मन्येपिकोटिकादय आवसयंति इतितैः सहाधिकरणत्वादसमा धिस्थानमेव मन्यत्रापि यथायोगमवसेयं तथाअप्रमार्जितचारी दुप्रमार्जितचारीच संभवादात्मापरेचासमाधौ योजयतीति एवमासनाधिकेपि वाच्यमिति ४

विज्ञवइ अपमज्जिअचारिआविज्ञवइ दुप्पमज्जियचारिआविज्ञवइ अतिरित्तसज्जासणिए रातिणिअप ॥ मूल

पूर्वनोपरी २ । भूंडोपरीपूजीपालेमर्यादायकी अधिकशय्यापाटीपाटला आसनादिकसेवे३ । अधिकउपाश्रयराखे तिहां योगीसंन्यासी आवीउतरे तेसाथेवाद ॥ भाषा करवोपडे आत्मानेसमाधिउपजे ४ । रात्निकपरिभाषी आचार्यादिकाएंसाम्होबोले तथापराभवे एमकरतो आत्माने असमाधिउपजे५ । थविरतेगुर्वादिकतेहने उवघातीमारे तेस्थविरोपघाती ६ । एमभूतएकेंद्रियादि तेहनेहणेतेभूतोपघाती ७ । घणघणक्रोधकरेतेसंज्वलन ८ । अनंतक्रोधांधहुए तेक्रोधन ९ । परपूठिपा रकोअवर्णवादेबोलेतेपुट्टिमांस १० । अभीक्ष्णमवधारयिता वलीवलीशंकितअर्थने निःशंकितथकोकहे तथापारकागुणक्षमीसकेनही नवांअधिकरणकलहतथा

॥ ५८ ॥

राजनीतिपरीभावी आचार्यादिषु परिभवकारी तथाआत्मानमन्यांश्चासमाधौ योजयत्येव ५ तथास्थविरा आचार्यादिगुरवः तानाचारदोषेण शीलदोषेण ज्ञा नादिभिर्वोपहंतीत्येवंशील: सएवचेतिस्थविरोपघातिकः ६ तथाभूतान्येकेंद्रियांस्तानमर्थत उपहंतीति भूतोपघातिकः ७ तथासंज्वलतीति संज्वलनः प्रतिक्षणं रोषणः ८ तथाक्रोधनः सकृत्क्रुद्धोऽत्यंतक्रुद्धोभवति ९ तथापृष्टिमांसिकः पराङ्मुखस्य परस्यावर्णवादकरी १० अभिक्षणं २ ओहारयित्तेति अभीक्ष्णमभीक्ष्ण मवधारयिताशंकितस्याप्यर्थस्य निःशंकितस्याप्यर्थस्य निःशंकितस्यैवमेवायमित्यर्थवक्ता अथवा अवहारियितापरगुणाना मवहारकरी यथाअदासादिकमपिप रंभणति दासस्त्वंचौरस्त्वमित्यादि ११ तथा अधिकरणनां कलहानां नवानां चोत्पादयति १२ पौराणाणंति पुरातनानां कलहानां क्षमितव्युपशमितनां क्षमितत्वेनोपशांतानां पुनरुदीरयिताभवति १३ तथासरजस्कपाणिपादो यःसचेतनादिरजोगुंडितेनहस्तेन दीयमानांभिचांगृह्णाति तथायोऽस्थंडिलाद: स्थंडिलादौ संक्रामनपादौप्रमार्ष्टि अथवायस्तथाविधेकारणे सचित्तादिपृथिव्यां कल्याविना अनंतरिताया मासनादिकरोति ससरजस्कपाणिपादइति १४ त

रित्तासी थेरोवघाइए भूतोवघाइए संजलणे कोहणे पिठिमंसए अभिरकणं ओहारइत्ताभवइ णवाणंअधिक रणाणं अणुप्पणं उप्पाएत्ताभवइ पोराणाणंअधिकरणाणं खामिअविउ सविअाणंपुणोदीरेत्ताभवइ ससर

गाडलादिक तेपूर्वेअनुत्पन्नछे उपनानथी तेहउपजावेछे १२। पुरातनजूनामेंकलहाने खमाविवापणे उपशमाव्याछे तेहनेपुनरपिवली उदारकहुएदारे १३। सरजस्कपाणिपाद सचित्तरजखरड्याएंहाथेंभिचदेतालि अथवासचित्त अचित्त स्थंडिलजेपमनपूजे १४। अकालेस्वाध्यायकरे पहिले प्रहरेअने पाछिले प्रह रेंकालिकसूत्र उत्तराध्ययनादिकने अनेचौदप्रहरलगे उत्कालिक दशवै कालिक नभणे १५। अकालेभणतांदेवतादिकनोउपद्रवथाय। कलहकरे १६। शब्दकोरे

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

था अकालेस्वाध्यायकारकः प्रतीतः १५ तथाकलहकरः कलहकरोहेतुभूतकर्त्तव्यकारी १६ तथाशब्दकरः रात्रौमहताशब्देनालापःस्वाध्यायादिकारकोगृहस्थ भाषाभाषकोवा १७। तथाझंझाकरोत्येवं येनगणस्य भेदोभवति तत्तत्कारी येनच गणस्यमनोदुःखंसमुत्पद्यत्यतोझंझा १८ तथासूरप्रमाणभोजी सूर्योदयादस्तम यं यावद्शनपानाद्यभ्यवहारी १९ एषणाअसमितश्चापि अनेषणांनेव परिहति प्रेरितश्चासौसाधुभिः कलहायते तथाअनेषणीय मपरिहरन् जीवोकोपराधो वर्त्तते एवंचात्मपरयोरसमाधिकरणा दसमाधिस्थानमिदं विंशतितममिति २० तथाघनोदधयः सप्तमपृथिवी प्रतिष्ठानभूताः सामानिकाः इन्द्रसमानर्द्ध यः साहस्त्यः विंशतिसहस्राणि बन्धतोबन्धसमयादारभ्यबन्धस्थितिः स्थितिरित्यर्थः प्रत्याख्याननामकंपूर्वंनवमं सातादीनिचैकविंशतिर्विमानानीति ॥ ॥ टीका

रूकपाणिपाए अकालसज्झायकारए आविजइ कलहकरे सद्दकरे झंझकरे सूरप्पमाणभोई एसणासमिते आ विजयइ मुणिसुव्वएणंअरहा वीसधणूइं उड्ढंउच्चत्तेणंहोत्था सव्वेविअणंघणोदही वीसंजोयणसहस्साइं बाह ल्लेणं प० पाणयस्सणं देविंदस्सदेवरस्रोवीसं सामाणिअसाहस्सीउ प० णपुंसयेअणिज्जस्सणं कम्मस्सवीसं ॥ मूल

रात्रिएमाटे सादेसज्झायकरेगृहस्थनेपरी उपडोबोले १७। झंझकार जेणेकरी गच्छनोभेदहोय एहवोकरे १८। सूरप्रमाणभोजी सूर्यआथमे तिहांलगीन जिमे १९। एषणाऽसमित असूझतो भातपाणीले बीजोयती दूसीषदेतां कलहकरे २०। एहवीसअसमाधिस्थानकह्या २०। मुनिसुव्रत वीसमातीर्थंकर वीसधनुष उंचाऊंचपणेथया। सातमेनरकपृथिवीने प्रतिष्ठानभूत आधारभूत घनोदधि कठिनसलाभूतपाणी तेघनोदधि। वीसयोजनसहस्र जाडपणेकह्यो। प्राणतदेव लोकइन्द्रमो तेहनोइन्द्र तेहनादेवतानो इन्द्र तेदेवेंद्र तेहना देवतानो राजा तेहनावीसहस्रसामानिक देवताकह्या। नपुंसकवेदनीयकर्म अर्थात् नपुंसककर्म ॥ भाषा

॥ ५९ ॥ ॥ मूल ॥

सागरोवमोकोडाकोडीउ बंधउ बंधठिई प० पच्चक्खाणंपुव्वस्सवीसंवत्थू उस्सप्पिणिमंडले वीसंसागरोवम कोडाकोडीउकालो प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं वीसंपलिउवमाइं ठिई प० छठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं वीसंसागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं वीसंपलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं वीसंपलिउवमाइं ठिई प० पाणतेकप्पेसु देवाणं उक्कोसेणं वीससागरोवमाइं ठिई प० आरणेकप्पेसु देवाणं जहन्नेणं वीससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा सायं विसायं सिद्धत्थं उप्पलं भित्तिलं तिगिच्छं दिसा सोवत्थियं पलं रुइलं पुप्फं सुपु

॥ भाषा ॥

मो वीससागरोपम कोडीबंधसमयथकीमांडी बंधनी स्थितिकही। प्रत्याख्यान नवमापूर्वनावीसवस्तु अधिकारविशेषकह्या। उत्सर्पिणी अवसर्पिणीमंडलनेविषे कालचक्रनेविषे वीसकोडीकालकह्यो। एतलेदशकोडाकोडी सागरोपम उत्सर्पिणीकाल दसकोडाकोडी सागरोपम अवसर्पिणीकालकह्यो। एणी एरत्नप्रभापहिली पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो वीसपल्योपम आउखोकह्यो। छट्ठीतमा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो वीससागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमार देवतानो केतलाएकनो वीसपल्योपमआउखोकह्यो सौधर्मईशान देवलोके केतलाएक देवतानो वीसपल्योपम आउखोकह्यो प्राणतदशमीकल्पे देवनोउत्कृष्टो वीससागरोपम आउखोकह्यो। आरणइग्यारमेकल्पे देवनो जघन्योवीससागरोपमआउखोकह्यो दशमेकल्पे जेदेवता। सात १। विसात २ सिद्धार्थ ३। उत्पल ४। भित्तिल ५। तिगिच्छा ६। दिसा ७। सौवस्तिक ८। पल ९। रुचिर १०। पुष्प ११। सुपुष्प १२। पुष्पावर्त १३। पुष्पप्रभ १४।

॥ २० ॥ अथैकविंशतितमस्थानकं तत्रचत्वारिसूत्राणि स्थितिसुत्रैर्विनासुगमनानिच नवरंशबलंकर्बुरं चारित्रंयः क्रियाविशेषैर्भवति तत्रशबला स्त योगात्साधवोपिते एवंतत्रहस्तकर्म वेदविकारविशेषं कुर्वन्उपलक्षणत्वात्कारयन्वा शवलोभवत्येकः १ एवंमैथुनंप्रतिसेवनानि क्रमादिभिस्त्रिभिः प्रकारैः २ ॥ टीका

पुप्फं पुप्फावत्तं पुप्फपन्नं पुप्फकंतं पुप्फवन्नं पुप्फलेसं पुप्फज्झयं पुप्फसिंगं पुप्फसिट्ठं पुप्फुत्तरवडिंसगं विमा णं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं वीससागरोवमाइं प० तेणंदेवा वीसाए अद्धमासाणं आ णमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं वीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठेसमु प्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जेवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परि निव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण मंतंकरिस्संति ॥ २० ॥ एक्कवीसंसवला पन्नता तंजहा । ॥ मूल

पुष्पकांत १५ । पुष्पवर्ण १६ । पुष्पलेश १७ । पुष्पध्वज १८ । पुष्पशृङ्ग १९ । पुष्पसिद्ध २० । पुष्पोत्तरावतंसक २१ । एहविमाने देवतापणे उपनाछे तेह देव तानो उत्कृष्टो वीससागरोपम आउखोकह्यो । तेदेवता वीसअर्द्धमासे पखवाडे स्वासोस्वास घणोले उंचोस्वासले नीचोस्वासमूंके तेहदेवतानो वीससहस्रवर्षे आहारनो अर्थउपजे । केतलाएक भव्यजीव जेवीसभवनेआंतरे सीझस्ये बुझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये मोक्षजास्ये ॥ इतिवीसमूं ठाणूं समाप्तम् ॥ ॥ भाषा

॥ २० ॥ हिवे एकवीसमो अधिकार लिखियेछे ॥ एकवीस सबलाकह्या जेणिकरी शबल चारित्र करबुरकीजे तेशबला एकवीस सबलाकर तोथको साधुपणो शबलकह्यो तेकहेछे । हस्तकर्ममुष्टिआपकरतो शबलकह्यो । १ । मैथुनप्रतें सेवतोथको शबल २ । रात्रिभोजन करतोथको ३ । आधाक

॥ ६० ॥

तथारात्रिभोजनं दिवागृहीतं दिवाभुक्तमित्यादिभिस्तु भिंभगक रतिक्रमादिभिश्चभुंजान: ३ आधाकर्म ४ सागारिक: स्थानदातातत्पिंडं ५ उद्देशिकं क्री तमाहृत्यदीयमानंभुंजान: उपलक्षणत्वात् पामित्येच्छाद्यानिसृष्टग्रहणमपीहद्रष्टव्यमिति ६ यावत्करणोपात्तपदान्येवमर्थतोऽवगन्तव्यानि अभीक्ष्णंप्रत्याख्यायाऽ शमादिभुजान: ७ अन्त: षण्णांमासानामेकतोगणाद्गणमन्यंसंक्रामन् ८ अंतर्मासस्यत्रीनुदकलेपान् कुर्वन् उदकलेपश्च नाभिप्रमाणजलावगाहनमिति ९ अंत र्मासस्यत्रीणिमायास्थानानिस्थानमितिभेद: १० राजपिण्डंभुजान: ११ आकुट्याप्राणातिपातंकुर्वन् उपेत्यपृथिव्यादिकं हिंसन्नित्यर्थ: १२ आकुट्यामृषावादंव ॥ मूल

हत्थकम्मंकरेमाणे सबले मेहुणंपडिसेवमाणे सबले राइभोअणंभुंजमाणे सबले आहाकम्मंभुंजमाणे सबले सागारियंपिंडं भुंजमाणे सबले उद्देसियंकीयं आहट्टदिज्जमाणं भुंजमाणे सबले अभिक्खणं अभिक्खणं पडियाइक्खेत्ताणं भुंजमाणे सबले अंतोछण्हं मासाणंगणाउ गणंसंकममाणे सबले अंतोमासस्स तउदगले वेकरेमाणेसबले अंतोमासस्सतउमाईठाणेसेवमाणे सबले रायपिंडंभुंजमाणेसबले आउट्टियाए पाणाइवायं - ॥ मूल

र्मीभोजन भुंजतोथको ४। जेहनो उपासरोहुयो तेगृहस्थाना घरनोपिंड आहारभुंजतोथको ५। उद्देसकृतेजे साधुने निमित्ते उद्देशी भातपाणिकरे तेउद्देश कतथा क्रीतवेंचातो भाख्यो आहृतसमाहृतभाख्यो आहारते तोशबल ६। अभीचण्णं बलीबलो अशनादिक पच्चक्खीने जीमतो ७। छेहले छमासमांहि गच्छ पालटथको शबल ८। एकमासमांहि त्रिणिदगलेप करतो नाभिप्रमाण जलावगाहन तेदगलेप ९। मासमांहि त्रिणिठाण सेवतोथको १०। राजपिंडभुंज तो ११। आकुटीएप्राणातिपातकरतो पृथिव्यादिकनेहणतो १२। आकुटि एमृषावाद वदतो १३। आकुटीए अदत्तादान प्रतिलेतोको १४। आकुटीए ॥ भाषा

दन् १३ अदत्तादानंग्रहन् १४ आकुट्यवामंतर्हितायांपृथिव्यांस्थानं वानैषेधिवाचेत् यत्कायोत्सर्गंस्वाध्यायभूमिं वाकुर्वन्नित्यर्थः १५ एवमाकुट्या सस्निग्धसरज स्कायांपृथिव्यां विस्तारवत्यां सचित्तवत्यांशिलायां लेष्टौवा कोलावासेदारुणि कोलाघुणाः तेषामावासः १६ अन्यस्मिंश्च तथाप्रकारे सप्राणेसबीजादौ स्थाना ॥ टीका

करेमाणेसवले आउट्टियाए मुसावायंवदमाणे सवले आउट्टिआएअदिन्नाणंगिरहमाणे सवले आउट्टिआए अणंतरहिआए पुढवीएठाणं वानिसिहियंवावेलिमाणेसवले एवंआउट्टियाचित्तमंताए पुढवीए एवंआउट्टि या चित्तमंताए सलाएकुलावासंतिवादारुएठाणं वासहियंवा चेतमाणेसवले जीवपइठिएसपाणेसबीएसहरीए सउत्तंगेपणंगदगमट्टीमक्कडासंताणए तहपगारंठाणं वासिज्जंवानिसहियंवा चेतमाणे सवले आउट्टियाए मूलभोअणंवा कंदभोयणंवा तयाभोयणंवा पवालभोयणंवा पुप्फभोयणंवा फलभोयणंवा हरियभोयणंवा ॥ मूल

सचित्त पृथिवीऊपरि बैसतो अथवा सूवतो वा स्वाध्याकरतो १५। सचित्तशिला तथा पाषाण पृथिवी सचित्तउपरि घुणसहितकाष्ठ ऊपरिबैसतो सूवतो अथवा स्वाध्याय प्रमुखकरतो १६। जीवप्रतिष्ठित एहवो सप्राण बीजप्रमुखउपरि बैसतोथको एकेंद्रिय बेइन्द्रिय तेंद्रिय चउरिंद्रय इत्यादिक जीवविराधना करतोअथवा उपरिसूतो सज्झायकरतो १७। आकुटीएकरी मूलभोजन अथवा कंदभोजन त्वचाकहिये वृक्षनीछाल तेहनोभोजन प्रवालभोजन पुष्पभोजन वलीफलभोजन हरियभोजन करतोथको १८। एकवर्षमांहि दसदगलेपकरतो सबल १९। वर्षमांहि दसमायाठाण सेवतोथको २०। अभीक्ष्णम् वलीवली शातो ॥ भाषा

॥ टीका

दिकुर्वन् १७ आकुट्यामूलकंदादिभुंजानः १८ अंतः संवत्सरस्यदशोदकलेपान् कुर्वन् १९ तथांतःसंवत्सरस्यदशमायास्थानानिच २० तथाअभीक्ष्णंपौनःपुन्येनश तोदकलक्षणं यद्विकटंवर्ततेतेनव्यापारितोव्यामोयः पाणिर्हस्तः सतथा तेनअशनं प्रगृह्यभुंजानः शवलाइत्येकविंशतितमः २१ तथाहि निवृत्तिबादरस्यापूर्वकर णस्याष्टमगुणस्थानकवर्तिनइत्यर्थः संवाक्यालंकारे क्षीणंसमक मनंतानुबंधिचतुष्टयदर्शनत्रयलक्षणं यस्यसतथा तस्यमोहनीयस्यकर्मणः एकविंशतिकर्मांशा अ प्रत्याख्यानादिकषाय द्वादशनोकषायनवकरूपाउत्तरप्रकृतयः सत्कर्मसत्तावस्थंकर्मप्रज्ञप्तमिति तथाश्रीवत्सम् श्रीदाम कांडं माल्यकृष्टिं चापोक्तं आरणावतं

॥ मूल ॥

भुंजमाणेसबले अंतोसंवच्छरस्स दसदगलेवकरेमाणेसबले अंतोसंवच्छरस्सदसमाईठाणाइं सेवमाणेसबले अभिखणं सीतोदयवेयडवग्घारियपाणिणा असणंवा पाणंवा खाइमंवा साइमंवा पडिगाहित्ताभुंजमाणे सबले णिअट्टिबादरस्सणं खवितसत्तयस्स मोहणिज्जस्स कम्मस्स एक्कवीसकम्मंसासंतकम्मा प० त० अपच्च क्खाणकसाएकोहे अपच्चक्खाणकसाएमाणे अपच्चक्खाणकसाएलोभे पच्चक्खाणावरणकसाएकोहे पच्चक्खाणाव

॥ भाषा ॥

दकलक्षण जेविकटजल तेणेकरी वग्घारीयतिव्यापार्यो तथा व्यार्थ्योभीनो पाणिहाथ जेहनो तेणेकरि असनपाणि खादिमसादिम पडिगाहेले तथा सचित्त पाणीभीने हाथेकरि औमतोशवल २१ निवृत्तिबादरअपूर्वकरण आठमे तिहांवर्तताने तथा खपाव्योछेजेणेसमकचारअनंतानुबंधी कषाय अने त्रिणिदंसण मोहनीएम ७ प्रकृति जेणेखपावीछे तेहने मोहनीयना कर्मना एकवीस कर्मना अंशउत्तरकर्म प्रकृति संतकम्मत्ति सत्तकर्मसत्तावस्था एकह्याते कहेछे। अप्रत्याख्यान कषायक्रोध १। अप्रत्याख्यानमान २। अप्रत्याख्यानमाया ३। अप्रत्याख्यानलोभ ४। प्रत्याख्यानावरणी बीजोकषायक्रोध ५। प्रत्याख्यानावर

॥ मूल ॥

रणकसाएमाणे पच्चख्काणावरणकसाएमाया पच्चख्काणावरणकसाएलोन्ने संजलणकसाएकोहे संजलणकसाए माणे संजलणकसाएमाया संजलणकसाएलोन्ने इत्थिवेदे पुंवेदे णपुंसगवेदे हासे ञ्जरति रति न्नय सोक दुगंच्छा एक्कमेक्काएणंउस्सप्पिणी पंचमछठान्नसमान्न एक्कवीस एक्कवीस वाससहस्साइंकालेणं प० तं० दूसमा दूसम दूसमाएगमे गाएणंउस्सप्पिणीए पढमबितिञ्चान्नसमान्न एकवीस एकवीससहस्साइंकालेणं प० तं० दुसम दुसमाए दूसमायए इमीसेणं रयणप्पन्नाए पुढवीए ञ्जत्थेगइयाणं नेरइयाणं एकवीस पलिन्नवमाइं

॥ भाषा ॥

ण कषायमान ६। प्रत्याख्यानावरण कषायमाया ७। प्रत्याख्यानावरण कषायलोभ ८। संज्वलचौथो कषायक्रोध ९। संज्वलकषायमान १०। संज्वलनकषायमाया ११। संज्वलनकषायलोभ १२। स्त्रीवेद १३। पुरुषवेद १४। नपुंसकवेद १५। हास्य १६। अरति १७। रति १८। भय १९। शोक २०। दुगंछा २१। एकेकीए अवसर्पिणीएं पडते अरे पांचमोआरो अने छठोआरो समयकाल एवेवेनो एकवीस एकवीसवर्ष सहस्रप्रमाण कालेकह्यो तेकहेछे। दुखमआरो पांचमो २१ हजारवर्षनो दुखम दुखमआरो बिलवासीनो छठो २१ वर्षसहस्रनो एकेकी उत्सर्पिणीएं चडते आरेपहिलो आरो बिलवासीनो अने बीजो आरो मनुष्यनो समयकाल एकवीस एकवीसवर्ष सहस्रप्रमाण कालेकह्यो तेकहेछे। उत्सर्पिणीनो दुखम दुखमापहिलो आरो २१ वर्षसहस्रनो दुखमा बीजो आरो २१ वर्षसहस्रनो। दुखमाबीजो आरो २१ सहस्रवर्ष। एणीए रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो एकवीसपल्योपम आउखोकह्यो। छठीतमापृथिवीए केतलाएक नारकीनो एकवीस सागरोपम आउखोकह्यो। असरकुमार देवतानो केतलाएकनो एकवीस पल्योपम आउखोकह्यो। सौधर्म ईशा

ठिई प० छठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एकवीससागरोवमाइं ठिई प० असुकुमाराणं देवाणं ॥ मूल ॥
अत्थेगइयाणं एगवीस पलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एक्कवीसंपलि
उवमाइं ठिई प० आरणेसुकप्पे देवाणं उक्कोसेणंए क्कवीसंसागरोवमाइं ठिई प० अच्चुतेकप्पे देवाणं जहन्ने
णं एक्कवीस सागरो वमाइं ठिई प० जेदेवा सिरिवच्छं सिरिदामं कंडं मल्लकिट्टं चावोन्नतं अरणवडिं
सगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं एक्कवीस सागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा एक्कवीसाए अ
द्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणंदेवा एक्कवीसाए वाससहस्सेहिं आ
हारट्ठे समुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जेएक्कवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मु

नकल्पें केतलाएक देवतानो एगवीस पल्योपम आउखोकह्यो। आरण इग्यारमेकल्पें देवतानो उत्कृष्टो एकवीस सागरोपम आउखोकह्यो। अच्युते बारमेक ॥ भाषा
ल्पे देवतानो जघन्यो एकवीस सागरोपम आउखोकह्यो। इग्यारमे देवलोके जेदेवता श्रीवत्स १ श्रीदाम २ कांडं ३ माल्यकष्ठ ४ चापोन्नतं ५ आरणावतंसक
६ एहछ विमाने देवतापणे उपनाछे तेहदेवतानो एकवीस सागरोपम आउखोकह्यो। तेहदेवतानो एकवीसे अर्द्धमासे पखवाडे स्वासोस्वास घणीले उंचोले
जीवोमूंके तेहदेवताने एकवीसवर्षसहस्रें आहारनो अर्थउपजे। केतलाएक भव्यजीव जेएकवीस भवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्यें सर्वदु:खनो अंतकरीस्ये

॥ टीका ॥

सरप्रतेनाधिकानीति आदित्यमासेयेनकालेनादित्योराशिंभुंक्ते किंचिविसेसूणाइंति अहोरात्राद्हे नन्यूनानीति ॥ ३१ ॥ द्वात्रिंशत्तमस्थानकमपिव्यक्तं। नवरं। युज्यंते इतियोगा मनोवाक्कायव्यापारास्तेचेहप्रशस्ताएवंविवक्षितास्तेषां शिष्याचार्यगतानामालोचनानिरपलापादिनाप्रकारेणसंग्रहणानि संग्रहाः प्रशस्तयोगसंग्रहाः प्रशस्तयोगसंग्रहनिमित्तत्वादालोचनादय एवतथोच्यन्ते। तेचद्वात्रिंशद्भवन्ति तदुपदर्शकंश्लोकपंचकं आलोयणेत्याद्यस्यगमनिका तत्रआलोय

॥ मूल ॥

देवा उवरिमउवरिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवा णं उक्कोसेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा एक्कतीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा उस्ससंतिवा निस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं एक्कतीसं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुपज्जइ संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जे एक्कतीसेहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ ३१ ॥

बत्तीसं जोगसंगहा प० तंजहा आलोयण निरवलावे आवइ सुदढधम्मया। अणिस्सिउवहाणेय सिक्खा

॥ भाषा ॥

स्वासोस्वास घणोले ऊंचोले नोचोमूंके ते देवताने एकत्रीस वर्षसहस्रगयें आहारनो इच्छाउपजे। छे केतलाएक भव्यजीव जेएकत्रीस भवने आंतरें सीभस्ये बूझस्ये मूंकास्ये कृतकर्मना पडल टालवाथकी ठाढायास्ये सर्वदुःखनो अंतकरस्ये मोक्षजास्ये ॥ इतिएकत्रीसमूं समवाय संपूर्ण ॥ ३१ ॥ हिवे बत्रीसमो समवाय लिखेछे। बत्रीस योग संग्रह मन बचन कायानायोग तेहनो संग्रह शिष्यें आलोयणालेवो गुरुयें कहीआगलो नकहिवो इत्यादि प्रकारें संग्रह करिवो प्रशस्त योगना कारण ते योगसंग्रह ते कहेछे। मोक्षसाधक योगसंग्रहभणी शिष्ये आचार्यभणी आलोयणकहो १। आचार्यभणी आलोयण

॥ टीका ॥

णत्ति मोक्षसाधनयोगसंग्रहाय शिष्येणाचार्यायालोचनादत्ता १ निरवलावेत्ति आचार्योपिमोक्षसाधकयोगसंग्रहायैवदत्तायामालोचनायां निरपलापः स्या त्रान्यस्मैकथयेदित्यर्थः २ आवईसुदढधम्मयत्ति प्रशस्तयोगसंग्रहाय नाऽनाऽऽपत्सुद्रव्यादिभेदासुदृढधर्मताकार्या सुतरां तासु दृढधर्मिणाभाव्यमित्यर्थः ३ अणि स्सिओवहाणेयत्ति शुभयोगसंग्रहायैवानिश्रितंच तदन्यनिरपेक्षमुपधानं परसाहाय्यानपेक्षंतपोविधेयमित्यर्थः ४ सिक्खत्ति योगसंग्रहायशिक्षासेवितव्या सा चसूत्रार्थग्रहणरूपा प्रत्युपेक्षाद्यासेवनात्मिकाचेतिद्विधा ५ निप्पडिकम्मयत्ति तथैवनिष्प्रतिकर्मताशरीरस्यविधेया ६ अन्नायत्ति तपस्यज्ञानतानकार्या यशःपू जाद्यर्थित्वेनाऽप्रकाशयद्भि स्तपःकार्यमित्यर्थः ७ अलोभेयत्ति अलोभता विधेया ८ तितिक्खत्ति तितिक्षापरीषहादिजयः ९ अज्जवेत्ति आर्जवः ऋजुभावः १० सुइत्तिशुचिः सत्यंसंयमइत्यर्थः ११ सम्मदिट्ठित्ति सम्यग्दृष्टिः सम्यग्दर्शनशुद्धिः १२ समाहियत्ति समाधिस्वचेतः स्वास्थ्यं १३ आयारविणओवएत्ति द्वारद्वयं तत्रा

॥ मूल ॥

निप्पडिकम्मया ॥ ६ ॥ अणायया अलोभेय । तितिक्खा अज्जवे सुइ ॥ सम्मदिट्ठी समाहीय । आयारे

॥ भाषा ॥

कहो अनेराआगल न कहिये २ । प्रशस्त योगसंग्रह भणी यतीने आपदा आव्यांथके दृढधर्म करिवो ३ । अनिश्रायें अपेक्षाविना उपधान तपकरिवो ४ । सूत्रार्थ गृहण रूप शिक्षानो सेवा ५ । शरीरनो निःप्रतिकर्मना करवो एतले सुश्रूषानकरवो ६ । यशपूजाने अर्थे अप्रकाशतोथको तपकरे ७ अलोभताकरवो ८ । तितिक्षा परीषहनो जयकरिवो ९ । आर्जव सरल स्वभाव १० सत्यमनियम ११ । सम्यग्दर्शन शुद्धि १२ । चित्तनुं स्वस्थपणुं १३ । आचार सहित थईने मायानकरे १४ । विनय युक्तहोय मायानकरे १५ । अदीनपणुं १६ । संवेग संसारथीभय अथवा मोक्षनो इच्छा १७ प्रणिधि कायादिकनोठामेराखिवो १८ ।

दोषोपगतःस्या क्षमायांकुर्यादिति ५८ निर्योपगतो भवेत्सायांकुर्यादिति १८ धिईमईयत्ति धृतिरधानामतिर्धृतिमतिरदैन्यं १६ संवेगोत्ति संवेगः संसा ॥ टीका ।

राद्भयंमोक्षाभिलाषोवा १७ पणिहित्ति प्रणिधिर्मायाशल्यंनकार्यमित्यर्थः १८ सुविहि सदनुष्ठानं १८ संवरश्च आश्रवनिरोधः २० अत्तदोसोवसंहारेत्ति स्वकीयदोष

स्यनिरोधः २१ सव्वकामविरत्तयत्ति सर्वस्तुविषयवैमुख्यं २२ पच्चक्खाणेत्ति प्रत्याख्यानंमूलगुणविषयं २३ उत्तरगुणविषयंच २४ विउसग्गेत्ति व्युत्सर्गोद्रव्यभावभे

दभिन्नः २५ अप्पमाएत्ति प्रमादवर्जनं २६ लवालवेत्ति कालोपलक्षणं तेन क्षणे २ सामाचार्यनुष्ठानकार्यं २७ झाणसंवरजोगेत्ति ध्यानमेवसंवरयोगो ध्यान

संवरयोगः २८ उदएमारणंतिएत्ति मारणांतिकेपिवेदनोदयेनक्षोभःकार्यः २८ संगाणयपरिण्णेत्ति संगानांपरिज्ञाप्रत्याख्यानपरिज्ञाभेदभिन्नापरिज्ञाकार्या

विणओवए ॥ २ ॥ धिईमई य संवेगे । पणिहीसुविहिसंवरे ॥ अत्तदोसोवसंहारे । सव्वकामविरत्तया ॥ ३ ॥ ॥ मूल ॥

पच्चक्खाणे विउस्सग्गे । अप्पमादेलवालवे ॥ झाणं संवरजोगेय । उदएमारणंतिए ॥ ४ ॥ संगाणंयपरिण्णा

शुभ अनुष्ठान करिवो १८ । संवर आश्रवनिरोध २० पोताना दोषनो निरोध रोकिवो २१ । सर्वविषयथी विमुखपणो २२ । पचक्खाणनो करिवो २३ । ॥ भाषा ।

व्युत्सर्ग द्रव्यथको उपधोनो त्याग भावथको त्रिगर्वनो त्याग २४ । प्रमाद टालिवो २५ । स्थानकाले समाचरिवो २६ । धर्मध्यानादि करिवो २७ ।

संवरनो योग २८ । मारणांतिक वेदना उपजे मनने क्षोभ न करिवो २८ । संगनो परिज्ञा स्वजनादिक संगनो पचकववो ३० । प्रायश्चित्तनो करिवो ३१ ।

आराधना करी मरे ३२ । एह बत्रीस योग संग्रह जाणिवा ॥ बत्रीस देवेंद्र कह्या ते कहे छे । चमरेंद्र १ । वलेंद्र २ धरणेंद्र ३ । भूतानेंद्र ४ । वेणुदेव ५ ।

॥ ९१ ॥

३० पच्छित्तकरणेइत्ति प्रायश्चित्तंकरणंचकार्यं ३१ आराहणायमरणंते मरणरूपोन्तो मरणांतः सूत्रेत्यतोद्वात्रिंशद्योगसंग्रहाइति ३२ इन्द्रसूत्रेयावत्करणाद्धेग ॥ टीका ।
देववेणुदालो हरिकंते हरिस्सहे अग्गिसीहे अग्गिमाणवे पुन्ने वसिट्ठे जलकंते जलप्पहे अमियगइ अमियवाहणे वेलंबे पहंजणे घोसे महाघोसे इतिदृश्यम्भुमयो
वत्करणात् माहिंदेबंभेलंतएसुक्के सहस्सारेत्ति द्रष्टव्यमिदं षोडशानांव्यन्तरेन्द्राणां षोडशानामेव वा अणपणकादीन्द्राणामल्पर्द्धिकत्वेनाविवक्षितत्वा दसंख्याताना
मपिचंद्रसूर्याणां जातिग्रहणेनद्वयोरेवविवक्षितत्वाद्द्वात्रिंशदुक्ताइति। कुंथुनाथस्यद्वात्रिंशदधिकानि द्वात्रिंशच्चकेवलिशतान्यभूवन् द्वात्रिंशद्विधंनाट्यमभिनयविषय

या । पच्छित्तकरणेविय ॥ आराहणायमरणंते । बत्तीसं जोगसंगहा ॥ ५ ॥ बत्तीसं देविंदा प० तं० चमरे ॥ मूल ॥
बली धरणे भूआणंदे जाव महाघोसे चंदे सूरे सक्के ईसाणे सणंकुमारे जाव पाणए अच्चुए कुंथुस्सणंअरहत
बत्तीसं जिणसया होत्था सोहम्मेकप्पे बत्तीसं विमाणवाससहस्साणं प० रेवइणक्खत्ते बत्तीसइतारे प०

वेणुदाली ६ । हरिकांत ७ । हरिसिंह ८ । अग्निशिख ९ । अग्निमाणव १० । पूर्ण ११ । वशिष्ठ १२ । जलकान्त १३ । जलप्रभ १४ । अमितगति १५ । ॥ भाषा ।
अमित वाहन १६ । वेलंब १७ । प्रभंजन १८ । घोष १९ । महाघोष २० । चंद्रमा २१ । सूर्य २२ । शक्रेंद्र २३ । ईशानेंद्र २४ । सनत्कुमारेंद्र २५ । माहेंद्र
२६ । ब्रह्मेंद्र २७ । लांतकेंद्र २८ । शुक्रेंद्र । २९ । सहस्रारेंद्र ३० । प्राणतेंद्र ३१ । अच्युतेंद्र । ३२ । भवनपती ना इन्द्र २० सौधर्मेंद्रादिक इन्द्र १० ज्योतिषी
मा २ एम ३२ यद्यपि ३२ व्यंतरेंद्र छे पणित अल्पऋद्धिया तेमाटे न लख्या ज्योतिषी चन्द्र सूर्य असंख्याता छे पणि जातिआश्री लख्या कुंथुनाथ १७
मां अरिहंत ने ३२ से जिन केवली थया । सौधर्म पहिले कल्पे बत्तीस विमान रूप आवासमां विमान वास शत सहस्र कह्या । एतले ३२ लाख विमान

बत्तीसतिविहेणट्टे प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बत्तीसंपलिओवमाइं ठिई ॥ मूल ॥
प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बत्तीसंसागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अ
त्थेगइयाणं बत्तीसंपलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं बत्तीसंपलिओवमा
इं ठिई प० जेदेवा विजय वेजयंत जयंत अपराजियविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं अत्थेगइ
याणं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा बत्तीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा उस्ससं
तिवा निस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं बत्तीसं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा
जेबत्तीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करि

कह्या । रेवती नक्षत्रना बत्रीस ताराकह्या । बत्रीसभेद नाटकना कह्या तेरायपसेणीयथकी जाणवा । एणीयें रत्नप्रभा पृथिवीयें केतलाएक नारकीनो बत्रीस ॥ भाषा ॥
पल्योपमनोस्थितिकहो । छठेंसातमीपृथिवीयेंकेतलाएकनारकीनी बत्रीस सागरोपमनीस्थितिकही । केतलाएक असुरकुमारनी बत्रीस पल्योपमनीस्थिति क
ही । सौधर्म ईशाने कल्पें केतलाएक देवतानी बत्रीसपल्योपमनीस्थितिकही । जे देवता विजय १ । वैजयंत २ । जयंत ३ । अपराजित ४ । एहचिहुंअनुत्त
रविमाने देवतापणेउपनाछे तेहदेवतानीबत्रीससागरोपमनीस्थितिकही । तेदेवता बत्रीसमे पखवाडे थोडोस्वासले घणोस्वासले ऊंचोस्वासले नीचोस्वासमूके
तेहदेवताने बत्रीसवर्षसहस्रेआहारनीवांछाउपजे । केकेतलाएकभव्यजीव जे बत्रीसभवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्येमोक्षजास्ये ॥

॥ टीका ॥

वस्तुभेदा यथा राजप्रश्नकृताभिधान द्वितीयोपांग इति संभाव्यते द्वात्रिंशत्वाद्वद्वतिबद्धमितिकेचित् ॥ ३२ ॥ अथत्रयस्त्रिंशत्तमस्थानकं तत्र आयः सम्यग्दर्शनाद्यवाप्तिलक्षणस्तस्यशातनाः खण्डनानिमित्तादाशातनास्तत्र शैक्षोऽल्पपर्यायोरात्निकस्य बहुपर्यायस्य आसन्नमासत्ति यथारजोंचलादिस्तस्यलगति तथागन्ताभवतीत्येवमाशातनांशैक्षस्ये त्येवंसर्वत्र पुरओत्ति अग्रतोगंताभवति सपक्खंति समानपक्षं समपार्श्वंयथाभवति समश्रेण्यागच्छतीत्यर्थः चिट्ठतित्था ताआमिताभवति यावत्करण इयाश्रुतस्कन्धानुसारेणान्याइच्चद्रष्टव्यास्तासैवसर्वतः आमन्नपुरः पार्श्वतःस्थानेन तिस्रोऽनिषीदनेनचतिस्रः तथाविचारभूमौ

॥ मूल ॥

स्संति ॥ ३२ ॥ तेत्तीसंआसायणाउ प० तं० । सेहेराइणिअस्स पुरउ गंताभवइ आसायणासेहस्स १ सेहेराइणियस्स सपक्खंगंताभवइ आसायणासेहस्स २ सेहेराइणियस्स आसन्नंगंताभवइ आसायणासेहस्स ३ एवंएएणंअभिलावेणं सेहेराइणियस्स पुरउंचिट्ठित्ताभवइ आसायणासेहस्स ४ सेहेराइणियस्स सपक्खंचिट्ठित्ताभवइ आसायणासेहस्स ५ सेहेराइणियस्स आसन्नंचिट्ठित्ताभवइ आसायणासेह

॥ भाषा ॥

इति बत्तीसमोसमवाय थयो ॥ ३२ ॥ हिवेतेत्रीसमोसमवाय लिखियेछे । तेत्रीस आशातना । ज्ञानदर्शनचारित्रप्राप्तिनो लाभवो खंडवो तेआ शातना कही तेकहेछे । शिष्यअल्पकालीनदीक्षानोधणी रात्निकघणादीक्षानोधणी तेहने आगलो ढूंकडोगंताहोय चालेएहपहिलीतिआशातना शिष्यने १ । रा त्निकवडानेआगलथकोगंताहोयचालेतेआशातना शिष्यने २ । रात्निकने सपक्खंकहतांबराबरीचालेतेहि आशातनाशिष्यने ३ । इम एणे अभिलापें शिष्यवडाने आगलऊभोरहे तेआशातना शिष्यने ४ । शिष्यगुरुनेआगल ऊभोरहेतेआशातनाशिष्यने ५ । शिष्यगुरुने बराबरऊभोरहे तेआशातना शिष्यने ६ । शिष्यगुरु

मतयोः पूर्वतरमाचमतः शैक्षस्याशातना १० एवं पूर्वंगमनागमनमालोचयतः ११ तथा रात्रौ कोजागर्त्तीति पृष्ठे रात्निकेनतद्वचममप्रतिशृण्वतः १२ रात्निकस्य। ॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

स्स ६ सेहेराइणियस्स पुरओनिसीइत्ताभवइ आसायणासेहस्स ७ सेहेराइणियस्स सपक्खंनिसीइत्ताभवइ आसायणासेहस्स ८ सेहेराइणियस्स आसन्नंनिसीइत्ताभवइ आसायणासेहस्स ९ एवंएएणंअभिलावेणं सेहेराइणिएणंसद्धिंवहिया विहारभूमिंनिक्खंते समाणे तत्थपुव्वामेवसेहतराए आयामेइपच्छाराइणिए आसा यणासेहस्स १० सेहेराइणिएणंसद्धिं वहियाविहारभूमिं वा निक्खंतेसमाणे तत्थपुव्वामेवसेहतराएआलोएइ पच्छाराइणिए आसायणासेहस्स ११ सेहेराइणियस्सराओवावियालेवावाहरमाणस्स अज्जोकेसुत्ते केजागरेत त्थसेहेजागरमाणेराइणियस्स अपडिसुणेत्ताभवइ आसायणासेहस्स १२ सेहेराइणियस्स पुव्वं संलवत्तए तंपु

मे आगलथको बेसे तेआशातनाशिष्यने ७। शिष्यगुरुने बराबर बेसे तेआशातनाशिष्यने ८। शिष्यआसन्नकहतां ढूंकडोथकोबेसे तेआशातनाशिष्यने ९। एणंएणं अभिलापें ९। आशातना। शिष्यगुरुबेहुंफेरेगयाथकां तिहांशिष्यपहिलेआचमनलेई जलशुचि करे तेआशातनाशिष्यने १०। शिष्यगुरुसाथें वहिर्भूमिथंडिलें चैत्यजिनमूर्ति अथवा भूमिकायें जातांथकां पहिलेशिष्य इरियावही पडिकमे पछेगुरुपडिकमे तेआशातना शिष्यने ११। शिष्यगुरुनेपहिलेंहीज आवणहा रमाडे गुरु बोलाविना बोले तेआशातना शिष्यने १२। शिष्य प्रतें गुरुयें पूछ्यो कवण रात्रियेंसूताछे अथवा कवण जागेछे एहवं पूछेथके शिष्य जागतो थ ॥ भाषा ॥

पूर्वमालपनीयं कंचनअवमस्यपूर्वतरमालपत: १३ अशनादिलब्धमपरस्य पूर्वमालोचयत: १४ एवमन्यस्योपदर्शयत: १५ एवंनिमंत्रयत: १६ रात्निकमनापृच्छा
ऽन्यस्मैभक्तादिददत: १७ स्वयंप्रधानतरं भुंजानस्य १८ क्वचित्प्रयोजनेव्याहरतो रात्निकस्यचवाप्रतिशृण्वत: १९ रात्निकम्प्रतितत्समचतात्पृहताग्रब्देन बहुधा

स्थामेवसीहतराए आलवइ पच्छाराइणिए आसायणासेहस्स १३ सेहे० असणंवापाणंवाखाइमंवासाइमंवा
पडिगाहित्ता तंपुव्वामेवसीहतराएगिहस्सआलोएइ पच्छाराइणियस्स आसायणासेहस्स १४ सेहेअसणंवा४
पडिगाहित्तापुव्वामेवसीहतराएगिहस्सपडिदंसेइपच्छाराइणिए आसायणासेहस्स १५ सेहेअसणंवा४पडिगा
हित्ता पुव्वामेवसीहतराएअन्नस्स उवणिमंतेइ पच्छाराइणिए आसायणासेहस्स १६ सेहेराइणिएणंसद्धिंअस
णंवा४पडिगाहित्तातंराइणियं अणापुच्छित्ता जस्सजस्सइच्छइ तस्सतस्सखद्धं२दययइ आसायणासेहस्स१७

को उत्तर न दे तेआशातना शिष्यने १३। शिष्यअशनपान खादिम स्वादिमविहरीने ते पहिले बीजाआगलआलोईनेपछे गुरुनेआगलआलोवे तेआशातना
शिष्यने १४। शिष्यअशनपान खादिमस्वादिम विहरीनेपेहिले बीजासाधूने देखाडेपछे गुरुने देखाडे तेआशातना शिष्यने १५। शिष्य अशनपान खादिम
स्वादिम विहरीने पहिले बीजासाधुने निमंत्रणादे पछे गुरुने निमंत्रे तेआशातना शिष्यने १६। शिष्यगुरु साथे अशन पान खादिम स्वादिम विहरीने गुरु
ने अण पूछे थकें जेजे साधुवांछे तेह तेहने आपे तेआशातनाशिष्यने १७। शिष्य गु.ने साथे असनपान खादिम स्वादिम विहरीने मनोज्ञमनोज्ञ स्निग्धस्नि

॥ टीका ॥

भाषमाणस्य २० व्याहूतेनमस्तकेनवन्दे इतिशक्त्येकिंभणमीतिब्रुवाणस्य २१ प्रेरयतिशाचिकि कस्त्वंप्रेरणायामितिवदतः २२ आचार्यग्लानंकिंनप्रतिचरसीत्या द्युक्ते त्वंकिंनतंप्रतिचरसीत्यादिभणतः २३ धर्मंकथयतिगुरावन्यमनस्कतां भजतोऽनुमोदयतइत्यर्थः २४ कथयतिगुरौनस्मरसीतिवदतः २५ धर्मकथामाच्छिदतः

॥ मूल ॥

सेहेराइणिएणंसद्धिंअसणंवा ४ आहारेमाणे तत्थसेहे खद्धं खद्धं डायं डायं रसियं रसियं उसढं उसढं मणुन्नं मणुन्नं मणामं मणामं निद्धं निद्धं लुक्खं लुक्खं आहारित्ता भवइ आसायणासेहस्स १८ सेहेराइणियस्स वाह रमाणस्सअप्पडिसुणित्ताभवइ आसायणासेहस्स १९ सेहेरायणियं खद्धं खद्धं वत्ताभवइ आसायणासेहस्स २० सेहेराइणियं किंवइत्ताभवइ आसायणासेहस्स २१ सेहेराइणियंतुमंइइवत्ताभवइ आसायणासेहस्स २२ सेहेरायणियं तज्जाएणं तज्जायंपडिहणित्ताभवइ आसायणा० २३ सेहेराइणियस्स कहंकहेमाणस्स नोसु

॥ भाषा ॥

ग्ध रुक्षरुक्ष आप भोजनकरे ते आशातना शिष्यने १८। शिष्य गुरुयें बोलाव्योथकों वलतो उत्तर न आपे ते आशातना शिष्यने १९। शिष्य गुरुयें बोलाव्यो थकों ठामे बेठोथकों उत्तर दे ते आशातना शिष्यने २०। शिष्य गुरुयें बोलाव्योथकों मत्थेण वंदामि एहने स्थाने शुंकहोछो एहवुं बोले ते आशातना शिष्यने २१। वडायें प्रेरणाकरतां कांईक कार्यनी आज्ञा देतांथकां तुं कोण प्रेरणा करणहार एहवो बोलि तेआशातना शिष्यने २२। शिष्यप्रते वडाये ग्लान आचार्यनी पर्युपासना केमनथी करतो एम कहतांथकां तुं केमनथी करतो एहवुं बोले ते आशातना शिष्यने २३। गुरुयें धर्मोपदेश करतांथकां अन्यचित्त होय तेणे अशिष्य अनुमोदे ते आशातना शिष्यने २४। शिष्य गुरुयें कांइएक वार्ता कहतांथकां तम्हे भूलो गयाछो एमनथी एमछे एहवो बोले ते आशातना

॥ टीका ॥

२६ भिक्षावेलावर्त्ततइत्यादिवचनतः पर्षद्भिंदानस्य २७ गुरुपर्षद्भेदानुत्थितायास्तथैवव्यवस्थिताया धर्मंकथयतः २८ गुरोः संस्तारकंपादेनघट्टयतः २९ गुरोः संस्तारकेनिषीदतः ३० उच्चासनेनिषीदतः ३१ समासनेप्येवं ३२ वयस्विगत्समासूत्रोक्ताच रात्रिकस्यालपतस्तत्रगतएवासनादिस्थितएव प्रतिशृणोति

॥ मूल ॥

भिणेत्तवइ आसायणासेहस्स २५सेहेरायणियस्स कहंकहेमाणस्स नोसरसि एवंवत्ताभवइ आसायणा०२५ सेहेराइणियस्स कहंकहेमाणस्स कहंआच्छिदित्ताभवइ आसायणासेहस्स २६ सेहेराइणियस्स कहंकहेमाणस्स परिसंभित्ताभवइआसायणासेहस्स २७ सेहेराइणियस्स कहंकहेमाणस्स तीसेयपरिसाए अणुठिआए अभिन्नाए अवोच्छिन्नाए अवोगडाए दोच्चंपितच्चंपि तामेवकहंकहेत्ताभवइ आसायणासेहस्स २८ सेहे राइणियस्स सेज्जासंथारगंपाएणं संघट्टित्ता हत्थेणंअणुन्नवेत्तागच्छइआसा० २९ सेहेराइणियस्स सेज्जासंथा रए चिट्ठित्ता वा निसीइत्ता तुयट्टित्तावा आसा० ३० सेहेराइणियस्स उच्चासणंसिवा ३१ समासणंसिवा चिट्ठित्तावा निसीइत्तावा तुयट्टित्तावा भवइआसायणासेहस्स ३२ सेहेराइणियस्स वाहरमाणस्स तत्थगए

॥ भाषा ॥

शिष्यने २५ । जेशिष्य गुरुयें धर्मकथा कहतां थकां धर्मकथानो छेदन करे तेआशातना शिष्यने २६ । शिष्य गुरु सभाये बेठा थकां भिक्षानी वेलाथई इत्यादि कहीने पर्षदानो भेदकरे ते आशातना शिष्यने २७ । शिष्य गुरु सभायें बेठा थकां पर्षदाप्रति धर्मोपदेश करे ते आशातना शिष्यने २८ । शिष्य गुरुना आसनप्रतें पांवथकी संघट्टकरे ते आशातना शिष्यने २९ । शिष्य गुरुने आसनें बेसे ते आशातना शिष्यने ३० । शिष्य गुरु थकी ऊंचे आसने बेसे ३१ ।

आगत्य हि प्रत्युत्तरं देयमिति शक्षस्याशातनेति ३३ तेत्तीसंभोमत्ति भौमानि नगराकाराणि विशिष्टस्थानानीत्यन्ये तथा जयाणंसूरिए इत्यादि इह सूर्यस्य मण्डलया-
रंतरं द्वे द्वे योजने अष्टचत्वारिंशच्चैकषष्ठिभागाः एतद्द्विगुणं पंचयोजनानि पंचत्रिंशच्चैकषष्ठिभागा एतावता हीनविष्कम्भं सर्वबाह्यमण्डलाद्द्वितीयं मण्डलं भवति
ततश्च वृत्तक्षेत्रपरिधितः न्यायेन परिधितः सप्तदशभिर्योजनैरष्टत्रिंशता चैकषष्ठिभागैर्न्यूनं द्वितीयमंडलं सर्वबाह्यमंडलाद्भवति एवं तृतीयमंडले एतद्द्विगुणेन हीनं भ
वति तथाहि तद्विष्कम्भतएकादशभिर्योजनैर्नवभिश्चैकषष्ठिभागैः पर्यन्तिमाद्धीनं भवति परिधितस्तु पंचत्रिंशता योजनैः पंचदशभिश्चैकषष्ठिभागैर्न्यूनं भवति तच्च
चौणिलक्षाणि अष्टादशसहस्राणि द्वेशतएकोनाशीत्युत्तराः षट्चत्वारिंशच्चैकषष्ठिभागा इति तथान्तिममंडलात्संडलेन द्वाभ्यां मुहूर्त्तस्यैकषष्ठिभागाभ्यां दिनवृद्धिभि

॥ मूल ॥

चमरस्सणं असुरिंदस्स असुररस्सो चमरचंचाएरायहाणीए एक्का
मेक्कावाराएतेत्तीसं २ भोमा प० महाविदेहेणं वासे तेत्तीसं जोयणसहस्साइं साइरेगाइं विक्खंभेणं प० जयाणंसू
रिए बाहिराणंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ताणं चारंचरइ तयाणं इहगयस्स पुरिसस्स तेत्तीसाए जोयणसहस्से

॥ भाषा

गुरुने समान आसने बेसे ते आशातना शिष्यने ३२। गुरुये कांइक वार्ता पूछ्यां थकां आसने बेठांइ उत्तर दे ते आशातना शिष्यने ३३। एह तेत्रीस आशा
तना कही ३३॥ असुरेंद्र असुर कुमारनो राजा एहवा चमरेंद्रनी चमरचंचा राजधानीने विषे एकेकें वारें तेत्रीस तेत्रीस नगरने आकारें भला स्थानक
कह्या। जंबूद्वीप संबंधी महाविदेहक्षेत्र तेत्रीस हजार योजन झाझेरो पिहुलपणे कह्यो। जिवारे सूर्य सर्वबाह्य मंडल थकी त्रीजे मंडले आवीने भ्रमणकरे
तिवारे भरतक्षेत्रगत मनुष्यने तेत्रीस हजार योजनथको दृष्टिगोचर आवे। ते पोसो पूनिमे मकर संक्रांति पछे माह वदी १ एकम दिने सूर्य उत्तरायण

वति तथाचतृतीयेमंडलेयदा सूर्यश्चरति तदाद्वादशमुहूर्त्ताश्चत्वारश्चैकषष्ठिभागा मुहूर्त्तस्य दिनप्रमाणंभवति तदर्द्धं चैकषष्ठिभागीकृतेन अष्टषष्ठ्यधिक शतत्र यलक्षणेन स्थूलगणितस्यविवक्षितत्वात् परित्यक्तांशा: ३१८२२८ तृतीयमंडलपरिधौगुणितेसति एकषष्ठ्याचषष्ठिगुणितया भागेहृतेयल्लभ्यते तत्तृतीयमंडलेच क्षु: स्पर्शप्रमाणंभवति तच्चद्वात्रिंशत्सहस्राण्येकोत्तराणि ३२००१ अंशानामेकषष्ट्याभागलब्धाश्च एकोनपंचाशत्षष्ठिभागा योजनस्य ४९। ६० त्रयोविंशतिश्चैक षष्ठिभागा योजनषष्ठिभागस्य २३। ६१ एतत्तृतीयमंडले चक्षु:स्पर्शस्यप्रमाणं जम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्यामुपलभ्यते इह यदुक्तं त्रयस्त्रिंशत्किंचिन्न्यूना तत्रसातिरेकस्ययोज नस्यापिन्यूनमहत्त्वता विवक्षितेतिसम्भाव्यते चतुर्दशमंडलेपुनरिदं यथोक्तमेवप्रमाणंभवति प्रतिमंडलंयोजनचतुरशीत्या: साधिकाया: प्रथममंडलमानेप्रक्षेप ॥ टीका॥

॥ ९५ ॥

हिं किंचिविसेसूणेहिं चक्खुफासं हव्वमागच्छइ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेत्तीसं पलिओवमाइं ठिई अहेसत्तमाए पुढवीए काल महाकाल रोरुए महारोरुएसु नेरइयाणं उक्कोसेणं तेत्तीसंसागरोवमाइं ठिई अप्पइट्ठाणे नेरइएनेरइयाणं अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई प० ॥ मूल ॥

चार्यो निषध पर्वत भणी तिवारे त्रीजे मांडले तेत्रीस हजार झांझेरो दृष्टिगोचर आवे। त्रीजे मंडले सूर्य चारकरे तिवारे बारे मुहूर्त एक मुहूर्तना एकस ठिया च्यार भाग प्रमाणें दिवस होय। अने सर्वबाह्य मंडले सूर्य होय तिवारें अेकतीस हजार आठ से एकतीस योजनना साठिया तीस वेगलें थकें इहां नां माणसने दृष्टिगोचर आवे। एणीये रत्नप्रभा पृथिवीये केतला एक नारकीनो तेत्रीस पल्योपमनो आउखो कह्यो। हेठे सातमी पृथिवीयें पूर्वादिक दिस थकोमांडी काल १। महाकाल २। रुरुक ३। महारुरुक ४। एह चिहुं नरकावासाना नारकीनो उत्कृष्ट तेत्रीस सागरोपमनो स्थिति कही। विचले ॥ भाषा ॥

अथचतुस्त्रिंशत्तमस्थानके किमपिलिख्यते बुद्धाइमेसंति बुद्धानांतीर्थंकृतामप्यःतिशेषा अतिशया बुद्धातिशेषाः अवस्थितमवृद्धि

णादिति ॥ ३३ ॥ अथचतुस्त्रिंशत्तमस्थानके किमपिलिख्यते ... सोहम्मीसाणेसु अत्थेगइयाणं देवाणं तेत्तीसं ॥ मूल

असुराणं अत्थेगइयाणं देवाणं तेत्तीसं पलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु अत्थेगइयाणं देवाणं तेत्तीसं

असुराणं अत्थेगइयाणं देवाणं तेत्तीसं पलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु अत्थेगइयाणं देवाणं तेत्तीसं

पलिउवमाइं ठिई प० विजय वेजयंत जयंत अपराजिएसु विमाणेसु उक्कोसेणं तेत्तीसंसागरोवमाइं ठिई

प० जेदेवा सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरो

वमाइं ठिई प० तेणंदेवा तेत्तीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा उस्ससंतिवा निस्ससंतिवा

तेसिणं देवाणं तेत्तीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जेतेत्तीसभवग्गह

णेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ ३३ ॥ चोत्तीसंबुद्धाइ

॥ भाष

अप्पइट्ठाण नरके नारकीनी जघन्य स्थिति नथी उत्कृष्ट तेत्रीस सागरोपमनी स्थिति कही। केतलाएक असुर कुमार देवतानी तेत्रीस पल्योपमनी स्थिति

कही। सौधर्म ईशान देवलोकें केतलाएक देवतानी तेत्रीस पल्योपमनी स्थिति कही। विजय १ वैजयंत २ जयंत अपराजित ४ विमाने देवतानी तेत्रीस

सागरोपमनी स्थितिकही। जेदेवता विचले सर्वार्थसिद्ध महाविमाने देवतापणे उपनाछे ते देवतानी जघन्य स्थितिनथी उत्कृष्ट तेत्रीस सागरोपमनी स्थिति

कही। ते देवता तेत्रीस पखवाडे गयेथकें स्वासोस्वासले घर्णाले उंचाले नीचा मूंके तेह देवतानें तेत्रीस सहस्र वर्षगये आहारनी वांछा उपजे। छे केतला

एक भव्यजीव जे तेत्रीस भवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरस्ये मोक्ष जास्ये। इति तेत्रीसमो समवाय संपूर्णम् ॥ ३३ ॥

॥ टीका ॥

स्वभावंकेशाश्चशिरोजा: श्मश्रूणिचकूर्चरोमाणिचशेषशरीरलोमानि नखाश्चप्रतीताइतिद्वन्द्वैकत्वमित्येक: १ निरामया नीरोगानिरुपलेपानिर्मला गात्रयष्टिस्त नुलतेतिद्वितीय: २ गोक्षीरपाण्डुरंमांसंशोणितमितितृतीय: ३ तथापद्मंचकमलंगंधद्रव्यविशेषोवा यत्पद्मकमितिरूढं उत्पलंच नीलोत्पलमुत्पलकुष्टंवा गंधद्रव्य विशेषस्तयोर्योगंध: सयत्रास्ति तत्तथोच्छ्वासनि:श्वासमितिचतुर्थ: ४ प्रच्छन्नमाहारनिर्हारं अभ्यवहरणमूत्रपुरीषोत्सर्गौ प्रच्छन्नत्वमेवस्फुटतरमाह अदृश्यंमंसच क्षुषानपुनरवध्यादिलोचनेन इतिपंचमं ५ एतच्चद्वितीयादिकमतिशयचतुष्कंजन्मप्रत्ययं आकाशकेचक्रंषष्ठं तथाआगाशगतंव्योमवर्ति आकाशकंवा प्रकाशमि

॥ मूल ॥

सेसा प० तं० अवठिए केसमंसुरोमनहे १ निरामया निरुवलेवा गायलठी २ गोक्खीरपंडुरे मंससोणिए ३ पउमुप्पलगंधिए उस्सासनिस्सासे ४ पच्छन्ने आहारनीहारे अदिस्से मंसचक्खुणा ५ आगासगयं चक्कं ६

॥ भाषा ॥

हिवे चौत्रीसमो समवाय लिखे छे ॥ चौत्रीस बुद्ध कहतां तीर्थंकरदेव तेहना अतिशय ते बुद्धातिशय बीजा देवनो अपेक्षाये अधिक पणो कह्या तेकहेछे। वधेनहीमस्तकनाकेश श्मश्रूडाढीमूंछ शरीरनारोम। नीरोगवलीनिर्मलशरीर २। गायनादूधसरीखोधवल मांस रुधिर ३। पद्मकमलतेहनागंधसरीखो स्वा सोस्वास नो गंध ४। अदृश्यदीसेनही मांस चक्षुयेंकरी येतले चर्मचक्षुयेकरी एहवोप्रछन्नगुप्तआहार जीमणनीविधि वलीनीहार मूत्रपुरीषनोत्याग ५। एणी येछअस्यदृष्टीयें येपांचअतिशयथया। तेमांहिपहिलो मूकीबीजायकीपंचमालगें चारअतिशय जन्मथकी माडी ने होय ५। जेहनोआकाशगत धर्मचक्रचा ले ६। आकाशगत छत्र ७। आकाशगतवर प्रधान श्वेतचामर ८। आकाशनीपरें अत्यंत निर्मल एहवास्फटिकरत्नमयीपादपीठसहितसिंहासन ९। आका

॥ टीका ॥

त्यर्थः चक्रंधर्मचक्रमितिषष्ठः ६ आकाशकेछत्रमितिसप्तमः एवमाकाशगंछत्रंछत्रत्रयमित्यर्थः ७ आकाशकेप्रकाशे श्वेतवरचामरे प्रकीर्णकंइत्यष्टमः ८ आगा
सफालियामयत्ति आकाशमिवयदत्यंत मच्छंस्फटिकं तन्मयं सिंहासनसहपादपीठमितिनवमः ९ आगासगओत्ति आकाशगतोऽत्यर्थंतुंगमित्यर्थः कुडिभित्ति
घुपताकाः संभाव्यन्ते तत्सहस्रैः परिमंडितश्चासावभिरामश्चातिरमणीय इतिविग्रहः इंदज्झओत्ति शेषध्वजापेक्षयातिमहत्वादिंद्रश्चासौध्वजश्च इन्द्रध्वजइति
पुरओत्ति जिनस्याग्रतोगच्छतीतिदशमः १० चिठ्ठतिवानिसीयंतिवेत्ति तिष्ठंतिगतिनिवृत्यानिषीदंत्युपविशंतितक्खणादेवत्ति तत्क्षणमेवाकालहीनमित्यर्थः
पत्रैः संछिन्नइतिवक्तव्येप्राकृतत्वात् संछन्नपत्रइत्युक्तं सचासौपुष्पपल्लवसमाकुलश्चेतिविग्रहः पल्लवा अंकुराः सच्छत्रः सध्वजः सघंटः सपताकोऽशोकवरपादप

॥ मूल ॥

आगासगयं छत्तं ७ आगासगयाउ सेयवरचामराउ ८ आगासफालियामयं सपायपीढं सीहासणं ९ आगा
सगउ कुडभीसहस्सपरिमंडियाभिरामो इंदज्झउ पुरउ गच्छइ १० जत्थ जत्थ वियणं अरहंताभगवंताचिठ्ठं
तिवा निसीयंतिवा तत्थ तत्थ वियणं तक्खणादेव संछन्नपत्तपुष्फपल्लवसमाउलो सछत्तो सज्झउ सघंठो सपडा

॥ भाषा ॥

आगल चाले १०। ...न एतले अत्यंतऊंचो लघुपताकाना सहस्रकरी परिमंडित मनोहर एहवोइन्द्रध्वज अन्यध्वजनीअपेक्षायें मोटो तेमहेंद्रध्वजजिननें
जिहां जिहां अरहंत भगवंत ऊभारहे अथवा बेसे तिहांतिहां तत्काल पत्रें करीछायो अने फूलपल्लवेंकरी सर्वतः व्याप्त ध्वजासहित घंटापताका सहित
वर प्रधान अशोकवृक्ष ऊपर छायाकरें ११। वेगलो थोडोपूठें मस्तकने प्रदेशें तेजमंडल भामंडल होय तेभामंडल अंधकारने दसेदिशे नसाडे १२। जिहां

॥ टीका

त्येकादश: ११ ईसिमित्ति ईषदल्पं पिठ्ठओत्ति पृष्टत: पश्चाद्भागे मउडठ्ठाणमिति मस्तकप्रदेशेतेजोमण्डलं प्रभापटलमितिद्वादश: १२ बहुसमरमणीयोभूमिभाग इतित्रयोदश: १३ अहोसिरत्ति अधोमुखा: कंटका भवंतीति चतुर्दश: १४ ऋतवोविपरीता: कथमित्याह सुखस्पर्शाभवंतीति पंचदश: ५१ योजनंयावत् क्षेत्र शुद्धि: संवर्त्तकवातेनेति षोडश: १६ जुत्तफुसिएणत्ति उचितबिन्दुपातेनेति निहयरयरेणुयंति वातोत्खातमाकाशवर्त्तिरजो भूवर्त्तीतुरेणुरिति गंधोदकवर्षाभिधा न:सप्तदश: १७ जलस्थलजं यद्भास्वरंप्रभूतंच कुसुमंतेनवृंतस्थापिताऊर्द्धमुखेनदशार्द्धवर्णेन पंचवर्णेनजानुनोत्सेधस्य उच्चत्वस्ययत्प्रमाणं यस्यसजानूत्सेधप्रमाणमा

॥ मूल ॥

गोक्खीरगवरपायवे अन्निसंजायइ ११ ईसिंपिठ्ठउ मउडठाणंमि तेयमंडलं अन्निसंजायइ अंधकारे वियणं दसदिसाउ पन्नासेइ ११ बहुसमरमणिज्जे नूमिन्नागे १३ अहोसिरा कंटया जायंति १४ उऊविवरीया सुहफासा नवंति १५ सीयलेणं सुहफासेणं सुरन्निणामारुएणं जोयणपरिमंडलं सव्वउ समंता संपमज्जिज्जा

॥ भाषा

तीर्थंकर विहारकरे तिहां वर्णामम रमणीक भूमिभाग होय १३। जेणं मार्गे तीर्थंकर विहारकरे कांटा अधोमस्तकेहोय १४। ऋतु विपरीत एतले उष्ना लायें शीयालानोभाव शीयालायेउष्नालानोभाव तेमाटें सुखरूपस्पर्शहोय १५। शीतल सुखस्पर्श सुगंधि ठाढो मंद गंधयुक्त एहवा संवर्तवायेंकरी एकयोज नमंडललगी सगली दिसाविदिसा प्रमार्जे १६। जेणे मार्गे तीर्थंकर विहारकरे तेहमार्गेमेंवआकाशवर्तीरज भूमिवर्तीरेणु गंधजलनापरिमित सूक्ष्मसूक्ष्म विंदु ये करीनसाडे १७। स्थल कुसुम तेचंपाजाईप्रमुख जलकुसुम तेकमलादिक भास्वर तेजवंत प्रभूतघणा नीचाछेवींट जेहना एतलेऊर्द्धमुखे पांचवर्णे फूलेंकरीढीं

|| टीका ||

घः पुष्पोपचारः पुष्पप्रकरइत्यष्टादशः १८ तथाकालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामे भवइत्ति कालागरुश्चगंधद्रव्यविशेषः प्रवरकुंदुरुक्कश्चचीडा
भिधानं गंधद्रव्यंतुरुक्कंचसिल्हकाभिधानं गंधद्रव्यमिति द्वंद्वस्ततंएतल्लक्षणो योधूपस्तस्यमघमघायमानो बहुलसौरभ्यो योगंधउद्धुतउद्भूतस्तेनाभिराममभिरमणी
यंयत्तत्तथा स्थानंनिषीदनस्थान मितिप्रक्रमइत्येकोनविंशतितमः १९ तथाउभयोपासिंचणं अरहंताणं भगवंताणं दुवेजक्खाकडयतुडियथंभियभुयाचामरुक्खेव
णं करंतित्ति कटकानिप्रकोष्टाभरणविशेषास्तुटितानि बाह्वाभरणविशेषास्तैरतिबहुत्वेनस्तंभितावभस्तंभितौभुजौययोस्तौ तथायक्षौदेवावितिविंशतितमः २०
वृहद्वाचनायामनंतरोक्तमतिशयद्वयंनाधीयते अतस्तस्यांपूर्वोक्तादशैव अमनोज्ञानांशब्दादीनामपकर्षोऽभावइत्येकोनविंशतितमः १९ मनोज्ञानांप्रादुर्भावइति
विंशतितमः २० पच्चाहरओत्ति प्रव्याहरतोव्याकुर्वतोभगवतः हिययगमणीउत्ति हृदयंगमः जोयणनीहारीत्ति योजनातिक्रमी स्वरइत्येकविंशः २१ अद्धमाग

|| मूल ||

इ १६ जुत्तफुसिएणं मेहेणय निहयरयरेणू पकिज्जइ १७ जलथलयभासुरपभूतेणं विंटठावियदसद्धवन्नेणं
कुसुमेणं जाणुस्सेहप्पमाणमित्ते पुप्फोवयारे किज्जइ १८ अमणुन्नाणं सद्दफरिसरसरूवगंधाणं अवकरिसो
भवइ मणुन्नाणं सद्दफरिसरसरूवगंधाणं पाउब्भावो भवइ १९ उभओ पासिंचणं अरहंताणं भगवंताणं दुवे

|| भाषा ||

चणना ऊंचप्रमाणमात्रें फूलनीपूजा फूलपगरकरे १८। खोटा शब्दस्पर्शरसरूप गंधनो अभाव होय १९। मनोहर शब्दस्पर्शरसरूपगंधनो प्रादुर्भाव होय
सिद्धांत मूलमतोयं वलीवाचनांतरे कृष्णागुरुप्रमुख धूपउखेवे सिंहूपासे वेयचजभा चामरउखेवे २०। वखाण करतां भगवंतनो हृदयंगम अनेसोहामणोयोज

हीयत्ति प्राकृतादीनांषण्णांभाषाविशेषाणां मध्येयामागधीनामभाषा रसोलसोमागध्यामित्यादिलक्षणवतीसा असमाश्रितस्वकीयसमग्रलक्षणार्द्धमागधीत्युच्यते तयाधर्ममाख्याति तस्याएवातिकोमलत्वादिति द्वाविंश: २२ भासिज्जमाणीति भगवताभिधीयमाना आरियमणारियाणंति आर्यानार्य देशोत्पन्नानां द्विपदा मनुष्याश्चतुष्पदागवादय: मृगाआटव्या: पशवोग्राम्या: पक्षिण: प्रतीता: सरीसृपा उर:परिसर्पाभुजपरिसर्पाश्चेति तेषांकिमात्मनआत्मातया आत्मीयभेत्यर्थ: भाषा तया भाषाभावेनपरिणमतीतिसंबन्ध: किंभूतासौभाषेत्याह हितमभ्युदय: शिवंमोक्ष: सुखंश्रवणकालोद्भवमानंदन्ददातीतिहितशिवसुखदे तित्रयोविंश: २३ पूर्वंभवांतरेऽनादिकालेवा जातिप्रत्ययबद्धं निकाचितं वैरसमित्रभावोयेषांतेतथा तेपिच आस्तांमध्येदेवावैमानिका असुरानागाश्चभवनपतिविशेषा:

जरका कणगतुच्छियघंजियन्तुया चामरुक्खेवणं करंति २० पच्चाहरन्त वियणं हियएगममणीत्र जोयणनीहारी सरो २१ भगवंचणं अद्धमागहीए भासाए धम्ममाइक्खइ २२ सावियणं अद्धमागहीभासा भासिज्जमाणी तेसिंसव्वेसिं आरियमणारियाणं दुप्पयचउप्पयमियपसुपक्खिसरीसिवाणं अप्पप्पणोहियसिवसुहदायभास

नलगे विस्तरतो शब्दहोय २१। भगवंत छ भाषामांहि अर्द्धमागधीभाषायेंकरीधर्मप्रतें कहे २२। तेहीजवणि अर्द्धमागधीभाषा सगलाआर्यअनार्यदेशनांउपनानेंद्विपदमनुष्यने चतुष्पदगवादिकनें मृगअटवीजीव पशुग्रामसंबंधीढोर खेचर उरपरभुजपरसर्प एहनाआत्मानेंहित अभ्युदयविशेष मोक्षसुखआनंदतेहनेदेणहारीभाषापणें परिणमे २३। भवांतरे अनादिकाले अथवा जातिहेतुकबद्धनिकाचित वैर बांध्या जेणे एहवादेव मावैनिक १। असुरनागकुमार एहभवनपतीदेव सुरा शोभनवर्णापेतत ज्योतिषी यक्ष राक्षस किंनर किंपुरुष एह चारव्यंतर विशेष गरुडलांछनपणाथकी सोपर्णकुमार भवनपति विशेष गंधर्वमहोर

सुवर्णाः शोभनवर्णा एतेचज्योतिष्कायक्षराक्षसकिन्नराःकिंपुरुषाःव्यंतरभेदाःगरुडागरुडलांछनत्वात् सुपर्णकुमाराभवनपतिविशेषाःगन्धर्वामहोरगाश्चव्यंतरवि शेषाएव एतेषांद्वंद्वः पसंतचित्तमाणसा प्रशांतानिसमंगतानिचित्ताणि रागद्वेषाद्यनेकविधविकारयुक्ततया विविधानिमानसान्यंतःकरणानियेषांते प्रशांतचि त्तमानसा धर्मंनिशामयंति इतिचतुर्विंशः २४ वृद्धवादतयाइदमन्यदतिशयद्वयमधीयते यदुत अन्यतीर्थिकप्रावचनिका अपिचणं वंदंताभगवंतमितिगम्यते इतिपंचविंशः २५ आगताः संतोऽर्हतः पादमूले निःप्रतिवचनाभवंति इतिषड्विंशः २६ जओजओविहरंति यत्रयत्रापिचदेशे तत्रो २ त्ति तत्रतत्रापिच पंच विंशतौ योजनेषु ईतिर्धान्याद्युपद्रवकारी प्रचुरमूषकादि प्राणिगणइतिसप्तविंशः २७ मारिर्जनमरककल्पटाविंशः २८ स्वचक्रं स्वकीयराजसैन्यं तदुपद्रवका ॥ टीका ॥

त्ताए परिणमइ २३ पुव्वबद्धवेराविय णं देवासुरनागसुवण्णजक्खरक्खसकिंनरकिंपुरिसगरुलगंधव्वमहोरगाअरहंत पायमूले पसंतचित्तमाणसा धम्मं निसामंति २४ अन्नउत्थियपावयणियावि य णमागया वंदंति २५ आगया समाणा अरहंत पायमूले निप्पडिवयणाहवंति २६ जत्त जत्त वि य णं अरहंता भगवंता विहरंति तत्त तत्त ॥ मूल ॥

गव्यंतरविशेष एहसगला वैरभावछांडीने अरिहंतने पायमूले प्रसन्नचित्त प्रशांतथयाछे चित्तरागद्वेषादि अनेकविधविकार जेहना एहवाधर्मप्रतें सांभले २४। अन्यतीर्थीअन्ययूथिकाकपिलादिक अन्य प्रवचन मिथ्यात्वशास्त्रनावर्णीतेहीपणिआव्यायकाभगवंतप्रतें वांदे २५। तेहअन्यशास्त्रनावादीप्रतिवादीआव्याथका अरिहंतना पायमूले निष्प्रतिवचना उत्तरदेवाभणी असमर्थथया २६। जेणेप्रदेशे अरिहंत भगवंतविहरे विचरे तिहां योजन पंचवीसलगे ईति धान्यादिउप द्रवकारी प्रचुर मूषकादिक न होय २७। मारी लोगमरकीनहोय २८। स्वचक्र स्वदेशी कटक उपद्रवनकरे २९। परचक्र परदेशी कटकनो भयनहोय ३०। ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

रिनभवतीति एकोनत्रिंश: २९ एवंपरचक्रं परराजसैन्यमितित्रिंश: ३० अतिवृष्टिरधिकवर्षइत्येकत्रिंश: ३१ अनावृष्टिर्वर्षणाभावइतिद्वात्रिंश: ३२ दुर्भिक्षंदु:

॥ टीका ॥

ष्कालइतित्रयस्त्रिंश: ३३ उप्पाइयावाहित्ति उत्पाताअनिष्टसूचका रुधिरवृष्ट्यादयस्तद्धेतुकाये ऽनर्थास्तेऔत्पातिका स्तथाव्याधयोज्वराद्यास्तदुपशमोऽभावइति चतुस्त्रिंशत्तम: ३४ अन्यच्च पञ्चाहरग्गोइतआरभ्ययेभिहितास्ते प्रभामंडलंचकर्मक्षयकृता: शेषाभवप्रत्ययेभ्योऽन्येदेवकृताइति एतेचयदन्यथापिदृश्यंते तन्मतांतर मेवमंतव्यमिति चक्कवट्टिविजयत्ति चक्रवर्त्तिविजितव्यानिक्षेत्रखण्डानि उक्कोसेणंएएचोत्तीसं तित्थगरासमुप्पज्जंतित्ति समुत्पद्यन्ते सम्भवन्तीत्यर्थ: नत्वेकसमयेजा

॥ मूल ॥

वियणं जोयणपणवीसाएणं ईती नन्नवइ २७ मारी नन्नवइ २८ सचक्कं न न्नवइ २९ परचक्कं न न्नव इ ३० अइवुठी न न्नवइ ३१ अणावुठी न न्नवइ ३२ दुब्भिक्खं न न्नवइ ३३ पुव्वुप्पन्नाविअणं उप्पाइया

॥ भाषा ॥

अतिवृष्टि अधिक वृष्टिनहोय ३१। अनावृष्टि अवर्षणनहोय ३२। दुर्भिक्षकालनहोय ३३। पूर्वे उपना थिण उत्पात अनिष्टसूचक रुधिर वृष्ट्यादिक तथा व्याधि ज्वरादिक तत्कालेंहो उपशमें ३४। एह एकवीसमाथकोमांडो चोत्रीसमालगे अनेप्रभामंडल एतला अतिशय कर्मक्षयथकोहोय शेषवीजाभवप्रत्यय थको वीजादेवकृतछे मतांतरे अन्यथा पणिछे। एहचोत्रीस अतिशयकह्या ॥ जंबूद्वीपनेविषे चोत्रीस चक्रवर्तीयें जीपवायोग्य एतलेसाधनकरवायोग्य क्षेत्रखं ड तेचक्रवर्तिविजय कह्या तेकहेछे। मेरुथको पूर्वापर महाविदेहेंमिलो ३२ विजय एकभरत एकऐरवत एवंसर्वमिली विजयखड ३४ जंबूद्वीपनेविषें ३४। दीर्घवैताढ्यकह्या वत्रीस महाविदेह विजयना ३२। भरतऐरवतना २ एवं जंबूद्वीपनेविषे उत्कृष्टआरे ३४। तीर्थंकरउपजे विदेहना वत्रीसविजय भरतऐरवत ना २ एवं ३४ एकंसमेंजन्मआश्रीचारहोय शीताशीतोदाने विहुंकांठे एकसमयें वेवेहोय अनेवर्तता ३४ कह्या। महाविदेहरावीयेंतिवारे भरतऐरवते [illegible]

यस्तें चतुर्णामेवैकदाजन्मसंभवात्तथाहि मेरोपूर्वापरशिलातलयोर्द्वेद्वेसिंहासनेभवतोऽतो द्वावेवद्वावेवाभिषिच्येतेऽतोद्वयोर्द्वयोरेवजन्मेति दक्षिणोत्तरयोः क्षेत्रयो स्तदानींदिवससद्भावा नभरतैरावतयोजिनोत्पत्तिरर्द्धरात्रएवजिनोत्पत्तेरिति पढमेत्यादि प्रथमायां पृथिव्यांत्रिंशन्नरकवासानांलक्षाणि पंचम्यांत्रीणिषष्ठ्यांपंचो नंलक्षं सप्तम्यां पंचनरका एवं सर्वं मीलने चतुस्त्रिंशल्लक्षाणिभवंतीति ॥ ३४ ॥ पंचत्रिंशत्स्थानकं सुगमम् नवरं सत्य वचनातिशयाः आगमे ॥ टीका ॥

वाही खिप्पामेवउवसमंति ३४ जंबूद्दीवेणंद्दीवे चउत्तीसं चक्कवट्टिविजया प० तं० बत्तीसं महाविदेहे दो नरहेरवए जंबूद्दीवेणंद्दीवे चोत्तीसंदीहवेयड्ढा प० जंबूद्दीवेणंद्दीवे उक्कोसपएचोत्तीसं तित्थकरा समुप्पज्जंति चमरस्सणं असुरिंदस्स असुररन्नो चोत्तीसं नवणावाससयसहस्सा प० पढमपंचमछठीसत्तमासु चउसु पुढवीसु चोत्तीसं निरयावाससयसहस्सा प० ॥ ३४ ॥ पणतीसं सच्चवयणाइसेसा प० ॥ मूल ॥

होय सनेदहांरात्रिहोय तिवारें तिहां दिवसहोय। तीर्थंकरनो जन्म अर्द्धरात्रीयें होय तेमाटे चौचौसनो जन्मसमकालनकह्यो। मेरुनो पूर्वपश्चिम शिलातलने उपर दोयदोय सिंहासनछे एहथी बेबेनो होज अभिषेक थाय एमाटे एकसमये बेबे तीर्थंकरनो जन्म कहिवो। असुरकुमारनाराजा एहवा चमरेन्द्र असुरेन्द्रना चउत्रीसभवनवास शतसहस्र एतलेचउत्रीसलाख भवनकह्या। पहिली नरक पृथिवीयें ३० लाख नरकावासा पांचमीये ३ लाख छट्ठीयें पांचऊंणा एकलाख सातमीये पांच ४ एमचार नरकपृथिवीनांमिली चौत्रीसलाखनरकावासकह्या इतिचौत्रीसमोसमवाय संपूर्ण ॥ ३४ ॥ हिवे पैत्रीसमो समवायलिखेछे पैंत्रीस सत्यवचनना अतिशयकह्या। संस्कारवचन संस्कृतलक्षणवंतपणो १। उदात्तत्व ऊंचेस्वरेंबोलवो २। उपचारोपेतत्व अग्रामीण वचनबोल ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

न दृष्टा एतेतुग्रंथांतरेदृष्टाः संभावितवचनंहिगुणवदृक्तव्यं तद्यथा संस्कारवत् १ उदात्तं २ उपचारोपेतं ३ गंभीरशब्दं ४ अनुनादि ५ दक्षिणं ६ उपनीतरागं ७ महार्थं ८ अव्याहतपौर्वापर्यं ९ शिष्टं १० असंदिग्धं ११ अपहृतान्योत्तरम् १२ हृदयग्राहि १३ देशकालाव्यतीतम् १४ तत्वानुरूपम् १५ अप्रकीर्णप्रसृतम् १६ अन्योन्यप्रगृहीतम् १७ अभिजातम् १८ अतिस्निग्धमधुरम् १९ अपरमर्मविद्धं २० अर्थधर्माभ्यासानपेतम् २१ उदारं २२ परनिंदात्मोत्कर्षविप्रयुक्तम् २३ उपगतश्लाघं २४ अनपनीतम् २५ उत्पादिताच्छिन्नकौतूहलम् २६ अद्रुतं २७ अनतिविलंबितम् २८ विभ्रमविक्षेपकिलिकिंचितादिविमुक्तम् २९ अनेकजातिसंश्रयाद्विचित्रम् ३० आहितविशेषम् ३१ साकारम् ३२ सत्वपरिगृहम् ३३ अपरिखेदितम् ३४ अव्युच्छेदम् ३५ चेति। वचनम् महानुभावैर्वक्तव्यमिति तत्रसंस्कारवत्वंसंस्कृतादिलक्षणयुक्तत्वम् १ उदात्तत्वमुच्चैर्वृत्तिता २ उपचारोपेतत्वमग्राम्यता ३ गंभीरशब्दंमेघस्येव ४ अनुनादित्वं प्रतिरवोपेतता ५ दक्षिणत्वंसरलत्वम् ६ उपनीतरागत्वं मालकोशादिग्रामरागयुक्तता ७ एतेसप्तशब्दापेक्षाअतिशयाः अन्येत्वर्थाश्रयास्तत्रमहार्थत्वम् वृहदभिधेयता ८ अव्याहतपौर्वापर्यत्वम् पूर्वापरवाक्याविरोधः ९ शिष्टत्वंअभिमतसिद्धांतोक्तार्थता वक्तुःशिष्टतासूचकत्वं वा १० असंदिग्धत्वं असंशयकारिता ११ अपहृतान्योत्तरत्वम् परदूषणाविषयता १२ हृदयग्राहित्वम् श्रोतृमनोहरता १३ देशकालाव्यतीतत्वम् प्रस्तावोचितता १४ तत्वानुरूपत्वम् विवक्षितवस्तुस्वरूपानुसारिता १५ अप्रकीर्णप्र

॥ भाषा ॥

वो ३। गंभीर ऊंडेस्वरेबोलवो ४। बोलतां प्रतिशब्दहोय ५। सरसवचनबोलवो ६। मालकोसादि राग सहित स्वरें बोलवो ७। थोडेवचनें अर्थघणोएहवूं बोलवो ८। पूर्वापर विरोध रहित ९। सिद्धांतनो प्रतिपादक १०। संदेह रहित ११। अनेरावादीना वचनें पराभवे नही १२। सांभलहारनो मनहरे १३। दे

॥ टीका ॥

सृतत्वम् सुसंबंधस्यसतः प्रसरणं अथवाऽसंबद्धाधिकारित्वातिविस्तरयोरभावः १६ अन्योन्यप्रगृहीतत्वम् परस्परेण पदानां वाक्यानांवासापेक्षता १७ अभि जातत्वंचक्तुः प्रतिपाद्यस्यैवभूमिकानुसारिता १८ अतिस्निग्धमधुरत्वम् घृतगुडादिवत् सुखकारित्वम् १९ अपरमर्मवेधित्वम् परमर्मानुद्घट्टनस्वरूपत्वम् २० अ र्थधर्माभ्यामानपेतत्वम् अर्थधर्मप्रतिबद्धत्वम् २१ उदारत्वंअभिधेयार्थस्यातुच्छत्वंगुंफगुणविशेषंवा २२ परनिंदात्मोत्कर्षविप्रयुक्तत्वमिति प्रतीतमेव २३ उपगतश्ला घत्वम् उक्तगुणयोगात् प्राप्तश्लाघता २४ अनपनीतत्वम् कारककालवचनलिंगादिव्यत्ययरूपवचनदोषापेतता २५ उत्पादिताछिन्नकौतूहलत्वम् स्वविषयेश्रोतॄ णां जनितमविच्छिन्नं कौतुकं येनतत्तथातद्भावस्तत्त्वम् २६ अद्भुतत्वमनतिविलंबितत्वचप्रतीतम् २७ २८ विभ्रमविक्षेपकिलिकिंचितादिविमुक्तत्वम् विभ्रमोवक्तृ मनसांभ्रांतता विक्षेपस्तस्यैवाभिधेयार्थं प्रत्यनासक्तता किलिकिंचितंरोषभयाभिलाषादिभावानां युगपदसकृत्करणमादिशब्दान्मनोदोषांतरपरिग्रहस्तैर्विमुक्तं यत्तत्तथातद्भावस्तत्त्वम् २९ अनेकजातिसंश्रयाद्विचित्रत्वम् इहजातयोवर्णनीयवस्तुरूपवर्णनानि ३० आहितविशेषत्वम् वचनांतरापेक्षयाढौकितविशेषता ३१ सा

॥ भाषा ॥

ग्रकालें उचितवचनबोलवो १४ अतिविस्तरकरी अणमिलतोनहोय १५। कहिवाने वस्तुने अनुसारेहोय १६। पहिलापदने पाछिलुंपद सापेक्षपणेबोलवो १७ प्रत्यक्ष समझवायोग्य वात कहिवो १८। घृतगुडनोपरे मधुर अनुभवे १९। अनेराना मननेव्यथा नकरे एहवो २०। अर्थ धर्म सहित बोलवो २१। उत्कृष्ट पर्यंत कथक २२। परनिंदा आत्मस्तुति रहित २३। प्रशंसा करवा योग्य २४। कारक काल वचन लिंगेकरी शुद्ध २५ सांभलहारना चित्तने चमत्कारकरे २६ बोलतां उतावलोनहोय २७। रहो रहो ने अक्षर उच्चारण करवुं एहदोषरहित २८। भ्रांतिरहित कहिवायोग्य वस्तुयें संबद्ध क्रोधभयादि रहित बोल वो २९। जे पदार्थ वर्णवे तेहनो विशेष रूप कहियो ३०। वचन कहतां वचनांतरनीअपेक्षायें बोलवो ३१। वेगला वेगला पदकरी अन्वय रूपेबोलवो ३२।

कारत्वम् विच्छिन्नवर्णपदवाक्यत्वेनाकारप्राप्तत्वम् ३२ सत्त्वपरिगृहीतत्वं साहसोपेतता ३३ अपरिखेदितत्वंअनायाससंभवः ३४ अव्युच्छेदित्वंविवक्षितार्थसम्यक् सिद्धियावदनवच्छिन्नवचनप्रमेयतेति ३५ तथादत्तः सप्तमवासुदेवः नंदनः सप्तमबलदेवः एतयोश्चावश्यकाभिप्रायेण षड्विंशतिर्धनुषामुच्चत्वंभवति सुबोधंतत् यतोऽरनाथमल्लिस्वामिनोरन्तरेतावभिहितौ यतोवाचि अरमल्लिअंतरेदोन्निकेसवा पुरिसपुंडरीयदत्तत्ति अरनाथमल्लिनाथयोश्चोच्छ्रयेणत्रिंशत्पंचविंशतिश्च धनुषामुच्चत्वमेतदंतरालवर्त्तिनोश्चवासुदेवयोः षष्टसप्तमयोरेकोनत्रिंशत्षड्विंशतिश्चधनुषांयुज्यतइति इहोक्तानुपंचत्रिंशत्यदिदत्तनन्दनौ कुंथुनाथतीर्थकालेभवतो नचैतदेवंजिनांतरेष्वधीयतइति दुरवबोधमिदमिति सौधर्मकल्पेसौधर्मावतंसकादिषु विमानेषुसर्वेषुपंचसभाभवंति सुधर्मसभा १ उपपातसभा २ अभिषेकसभा ३ अलंकारसभा ४ व्यवसायसभा ५ तत्रसुधर्ममध्यभागेमणिपीठिकोपरि षष्ठियोजनमानोमाणवकोनामचैत्यस्तंभोस्ति तत्रवइरामएसुत्ति वज्रमयेषु

कुंथूणं अरहापणतीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था दत्तेणं वासुदेवे पणतीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था नंदणेणं बलदेवे पणतीसंधणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था सोहम्मे कप्पे सभाए सुहम्माए माणवएचेइयखंभे हेठाउव

साहस सहित बोलवो ३३। अनायासे बोलवो ३४। कहिवानो विषय समाप्त नहोय त्यांलगे वचननो विच्छेदन नहोय ३५। एह भगवंतनो वाणीनागुण जाणिवा एह पैंत्रीस वचनातिशय कह्या ॥ कुंथुनाथ सतरमा अरिहंत ३५ धनुष ऊंचपणे हुया। दत्तनामा सातमो वासुदेव अरनाथनेवारे संभूमचक्रवर्ति पछेहुवोते ३५। धनुष ऊंच पणे हुआ। नंदननामा सातमो बलदेव ३५। धनुष ऊचपणें कह्यो। सौधर्मकल्पें सभा सुधर्मा ने विषे साठियोजनप्रमाण माणवक नाम चैत्यस्तंभनेविषे हेठे अने उपरि अर्द्ध एतले साढाबारह योजन वर्जीने मध्यने विषे पैंत्रीस योजनें वज्रमय गोल वाटला समुद्गकडा तेहने विषे जिन

तथा गालवहत्ता वंत्तुलायंमसमुद्गकाभाजनविशेषास्तेषु। जिणसकहाउत्ति जिनसक्थीनि तीर्थकराणांमनुजलोकनिर्वृतानांसक्थान्यस्थीनिप्रज्ञप्तानीति बीयचउत्थी त्यादि द्वितीयपृथिव्यांपंचविंशतिर्नरकलचाणिचतुर्थ्यांस्तुदशेति पंचत्रिंशत्तानीति ॥ ३५ ॥ षट्त्रिंशस्थानकंस्पष्टमेव नवरं चैत्राश्वयुजोर्मासयो: ॥ टीका ॥

रिंच अठ्ठतेरसअठ्ठतेरसजोयणाणि वज्जेत्ता मज्झे पणतीसजोयणेसु वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु जिणस कहाउ प० बितियचउत्थीसु दोसु पुढवीसु पणतीसं निरयावाससयसहस्सा प० ॥ ३५ ॥ छत्ती संउत्तरज्झयणा प० तं०। विणयसुयं १ परीसहा २ चाउरंगिज्जं ३ असंखयं ४ अकामसकाममरणिज्जं ५ पुरिसविज्जा ६ उरब्भिज्जं ७ काविलियं ८ नमिपव्वज्जा ९ दुमपत्तयं १० बहुसुयपुज्जा ११ हरिएसिज्जं १२ चित्तसंभूयं १३ उसुयारिज्जं १४ सभिक्खुगं १५ समाहिठाणाइं १६ पावसमणिज्जं १७ संजइज्जं १८ ॥ मूल ॥

वीतरागनी दाढा कही बीजीपृथिवी अने चौथी नरक पृथिवी बिहुंनामिली ३५। नरकावासा शतसहस्र कह्या एतले बीजीयें २५। लाख नरकावासा चौथी यें १० लाख नरकावास कह्या ॥ एह पैंत्रीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ३५ ॥ हिवे छत्रीसमो समवाय लिखेछे। छत्रीस उत्तराध्ययनना अध्य यन कह्या तेकहेछे। पहिलो अध्ययन विनयश्रुत १। परीसहाध्ययन २। चउरंगीयो ३। असंखयं ४। अकाम सकाम मरणाय ५। अविद्यावंतपुरुषनो ६ उरभिकबोकडानो ७। कपिलकेवलीनो ८। नमिप्रवज्यानमिराजानो ९ द्रुमपत्रकनो १० बहुश्रुतपूजानो ११। हरिकेशीबलनो १२। चित्रसंभूतिनो १३ इषुकारियराजानो १४। भिक्षु अध्ययन १५। समाधिस्थानक १६। पापश्रमणनो १७। संयतीराजानो १८। मृगापुत्रनो १९। बलीअनाथीनो २०। समुद्र ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

मकृदेकदापूर्णिमायामिति व्यवहारोनिश्चयतस्तु मेषसंक्रांतिदिने तुलासंक्रांतिदिनेचेत्यर्थः षट्त्रिंशदंगुलिकां पदत्रयमाना माहच चेत्तासोएसुमासेसुतिपया

॥ मूल ॥

॥ १०२ ॥ मियाचारिया १९ अणाहपव्वज्जा २० समुद्दपालिज्जं २१ रहनेमिज्जं २२ गोयमकेसिज्जं २३ समितीउ २४ जन्नतिज्जं २५ सामायारी २६ खलुंकेज्जं २७ मोक्खमग्गगई २८ अप्पमाउ २९ तवोमग्गी ३० चरणविही ३१ पमायठाणाइं ३२ कम्मपयडी ३३ लेसज्झयणं ३४ अणगारमग्गे ३५ जीवाजीवविभत्तीय ३६ चमरस्सणं असुरिंदस्स असुररन्नो सभासुहम्मा छत्तीसंजोयणाइं उढ्ढंउच्चत्तेणं होत्या समणस्सणं अरहउ महावीरस्स छत्तीसं अज्जाणंसाहस्सीउ होत्या चेत्तासोएपुसमासीसु सइछत्तीसंगुलियं सूरिए पोरिसी

॥ भाषा ॥

पालनो २१ । रथनेमीनो २२ गौतम गणधर केशीअणगारनो २३ । सुमति गुप्तिनो २४ । जयघोष विजयघोषनो २५ । समाचारीनो २६ । खलुकीयं गर्गाचार्यनो २७ । मोक्ष मार्गनो २८ । अप्रमादनो २९ । तप मार्गनो ३० । चरण विधिनो ३१ । प्रमादस्थानकनो । ३२ । कर्मप्रकृतिनो ३३ । लेश्याध्ययन ३४ । अणगारमार्गनो ३५ । जीवा जीव विभक्तिनो ३६ ॥ असुरना राजा असुरेन्द्र चमरेन्द्रनीसभा सुधर्मा छत्रीस योजन ऊंची कही । श्रमण तपस्वी भगवंत अनंत महावीरने छत्रीस आर्यानां सहस्र थया । एतले छत्रीस सहस्र साध्वी हुई । चैत्रअने आसोज मासे सतिति सकृत् पुनिमदिने छत्रीसे अंगुले सूर्य पोरसी छाया निवर्तावे एतले चित्तासोएमासेसुतिपया होइपोरसीतिवचनात् ३६ हाथ प्रमाण टणनी छाया मापीये ३६ अंगुल छाया तिवारे होय

॥ टीका ॥

होइपोरमोति ॥ ३६ ॥ सप्तविंशस्थानकम पव्यक्तम् नवरम् कुंथुनाथस्यैहमप्तविंशद्गणधरा उक्ता आवश्यकेतु पञ्चत्रिंशत् इतिमतांतरम् तथाहैमव तादिजीवयोरुक्तप्रमाणसम्वादगाथा सत्ततीसहस्सा छच्चसया जोयणाणचउसयरा हेमवयवासजीवा किंचूणाओलसकलायति कलाएकोनविंशतिभागोयो जनस्येति तत्रविजयादीनिपूर्वादीनिजंबूद्वीपद्वाराणि तत्राधिकाभ्यत्रामनोदेवास्तेषांराजधान्यस्तत्रामिकाअत्र पूर्वादिदिक्षुइतोऽसंख्येयतमे जंबूद्वीपइति क्षुद्रि

॥ मूल ॥

ठायंनिव्वत्तइ ॥ ३६ ॥ कुंथुस्सणंअरहउ सत्ततीसंगणा सत्ततीसंगणहरा होत्था हेमवयएरन्न वयाउणं जीवाउ सत्ततीसं जोयणसहस्साइं छच्चचउसत्तरे जोयणसए सोलसय एगूणवीसइभाए जोयणस्स किंचिविसेसूणाउ आयामेणं प० सव्वासुणं विजय वेजयंत जयंत अपराजियासु रायहाणीसु पागारा स

॥ भाषा ॥

तेवार पोरषी होय। इति छत्रीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ३७ ॥ हिवे सैत्रीसमो समवाय लिखे छे ॥ कुंथुनाथ अरिहंत ने सैत्रीस गच्छ। अने सै त्रीस गणधर कह्या। आवश्यके पैत्रीस सांभलिये छे तेमतांतर छे। हिमवंत क्षेत्र १। एरवत २। एहबेहु क्षेत्रनो जीवा सैत्रीस सैत्रीस योजन सहस्र छ से चि हुत्तरियोजन ३७६७४। १९ कला ऊपरि १६ भाग उगुणीसभाग होइआ एक योजनना कांइक विशेषऊणो लांवपणे कह्यो। सगलाइ जंबूद्वीप ना पूर्वादि दिशे चार पोलीना धणी विजयादिकदेव तेहनी पूर्वे विजय दक्षिणे वैजयंत पश्चिमे जयंत उत्तरे अपराजित राजधानी ने विषे प्राकार गढ सैत्रीस योजन ऊंच पणे कह्यो। क्षुद्रिकायें लहुडीयें विमान प्रविभक्ति कालिकसूत्र विषे पहिले वर्गे सैत्रीस उद्देशकाल अध्ययनदीठ उद्देशाना काल करतां अवसरकह्या। आ

कायां विमानप्रविभक्तौ कालिकश्रुतविशेषस्तत्र किल बहवो वर्गा अध्ययनसमुदायात्मका भवन्ति तत्रप्रथमेवर्गेप्रत्यध्ययनमुद्देशस्ययेकालाइति यदाश्वयुजः पौर्णमा ॥ टीका
स्यांषट्त्रिंशदंगुलिकापौरुषीच्छायाभवति तदाकार्त्तिकस्यकृष्णसप्तम्यामंगुलस्य वृद्धिङ्गतत्वात्सप्तत्रिंशदंगुलिकाभवतीति ॥ ३७ ॥ अष्टत्रिंशत्स्थानकंव्य
क्तमेव नवरं धणुपिट्ठंत्ति जम्बूद्वीपलक्षणवृत्तक्षेत्रस्य हैमवतऐरण्यवताभ्यां द्वितीयषष्ठवर्षाभ्यामवच्छिन्नस्यारोपितज्या धनुः पृष्ठाकारेपरिधिखण्डे धनुःपृष्ठेउच्यत
॥ १०३ ॥ तत्पर्यंतभृतिसरलप्रदेशपंक्तौत् जीवेइवजीवेइति एतत्सूत्रसंवादिगाथाच चत्तालासत्तसया अडतीससहस्सदसकलायधणुत्ति तथाअत्थस्सत्ति अस्तोमेरुर्यतस्तेनां

त्तीसं सत्ततीसं जोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं प० खुड्डियाएणं विमाणपविभत्तीए पढमेवग्गे सत्ततीसं उद्देसण ॥ मूल ॥
कालापं० कत्तियवहुलसत्तमीए णं सूरिए सत्ततीसंगुलियं पोरिसीछायं निव्वत्तइत्ता णं चारंचरइ ॥
३७ ॥ पासस्सणं अरहओ पुरिसादाणीयस्स अट्ठतीसं अज्जियासाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जियासंप

सोजीपूनिमे हस्त प्रमाण वृणनी छाया मापीये ३६ अंगुलें पोरुषी होय अने अंगुल सत्तरेणं सातेदिने एकेक अंगुल छाया वधारिये तिवारें कार्तिक कृष्ण ॥ भाषा ॥
सातमी दिने सूर्य सैत्रीस अंगुल पौरुषी छाया प्रतें निवर्त्तावीकरीने चार चरे करे। इतिसैत्रीसनो समवाय संपूर्ण ॥ ३७ ॥ हिवे अडतीसमो सम
वाय लिखिये छे। पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषादानीय पुरुषांमांहि महा सोभागी तेहने अडत्रीस आर्यानां सहस्र उत्कृष्ट आर्या साध्वीनी संपदा हुइ। जंबूद्वीपल
क्षण वृत्तक्षेत्र ने हेमवंत ऐरवत वीजें अने छट्ठे खेत्रे करी सहित ने आरोपित प्रत्यंचा धनुष पृष्ठाकारें परिखंड ते धनुपृष्ठ कहीये अने तेहने पर्यंत भृत सरल सूक्ष्मप्र
देश पंक्तिते जीवा सरीखी जीवा कहीये तेह धनुपृष्ठ अठत्रीस सहस्र सातसें चालीस योजन। ३८७४०। १९। १०। कला दश भाग उगणीसहाइया ए

॥ टीका

नरितोरविरस्तंगतइतिव्यपदिश्यते तस्यपर्वतस्य गिरिप्रधानस्य द्वितीयकांडविभागोऽष्टत्रिंशद्योजनसहस्राण्युच्चत्वेनभवतीति मतान्तरेणतुत्रिषष्टिसहस्राणिय
दाह मेरुस्सतिन्निकंडा पुढवीवलवइरसक्करापढमं रयणदजायरूवे अंकफलिहेयबीयंतु एक्कागारंतइयंतंपुणजम्बूणयमयंहोइ १ जोयणसहस्सपढमंबाहल्लेएंचवी
यंतु २ तेवट्ठिसहस्साइयं छत्तीसंजोयणसहस्सा मेरुस्सुवरिचूलाओ छिट्ठाजोयणदुवीसंति ॥ ३८ ॥ एकोनचत्वारिंशत्स्थानकं व्यक्तमेव नवरं आहोहि
यत्ति नियतक्षेत्रविषयाऽवधिज्ञानिनस्तेषांशतानीति कुलपव्वयत्ति क्षेत्रमर्यादाकारित्वेनकुलकल्पाः पर्वताः कुलानिहिलोकानां मर्यादानिबन्धनानि भवन्तीती

॥ मूल ॥

या होत्था हेमवयएरन्नवईयाणं जीवा णं धणूपिठे अठतीसं जोयणसहस्साइं सत्तयचत्ताले जोयणसए दस —
एगूणवीसइभागे जोयणस्स किंचिविसेसूणा परिक्खेवेणं प० अत्थस्स णं पव्वयरन्नो बितिएकंडे अठतीसं
जोयणसहस्साइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था खुड्डियाएणं विमाणपविभत्तीए बितिएवग्गे अठतीसंउद्देसणकाला प०
॥ ३८ ॥ नमिस्स णं अरहत्तो एगूणचत्तालीसं आहोहियसया होत्था समयखेत्ते एगूणचत्ताली

॥ भाषा ।

क योजनना कांईएक विशेष ऊंणा परिक्षेपे परिधियें कह्यो । जेणाये अंतरित आच्छाद्यो सूर्य अस्तपामे ते अस्ताचल एतले मेरूपर्वत सकलपर्वतनो राजा
तेहनो बीजो कांड अठत्रीस सहस्र योजन ऊंचपणे कह्यो । मतांतरे ६३ सहस्र योजन पणि कह्योछे । क्षुद्रिकायें लहुडियें विमान प्रविभक्तियें बीजे वर्गे अ
ठत्रीस उद्देशनकाल अध्ययनना उद्देशनना अवसर कह्या ॥ इतिअठत्रीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ३८ ॥ हिवे उगणचालीसमो समवाय लिखियेछे
नमिनाथ एकवीसमा अरिहंतने अवधि ते नियत क्षेत्र तेहने जाणे ते अवधिज्ञानी तेहना सत ३९ । हुया एतले ३९ । से अवधिज्ञानी हुया । समय

॥ १०३ ॥

कायां विमानप्रविभक्तौकालिकश्रुतविशेषस्तत्रकिलबहवो वर्गा अध्ययनसमुदायात्मकाभवन्ति तत्रप्रथमेवर्गेप्रत्यध्ययनमुद्देशस्यपेकालादति यथ्ययुजः पौर्णमा स्यांपट्त्रिंशदंगुलिकापौरुषीच्छायाभवति तदाकार्त्तिकस्यक्षणसप्तम्यामंगुलस्य वृद्धिङ्गतत्वात्सप्तत्रिंशदंगुलिकाभवतीति ॥ ३७ ॥ अष्टत्रिंशस्थानकंव्य क्तमेव नवरं धणुपिट्ठंत्ति जम्बूद्वीपलक्षणवृत्तक्षेत्रस्य हैमवतऐरण्यवताभ्यां द्वितीयषष्ठवर्षाभ्यामवच्छिन्नस्यारोपितज्या धनुः पृष्ठाकारेपरिधिखण्डे धनुःपृष्ठेउच्यत तत्पर्यंतभृतिमरलप्रदेशपंक्तीत् जीवेइवजीवेइति एतत्सूत्रसंवादिगाथाच चत्तालासत्तसया अडतीससहस्सदसकलायधणुत्ति तयाश्वस्त्रित्ति अस्त्रोमेरुर्यतस्तेनां ॥ टीका

तत्तीसं सत्ततीसं जोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं प० खुड्डियाएणं विमाणपविभत्तीए पढमेवग्गे सत्ततीसं उद्देसण काला प० कत्तियबहुलसत्तमीए णं सूरिए सत्ततीसंगुलियं पोरिसीछायं निव्वत्तइत्ता णं चारंचरइ ॥ ३७ ॥ पासस्सणं अरहओ पुरिसादाणीयस्स अट्ठतीसं अज्जियासाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जियासंप ॥ मूल ।

सोजोपूनिमि हस्त प्रमाण छायनो छाया मापीये ३६ अंगुलें पोरुषी होय अने अंगुल सत्तरेणं सातेदिने एकेक अंगुल छाया वधारिये तिवारें कार्तिक क्षण सातमी दिने सूर्य सैत्रीस अंगुल पौरुषी छाया प्रतें निवर्तावीकरीने चारप्रतें करे। इतिसैत्रीसनो समवाय संपूर्ण ॥ ३७ ॥ हिवे अडतीसमो सम वाय लिखेछे। पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषादानीय पुरुषांमांहि महा सौभागी तेहने अठत्रीस आर्यांना सहस्र उत्कृष्टआर्या साध्वीनी संपदा हुइ। जंबूद्वीपल क्षण क्षत्रक्षेत्र ने हैमवंत ऐरवत वीजें अने छट्ठे क्षेत्रे करी सहित ने आरोपित प्रत्यंचा धनुष पृष्ठाकारे परिखंड ते धनुपृष्ठ कहीये अने तेहने पर्यंत भृत सरल सूक्ष्मप्र देश पंक्तिते जीवा सरीखो जीवा कहीये तेह धनुपृष्ठ अठतीस सहस्र सातसे चालीस योजन। ३८७४०। १९। १०। कला दश भाग उगुणीसहाइया ए ॥ भाषा

॥ टीका ।

तदितोरविरस्तंगतइतिव्यपदिश्यते तस्यपर्वतस्य गिरिप्रधानस्य द्वितीयकांडविभागोऽष्टविंशतियोजनसहस्राण्युच्चत्वेनभवतीति मतान्तरेणतुत्रिषष्ठिसहस्राणिय

दाह मेरुस्सतिन्निकंडा पुढवीवलवइरसक्करापढमं रययएयजायरुवे अंकफलिहयवीयंतु एक्कागारंतइयंतंपुणजम्बूणयमयंहोइ १ जोयणसहस्सपढमंबाहल्लेणंचबी

यंतु २ तेवठ्ठिसहस्सातइयं छत्तीसंजोयणसहस्सा मेरुस्सुवरिंचूलाओ चित्ताजोयणदुवीसंत्ति ॥ ३८ ॥ एकोनचत्वारिंशस्थानकं व्यक्तमेव नवरं अहोहि

यत्ति नियतक्षेत्रविषयाऽवधिज्ञानिनस्तेषांशतानीति कुलपव्वयत्ति क्षेत्रमर्यादाकारित्वेनकुलकल्पाः पर्वताः कुलानिहिलोकानां मर्यादानिबन्धनानि भवन्तीती

॥ मूल ॥

या होत्था हेमवएयरन्नवईया णं जीवा णं धणूपिठ्ठे अठतीसं जोयणसहस्साइं सत्तयचत्ताले जोयणसए दस — एगूणवीसइभागे जोयणस्स किंचिविसेसूणा परिक्खेवेणं प० अत्थस्स णं पव्वयरन्नो बितिएकंडे अठतीसं जोयणसहस्साइं उद्धंउच्चत्तेणं होत्था खुड्डियाएणं विमाणपविभत्तीए बितिएवग्गे अठतीसंउद्देसणकाला प० ॥ ३८ ॥ नमिस्स णं अरहओ एगूणचत्तालीसं आहोहियसया होत्था समयखेत्ते एगूणचत्ताली

॥ भाषा ।

क योजनना कांइएक विशेष ऊणा परिक्षेपे परिधियें कह्यो। जेणीये अंतरित आच्छाद्यो सूर्य अस्तपामे ते अस्ताचल एतले मेरुपर्वत सकलपर्वतनो राजा तेहनो बीजो कांड अठत्रीस सहस्र योजन ऊंचपणे कह्यो। मतांतरे ६३ सहस्र योजन पणि कह्योछे। क्षुद्रिकायें लहुडियें विमान प्रविभक्तियें बीजे वर्गे अठत्रीस उद्देशनकाल अध्ययनना उद्देशनना अवसर कह्या॥ इतिअठत्रीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ३८ ॥ हिवे उगणचालीसमो समवाय लिखियेछे नमिनाथ एकवीसमा अरिहंतने अवधिते नियत क्षेत्र तेहने जाणे ते अवधिज्ञानी तेहना सत ३९ । हुया एतले ३९। से अवधिज्ञानी हुया। समय

इतरूपमाश्रता तत्रवर्षधरास्त्रिंश ज्जंबूद्वीपधातकीखण्डपुष्करार्द्धपूर्वापरार्द्धेषुच प्रत्येकं हिमवदादीनांषण्णांभावात् मन्दराः पंचेषुकाराधातकीखण्डपुष्करार्द्धयोः पूर्वेतरविभागकारिणश्चत्वार एवमेवएकोनचत्वारिंशदिति दोच्चेत्यादि द्वितीयायांपंचविंशति श्चतुर्थ्यां दश पचम्यांत्रीणि षष्ठ्यांपंचोनलचं सप्तम्यांपंचेति यथोक्त संख्यानारकाणामिति । नाणावरणिज्जेत्यादि ज्ञानावरणीयस्यपञ्च मोहनीयस्याष्टाविंशतिः गोत्रस्यद्वे आयुषश्चतस्त्रइत्येवमेकोनचत्वारिंशदिति ॥ ३८ ॥ ॥ टीका

॥ १०४ ॥ सं कुलपव्वया प० तं० तीसं वासहरा पंच मंदरा चत्तारि उसुकारा दोच्च चउत्थ पंचम छठ सत्तमासु णं पंचसु पुढवीसु एगूणचत्तालीसं निरयावाससयसहस्सा प० नाणावरणिज्जस्स मोहणिज्जस्स गोत्तस्स आउयस्स एयासिणं चउण्हं कम्मपगडीणं एगूणचत्तालीसं उत्तरपगडीउ प० ॥ ३९ ॥ अरहंत ॥ मूल

क्षेत्र अढाई द्वीप तेमांही ३८ । कुल पर्वत क्षेत्रना मर्यादा कारी तेमाटे कुल पर्वत कह्या लोकमांहि पणि कुलते लोक मर्यादाना कारणछे तेकहेछे । जंबूद्वीप मांही ६ हिमवंतादिक वर्षधर धातकीखंडमांहि पूर्वपश्चिम मिली १२ वर्षधर पुष्करार्द्ध मांहि पिण १२ एवं ३० वर्षधर थया इषुकार चार पर्वत बेधातकी खंड मांहि बेपुष्करार्द्ध मांहि एवं ४ । मेरू ५ । जंबूद्वीप मांहि एक मेरू धातकीखंडमांहि २ मेरू पुष्करार्द्धमांहि २ मेरू एवं ५ मेरू सर्वनि लीकुल पर्वत ३८ थया । बीजो नरक पृथिवी यें २५ लाख नरकावासा चउथी ये १० लाख पांचमी यें ३ लाख छठीयें पांचे ऊंणा १ लाखसातमीयं १ नरकावासा सर्वमिली ३८ । लाख नरकावासा कह्या । ज्ञानावरणीय कर्मनी उत्तर प्रकृति ५ मोहनीयनी २८ । गोत्रनी २ आउखानी ४ एहचारकर्मनी प्रकृति उगुणचालीस उत्तर प्रकृति कही ॥ इति ३८ मीसमवाय संपूर्ण ॥ ३८ ॥ हिवे चालीसमो समवाय लिखे छे । अरिष्टनेमी ॥ भाषा

चत्वारिंशत्स्थानकंव्यक्तं नवरं वइसाहपुन्निमासिणीएत्ति यत्क्वचित् पुस्तकेषुदृश्यते सोपपाठः फग्गुणपुन्निमासिणीएत्ति अत्राध्येयक्त्वमुच्यते पोसेमासेचउप्पयाइ तत्रवनात् पौषीपूर्णिमायामष्टचत्वारिंशदंगुलिकासाभवति ततोमाघेचत्वारि फाल्गुनेचचत्वारि अंगुलानिपतितानीत्येवं फाल्गुनपौर्णमास्यांचत्वारिंशदंगुलिकापौरुषीच्छायाभवति कार्त्तिक्यामप्येवमेव यतः चेत्तासोएसुमासेसुतिपयाहोइपोरिसी त्युक्तं ततः पदत्रयस्यषट्त्रिंशदंगुलप्रमाणस्य कार्त्तिकमासातिक्रमे ॥ टीका

णं अरिट्ठनेमिस्स चत्तालीसं अज्जियासाहस्सीओ होत्था मंदरचूलियाणं चत्तालीसं जोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं प० संती अरहा चत्तालीसं धणूइंउड्ढं उच्चत्तेणं होत्था भूयाणंदस्स णं नागरन्नो चत्तालीसं भवणावाससयसहस्सा प० खुड्डियाएणं विमाणपविभत्तीए तइएवग्गे चत्तालीसं उद्देसणकाला प० फग्गुणपुन्निमासिणीएणं सू — ॥ मूल

अरिहंतने चालीस आर्यानासहस्र एतले चालीस हजार साध्वीनो संपदा थई । मेरुपर्वत ऊंचो एक लाखयोजनछे ऊपरथी पिहुलो एक सहस्रयोजन तेविवे चूलिका चोटीनो परिं जाणइ मेरुनो चूलिका चालीस योजन ऊंचो कह्यो । शांतिनाथ सोलमा अरिहंत चालीस धनुष ऊंचा थया उत्तरेंद्र नागराजा भूतानंदना चालीस भवनावासना शतसहस्र कह्या । एतले चालीस लाख भवन कह्या । क्षुद्रिका ये लहुडीये विमान प्रविभक्तियें एतले त्रीजे वर्गे ४० उद्देशनकाला अध्ययनना उद्देशाना अवसर कह्या । एतले जेटला उद्देशनकाला तेतला अध्ययन कह्या । फागुणनो पूनिमे सूर्यहस्त प्रमाणें तृणनी छाया मावीये तेहनो ४० अंगुल प्रमाणें पोरसी छाया प्रतें निवर्तावीने चार भ्रमण करे । कार्तिकी पूनिमे पणि एमज ४० अंगुलप्रमाणे पोरसी हुये पछे साते २ दिवसे ॥ भाषा

॥ टीका ॥

चतुरंगुलवृद्धौ चत्वारिंशदंगुलिकासाभवतीति ॥ ४० ॥ एकचत्वारिंशस्थानकंसुगमं नवरं चउसुइत्यादि क्रमेणसूत्रोक्तासुचतसृषु प्रथमचतुर्थ षष्टसप्तमीषुपृथिवीषु त्रिंशतोदशानांचनरकलक्षाणां पंचोनस्यचैकस्यपंचानांचनरकाणां भावाद्यथोक्तसंख्यास्तेभवंतीति ॥ ४१ ॥ द्विचत्वारिंशस्था

॥ मूल ॥

रिए चत्तालीसंगुलियं पोरिसीछायं निव्वत्तइत्ता णं चारंचरइ एवं कत्तियाएविपुण्णिमाए महासुक्के कप्पे चत्तालीसं विमाणावाससहस्सा प० ॥ ४० ॥ नमिस्स णं अरहओ एकचत्तालीसं अज्जियासाहस्सीओ होत्था चउसुपुढवीसु एक्कचत्तालीसं निरयावाससयसहस्सा प० तं० रयणप्पभाए पंकप्पभाए तमाए तमतमाए महालियाणं विमाणपविभत्तीए पढमेवग्गे एकचत्तालीसं उद्देसणकाला प० ॥ ४१ ॥

॥ भाषा

एकेक अंगुल वधारिये मासे ४ अंगुल वधे तिवारे कातिक पूनिमे ४० अंगुल वधे तिवारे कार्त्तिक पूनिमे ४० अंगुल छायपोरुषी । महाशुक्र सातमे देवलोकि ४० महस्र विमान कह्या । इति ४० मो समवाय संपूर्ण ॥ ४० ॥ हिवे इगतालीसमो समवाय लिखेछे । नमिनाथ अरिहंतने ४१ । आर्यानासहस्र थया एतलेसाध्वीना सहस्र हुया । च्यार नरक पृथिवीयें ४१ लाख नरकावासा कह्या । ते कहेछे । रत्नप्रभायें ३० लाख पंकप्रभायें १० लाख तमाये पांच ऊणा १ लाख तमतमाये ५ एवं सर्वमिलो ४१ लाख नरकावासा कह्या । वडीये विमानप्रविभक्तिय पहिले वर्गे ४१ लाख उद्देशनकाल अध्ययन अध्ययदीठ उद्देशना अवसर कह्याछे । इति ४१ मो समवाय ॥ ४१ ॥ हिवे बेयालीसमो समवाय लिखेछे । श्रमण भगवंत ज्ञानवंत श्रीमहावीर देव बेयालीस वर्ष झाझेरे छद्मस्थ पर्यायें १२ वर्ष ६ मास १५ दिन केवल पर्याय कांइक न्यून ३० वर्ष सर्वमिलो ४२ वर्ष सामान्य पर्याय पाली सिद्ध थया । याव

नकव्यक्रमेव नवरं बायालीसंत्ति छद्मस्थपर्यायेद्वादशवर्षाणि ... केवलिपर्यायस्त्रुटेर्शानानि त्रिंशद्वर्षाणीति पर्यूषणाकल्पेद्विचत्वारिंशदेवव || टीका
र्षाणि महावीरपर्यायानिहित इहतु साधिक उक्ता स्तत्र पर्यूषणाकल्पे यदल्पमधिकं तन्नविवचितमिति सम्भाव्यतइति जावत्तिकरणात् बुद्धेमुत्तेअंतगडे परि
निव्वुडेसव्वदुकप्पहीणेत्ति दृश्यं जम्बूद्वीपस्येत्यादि पुरत्थिमिल्लाओचरिमंताओत्ति जगतीबाह्य परिधिरपकृत्य गोस्तूभस्यावासपर्वतस्य वेलंधरनागराजसंबंधि
नः पाश्चात्यसीमांतश्चरमविभागोवा यावतांतरेणभवति एसणंत्ति एतदंतरं द्विचारिंशत्योजनसहस्राणिप्रज्ञप्त मंतरशब्देन विशेषोप्यभिधीयते इत्यतआह अ

समणेन्नगवंमहावीरे बायालीसं वासाइं साहियाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता सिद्धे जावसव्वदुक्खप्पहीणे — || मूल ||
जंबूद्दीवस्स णं द्दीवस्स पुरत्थिमिल्लाउ चरमंताउ गोथूभस्सणं आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लचरमंते एसणं
बायालीसं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवं चउद्दिसिंपि दगन्नासे संखो दयसीमेय कालोएणंस

त् शब्दे करी बुद्ध थया मुक्त थया सर्वदुःख थकी मुक्तथया अजरामर थया। जंबूद्वीपनां छेहल्या प्रदेश थकी जगतीना बाह्यप्रदेशथकी मांडी गोस्तूभनाम || भाषा
वेलंधर नागराजानो आवास पर्वत तेहनो पश्चिमनो चरमांत छेहल्यो प्रदेश एतले जगती थकी मांडी गोस्तूभ पर्वतनो पश्चिमांत एतलाविच ४२ सहस्र
योजन आबाधा विचे आंतरो कह्यो। एम त्रिहुंदिसे दक्षिण जंबूद्वीपनो जगती थको मांडी ४२ योजन सहस्र दक्षिण समुद्रमांहीज दगभास पर्वत वे
लंधर नागराजानो एम पश्चिम जगती थको मांडी पश्चिम समुद्र मांहि ४२ योजन सहस्र शंख पर्वत एम उत्तरे दगसीम। पर्वत कालोदधि समुद्रे ४२ चंद्र
मा ४२ सूर्य उद्योत करेछे। समूर्च्छिम भुजपर सर्पनो उंदर गोह नोलियादिकनो उत्कृष्टो ४२ वर्ष सहस्र प्रमाणे आउखूं कह्यं। नाम कर्म छहोते ४२ भेदें कह्यो

॥ टीका ।

बाहाएत्ति व्यवधानापेक्षयायदंतरंतदित्यर्थः कालोयणेत्ति धानकीखण्डपरिवेष्टके कालोदाभिधानेसमुद्रे गइनामेत्यादि गतिनामयदुदयान्नारकादित्वेन जीवोव्यपदिश्यते जातिनामयदुदयादेकेंद्रियादिर्भवति शरीरनामयदुदयादौदारिकशरीरंकरोति यदुदयादंगानांशिरः प्रभृतीनांउपांगानांचांगुल्यादीनांविभागोभवति तच्छरीरोपांगनाम बध्यमानानांच संबंधकारणं शरीरोपांगनाम तथाऔदारिकादिशरीरपुद्गलानां पूर्वबद्धानां बध्यमानानांच संबंधकारणंशरीरबन्धनाम तथाऔदारिकादि शरीरपुद्गलानांगृहीतानां यदुदयाच्छरीररचनाभवति तच्छरीरसंघातनाम तथास्नायतस्तथाविधशक्तिनिमित्तभूतोरचनाविशेषोभवति तत्संहनननाम संस्थानसमचतुरस्रादिलक्षणभवति तत्संस्थाननाम तथायदुदयाद्वर्णादिविशेषवतिशरीराणिभवन्ति तद्वर्णादिनाम तथायदुदया

॥ मूल ॥

मुद्दे बायालीसं चंदाजोइंसुवा जोइंतिवा जोइस्संतिवा बायालीसंसूरियापभासिंसुवा ३ समुच्छिमभुयपरिसप्पाणं उक्कोसेणं बायालीसंवाससहस्साइं ठिई प० नामकम्मे बायालीसविहे प० तं० गइनामे जाइनामे सरीरनामे सरीरवंगनामे सरीरबंधणनामे सरीरसंघायणनामे संघयणनामे संठाणनामे वन्ननामे गंधनामे

॥ भाषा ।

तेक्हेछे । नरकादिक नीगति पामवी जेहने उदे तेगतिनाम १ एकेंद्रियादिक जाति पामिये ते जातिनाम २ औदारिकादि पांचशरीर जेहने उदे पामिये ते शरीर नाम ३ एम जे कर्मने उदे सर्वत्र कहिये औदारिकादिक त्रिणशरीरना अंगोपांग अंगते अगुलीनखादिते अंग उपांग ४ औदारिकादिक पांच शरीरनो बंधनो करवो ते शरीर बंधननाम ५ औदारिकादि पांचशरीरनांपुद्गल ग्रह्याने रचनानो करिवो ते शरीरसंघातनाम ६ शक्ति निमित्तभूत रचनाना विशेषते संहनननाम ७ संस्थान समचतुरस्रादिक लक्षण ८ वर्ण कृष्णादिक पांच ९ गंध सुगंधादिक सुरभि गंध दुरभिगंध १० रस मधुरादिक पांच

दगुरुलघु स्वयं शरीरं जीवानां भवति तदगुरुलघुनाम तथायतोंगावयवः प्रतिजिह्विकादिरात्मोपघातको जायते तदुपघातनाम तथायतोंगावयव एवाविधा ॥ टीका ॥
कोदंष्ट्रात्वगाहि परेषामुपघातको भवति तत्पराघातनाम तथायदुदयांतरालेगतो जीवोयाति तदानुपूर्वीनाम तथायदुदयादुच्छासनिष्पत्तिर्भवति तदुच्छास

॥ मूल ॥

रसनामे फासनामे अगुरुलहुयनामे उवघायनामे पराघायनामे आणुपुव्वीनामे उस्सासनामे आयव
नामे उज्जोयनामे विहगगइनामे तसनामे थावरनामे सुहुमनामे बायरनामे पज्जत्तनामे अपज्जत्तनामे
साहारणसरीरनामे पत्तेयसरीरनामे थिरनामे अथिरनामे सुभनामे असुभनामे सुभगनामे दुभगनामे

॥ भाषा ॥

जाणिवा ११ स्पर्श गुर्वादिक आठ १२ जेह कर्मने उदे जीवनो शरीर अगुरुलघु हुये ते अगुरुलघुनाम १३ जेह कर्मने उदे पडिजीभी प्रमुखेकरी आत्माने
उपघाते ते उपघात १४ जेह कर्मने उदे परने उपघात उपजे तेपराघात १५ अंतराल गतियें जीव जाय ते आनुपूर्वीनाम १६ उस्सास नीसासलीजे तेउस्सा
स नाम १७। जेह कर्मने उदे शरीर तापवंत होय ते आतप नाम १८। जेह कर्मने उदें शरीर उद्योतवंत होय ते उद्योत नाम कर्म। १९। जेह कर्मने उ
दयें भलो भूंडो गति गमन सहित होय ते विहगगतिनाम २०। जेह कर्मना उदय थकी जीव चाले ते त्रस नाम २१। जेह कर्मना उदय थी जीव स्थिर
रहे ते स्थावर नाम कर्म २२। जेह कर्मना उदय थी दृष्टि गोचर न होय ते सूक्ष्म नाम कर्म २३। जेह कर्मना उदय थी जीव दृष्टि गोचर होय ते बादर ना
म कर्म २४। पूरी पर्याप्ति करे ते पर्याप्ति नाम २५। पूरी पर्याप्ति नकरै ते अपर्याप्ति नाम २६। जेह कर्मने उदये अनंता जीवनो एक शरीर पामिये ते
साधारण नाम २७। जेह कर्मनें उदयें एक जीव एक शरीर पावे ते प्रत्येक नाम २८ स्थिर रहे जेहथी ते स्थिर नाम २९। अंगोपांग ताल्वांथकां तूटे ते

॥ टीका ॥

नाम तथायदुदयाज्जीवस्तापवच्छरीरोभवति तदातपनाम यथादित्यविंबपृथिवीकायिकानां तथायतोतुलोद्योतवच्छरीरोभवति तदुद्योतनाम तथायतः शुभे तरगमनयुक्तोभवति तद्विहायोगतिनाम त्रसनामादीन्यष्टौप्रतीतार्थानि तथायतः स्थिराणांदन्ताद्यवयवानांनिष्पत्तिर्भवति तत्स्थिरनाम यतश्चभ्रूजिह्वादीनाम स्थिराणांनिष्पत्तिर्भवति तदस्थिरनाम एवंशिरः प्रभृतीनांशुभानां तच्छुभनाम पापादीनामशुभनामइति शेषाणिप्रतीतानि नवरं यदुदयाज्जातोजीवदेहेपुरुषाद्या दिलिंगाकारनियमोभवति तत्सूत्रधारसमानं निर्माणंनामेति पंचमछट्ठीओसमाउत्ति दुःखमाएकांतदुःखमाचेत्यर्थः पढमबीयाउत्ति एकांतदुःखमादुःखमाचे

॥ मूल ॥

सुस्सरनामे दुस्सरनामे आएज्जनामे अणाएज्जनामे जसोकित्तिनामे अजसोकित्तिनामे निम्माणनामे तित्थकरनामे लवणे णं समुद्दे बायालीसं नागसाहस्सीउ अभिंतरियंवेलं धारंति महालियाएणं विमाण पविभत्तीए बितिएवग्गे बायालीसं उद्देसणकालाप० एगमेगाएउसप्पिणीए पंचमछठीउसमाउ बायालीसं –

॥ भाषा ॥

अस्थिर नाम ३० शुभनाम ३१। अशुभनाम ३२। जेह कर्मने उदये सहुने वल्लभ होय ते सुभगनाम ३३। जेह कर्मथी सहुने अनिष्ट होय ते दुर्भग नाम ३४ जेह कर्मनेउदये कंठभलोहोय तेसुस्वर नाम ३५। भुंडोकंठहोय ते दुस्वर नाम ३६ जेहकर्म थी वचन सहुने मान्यथाय तेआदेयनाम ३७। वचनकोईनमाने ते अनादेय नाम ३८। यशकीर्त्ति वाधे ते जसोकित्तिनाम ३९ यश कीर्त्ति नहोय ते अजस कीर्त्ति नाम ४०। ठामें ठाम अंगो पांगो रचिवो ते निर्माण नाम ४१। जेह कर्मना उदयथी सहुने पूज्यथाय ते तीर्थंकर नामकर्म ४२। लवण समुद्रने विषे बेतालीस हजार नागदेवता जंबूद्वीप तरफनी पाणी नी वेला प्रते भरेछे। वडी विमान प्रविभक्तीयें बीजेवर्गे ४२ उद्देशनकाल कह्या अध्ययन कह्या। एकेक अवसर्पिणी कालें पडतेकालें पांचमो छठो दुःखमा

त्रि ॥ ४२ ॥ त्रिचत्वारिंशत्स्थानकेपिकिंचिल्लिख्यते कम्मविवागज्झयणत्तिकर्मणः पुण्यपापात्मकस्य विपाकस्यफलं तत्प्रतिपादकान्यध्ययनानिकर्मविपाकाध्ययनानिएतानिच एकादशांगद्वितीयांगयोः सम्भाव्यंतइति जंबूदीवस्सणमित्यादि जंबूद्वीपपौरस्त्यांतात्गोस्तुभपर्वतो द्विचत्वारिंशद्योजनानां सहस्राणितद्विष्कंभश्च सहस्रंतदधिकाया द्वाविंशतेरल्पत्वेना विवक्षणा देवं त्रिचत्वारिंशत्सहस्राणिभवन्तीति एवंचउदिसिपित्ति उक्तादिगंतर्भावेन चतसृदिक्षुउक्ता अन्यथा एवंति ॥ टीका ॥

वाससहस्साइं कालेणं प० एगमेगाए उसप्पिणीए पढमबीयान समान बायालीसं वाससहस्साइं कालेणं प० ॥ ४२ ॥ तेयालीसं कम्मविवागज्झयणा प० । पढमचउत्थपंचमासु पुढवीसु तेयालीसं निरयावाससयसहस्सा प० जंबूद्दी[illegible]स्सणं द्दीवस्स पुरत्थिमिल्लान चरमंतान गोथूभस्सणं आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्ले चरमंते एसिणं तेयालीसं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवं चउद्दिसिंपि दगभासे ॥ मूल ॥

दुखम दुखमा वेहुं मिलीने ४२ हजार वर्ष प्रमाणे थाय एतले पांचमो आरो २१ हजार वर्षनो छट्ठो २१ हजार वर्षनो वेहुं मिलो ४२ सहस्र प्रमाण कह्यो एकेक उत्सर्पिणी कालें चढतेकाले पहिलो आरो अने दूजो आरो वेहुं मिली ४२ सहस्र वर्ष प्रमाण कह्या ॥ इति बैतालोसमो समवाय संपूर्ण ॥ ४२ ॥ हिवे तेतालोसमो समवाय लिखेछे ॥ तेयालीस कर्म पुण्य पाप रूप तेहना विपाक फलरूप तेहनां प्रतिपादक अध्ययन ते कर्म विपाक अध्ययन तेह सुयगडांगना २३ अध्ययन अने दुख सुख विपाकना २० अध्ययन एवं ४३ अध्ययन कह्या। पहिलो यें ३० लाख चौथीयें १० लाख पांचमीयें ३ लाख एवं पहिलो चौथी पांचमी नरक पृथिवी नां मिली तेयालोसलाख नरकावासा कह्या। जंबूद्दीप नामा द्दीपनो जगतीना छेहल्या प्रदेश ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

दिसिंपितिवाच्यंस्यात् तत्रचैवमभिलापाः जंबूद्दीवस्सणं दीवस्सदाहिणिल्लाओदओभासस्सणं आवासपव्वयस्सदाहिणिल्लेचरिमंते एसिणं तेयालीसंजोयणसहस्सा इं अबाहाएअंतरे पवत्ते एवमन्यत्सूत्त्वद्वयं नवरं पश्चिमायांसंखो आवासपर्वत उत्तरस्यामुदकसीमइति ॥ ४३ ॥ चतुश्चत्वारिंशस्थानकेपिकिंचिल्लिख्यते चतुश्चत्वारिंशतं इसिभासियत्ति ऋषिभाषिताध्ययनानि कालिकश्रुतविशेषभूतानि दियालोयचुयाभासियत्ति देवलोकच्युतैः ऋषीभूतैराभाषितानि देवलोकच्युताभाषितानिक्कचित्पाठः देवलोयभुयाणं चोयालीसंइसिभासियज्भयणा पन्नत्ता पुरिसजुगाइंति पुरुषः शिष्यप्रशिष्यादिक्रमव्यवस्थिता युगानीवकालविशेषा

॥ मूल ॥

संखोदयसीमे महालियाएणं विमाणपविभत्तीए तइयेवग्गे तेयालीसं उद्देसणकाला प० ॥ ४३ ॥ चोयालीसं अज्झयणा इसिभासिया दियालोगचुयाभासिया प० विमलस्सणं अरहओ णं चउआलीसंपुरि

॥ भाषा ॥

थी माडोने गोस्तूभ नाम नागराजानां आवास पर्वतनो पूर्वनो चरिमांत छेहल्यो प्रदेश ४३ हजार योजन प्रमाणे आवाधाये अंतर कह्यो एतले जगती थ को ४२ हजार योजन गोस्तूभ पर्वतछे तेह पर्वत एक सहस्र योजन पिहुल पणेछे एवं ४३ सहस्र योजन थया। एम चिहुंदिशे दक्षिण जगतीथकी मांडी दक्षिण समुद्र मांहि दगभास २ पश्चिमे संख ३ उत्तरदिशे दगसीम ४ वडो विमान प्रविभक्तियें त्रीजे वर्गे ४३ उद्देशनकाल अध्ययन विशेष कह्या॥ इति तेयालीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ४३ ॥ हिवे चोतालीसमो लिखिये छे। चोतालीस ऋषिभाषित अध्ययन कालिकश्रुत विशेषभूत तेकेहवाछे देवलोक थी चव्या जेह पछे ऋषिभूत हुआ तेणे आभासित कह्या। विमलनाथ अरिहंतना चोतालीस पुरिसयुग शिष्य प्रशिष्यादि क्रमें आव्या काल विशे षनो परं अनुक्रमें साधर्मपणा थको पुरिसयुग कहिये अनुपूर्व्वें सीधा निरंतर पणे ४३ पाट मोचें गया यावत् सर्व्वे करी सर्वदुःख थी प्रचीण थया। दक्षि

इव क्रमसाधर्म्यात्पुरुषयुगानि अणुपिठत्ति आनुपूर्व्या अणुबंधंति पाठांतरे तृतीयादर्शनादनुबंध्येन.सातत्येनसिद्धानि जावंतिकरणेन बुद्धाइं मुत्ताइं सव्वदुक्ख पहीणाइंतिद्रष्टव्यं महालियाएणं विमाणपविभत्तीए चतुर्थवर्गेचतुश्चत्वारिंशदुद्देशनकाला:प्रज्ञप्ता: ॥ ४४ ॥ पंचचत्वारिंशस्थानकेलिविदंलिख्यते समयखेत्तेति कालोपलक्षितक्षेत्रं मनुष्यक्षेत्रमित्यर्थ: सीमंतएणंति प्रथमपृथिव्यांप्रथमप्रस्तटे मध्यभागवर्तीवृत्तोनरकेंद्र: सीमंतइति उडुढविमाणेत्ति सौधर्मेशानयो: प्रथमप्रस्त ॥ टीका ॥

सउगाइं अणुपिठसिद्धाइं जावप्पहीणाइं धरणस्स णं नागिंदस्स नागरन्नो चोयालीसं भवणावाससयस हस्सा प० महालियाएणं विमाणपविभत्तीए चउत्थेवग्गे चोयालीसं उद्देसणकाला प० ॥ ४४ ॥ समयखेत्ते णं पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं प० सीमंतएणं नरएपणयालीसं जोयण सयसहस्साइं आयामविक्खंभे णं प० एवंउडुविमाणेवि ईसिपब्भाराणं पुढवी एवंचेव धम्मेणंअरहा पणयालीसं ॥ मूल ॥

णदिशे धरणेंद्र नागेंद्र नागराजानां चौतालीस लाख भवनावास कह्या। बडी विमान प्रविभक्तियें चउथे वर्गे चौतालीस उद्देशन काल अध्ययन विशेष कह्या॥इति चौतालीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ४४ ॥ हिवे पैंतालीसमो लिखेछे। पैंतालीसलाख योजन प्रमाणें पहिली पृथिवीये पहिले पाथ डे मध्यभागवर्ती नरकेंद्र वाटलो सीमंतो नरकावासो पैंतालीस लाख योजन प्रमाणे लांबपणे पिहुलपणे कह्यो। एमज सौधर्म ईशाननां प्रथम प्रस्तट विमान माहि मध्यभागवर्ती विमानेंद्रवालो उडुनामा विमान पैंतालीस लाख योजन लांबपणे पिहुलपणे कह्यो ईषत्प्राग्भारा पृथिवी पैंतालीसलाख योजन लांब ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

दिसिंपितिवाच्यंस्यात् तत्रचैवमभिलापाः जंबूद्वीवस्सणंदीवस्सदाहिणिल्लाओदओभासस्सणं आवासपव्वयस्सदाहिणिल्लेचरिमंते एसिणंतेयालीसंजोयणसहस्सा इं अबाहाएअंतरे पन्नत्ते एवमन्यत्सूत्रद्वयं नवरं पश्चिमायांसंखो आवासपर्वत उत्तरस्यामुदकसीमइति ॥ ४३ ॥ चतुश्चत्वारिंशस्थानकेपिकिंचिल्लिख्यते चतुश्चत्वारिंशतं इसिभासियत्ति ऋषिभाषिताध्ययनानि कालिकश्रुतविशेषभूतानि दियालोयचुयाभासियत्ति देवलोकच्युतैः ऋषीभूतैराभाषितानि देवलोकचुताभाषितानिक्वचित्पाठः देवलोयभुयाणं चोयालीसंइसिभासियज्झयणा पन्नत्ता पुरिसजुगाइंति पुरुषः शिष्यप्रशिष्यादिक्रमव्यवस्थिता युगानीवकालविशेषा

॥ मूल ॥

संखोदयमीमे महालियाएणं विमाणपविभत्तीए तइयेवग्गे तेयालीसं उद्देसणकाला प० ॥ ४३ ॥ चोयालीसं अज्झयणा इसिभासिया दियालोगचुयाभासिया प० विमलस्सणं अरहओ णं चउआलीसंपुरि

॥ भाषा ॥

थी माडोने गोस्तूभ नाम नागराजानां आवास पर्वतनो पूर्वनो चरिमांत छेहल्यो प्रदेश ४३ हजार योजन प्रमाणे आबाधाये अंतर कह्यो एतले जगती थको ४२ हजार योजन गोस्तूभ पर्वतछे तेह पर्वत एक सहस्र योजन पिहुल पणेछे एवं ४३ सहस्र योजन थया। एम चिहुंदिशे दक्षिण जगतीथकी मांडी दक्षिण समुद्र मांहि दगभास २ पश्चिमे संख ३ उत्तरदिशे दगसीम ४ वडी विमान प्रविभक्तियें त्रीजे वर्गे ४३ उद्देशनकाल अध्ययन विशेष कह्या॥ इति तेयालीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ४३ ॥ हिवे चौतालीसमो लिखेछे। चौतालीस ऋषिभाषित अध्ययन कालिकश्रुत विशेषभूत तेकेहवाछे देव लोक थी चव्या जेह पछे ऋषिभूत हुआ तेणे आभाषित कह्या। विमलनाथ अरिहंतना चौतालीस पुरिसयुग शिष्य प्रशिष्यादि क्रमें आव्या काल विशेषनौ परें अनुक्रमें साधर्मपणा थको पुरिसयुग कहिये अनुपृष्ठें सीधा निरंतर पणि ४३ पाट मोक्षें गया यावत् शब्दें करी सर्वदुःख थी प्रक्षीण थया। दक्षि

इव क्रमसाधर्म्यात्प्रकर्षयुगानि अणुपिट्ठत्ति आनुपूर्व्या अणुबंधंति पाठांतरे तृतीयादर्शनादनुबंध्येन सातत्येनसिद्धानि जावंतिकरणेन बुद्धाइं मुत्ताइं सव्वदुक्ख ॥ टीका ॥
प्पहीणाइं तिदृश्यं महालियाएणं विमाणपविभत्तीए चतुर्थवर्गे चतुश्चत्वारिंशदुद्देशनकालाः प्रज्ञप्ताः ॥ ४४ ॥ पंचचत्वारिंशत्स्थानकेऽपिदं लिख्यते समयखेत्तेत्ति
कालोपलक्षितंक्षेत्रं मनुष्यक्षेत्रमित्यर्थः सीमंतएणंति प्रथमपृथिव्यांप्रथमप्रस्तटे मध्यभागवर्तीवृत्तोनरकेंद्रः सीमंतइति उडुविमाणेत्ति सौधर्मेशानयोः प्रथमप्रस्त

सज्जुगाइं अणुपिठसिद्धाइं जावप्पहीणाइं धरणस्स णं नागिंदस्स नागरन्नो चोयालीसं भवणावाससयस ॥ मूल ॥
हस्सा प० महालियाएणं विमाणपविभत्तीए चउत्थेवग्गे चोयालीसं उद्देसणकाला प० ॥ ४४ ॥
समयखेत्ते णं पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं प० सीमंतएणं नरएपणयालीसं जोयण
सयसहस्साइं आयामविक्खंभे णं प० एवंउडुविमाणेवि ईसिपब्भाराणं पुढवी एवंचेव धम्मेणंअरहा पणयालीसं

णदिशि धरणेंद्र नागेंद्र नागराजानां चोतालीस लाख भवनावास कह्या। बडी विमान प्रविभक्तियें चउथे वर्गे चोतालीस उद्देशन काल अध्ययन विशेष ॥ भाषा ॥
कह्या॥ इति चोतालीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ४४ ॥ हिवे पेंतालीसमो लिखेछे। पेंतालीसलाख योजन प्रमाणे पहिलो पृथिवीये पहिले पाथ
डे मध्यभागवर्ती नरकेंद्र वाटलो सीमंतो नरकावासो पेंतालीस लाख योजन प्रमाणे लांबपणे पिहुलपणे कह्यो। एमज सौधर्म ईशानना प्रथम प्रस्तट विमान
मांहि मध्यभागवर्ती विमानेंद्रवालो उडुनामा विमान पेंतालीस लाख योजन लांबपणे पिहुलपणे कह्यो ईषत्प्राग्भारा पृथिवी पेंतालीसलाख योजन लांब

॥ टीका ॥

टवर्त्तिचतसृणांविमानावलिकानां मध्यभागवर्त्तिवृत्तं विमानकेन्द्रकमुडुविमानमिति ईसिंपब्भारत्ति सिद्धिपृथिवी मंदरस्सणंपव्वयस्सेत्यादिसूत्रे लवणसमुद्रान्तरम्परिध्यपेक्षांतरंद्रष्टव्यमिति सव्वेविणमित्यादि चन्द्रस्यत्रिंशन्मुहूर्त्तभोग्यंनक्षत्रक्षेत्रं समक्षेत्रमुच्यते तदेवसार्द्धंद्व्यर्द्धं द्वितीयमर्द्धमस्येतिद्व्यर्द्ध मित्येवंव्युत्पादना तथाविधंक्षेत्रंयेषामस्ति तानिद्व्यर्द्धक्षेत्रिकाणि नक्षत्राणि अतएवपञ्चचत्वारिंशन्मुहूर्त्तांश्चंद्रेण सार्द्धयोग:सम्बन्धोयोजितवंति तिन्नेवगाहा चोद्दुत्तराणि उत्त

॥ मूल ॥

॥ १०९ ॥ धणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था मंदरस्स णं पव्वयस्स चउदिसिंपि पणयालीसं २ जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० सव्वेविणं दिवड्ढखेत्तिया नक्खत्ता पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिंजोगंजोइंसुवा जोइंतिवा जोइस्संतिवा तिन्नेवउत्तराइं पुणव्वसूरोहिणीविसाहाय एएछनक्खत्ता पणयालमुहुत्तसंजोगा ॥ महालियाएणं विमाणपवि

॥ भाषा ॥

पणें पिहुलपणे कह्यो । एमज धर्मनाथ अरिहंत पैंतालीस धनुष प्रमाण ऊंचपणे हुआ । मेरु पर्वत ने चिहुंदिशें पैंतालीस पैंतालीस हजार योजननो अवाधायें आंतरो कह्यो । लवण समुद्रनो अभ्यंतर परिधी ने विचे आंतरो कह्यो । महाविदेह क्षेत्रनो जीवा लाख योजन लांबपणेछे तेमांथी दसहजार योजननो मेरु काढिये तो नेऊ लाख जबस्या तेहनो अर्द्ध मेरुथकी पूर्वनो जगती ४५ हजार योजन थाय । एम चिहुंदिशे । चंद्रमाने ३० मुहुर्त्त पर्यंत भोग्य जे नक्षत्रक्षेत्र ते समक्षेत्र कहिये तेहीज क्षेत्र सार्द्ध कीजिये एतले ३० मुहूर्त्त मांहि १५ घातिये तो ४५ मुहूर्त्तनो क्षेत्रथाय ते ४५ मुहूर्त्तिया नक्षत्र द्व्यर्द्ध क्षेत्रिया कहिये एणें कारणें ते नक्षत्र पैंतालीस मुहूर्त्त लगें चंद्रमाने साथे योगकरेछे। करता हुआ करस्यें । तेकिहा नक्षत्रछे तेकहेछे। उत्तराफाल्गुनी १ उत्तराषाढ २ उत्तराभाद्रपद ३ पुनर्वसु ४ रोहिणी ५ विशाखा ६ एह ६ नक्षत्र पैंतालीस मुहूर्त्त लगें चंद्रमानें साथे योग करे। वडी विमान प्रविभक्तिये पां

राफाल्गुन्यु त्तराषाढो त्तराभद्रपदाश्च ॥ ४५ ॥ अथ षट्चत्वारिंशस्थानके किंचिल्लिख्यते। दिट्ठिवायस्सेत्ति द्वादशांगस्य माउयापयत्ति सकल वाङ्मयस्य अकारादिमातृकाः पदानीव दृष्टिवादार्थप्रसवनिबंधनत्वेनमातृकापदानि उत्पादविगमध्रौव्यलक्षणानि तानिच श्रेणिमनुष्यश्रेण्यादिनाविषयभेदे नकथमपि भिद्यमानानि षट्चत्वारिंशद्भवंतीतिसम्भाव्यते। तथाबंभीएणं लिवीएत्ति लेख्यविधौ षट्चत्वारिंशन्मातृकाक्षराणि तानिचककारादीनिह्कारां तानि सक्षकाराणि ऋॠऌॡळइत्येवं तदक्षरपञ्चकवर्जितानिसम्भाव्यन्ते तथापभंजणस्सेत्ति औदीच्यामस्येति ॥ ४६ ॥ अथसप्तचत्वारिंशत्स्थानके किमप्युच्य ॥ टीका ॥

त्तीए पंचमेवग्गे पणयालीसं उद्देसणकाला प० ॥ ४५ ॥ दिठ्ठिवायस्स णं छायालीसं माउयापया प० बंभीए णं लिवीए छायालीसं माउयक्खरा प० पभंजणस्स णं वाउकुमारिंदस्स छायाली सं भवणावाससयसहस्सा प० ॥ ४६ ॥ जयाणंसूरिए सव्वब्भिंतरमंडलं उवसंकमित्ता णं चारंचरइ ॥ मूल ॥

चमे वर्गे पेंतालीस उद्देशनकाल अध्ययन विशेष कह्या। इति पेंतालीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ४५ ॥ हिवे छेतालीसमो लिखेछे ॥ दृष्टिवाद पूर्व ना छेतालीस मातृकापद कह्या सकल शास्त्रने अकारादि छेतालीस अक्षर मातृकापद दृष्टिवादार्थप्रते प्रसववाना कारणथकी मातासरीखा कह्याछे। ब्राह्मी लिपीने विषे छेतालीस मातृका अक्षर कह्या। अकारादिक हकारांत क्षकारे सहित ५२। मांहियी ऋ ॠ ऌ ॡ ळ एह ५ अक्षर वर्जित कीजे ४६ जगरे प्रभंजन अठारमो भवनपती वातकुमारेंद्र तेहनां ४६ लाख भवनावास कह्या। इति छेतालीसनो समवाय संपूर्ण ॥ ४६ ॥ जिवारे सूर्य ॥ भाषा ॥

ते जयाणमित्यादि इहलक्षप्रमाणस्य जंबूद्वीपस्याभयतो ऽशीत्युत्तरयोजनशते ३८० ऽपनीते सर्वाभ्यंतरस्य सूर्यमंडलस्य विष्कंभोभवति तत्परिधिस्त्रीणिलक्षाणि पञ्चदशसहस्राणि एकोननवत्यधिकानि ३१५०८९ एतस्य सूर्योमुहूर्त्तानांषष्ट्या गच्छतीति षष्ट्याऽस्यभागहारेमुहूर्त्त गतिर्लभ्यते साचपञ्चयोजनसहस्राणि द्वेचैकपञ्चा शद्त्तरेयोजनशते एकोनत्रिंशच्चषष्ठिभागायोजनस्य ५२५१ । २९ यदाचाभ्यंतरमण्डले सूर्यश्चरति तदाष्टादशमुहूर्त्तादिवसप्रमाणं तदर्द्धेननवभिर्मुहूर्त्तैः मुहूर्त्त गतिर्गुण्यते ततश्चयथोक्तं चक्षुः स्पर्श प्रमाणमागच्छतीति अग्गिभूएत्ति वीरनायस्य द्वितीयोगणधरस्तस्यचेह सप्तचत्वारिंशद्वर्षाण्यगारवासउक्तः आवश्यकेतुष ट्चत्वारिंशत् सप्तचत्वारिंशत्तमवर्षस्यासंपूर्णत्वादविवक्षा इहत्वसंपूर्णस्यापि पूर्णविवक्षेतिसम्भावनयानविरोधइति ॥ ४७ ॥ अष्टचत्वारिंशस्थानके ॥ टीका ॥

॥ ११० ॥

तयाणं इहगयस्स मणूसस्स सत्तचत्तालीसं जोयणसहस्सेहिं दोहियतेवठ्ठेहिं जोयणसएहिं एक्कवीसाए यसठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुफासं हव्वमागच्छइ थेरेणं अग्गिभूई सत्तचालीसंवासाइं अगारमझ्झेव सित्ता मुंडेभवित्ता अगाराउ अणगारियं पव्वइए ॥ ४७ ॥ एगमेगस्सणं रन्नो चाउरंतचक्क ॥ मूल ॥

सर्वाभ्यंतर मांडले आषाढी पूनिमे कर्क संक्रांतिये निषध पर्वतने ऊपरि ६५ मांडलाछे तेमांहिथी पहिले मांडले उपसंक्रमीने भ्रमणकरे तिवारे इहां भर तक्षेत्रगत मनुष्य ने सेतालीस हजार बेसे त्रेसठ योजन अने १ योजनना ६० हिया २१ भाग एतलो वेगलो थको दृष्टिगोचर आवे। स्थविर बडा वयपर्या यश्रुतकरी अग्निभूति बीजा गणधर सेतालीसवर्ष गृहस्थाश्रमे वसीने द्रव्यभाव भेदे मुंड थईने गृहस्थाश्रमथी साधुपणो पाम्या। इति सेतालीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ४७ ॥ हिवे अठतालीसमो समवाय लिखेछे॥ एकेक चिहुदिशिनां अंतना धणी चक्रवर्त्ति राजाने अडतालीस हजार पाटण कह्या। ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

शिमपिलिख्यते। पट्टणंति विविधदेशपण्यान्यागत्ययत्रपतंति तत्पत्तनंनगरविशेषः पत्तनंरत्नभूमिरित्याहुरेके धम्मस्सत्ति पंचदशमतीर्थंकरस्येहाष्टचत्वारिंशद्ग णागणधराश्चोक्ता आवश्यकेतुद्विचत्वारिंशत्पठ्यंते तदिदं मतांतरमिति सूरमंडलेत्ति सूर्यविमानं येषांभागानामेकषष्ट्यायोजनंभवति तेषामष्टचत्वारिंशत् त्रयो दशभिस्तैर्न्यूनंयोजनमित्यर्थः ॥ ४८ ॥ अथैकोनपंचाशस्थानकंलिख्यते। सत्तसत्तमियाणं सप्तसप्तमानिदिनानियस्यांसासप्त२ दिनानिभवंति सप्तसु सप्तकेषुयतः सासप्तकेषु अतः सासप्तदिनसप्तकमयत्वा देकोनपंचाशतावादिनैर्भवतीति पडिमत्ति अभिग्रहः छन्नउयंभिक्खासएणंति प्रथमेदिनसप्तकेप्रतिदि नमेकोत्तरयाभिक्षावृद्ध्या अष्टविंशतिर्भिक्षाभवति एवञ्चसप्तस्वपिसप्तसुवतिभिक्षाशतभवति अथवा प्रतिसप्तक मेकोत्तरयावृद्ध्यायथोक्तं भिक्षामानंभवति तथा

॥ मूल ॥

वहिस्स छायालीसं पट्टणसहस्सा प० धम्मस्सणंअरहओ अडयालीसंगणा अडयालीसं गणहरा होत्था सूर मंडलेणं अडयालीसं एकसट्ठिभागे जोयणस्स विक्खंभेणं प० ॥ ४८ ॥ सत्तसत्तमियाणं भि

॥ भाषा ॥

धर्मनाथ अरिहंत ने अठतालीस गच्छ अने अठतालीस गणधर हुया। आवश्यके ४२ पणि लख्याछे तेमतांतरछे। सूर्यनो मंडल एक योजन ना एकसठि या ४८ भागप्रमाणे विष्कंभपणे अने पिहुलपणे कह्यो। एक योजनना एकसठ भाग करियें ते मांथी १३ भाग ओछा सूर्य मंडलछे ॥ इति अठतालीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ४८ ॥ हिवे एकूनपंचासमो लिखेछे ॥ सातदिन सात गुणाछे जेहने विषे एहवी भिक्षुप्रतिमा साधुना अभिग्रह विशेष ते सप्तसप्तमिका भिक्षूनीप्रतिमा उगुणपंचास रात्रि दिवसे अहोरात्रीयें पूरीथाय। एकसो छन्नुं १९६ भिक्षायें करी यथासूत्रोक्त विधियें सिद्धांतोक्तमार्गे आरा धी होय एतले पहिलेदिन १ बीजेदिन २ त्रीजेदिन ३ एम सातमेदिन ७। एम बीजि सप्तकें पहिले दिन २ बीजेदिन ४ त्रीजेदिन ६ एमसातमेंदिन १४। एम

॥ टीका ॥

ह्वि प्रथमेसप्तके प्रतिदिनमेकैकभिक्षाग्रहणात् सप्तभिक्षाभवंति द्वीतीयेद्वयो २ ग्रहणाच्चतुर्दश एवंसप्तमेसप्तानांग्रहणा देकोनपंचाशदित्येवंसर्वमीलनेयथोक्त मानम्भवतीति अहासुत्तंति यथासूत्रंयथागमंसम्यङ्न्यायेनस्पष्टाभवंतीति शेषोद्रष्टव्यः संपन्नजोव्वणाभवंतित्ति नमातापितृपरिपालनामपेक्षंतद्दत्यर्थः ठिद्दत्ति आयुष्कं ॥ ४८ ॥ तत्रपुरिसोत्तमत्ति चतुर्थवासुदेवोऽनंतजिज्जिनकालभावी तथाकंचणत्ति उत्तरकुरुषुनीलवदादीनां पञ्चानामानुपूर्व्यव्यवस्थिता

॥ मूल ॥

एकुपडिमाए एगूणपन्नाए राइंदिएहिं छन्नऊयभिक्खासएणं अहासुत्तं आराहिया भवइ देवकुरुउत्तरकुरा सुणं मणुया एगूणपन्नराइंदिएहिं संपन्नजोव्वणा भवंति तेइंदियाणं उक्कोसेणं एगूणपन्नराइंदिया ठिई प० ॥ ४९ ॥ मुणिसुव्वयस्सणं अरहओ पंचासंअज्जियासाहस्सीओ होत्था अणंतेणं अरहा पन्ना

॥ भाषा ॥

त्रीजे सप्तके पहिलेदिन ३ बीजेदिन ६ त्रीजेदिन ९ एम सातमेदिन २१।एम चोथे सप्तके पहिलेदिन ४ बीजेदिन ८ त्रीजेदिन १२ एम सातमेदिन २८। एम पांचमेसप्तके पहिलेदिन ५ बीजेदिन १० त्रीजेदिन १५ एम सातमेदिन ३५।एम छट्ठे सप्तके पहिलेदिन ६ बीजेदिन १२ त्रीजेदिन १८ एम सातमे दिन ४२ एम सातमे सप्तके पहिलेदिन ७ बीजेदिन १४ त्रीजेदिन २१ एम सातमेदिन ४९ । एमसर्वमिली १९६ भिक्षायई। देवकुरु उत्तरकुरु ने विषे युगलिया मनुष्य ४९ रात्रि दिवसें ४९ अहोरात्रीयें संप्राप्त यौवन होय एतले ४९ दिनलगें माइत पालना करे पछे भाई बहिन धणी धणियाणी थईने प्रवर्ते। तेइन्द्रिय जीवनो उत्कृष्टो ४९ रात्रि दिवसनो आउखो कह्यो। इति ४९ समवाय संपूर्ण ॥ ४९ ॥ हिवे ५० मो समवाय लिखिये। मुनिसुव्रत बीस

मांमहाह्रदानांपूर्वापरपार्श्वयो: प्रत्येकंदशकांचनपर्वताभवंति तेचमर्वेंशतं एवंदेवकुरुषुनिषधादीनां महाह्रदानां पार्श्वत: शतभ्भवति सर्वएतेजंबूद्वीपेद्वि शतमानाभवंति तेयोजनशतोच्छ्रिता: शतमूलविष्कंभा स्तन्नामकदेवनिवासभूतभवनालंकृतशिखरतला: ॥ ५० ॥ अथैकपंचाशस्थानकं । तत्र ॥ टीका ॥

सं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था पुरिसुत्तमेणं वासुदेवे पन्नासं धणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था सव्वेविणं दीहवेयड्ढा मूलेपन्नासं २ जोयणाणि विक्खंभेणं प० लंतएकप्पे पन्नासं विमाणावाससहस्सा प० सव्वाउणं तिमिस्स गुहा खंडगप्पवाउ गुहाउ पन्नासं २ जोयणाइं आयामेणं प० सव्वेविणं कंचणगपव्वया सिहरतले पन्नासं२ ॥ मूल ॥

मा अरिहंतने पंचास आर्यानी साध्वीनी संपदाना सहस्र थया । अनंतनाथ तेरमा अरिहंत पंचास धनुष ऊंचा ऊंचपणे थया । अनंतनाथने वारें पुरुषोत्त म नामा चौथो वासुदेव पंचास धनुष ऊंचो ऊंचपणे हुयो । सगलाइ दीर्घ वैताढ्य ३४ जंबूद्वीपना ६८ धातकीखंडना ६८ पुष्करार्द्धना एवं १७० दीर्घ वैताढ्य मूलने विषे पंचास पंचास योजन विष्कंभपणे पिहुलपणें कह्या । लांतक छठे देवलोके पंचास सहस्र विमानावास कह्या । सगला जंबूद्वीप ने विषे ३४ दीर्घ वैताढ्य पर्वत छे एकेक वैताढ्यें बेबे गुफा छे तेमांहि तिमिश्रागुफा पैसारानी खंडप्रपात गुफा नीसारानी एबिहु गुफा पंचास पंचास योजन आयामपणें कही । उत्तर कुरुने विषे नीलवंतादिक पांच द्रहअनुक्रमे रह्याछे ते एकेक द्रहने पूर्व पश्चिमने पासे प्रत्येके प्रत्येके दश दश कांचन पर्वतछे तेसर्बमिली एम ज देव कुरुने विषे १०० सर्बमिली २० ० कांचनगिरि हुआ । ते सगला कांचनगिरि शिखर तलने विषे पंचास योजन पिहुलपणे कह्या एकसो योजन ऊं ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

बंभचेराणंति आचारा: प्रथम श्रुतस्कन्धाध्ययनानां शस्त्रपरिज्ञादीनां तत्र प्रथमे सप्तोद्देशका इति सप्तैवोद्देशनकाला एवं द्वितीयादिषु क्रमेण षट् चत्वार: चत्वार: एवं पंच अष्टौ चत्वार: षट् सप्तैवमेकपञ्चाशदिति सुप्पहेत्ति चतुर्थोबलदेवअनंतजिज्जिननाथकालभावी तस्येहैकपंचाशद्वर्षलचाण्यायु: पुनरुक्तमावश्यकेतु पंचपंचाशदुच्यते तदिदंमतांतरमिति एकावन्नंउत्तरपगडीओत्ति दर्शनावरणस्यनव नाम्नोद्विचत्वारिंशदित्येकपंचाशदिति ॥ ५१ ॥ अथद्विपंचाश

॥ मूल ॥

जोयणाइं विक्खंभेणं प० ॥ ५० ॥ नवण्हंबंभचेराणं एकावन्नं उद्देसणकाला प० चमरस्सणं असुरिंदस्स असुररन्नो सभासुधम्मा एकावन्नखंभसयसंनिविठा प० एवंचेवबलिस्सवि सुप्पभेणं बलदेवे एकावन्नं वाससयसहस्साइं परमाउं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावसव्वदुक्खप्पहीणे दंसणावरणनामाणं दोण्हंकं

॥ भाषा ॥

चाछे। इति ५० समवाय संपूर्ण ॥ ५० ॥ हिवे ५१ मा समवाय लिखेछे। आचारांगे प्रथमश्रुतस्कंधे नव ब्रह्मचर्याध्ययन शस्त्रपरिज्ञादिक तेहना ५१ उद्देशानाकाल कह्या। प्रथमाध्ययमे ७ उद्देशा द्वितीयाध्ययने ६ तृतीये ४ चतुर्थे ४ पंचने ५ षष्ठे ८ सप्तमे ४ अष्टमे ६ नवमे ७ सर्वमिली ५१ उद्देशनकाला कह्या। वीजो विचार २५ ठाणें जाणिवो सही। चमरेंद्र असुरराजनी सुधर्मासभा एकावन से स्तंभेकरी संनिविष्ट सहित कही। बलेंद्र असुरेंद्रनी असुरराजानी सभा सुधर्मा ५१ सेस्तंभेकरी सन्निविष्ट कही। अनंतनाथने वारे सुप्रभनामा चोथा बलदेव ५१ लाख वर्षनो उत्कृष्ट आउखो पालीने सिद्धबुद्धथयो सर्वदु:खयकी प्रक्षीणथयो मोक्षगयो। आवश्यके ५० लाखवर्षकह्या तेमतांतर। बीजोकर्म दर्शनावरणीय तेहनो उत्तरप्रकृति ९ छट्ठोनामकर्म तेहनी

॥ टीका ॥

स्थानकं॥ तत्रमोहणिज्जस्सकम्मस्सत्ति। इहमोहनीयकर्मणोऽवयवेषु चतुर्षुक्रोधादिकषायेषु मोहनीयमुपचर्यावयवेसमुदायोपचारन्यायेन मोहनीयस्येत्युक्तं तथा पिकषायसमुदायापेक्षया द्विपंचाशन्नामधेयानि नपुनरेकैकस्यकषायमात्रस्यैवेति तत्रक्रोधइत्यादीनि दशनामानि क्रोधकषायस्य चंडिकेत्ति चांडिक्यं तथा मानादीन्येकादश मानकषायस्य अनुक्कोसेत्ति आत्मोत्कर्षः उक्कोसेति उत्कर्षः उन्नत्तं उन्नामेति उन्नामः तथा मायादीनि सप्तदश मायाकषायस्य णूमेत्ति

॥ मूल ॥

म्माणं एकावन्नं उत्तरकम्मपगडीउ प० ॥ ५१ ॥ मोहणिज्जस्सणं कम्मस्स बावन्नंनामधेज्जा प० तं० कोहे कोवे रोसे दोसे अखमा संजलने कलहे चंडिक्के भंडणे विवाए। माणे मदे दप्पे थंभे अणुक्कोसे गव्वे परपरिवाए उक्कोसे अवक्कोसे उन्नए उन्नामे। माया उवही नियडी वलए गहणे णूमे कक्के कुरुए दंभे कूडे जिम्मे किब्बिसे अणायरणया गूहणया वंचणया पलिकुंचणया सातिजोगे। लोभे इच्छा मुच्छा

॥ भाषा ॥

उत्तरप्रकृति ४२ त्रिहुंकर्मनी ५१ उत्तरप्रकृतिकही। इति ५१ समवाययथो ॥ ५१ ॥ हिवे ५२ समवाय लिखेछे। मोहनीय चौथोकर्म तेहना ५२ नामधेयकह्या। मोहनीयकर्ममांहि ४ कषाय अवतरयाछे तेमाटे क्रोधकषायना १० नामकह्या तेकहेछे। क्रोध १ कोप २ रोष ३ द्वेष ४ अक्षमा ५ संज्वलन ६ कलह ७ चाण्डिक्य ८ भंडण ९ विवाद १०। मानाश्रित ११ नाम मान १ मद २ दर्प ३ थंभ ४ आत्मोत्कर्ष ५ गर्व ६ परपरिवाद ७ उत्कर्ष ८ अपकर्ष ९ उन्नत्त १० उन्नाम ११ ॥ मायाश्रितनाम १७ माया १ उपधि २ निकृति ३ वलय ४ गहन ५ नूमनीचो ६ कल्क ७ कुरुक ८ दंभ ९ कूड १० जिह्म ११ किल्बिषिक १२ आनाचरणता १३ गूहनता १४ वंचनता १५ परिकुंचनता १६ सातियोग १७। लोभाश्रितनाम १४। लोभ १ इच्छा २ मूर्छा ३ कांक्षा ४ गृद्धि ५

व्यवमं कक्केत्ति कल्कं कुरुएत्ति कुलकं झिमेत्ति जह्मं तथालोभादीनि चतुर्दश लोभकषायस्य भिज्भाअभिज्भत्ति अभिध्यानमभिध्येत्यस्य पिधानमित्यादा
विव वैकल्पिके अकारलोपे भिध्यावेति शब्दभेदान्नाम;यमिति गोथूभेत्यादि गोस्तुभस्य प्राचांलवणसमुद्र मध्यवर्त्तिनो वेलंधरनागराज निवास भूतपर्वतस्य ॥ टीका
पौरस्त्याञ्चरमांतादपसृत्य वडवामुखस्य महापाताल कलशस्य पाश्चात्यश्चरमांतोयेन भवतीति गम्यते एसणंति एद्रतन्तरमध्ये बाधया व्यवधानलक्षणमित्यर्थः
द्विपंचाशद्योजनसहस्राणि भवन्ती त्यक्षरघटना भावार्थस्त्वयं इह लवणसमुद्रं पंचनवतियोजनसहस्राण्यवगाह्य पूर्वादिषु दिक्षु चत्वारः क्रमेण वडवामुखकेतु

कंखा गेही तिण्हा भिज्जा अभिज्जा कामासा भोगासा जीवियासा मरणासा नंदी रागे। गोथूभस्सणं आ ॥ मूल ॥
वासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाउ चरमंताउ वलयामुहस्स महापायालस्स पच्चत्थिमिल्लेचरमंते एसणं बावन्नं

तृष्णा ६ भिध्या ७ अभिध्या ८ कामाशा ९ भोगाशा १० जीविताशा ११ मरणाशा १२ नंदी १३ रागो १४। सर्वमिली ५२ थया। पूर्व लवण समुद्रमांहि
गोस्तूभ नाम वेलंधर नागराजानो आवासपर्वत तेहना पूर्वना चरिमांत थकी छेहलाप्रदेश थकी मांडी वडवामुख महा पातालकलशनो पश्चिमनो ॥ भाषा ।
चरिमांत छेहलो प्रदेश एह बावन सहस्र योजन आवाधा विचाले आंतरो कह्यो। जंबूद्वीपनो जगती थकी मांडी चिहुंदिसे ९५ सहस्र योजन लगे समुद्र
अवगाहीये तिहां पूर्वादिक चिहुंदिशि क्रमे वडवामुख १ केतु २ यूप ३ ईसर ४ एह चार पातालकलश पामीयें तथा जंबूद्वीप पर्यंत थकी ४२ सहस्र
योजने समुद्र मांहि जइ तिहां चिहुंदिसे ४ वेलंधरनां पर्वत गोस्तूभादिक छे ते सहस्रना पिहुला छे सर्वमिली ४३ हजार योजन प्रमाण थया तो ९५ सहस्र
मांहिथी ४३ सहस्र योजन काढीये तो पूठें गोस्तूभ पर्वतनो वडवा मुख महापाताल कलशनो ५२ सहस्र योजन आंतरोछगरे एमज चिहुंदिसि एम दक्षिणे

क जूयकेश्वराभिधाना महापातालकलशा भवंति तथा जंबूद्वीपपर्यंता द्विचत्वारिंशद्योजनसहस्राण्यवगाह्य सहस्रविष्कंभा अत्वारएव वेलंधरनागराजपर्वता ॥ टीका ॥
गोस्तुभादयो भवंति ततश्च पंचनवत्या स्त्रिचत्वारिंशत्यपकर्षितायां द्विपंचाशत्सहस्राण्यंतरं भवति सौधर्मे त्रिंशद्विमानानांलक्षाणि सनत्कुमारेद्वादश माहेंद्रे
चाष्टाविंशतिः सर्वाणि द्विपंचाशत् ॥ ५२ ॥ त्रिपंचाशस्थानके लिख्यते महाहिमवंतेत्यादि सूत्रे संवादगाथा । तेवन्नसहस्साइं नवयसएजोयणाणिइगतीसे

जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवं दगभासस्सणं केउगस्स संखस्स जूयगस्स दगसीमस्स ईसरस्स ॥ मूल ॥
नाणावरणिज्जस्स नामस्स अंतरायस्स एतासिण तिण्हं कम्मपगडीणं बावन्नं उत्तरपयडीउ प० सोहम्म स
णंकुमार माहिंदेसु तिसुकप्पेसु बावन्नं विमाणवाससयसहस्सा प० ॥ ५२ ॥ देवकुरुउत्तरकुरु

दगभास पर्वतनां पूर्वांत थकी मांडी। केतुक पाताल कलश विचाले ५२ सहस्र योजन आंतरो कह्यो। पश्चिमें शंख पर्वतना पूर्वांत थकी मांडी यूपनाम ॥ भषा ॥
पाताल कलशनो पश्चिमांत विचे ५२ सहस्र योजन। उत्तर समुद्रमांहि दगसोम पर्वतना पूर्वांत थी मांडी ईसरनाम पाताल कलशनो पश्चिमांत विचाल
५२ सहस्र योजन आंतरो। ज्ञानावरणीय कर्मनी प्रकृति ५ नाम कर्मनी ४२ प्रकृति अंतरायनी प्रकृति ५ एहत्रिहुंकर्मनी ५२ उत्तर प्रकृति कही।
सौधर्म कल्पे ३२ लाख विमान। सत्कुमारें १२ लाख विमान माहेंद्रे ८ लाख विमान। एम त्रिण देवलोकना मिली ५२ लाख विमानावास शतसहस्र कह्या
एतले ५२ लाख विमानावास कह्या। इति ५२ मो समवाय पूर्णथयो ॥ ५२ ॥ हिवे ५३ समवाय लिखेछे। देवकुरु उत्तरकुरु संबंधिनी

॥ ११४ ॥

जीवामहाहिमवश्रो अवकलाछक्कलाश्रोत्ति ॥ १ ॥ संवच्छरपरियागत्ति संवच्छरमेकं यावत् पर्यायः प्रव्रज्यालक्षणो येषां ते संवत्सरपर्यायाः महइमहालएसु महाविमाणेसुत्ति महांतिच तानि विस्तीर्णानिच अतिमहालया आत्यंतमुत्सवाश्रयभूतानि महांतिमहालयास्तेषु महांतिचतानिप्रशस्तानि विमानानिचेति विग्रहः एतेचाप्रतीता अनुत्तरोपपातिकांगेतु ये धीयंते तत्र त्रयस्त्रिंशत् बहुवर्षपर्याया येति ॥ ५३ ॥ चतुःपंचाशस्थानके लिख्यते । पाउणित्तत्ति प्राप्य ॥ टीका ॥

याउणं जीवाउ तेवन्नं २ जोयणसहस्साइं साइरेगाइं आयामेणं प० महाहिमवंतरुप्पीणं वासहरपव्वयाणं जीवाउ तेवन्नंजोयणसहस्साइं नवयएगतीसे जोयणसए छच्चएगूणवीसइभाए जोयणस्स आयामेणं प० समणस्सणं भगवउमहावीरस्स तेवन्नं अणगारासंवच्छरपरियाया पंचसुअणुत्तरेसु महइमहालएसु महाविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना समुच्छिमउरपरिसप्पाणं उक्कोसेणं तेवन्नंवाससहस्सा ठिई प० ॥ ५३ ॥ ॥ मूल ॥

जीवा प्रत्यंचारूप त्रेपनत्रेपन योजन सहस्र झाझेरी लांब पणे कही । महाहिमवंत बीजो वर्षधर एह बिहुं वर्षधरनी जीवा प्रत्यंचा त्रेपन २ सहस्र योजन प्रमाण उपरि नवसे एकत्रीस योजन एक योजन नाउगुण सहाइ छकला । ५३९३१ योजन १९ । ६ कला आयामे लांब पणे कह्या । श्रमण भगवंतमहावीर ना ५३ अणगारयती संवच्छर पर्याया एकवर्षनो पर्याय दीक्षा जेहने एहवा ५३ हुया । पछे संथारोकरी अनुत्तर विजयादिक अतिमोटो घणो विस्तीर्ण महाविमान तेहने विषे देवता पणे उपना । समूर्छिम उरपर सर्पनो उत्कृष्टी त्रेपन वर्ष सहस्रनो आउखो कह्यो ॥ इति ५३ मो समवाय पूर्ण थयो ॥ ५३ ॥ भाषा ॥

एगणिसेज्जाएति एकेनासनपरिग्रहेण वागरणाइंति व्याक्रियंते अभिधीयंते इति व्याकरणानि प्रश्ने सति निर्वचनतापादमानाः पदार्थाः वागरित्तत्ति व्याकृतवांस्तानि वा प्रतीतानि अनंतनाथस्य च चतुःपंचाशद्गणा गणधरा योक्ताः आवश्यकेतु पंचाशदुक्ता स्तदिदं मतांतरमिति ॥ ५४ ॥ पंचपंचाशत् ॥ टीका ॥

भरहेरवएसुणं वासेसु एगमेगाएउसप्पिणीए उसप्पिणीए चउवन्नं २ उत्तमपुरिसा उप्पज्जिंसुवा ३ तं० चउवीसं तित्यकराबारसचक्कवट्टी नवबलदेवा नववासुदेवा अरहोणं अरिठनेमी चउवन्नंराइंदियाइं छउमत्थपरिया यंपाउणित्ता जिणेजाए केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी समणेभगवं महावीरे एगदिवसेणं एगनिसिज्जाए चउप्पन्ना इं वागरणाइं वागरित्या अणंतस्सणं अरहउ चउपन्नं गणहरा होत्था ॥ ५४ ॥ मल्लिस्सणंअरह ॥ मूल ॥

हिवे ५४ मो समवाय लिखेछे । भरत ऐरवत क्षेत्रने विषे एकेकीयें अवसर्पिणीयें एकेकीयें उत्सर्पिणीयें चौपन २ उत्तम पुरुष उपना उपजे छे । उपजस्ये ते कहेछे । २४ तीर्थंकर । १२ चक्रवर्त्ती । ९ बलदेव । ९ वासुदेव । सर्वमिली ५४ थया । अरिहंत अरिष्टनेमी ५४ रात्रि दिवस लगे छद्मस्थ पर्याय पाली ने जिन हुया केवली । सर्व जाणे ते सर्वज्ञ सर्वसजात संसारना भाव पदार्थ देखे ते सर्वदर्शी हुया । श्रमण भगवंत श्रीमहावीर एके दिवसे एक निषद्या ये एके आसणे बेठे ५४ । व्याकरण प्रश्न प्रति व्याकृतवंत कहता हुया । अनंतनाथ अरिहंतने ५४ गणधर हुया । इति चौपनमो समवाय थयो ॥ ५४ ॥ हिवे ५५ मोसमवाय लिखेछे । मल्लिनाथ अरिहंत पंचावन वर्षसहस्रलगे उत्कृष्टो आउखोपालीने सिद्धथया बुद्धथया यावत् सर्व्वे सर्वदुःख थकी ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

स्थानकेलिदं लिख्यते। मंदरस्से त्यादि इह मेरोः पश्चिमांतात् पूर्वस्य जम्बूद्वीपद्वारस्य पश्चिमांतः पञ्चपञ्चाशत्सहस्राणि योजनानां भवतीत्युक्तं तत्र किल मेरो विष्कम्भमध्यभागात् पंचाशत्सहस्राणि द्वीपांतो भवति लक्षप्रमाणत्वा द्वीपस्य मेरुविष्कम्भस्य च दशसाहस्रिकत्वा द्वीपार्द्धे पंचसहस्रक्षेपेण पञ्चपंचाशदेव भवतीति इह च यद्यपि विजयद्वारस्य पश्चिमांत इत्युक्तं तथापि जगत्याः पूर्वान्त इति किल सम्भाव्यते मेरुमध्यात् पञ्चाशतो योजनसहस्राणां जगत्यां द्यन्ते पूर्यमाणत्वात् जंबूद्वीपजगतीविष्कंभेन च सह जम्बूद्वीपलक्षणपूरणीय लवणसमुद्र जगतीविष्कम्भेनच लक्षद्वय मन्यथा द्वीपसमुद्रमाना ज्जगतीमाने पृथग्भणने मनुष्यक्षेत्रपरिधिरतिरिक्तास्यात् साहि पंचचत्वारिंशल्लक्षप्रमाणक्षेत्रापेक्षया भिधीयते तत सैव मतिरिक्ता स्यादिति अथचेह किंचिदूनापि पंचपंचाशत्

॥ मूल ॥

उपणपन्नंवाससहस्साइं परमाउं पालइत्ता सिद्धेवुद्धे जावप्पहीणे मंदरस्सणं पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाउ चरमंता उ विजयदारस्स पच्चत्थिमिल्ले चरमंते एसणं पणपन्नं जोयणसहस्साइं अवाहाए अंतरे प० एवंचउदिसिंपि विजयवेजयंतजयंतअपराजियंति समणेभगवंमहावीरे अंतिमराइयंसि पणपन्नं अज्झयणाइं कल्लाणफलविवा

॥ भाषा ॥

प्रक्षीण रहित थया। मेरू पर्वतना पश्चिमना चरिमांत थकी छेहल्ला प्रदेश थकी जंबूद्वीपनो पूर्वनोद्वार विजयनाम तेहनो पश्चिमनो चरिमांत छेहलो प्रदेशएह ५५ योजन सहस्र आबाधा विचाले आंतरो कह्यो। मेरुथकी विजय दरवाजा ४५ सहस्र योजने होय ते मांहि दश सहस्रनो मेरुघालिये एतले सर्वमिली ५५ सहस्र योजन थया। इहां यद्यपि विजय द्वारनो पश्चिमांत कह्योछे परंजगतीनो पूर्वांत लीजे तो पूरा५५ सहस्र योजन थया। एमज चिहुंदिसे मेरु पर्वतमांहि घालतां मेरुथकी दक्षिणदिसे वैजयंत द्वारनो पश्चिमे जयंतनो उत्तरे अपराजितनो आंतरो जाणिवो। श्रमण भगवंत महावीर छेहलीरा

॥ टीका ॥

पूर्णतया विवर्चितेति अंतिमरायंसित्ति सर्वायुः कालपर्यवसानराची रात्रेरंतिमे भागे पापायां मध्यमायां नगर्यां हस्तिपालस्य राज्ञःकरणसभायां कार्त्ति कमासामावास्यायां स्वातिनक्षत्रेण चन्द्रमसा युक्तेन नागकरणे प्रत्यूषसि पर्यंकासनेनिषस्रः पंचपंचाशदध्ययनानि कल्लाणफलविवागाइंति कल्याणस्य पुण्य स्य कर्मणः फलं कार्यं विपाच्यंते व्यक्तीक्रियन्ते यै स्तानि कल्याणफलविपाकानि एवं पापफलविपाकानि व्याकृत्य प्रतिपाद्य सिद्दोबुद्धः यावत्करणात् मुत्ते अंतकडे परिनिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणेत्ति दृश्यं पढमेत्यादि प्रथमायां त्रिंशन्नरकलचाणि द्वितीयायां पंचविंशति रिति पंचपंचाशत् दंसणेत्यादि दर्शनावरणी

॥ मूल ॥

गाइं पणपन्नं अज्झयणाइं पावफलविवागाइं वागरित्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे पढमविइयासु दोसु पुढवीसु पणपन्नं निरयावाससयसहस्सा प० दंसणावरणिज्जनामाउयाणं तिण्हं कम्मपगडीणं पणपन्नं उत्तरपग डीउ प० ॥ ५५ ॥ जंबूद्दीवेणंद्दीवे छप्पन्न नक्खत्ताचंदेण सद्धिं जोगं जोइंसुवा ३ विमलस्सणं

॥ भाषा ॥

त्रियें कार्त्तिकवदी अमावसनी रात्रिये पालठीवाली बेठेथके ५५ अध्ययन पावानगरीमें हस्तिपाल राजानी दानसभाये कल्याण शुभकर्मनोफल कार्य विपा चीये प्रगटकरीये जेणे अध्ययने तेकल्याण फल विपाक कहीये सुबाहु कुमार प्रमुख ५५ अध्ययन जाणिवा। पाप फल विपाक मृगापुत्रादिकना कह्या सिद्धां तनेविषें सिद्ध थया बुद्धथया वलीयावत्शब्दे सर्वदुःख थकी प्रक्षीणथया । पहिलीये ३० लाख नरकांवासाकह्या बीजीयें २५ लाख बिहुं नरक पृथिवीना मिली ५५ लाख नरकावासा कह्या। दर्शनावरणीय प्रकृति ८ नाम कर्मनी ४२ आउखानी ४ एमत्रीहु कर्मनी ५५ उत्तर प्रकृति कही। इति ५५ मो समवा यथयो ॥ ५५ ॥ हिवे ५६ मोसमवाय लिखेछे। जंबूद्वीप द्वीपने विषें ५६ नक्षत्र चंद्रमा साथे योग संबंध योजना करता हुया संबंध करेछे संबंध

॥ टीका ॥

यस्य नव प्रकृतयो नाम्नो द्विचत्वारिंशत् आयुषस्तस्य इत्येवं पंचपंचाशदिति ॥ ५५ ॥ अथषट्पंचाशत्स्थानके लिख्यते। जंबूद्वीपेत्यादि तत्र चन्द्रद्वयस्य प्रत्येकमष्टाविंशते र्भावात् षट्पंचाशन्नक्षत्राणि भवन्ति विमलस्येह षट्पंचाशद्गणा गणधरा श्चोक्ताः आवश्यके तु पञ्चपञ्चाशदुच्यते तदिदं मतांतरमिति ॥ ५६ ॥ अथ सप्तपंचाशत्स्थानके किमपि लिख्यते। गणिपिडगाणंति गणिन आचार्यस्य पिटकानीव पिटकानि सर्वस्वभाजनानीति गणिपिटकानि तेषां आचारस्य श्रुतस्कन्धद्वयरूपस्य प्रथमांगस्य चूलिका सर्वान्तिममध्ययनं विमुक्त्यभिधान माचारचूलिका तद्वर्जानां तत्राचारे प्रथमश्रुतस्कंधे नवाध्ययनानि द्वितीये षोडश निशीथाध्ययनस्य प्रस्थानांतरत्वे नेहानाश्रयणात् षोडशानां मध्ये एकस्या चारचूलिकेति परिहृतत्वात् शेषाणां पंचदश सूत्रकृते

॥ मूल ॥

अरहउ बप्पन्नं गणा गणहरा होत्था ॥ ५६ ॥ तिराहं गणिपिडगाणं आयारचूलियाव ज्जाग सत्तावन्नं अज्झयणा प० तं० आयारे सूयगडे ठाणे गोथूभस्सणं आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाउ

॥ भाषा ॥

कह्यो एतले जंबूद्वीपमांहि २ चंद्रमाछे एकेक चंद्रमाने परिवारे २८ नक्षत्र होइ तिहं चंद्रमानां मिली ५६ नक्षत्र होय। विमलनाथ अरिहंतना ५६ गणधर सूत्रे कह्या आवश्यके ५० गणधर कह्याछे मतांतर छे। इति ५६ समवाय संपूर्ण ॥ ५६ ॥ हिवे ५७ समवाय लिखेछे। त्रिण गणी कहिये आचार्य तेह ने पेटीरत्नभाजन सरीखाते गणिपिटक एहवासूत्रना आचारांग प्रथम श्रुत स्कंधे ८ अध्ययन बीजे १६ अध्ययनछे । तेमांहीथी छेहल्या अध्ययन विमुक्ति नाम आचार चूलिकाते एकटालो बीजा १५ अध्ययन तीजे तो २४ अध्ययन आचारांग सूयगडांग पहिले श्रुतस्कंधे १६ अध्ययन बीजे ७ सर्वमिली २३ ठाणांगे १० अध्ययन सर्वमिली ५७ अध्ययन कह्या। तेसूत्रनानाम कहेछे अनुक्रमे आचारांग १ सूयगडांग २ ठाणांग ३। जगतीथकी ४२ सहस्र योजने समुद्र

द्वितीयांशे प्रथमश्रुतस्कन्धे षोडशद्वितीयेसप्त स्थानांगे दशे त्वेवं सप्तपंचाशदिति गोथूभेत्यादौ भावार्थोयं द्विचत्वारिंशत् सहस्राणि वेदिका गोस्तुभपर्वतयो रंतरं ॥ टीका ॥
सहस्रं गोस्तुभस्य विष्कंभः द्विपंचाशद्गोस्तुभवडवामुखयो रंतरं दशसहस्रमानत्वा वडवामुखविष्कंभस्य तदर्द्धं पंचेति ततो द्विपंचाशतः पंचानां च मीलने सप्त
पंचाशदिति जीवाणंधणुपिट्ठत्ति मण्डलं खण्डाकारं क्षेत्रं इह सूत्रे सम्वादगाथार्द्धं सत्तावन्नसहस्सा धणुपिट्ठंणउयदुसयदसकलत्ति ॥ ५७ ॥

चरमंताउ वलयामुहस्स महापायालस्स बहुमज्झदेसभाए एसणं सत्तावन्नं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे ॥ मूल ॥
प० एवं दगभासस्स केउस्सय संखस्स य जूवस्सय दगसीमस्स ईसरस्सय मल्लिस्सणं अरहउ सत्तावन्नं
मणपज्जवनाणिसया होत्था महाहिमवंतरुप्पीणंवासहरपव्वयाणं धणुपिठं सत्तावन्नं २ जोयणसहस्साइं

मांहि पूर्वदिशि गोस्तुभनामा वेलंधर नागराजानो आवासपर्वत तेहना पूर्वना चरिमंतथकी छेहल्या प्रदेशथकी वडवामुख महापाताल कलशनो बहुमध्य ॥ भाषा ॥
देशभाग एहने ५७ योजन सहस्र आबाधाये विचाले आंतरो कह्यो एतले गोस्तूभ पर्वतथकी शुद्ध पूर्वे ५२ सहस्र योजने वडवामुख पाताल कलशछे अने ते
वडवामुख १० सहस्र पिहुलो तेहनो मध्यभाग ५ सहस्रनो ५२ सहस्र भेला करतां ५७ सहस्र योजन थया । एम दक्षिणे दगभास पर्वतना पूर्वना छेहला
प्रदेशथकी मांडी केतुक पाताल कलशनो मध्यभाग ५७ सहस्र योजने। एमज पश्चिमे शंखनामा वेलंधरथकी मांडी यूपकनामा पाताल कलशनो मध्यभाग
५७ सहस्र योजने । उत्तरे दगसीम वेलंधर थकी ईश्वरनाम पाताल कलशनो मध्यभाग ५७ सहस्र योजने । मल्लिनाथ अरिहंतने ५७ मन पर्यवज्ञानी ५७००
थया । जंबूद्वीप लघव मंडलखेत्र तेमांही हिमवंत बीजो वर्षधर रूपी पांचमो एहबेहुं वर्षधर पर्वतनो धनुपृष्ठि ५७ योजन सहस्र बली बेसय पने बाणो

अष्टपंचाशत्स्थानकमपि लिख्यते। पढमेत्यादि तत्र प्रथमायां त्रिंशन्नरकलक्षाणि द्वितीयायां पंचविंशतिः पंचम्यां त्रीणीति सर्वाण्यष्टपंचाशदिति नाणेत्यादि तत्र ज्ञानावरणस्य पंच वेदनीयस्य द्वे आयुषश्चतस्रो नाम्नो द्विचत्वारिंशत् अंतरायस्य पंचेति सर्वा अष्टपंचाशदुत्तर प्रकृतयः गोथूभस्सेत्यादि अस्य च भावार्थः पूर्वोक्तानुसारेण वसेयः एवंचउद्दिसिंपि नेयव्वति अनेन सूत्रत्रयमतिदिष्टं तच्चैवं दगभासस्सणंआवासपव्वयस्स उत्तरिल्लाओ चरमंताओ केउगस्स महापायालस्स बहुमज्झदेसभागे एसणं अट्ठावन्नं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पन्नते एवं संखस्स आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओजूयगस्स महा

दोन्नियतेणउए जोयणसए दसयएगूणवीसइभाए जोयणस्स परिक्खेवेणं प० ॥ ५७ ॥ पढमदोच्चपंचमासु तिसुपुढवीसु अट्ठावन्नंनिरयावाससयसहस्सा प० नाणावरणिज्जस्स वेयणिय आउय नाम अंतराइयस्स एएसिणंपंचण्हंकम्मपगडीणं अट्ठावन्नं उत्तरपगडीउ प० गोथून्नस्सणं आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमि

योजन दसभाग उगुणीस हाइया एक योजनना ५७२९३ योजनना एगुणीस हाइया भाग १० कला परिक्षेपे परिधि कही ॥ इति ५७ नोसमवाय संपूर्ण ॥ ५७ ॥ हिवे अट्ठावन मो समवाय लिखेछे। पहिलीयें ३० लाख नरकावासा बीजीयें २५ लाख पांचमीये ३ लाख एम त्रिणना मिली अट्ठावन नरकावासा सतसहस्र एतले ५८ लाख नरकावासा कह्या। नाणावरणीय ५ प्रकृति वेदनीयनो २ आऊखानो ४ नामकर्मनो ४२ अंतरायनो ५ एह ५ कर्मनो उत्तर प्रकृति अट्ठावन कही। समुद्र मांहि पूर्वदिशें गोस्तूभ नामा वेलंधर नागराजानो आवासपर्वत छे तेहनां पश्चिम चरमांतथी छेहला प्रदेशथकी मांडी वडवामुख महापाताल कलशनो बहुमध्यदेशभाग एह ५८ सहस्र योजन आबाधायें विचाले आंतरो कह्यो। जंबूद्वीपनी पूर्व जगतीथकी मांडी ४२ सह

॥ टीका ॥ पातालस्स एवंदगसीमस्स आवासंपव्वयस्सदाहिणिल्लाओ चरमंताओ ईसरस्स महापायालस्सत्ति ॥ ५८ ॥ अथैकोनषष्ठिस्थानके लिख्यते। चंदस्सणमित्यादि संवत्सरो ह्यनेकविधः स्थानांगादिषू क्त स्तत्र य श्चंद्रगति मंगीकृत्य संवत्सरो विवक्ष्यते स चंद्र एव तत्र च द्वादशमासाः षट्चऋतवो भवन्ति तत्रचैकैकऋतु रेकोनषष्ठिरात्रिंदिवाग्रेण भवति कथं एकोनत्रिंशद्द्वात्रिंशच्च द्विषष्ठिभागा अहोरात्रस्ये त्येवं प्रमाणः कृष्णप्रतिपदामारभ्य पौर्णमासीपरिनि

॥ मूल ॥ ल्लाउ चरमंताउ वलयामुहस्स महापायालस्स बहुमज्झदेसभाए एसणं अठावन्नं जोयणसहस्साइं अबाहा ए अंतरे प० एवंचउदिसंपि नेयव्वं ॥ ५८ ॥ चंदस्सणं संवच्छरस्स एगमेगे उऊ एगूणसठि

॥ भाषा ॥ स्र योजन गोस्तूभ पर्वतछे ते एकसहस्रनो पिहुलो छे ते एकसहस्र योजन हायिलीजे अने गोस्तूभ थी ५२ सहस्र योजन वडवामुख कलशछे। तो गोस्तूभसं बंधी एक सहस्र ५२ सहस्र मांहि घालिये तो ५३ सहस्रथाय अने वडवामुख १० सहस्र पिहुलोछे तेहनो मध्य भाग पांच सहस्रनो ते ५३ सहस्र मांही घालिये एतले ५८ सहस्र योजन एतलो आंतरो जाणिवो। एम चिहुंदिशि ना वेलंधर पर्वत अने चिहुं पाताल कलशनो आंतरो जाणिवो दगभास पर्वत दक्षिण समुद्र मांही तेहनां उत्तर चरिमांतथी मांडी केतक पाताल कलशनो मध्यभाग ५८ सहस्र योजन आंतरो कह्यो। पश्चिमे शंखपर्वतनां पूर्वचरिमांत अने यूप कलशनो मध्यभाग५८ सहस्र [illegible] दगसीमांत ईसर पातल कलश ५८ सहस्रनो। इति ५८ समवाय पूर्णथयो ॥ ५८ ॥ हिवे ५९ मोसमवाय लिखेछे। चंद्रमानी गतिनें अंगीकार करीनें जे संवत्सर विचारिये ते चंद्रसंवत्सर कहीये। चंद्र संवत्सर १२ मासनो ऋतु ६ होय। एकेक ऋतु तेमां उगुणसाठि रात्रि दिवस छे तिहां एहवो रात्रि दिवागें ५९ अहोरात्रि प्रमाणे कह्यो तो चिहुं

ष्टितचंद्रमासो भवति द्वाभ्यांचताभ्यामृतुर्भवति तत एकोनषष्टिरहोरात्राणामृतुर्भवति यच्चेह द्विषष्ठि भागद्वयमधिकं तन्नविवक्षितं । संभवस्यैकोनषष्ठिः पूर्व ॥ टीका ॥

॥ ११८ ॥ लचाणि गृहस्थपर्याय इत्योक्तः आवश्यकेतु चतुःपूर्वांगाऽधिकासोक्तेति ॥ ५८ ॥ अथषष्ठिस्थानकं तत्र एगमेगेत्यादि चतुरशीत्यधिकशतसंख्या

राइंदियाइं राइंदियग्गेणं प० संभवेणं अरहा एगूणसठिं पुव्वसयसहस्साइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे जाव ॥ मूल ॥
पव्वइए मल्लिस्सणं अरहत्र एगूणसठिं ओहिनाणिसया होत्था ॥ ५९ ॥ एगमेगेणं मंडले
सूरिए सठिए सठिए मुहुत्तेहिं संघाइए लवणस्सणं समुद्दस्स सठिनागसाहस्सीओ अग्गोदयं धारंति विम

मासे ऋतु होय । अने एकेक मासे तीसतीस दिहाडा जोड़ये तो बिहुं मासना ६० दिन जोइये तो ५९ किम कह्या । कृष्ण पक्षनो पखवाडा थी मांडी पूनिमे मास पूरो थाय एके मासे दिन २९ अने एक दिनना वासठिया बत्तीस भाग होय एह २९ दिन बेगुणा करीये तिवारे ६४ भागनो १ दिन बे भाग ॥ भाषा ॥ थाय ते पाछला ५९ दिन मांहि घालिये एतले ५९ दिननो ऋतु होय उपरि २ भाग उगरया ते अल्पमाटे न लेखव्या जाणिवा । संभवनाथ अरिहंत बीजा उगुणसठो पूर्व लाख लगे गृहस्थाश्रम मांहि बसीने मुंड द्रव्य भावभेदे होय आगाराओ अणगारियं गृहस्थाश्रम थकी अणगारितायती पणूंपाम्या । आ वेश्यके चार पूर्वांग लगे गृहस्थाश्रम कह्यो छे । मल्लिनाथ अरिहंतने उगणसठिसे अवधि ज्ञानी थया ॥ इति ५९ समवाय थयो ॥ ५९ ॥ हिवे ६० मोसमवाय लिखेछे । सूर्यना १८० मांडला छे एकेक मांडले सूर्य साठ साठ मुहूर्त्ते बेअहोरात्रियेंजगे । लवण समुद्रनो अग्रोदक शिखानो पाणी साठ हजार नागदेवता धरे छे एतले सोले हजार योजन ऊंचो पाणीनो वेल तेऊपर २ कोस पाणीवटे वधे ते अग्रोदक सीमा कहिए । विमलनाथ अरिहंत

मां सूर्यमंडलानामेकैकं मंडलं तथाविधचारभूमिः सूर्यः षष्ट्याषष्ट्यामुहूर्त्तैर्द्वाभ्यां द्वाभ्यामहोरात्राभ्यामित्यर्थः संघातयति निष्पादयति अयमत्रभावार्थः एक ॥ टीका ॥
स्मिनद्विवस्थाने उदितः सूर्यः तत्रस्थाने पुनर्द्वाभ्यामहोरात्राभ्यामुदेतीति अर्गोदयंति षोडशसहस्रोच्छ्रिताया वेलायायदुपरिगव्यूतद्वयमानं हद्विद्वानिस्वभा
वंतदग्रोदकं वर्द्धिष्नति मोदोयस्य असुरकुमार निकायराजस्य भवनं तंभरसतिं ब्रह्मलोकाभिधान पंचमदेवलोकेंद्रस्य सद्विन्ति सौधर्मद्वाविंद्रदौशानेदाष्टा
वंशतिविमान लक्षाणोतिकृत्वा षष्ठिस्तानिभवन्तीति ॥ ६० ॥ अथैकषष्ठिस्थानकं तत्रपंचेत्यादि पंचभिः सम्वत्सरैर्निर्वृत्तमिति पंचसांवत्सरिकं तस्यगमि
त्यलङ्कारे युगस्य कालमानविशेषस्य ऋतुमासेन चंद्रादिमासेन मीयमानस्य एकषष्ठिः ऋतुमासाः प्रज्ञप्ताः इहचायं भावार्थः युगंहि पंचसंवत्सरानिष्पादयन्ति

लेणं असुरहा सट्ठिंधणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्या वलिस्सणं वइरोयणिंदस्स सट्ठिं सामाणियसाहस्सीउ प० ॥ मूल ॥
बंभस्स णं देविंदस्स देवरन्नो सट्ठिं सामाणियसाहस्सीउ प० सोहम्मीसाणेसु दोसुकप्पेसु सट्ठिं विमाणा
वाससयसहस्सा प० ॥ ६० ॥ पंचसंवच्छरियस्सणं जुगस्स रिउमासेणं मिज्जमाणस्स इग

साठ धनुष ऊंचा ऊंचपणे हुया। बलेंद्र वैरोचनेंद्र उत्तर असुर कुमारना राजाने साठ हजार सामानिक देवता आप समान देव..ा कह्या। ब्रह्मनामा ५ ॥ भाषा ॥
मां देवेंद्र देवराजा ने साठहजार सामानिक देवता कह्या। सौधर्म देवलोके ३२ लाख विमान ईशानें २८ लाख विमान बेहुं देवलोकनां मिली साठलाख
विमानावास कह्या ॥ इति ६० समवाय संपूर्ण ॥ ६० ॥ हिवे ६१ मो लिखेछे। चंद्र १ चंद्र २ अभिवर्द्धित ३ चंद्र ४ अभिवर्द्धित ५ एम पांच
वर्षनो १ युगथाय ते ऋतुमासे करी मीयमानछे चंद्रमासनोमान २९ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिना ३२ भाग ६२ ठिया ते कृष्णपक्षनी पडिवा थी पोषं

॥ ११९ ॥

तद्यथा चंद्रश्चंद्रोऽभिवर्द्धितश्चंद्रोभिवर्द्धितश्चेति तत्रएकोनत्रिंशदहोरात्राणि द्वात्रिंशच्चद्विषष्ठिभागा अहोरात्रस्येत्येवं प्रमाणेन २९ । ३२ । ६२ । कृष्णप्रतिपदामारभ्य पौर्णमासीनिष्ठितेन चन्द्रमासेन द्वादशमासपरिमाण श्चन्द्रसम्वत्सर स्तस्यच प्रमाणमिदम् त्रीणिशतान्यह्नांचतुः पञ्चाशदुत्तराणि द्वादशच द्विषष्ठिभागा दिवसस्य ३५४ । १२ । ६२ तथा एकत्रिंशदह्नां एकविंशत्युत्तरंचशतं चतुर्विंशत्युत्तरशतभागानां दिवसस्येत्येवं प्रमाणोऽभिवर्द्धितमास इति एतेन ३१ १२१ । १२४ चमासेन द्वादशमासप्रमाणोऽभिवर्द्धित संवत्सरोभवति सचप्रमाणेन त्रीणिशतान्यह्नांत्र्यशीत्यधिकानि चतुश्चत्वारिंशच्चद्विषष्ठिभागा दिवसस्य ३८३ । ४४ ६२ तदेवंत्रयाणांचन्द्रसंवत्सराणां द्वयोश्चाभिवर्द्धितसंवत्सरयो रेकीकरणेजातानि दिनानां त्रिंशदुत्तराणि अष्टादशशतानि अहोरात्राणां १८३० ऋतुमासस्य त्रिंशताहोरात्रैर्भवतीति त्रिंशताभागहारेलब्धा एकषष्ठिःऋतुमासाइति । मंदरस्सेत्यादि इह मेरुर्नवनवतियोजनसहस्रप्रमाणो द्विधाविभक्तस्तत्रप्रथमोभाग ॥ टीका

सट्ठिं उऊमासा प० मंदरस्सणं पव्वयस्स पढमेकंडे एगसट्ठिजोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० चंदमंडले ॥ मूल ॥

मासीये पूरो थाय एहमास मान १२ गुणोकोजे तिवारे वर्षनोमान ३५४ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिना १२ भाग ६२ ठिया थाय तेहने त्रिगुणो कीजे तिवारे१०६२ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिनां ६२ ठिया ३६ भाग थाय एम अभिवर्द्धित मासनो मान ३१ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिनां १२४ भागहाइय १२१ भाग प्रमाणे थाय तेहने१२ गुणो कोजे तिवारे अभिवर्द्धितवर्षनोमान३८३ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिना ४४ भाग ६२ ठिया तेहने बेगुणोकीजे ७६७ सातसे सडसठ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिना २६ भाग ६२ ठिया थायतेहने पहिले ३ चंद्र वर्षका मानमांहि घातिये तिवारे १८३० अहोरात्रि थाय ऋतु मासनो मान ३० अहोरात्रि तेमाटे १८३० नें ३० भागें हरियेतो १ युगनेविषे ६१ ऋतुमास थाय । मेरुपर्वतनो पहिलोकांड ६१ हजार योजन ऊंचपा ॥ भाषा ॥

एकषष्ठिःसहस्राण्युक्ताः द्वितीयस्तु अष्टत्रिंशत्स्थानके ऽष्टत्रिंशदितिप्रोक्ताः तेनसमासेतु कन्देनसहलक्षप्रमाणस्त्रिधा विभक्त स्तत्र प्रथमकांडं सहस्रं द्वितीयंत्रिष ष्ठि स्तृतीयंषट्त्रिंशदिति । चन्द्रमण्डले चन्द्रविमानंण्मित्यलंकृतो एगसट्ठित्ति योजनस्यैकषष्ठिभागेन षट्पंचाशद्भागप्रमाणैर्विभाजितंविभागैर्व्यवस्थापिते समांशंसमविभागं प्रज्ञप्तम् विषमांशं योजनस्यैकषष्ठि भागानां षट्पंचाशद्भागप्रमाणत्वा त्तस्यचभागभागस्या विद्यमानत्वादिति । एवंसूर्यस्यापिमण्डलंवाच्यम् अष्टचत्वारिंशदेकषष्ठिभागमात्रम् इतिवचापरमंशांतरं तस्याप्यस्तीति समांशतेति ॥ ६१ ॥ अथद्विषष्ठिस्थानकं पंचेत्यादि तत्रयुगेत्रयश्चंद्रसंवत्स राभवंति तेषुषट्त्रिंशत् पौर्णमास्योभवन्ति द्वौचाभिवर्द्धित संवत्सरौभवत स्तत्रचाभिव र्द्धितसंवत्सर स्त्रयोदशभिश्चंद्रमासैर्भवतीति तयोः षड्विंशतिः पौर्ण ॥ टीका ।

एगसठिं विन्नागविन्नाइए समंसे प० एवंसूरस्सवि ॥ ६१ ॥ पंचसंवच्छरिए णं जुगे बावठिं पुन्निमाउ बावठिं अमावसाउ प० वासुपुज्जस्स णं अरहउ बासठिं गणा बासठिं गणहरा होत्था सुक्कपक्क ॥ मूल ॥

कह्यो । मेरु पर्वत ८८ हजार योजन ऊंचोछे तेहना विभाग कीजेतेहमा पहिलो भाग ६१ हजार योजन नो बीजो ३८ हजार योजननोकह्योतिवसमाससमेतो कंदसहित मेरु येकलाख योजन प्रमाण छे तेहना तीनभागकीधाछे पहिलो १ हजार योजननो बीजो ६३ हजार योजननो त्रीजो ३६ हजार योजननो चंद्रमानो मंडल चंद्र विमान १ योजनना ६१ हाइया ५६ छप्पनभाग प्रमाणे व्यवस्थापितछे तेमाटे समांस समभाग कह्याछे। चंद्रमाना मंडलमांहिथी ५ विषमांस नीकल्या तोरह्या ५६ समांसएणिपरे सूर्यमंडल मांथी १३ विषमांस नीकल्या रह्या ४८ समांस ॥ ६१ मोसमवाय संपूर्ण ॥ ६१ ॥ हिवे ६२ मो लिखेछे। पांच संवत्सरनो युगहोय तेमांहि ६२ पूनिम अनें ६२ अमावास्या कही १ युगमाहि ३ चंद्रवर्ष होय तेमांहि मास ३६ वारेत्रिक ३६ पूर्णिमाअने ३६ ॥ भषा ॥

॥ टीका ।

मास्यइत्येवं द्विषष्ठिस्ताभवंति इत्येवममावास्याअपीति वासुपूज्यस्येह द्विषष्ठिर्गणागणधराश्चोक्ता आवश्यकेतु षट्षष्ठिरुक्तेति मतांतरमिदमपीति । सुक्कपक्ख
स्सेयादि शुक्लपक्षस्य संबन्धीचन्द्रोद्विषष्ठिभागान् प्रतिदिनंवर्द्धते एवंकृष्णपक्षेचंद्रः परिहीयते अयंभावार्थः सूर्यप्रज्ञप्त्यामप्युक्तस्तथाहि किण्हंराहुविमाणं निच्चं
चंदेणहोइअविरहियं चउरंगुलमप्पत्तं हेट्ठाचंदस्सतं चरइ ॥ १ ॥ बावट्ठिं बावट्ठिं दिवसे२ उसुक्कपक्खस्स जंपरिवड्ढइचंदो खवेइ तंचेवकालेण ॥ २ ॥ पन्नरसयभागेणय
चंदंपन्नरसमेवतंवरइ पन्नरसयभागेणय पुणोवितंचेववक्कमइ ॥३॥ एवंवड्ढइचंदो परिहाणीएवहोइचंदस्स कालोवाजोण्हावाएयणुभावेणचंदस्स ॥४॥ तथातत्रैवो
क्तं सोलसभागा काऊण उडुवई हायएत्थपन्नरस तत्तियमेत्तेभागे पुणोविपरिवड्ढण जोण्हन्ति ॥१॥ तदेवं भणितद्वयानुसारेणानुमीयते यथाचंद्रमण्डलस्य एकत्रिं
शदुत्तरनवशतभागविकल्पितस्य एकांशोवस्थितएवास्तेशेषाः प्रतिदिवसं द्वाषष्ठिकल्पा वर्द्धन्ते ततःपंचदशे चंद्रदिनेसर्वेसमुदिताभवन्ति पुनस्तथैवहीयंते पंचद
शेदिने एकावशेषा भवन्तीति वचनद्वयसामर्थ्यलभ्यं व्याख्यानमेतत् जीवाभिगमेतु बावट्ठिं २ गाहा तथा पन्नरसति भागेण गाथा एतेगाथे एवंव्याख्याते

॥ मूल ॥

स्सगं चंदे वासठिं वासठिं भागे दिवसे दिवसे परिवड्ढइ तंचेवबहुलपक्खे दिवसे दिवसे परिहायइ सोह

॥ भाषा

अमावास्या होय युगमांहि अभिवर्द्धितवर्ष २ तेहनां मास २६ होय तेमाटेपुनिम २६ अमावास्या२६ सर्व पांचवर्षना मिली ६२ पूर्णिमा अनें ६२ अमावास्या
होय । वासुपूज्य अरिहंतने वासठ गच्छ अने ६२ गणधर हुया सुक्लपक्षनो चंद्रमा प्रतिदिवसे ६२ वासठ भागें वधे एतले चंद्रमंडलनां ६२ भाग कल्पनाय
कोजेपखे १५ तिथि भागेहरिये तिवारे झाझेरा च्यार च्यार भाग आवे तो पनरेदिन लगि राहुविमान झाझेरा च्यार २ भाग चंद्रमानेमूकें चंद्रज्योत्स्नावधे
पनरेदिने ६२ भाग थाय तिमज कृष्णपखे राहुविमाने झाझेराच्यार २ भाग दिवसे चंद्रविमान आक्रमे पनरे दिवसेमिली झाझेरा च्यार २ भाग करतां

॥ टीका ॥

यावद्विं २ इत्यव द्विषष्ठि २ भागानां दिवसे २ च प्रत्यह मित्यर्थः शुक्लपक्षस्य सम्बन्धिनि यत् परिवर्द्धते चन्द्र श्चतुरंशाधिकान् द्विषष्टिभागान् चपयन्ति तदे
व कालेन तदेवाह पन्नरसइत्यादिना चंद्रविमानं द्विषष्ठिभागान् क्रियते ततः पञ्चदशभिर्भागो ऽपक्रियते तत्र श्चत्वारो भागाः समधिका द्विषष्ठिभागानां
पंचदशभागेन लभ्यन्ते यत उच्यते पंचदशभागेन चोक्तलचणेन चंद्रमभिक्रम्य पंचदशैवदिवसां स्तद्राहुविमान श्चरति एवमुपक्रामतीत्यपि भावनीयमिति
यत्रा स्माभि र्यथादृष्टे लिखिते उपनीते बहुश्रुते र्निर्णयः कार्यइति सोहम्मीत्यादि तत्र सौधर्मेशानयो स्त्रयोदशविमानप्रस्तटा भवन्ति सनत्कुमारमाहेंद्रयो
द्वा स्माभि र्यथादृष्टे ... श्चत्वार एव मारणाच्युतयोः ग्रैवेयके ष्वधस्तनमध्यमोपरिमेषु त्रयः २ अनुत्तरे
ष्वेकः इति द्विषष्ठि स्ते भवन्ति एतेषां च मध्यभागे प्रत्येक मुडुविमानादिकाः सर्वार्थसिद्धविमानांता वृत्तविमानरूपा द्विषष्ठिरेव विमानेंद्रका भवन्ति
तत् पार्श्वतश्च पूर्वादिषुदिक्षु त्र्यस्रचतुरस्रवृत्तविमानक्रमेण विमानानामावलिका भवन्ति तदेवं सौधर्मेशानयोः कल्पयोः प्रथमे प्रस्तटे सर्वाधस्तन इत्यर्थः पढ
मावलियाएत्ति प्रथमाउत्तरोत्तरावलिकापेचया याद्या यतम् आवलिकायस्मिन् स प्रथमावलिकाक स्तत्र अथवा प्रथमान्मूलभूताद्विमानेंद्रकादारभ्य या चा

॥ मूल

मावलियाएत्ति प्रथमाउत्तरोत्तरावलिकापेचया याद्या यतम् आवलिकायस्मिन् स प्रथमावलिकाक स्तत्र अथवा प्रथमान्मूलभूताद्विमानेंद्रकादारभ्य या चा

सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु पढमेपत्थडे पढमावलियाए एगमेगाए दिसाए बासठिं विमाणा प० सव्वे वेमाणियाणं

॥ भाषा

६२ भाग होय बासठिया च्यार च्यार भाग दिन २ तेजघटे सौधर्मे ईशाने देवलोके १३ प्रतरछे तेमांहि पहिले प्रतरेपहिलो आवलिकाये श्रेणीये ४ श्रेणीमां
ठिये जिहां पहिलो श्रेणिये पूर्वादिक येकेकें दिशि आवलिकाये ६२ बासठ विमान घणां मोटा कह्या। १२ देवलोक ९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तर विमान सर्वमिली
यतानां ६२ विमान प्रस्तर प्रस्तराय परिमाणे कह्या सौधर्म ईशाननां १३ सनत्कुमार मांहेंद्रे १२ ब्रह्मे ६ लांतके ५ शुक्रे ४ सहस्रारें ४ आनत प्राणते

वलिका विमानानुपूर्वी तथा अथवोत्तरोत्तरावलिकापेक्षया एकैकस्यांदिशि या प्रथमाआद्यावलिका तस्यां पढमावलियत्ति पाठांतरे तु उत्तरोत्तरावलिका पेक्षया एकैकस्यां दिशि प्रथमावलिका सा द्विषष्ठिविमानप्रमाणा प्रमाणेन प्रज्ञप्तेति एगमेगाएत्ति उडुविमानाभिधानदेवेंद्रकापेक्षया एकैकस्यां पूर्वादिका यां दिशि द्विषष्ठिर्विमानानि प्रज्ञप्तानि द्वितीयादिषु पुनः प्रस्तटेषु एकैकहान्या विमानानि भवन्ति यावद्विषष्ठितमे ऽनुत्तरे प्रस्तटे सर्वार्थसिद्धदेवेंद्रकपार्श्वे तदेकैकमेव भवतीति तथा सव्वेत्ति सर्ववैमानिकानां देवविशेषाणां सम्बन्धिनो द्विषष्ठिर्विमानप्रतराः प्रस्तटापरेण प्रस्तटपरिमाणेन प्रज्ञप्ता इति ॥ ६२

अथत्रिषष्ठिस्थानकं तत्र संपत्तजोव्वणत्ति मातापितृपरिपालनापेक्षा इत्यर्थः निसहेणमित्यादि किलसूर्यमण्डलानां चतुरशीत्यधिक शतसंख्यानां मध्ये

बासठ्ठिविमाणपत्थडा पत्थडग्गेणं प० ॥ ६२ ॥ उसभेणं अरहाकोसलिए तेसठ्ठिं पुव्वसयस हस्साइं महारायमज्झे वसित्ता मुंडेभवित्ता आगाराउ अणगारियं पव्वइए हरिवासरम्मयवासेसु णं मणुस्सा

मिली ४ आरण अच्युतनां४ सर्व १२ देवलोकनां ५२ प्रतर नव ग्रैवेयकें ९ पांच अनुत्तरनो १ एवं सर्वमिली ऊर्द्ध लोकें ६२ प्रतर थया प्रतर २ दीठविचें एकैक विमानसर्वविमानेंद्रनो जाणिवो। इति ६२ सम्पूर्ण ॥ ६२ ॥ हिवे ६३ लिखेछे ॥ ऋषभनाथ अरिहंत कोशल देशना जपना तेह ६३ लाख पूर्वलगे महाराज्य वासमांहि वसीने मुंडपणो पामी गृहस्थाश्रमथकी अनगारतापणो यतीपणो पाम्या दीक्षा ग्रहण करी एतले २० लाख पूर्व कुमारपणे ६३ लाख पूर्व महाराजपणे १ लाख पूर्व चारित्रपालन कियो एवं सर्व ८४ लाख पूर्वनो आउखो थयो हरिवर्षतोजोक्षेत्र रम्यकपांचमो क्षेत्र तेह युगल क्षेत्रने विषे माणस ६३ रात्रि दिवसे संप्राप्तयौवन थाय एतले ६३ अहोरात्रिलगे मातृतपालना करे। देवकुरु उत्तरकुरु ने विषे सदैव पहिलो आरो होय। हरिवर्ष रम्यक

॥ टीका ॥

जम्बूद्दीपस्य पर्यन्तिमे अशीत्युत्तरे योजनशते पञ्चषष्ठिर्भवन्ति तत्र च निषधवर्षधर पर्वतस्योपरि नीलवद्दर्षधरपर्वतस्योपरि च त्रिषष्ठिः सूर्योदयस्थानानि सूर्यमण्डलानी त्यर्थः तदन्ये तु द्वे जगत्याउपरि शेषाणि तु लवणे त्रिषुत्रिंशदधिकेषु योजनशतेषु भवन्तीति भावार्थः ॥ ६३ ॥ अथ चतुःषष्ठि स्थानकं अट्ठेत्यादि अष्टावष्टमानि दिनानि यस्यांसाष्टाष्टमिका यस्यांहि अष्टौदिनाष्टकानि भवन्ति तस्यामष्टावष्टमानि भवंत्येवेति भिक्षुप्रतिमा ऽभिग्रहवि

॥ मूल ॥

तेवठीए राइंदिएहिं संपत्तजोव्वणा ज्ञवंति निसढेणं पव्वएतेवठिं सूरोदया प० एवंनीलवंतेवि ॥ ६३ ॥ अठठमियाणं ज्ञिक्कुपक्रिमा चउसठीए राइंदिएहिं दोहियअठासीएहिं ज्ञिक्कासएहिं अहासुत्तं जावन्नवइ-

॥ भाषा

क्षेत्रे बीजोआरोहोय। हिमवंत ऐरण्यवंतक्षेत्रे तीजोहोय। महाविदेहे चोथोआरोहोय। देवकुरु उत्तरकुरु ना युगलियां ने ४९ दिननो अपत्यपालनाछे। आरादीठ १५ दिननी वृद्धि अपत्यपालनामें छे। एम करतां ४९ मांहि १५ दिन वधारिये तिवारे हरिवर्ष रम्यक क्षेत्रे ६४ दिन थाय। इहां सूत्रमांहि ६३ दिन भाख्यां तेकिममिले जनमदिन नगिणिये एह उत्तर जाणिवो। सूर्यना मंडल १८४ सगलाईछे तेमांहि निषधपर्वतने माथे १८० योजनमांहो तेवठो तेवठो सूर्योदयस्थानरूपमांडला बेबे मांडला जगती उपरि शेषथाकता ३३० योजन लवण समुद्रमांहि ११९ सर्वमिलो १८४ एवंनीलवंत पर्वत नेपणि एम जाणिवो ऐरवत क्षेत्र संबंधी सूर्यनांजगवानां मांडला ६५ नीलवंतपर्वत जगती मिलोने बीजा ११९ पश्चिम समुद्रमांहि जाणिवा ॥ इति ६३ मोसमवाय पूर्णथयो ॥ ६३ ॥ हिवे ६४ समवाय लिखेछे। आठ दिहाडा आठगुणांछे जेहनेविषे तेभिक्षु प्रतिमा अभिग्रह विशेष आठुंआठो चौसठदिनहोय जिहां तेअष्ठ.मया भिक्षु प्रतिमा चौसठि रात्रिदिवसे समापिये। पहिलेदिने एक भिक्षा बीजेदिने २ त्रीजे दिने ३ एम आठदिन एकेक भिक्षा वधारियेतो

॥ टीका ॥

शेषः अष्टावष्टकानियतो सो भवत्यत्र चतुः षष्ठ्या रात्रिंदिवैः सापालिता भवति तथा प्रथमेऽष्टके प्रतिदिनमेकैका भिक्षा एवं द्वितीये द्वे द्वे यावदष्टमे अष्टा वष्टाविति संकलनया द्वियते भिक्षाणामष्टाशीत्यधिकं भवतो ऽतउक्तं ताभ्यं चेत्यादि यावत्करणात् अहाकप्पं अहामग्गं फासिया पालिया सोहिया तीरिया

॥ १२२ ॥ किट्टिया सम्मं आणाए आराहियाबि भवतीति द्रष्टव्यम् असुरेन्द्रवर्जितानां नन्दीश्वराख्ये द्वीपे पूर्वादिषु दिक्षु चत्वारोंऽजनकपर्वता भवन्ति तेषां चः प्रत्येकं चतसृषु दिक्षु चतस्रः पुष्करिण्यो भवन्ति ताभ्यां च मध्यभागेषु प्रत्येकं दधिमुखपर्वता भवन्ति तेच षोडशपल्यंक संस्थानसंस्थिताः समानाः सर्वत्रसमाविष्क म्भेन मूलादिषु दशसहस्र विष्कम्भत्वा तेषां क्वचित्तु विक्खंभुस्सेहेणंति पाठ स्तत्रतृतीयैकवचनलोपदर्शना द्विष्कंभेनेति व्याख्येयं तथा उत्सेधेनो च्चत्वेन चतु

॥ मूल ॥

चउसठिं असुरकुमारावाससयसहस्सा प० चमरस्सणं रन्नो चउसठिं सामाणियसाहस्सीउ प० सव्वेविणं दधिमुहापव्वया पल्लासंठाणसंठिया सव्वत्थसमा विक्खंभुस्सेहेणं चउसठिंचउसठिं जोयणसहस्साइं प०

॥ भाषा ॥

आठेदिने ३२ भिक्षाथाय एम करतायका आठ अष्टकलगी ३६ भिक्षालीजे एतले सर्वेमिली २८८ भिक्षाये यथामार्ग आराधोंहोय पालीहोयने असुरनिकाय नां २ इन्द्र चमरेंद्र बलेंद्र २ दक्षिण दिशि चमरेंद्र तेहना ३४ लाख भुवन उत्तरें बली तेहने ३० लाख भुवन बिहुं भवन मिली असुर कुमारेंद्रना ६४ लाख आवास भवन कह्या। चमरेंद्रअसुर नागराजाने ६४ सामानिक आप समान देवता कह्या। जंबूद्वीपथको आठमूं नंदीश्वरद्वीप तेहनेविषे चिहुंदिशि ४ अंज नगिरिछे एकेक अंजन गिरिने चौफेर चार २ पुष्करिणी वावो छे ते वावोंने मध्यभागे प्रत्येकें दधिमुख पर्वतछे एतले बिहुं। पालागुर्जरदेशे धान्य भाजन तेहने संठाणे आकारे संस्थित छे। सघले समान मूले विष्कंभ पणे पिहुलपणे दससहस्र योजन परिमाण जाणवा। उत्सेधे ऊंचपणे चउसठि २ हजार यो

॥ टीका ॥

ष्वष्टिरिति सोहम्मेत्यादि सौधर्मेद्वात्रिंशदीशाने ऽष्टाविंशतिः ब्रह्मलोके च चत्वारिविमानलचाणि सर्वाणि चतुःषष्ठिरिति चउसट्ठिं लट्ठीएत्ति चतुःषष्टिलष्ठ

नांशराणांयस्मिनसौचतुः षष्ठिलष्ठिकः मुत्तामणिमयेत्ति मुक्ताश्चमुक्ताफलानि मणयश्चंद्रकांतादिरत्नविशेषाः मुक्तारूपावामणयोरत्नानिमुक्तामणयस्तद्विकारो

मुक्तामणिमयः ॥ ६४ ॥ अथ पञ्चषष्ठिस्थानकं तत्रमोरियपुत्तेणंति मौर्यपुत्रो भगवतोमहावीरस्य सप्तमोगणधरः तस्यपञ्चषष्ठिवर्षाणि गृहस्थ

पर्याय आवश्यकेप्येवमेवोक्तो नवरमेतस्यैव यो बृहत्तरोभ्राता मण्डितपुत्राभिधानः षष्ठोगणधरः तद्दीक्षादिन एवप्रव्रजित स्तस्यावश्यके त्रिपंचाशद्वर्षाणि गृह

स्थपर्यायउक्तो मचबोधविषयमुपगच्छति यतोबृहत्तरस्य पञ्चषष्ठिर्युज्यते लघुतरस्यत्रिपंचाशदिति सोहम्मेत्यादि सौधर्मावतंसकं विमान सौधर्मदेवलोकस्यम

॥ मूल ॥

सोहम्मीसाणेसु बंभलोएय तिसुकप्पेसु चउसट्ठिं विमाणावाससयसहस्सा प० सव्वस्सवियणं रन्नोचाउरंत

चक्कवट्टिस्स चउसट्ठिलट्ठीए महग्घेमुत्तामणिहारे प० ॥ ६४ ॥ जंबूद्दीवे पणसट्ठिं सूरमंड

ला प० थेरेणंमोरियपुत्ते पणसट्ठिवासाइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडेभवित्ता अगाराओअणगारियं पव्वइए

॥ भाषा ॥

सौधर्म ईशान ब्रह्मलोके ४ लाख विमान एहतीन देवलोके चौसठिलाख एतला विमानावास कह्या

जव प्रमाण कह्या। सौधर्मे ३२ लाख विमान ईशाने २८ लाख विमान ब्रह्मलोके ४ लाख विमान एहतीन देवलोके चौसठिलाख एतला विमानावास कह्या

सगलाने राजाने चातुरंत चक्रवर्तिने चिहुंदिशिना अंतना धणीने चउसट्ठिलट्ठि कहतां शरी छे तिहां ते चतुष्षष्टि कहिये एतले ६४ शरी महग्घो महार्घ्य

बहुमूल्य मोती मुक्ताफल मणि चंद्रकांतादिकरत्न विशेष तेहमय हारकह्या। ॥ इति ६४ मोसमवाय संपूर्ण ॥ ६४ ॥ हिवे पैंसठमो समवाय

लिखेछे। जंबूद्दीपने विषे १८० सूर्यमंडलछे निषधमाथे ६३ जगती उपरि २ सर्वमिली ६५ कह्या। स्थविर वयश्रुत पर्यायें वडा मौर्यपुत्र सातमा गणधर

॥ टीका ॥

ध्यभागवर्त्तिशक्रनिवासभूतं एगमेगाएत्ति एकैकस्यांदिशिप्राकाराभ्यर्णवर्त्तीनि भौमानि नगराकाराणिविशिष्टस्थानानीत्येके ॥ ६५ ॥ अथषट्षष्ठिस्था नकं तत्रदाहिणेत्यादि मनुष्यक्षेत्रस्यार्द्धं मर्द्धं मनुष्यक्षेत्रं दक्षिणंच तत्रै। दक्षिणार्द्धमनुष्यक्षेत्रं तत्रभवादक्षिणार्द्ध मनुष्यक्षेत्राः ... ज्योतिषा ... तः प्रभासनीयं अथवा ... मनुष्यक्षेत्राणामर्द्धा ... पाठांतरे दक्षिणार्द्धमनुष्यक्षेत्रेप्रकाशनीयं प्रभासित वंत स्तेषएवं जंबूद्वीपेचंद्रौचत्वारोलवणसमुद्रे द्वादशधातकीखंडे द्विचत्वारिंशत्कालोदधिसमुद्रे द्विसप्ततिश्चपुष्करार्द्धे सर्वेचैतेद्वात्रिंशदधिकं शतं एतदर्द्धंचषट्ष

॥ १२३ ॥

॥ मूल ॥

सोहम्मवडिंसयस्स णं विमाणस्स एगमेगाए बाहाए पणसठिं पणसठिं भोमा प० ॥ ६५ ॥
दाहिणड्ढ माणुस्सखेत्ताणं छावठिं चंदापभासिंसुवा ३ छावठिं सूरिया तविंसुवा ३ उत्तरड्ढमाणुस्सखेत्ताणं

॥ भाषा ॥

६५ वर्ष लगे गृहस्थाश्रम मांहि वसीने मुंड द्रव्यभावभेदे थईने अगार गृहस्थाश्रमथकी अणगार पणुं साधूपणुं पाम्या एतले ६५ वर्षगृहवास १४ वर्ष छद्मस्थप णे १६ केवलपर्याय सर्वायुवर्ष ९५ जाणिवा। सौधर्म देवलोके मध्यवर्ति सौधर्मावतंसकविमान शक्रेंद्रनोनिवासभूत तेह महाविमानने एकेकीये बाहाये एके की दिशेगढने समीपवर्त्ती ६५ भोमा नगराकारे विशिष्टस्थानक कह्या। इति पेंसठमो समवाय संपूर्ण ॥ ६५ ॥ हिवे ६६ मो लिखे छे। मनु ष्यक्षेत्र आखोअढी द्वीप २ समुद्र मिलीने ते मांहि दक्षिणार्द्ध मनुष्यक्षेत्र मांहि ६६ चंद्रमा प्रभासता हुया उद्योत करता हुया प्रभासेछे प्रभासिस्ये। एतले जंबूद्वीप मांहि २ सूर्य २ चंद्रमा लवणसमुद्र मांहि ४ सूर्य ४ चंद्रमा धातकीखंड मांहि १२ सूर्य १२ चंद्रमा कालोदधि मांहि ४२ सूर्य ४२ चंद्रमा पुष्करार्द्ध मांही ७२ सूर्य ७२ चंद्रमा सर्वमिली १३२ सूर्य १३२ चंद्रमाथया। सुदर्शण मेरुथकी चारपंक्ति चिहुंदिसे मांडिये मेरुथकी दक्षिणदिशे मानुसोत्तर पर्वत

॥ टीका ॥

णिर्दक्षिणपंक्तौस्थिता षट्पष्ठिरुत्तरापंक्तौ यदाचोत्तरपंक्तिः पूर्वस्यांगच्छति तदादक्षिणापश्चिमायामित्येवं सूर्यसूत्रमप्यवसेयमिति छावट्ठिंगणत्ति आवश्यकेतु षट्सप्ततिरभिहितेतीदमतांतरमिति छावट्ठिंसागरोवमाइंठिइत्ति यच्चातिरिक्तं तदिहनविवक्षितं यतएवमिदमन्यत्रोच्यते दोवारेविजयाइसु गयस्सतिन्निचुए

॥ मूल ॥

छावठिंचंदापन्नासिंसुवा ३ छावठिंसूरियातविंसुवा ३ सेज्जंसस्सणं अरहउ छावठिंगणा छावठिंगणहरा

॥ भाषा ॥

भरत लगे रात्रिये ६६ चंद्रमा प्रकाश करे एतले मनुष्यक्षेत्र मांहि १३२ चंद्रमाछे। तेहनो अर्द्ध ६६ होय ते ६६ चंद्रमा जंबूद्वीप संबंधी हरिवर्ष १ हिमवंत २ भरत क्षेत्र ३ एवं दक्षिण धातकी खंडे ३ क्षेत्र एमज दक्षिण पुष्करार्द्धे एहीज त्रिहूंक्षेत्रे रात्रिकरे मेरुथकी उत्तर दिशें जंबूद्वीप संबंधी रम्यक १ ऐरण्यवत २ ऐरवत ३ धातकी खंडना एहीज ३ पुष्करार्द्धना एहीज ३ क्षेत्रें ६६ चंद्रमा प्रकाश करे तिवारे जंबूद्वीप संबंधी पूर्वविदेह १ धातकीखंड पूर्वविदेह २ पुष्करार्द्ध पूर्वविदेह ३ तिहां ६६ सूर्यतपे पश्चिम जंबूद्वीप विदेह १ धातकीखंड पश्चिम विदेह २ पुष्करार्द्ध पश्चिम विदेहें ६६ सूर्य तपे दिवस करे। अने जिवारे मेरुथकी दक्षिण पुष्करार्द्धलगे ६६ सूर्य दिवसकरे तिवारे मेरुथकीउत्तर पुष्करार्द्धलगे ६६ सूर्य दिवसकरे। जिवारे मेरुथकी पूर्वपुष्करार्द्ध लगे ६६ चंद्रमा रात्रिकरे तिवारे पश्चिम पुष्करार्द्धलगे ६६ चंद्रमा रात्रिकरे एम १३२ सूर्य १३२ चंद्रमा कह्या। श्रेयांस ग्यारमा अरिहंतने ६६ गणधरहुआ। आवश्यके ७६ गणधर कह्याछे तेमतांतरछे। आभिनिबोधिकज्ञान एतले मतिज्ञाननी ६६ सागरोपम झाझेरालगे स्थितिकही। यदाह दोवारे विजयाइसु गयसातिन्निचुएअहवताइं अइरेगनरभवीयं नाणाजीवाणसिद्धंति। विजयविमाने मतिज्ञानी दोवेलाजाय तिहांतितीस सागर २ वेलाउत्कृष्टो आउखो भोगेतो तेत्रीसदूणा

॥ टीका ॥

महवताइं अइरेगंनरभवोयंनाणाजोवाणसव्वइंति ॥ १ ॥ ६६ ॥ अथसप्तषष्ठिस्थानके किंचिद्विव्रियते तत्रपंचसंवच्छरेत्यादि नक्षत्रमासोयेन कालेन चंद्रोनक्षत्रमण्डलंभुंक्ते सचसप्तविंशतिरहोरात्राणि एकविंशति श्चाहोरात्रस्यसप्तषष्ठिभागाः २७ । २१ । ६७ । युगप्रमाणंचाष्टादशशतानि त्रिंशदधिकानीति प्राक्दर्शितम् १८३० तदेवंनक्षत्रमासस्योक्त प्रमाणराशिनादिनसप्तषष्ठिभागतया व्यवस्थापितेनत्रिंशदुत्तराष्टादशशतप्रमाणेनयुगदिनप्रमाणराशिः सप्तषष्ठिभागतयाव्यवस्थापित एकंलक्षंद्वाविंशतिः सहस्राणिषट्शतानिदशचेत्येवं रूपोविभज्यमानःसप्तषष्ठिनक्षत्रमासप्रमाणो भवतीति बाहाओत्ति लघुहिम

॥ मूल ॥

होत्था आभिणिबोहियनाणस्स णं उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं ठिई प० ॥ ६६ ॥ पंचसंवच्छरियस्सणंजुगस्स नक्खत्तमासेणं मिज्जमाणस्स सत्तसट्ठिं नक्खत्तमासा प० हेमवयएरन्नवयाउणं बाहाउ

॥ भाषा ॥

६६ सागर आउखो । तथा अच्युतदेवलोगे त्रीण वेलाजाय तिहां उत्कृष्टो २२ सागरआउखो वाईतो ६६ सागरहोय । विचेंमनुष्यनोभव करेते भांभेरा मांहि गणिये इति ६६ समवाय संपूर्ण ॥ ६६ ॥ हिवे ६७ समवाय लिखेछे । पचसंवत्सरे युग १ पूरोथाए । तेयुग नक्षत्रमासे मावीये ६७ नक्षत्रमासहोय जेणे काले चंद्रमा नक्षत्र मंडलनेभोगवे तेनक्षत्रमासकहिये तेनक्षत्रमास २७ अहोरात्रि अने एकअहोरात्रिना सडसठिया २१ भा प्रमाणेहोय। पूर्वे ६१ मेंठाणें एक १८३० दिनकह्याछेते ६७ गुणांकरिये तिवारे एकलाख बाईस हजारछसे दसभागहोय तेसडसठभागें एकअहोरात्रि थाविये २७ अहोरात्रियें सडसठिया एकवीसभागे एकनक्षत्रमासहोय एहवे ६७ नक्षत्रमासे एकनक्षत्र युगपूराय । लघु हिमवंतपर्वतनो जोवायको पूर्वपश्चिमे प्रवर्द्धमान जेहिमवंतक्षेत्रनो प्रदेशपं

॥ टीका ॥

बाहास्त वज्जोवाया: पूर्वापरभागतो येप्रवर्द्धमानक्षेत्रप्रदेशपंक्ती हैमवतवर्षजोवांयावत्ते हैमवतबाहु उच्यते एवमैरण्यवतबाहुरपिभावनीयो इहप्रमाणसंवाद: बाहासत्त एवं छिसदूपणपन्नेतिनियकलाश्चोत्ति कलाएकोनविंशतिभाग: एतच्चबाहुप्रमाणं हैमवतधनु:पृष्ठात् चत्तालाससत्तसया अडतोससहस्स दसकलायधणुत्ति ॥ अपनीतेयच्छेषंतदर्द्धी लब्धात् ३८०४० । १० । १८ हिमवद्धनु:पृष्ठे धणुविठकलचउक्कं पणवीससहस्सदुसयतीसहियत्ति एवंलब्धं २५२३० । ४ । १८ । ततः क्षतंसन्नवतीति आयामेनदैर्घ्येणेति मंदरस्सेत्यादि मेरो: पूर्वांताज्जंबूद्वीपोपरस्यांदिशि जगतीबाह्यांतपर्यवसान: पंचपंचाशद्योजनसहस्राणितावदस्ति ततः परंद्वादशयोजनसहस्राण्यतिक्रम्य लवणसमुद्रमध्ये• गौतमद्वीपाभिधानोद्वीपोस्ति तमभिक्रम्यसूत्रार्थ: सम्भवति पंचपंचाशतोद्वादशानांच सप्तषष्टित्वभावात्

॥ मूल

सत्तट्ठिं सत्तट्ठिं जोयणसयाइं पणपन्नाइं तिन्नियएगूणवीसभागा जोयणस्स आयामेणं प० मंदरस्सणं पव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाउ चरमंताउ गोयमदीवस्स पुरत्थिमिल्ले चरमंते एसणं सत्तसट्ठिं जोयणसहस्साइं अबाहाए

॥ भाषा ।

ऐर श्लिछे हिमवंतक्षेत्रनो जोवालगें तेहिमवंतक्षेत्रनो बाहुसरीखोबाहुछे। एम शिखरीनो जीवायकी पूर्वपश्चिमे प्रवर्द्धमान जेऐरण्यवंतक्षेत्रनी प्रदेशपंक्तिछे ऐर ण्यवंतक्षेत्रनो जोवालगे ते ऐरण्यवंतक्षेत्रनो बाहुकहिये। जेहिमवंत ऐरण्यवंतक्षेत्रनोबाहु ६७ से ५५ योजन एकयोजननाउगणोसहाय्यात्रिणिकला ६७५५। ल ३ १८ योजनना ३ भाग लांबपणे कहो। मेरूपर्वतना पूर्वचरिमांतथकोमांडो लवणसमुद्रमांहो पश्चिमदेशे १२ सहस्र योजन जइये तिहां सुस्थितनामे ल वणसमुद्राधिपति तेहना निवासभूत गौतम द्वीपछे तद्वीपनो पूर्व चरिमांत एह सतसठ योजन हजार लगे आवाधायें विचाले आंतरो कह्यो। मेरूप र्वत १० हजार योजन विष्कंभलोजे अने तिहांथो ४५ हजारे पश्चिम जगतो तिहांथो १२ हजार गौतम द्वीप सवमिली ६७ हजार योजन आंतरो थयो

यद्यपिसूत्रपुस्तकेषु गौतमशब्दोनदृश्यते तथाप्यसौदृश्यः जीवाभिगमादिषु लवणसमुद्रे गौतमचंद्ररविद्वीपात्‌विनाद्वीपांतरस्याश्रूयमाणत्वादिति सव्वेसिंपिणमि त्यादि सर्वेषामपि णमित्यलंकारे नक्षत्राणांसीमाविष्कंभः पूर्वापरतश्चंद्रस्य नक्षत्रभुक्तिक्षेत्रविस्तारः नक्षत्रेणाहोरात्रभोग्यक्षेत्रस्य सप्तषष्ट्याभागैर्भाजितोविभक्तः समांसः समच्छेदः प्रज्ञप्तः भागांतरेणतुभज्यमानस्य नक्षत्रसीमाविष्कंभस्य विषमच्छेदनाभवति भागांतरेण नवक्तुंशक्यतेइत्यर्थः तथाहि नक्षत्रेणाहोरात्रगम्य स्य क्षेत्रस्यसप्तषष्टिभागीकृतस्यक्षेत्रस्यैकविंशतिर्भागा अभिजिन्नक्षत्रस्यक्षेत्रतः सीमाविष्कंभोभवति ॥ एतावतिक्षेत्रेचंद्रेणसह तस्ययोगोव्यपदिश्यतइत्यर्थः तथातस्यामेवैकविंशतौ त्रिंशन्मुहूर्त्तत्वादहोरात्रस्य त्रिंशतागुणितायां ६३० सप्तषष्ट्याहृतभागायांयल्लब्धम् तत्कालसीमाभवति चंद्रेणसहतस्य योगकालइ त्यर्थः साचनवमुहूर्त्ताः सप्तविंशतिश्चसप्तषष्टिभागाः ८ । २७ । ६७ आहच अभिइस्सचंदजोगो सत्तट्ठीखंडिए अहोरत्ते भागाओएक्कवीसं होंतिहिगानवमुहुत्ता यत्ति क्षेत्रतः कालतस्तथा शतभिषग्भरण्यार्द्राश्लेषास्वातिज्येष्टानां त्रयस्त्रिंशत्सप्तषष्टिभागास्तद्भागार्द्धंच क्षेत्रसीमाविष्कंभोभवति तस्यामेवसार्द्धत्रयस्त्रिंशतिः त्रिंश तागुणितायां १००५ सप्तषष्ट्याहृतभागायां यल्लब्धम् तदेषांकालसीमा तच्चपंचदशमुहूर्त्ताः आहच सयभिसयाभरणीओ अद्दाअस्सेससाइजेट्ठाय एएछन्नक्खत्ता पन्नरसमुहुत्तसंजोगत्ति ॥ १ ॥ तथोत्तरात्रयः पुनर्वसुरोहिणीविशाखानां सप्तषष्टिभागानांशतं तद्भागार्द्धंच क्षेत्रविष्कंभः सीमाभवति तथातस्मिन्नेवत्रिंशद्गुणि

श्रंतरे प० सव्वेसिं पिणं नक्खत्ताणं सीमाविक्खंभेणं सत्तठिभागभइए समंसे प० ॥ ६७ ॥

सगला नक्षत्रनी सीमा विष्कंभपणे पिहुलपणें सतसठ भागें विभजिये त्रिहचेथके समोअंश क्षेत्रनो भागआवे एम कह्यो नक्षत्रें अहोरात्रीयें जेक्षेत्रनी सी मा क्षेत्रथकी विष्कंभपणो होय । एतले क्षेत्रे चंद्रमा सार्थे तेभोगवनो योग संबंध कहीये बीजा नक्षत्रनी वार्ता सर्वटीकाथकी जाणिवी ॥ इति ६७ समवा

॥ टीका ॥

ते २०१५ तथैवक्षतभागेयमक्षम् तदेषांकालसीमाभवति सायपंचचत्वारिंशन्मुहूर्त्ताइति आहच तिन्नेवउत्तराइं पुणव्वसूरोहिणीविसाहाय एएछनक्खत्ता पी
णयालमुहुत्तसंजोगत्ति ॥ १ ॥ शेषाणांपंचदशानां नक्षत्राणांसप्तषष्टिभागानां चैवसीमाविष्कम्भोभवति तस्याप्ततथैवगुणितायां २०१० क्षतभागायांचयमक्षम्
तत्कालसीमातत्त्रिंशन्मुहूर्त्ता आहच अवसेसानक्खत्ता पन्नरसविहुंति तीसइमुहुत्ता चंदम्मितेहिंजोगोसमासओएसवक्खामि ॥ ३ ॥ एवंचैकस्यषष्ठां २ पंचद
शानां चेत्थंयमष्टाविंशतेर्नक्षत्राणामष्टादशशतानि त्रिंशदधिकानि सप्तषष्टिभागाना मेतदेवद्विगुणं षट्पंचाशतो नक्षत्राणांभवति तत्रसहस्रत्रयंषट्शतानिष
ष्ठ्यधिकानि ३६६० ॥ ६७ ॥ अथाष्टमषष्टिस्थानके किंचिल्लिख्यते धायइसंडेत्यादि इहयदुक्तम् एवंचक्कवट्टी वलदेवावासुदेवत्ति तत्रयद्यपिचक्रवर्त्तिनां
वासुदेवानांनैकदाअष्टषष्टिः संभवति यतोजघन्यतोप्येकैकस्मिन् महाविदेहेचतुर्णांतीर्थकरादीनामावश्यंभावः स्थानांगादिष्वभिहितः नचैकत्रैवचक्रवर्त्ती
वासुदेवश्चैकदा भवतोऽतः अष्टषष्टिरेवोत्कर्षतश्चक्रवर्त्तिनां वासुदेवानां चाष्टषष्ठ्यांविजयेषु भवति तथापीहसूत्रे एकसमयेनेत्यविशेषणात् भवति कालभेदभा

॥ मूल ॥

धायइसंडेणं दीवे अडसठिं चक्कवट्टिविजया अडसठिंरायहाणीउ प० उक्कोसपए अडसठिंअरहंता स
य पूरीययो ॥ ६७ ॥

॥ भषा ॥

हिवे ६८ मो लिखेछे। पूर्व पश्चिम धातकी खंडे ६८ चक्रवर्तीनीविजय चक्रवर्तिये जीपिवा योग्य क्षेत्रना खंड कह्या। वि
एतले पूर्वधातकीखंडे ३२ विजय विदेहमांहि अने भरत ऐरवत मिली २ एवं ३४ विजय पश्चिम धातकी खंडे पणि ३४ सर्वमिली ६८ विजयहोय । उत्कृष्ट पदे पूर्वापरधातकी खंडे
अडसठ राजधानी एकेक होय तेमाटे पूर्वापरधातकी खंडे ६८ राजधानीछे जिहांराजा राज्यकरे तेराजधानी कहिये। एम चक्रवर्त्ति बलदेव वासुदेव जाणिवा। यद्यपि वर्त्तमान
६८ अरिहंत उपजताहुया उपजेछे उपजसे। एतले एकेकविजयदीठ एकेक अरिहंत उपजे।

| १२६ ॥

शिनांचक्रवर्त्यादीनां विजयभेदेनाष्टषष्टिरविरुद्धा अभिलप्यंतेच जंबूद्वीपप्रज्ञप्त्यांभारतकच्छाद्यभिलापेन चक्रवर्त्तिनइति ॥ ६८ ॥ अथैकोनसप्ततिस्था ॥ टीका ॥
नकेकिंचिल्लिख्यते समयक्षेत्रादिमंदरवर्ज्जामेरुवर्जाः वर्षाणिचभरतादिक्षेत्राणि वर्षधरपर्वताश्चहिमवदादयस्तत्सीमाकारिणो वर्षधरपर्वताः समुदिताएकोन
सप्ततिः प्रज्ञप्ताः कथंपंचसुमेरुषु प्रतिबद्धानि सप्तसप्तभरतहैमवतादीनि पंचत्रिंशद्वर्षाणि तथाप्रतिमेरुषट्षट् हिमवदादयोवर्षधरास्त्रिंशत्तथाचत्वार एविषुका

मुप्पज्जिंसुवा ३ एवंचक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा पुक्खरवरदीवड्ढेणं अडसट्ठिं विजया एवंचेवजाववासुदेवा ॥ मूल ॥
विमलस्सणं अरहओ अडसट्ठिं समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समणसंपया होत्था ॥ ६८ ॥
समयखित्तेणं मंदरवज्जा एगूणसत्तरिं वासावासधरपव्वया प० तं० पणतीसंवासा तीसंवासहरा चत्तारिउ

काले वर्त्तता ६८ चक्रवर्त्तिनहोय ६८ वासुदेव नहोय अनें एकेक विदेहें जघन्य पदे च्यारच्यार तीर्थंकरादि उत्पन्न होय। एकेक्षेत्रे चक्रवर्त्ति वासुदेव न ॥ भाषा ॥
होय। बत्रीस विजयनेविषे उत्कृष्टपदे २८ चक्रवर्त्ति होय ४ वासुदेवहोय अनें २८ वासुदेवहोय तिवारें ४ चक्रवर्त्ति होय तो ६८ किममिले सूत्रमांहि एहसमि
एहवो पाठनथी तेमाटे कालभेदें पाठछे ६८ होय विजयने भेदें तेमाटे विरुद्ध नथी। धातकीखंडनीपरें पुष्करार्द्ध द्वीपे ६८ विजय कहिवी ६८ राजधानी
कहवी । उत्कृष्ट पदें ६८ अरिहंत कहिवा एम चक्रवर्त्ति बलदेव वासुदेव कहिवा । विमलनाथ अरिहंत ने अडसठ हजार श्रमणवती हुइ
उत्कृष्ट श्रमण संपदा थई ॥ ६८ ॥ हिवे ६९ मो लिखे छे। काले करी ओलखाय्यो जे क्षेत्र ते समयक्षेत्र कहिये ते क्षेत्र अढाई द्वीपनें विषे
मेरु वर्जी ने ६९ क्षेत्र अने वर्षधर कुलगिरि हिमवंतादिक क्षेत्रनो सीमानो करणहार कह्या । ते कहेछे अढाई द्वीपे ५ मेरु छे एक मेरुने पासे सातसात

द्राइति सर्वसंख्यैकोनसप्ततिरिति। मंदरस्येत्यादि लवणसमुद्रं पश्चिमायांदिशि द्वादशयोजनसहस्राण्यवगाह्य द्वादशसहस्रमानः सुस्थिताभिधानस्य लवणसमु द्राधिपतेर्भवनेनालंकृतोगौतमद्वीपोनामद्वीपोऽस्तितस्यचपश्चिमांतोमेरोः पश्चिमांतादेकोनसप्ततिसहस्राणि भवंति पंचचत्वारिंशतोजंबूद्वीपसंबंधिनांद्वादशानां मन्तरसंबंधिनांद्वादशानामेवद्वीपविष्कंभसंबंधिनांचमीलनादिति। मोहनीयवर्ज्जानांकर्म्मणामेकोनसप्ततिरुत्तरप्रकृतयो भवंतीति कथं ज्ञानावरणस्यपंच दर्शना वरणस्यनव वेदनीयस्यद्वे आयुषश्चतस्रो नाम्नोद्विचत्वारिंशद्गोत्रस्यद्वे अंतरायस्यपंचेति ॥ ६९ ॥ अथसप्ततिस्थानकेकिमपिलिख्यते समणेत्यादि वर्षा ॥ टीका ॥

सुयारा मंदरस्सपव्वयस्सपच्चत्थिमिल्लाउ चरमंताउ गोयमद्दीवस्स पच्चत्थिमिल्लेचरमंते एसणं एगूणसत्तरिं जोयणसहस्साइं अबाहाएअंतरे प० मोहणिज्जवज्जाणं सत्तरहं कम्मपगडीणं एगूणसत्तरिं उत्तरपगडीउ ॥ मूल ॥

भरत हिमवंतादिक क्षेत्रछे ते पांचसतां पेंत्रीस थाय एकेक मेरुने पासें [illegible] ६।६। वर्षधर छे छपंच वीस वर्षधर थया धात की खंड मांहि २ इषुकार पर्वतछे पुष्करार्द्ध मांहि २ एवं ४ इषुकार पर्वतथया सर्व मिली उगुणहत्तरि वर्षधर थया ६९ मेरुनां पश्चिम चरमांत थी गौत म द्वीपनो पश्चिम चरमांत एहने ६९ हजार योजन नो विचाले आंतरो कह्यो। एतले ४५ हजार योजने पश्चिमनो जगती छे तेह थकी १२ हजार योजन गौतम द्वीप सुस्थितनामा लवण समुद्राधिपति देवतानो निवास भूत छे ते १२ हजार योजननो पिहुलो छे ते सर्व एको करियेतिवारे ६९ हजार योजन थाय। मोहनीय कर्म वर्जी नें सात कर्मनो ६९ उत्तर प्रकृतिकहो। ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ९ वेदनीय २ आयु ४ नाम ४२ गोत्र २ अंतराय ५ सर्वमिलां उगुणहत्तरि प्रकृति थई इति ६९ समवाय संपूर्ण ॥ ६९ ॥ हिवे ७० मो लिखे छे। श्रमण भगवान महावीर देव च्यार मास प्रमाण वर्षाकाल ॥ भाषा ॥

॥ १२७ ॥

॥ टीका ॥

यावतर्मासप्रमाणस्य वर्षाकालस्यसविंशतिदिवसात्रिकेमासे व्यतिक्रांतेपंचाशतिदिनेष्वतीते श्वित्यर्थः सप्ततयांचरात्रिंदिनेषुशेषेषु भाद्रपदशुक्लपंचम्यामित्यर्थः वर्षास्वावासोवर्षावासःवर्षावस्थानंपज्जोसवेइत्ति परिवसति सर्वथाकरोति पञ्चाशतिप्राक्तनेषुदिवसेषु तथाविधवसत्यभावादिकारणे स्थानांतरमप्याश्रयति अतिभाद्रपदशुक्लपञ्चम्यां तु.वृत्तमूलादा वपि निवसतीति हृदयमिति पुरिसादाणीयत्ति पुरुषाणामादानोयउपादेयः पुरुषादानीयः अबाहूणिया कम्मठि ई कम्मणिसेगेपणत्तेति इह किलात्माप्रतिगिदिष्टमेवकर्म्मपुद्गलोपादानं कृत्वा उत्तरकालं ज्ञानावरणीयादिकर्म्मणां स्वंस्वमबाधाकालंमुक्ता ज्ञानावरणीयादिप्र

॥ मूल ॥

प० ॥ ६९ ॥ समणेभगवंमहावीरे वासाणंसवीसइराइमासे वइक्कंते सत्तरिएहिं राइंदिएहिं सेसेहिं वासावासंपज्जोसवेइ पासेणं अरहापुरिसादाणीए सत्तरिवासाइं बहुपडिपुन्नाइं सामन्नपरियागं पाउणित्ता सिद्धेबुद्धे जावप्पहीणे वासुपुज्जेणं अरहा सत्तरिंधणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था मोहणिज्जस्स णं

॥ भाषा ॥

नो ते मांहि २० रात्रिये अधिक मास वीतेथके एतले आषाढी पूनिम थकी पंचासमे दिहाडे भादों सुदि ५ दिने संवच्छरी करी पछे शेष थाकतो ७० रात्रियें वर्षाकाल रह्यो पज्जोसवेइ सर्वथापि करे। पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषां मांहि श्रेष्ट प्रतिपूर्ण ७० वर्ष लगे सामान्य पर्याय पाली सिद्धथया सर्वदुःखथकी प्रक्षीणथया एतले ३० वर्ष गृहवासे ७० वर्ष चारित्र सर्व मिलो १०० वर्षनो आयु जाणिवो। वासुपूज्य बारहमां अरिहंत ७० धनुष ऊंचपणे हुया। मोहनीय कर्मनो स्थिति ७० सागरोपम कोडाकोडि लगे अवाधायें ७ हजार वर्ष ऊणी ज्ञानावरणी आदि कर्मदल भोगविवाने अर्थें रचना पूर्वे जे बांध्योछे ते उदयकाले आणिजे एतले उत्कृष्टो ७० कोडाकोड सागरोपमनों जेणे समये मोहनीय कर्मनो बंधपाम्यो ते बंधकालथी मांडी ७ हजार वर्ष लगें तेकर्म

॥ टीका ॥

र्जतिविभागतया अनाभोगिकेन वीर्येणोदयसहितं तद्दलिकं निषिञ्चति उदययोग्यं रचयतीत्यर्थः अतो द्विविधास्थितिः कर्म्मत्वोपादानमात्ररूपा अनुभवरू पाच यतः स्थितिरवस्थानं तेनभावेनाप्राप्यवनं तत्र कर्म्मत्वोपादानरूपां तामधिकृत्य सप्ततिसागरोपमकोटीकोट्यः अनुभवरूपां त्वधिकृत्य सप्तवर्षसहस्रोनेति तत्र अबाहत्ति किमुक्तं भवति बन्धावलिकाया आरभ्य यावत्सप्तवर्षसहस्राणितं तावत्कर्म्म न बाधते नोदयं यातीत्यर्थः ततोनन्तरसमये कर्म्मदलिकं पूर्वंनिषि त्तं उदये प्रवेशयति निषेकोनाम ज्ञानावरणादिकर्म्मदलिकस्या ऽनुभवनार्थं रचना तत्र प्रथमसमये बहुकं निषिंचति द्वितीयसमये विशेषहीनं तृतीयेसमये विशेषहीन मेवंयावदुत्कृष्टस्थितिकर्म्मदलिकं तावद्विशेषहीनं निषिंचति तथाचोक्तं मुत्तूणसंगबाहुं पढमाएठिईएवहुतरंदव्व सेसेविससहीणंजाबुक्कोसंतिसव्वेसिं ति बाधृलोडने, बाधत इति बाधा कर्म्मणउदयइत्यर्थः नवाधाअबाधा अन्तरं कर्म्मोदयस्येत्यर्थः तया ऊनिका आबाधोनिका कर्म्मस्थितिः कर्म्मनिषेकोभवतो त्येवमेकेप्राहु रन्येपुनराहु रबाधाकालेन वर्षसहस्रसप्तकलक्षणेनोना कर्म्मस्थितिः सप्तसहस्राधिकसप्तति सागरोपमकोटाकोटीलक्षणः कर्म्मनिषेको भवतिसच क्रियानुच्यते सत्तरिसागरोपमकोडाकोडीओत्ति ॥ ७० ॥ अथैकसप्ततिस्थानके लिख्यते किञ्चित् । चउत्थस्सेत्यादि इहभावार्थोयं युगेहि पञ्चसम्व

॥ मूल ॥

कम्मस्स सत्तरिंसागरोवमकोडाकोडीओ अबाहूणिया कम्मठिई कम्मनिसेगे प० माहिंदस्सणं देविंदस्स देवरन्नो सत्तरिसामाणियसाहस्सीओ प० ॥ ७० ॥ चउत्थस्सणं चंदसंवच्छरस्स हेमंताणं एक्का

॥ भाषा ॥

उदयेनावे ते माटे ७० कोडाकोड सागर मांहि थी ७ हजार वर्ष ऊणा कीजे एतली स्थिति मोहनीय कर्मनो कोइक कहेछे सात हजार वर्ष अधिक ७० कोडाकोडि सागर सघन कर्म निसेक होय । माहेंद्र चौथा देवलोकना राजाने ७० हजार सामानिक देवता कह्या इति ७० समवाय संपूर्ण ॥ ७०

॥ टीका ॥

त्सरा भवन्ति तत्राद्यौ चन्द्रसम्वत्सरौ तृतीयोभिवर्द्धितसम्वत्सर चतुर्थश्चन्द्रसम्वत्सरस्तृतीयोभिवर्द्धितसंवत्सरएव तत्र च एकोनत्रिंशतादिनानां द्वात्रिंशताचद्विष
ष्टिभागैर्दिनस्य चन्द्रमासो भवति अयञ्च द्वादशगुणः चन्द्रसंवत्सरोभवति त्रयोदशगुणश्चायमेवा भिवर्द्धितोभवति ततश्चन्द्रचन्द्राभिवर्द्धितलक्षणे सम्वत्सरत्रयेदि
नानांसहस्रं द्विनवतिः षट्द्विषष्टिभागाभवन्ति १०९२।६।६२ तथाआदित्यसंवत्सरे दिनानांशतत्रयं षट्षष्ठिश्चभवंति तत्त्रितयेच सहस्रमष्टनवत्यधिक
भवति द्रष्टव्यक्रिलचन्द्रयुगमादित्ययुगं चाषाढ्या मेकंपूर्यते ऽपरञ्चश्रावणकृष्णप्रतिपदिआरभ्यते एवंचादित्ययुगसंवत्सरत्रयापेक्षयाचन्द्रयुगसंवत्सरत्रयं पंचभिर्दि
नैःषट्पंचाशताचदिनद्विषष्टिभागैरूनंभवतीतिकृत्वा आदित्ययुगसंवत्सरत्रयं श्रावणकृष्णपक्षस्य चन्द्रदिनषट्केसाधिकेपूर्यते चन्द्रयुगसंवत्सरत्रयंत्वाषाढ्यां तत

॥ मूल ॥

सत्तरीए राइंदिएहिं वीक्कंतेहिं सव्वबाहिराउ मंडलाउ सूरिएआउट्टिं करेइ वीरियप्पवायस्सणं पुव्वस्स

॥ भाषा ॥

हिवे ७१ मो लिखेछे। १ युग मांहि ५ संवच्छर होय ते चंद्र १ चंद्र २ अभिवर्द्धित ३ चंद्र ४ अभिवर्द्धित ५ एह ५ मांहि तीन चंद्र संवच्छर एकेको चंद्र
मास २९ अहोरात्रि १ अहोरात्रना ३२ भाग ६२ सठिया ते १२ गुणा कीधां चंद्र संवत्थाय तेहनां ३५४ दिन भांभेरा थाय २९।३२।६२ अहोरात्रि १३
गुणाकरिये तो अविभर्द्धित वर्षथाय तोदोय चंद्र संवत् १ अभिवर्द्धित संवत्ना येकसहस्र बाणूंदिन बासठिया ६ भागहोय अनें आदित्य संवत्सरना त्रिण
से छासठिथाय एहवा त्रिण वर्षना एक हजार अठाणूंदिन थाय एतले चंद्रयुग अने सूर्ययुग येके आषाढी पूनिमदिने पूराथाय वीजोयुग श्रावण बदी प
डिवाये प्रारंभियें एम आदित्ययुग संवत्सरनो अपेक्षायें चंद्रसंवत्सरत्रिण पांच दिहाडे साठिया छप्पन्न भागें ऊणां करिये। आदित्ययुग संवच्छर ३ श्रावण
बदी पडवा चंद्र दिन थकी छहें दिने अधिक पूराय चंद्रयुग संवच्छर ३ आषाढी पूनिमें पूरे तिवारपछी सावण बदी सातमदिन थकी दक्षिणायने

॥ टीका ॥

श्रावणकृष्णपक्षसप्तमदिनादारभ्य दक्षिणायने मादित्य श्चरन् चंद्रयुगचतुर्थसंवत्सरस्य चतुर्थमासांतभूताया मष्टादशोत्तरशततमदिनभूतायां कार्त्तिक्यां द्वाद शोत्तरशततमे स्वकीयमण्डले चरति ततश्चान्यान्येकसप्ततिमण्डलानि तावत्स्वेव दिनेषु मार्गशीर्षादीनां चतुर्णांहेमन्तमासानां सम्बन्धिषु चरति ततोद्विसप्त तितमे दिने माघमासे बहुलपक्षत्रयोदशीलक्षणे सूर्यश्चावृत्तिं करोति दक्षिणायनान्निवृत्त्योत्तरायणेन चरतीत्यर्थः ॥ उक्तञ्च ज्योतिष्करण्डके पञ्चसुयुगसम्वत्स रेश्वूत्तरायणतिथयः क्रमेणैवं यदुतबहुलस्ससत्तमीए १ सूराशुद्धस्सतोचउत्थीए २ बहुलस्सयपाडिवए ३ बहुलस्सयतेरसीदिवसे ४ सुद्धस्सयदसमीए ५ पवत्तएपं चमीउश्चावट्टी एयाश्चा उट्टीश्चोसव्वाश्चोमाघमासंमित्ति दक्षिणायनदिनानिचैवं पढमाबहुलपडिवए १ वीयाबहुलस्सतेरसीदिवसे २ सुद्धस्सयदसमीए ३ बहुल स्सयसत्तमीए ४ सुद्धस्सचउत्थीए पवत्तएपंचमीउश्चाउट्टी एयाश्चाउट्टीश्चो सव्वाश्चोसावणेमासेत्ति वीरियपुव्वस्सत्ति तृतीयपूर्वस्य पाहुडत्ति प्राभृतमधिकारवि शेषः । श्रजितइत्यादि तस्यहि श्रष्टादशपूर्वलक्षाणि कुमारत्वं त्रिपञ्चाशच्चैकपूर्वांगाधिकाराज्यमित्येकसप्तति रिहच पूर्वांगमधिकमल्पत्वा न्न विवक्षित मिति

॥ मूल ॥

एकसत्तरिंपाहुडा प० श्रजितेणं श्ररहा एकसत्तरिं पुव्वसयसहस्साइं श्रगारमज्झे वसित्ता मुंडेभवित्ता जा

॥ भाषा ॥

सूर्य चालतोथको चउथा चंद्र युगना चउथा मासमांहि अंतर्भूतछे एकसो अठारमा दिन कार्त्तिकीयें येकसो बारमां पोतानां मंडलमांहि सूर्यचार करे तिवारपछे सोआला संबंधी मागशिरादिक मासमांहि एकत्तर मांडला छूवे चरे पछे बहुत्तरिमें दिन माघमासे वदी १३ दिने समुद्रमांहिला सर्वबाह्यमां डला थको सूर्य पाहुत्तिकरे प्रदक्षिणावर्त्तकरे उत्तरायणे सूर्य फिरे ॥ वीर्य प्रवाद त्रीजा पूर्व नां एकत्तरि प्राभृतका अधिकार विशेष कह्या । अजितनाथ

५ सगरोद्वितीयचक्रवर्त्ती अजितस्वामिकालीनः ॥ ७१ ॥ अथद्विसप्ततिस्थानके किमपि लिख्यते सुवर्णकुमाराणांद्विसप्ततिलक्षाणि भवनानिक
थम् दक्षिणनिकाये अष्टत्रिंशदुत्तरनिकायेतु चतुस्त्रिंशदिति नागमाहस्रीओत्ति नागकुमारदेवसहस्राणि वेलां षोडशसहस्रप्रमाणामुत्सेधतो विष्कम्भतश्च
दशसहस्रमानांलवणजलधिशिखांवाह्यां धातकीखण्डद्वीपाभिमुखी महावीरो द्विसप्ततिवर्षाण्यायुः पालयित्वासिद्धः कथंचिद्गृहस्थभावे द्वादशसार्द्धानिपक्षश्च

॥ मूल ॥

व पव्वइए एवं सगरेवि रायाचाउरंतचक्कवट्टी एक्कसत्तरिं पुव्वजावपव्वइए ॥ ७१ ॥ बावत्तरिं
सुवन्नकुमारावाससयसहस्सा प० लवणस्स समुद्दस्स बावत्तरिं नागसाहस्सीउ बाहिरियं वेलं धारंति समणेन्न

॥ भाषा ॥

अरिहंत अठार पूर्व लाख लगे कुमारपणे अने एक पूर्वांगाधिक ५३ लाख पूर्व लगे राज्यपालीने एवं ७१ लाख पर्व लगी गृहवासमांवसीने मुंडथया । गृह
स्थाश्रमथकी यतीपणुं पाम्यां एम १ पूर्वलाख चारित्रपालीसर्वायु ७२ लाख पूर्व जाणिवा । एमज अजितनथ स्वामी कालीन सगरपणे बीजोमहाराजा चा
तुरंत चक्रवर्त्ती एकहत्तर लाखपूर्वलगे गृहवासमांहिवसीने राज्यपालीने मुंडपणे गृहस्थथकी यतीपणे पांम्या ॥ इति ७१ मो संपूर्ण ॥ ७१ ॥
हिवे ७२ मो लिखे छे । भवनपतीनों तोजोनिकाय सुवर्ण कुमार देवता तेहना दक्षिणेंद्र नें ३८ लाख भवनावास उत्तरेंद्र ने ३४ लाख भवनावास एहुंमि
ली ७२ लाख भवनावास कह्या । ७२ हजार देवता लवण समुद्रनो बाहिरली धातकी खंड तरफनी पांणीनीवेला प्रते धरेछे । एतले १६ हजार योजन
ऊपरि २ कोशनो वेलावधे तिवारे चाटूये करी पाणी ऊपराठी मारेछे । श्रमण भगवंत महावीरस्वामी ७२ वर्षलगेसर्वायु पालन कियो । एतले ३० वर्षगृह
वासे १२ वर्ष मास ६ दिन १५ छद्मस्थभावें देशोन ३० वर्ष केवल पर्याय एवं ७२ वर्ष लगें सर्वायु पालीने सिद्ध थया सर्व दुःखथकी प्रक्षीण थया । स्थविर

॥ टीका ॥

छद्मस्थभावे देशोनानिचिंशत्केवलित्वे इतिद्विसप्ततिः अयलभायत्ति अचलोमहावीरस्य नवमो गणधरः तस्यायुर्द्विसप्ततिवर्षाणि कथं षट्चत्वारिंशद्गृहस्थत्वे
द्वादशछद्मस्थतायां चतुर्दशकेवलित्वेइति पुष्करार्द्धेद्विसप्तति चंद्रास्तचैकस्यां पंक्तौ षट्त्रिंशदन्यस्यांच तावंत एवेति बावत्तरिंकलाओत्ति कलाविज्ञानानीत्यर्थः
ताश्च कलनीयभेदा द्विसप्ततिर्भवन्ति तत्रलेखनं लेखो ऽक्षरविन्यासः तद्विषया कला विज्ञानं लेख एवोच्यते एवं सर्वत्र सच लेखो द्विधा लिपिविषयभेदात् तत्र
लिपि रष्टादशस्थानकोक्ता अथवा लाटादिदेशभेदतस्तथा पत्रादि त्रिविधवित्तोपाधिभेदतोवा ऽनेकविधेति तथाहि पत्रं वल्ककाष्टदन्तलोहताम्ररजतादयो
अक्षराणामाधार स्तथा लेखनोत्कीर्णनस्यूतव्यूतछिन्नभिन्नदग्धसंक्रांतितो ऽक्षराणि भवन्तीति विषयापेक्षयाप्यनेकधा स्वामिभृत्यपितृपुत्रगुरुशिष्यभार्यापति

॥ मूल ॥

गवंमहावीरे बावत्तरिं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे थेरेणं अयलभाया बावत्तरिं वासाइं
सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे अभिंतरपुक्खरद्धेणं बावत्तरिं चंदापभासिंसु ३ बावत्तरिंसूरिया
तविंसुवा ३ एगमेगस्सणं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स बावत्तरिपुरवरसाहस्सीउ प० बावत्तरिकलाउ प० तं०

॥ भाषा ॥

महावीरना नवमा गणधर अचलभ्राता ७२वर्ष लगें सर्वायुपालोने यतीपणुं पामी सिद्ध थया सर्वदुःखयकी प्रचीण थया। गृहस्थपणे ४६ वर्ष छद्मस्थभा
वें १२ वर्ष केवलि पर्यायें १४वर्ष एवं ७२ वर्षपालोने सिद्ध थया। पुष्करवरद्वीप १६ लाखनोछे तेमांहि ८ लाख मानुषोत्तर पर्वतमांहिते अभ्यंतर पुष्क
रार्द्ध कहिये तिहां ७२ चंद्रमा ७२सूर्य प्रभासता हुया प्रभासेछे प्रभासस्यें पहिलो पंक्तिये ३६ दूजो ३६ एवं ७२ थया। तपता हुया तपेछे तपस्यें एकेक
चातुरंत चक्रवर्ती नें ७२ पुरवर मोटा श्री नगरना सहस्र कह्या। पुरुषनी ७२ कला कही ते कहेछे। लिखवो अक्षरनो स्थापिवो तेहीजकलाते लेख का

॥ टीका ॥

यवृभिस्तादीनां लेखविषयाणामप्यनेकत्वा त्तथाविधप्रयोजनभेदाच्च ग्रक्षरदोषा श्चैते ग्रतिकार्श्यमतिस्थौल्यं वैषम्यम्पंक्तिवक्रता ग्रतुल्यानांचसादृश्य मभागोऽव यवेष्विति ॥ १ ॥ तथा गणितं संख्यानम् सङ्कलिताद्यनेकभेद म्पाटीप्रसिद्धं २ रूपं लेप्यशिलासुवर्णमणिवस्त्रचित्रादिषु रूपनिर्म्माणं ३ नाट्यकला भरतमार्ग स्थलिककलास्यविधान मित्यादिभेदादृष्टवा नाट्यग्रहणात् नृत्तकलापि गृहीता साच ग्रभिनयिका ग्रङ्गहारिका व्यायामिका चेति त्रिभेदा स्वरूपं चास्यभरत शास्त्रादवसेयं ४ तथा गीतकला साच निबन्धनमार्ग स्थलिकमार्ग भिन्नमार्गभेदात्त्रिधा तत्र सप्तस्वरास्त्रयोग्रामा मूर्छनाएकविंशतिः तानाएकोनपञ्चाशत्समा संस्वरमण्डलं इयञ्च विशाखिलशास्त्रादवसेयेति ॥ ५ ॥ वाद्यंति वाद्यकला साच तत वितत शुषिर घन वाद्यानां चतुः पंचत्र्येक प्रकारतया त्रयोदशधा ४ ॥ इत्यादिकः कलाविभागो लौकिकशास्त्रेभ्यो ऽवसेयः इहच द्विसप्तति रिति कलासंख्योक्ता बहुतराणिच सूत्रे तन्नामान्युपलभ्यन्ते तत्रच कासांचित् का

॥ मूल ॥

लेहं १ गणियं २ रूवं ३ नट्टं ४ गायं ५ वाइयं ६ सगरयं ७ पुक्करगयं ८ समतालं ९ जूयं १० जणवायं ११ पोरकच्चं १२ अट्ठावयं १३ दगमट्टियं १४ अन्नविही १५ पाणविही १६ वत्थविही १७ सयणविही १८

॥ भाषा ॥

ला १८ भेदें कहीछे ।१। गणित अंकनीकला २ । चित्राम करिवो ३ नाटकनीकला ४ गानकरिवानीकला ५ बाजित्र वजाबानीकला ६ । कंठ संबंधी स्वर ने ग्रोलखिवानीकला ७ । बाजित्रनीगतिनीजाणवो ८ । ताल देवानीकला ९ । जूवारमवानीकला १० । लोगथी ग्रालाप संलापनी कला ११ नगररचा दिकनी कला १२ । सारपासारमवानी कला १३। पाणीग्रनेंमाटी एकठीकीधांग्रमुकयोग होय तेकला १४। ग्रन्ननीपजाविवा रांधिवानीकला १५। पाणी नीपजावानी विधि १६ । वस्त्र नीपजाविवारंगवानी पहिरवानीविधि १७। सोवानीविधि १८ । ग्रार्या संस्कृतनोबंध तेहनो जाणिवो १९ । प्रहेलिका

॥ मूल ॥

अजं १९ पहेलियं २० मागहियं २१ गाहं २२ सिलोगं २३ गंधजुत्तिं २४ मधुसित्थं २५ आभरण
विही २६ तरुणी पडिकम्मं २७ इत्थीलख्खणं २८ पुरिसलख्खणं २९ हयलख्खणं ३० गयलख्खणं ३१
गोणलख्खणं ३२ कुक्कडलख्खणं ३३ मिंढयलख्खणं ३४ चक्कलख्खणं ३५ छत्तलख्खणं ३६ दंडलख्खणं ३७
असिलख्खणं ३८ मणिलख्खणं ३९ कागणिलख्खणं ४० चम्मलख्खणं चंदलख्खणं सूरचरियं राहुचरियं गह
चरियं सोभागकरं दोभागकरं विज्जागयं मंतगयं रहस्सगयं ४१ सभासंचारं ४२ बूहं ४३ खंधावा

॥ भाषा ॥

नीकला २० । मगधदेशसंबंधीगाथानीकला २१ । प्राकृतबंध गाथानो जाणपणं २२ । श्लोक रचवानी कला २३ । गंध नया अबीरादिकनीयुक्ति २४ । मधु
रादिक ६ रसनां प्रयोगनी कला २५ । आभरण घडवानी जडवानी पहरवानी कला २६ । तरुणी स्त्रीजातिने प्रति क्रम क्रियाकलापनोसिखाविवो २७ ।
स्त्रीनालक्षण जाणिवानी कला २८ । पुरुषनां बत्तीस लक्षणजाणिवानो कला २९ । घोडानां लक्षण जाणिवानो कला ३० । हाथीनां लक्षण जाणिवानीक
ला ३१ । वृषभ लक्षण कला ३२ कूकडाना लक्षण कला ३३ । मींढानां लक्षण । ३४ । चक्रना लक्षण ३५ । छत्रना लक्षण ३६ । दंडवंशलठ्ठीनालक्षण ७३ ।
खड्गना लक्षण ३८ । मणिचंद्रकांतादिकनालक्षण ३९ । काकिणीरत्न विशेषना लक्षण ४० । चर्मनोगुण अवगुण जाणिवो चंद्रनाग्रहणादिकनो जाणिवो सू
र्यनो चरित्र एहवो अग्योतो एमथासे एम जाणिवो राहुनो चरित्रजाणिवो ग्रहनो चरित्र जाणिवो सौभाग्यनोकारण जाणिवो दौर्भाग्यनोकारण जाणिवो
विद्या प्रज्ञप्ति रोहिणी तद्गत विचार मंत्र आराधे हरिणेगमेषीआवे । रहस्यगति प्रछन्न वस्तुनो जाणिवो सद्भाव वस्तु भावना प्रयोग चार कटक मानो छ

॥ मूल ॥

रमाणं ४४ नगरमाणं ४५ वत्थुमाणं ६४ खंधारनिवेसं ४७ वत्थुनिवेसं ४८ नगरनिवेसं ४९ ईसत्थं
छरुप्पवायं ५० आससिक्खं ५१ हत्थिसिक्खं ५२ धणुव्वेयं ५३ हिरन्नपागं ५४ सुवन्नपागं ५५ मणिपागं ५६
॥१३१॥ धातुपागं ५७ बाहुजुद्धं ५८ लयाजुद्धं ५९ मुठिजुद्धं ६० जुद्धं ६१ निजुद्धं ६२ जुद्धाइजुद्धं ६३ सुत्तखेडं
६४ वट्टखेडं ३५ नालियखेडं ६६ चम्मखेडं ६७ पत्तछेज्जं ६८ कडगछेज्जं ६९ सजीवं ७० निज्जीवं ७१

॥ भाषा ॥

तरिवो ४१ । युद्ध कटक नी रचना ४२ । खंधार कटक उतारिवानो प्रमाण जाणिवो ४३ । नगरवासिवानोमान ४४ वस्तुनामान गजतोलादिक ४५। खंधा
रकटकनो निवासस्थापन ४६ । नगर निवेशनो वासवो ४७। वस्तुनोस्थापनावस्तुनिवेश ४८ । ईषदर्थ थोडानूं घणुं घणानूं थोडूं करवूं ४९ । त्सरुखड्गमुटित
था सुरप्रवाण तहत रिवारनो जाणिवो ५० । घोडानी गति शिखाडवो ५१ । हाथीनी गति शिखाडवो ५२ । धनुर्वेद धनुर्धारी थावूं ५३ । हिरण्य
रूपानोपाक पचाववो ५४ । सुवर्णनो पचाविवो ५५ । मणिरत्नादिकनो पाक ५६ । धातुतांबादिकनो पाक ५७ । युद्ध सामान्य प्रकारे तेहनो जाणि
वो ५८ । नियुद्ध अतिशय युद्ध जाणिवो ५९ । युद्धनेअति क्रम करीने जूझवो ६० । मुष्टियें जूझवो ६१ । लताविलडोयेजूझवो ६२ । वाहुथी जूझवोतेबा
हुयुद्ध ६३ । सूत्रनो खेडवोबेझनोमांडो सूत्रनो छेदिवो ६४ । वर्त वाटलो खेडुं मांडीने जूझिवो ६५ । नालिकाकमल डांडो तेहनो खडवो बेभूमांडीने वे
धवूं ६६ । चर्म खेडू वेडूंमाडीवेधिवो ६७ पत्रगानडानो छेदिवो ६८ । कडग सुवर्णादिकनाचूडो कुंडलादिकनो छेदिवो ६९ । मंत्रामनुष्यतिर्यंचने मंत्रशक्ति क
री सजीव करिवो ७० । जीवतानोनरचांपाने निर्जीव करिवो ७१ । शकुन पक्षीकाकादिकना स्वरभेदनो जाणिवो ७२ । एकलायई । सम्मूर्छिम खेचर

॥ टीका ॥

सुवि दंऽतर्भावोऽवगन्तव्य इति ॥ ७२ ॥ अथत्रिसप्ततिस्थानके किमपिलिख्यते। हरिवासेत्ति अत्र सम्वादगाथा ॥ एगुत्तरानवसया तेवत्तरि मेवजोयणसहस्सा जीवासत्तरसकलायअद्धकलाचेवहरिवासेत्ति तथा विजयो द्वितीयोबलदेवस्तस्येह त्रिसप्ततिवर्षलक्षाण्यायु रत्र मावश्यकेतु पंचसप्तति रितोदमपिमतांतरमेव ॥ ७३ ॥ अथचतुःसप्ततिस्थानके किंचित्लिख्यते। तत्राग्निभूतिरिति महावीरस्यद्वितीयोगणधरःगणनायकस्तस्येह चतुः

॥ मूल ॥

सउणरुयं ७२ ॥ समुच्छिमखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेणं बावत्तरिंवाससहस्साइं ठिई प० ॥ ७२ ॥ हरिवासरम्मयवासयाउ णं जीवाउ तेवत्तरिं २ जोयणसहस्साइं नवयएगुत्तरं जोयणसए सत्तरसयएगूणवीसइभागे जोयणस्स अद्धभागंच आयामेणं प० विजएणंबलदेवे तेवत्तरिं वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे ॥ ७३ ॥ थेरेणंअग्गिभूइ गणहरेचोवत्तरिं वा

॥ भाषा ॥

पक्षीनो पचेंद्रियतिर्यंचनो उत्कृष्टो ७२ हजार वर्षनो स्थिति कही ॥ इति ७२ मो संपूर्ण ॥ ७२ ॥ हिवे ७३ मो लिखेछे। हरिवर्ष अने रम्यक एयुगल क्षेत्रसंबंधी जीवा धणुषरूप तेहुत्तरी २ हजार योजन जाणवी। नवसे एक योजन ७३९०१ योजन। एक योजनना उगणीसहाइयार सत्तर भाग एकयोजननो वलो उपरि अर्ध भाग आयामपणे लांबपणेकहो। विजय बोजो बलदेव ७३ लाख वर्षलगें पूरो आउखूंपालीने सिद्धथया सर्वदुःखथकी प्रचोण थया। आवश्यके ७५ लाख वर्ष लगी सर्वायुपालीने सिद्धथया ते मतांतर छे ॥ इति ७३ मो संपूर्ण ॥ ७३ ॥ हिवे ७४ मो लिखेछे। स्थविर व

॥ टीका ॥

सप्ततिवर्षाख्यायु रत्नवार्यविभागः षट्चत्वारिंशद्दर्षाणि गृहस्थपर्यायः द्वादश छद्मस्थपर्यायः षोडशकेवलिपर्यायइति निसहाओणमित्यादि अस्यभावार्थः त्रिलनिषधवर्षधरस्य विष्कम्भो योजनानां षोडशसहस्राणि अष्टौशतानि द्विचत्वारिंशत्कलाद्वयंचेति तस्यच मध्यभागे तिगिच्छिमहाह्रदः सहस्रद्वयविष्कम्भ चतुःसहस्रायाम स्तदेवंपर्वतविष्कम्भार्द्धस्य ह्रदविष्कम्भार्द्धेनन्यूनतायां शीतोदामहानद्याः पर्वतस्योपरि चतुःसप्तति शतान्येकविंशत्यधिकानि कलाचैकेत्येवं प्र

॥ १३२ ॥ वाहो भवति वइरामयाएजिब्भियाएत्ति वज्रमय्याजिह्विकया प्रणालस्थमकरमुखजिह्विकया चतुर्योजनदीर्घया पञ्चाशद्योजनविष्कम्भया वइरतलेकुंडेत्ति नि षधपर्वतस्याधोवर्त्तिनि वज्रभूमिके अशीत्यधिकचतुर्योजनशतायामविष्कम्भे दशयोजनावगाहे शीतोदादेवीभवनाध्यासितमस्तकेन तद्दीपेनालंकृतमध्यभागे

॥ मूल ॥

साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे निसहाउणं वासहरपव्वयाउ तिगिच्छिदहाउ सीतोयामहानदीउ चोवत्तरिं जोयणसयाइं साहियाइं उत्तराहिमुहीपवहित्ता वइरामयाए जिब्भियाए चउजोयणायामाए पन्ना

॥ भाषा ॥

हा अग्निभूति श्रीमहावीरना बीजागणधर ७४ वर्ष लगे सर्वायुपालीने सिद्धथया सर्वदुःख रहित थया। तेकेम ४६ वर्ष गृहाश्रम १२ वर्ष छद्मस्थपर्याय १६ केवल पर्याय एम ७४ सर्वायु। निषध वर्षधरपर्वत ४०० योजन ऊंचो उपरि १६हजार ८ से ४२ योजन २ कला उगणीसहाइया पिहुलो तेहनां मध्यभागेते गच्छी महा द्रहछेते २ हजार योजन पिहुलो ४हजार योजन लांबोछे। निषध वर्षधर पर्वतथको तेगच्छीद्रहथको निकलो एहवो सीतोदामहानदी ७४ से २१ योजन साधिक एक कला एतले प्रबाहें पर्वत ऊपरि उत्तराभिमुखी वहीने वज्रमइजीभीयें ४०० योजन लांबी५० योजन पिहुली वहीने जायछे। नि षध पर्वतने हेठें वज्रमयी भूमिकाछे जेहनी एहवो ४८० योजन पिहुलो १० योजन ऊंडो सीतोदा देवीयें अलंकृत सीतोदाप्रपात वज्रमय कुंडे महया मो

॥ टीका ॥

शीतोदाप्रपातकुण्डे महयत्ति महाप्रमाणेन यत्पुनः दुहर्गत्तिक्वचित्दृश्यते तदपपाठइतिमन्यते घडमुहपवत्तिएणंति घटमुखेनेव कलशवदनेनेव प्रवर्त्तित स्तेन मुक्तावलीनां मुक्ताफलशरीराणां सम्बन्धी हारस्तस्य यत्संस्थानं तेनसंस्थितो यस्तेन प्रपातः पर्वताप्रपतज्जलसमूह स्तेन महाध्वनिना प्रपतति एवंशीतापि नवरं नीलवद्वर्षधराद्दक्षिणाभिमुखी प्रपततीति चउत्थवज्जेत्यादि तत्र प्रथमायांत्रिंशत् द्वितीयायांपंचविंशतिः तृतीयायांपञ्चदश पंचम्यांत्रीणिलक्षाणि षष्ठ्यां पञ्चोनंलक्षं सप्तम्यांपंचेत्येतानि मीलितानि चतुःसप्तति र्भवन्ति ॥ ७४ ॥ अथ पंचसप्ततिस्थानके किमपिलिख्यते। सुविधे र्नवमतीर्थकरस्य ना

॥ मूल ॥

सजोयणविक्खंभाए वइरतले कुंडे महयाघडमुहपवत्तिएणं मुत्तावलिहारसंठाणसंठिएणं पवाएणं महयासद्देणं पवडइएवंसीतावि दक्खिणमुहीभाणियव्वा चउत्थवज्जासु छसु पुढवीसु चोवत्तरिं नरयावाससयसहस्सा प०

॥ भाषा

टो प्रमाणे घडाना मुखथकी जेमनीकले तेम प्रवाह मगर मुखथी प्रवर्त्यो निकल्यो एहवो मुक्तावली हारने संठाणें संस्थित एहवे प्रपातें पर्वतथकी पाणी नो समूह मोटे सब्दें पडेछे। एम नीलवंत पर्वत उपरि केसरीद्रहथकी निकली दक्षिणाभिमुखी प्रवर्त्तीहुती शीता महानदी नीलवंत पर्वत हेठें शीताप्रपात कुंडनेविषे पडेछे। सर्व शीतोदा नदीनी परे जाणिवो। चोथी नरक पृथिवी टालीने शेष छ नरक पृथ्वीने विषे ७४ लाख नरकावासाकह्या पहिलीयें ३० लाख बीजीयें २५ लाख त्रीजीयें १५ लाख पांचमीये ३ लाख छठीये पांच उंणा १ लाख सातमीयें ५ सर्वमिली ७४ लाख नरकावासा कह्या इति ७४ मो संपूर्ण ॥ ७४ ॥ हिवे ७५ मो लिखेछे। नवमा सुविधिनाथ पुष्पदंत अरिहंतने ७५०० केवलीहुया। सीतलनाथ अरिहंत ७५००० हजार पूर्व लगी

॥ टीका ॥

मांतरतः पुष्पदन्तस्येति तथा शीतलस्य पंचसप्ततिपूर्वसहस्राणि गृहवासे कथं पंचविंशतिः कुमारत्वे पंचाशद्राज्य इति तथा शांतिः पंचसप्ततिवर्षसहस्रा

णि गृहवासमध्युष्य प्रव्रजितः कथं पंचविंशतिः कुमारत्वे पंचविंशतिः मांडलिकत्वे पंचविंशति श्चक्रवर्त्तित्व इति ॥ ७५ ॥ अथषट्सप्ततिस्थानके

लिख्यते किंचित्। तत्र विद्युत्कुमाराणां भवनावासलक्षाणि दक्षिणस्यां चत्वारिंश दुत्तरस्यांतु षट्त्रिंशदिति षट्सप्ततिरिति एवमिति इदमेवभवनमानं शेषा

॥ मूल ॥

॥ ७४ ॥ सुविहिस्सणं पुप्फदंतस्स अरहओ पन्नत्तरि जिणसया होत्था सीतलेणं अरहा पन्न त्तरि पुव्वसयसहस्साइं अगारवासमज्झेवसित्ता मुंडे जावपव्वइए संतीणंअरहापन्नत्तरिवाससहस्साइं अगा रवासमज्झे वसित्ता मुंडेभवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ॥ ७५ ॥ छावत्तरिंविज्जुकुमा रावाससयसहस्सा प० एवं दीवदिसाउदहीणं विज्जुकुमारिंदथणियमग्गीणं छण्हंपिजुगलयाणं छावत्तरिस

॥ भाषा ॥

गृहवास मांहि वसीनेमुंडथया यतीपणंपाम्या। २५ हजार पूर्व कुमारपणे ५० हजार पूर्व राज्याश्रमे एम ७५ हजार पूर्वथया २५ हजार पूर्व दीक्षा सर्वायु १ लाख पूर्व जाणिवो। शांतिनाथ अरिहंत ७५ हजार वर्षलगें गृहाश्रम मांहि वसीने मुंडथया गृहस्थथकी यतीपणुं पाम्या। २५ हजार वर्ष कुमारपणे २५ हजार वर्ष मंडलीक राज्यपणें २५ हजार वर्ष चक्रवर्ती पणेंवसीने प्रव्रज्या पाम्या। २५ हजार वर्ष दीक्षा सर्वायु १ लाख वर्ष। इति ७५ मो संपूर्ण ॥ ७५ ॥ हिवे ७६ मो लिखे छे। विद्युत्कुमार भवन पतिना दक्षिणदिशें ४० लाख भवन उत्तरदिसे ३६ लाख भवन एवं ७६ लाख भवन कह्या एमज द्वीप कुमार १ दिक्कुमार २ उदधि कुमार ३ विद्युत्कुमार ४ स्तनित कुमार ५ अग्नि कुमार ६ एकेकना बेबे इंद्र करतां १२ थया। एहना छहंतर

॥ टीका ॥

र्णा द्वीपकुमारादि भवनपतिनिकायानां मिथार्थं गाथा द्वौदेत्यादि युगलानामिति दक्षिणोत्तरनिकायभेदेन युगलं निकायेभवतीति ॥ ७६ ॥ अथसप्तसप्ततिस्थानके किंचिलिख्यते किंविवृत्तय भरतचक्रवर्त्ती ऋषभस्वामिनः षट्सु पूर्वलक्षेष्वतीतेषुजात स्त्र्यशीतितमेचतस्मिन्नतीतेभगवतिचप्रव्रजिते राजासंहृत्तः ततश्चसप्तसप्ततिः षट्सु निर्कांतेषु सप्तसप्ततिस्तस्यकुमारवासोभवतीति अंगवंशोंगराजसन्तानस्य संबंधिनः सप्तसप्ततिराजानः प्रव्रजिताः गर्द्दतोयेत्यादि ब्रह्मलोकस्यावीवर्तिनीष्वष्टासु कृष्णराजिष्वष्टौ सारस्वतादयो लोकांतिकाभिधाना देवनिकाया भवन्ति तत्र गर्द्दतोयानांतुषितानांच देवाना मुभयपरिवार

॥ मूल ॥

यसहस्साइं १ ॥ ७६ ॥ भरहेरायाचाउरंतचक्कवट्टी सत्तहत्तरिं पुव्वसयसहस्साइं कुमारवासम ज्झेवसित्ता महारायाभिसेयंसंपत्ते अंगवंसाणं सत्तहत्तरिं रायाणोमुंडे जावपव्वइया गद्दतोयतुसियाणं

॥ भाषा ॥

२ लाख भवन कह्या दक्षिण उत्तर नामिलीने। इति ७६ मो संपूर्ण ॥ ७६ ॥ हिवे ७७ मो लिखेछे। श्री आदिनाथने ६ लाख पूर्व गयें थके भरत चक्रवर्ती जन्म पाम्या। ८३ लाख पूर्वमांहेथी ६ लाख पूर्व काढियके ७७ लाख पूर्व उगस्या तो भरत चातुरंत चक्रवर्ती ७७ लाख पूर्व कुमार वासमांहि वसीने महाराज्याभिषेक चक्रवर्त्तपदवीनो अभिषेक पाम्या। एतले ७७ लाख पूर्व कुमारपणे ६ लाख पूर्व चक्रवर्ती पणे १ लाख पूर्व दीक्षापणे सर्वायु चउरासी लाख पूर्व जाणिवो। अंगराजाना संतान संबंधी अंगवंशना ७७ राजा मुंड थईने गृहस्थथकी अणगार पणं पाम्या। पांचमो ब्रह्मलोक तेहने विषे अधोवर्ती ८ कृष्णराजी विमान ने विषे सारस्वतादिक ८ लोकांतिक देवताछे तेमांहि गर्दतोय १ तुसित २ एबिहुं देवतानो ७७ हजार देवतानो परिवार कह्यो। एके के मुहूर्तें ७७ लवकाल विशेष लवाग्र परिमाणे कह्या। इति ७७ मो संपूर्ण ॥ ७७ ॥ हिवे ७८ मो लिखेछे। शक्रेंद्र देवेंद्र देवरा

॥ टीका ॥

संख्यामीलनेन सप्तसप्ततिर्देवसहस्राणि परिवारः प्रज्ञप्तानीति तथैकैकोमुहूर्त्तः सप्तसप्ततिर्लवान् लवाग्रेणलवपरिमाणेन प्रज्ञप्तः कथमुच्यते हृष्टस्यअनवगल्ल स्स निरुवकिट्ठस्सजंतुणो एगेऊसासनीसासे एसपाणुत्तिवुच्चई १ सत्तपाणूणिसेथोवे सत्तथोवाणिसेलवे लवाणंसत्तहत्तरिए एसमुहुत्तेवियाहियत्ति ॥ ७७ ॥ अथाष्टसप्ततिस्थानके लिख्यते। सक्कस्सेत्यादि वेसमणेमहारायत्ति सोमयमवरुण वैश्रमणाभिधानानां लोकपालानां चतुर्थउत्तर दिक्पाल सद्दिवैश्रमणदेवनिकायिकानां सुपर्णकुमारदेवदेवीनां द्वीपकुमारदेवदेवीनां व्यंतरव्यंतरीणां चाधिपत्यंकरोति तदाधिपत्याच्च तन्निवासानामप्याधिपत्यमसौ करोतीत्युच्यते अष्टसप्तत्याः सुपर्णकुमारद्वीपकुमारावासशतसहस्राणामिति तत्रसुपर्णकुमाराणां दक्षिणस्यामष्टत्रिंशद्भवनलक्षाणि द्वीपकुमाराणांच चत्वारिंश दित्येवमष्टसप्ततिरिति द्वीपकुमाराधिपत्यमेतस्य भगवत्यां नदृश्यत इहतूक्त मितिमतांतरमिदं आहेवच्चंति आधिपत्यमधिपतिकर्म्म पोरेवच्चंति पुरोवर्त्तित्व

॥ मूल ॥

देवाणं सत्तहत्तरिं देवसहस्स परिवारा प० एगमेगेणं मुहुत्ते सत्तहत्तरिं लवेलवग्गेणं प० ॥ ७७ ॥

सक्कस्सणं देविंदस्स देवरन्नो वेसमणे महाराया अठहत्तरीए सुवन्नकुमारदीवकुमारावास सयसहस्साणं आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महारायत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे विहरइ थेरेणं अकं

॥भाषा ॥

जानो वैश्रमण चौथोलोकपाल उत्तर दिशानो धणी। दक्षिणदिशि सुवर्णकुमारना ३८ लाख भवना द्वीपकुमारना ४० लाख भवन एवेइंद्रना ७८ लाख भव नछे तेहनो आधिपत्य पणो अग्रगामीपणो भर्त्तपणो स्वामिपणो महाराजापणो आज्ञाप्रधान सेनानायकपणो सेवकपाहेंकरावतो थको आज्ञानीपरे पाल तोथको रहेछे। स्थविर श्री महावीर नो ८ मो अकंपित गणधर अठहोत्तर वर्षलगे सर्वायुपालीने सिद्धथया सर्वदुःख रहित थया गृहस्थपणें ४८ वर्ष छद्म

मग्गगामित्व मित्यर्थः भंट्टित्तंति भर्त्तृत्वं पोषकत्वं सामित्तंति स्वामित्व स्वामिभावत्व महत्तरगत्तंति ...

आज्ञाप्रधानसेनानायकत्वं कारेमाणेत्ति अनुनायकैः सेवकानां कारयन् पालेमाणेत्ति आत्मनापि पालयन् विहरइत्ति आस्ते अकंपितः स्थविरोमहावीरस्या

ष्टमोगणधर स्तस्य चाष्टसप्ततिर्वर्षाणि सर्वायुः कथं गृहस्थपर्याये अष्टचत्वारिंशत् छद्मस्थपर्याये नव केवलि पर्यायेचैकविंशतिरिति उत्तरायणनियट्टेणंति

उत्तरायणादुत्तरदिग्गमना विहृत्तः उत्तरायणनिवृत्तः प्रारब्धदक्षिणायनइत्यर्थः सूरिएत्ति आदित्यः पढमाओमंडलाओत्ति दक्षिणदिशंगच्छतो रवेर्यत्प्रथम

मण्डलं तस्मा दनु सर्वाभ्यन्तरसूर्यमार्गात् एकूणचत्तालीसइमेत्ति एकोनचत्वारिंशत्तमे मण्डले दक्षिणायनप्रथममण्डलापेक्षया सर्वाभ्यंतरमण्डलापेक्षयातु चत्वारिंशे

अट्ठुत्तरिंति अष्टसप्ततिं एगसट्ठि भाएत्ति मुहूर्त्तस्यैकषष्ठिभागान् दिवसखेत्तस्सत्ति दिवसलक्षणस्य क्षेत्रस्य दिवसस्यैवेत्यर्थः निवुट्टेत्तत्ति निर्वर्द्धाहापयित्वेत्य

र्थः तथारयणिखेत्तस्सत्ति रजन्याएव अभिनिवुट्टेत्तत्ति अभिनिवर्द्धाच वर्द्धयित्वेत्यर्थः चारंचरइत्ति भ्राम्यतीत्यर्थः भावार्थोस्यैवं चन्द्रप्रज्ञप्तिवाक्यैरुपदर्श्यते

पिए अट्ठहत्तरिंवासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे उत्तरायणनियट्टेणं सूरिएपढमाउ मंडलाउ एगू ॥ मूल ॥

छद्मस्थपणे ९ वर्ष केवलीपणे २१ वर्ष सर्वमिली ७८ थया। उत्तरदिग्गमन थकी निवर्त्यो प्रारंभ्यो छे दक्षिणायन पणो जेणे एहवो सूर्य पहिला मांडला थकी ॥ भाषा ॥

एकोन चालीसमें मांडले एक मुहूर्तना अठहोत्तरि एकसठिया भाग दिवस लक्षण क्षेत्रने एतले दिवसने निवर्द्धीने घटाडीने रजनी लक्षण क्षेत्रने

रात्रिने अभिवर्द्धावीवधारीने चार चरेछे एतले आषाढी पूनिमे सर्वाभ्यंतर मंडले १८ मुहूर्त दिवसहोय तिवारे पछे दक्षिणायने सूर्यथयो तिवारे एक मुहूर्त्त

॥ टीका ॥

जंबूद्वीपेयदेतौसूर्यौसर्वाभ्यन्तरमण्डलमुपसंक्रम्य चारंचरत स्तदा नवनवतियोजनसहस्राणि षट्चत्वारिंशदधिकानि योजनशतान्यन्योन्यमन्तरंकृत्वा चरत एतच्च जंबूद्वीपेपञ्चोत्तरं योजनशतं प्रविश्याभ्यंतरंमण्डलभ्भवति एतस्मिंश्च द्विगुणे जंबूद्वीपप्रमाणादपकर्षिते यथोक्तमन्तरम्भवतीति तथा तत्रतयो श्चरतो रुत्कृ

॥ १३५ ॥ ष्टो ष्टादशमुहूर्त्तो दिवसो भवति जघन्यकाच द्वादशमुहूर्त्ताराविर्भवति ततोभ्यन्तरमण्डलान्निष्क्रम्य प्रथमेऽहोरात्रे भ्यन्तरानन्तरं मण्डलमुपसंक्रम्य यदा चारंचरत स्तदा नवनवतिर्योजनसहस्राणिषट्चपंचचत्वारिंशदधिकानि योजनशतानि पंचत्रिंशच्च एकषष्ठिभागायोजनस्यांतरंकृत्वा चारंचरत स्तदा च। ष्टादशमुहूर्त्तोदिवसो भवति द्वाभ्यां मुहूर्त्तस्यैकषष्टिभागाभ्यांन्यून: द्वादशमुहूर्त्ताचरात्रि भवति द्वाभ्यां मुहूर्त्तैकषष्टिभागाभ्यामधिकेत्येवं दक्षिणायनस्य द्वितीयादिषु मण्डले ष्वहोरात्रेषु चान्योन्यांतरं प्रमाणस्य पंचभि: पंचभिर्योजनै: पंचत्रिंशताचैकषष्ठिभागै र्योजनस्य वृद्धिर्वाच्या द्वाभ्यांच मुहूर्त्तैकषष्ठिभागाभ्यां दिनहानौ रात्रि वृद्धिश्चेति एवंच एकोनचत्वारिंशत्तमे मंडले सूर्ययोरन्तरं नवनवतिसहस्राण्यष्टशतानि सप्तपंचाशच्च योजनानां त्रयोविंशतिश्चैक षष्ठिभागा दिनप्रमाणं चाष्टादशानां मुहूर्त्तानां मध्या देकषष्ठिभागाना मष्टसप्तत्यां पातितायां षोडशमुहूर्त्ताश्चतुश्चत्वारिंशच्चैकषष्ठिभागामुहूर्त्तस्य रात्रे

॥ मूल ॥

णचत्तालीसइमे मंडले अठहत्तरिं एगसठिभाए दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ता णं चा

॥ भाषा ॥

माएकसठ भाग करी एहवा बेबेभाग प्रतिदिन दिनघटाडिये रात्रिवधारिये एकमासे २ घडी दिवसघटाडीये तो ३९ मे मांडले. एक योजनना एकस ठीया ७८ भाग दिवस घट्यो रात्रीवधी। एमज सर्वबाह्य मंडलथकी दक्षिणायनथकी सूर्यनिवर्त्यो पाछोचाल्यो उत्तराभिमुखथयो तिवारे ३९ मे मांडले सूर्य गयो एक मुहूर्तना एकसठिया ७८ भाग कह्या । दिवस वधारिये रात्रिघटाडिये दक्षिणायननोपरिभागघटाडोये वधारिये । इति ७८ संपूर्ण

सप्तसप्तत्यां विस्तायां चयोदशमुहूर्त्ता सप्तदशैकषष्टिभागावेति एवंदक्षिणायननियट्टेत्ति यथोत्तरायणनिहत्त एकोनचत्वारिंशत्तमे मण्डले अष्टसप्तति मेकषष्टिभागान् ह्रापयति वर्द्धयतिच एवंदक्षिणायननिहत्तावपि सूर्यस्तान्ह्रापयति वर्द्धयतिच केवलं दक्षिणायने दिनभागान् ह्रापयति रात्रिभागां श्चवर्द्धयति इहतु दिनभागान् वर्द्धयति रात्रिभागांश्च ह्रापयति ॥ ७८ ॥ अथैकोनाशीतितमे स्थानके किंचिल्लिख्यते । तत्र वलयामुहस्सत्ति वड वामुखाभिधानस्य पूर्वदिग्व्यवस्थितस्य पायालस्सत्ति महापातालकलशस्याधस्तनचरमांता द्रत्नप्रभापृथ्वीचरमान्त एकोनाशीत्यासहस्रेषु भवति कथंरत्नप्रभा हि अशीतिसहस्राधिकं योजनानां लक्षबाहल्यतो भवति तस्याश्चैकं समुद्रावगाह सहस्रं परिहृत्या धोलक्षप्रमाणावगाहो वलयामुखपातालकलशो भवति तत तस्यचरमांतात् पृथिवी चरमांतो यथोक्तांतरमेव भवति एवमन्येपित्रयो वाच्या इति छट्ठी इत्यादि अस्यभावार्थः षष्ठपृथिवीहि वाहल्यतो योजनानां लक्ष ॥ टीका ॥

रंचरई एवं दक्खिणायण नियट्टेवि ॥ ७८ ॥ वलयामुहस्सणं पायालस्स हिट्ठिल्लाउ चरमंताउ ॥ मूल ॥

॥ ७८ ॥ हिवे ७९ मो लिखेछे । पूर्व समुद्र मांहि पाताल कलश वडवामुखनो हेठिलो चरिमांत भाग तेहथकी एणीये रत्नप्रभा पहिली पृथ्वी नो हेठिलो चरिमांत एह ७९ हजार योजन आबाधायें विचाले आंतरो कह्यो । रत्नप्रभा पृथिवी एक लाख ८० हजार योजन जाडपणेछे तेमांहेथी एक सहस्र योजन समुद्र उंडोते काढीने १ लाख योजन पाताल कलशो छे तेकाढो तेहनो हेठलो विभाग लीजे तो पूठें ७९ हजार योजन उगरा जाणिवा । एमज दक्षिण समुद्रें केतु पाताल कलश २ पश्चिमे यूप ३ उत्तरे ईसर कलश ४ एह सगलानो हेठलोभाग अने रत्नप्रभानो हेठिलोचरमांत एह विचाले ७९ ॥ भाषा ॥

षोडशसहस्राणि भवन्ति घनोदधय स्तु यद्यपि समापि प्रत्येकं विंशतिसहस्राणि स्यु स्तथाप्येतस्य ग्रंथस्य मतेन षष्ठ्या मसावेकविंशतिः संभाव्यते तदेवं ष ॥ टीका ॥
ष्ठपृथिवीबाहल्यार्द्धमष्टपञ्चाशत्घनोदधिप्रमाणं चैकविंशति रित्येव मेकोनाशीति र्भवति ग्रंथांतरमतेन तु सर्वघनोदधीनां विंशतियोजनसहस्रबाहल्यत्वा
त्पंचमोमाश्रित्येदं सूत्रमवसेयं यत स्तद्बाहल्यमष्टादशोत्तरं लक्षमुक्तं यतआह पढमासीइसहस्सा १ बत्तीसा २ अट्ठवीस ३ वीसाय ३ अट्ठार ५ सोल ६ अ
ट्ठय ७ सहस्सलक्खोवरिंकुज्जत्ति ॥ १ ॥ अथवा षष्ठ्याः सहस्राधिकोपि मध्यभागो विवक्षित एव मर्थसूचकत्वा द्बहुशब्दस्येति तथाजम्बूद्वीपस्य जगत्या स्तत्वा
रिद्वाराणि विजयवैजयंतजयंतापराजिताभिधानानि चतुश्चतुर्योजनविष्कम्भानि गव्यूतपृथुलद्वारशाखानि क्रमेण पूर्वादिषु दिक्षु भवन्ति तेषांच द्वारस्यचद्वा

इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए हेठ्ठिल्ले चरमंते एसणं एगूणासिं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवं केउ ॥ मूल ॥
स्सवि जूयस्सवि ईसरस्सवि छठीए पुढवीए बहुमज्झदेसभायाउ छठस्स घणोदहिस्स हेठ्ठिल्ले चरमंते एसणं
एगूणासीतिजोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० जंबूद्दीवस्सणं द्दीवस्स बारस्सय बारस्सय एसणं एगूणा

हजार योजन अंतरो जाणिवो। छठी नरक पृथिवीना बहुमध्य देशभागथकी एतले छठीनो जाडपणो १ लाख १६ हजार योजनछे तेहनो मध्यभाग ५८ ॥ भाषा ॥
हजार योजन छठी पृथिवीनो घनोदधि यद्यपि २० हजारनो छे तोहो पणि इहां २१ हजार योजन घनोदधि एह ७९ हजार योजन आबाधाये बिचा
ले आंतरो कह्यो। एतले छठीनो मध्यभाग ५८ हजार योजन अने २१ घनोदधि सर्वमिलो जे एह ग्रंथने मते एतले तेहनो हेठिलो चरमांत ७९ हजार
योजन थयो। एह २१ हजार योजन घनोदधि पिंड परिमाण कह्यो। तेएहने मते छठीयेज कहिवो अन्यथा सात नरकने हेठे घनोदधि पिंड २० हजार

रस्य चान्योन्य मित्यर्थः एसणंति एतद्देकोनाशीतियोजनसहस्राणि सातिरेकाणी त्येवंलक्षण मबाधया व्यवधानेन व्यवधानरूप मित्यर्थोन्तर मन्तरं कथं ज ॥ टीका ॥
म्बूद्वीपपरिधिः ३१६२२७ योजनानि क्रोशाः ३ धनूंषि १२८ अंगुलानि १३ सार्द्धानीत्येवं लक्षणस्यापंकर्षितद्वारशाखाविष्कम्भस्य चतुर्विभक्तस्यै वंफलत्वादिति ॥
७९ ॥ अथाशीतितमस्थानके किञ्चिल्लिख्यते। श्रेयांसएकादशोजिन स्त्रिपृष्टः श्रेयांसजिनकालभावीप्रथमवासुदेवः अचलःप्रथमबलदेवोपि तथा त्रिपृष्टवा

सीइं जोयणसहस्साइं साइरेगाइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ७९ ॥ सेज्जंसेणं अरहा असीइं धणू ॥ मूल ॥
इं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था तिविठेणं वासुदेवे असीइंधणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था अयलेणं बलदेवे असीइंधणूइं उड्ढं
उच्चत्तेणं होत्था तिविठेणं वासुदेवे असीइवाससयसहस्साइं महाराया होत्था आउबहुले कंडे असीइजोय

योजन कहिवो। जंबूद्वीप नो जगतीना ४ द्वारछे पूर्वादिकें विजय १ वैजयंत २ जयंत ३ अपराजित ४ एकेक दरवाजो चार २ योजन पिहुलोछे। चार ॥ भाषा ॥
दरवाजानो परस्पर अंतर कांइक अधिक ७९ हजार योजननोछे। जंबूद्वीपनीपरिधी ३१६२२७ योजन त्रिणगाउ १२८ धनुष १३ अंगुल एतला मांहीथी
४ दरवाजानो पिहुलपणो काढीयें पूठे उगरया योजन चिहुं भागदीजेतो दरवाजानो आंतरो पामिये। इति ७९ मो संपूर्ण ॥ ७९ ॥ हिवे
८० मो लिखेछे। श्रेयांस इग्यारमा अरिहंत ८० धनुष ऊंचा ऊंचपणे हुया। श्रेयांस जिननेवारे त्रिपृष्ट वासुदेव पहिलो ८० धनुष ऊंचो ऊंच पणे थयो।
पहिलो अचल बलदेव ८० धनुष ऊंचो ऊंच पणे थयो। त्रिपृष्ट वासुदेव ८० हजार वर्ष लगे महाराज हुया ४ लाख वर्ष महाकुमारपणे बीजाराज्याव
स्थायें सर्वायु ८४ लाखवर्ष आणिवो। रत्नप्रभा पहिली पृथ्वी १ लाख ८० हजार योजन जाडपणेछे तेहनां ३ कांडछे। प्रथम रत्नकांड १६ हजार योजन

॥ टीका ॥

सुदेवस्य चतुरशीतिवर्षलक्षाणिसर्वायुरिति चत्वारिंशत्वाविकुमारत्वे शेषंतुमहाराज्येइति आउवहुइत्यादि किलरत्नप्रभाया अशीत्युत्तरयोजनलक्षबाहल्याया स्त्रीणिकांडानि भवन्ति तत्र प्रथमं रत्नकांडं षोडशविधरत्नमयं षोडशसहस्रबाहल्यं द्वितीयं पंककांडं चतुरशीतिसहस्रमानं तृतीय मब्बहुलकांड मशीतिर्यो

॥ १३७ ॥ जनसहस्राणीति जंबूद्वीपेणमित्यादि शोगाहित्तत्ति प्रविश्य उत्तरकट्ठोवगयत्ति उत्तरां काष्ठांदिश मुपगत उत्तरकाष्ठोपगतः प्रथममुदयं करोति सर्वाभ्यन्त रमंडले उदेतीत्यर्थः ॥ ८० ॥ अथैकाशीतिस्थानके किंचिदुच्यते। नवमनवमिकेति नवनवमानि दिनानि यस्यां सा नवनवमिका भवति नव सु नवकेषु नवनवमदिनानि तस्यांच भिक्षुप्रतिमाया मेकाशीति रात्रिंदिनानि भवन्त्येवं नवानां नवकाना मेकाशीतिरूपत्वा त्तथा प्रथमेनवके प्रतिदिनमेके

॥ मूल ॥

णसहस्साइं बाहल्लेणं प० ईसाणस्सदेविंदस्स देवरन्नो असीइसामाणियसाहस्सीओ प० जंबूद्दीवेणं द्दीवे असी उत्तरं जोयणसयं उगाहेत्ता सूरिए उत्तरकठोवगए पढमं उदयं करेई ॥ ८० ॥ नवनवमियाणं

॥ भाषा ॥

जाडपणे। सोलेभेदे रत्नमय १ बीजो पंक कांड ८४ हजार योजन। त्रीजो अप बहुलकांड ८० हजार योजन जाडपणेकह्यो। ईशानेंद्र बीजो इन्द्र देवतानो राजा तेहना ८० हजार सामानिकदेवता आपणीसारिखा कह्या। जंबूद्वीपनी जगतीने मांहीले पासे एकसो असी योजनलगी अवगाहीने प्रवेशकरीने सूर्य उत्तरदिशि भणी अभिमुख थयोथको सर्वाभ्यंतर मांडले आषाढी पूनिम दिने निषध पर्वतने माथेप्रथम उदय करे। इति ८० ठाणूं संपूर्ण ॥ ८० ॥ हिवे ८१ मोठाणूं लिखेछे। पहिला नवदिनलगे एकेको भिक्षा बीजा ९ दिन लगे २ भिक्षा एमनवनवक लगे प्रतिदिन एकेक भिक्षावधारीये नवनवमिका भिक्षुप्रतिमा एकासी दिने पूरीथाय। नवनवक लगे प्रतिदिन एकेक भिक्षावधारतां ८१ दिने मिली चार से पांच अधिक भिक्षायें दातेंकरी यथासूत्र क

॥ टीका ॥ शमिधा एवमेकोत्तरया द्वव्या नवमेनवके नवनवेति सर्वासां पिण्डने चत्वारिपञ्चोत्तराणि भिचाग्रतानि भवन्तीत्यतउक्तं चउहियेत्यादि इहच भिचाशब्देन

चाभिघा एवमेकोत्तरया द्वद्या नवमेनवके नवनवेति सर्वासां पिण्डने चत्वारिपञ्चोत्तराणि भिचाग्रतानि भवन्तीत्यतउक्तं

इतिरभिप्रेता यहासुत्तंति यथासूत्रं सूत्राणतिक्रमेण जावत्तिकरणा यथाकल्पं यथामार्गंयथातत्वं सम्यक्कायेन स्पृष्टा पालिता शोभिता तोरिता कीर्तिता

पाचया राधिते तिद्रष्टव्यं विवाहपन्नत्तीएत्ति व्याख्याप्रज्ञप्त्या मेकाशीति म्महायुग्मशतानि प्रज्ञप्तानि इहच शतशब्देना ध्ययना न्युच्यन्ते तानि कृतयुग्मा

दिलचणराशिविशेषविचाररूपाणि अवांतराध्ययनस्वभावानि तदवगमावगम्यानीति ॥ ८१ ॥ अथद्वाशीतिस्थानकं किमपिलिख्यते । तत्र ज

म्बूद्वीपे द्वाशीतिद्वाशीत्यधिकंमण्डलशतम् सूर्यस्य मार्गशतं तद्भवतीति वाक्यशेषः किम्भूतं यत् सूर्योद्विःकृत्वो द्वौवारौ संक्रम्य प्रविश्य चारंचरति तद्यथानि ॥ मूल ॥

निक्खुपडिमा एक्कासीइराइंदिएहिं चउहियपंचुत्तरेहिं भिक्खासएहिं अहासुत्तं जाव आराहियाकुंथुस्सणं

अरहओ एक्कासीतिं मणपज्जवनाणिसया होत्था विवाहपन्नत्तीए एकासीतिमहाजुम्मसया प० ॥ ८१ ॥

जंबू द्दीवेद्दीवे वासीयं मंडलसयं जंसूरिए दुक्खुत्तो संकमित्ताणं चारंचरइ तं० निक्खममाणेय पविसमाणेय

॥ भाषा । हेके सूत्रोक्त विधिमार्गे आराधी होय । कुंथुनाथ सतरमा अरिहंतने ८१ शत मनपर्यवज्ञानी थया । व्यवहार पन्नतीने विषे ८१ शत महायुग्म कह्या । इहां

शत शब्दे अध्ययन कह्याछे युग्मशब्दे गणितराशि विशेष एतले ८१ ठाणूं संपूर्ण ॥ ८१ ॥ हिवे ८२ ठाणो लिखेछे । जंबूद्वीप ने विषे १८२ मां

डला सूर्यनाछे यद्यपि जंबूद्वीप मांहो ६५ मांडलाछे परं बाह्य मांडले पणि जंबूद्वीप संबंधी सूर्यनो चार छे तेमाटे जंबूद्वीप बाहिरला ११९ मांडला पणि

जंबूद्वीपमां कह्या । ते १८२ मांडला सूर्य बे वेला संक्रमी प्रवेश करी चारचरै भमे एतले १४८ मांडलाछे तेमांहि निषध ऊपरलो सर्वाभ्यंतर मांडलो भने

॥ टीका ॥

ष्क्रामंश्च जंबूद्वीपात् प्रविशंश्च जंबूद्वीपएवेति अयमत्र भावार्थः किल चतुरशीत्यधिकं सूर्यमंडलशतं भवति तत्र सर्वाभ्यन्तरे सर्वबाह्ये सकृदेवसंक्रामति शेषाणि तु द्वौवारावितिं इहच द्वाशीतिविवचयै वेदं द्वाशीतिस्थानके ऽधीत मितिभावनीयं यद्यपि जंबूद्वीपे पञ्चषष्ठिरेव मंडलानां भवति तथापि जंबूद्वीपादिकसूर्य चारविशयत्वा च्छेशाण्यपि जंबूद्वीपेन विशेषितानीति समणे इत्यादि आषाढस्यशुक्लपक्षषष्ठ्या मारभ्यद्वाशीत्यांरात्रिंदिवेष्वतिक्रांतेषु त्र्यशीतितमेवर्त्तमाने अश्वयुजः कृष्णत्रयोदश्या मित्यर्थः गर्भात् गर्भाशया द्देवानंदाब्राह्मणो कुक्षित इत्यर्थः गर्भं त्रिशलानिधानक्षत्रियाकुक्षिं संहृतो नीतो देवेंद्रवचनकारिणा हरिणैगमेष्यभिधानदेवेनेति इदं च सूत्रे द्वाशीतिरात्रिंदिवान्यविकृत्य द्वाशीतिस्थानकेऽधीयते त्र्यशीतितमं रात्रिंदिवमाश्रित्य तु त्र्यशीतितमस्थानके इति महा

॥ मूल ॥

समणेभगवंमहावीरे वासीएराइंदिएहिं वीइक्कंतेहिं गभ्भाउ गभ्भं साहरिए महाहिमवंतस्सणं वासहरपव्वयस्स उवरिल्लाउ चरमंताउ सोगंधियस्स कंडस्स हेठिल्ले चरमंत एसणं वासीइंजोयणसयाइं अवाहाए अंतरेप०

॥ भाषा ॥

समुद्रमांहिलो छेहिलो सर्वाभ्यंतर मांडलो सूर्य एकवेला चरिसे एक कर्क संक्रांतियें शेष थाकता १८२ मांडला बेबेलाफिरस्ये सर्वाभ्यंतर मांडलाथकी जंबूद्वीपे निकलतो एकवेलां जंबूद्वीप मांही पैसतो एम बेवेला १८२ मांडला सूर्यचरे भ्रमे गगने फिरे। श्रमण भगवंत श्रीमहावीर आषाढ शुक्ल षष्ठी थकी मांडी ८२ रात्रिदिवस व्यतिक्रमे थके ८३ मीरात्री वर्ततेथके आशोजवदी १३ नीरात्रीयें देवानंदानो कूखथकी गर्भ त्रिशला देवीनो कूखविषे हरिणैगमेषी देवतायें साहस्यो पहुंचाव्यो ॥ महाहिमवंत बीजो वर्षधर पर्वत २०० योजन ऊंचो छे ते महाहिमवंतनो उपरलो चरमांत छेहल्यो प्रदेश तेह थकी मांडी रत्नप्रभाना सौगंधिक कांडनो हेठिलो चरमांत एह ८२ शत योजन आबाधायें बिचाले आंतरोकह्यो। कांड दूजो अपबहुल २ तेमांही पहिलो कांड

हिमवतो द्वितीयवर्षधरपर्वतस्य योजनशतद्वयोच्छ्रितस्य उवरिल्लाओ त्ति उपरिमा चरमांतात् सौगन्धिककांडस्याधस्तनचरमान्तो द्व्यशीतिर्योजनशतानि ॥ टीका ॥

यं रत्नप्रभापृथिव्यां हि त्रीणि कांडानि खरकांडं पंककांडमब्बहुलकांडं चेति तत्र प्रथमं काण्डं षोडशविधं तद्यथा रत्नकांडं १ वज्रकांडं २ एवंवैडूर्यं ३ लो

हिताक्ष ४ मसारगल्ल ५ हंसगर्भ ६ पुलक ७ सौगन्धिक ८ ज्योतीरस ९ अंजन १० अंजनपुलक ११ रजत १२ जातरूप १३ अंक १४ स्फटिक १५ रिष्टकांडंचे

ति १६ एतानि च प्रत्येकं सहस्रप्रमाणानि ततश्च सौगंधिककांडस्याष्टमत्वा दशीति शतानि द्वे च शते महाहिमवदुच्छ्रय इत्येवं द्व्यशीतिशतानीति

एवं रुक्मिणो पि पञ्चमवर्षधरस्य वाच्यं महाहिमवत्समानोच्छ्रयत्वात्तस्येति ॥ ८२ ॥ अथ त्र्यशीतितमस्थानके किमपि लिख्यते। इह शीतलजिन

स्य त्र्यशीतिर्गणा त्र्यशीतिर्गणधरा उक्ता आवश्यकेत्वेकाशीतिरितिमतांतरमिदमिति तथा स्थविरोमंडितपुत्रो महावीरस्य षष्ठोगणधरः तस्य त्र्यशीतिवर्षा

॥ मूल ॥

एवं रुप्पिस्सवि ॥ ८२ ॥ समणेभगवंमहावीरे वासीइ राइंदिएहिं वीइक्कंतेहिं तेयासीए

राइंदिए वट्टमाणे गब्भाउ गब्भं साहरिए सीयलस्सणं अरहउ तेसीइगणा तेसीइगणहरा होत्था थेरेणं मंडि

॥ भाषा ॥

१६ भेदे रत्नकांड १ वज्रकांड २ एम वैडूर्य कांड ३ लोहिताक्ष ४ मसारगल्ल ५ हंसगर्भ ६ पुलक ७ सौगंधिक ८ ज्योतिरस ९ अंजन १० अंजनपुलक ११

रजत १२ जातरूप १३ अंक १४ स्फटिक १५ मसारगल्ल १६ एह १६ कांड प्रत्येकें १ सहस्र योजन प्रमाणछे तोसौगंधिक कांड आठमो तो आठ कांड मि

लीने ८० शत योजनथया अने बेसे योजन महाहिमवंत ऊंचोछे सर्वएकठा करतां ८२ शत योजनथया। इति ८२ मो ठाणोथयो ॥ ८२ ॥ हिवे

८३ मो लिखेछे। श्रमण भगवंत महावीर ८२ रात्रीदिवस गयेथके ८३ मो अहोरात्रि वर्त्ततां थकां देवानंदाना गर्भ थकी त्रिशलाने गर्भें साहऱ्या हरिणे

॥ टीका ॥

षि सर्वायुः कथं त्रिपञ्चाशद्गृहस्थपर्याये चतुर्दश छद्मस्थपर्याये षोडश केवलित्वइत्येवं त्र्यशीतिरिति तथा कोशलिएत्ति कोशलदेशेभवः कौशलिकः तेसीईति विंशतिः पूर्वलक्षाणि कुमारत्वे त्रिषष्ठिराज्ये इत्येवं त्र्यशीतिः तथा भरतश्चक्रवर्त्ती सप्तसप्ततिः पूर्वलक्षाणि कुमारत्वे षट्चक्रवर्त्तित्वे इत्येवंत्र्यशीतिमगारवासम ध्युष्य जिनोजातः राज्यावस्थस्यैव रागादिक्षयात्केवली संपूर्णासहायविशुद्धज्ञानादिकयोगात्सर्वज्ञो विशेषबोधा त्सर्वभावदर्शी सामान्यबोधात्ततः पूर्वलक्षं

॥ १३९ ॥ ॥ मूल ॥

यपुत्ते तेसीइंवासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे उसभेणं अरहा कोसलिए तेसीइपुव्वसयसहस्सा इं अगारमज्झे वसित्ता मुंडेभवित्ता णं जावपव्वइए भरहेणं राया चाउरंतचक्कवट्टी तेसीइपुव्वसयसहस्साइं अगारमज्झे वसित्ता जिणे जाए केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी ॥ ८३ ॥ चउरासीइनिरया वास

॥ भाषा ॥

गमेसीये पहुंचाध्या। शीतलनाथ दशमा अरिहंत ने ८३ गणधर आवश्यकें ८१ कह्या ये मतांतरछे। स्थविर मंडित पुत्र छठो महावीरनो गणधर ८३ वर्षल गे सर्वायुपालीने सिद्धथयो सर्वदुःख रहित थयां ५३ वर्ष गृहस्थपणें १४ वर्ष छद्मस्थपणें १६ केवलीपर्याये सर्वमिली ८३ वर्ष थया। ऋषभ आदिनाथ अरि हंत कोसल देशमा उपना ८३ हजार पूर्वलगे गृहस्थावास मांहो वसीने द्रव्यभावभेदें मुंडथयीने अगार गृहस्थथकी अणगारी यतीपणूं पाम्या। २० लाख पूर्व कुमारपणें ३६ लाख पूर्व राज्याश्रमें एवं ८३ लाख पूर्व वर्ष। भरत राजा श्रीआदिनाथनो पुत्र प्रथम चिहुंदिशिना अंतनोधणी चक्रवर्ती एहवा ७७ लाख पूर्व कुमारपणें ६ लाख पूर्व चक्रवर्ती पणे एवं ८३ लाख पूर्व लगे गृहस्थमांहीवसीने गृहस्थपणे जिनथया। राग द्वेषनो जयकरे तेजिन केवली असहज्ञान् जेहनेछेते केवली विशेष जाणें ते सर्वसामान्य बोधथकी सर्वभावदर्शी थया। इति ८३ मो समवाय थयो ॥ ८३ ॥ हिवे ८४ मो समवायलिखेछे।

॥ टीका ॥

प्रव्रज्याग्रहणपूर्वकं केवलित्वेन विहृत्य सिद्ध इति ॥ ८३ ॥ चतुरशीतिस्थानके किमपि लिख्यते। चतुरशीति नरकलक्षाण्यमुना विभागेन तीसा यपणवीसा २ पन्नरस ३ दसेव ४ तिन्निय ५ हवंति पंचूणसयसहस्सं पंचेव ७ अनुत्तरानिरयत्ति ॥ १ ॥ श्रेयांसएकादशस्तीर्थंकरः एकविंशतिर्वर्षलक्षाणि कुमारत्वे तावंत्येव प्रव्रज्यायां द्विचत्वारिंशद्राज्ये इत्येवं चतुरशीतिमायुः पालयित्वा सिद्धः तथा तिविट्ठुत्ति प्रथमवासुदेवः श्रेयांसजिनकालभावीति अप्रतिष्टा

॥ मूल ॥

सयसहस्सा प० उसभेणं अरहा कोसलिए चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे एवं भरहो बाहुबली बंभी सुंदरी सिज्जंसेणं अरहा चउरासीइं वाससयसहस्साइं सव्वाउयंपालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे तिविट्ठेणं वासुदेवे चउरासीइं वाससयसहस्साइं परमाउयं पालइत्ता अप्पइठाणे नरए नेरइ

॥ भाषा ॥

साते नरक मिली ८४ लाखनरकावासा कह्या। पहिलीयें ३० बीजीये २५ त्रीजीये १५ चौथीये १० पांचमीये ३ छठीये ५ ऊंणा १ लाख सातमीये ५ एवं ८४ लाख थया। आदिनाथ अरिहंत कोसल देशना ऊपना ८४ लाख पूर्व लगे सगलो आऊखोपालीने सर्वदुःख प्रक्षीण थया। २० लाख पूर्व कुमारपणे ६३ लाख पूर्व राज्यपणे १ लाख पूर्व तीर्थंकर पणे एवं ८४ लाख पूर्व थया। एमज भरतचक्रवर्ती आदिनाथनोपुत्र सुमंगला जातक बाहुबली नंदाजातक आदीश्वरनो पुत्र ब्राह्मी सुमंगलाजातक आदिनाथनी पुत्री सुंदरी सुनंदा जातक आदिनाथनी पुत्री एहचार ८४ लाख पूर्व आयुपाली सिद्ध थया। श्रेयांस ११ मा अरिहंत २१ लाख वर्ष कुमारपणें ४२ लाख वर्ष राज्यपणें २१ लाख वर्ष दीक्षा एवं ८४ लाख वर्ष लगे सगलो आयूपाली सिद्धथया। सर्वदुखःथी प्रक्षीणथया

॥ टीका ॥

थी नरकः सप्तमपृथिव्यां पञ्चानां मध्यम इति तथा समाणियत्ति समानर्द्धयः तथा बाहिरयत्ति जंबूद्वीपकमेरुव्यतिरिक्ता चत्वारो मन्दरा चतुरशीतिः सह स्राणि प्रज्ञप्ताः अंजणगपव्वयत्ति जंबूद्वीपा दष्टमे नन्दीश्वराभिधाने द्वीपे चक्रवालविष्कम्भमध्यभागे पूर्वादिषुदिक्षुचत्वारोंजनरत्नमया अञ्जनपर्वताः हरि वासेत्यादि चत्तारियभागजोयणस्सत्ति एकोनविंशतिभागा इहार्थेगाथार्द्धं धणुपिट्ठकलचउक्कं चुलसीइसहस्ससोलसहियत्ति तथा पंकबहुलंकाण्डं द्वितीयं

॥ मूल ॥

यत्ताए उववन्ने सक्कस्सणं देविंदस्स देवरन्नो चउरासीइसामाणियसाहस्सीउ प० सव्वेविणं वाहिरया मंद रा चोरासीइं जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० सव्वेविणं धणुपिठा चोरासी चोरासी जोयणसहस्साइं सो लसजोयणाइं चत्तारियन्नागा जोयणस्स परिक्खेवेणं प० पंकबहुलस्सणं कंडस्स उवरिल्लाउ चरमंताउ

॥ भाषा ॥

नरकावासेनारकी त्रिपृष्ट पहिलो वासुदेव श्रेयांस जिन काल भावी ८४ लाख वर्ष परमायुपाली ने सातमीये ५ नरकावासा छे तेमांही बिचले अपइट्ठाण पणे उपनो। पहिला देवलोकनो राजा शक्रेंद्र देवेंद्र देवराजाना ८४ सहस्रसामानिक देवता कह्या। जंबूद्वीप संबंधी सुदर्शन मेरुटाली वीजासमलाधातकी खंडना २ पुष्करार्द्धना २ मेरु चौरासी चौरासीहजारयोजन ऊंचा ऊंच पणे कह्या। १ सहस्र योजन ऊंडा छे सर्वमिली ८५ हजार योजननाथाय जंबूद्वी पथकी आठमे नंदीश्वर द्वीपे चक्रवाल मध्यभागें पूर्वादिक चिहुंदिशि ४ अंजनक पर्वत छे चारोअंजनक पर्वत चौरासी २ सहस्र योजन ऊंचा ऊचपणे कह्या। १ सहस्र योजन ऊंडा सर्वमिली ८५ हजारना। हरिवर्षवीजो रम्यकपांचमो तेहनो धनुवर्ती प्रत्यंचा चौरासी चौरासी सहस्र योजन उपरि सोले योजन उपरि चारभाग एकयोजनना परिक्षेपे परिधीयें कही। रत्नप्रभायें त्रिणकांडछे तेमांहो पंकबहुल बीजोकांडतेहनो उपरलो चरमांत छेहलो

तस्यच बाहल्यं चतुरशीतिः सहस्राणीति यथोक्त सूत्रार्थ इति तथा व्याख्याप्रज्ञप्त्यां भगवत्यां चतुरशीतिः पदसहस्राणि पदाग्रेण पदपरिमाणेन इहच यत्रार्थोपलब्धि स्तत्पदं मतान्तरेणतु अष्टादशपदसहस्रपरिमाणत्वादाचारस्य एतद्विगुणद्विगुणत्वाच्च शेषाङ्गानां व्याख्याप्रज्ञप्तिर्द्वेलक्षे अष्टाशीतिः सहस्राणि पदानाम्भवन्तीति तथा चतुरशीति र्नागकुमारा वासलक्षाणि चतुश्चत्वारिंशतो दक्षिणायां चत्वारिंशच्चोत्तरायां आवादिति चतुरशीतिर्योनियोजीवोत्पत्ति स्थानानि तएव प्रमुखानिद्वाराणियोनिप्रमुखानि तेषां शतसहस्राणि लक्षाणि योनिप्रमुखशतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि कथं पुढविदगअगणिमारुय एक्केक्केसत्त जोणिलक्खाओ वणपत्तेयअणंते दसचउदसजोणिलक्खाओ विगलिंदिएसुदोदो चउरोचउरोयनारयसुरेसु तिरिएसुहोंतिचउरो चोद्दसलक्खाउमणुएसुत्ति २ ॥ टीका ॥

हेठिल्ले चरमंते एसणं चोरासीइजोयणसयसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० विवाहपन्नत्तीए णं भगवतीए चउरासीइं पयसहस्सा पदग्गेणं प० चोरासीइनागकुमारावाससयसहस्सा प० चोरासीइपइन्नगसह ॥ मूल ॥

प्रदेश तेहथकी हेठिलो चरमांत एह ८४ सहस्र योजनकह्यो । पांचमोअंग विवाहपन्नती भगवती सूत्रने विषें ८४ पदनां सहस्र छे पदाग्रें पदने प रिमाणें जिहां अर्थनी समाप्ति होय तेपद कहीये मतांतरें आचारांगना १८ सहस्र पदछे पछे आगल्ये २ अंगे बेगुणा २ कीजे तिवारे पांचमे अंगे २ ला ख ८८ हजार पद थाय । नाग कुमारना दक्षिण दिशनाभवन ४४ लाख उत्तरदिशि ४० लाख सर्वमिली नागकुमारावासा ८४ लाख कह्या । ८४सहस्र पइन्ना यतीना कीधा ग्रंथविशेष कह्या । ८४ लाख जीवायोनि जीवना उत्पत्तिस्थानक तेहीजछे प्रमुखद्वार जिहां ७ लाख पृथिवी काय इत्यादिक यद्यपि जीवोत्पत्तिस्थानक असंख्यातछे पणि समान वर्ण गंध रस स्पर्श होय ते एक योनिकही । पूर्वछे आदि प्रथम अने शीर्षप्रहेलिका आंक पर्यवसान छेह ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

इहचजीवोत्पत्तिस्थानानामसंख्येयत्वेपि समानवर्ण गन्धरसस्पर्शानां तेषामेकत्वविवक्षणा अयथोक्त योनिसंख्याव्यभिचारोमन्तव्य इति पुव्वाइयाणमित्यादि पूर्वमादिर्येषांतानि पूर्वादिकानि तेषां शीर्षप्रहेलिकापर्यवसाने येषान्तानि शीर्षप्रहेलिकापर्यवसानानि तेषांस्वस्थानात् पूर्वपूर्वस्थानादुत्तरोत्तरस्य संख्या स्थानस्योत्पत्तिस्थानात् संख्याविशेषलक्षणात् गुणनीयादित्यर्थः स्थानान्तराणि अनन्तरस्थानान्यव्यवहितसंख्याविशेषा गुणकारनिष्पन्ना येषु तानि स्वस्थान स्थानान्तराणि क्रमव्यवहितसंख्यानविशेषा इत्यर्थः अथवा स्वस्थानानिच पूर्वस्थानानि स्थानांतराणिच अनंतरस्थानानि स्वस्थानस्थानांतराणि अथवास्वस्थाना त् पूर्वाङ्गलक्षणात् स्थानांतराणि विलक्षणस्थानानि स्वस्थानस्थानांतराणि तेषां चतुरशीत्यालक्षै रितिशेषः गुणकारोभ्यासराशिः प्रज्ञप्तः तथाहि किल चतुरशीत्यालक्षैः पूर्वाङ्गभवतीति स्वस्थानांतरादेवचतुरशीत्यालक्षै गुणितं पूर्वमुच्यते तच्च स्थानान्तरमिति एवं पूर्वस्वस्थानांतरादेव चतुरशीत्यालक्षै गुणित मनन्तरस्थानं त्रुटिताङ्गाभिधान भवतीति इहसंग्रहगाथे पुव्वतुडियाडडावहु जहुयतहउप्पलेयपउमेय नलिणत्थिनिउरअउय नउएपउएयनायव्वो ॥ १ ॥ चूलियसीसपहेलिय चोइसनामाउअंगसंजुत्ता अट्ठावीसंठाणा चउणउयंहोइठाणसयंति ॥२॥ अभिलापाश्चैषां पूर्वाङ्ग मूर्वं त्रुटितांगंत्रुटित मित्यादि रिति चउरासीतिमित्यादि इहविभागोयं बत्तीसअट्ठवीसा वारसअठचउरोसयसहस्सा आरेणवंभलोगो विमाणसंख्याभवेएसा १ पंचासचत्तछच्चेव सहस्सालंतसुक्कसहस्सारे

॥ मूल ॥

स्साइं प० चोरासीइं जोणिप्पमुहसयसहस्सा प० पुव्वाइयाणं सीसपहेलियापज्जवसाणाणं सठाणठाणंत

॥ भाषा ॥

हे छे स्वस्थानक थकी स्थानांतरे २ चौरासी आंकें गुणाकार करतां छेहडे शीर्षप्रहेलिका आवे पहिलूं स्वस्थानक पोतानूंस्थानक पूर्वांगतेह ८४ लाख वर्ष होय । ते ८४ लाख गुणोकरीये स्थानांतरे तिवारे त्रुटितांग होय । इहां संग्रह गाथा । पुव्वतुडियाडडावहु जहुयतहउप्पलेयपउमेय । नलिणत्थिनिउरअनु

॥ टीका ॥

सयचउरोआणय पाणएसुतिन्नारणच्चुयओ ॥ एक्कारसुत्तरंहे ठ्ठिमेसुसत्तुत्तरंचमज्झिमए सयमेगंउवरिमए पंचेवअणुत्तरविमाणत्ति ॥ भवंतीति मक्खायंति एतानि
विमानान्येवभवन्ति इतिहेतो राख्यातानि भगवता सर्वज्ञत्वात् सत्यवादित्वा च्चेति ॥ ८४ ॥ अथ पञ्चाशीति स्थानके किंचिल्लिख्यते। तत्राचारस्य

॥ मूल ॥

राणं चोरासीए गुणकारे प० उसभस्सणं अरहओ कोसलियस्स चउरासीइगणा चउरासीइगणहरा होत्था
उसभस्सणं अरहओ कोसलियस्स उसभसेण पामोक्खाओ चउरासीइ समणसाहस्सीओ होत्था सव्वेविचउरा
सीइ विमाणावाससयसहस्सा सत्ताणउइं च सहस्सा तेवीसं च विमाणा भवंतीतिमक्खायं ॥ ८४ ॥

॥ भाषा ॥

रानउएपडएयनायव्वो। चूलियसीसपहेलिय चोद्दसनामाउअंग संजुत्ता। अट्ठावीसंठाणा चउणउयंहोइठाणसयं ॥ एम चौदेठामे ८४ लाख ८४ लाख गुणाकारे
करतां करतां छेहडे शीर्ष प्रहेलिका आवे तिहां १८४ आंक आवे। आदिनाथ अरिहंतने ८४ गणधर ८४ गच्छ हुआ। कोसलदेसना उपना आदिनाथ अरिहं
तने ऋषभसेन प्रमुख ८४ श्रमणयतीनी संपदा हुई। सौधर्म देवलोके ३२ लाख विमान ईशान देवलोके २८ लाख त्रीजे १२ चौथे ८ पाचमें ४ लाख छट्ठे ५०
सहस्र सातमें ४० हजार आठमे ६० सहस्र नोमेंदसमे मिली ४०० इग्यारमे बारमें मिली ३०० ग्रैवेयक पहिलेत्रिके १११ मध्यत्रिके १०७ उपरिलेत्रिके १०० वि
मान। पांचे अनुत्तरविमाने ५। १२ देवलोक ९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तरविमान मिली ८४ लाख ९७ हजार उपरि २३ विमान भगवंते कह्या। इति ८४ समवाय
थयो ॥ ८४ ॥ हिवे ८५ मोलिखेछे। आचारांग सूत्रना चूलिका सहितना ८५ उद्देसण काल कह्या प्रथम श्रुतस्कंधे ९ अध्ययन छे पहिले

॥ टीका ॥

प्रथमांगस्य नवाध्ययनात्मकप्रथमश्रुतस्कन्धरूपस्य सचूलियागस्सइति द्वितीयेहि तस्यश्रुतस्कन्धे पञ्चचूलिका स्तासुच पञ्चमी निशीथाख्ये ह नस्त्यद्यते भिन्नप्र स्थानरूपत्वात्तस्या स्तदन्या स्ततस्र स्तासुच प्रथमद्वितीयेसप्तसप्ताध्ययनात्मिके तृतीयचतुर्थ्यो चैकैकाध्ययनात्मिके तदेवं सह चूलिकाभिर्वर्त्तत इति सचूलि काक स्तस्यपञ्चाशीति रुद्देशनंकाला भवन्तीति प्रत्यध्ययनं उद्देशनकालाना मेतावत्स्व्यत्वा त्तथाहि प्रथमश्रुतस्कन्धे नवस्वध्ययनेषु क्रमेण सप्त षट् चत्वार

॥ १४२ ॥

चत्वारः षट् पञ्च अष्ट चत्वारः सप्त चेति द्वितीयश्रुतस्कंधेतु प्रथमचूलिकायां सप्तस्वध्ययनेषु क्रमेण एकादश त्रय स्त्रयः चतुर्षु द्वौ द्वौ द्वितीयायां सप्तैकस राणि अध्ययनान्येवं तृतीयैकाध्ययनात्मिका एवं चतुर्थ्यपीति सर्वमीलने पञ्चाशीतिरिति तथा धातकीखंडमन्दरौ सहस्रमवगाढौ चतुरशीति सहस्राणु च्छि ताविति पञ्चाशीतिर्योजनसहस्राणि सर्वाग्रेण भवतः पुष्करार्द्धमन्दरावप्येवं नवरं सूत्रेनाभिहितौ विचित्रत्वात्सूत्रगते रिति तथा रुचको रुचकाभिधानस्त्रयो

॥ मूल ॥

आयारस्सणं जगवउ सचूलियागस्स पंचासीइ उद्देसणकाला प० धायइखंडस्सणं मंदरस्स पंचासीइजोयण

॥ भाषा ॥

अध्ययने ७ उद्देशा बीजे ६ त्रीजे ४ चौथे ४ पांचमे ६ छट्ठे ५ सातमे ८ आठमे ४ नोमे ७ सर्वमिली प्रथम श्रुतस्कंधे ५१ उद्देशा। बीजे श्रुतस्कंधे ५ चूलिका तेमांहि पांचमी निशीथ नामे ते इहां नग्रही बीजो ४ ग्रहो तेमांहीलो बीजो चूलिका मांहि सात सात अध्ययन तेमांहीपहिलो चूलिकाना साते अ ध्ययने अनुक्रमे ११ त्रिणि त्रिणि चिहुंअध्ययने बेबे उद्देशा एवं उद्देशा २५ पहिली चूलिकायें अने बीजो चूलिकायें सातएकसराअध्ययन त्रीजो चौथो चू लिकायें एक एक अध्ययनना सर्व मिली ८५ उद्देशण कालाथया। ८५ उद्देशानोधडो पूरो २५ मे समवायांगे मेल्योछे। पूर्वापरधातकी खंडे बेमेरुपर्वतछे ते वे मेरुपर्वत ८५ सहस्र योजन सर्वाग्रे सर्वपरिमाणिकह्या एकसहस्र योजनऊंडा ८४ सहस्र ऊंचा सर्वमिली ८५ सहस्रथया। एम पुष्करार्द्धे पणि कह्या।

द्वीपान्तर्गतः प्राकारांकृतीरुचकद्वीपविभागकारितयास्थितो ऽतएव माण्डलिकपर्वतो मण्डलेन व्यवस्थितत्वा त्तच सहस्रमवगाढ चतुरशीतिश्चोच्छ्रित इति पञ्चाशीतिः सहस्राणि सर्वाग्रेणेति तथा नन्दनवनस्य मेरोः पञ्चयोजनशतोच्छ्रितायां प्रथममेखलायां व्यवस्थितस्या धस्त्याच्चरमांतात् सौगंधिककाण्ड स्य रत्नप्रभापृथिव्याः खरकाण्डाभिधान प्रथमकाण्डस्या ऽवान्तरकाण्डभूतस्याष्टमस्य सौगन्धिकाभिधानरत्नमयस्य सौगन्धिककाण्डस्याधस्त्यचरमांतः पञ्चाशी तिर्योजनशतान्यंतरमाश्रित्य भवति कथ म्पञ्चशतानि मेरोः सप्तसप्तोनि प्रत्येकं सहस्रप्रमाणत्वादपान्तरकाण्डाना मष्टमकाण्डमशीतिश्शतानीति ॥ ८५ ॥ टीका ॥

सहस्साइं सव्वग्गेणं प० रुयएणं मंडलियपव्वए पंचासीइजोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं प० नंदणवणस्सणं हेट्ठिल्लाउ चरमंताउ सोगंधियस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एसणं पंचासीइ जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० ॥ मूल ॥

रुचकनामापर्वत तेरमाद्वीप मांहो गढने आकारे मंडलाकारेछे तेमाटे मंडलीकपर्वत १ हजार योजन ऊंडो ८४ हजार योजन ऊंचो सर्वमिली ८५ हजार योजन सर्वांगे सर्वपरिमाणे कह्यो । भूमिथकी ५०० योजन लगे मेरुपर्वत ऊंचोचढीये तिहां प्रथममेखलानेविषे नंदन वन छे तेहनां हेठिला चरमांतथी रत्नप्रभानो आठमो सौगंधिक कांड तेहनो हेठिलो चरमांत एह ८५ से योजन अबाधाये बिचाले आंतरो कह्यो। रत्नप्रभाये ३ कांडछे पहिलो १६ हजारनो कांड एकेक हजार योजन प्रमाणे तो आठमो सौगंधिक कांडछे तो ८ कांड मिली ८० से योजन थया। नंदन वनना ५०० सर्वमिली ८५ से योजन थया इति ८५ समवाय थयो ॥ ८५ ॥ हिवे ८६ मो समवाय लिखेछे । नवमा सुविधिनाथ बीजूंनाम पुष्पदंत अरिहंतने ८६ गणधर हुआ आवश्यके ॥ गाथा ॥

॥ टीका ॥

अथ षडशीतिस्थानके किमपि लिख्यते । तत्र सुविधे नवमजिनस्येह षडशीतिर्गणगणधराश्चोक्ता आवश्यके त्वष्टाशीति रिति मतांतरमिदं तथा द्वितीयाः पृथिवीशर्करप्रभा साच बाहल्यतो द्वात्रिंशत्सहस्राधिकलक्षमाना तदर्द्धं षट्षष्ठिः सहस्राणि घनोदधिश्च तदधोवर्त्ती द्वितीयपृथिवीसम्बन्धित्वात् द्वितीयो विंश तिसहस्राणि बाहल्यत इति षडशीति र्यथोक्तमन्तरं भवतीति ॥ ८६ ॥ अथ सप्ताशीति स्थानके किंचिल्लिख्यते मन्दरस्या दिमेरोः पौरस्त्यांतात् जम्बूद्वीपांतः पञ्चचत्वारिंशत्सहस्राणि द्विचत्वारिंशच्चसहस्राणि लवणजलधिमवगाह्य गोस्तुभो वेलन्धरनागराजावासपर्वतः प्राच्यां दिशि भवत्येवं सूत्रोक्तमंतर

॥ मूल ॥

॥ ८५ ॥ सुविहिस्सणं पुप्फदंतस्स अरहओ छलसीइगणा छलसीइगणहरा होत्था सुपासस्स णं अरहओ छलसीइ वाइसया होत्था दोच्चाएणं पुढवीए बहुमज्झदेसभागाओ दोच्चस्स घणोदहिस्स हेट्ठि ल्ले चरमंते एसणं छलसीइ जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ८६ ॥ मंदरस्सणं पव्वय स्स पुरत्थिमिल्लाओ चरमंताओ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरमंते एसणं सत्तासीइं जोयणस

॥ भाष ॥

८८ गणधर तेमतांतरछे सातमा सुपार्श्व अरिहंतने ८६ से वादीनीसंपदा हुई । बीजी शर्करप्रभा पृथिवी १ लाख ३२ हजार योजन जाडपणेंछे तेह बीजी पृथिवीना बहु मध्यभागथकी मांडी एतले १ लाख ३२ हजारनो अर्द्ध ६६ हजार योजन ते साथे लीजे बीजीनोघनोदधि २० हजार नो तेहनो हेठिलो च रमांत ८६ हजार योजन अबाधायें विचाले आंतरो कह्यो ॥ इति ८६ समवाय थयो ॥ ८६ ॥ हिवे ८७ मो लिखेछे । मेरुपर्वतना पूर्व चरमांत थकी वेलंधर नागराजा वास गोस्तुभ नामापर्वत तेहनो पश्चिम चरमांत ८७ सहस्र योजन अबाधायें विचाले आंतरो कह्यो । मेरुपर्वतथकी पूर्वनो जगती

॥ टीका ॥

भवतीति एवमन्येषां त्रयाणा मंतरमवसेयमिति तथा पष्ठां कर्म्मप्रकृतीना मादिमोपरिमवर्जानां, ज्ञानावरणांतरायरहितानां दर्शनावरणवेदनीयमोहनो यायुकनाम गोत्रसंज्ञितानामित्यर्थः सप्ताशीतिरुत्तरप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः कथं दर्शनावरणादीनांषष्ठां क्रमेणनव द्वे अष्टाविंशतिः चतस्रो द्विचत्वारिंश द्वेचे त्यत

॥ मूल ॥

हस्साइं अबाहाए अंतरे प० मंदरस्सणं पव्वयस्स दक्खिणिल्लाउ चरमंताउ दगभासस्स आवासपव्वयस्स उत्तरिल्ले चरमंते एसणं सत्तासीइ जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवं मंदरस्स पच्चत्थिमिल्लाउ चरमं ताउ संखस्स वा पुरत्थिमिल्ले चरमंते एवं चेव मंदरस्स उत्तरिल्लाउ चरमंताउ दगसीमस्स आवासपव्वय स्स दाहिणिल्ले चरमंते एसणं सत्तासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० छण्हं कम्मपगडीणं आइम

॥ भाषा ॥

४५ हजार योजन तिहांथकी ४२ हजार योजने गोस्तुभ पर्वत सर्वमिली ८७ हजार योजन थया। दक्षिण चरमांतथकी दक्षिण समुद्रमांही दगभास पर्वत तेहनो उत्तर चरमांत ८७ हजार योजन गोस्तुभ पर्वतनो परें अवाधाये विचाले आंतरो कह्यो। एमज मेरुपर्वतना पश्चिमचरमांत थकीमांही पश्चिमे शंखनामा आवासनो पूर्वचरमांत ८७ सहस्र योजन अवाधायें विचाले आंतरो कह्यो। एमज मेरुपर्वतना उत्तर चरमांतथकी उत्तर समुद्रमांहि दगसीम आवासपर्वतनो दक्षिण चरमांत ८७ सहस्र योजन अवाधायें विचाले आंतरो कह्यो। आठकर्मनी प्रकृति मांही थी आदिकर्म ज्ञानावरणीनी पांच प्रकृति उपरिम कर्मअंतराय तेहनी ५ प्रकृति एवं १० प्रकृतिटाली शेष छ कर्मनी ८७ उत्तर प्रकृतिकही दर्शनावरणी९ वेदनीय२ मोहनीय २८ आउखो ४ ना

॥ टीका ॥

स्तासां मीलने सूत्रोक्त संख्यास्यादिति महाहिमवंतेत्यादि महाहिमवति द्वितीयवर्षधरपर्वते अष्टौ सिद्धायतनकूटमहाहिमवत्कूटादीनि कूटानि भवन्ति तानि पञ्चशतोच्छ्रितानि तत्र महाहिमवत्कूटस्य पञ्चशतानि द्वेशते महाहिमवद्वर्षधरोच्छ्रयस्य अशीतिश्चशतानि प्रत्येकं सहस्रमानानामष्टानां सौगन्धिककाण्डावसानानां रत्नप्रभा खरकाण्डावान्तरकाण्डाना मित्येवं मीलिते समाशीति रन्तरंभवतीति एवं रुप्पिकूडस्सविक्ति रुक्मिणिपंचमवर्षधरे यद्वितीयं रु क्मिकूटाभिधानं कूटं तस्याप्यन्तर महाहिमवत्कूटस्येववाच्यं समानप्रमाणत्वा द्वयोरपीति ॥ ८७ ॥ अष्टाशीतिस्थानके किंचिद्विलिख्यते ॥

॥ मूल ॥

उवरिल्लअज्जाणं सत्तासीइ उत्तरपगडीउ प० महाहिमवंतकूडस्सणं उवरिमंताउ सोगंधियस्स कंडस्स हेठिल्ले चरमंते एसणं सत्तासीइ जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० एवं रुप्पिकूडस्सवि ॥ ८७ ॥

॥ भाषा ॥

मकर्म ४२ गोत्र २ सर्वमिली ८७ उत्तर प्रकृति थई । महाहिमवंत बीजो वर्षधर तेह ऊंचो बेसत योजन तेह उपरि महाहिमवंत कूटछेते ५०० योजन ऊंचो पर्वतना कूटना मिली ७०० योजन थया । तेमहाहिमवंत कूटनो उपरिलो चरमांत तेहथकी रत्नप्रभाये ३ कांड छे ते मांहि पहिलो खर कांड १६ हजारनो तेमांही रत्नप्रभादिके प्रत्येके २ हजार २ ना १६ कांडछे तेमांहि सौगंधिककांड आठमो तेहनो हेठिलो चरमांत एतले आठो कांडना ८० से योजन थया अने महाहिमवंतकूटमिली ७०० सर्वमिली ८७०० योजन थया अबाधाये विचाले आंतरो कह्यो । महाहिमवंत कूटनो परें पांचमोरूपीवर्षधर पर्वतनो रूपी नामकूट अने सौगंधिक कांडनो आंतरो जाणिवो इति ८७ मो समवाय थयो ॥ ८७ ॥ हिवे ८८ मो लिखे छे । चंद्रमा सूर्य असंख्या

॥ टीका ॥

एकैकस्यासंख्यातानामपि प्रत्येकमित्यर्थः चन्द्रमाश्चसूर्यश्चचन्द्रमसूर्यं तस्य चन्द्रसूर्ययुगलस्येत्यर्थः अष्टाशीतिर्महाग्रहाः एतेच यद्यपि चन्द्रस्यैवपरिवारो ऽन्यत्र श्रूयते तथापि सूर्यस्यापींद्रत्वा देतएवपरिवारतया ऽवसेया इति दिठ्ठिवाएत्यादि दृष्टिवादस्य द्वादशाङ्गस्य परिकर्मसूत्रपूर्वगतप्रथमानुयोगचूलिकाभेदेन पंच प्रकारस्य सुत्ताइंति द्वितीयप्रकारभूतानि अष्टाशीतिर्भवन्ति जहानंदीएत्ति अतिदेशतः सूत्राणि दर्शितानि तानि चाग्रे व्याख्यास्यामः मंदरस्सेत्यादि मेरोः पूर्वान्तात् जम्बूद्वीपस्य पंचचत्वारिंशद्योजनसहस्रमानत्वात् जम्बूद्वीपान्ताच्च द्विचत्वारिंशद्योजनसहस्रेषु गोस्तुभस्य व्यवस्थितत्वा त्तस्यच सहस्रविष्कम्भत्वा द्य थोक्तः सूत्रार्थो भवतीति अनेनैव क्रमेण दक्षिणादिदिग्व्यवस्थितान् दकावभासशंखदकसीमाख्यान् वेलन्धरनागराजनिवासपर्वतानाश्रित्य वाच्यमतएवाह

॥ मूल ॥

एगमेगस्सणं चंदिमसूरियस्स अठासीइ अठासीइ महग्गहा परिवारो प० दिठिवायस्सणं अठासीइसु त्ताइं प० तं० उज्जुसुयं परिणयापरिणयं एवं अठासीइसुत्ताणि भाणियव्वाणिजहानंदीए मंदरस्सणं पव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाउ चरमंताउ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्ले चरमंते एसणंअठासीइं जोयणसहस्साइं

॥ भाषा

ताछे तेसहुने प्रत्येके अठ्यासी २ महाग्रह भौमादिक अठ्यासीनो परिवार कह्यो। यद्यपि ८८ ग्रह २८ नक्षत्र परिवार चंद्रमानोछे तोहोपणि सूर्य इंद्रछे तेहनो पिण एतलो ग्रहनो परिवार जाणिवो। दृष्टिवाद पूर्व बारमोअंग तेहमा ५ भेद परिकर्म १ सूत्र २ पूर्वगत ३ प्रथमानुयोग ४ चूलिकाभेदे ५ एह ५ प्रकारे पूर्व कह्या तेहना सूत्ताइंति बीजो सूत्र पूर्व तेहना ८८ सूत्रछे तेकहेछे। ऋजुसूत्र १ परिणता परिणतएम ८८ सूत्रभणिवा। जिमनंदीसूत्रे कह्योछे तेम जाणिवो। मेरु पर्वतथको पूर्वनो जगती ४५ हजार योजनछे तिहांथकी पूर्वसमुद्रमांहि ४२ सहस्र योजन गोस्तुभपर्वतछे ते १ हजारपिहुलोछे सर्वमिली ८८ हजार मेरुपर्वत

|| टीका ||

सूर्यः प्रथ
एवं चउसुविदिसासुनेयव्वमिति बाहिराओण मित्यादि बाह्यायाः सर्वाभ्यन्तरमण्डलरूपाया उत्तरस्याःकाष्ठायाः क्वचितु बाहिराओत्ति न दृश्यते
मंषण्मासं दक्षिणायनलक्षणं दक्षिणायनादित्वात् सम्वत्सरस्य अयमाणेत्ति आयात्आगच्छन् चतुश्चत्वारिंशत्तममण्डलगतो ष्टाशीतिमेकषष्टिभागान् दिवस
खेत्तस्सत्ति दिवसस्यैव निवुड्ढेत्ति निवर्द्धह्रापयित्वा रयणिखेत्तस्सत्ति रजन्यास्तु अभिवर्द्ध सूरिएचारंचरइत्ति भ्राम्यतीति इहच भावनैव मतिमण्डलन्दिन

|| १४५ ||

स्यमुहूर्त्तैकषष्ठिभागद्वयहाने दक्षिणायनापेक्षया चतुश्चत्वारिंशत्तमे अष्टाशीतिभागा हीयन्ते रात्रेस्तु तएव वर्द्धंत इति द्विःसूर्यग्रहण चेह दिनरात्र्याश्रितवा
क्यद्वयभेदकल्पनया न पुनरुक्त मवसेयमिति इदंच सूत्रमष्टसप्ततिस्थानकसूत्रवद्भावनीयमिति दक्खिणाओइत्यादि सूत्रं पूर्वसूत्रवदवगन्तव्यं नवर मिह दिनद्धी

|| मूल ||

अबाहाए अंतरे प० एवं चउसुविदिसासुनेयव्वं बाहिराउ उत्तराउणं कठाउ सूरिए पढमं छम्मासं अय
माणे चोयालीसइमे मंडलगते अठासीति एगसठिभागे मुहुत्तस्स दिवसखेत्तस्स निवुढेत्ता रयणिखेत्तस्स

|| भाषा ||

एम चिहुंदिसि जा
ना चरमांतथकी नागराज वेलंधरनो गोस्तूभ आवासपर्वतनो चरमांत ८८ हजारयोजनथयो अबाधायें विचाले आंतरोकह्यो । एम चिहुंदिसि जा
णिवो दक्षिणे दगभास पश्चिमें शंख उत्तरे दगसीम एसर्वना आंतरा जणिवा । निषधपर्वत संबंधी सर्वाभ्यंतर मांडलाथकी सूर्य पहिलो छम्मास
दक्षिणायन लक्षण तेहप्रतें अयमान दक्षिणायने आवतो चुंमालीसमे मांडले गयोथको एकसठिया ८८ भाग १ मुहूर्तना दिवसनो छेद दिवसने
घटाडो रजनीनोक्षेत्र रात्री तेहने वधारीने सूर्य चारचरेभ्रमे । सर्वाभ्यंतर मांडले ३६ सो दिहाडो २४ रात्रीकरी निषधपर्वतथकी सर्वाभ्यंतर मं
डलथकी दक्षिणायने सूर्य चालतोथको दिनप्रतें एकमुहुर्तना एकसठिया बे भाग दिवस घटाडीयें रात्रिवधारियें एकेमासे एकमुहूर्तबाधीयें वली ३१ मां

॥ टीका ॥

रात्रिहानिश्च भावनीयेति ॥ ८८ ॥ अथैकोननवतिस्थानके किंचिद्विचार्यते । तइयाएसमाएत्ति सुखमदुःखमाभिधानाया एकोननवत्यामर्द्धमासेषु त्रिषु वर्षेषु अर्द्धनवमसु च मासेषु सत्स्विति गम्यते जावत्तिकरणात् अंतगडे सिद्धे बुद्धे मुत्ते त्तिदृश्यं हरिषेणचक्रवर्त्तीदशम स्तस्य च दशवर्षसहस्राणि सर्वायु स्त

॥ मूल ॥

अब्भिंतराउ निवुड्ढेत्ता सूरिए चारंचरइ दक्खिणकट्ठाउणं सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे चोयालीसतिमे मंडलगते अट्ठासीइ इगसट्ठिभागे मुहुत्तस्स रयणिखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिनिवुड्ढित्ताणं सूरिए चारंचरइ ॥ ८८ ॥ उसभेणं अरहाकोसलिए इमीसे उसप्पिणीए ततियाए सुसमदुसमाए समा

॥ भाषा ॥

मांडलाथकी एकसठिया दिनप्रतें बेबे भाग दिवस घटाडे रात्रिवधारता ४४ मे मांडले ८८ भाग वधेरात्रि । दिवस घटे । समुद्र माहिलो १८४ मों सर्वबाह्य मंडले मकर संक्रांतिये सूर्य जगो दक्षिण दिशि थको सूर्य बीजे छमासे उत्तर दिशिभणी आवतो थको ४४ में मांडले गयो थको १ मुहूर्त्तना एकसठिया ८८ भाग रात्रि घटाडो दिवस वधारो सूर्य चार करे सर्वबाह्य मांडले दिवसमान २४ रात्रिमान ३६ करीउत्तरायणे चालतो १ मुहूर्त्तना एकसठिया बे बे भाग रात्रि घटतां ३० मे मांडले १ मुहूर्त्त रात्र घटे दिवस वधे इमकरतां ४४ मे मांडले ८८ भाग रात्रि घटे दिन वधे इति ८८ थयो ॥ ८८ ॥ हिवे ८९ लिखेछे । श्रीआदिनाथ अरिहंत कोशलदेसना उपना एणी अवसर्पिणी ने त्रीजा समाने सुखम दुखम नामने पाछिले भागे ८९ अर्द्धमासे एतले ८९ पखवाडे त्रीजा आरा मांहि शेष थाकते थाके त्रीजे आरे व्यतिक्रमे गये थके सिद्धथया सर्वदुःख प्रक्षीण थया । आदिनाथने मोक्ष पहुता पछो त्रीणवर्ष साढा आठ मास एतले ८९ पखवाडा त्रीजो आरो रह्यो पछे चौथो आरो लाग्यो एह भाव । श्रमण भगवंत महावीर एणी

॥ टीका ॥

अथ शतोनानि च नवसहस्राणि राज्यं शेषाण्येकादश शतानि कुमारत्वमाण्डलिकत्वाऽनगारत्वेषु अवसेयानि इह शान्तिजिनस्यैकोननवतिरार्यिकासहस्राण्यु
त्कान्यावश्यकेत्वेकषष्टिः सहस्राणि शतानिचषडभिधीयंत इति मतांतरमेतदिति ॥ ८९ ॥ अथ नवतिस्थानके किंचिदिदं व्याख्यायते। तथा

॥ मूल ॥

ए पच्छिमेभागे एगूणणउए अद्धमासेहिं सेसेहिं कालगए जावसव्वदुक्खप्पहीणे समणे ३ इमीसे उस
प्पिणीए चउत्थीए दुसमसुसमाए समाए पच्छिमेभागे एगूणनउइए अद्धमासेहिं सेसेहिं कालगए जावसव्व
दुक्खप्पहीणे हरिसेणेणं राया चाउरंतचक्कवट्टी एगूणनउइवाससयाइं महाराया होत्था संतिस्सणं अरहउ
एगूणनउइ अज्जासाहस्सीउ उक्कोसिया अज्जियासंपया होत्था ॥ ८९ ॥ सीयलेणं अरहा

॥ भाषा ॥

अवसर्पिणी ने चौथे समाने दुखम सुखम समाने पाछले भागे ८९ पखवाडे शेष थाकतां चौथा आरालक्षण काल व्यतिक्रमे गये थके सिद्ध थया सर्व दुःख
प्रक्षीण थया। एतले श्रीमहावीर मोक्ष गये पछी ३ वर्ष साढा आठ मास एतले ८९ पखवाडे गये थके चौथो आरो उतरी पांचमो आरो लाग्यो एह भाव
जाणिवो। नमिनाथने वारे हरिषेण राजा दशमो चक्रवर्त्ती ८९ वर्षलगे एकसोवर्ष ऊणो नव हजार वर्षलगे महाराज चक्रवर्त्ती हुआ। शेष थाकतां ११००
वर्ष मांहि कुमार पणि मंडलीक पणे यतीपणे जाणिवा साधुपणूं पामी सर्वायु दश सहस्र वर्ष पाली मुक्त गया। शांतिनाथ अरिहंतने ८९ हजार साध्वी
एके ऊणी हुई एतले ८९ सहस्र ८९९ उत्कृष्टी आर्यासाध्वीनो संपदा हुई इति ८९ मो समवाय थयो ॥ ८९ ॥ हिवे ९० लिखेछे। शीतलनाथ

॥ टीका ॥

जितनाथस्य शांतिनाथस्य चेह नवतिर्गणागणधराश्चोक्ता आवश्यकेतु पंचनवतिरजितस्य षट्त्रिंशत्तु शान्तेरुक्ता स्तदिदमपि मतान्तरमिति तथा स्वयंभूस्तीय वासुदेव स्तस्य नवतिवर्षाणि विजयः पृथिवीसाधनव्यापारः सर्व्वेसिणमित्यादि सर्वेषां विंशतेरपि वर्तुलवैताढ्यानां शब्दापातिप्रभृतीनां योजनसहस्रोच्छ्रित त्वात् सौगन्धिककाण्डचरमान्तस्य चाऽष्टसु सहस्रेषु व्यवस्थितत्वा द्द्वयसु सहस्रेषु नवतेः शताना भावात् सूत्रोक्तमन्तरमनवद्यमिति ॥ ९० ॥

॥ मूल ॥

नउइं धणूइं उद्धं उच्चत्तेणं होत्था अजियस्सणं अरहओ नउइगणा नउइगणहरा होत्था एवंसंतिस्सविसयंभु स्सणं वासुदेवस्स णउइवासाइं विजए होत्था सव्वेसिणं वट्टवेयड्ढपव्वयाणं उवरिल्लाओ सिहरतलाओ सोगंधिय कंडस्स हेट्ठिल्लेचरमंते एसणं नउइजोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ९० ॥ एकाणउइ

॥ भाषा ॥

दशमा अरिहंत ९० धनुष ऊंचा ऊंच पणे हुया। अजितनाथ बीजा अरिहंतने नेउ गछ नेऊ गणधर हुया। आवश्यके ९५ गणधर कह्या एमतांतर। शां तिनाथ १६ अरिहंतने ९० गणधर हुया। आवश्यके ३६ कह्या ते मतांतर छे। विमलनाथकालीन स्वयंभू त्रीजो वासुदेव तेहने ९० वर्ष लगे विजय पृथिवी साधन व्यापार हुयो देश साधनाने ९० वर्ष लाग्या एभाव। सगलाई वृत्त वैताढ्य २० जंबूमांहि हिमवंत १ हरिवर्ष २ रम्यक ३ ऐरण्यवत ४ ए चिहुं क्षेत्रे शब्दापाती प्रमुख ४ वृत्त वैताढ्य छे धातकीखंड मांहि एवेज त्रेत्रे आठछे पुष्करार्द्धे आठ सर्वमिलो २० वृत्त वैताढ्यछे सगला १ सहस्र योजन ऊंचा छे सग लाई वृत्त वैताढ्य पर्वतना उपरिला शिखरतला थकी रत्नप्रभाये ८ सहस्र योजने सौगंधिक कांड छे तेहनो हेठिलो चरिमांत ९० से योजन अबाधाये विचाले आंतरो कह्यो। एतले वृत्त वैताढ्य १००० योजन ऊंचा सौगंधिक कांडलगे ८० से योजन सर्वमिलो ९० से योजन थया ॥ इति ९० समवाय

अथैकनवतिस्थानके किञ्चिद्लिख्यते। तत्र परेषामात्मव्यतिरिक्तानां वैयावृत्यकर्माणि भक्तपानादिभि रुपष्टम्भक्रिया स्तद्विषयाः प्रतिमा अभिग्रहविशेषाः ॥ टीका ॥
परवैयावृत्यकर्मप्रतिमा एतानिच प्रतिमात्वेनाभिहितानि क्वचिदपिनोपलब्धानि केवलं विनयवैयावृत्यभेदा एते सन्ति तथाहि दर्शनगुणाधिकेषु सत्कारा
दिदशधा विनयः आहच सक्कार १ भुट्ठाणे २ सम्माण ३ सणभिग्गहो ४ तहय आसणअणुप्पयाणं ५ किइकम्मं ६ अंजलि गहोय ७ ॥ १ ॥ इंतस्सणुगच्छण
॥ १४७ ॥ या ८ ठियस्सतहपज्जुवासणाभणिया ९ गच्छंताणुव्वयणं १० एसोसुस्सूणाविणओत्ति तत्र सत्कारोवंदनस्तवनादि अभ्युत्थानमासनत्यागः सत्कारोवस्त्रादिपूज
नं आसनाभिग्रहः तिष्ठतएवासनानयनपूर्वकमुपविशतात्रेतिभणननिति आसनानुप्रदानमासनस्य स्थानात् स्थानान्तरसञ्चारणं कृतिकर्मादीनि प्रकटानि
तथा तीर्थंकरादीना मनंतदशाना मदाना मनाशातनादि पदचतुष्टययुक्तित्वे षष्टिविधो ऽनाशातनादिर्विनयो भवति तथाहि तित्थयर १ धम्म २ आयरि ॥ मूल ॥

परवेयावच्चकम्मपडिमाओ प० कालोयेणं समुद्दे एक्काणउइजोयणसयसहस्साइं साहियाइं परिक्खेवेणं प०

पयो ॥ ९० ॥ हिवे ९१ मो समवाय लिखेछे। ९१ भेदें वेयावच्च कर्म प्रतिमा परनो वेयावच्च कर्म भक्तपानादिके उपष्टंभक्रिया तेहनेविषे प्र ॥ भाषा ॥
तिमा अभिग्रह विशेष ते पर वेयावच कर्म प्रतिमा कही। दर्शन गुणाधिक ने विषे सत्कारादिक १० भेदें विनय आहच सक्कार १ भुट्ठाणे २ सम्माणा ३
समणभिग्गहो तहय ४ आसण अणुप्पयाणं ५ किइकम्मं ६ अंजलिगहोय ७ तस्सअणुगच्छणया ८ ठियस्सतहपज्जुवासणा ९ भणिया गछंताणुवयण एह दश
प्रकारे विनय कह्यो तथा तित्थयर १ धम्म २ आयरिय ३ वायगे ४ थेर ५ कुल ६ गणे ७ संघे ८ संभोगीय ९ किरिया १० । मतिज्ञानादिक ५ ज्ञान एवं
१५ बोलने विषे बोल लगाडो एह १५ नो आसातना टालवो १ भक्ति २ बहुमान ३ गुणवर्णवोयें ४ तोपनरचौकें साठिथया पछे ७ लोकोपचार विनय अ

॥ टीका ॥ अथ भावना तीर्थंकराणामनाशातना तीर्थंकराऽनाशातना य २ वायगे ४ थेर ५ कुल ६ गणे ७ संघे ८ संभोइय ९ किरियाए १० मइनाणाईणयतहेव ॥ १ ॥ तीर्थंकरप्रणीतस्य धर्मस्य अनाशातना एवं सर्वत्र कायव्वापुणभत्ती बहुमाणोतहयवसवाओय अरहंतमाइयाणं केवलणाणवसाणाणंति ॥ २ ॥ तथोपचारिकविनयः सप्तधा यदाह अभासासण १ छंदाणु वत्तणं २ कयपडिकिइतहय ३ कारियनिमित्तकरणं ४ दुक्खत्तगवेसणातहय ॥ १ ॥ तहदेसकालजाणण स व्वत्थेसुतहयअणुमईभणिया ७ उवचारिओउविणओ एसोभणिओसमासेणंति ॥ २ ॥ अभ्यासासनं उपचरणीयस्यान्तिके ऽवस्थानं छन्दानुवर्त्तनमभिप्रायानुवृत्तिः कृतप्रतिकृतिनाम प्रसन्ना आचार्याः सूत्रादिदास्यन्ति ननाम निर्ज्जरेति मन्यमानस्याहारादिदानं पदकारितनिमित्तकरणं सम्यक्शास्त्रपदमध्यापितस्य विशेषेण विनयेवर्त्तनं तदर्थानुष्ठानं च शेषाणि प्रतीतानि तथा वैयावृत्यं दशधा यदाह आयरियउवज्झाए थेरतवस्सीगिलाणसेहाणं। साहम्मियकुलगणसंघ संगयंतमिहकायव्वंति ॥ १ ॥ तत्र प्रव्राजना १ दिग् २ देश ३ समुद्देश ४ वाचना ५ चार्यभेदादाचार्यस्य पंचविधत्वा त्तदेवं चतुर्दशधेत्येकनवतिविनयभेदा एते एव अभिगृहविषयीभूताः प्रतिमाउच्यन्त इति तथा कालोदधीत्ति कालोदः समुद्रः सचैकनवतिर्लक्षाणि साधिकानि परिक्षेपेण आधिक्य

॥ भाषा ॥ अभासासण १ छंदाणु वत्तणं २ कयपडिकिइतहय ३ कारियनिमित्तकरणं ४ दुःखत्तगवेषणा ५ तहय तह देशकाल जाणण ६ सव्वत्थेसुतहयअणुमईभणिया ७ एह सात लोकोपचार विनय तथा दशनो वेयावच्च करो आयरिय १ उवज्झाय २ थेर ३ तवस्सी ४ गिलाण ५ सेहाणं ६ साहम्मिय ७ कुल ८ गण ९ संघ १० संगयंतमिहकायव्वं ११ आचार्य ५ भेदें प्रव्राजना १ दिग् २ देश ३ समुद्देस ४ वाचनाचार्य ५ एह पांच आचार्य टाली विनय १ पछे उपाध्याया दिक नवने पांच १४ थवे सात लोकोपचार विनय भेद ६० तीर्थंकरादिकनी आशातना दस विनय सत्कारादिक सर्व मिली ९१ बोलथया। कालोदधि वी

॥ टीका ॥

च सप्तत्यासहस्रैः षड्भिःशतैः पञ्चोत्तरैः सप्तदशभिर्धनुःशतैः पंचदशोत्तरैः सप्ताशीत्या चाङ्गुलैः साधिकैरिति आहोहियत्ति नियतक्षेत्रविषयावधयः आयु
गोत्रवर्ज्जानां षष्ठामिति ज्ञानावरण दर्शनावरण वेदनीय मोहनीयनामान्तरायानां क्रमेण पंच नव द्वा ष्टाविंशति द्विचत्वारिंशत् पंच भेदानामिति " ॥
९१ ॥ अथ द्विनवतिस्थानके किमप्यभिधीयते। द्विनवतिः प्रतिमा अभिग्रहविशेषाः ताश्च दशाश्रुतस्कन्धनिर्युक्त्यनुसारेण दर्श्यन्ते तत्र किल पंच प्र
तिमाउक्ता स्तद्यथा समाधिप्रतिमा १ उपधानप्रतिमा २ विवेकप्रतिमा ३ प्रतिसंलीनता प्रतिमा ४ एकविहारप्रतिमाचेति ५ समाधिप्रतिमा द्विविधा श्रु

॥ मूल ॥

कुंथुस्सणं अरहओ एकाणउइ आहोहियसया होत्था आउयगोयवज्जाणं छण्हं कम्मपगडीणं एकाणउइ उत्त
रपगडीउ प० ॥ ९१ ॥ बाणउइपडिमाउ प० थेरेणं इंदभूती बाणउइवासाइं सव्वाउयं पाल

॥ भाषा ॥

जोसमुद्र ९१ लाख योजन साधिक झांझेरी ते कहेछे ७० सहस्र ६ से ५ योजन पनरसे धनुष ८७ अंगुल एतलो परिक्षेप परिधि कह्यो। कुंथुनाथ अरिहंत
ने ९१०० अवधि ज्ञानी नियतक्षेत्र संबंधी अवधि ज्ञानी हुआ। चउथो आऊखा कर्म सातमो गोत्र कर्म २ एह कर्म टाली शेष थाकता छ कर्मनी उत्तर
प्रकृति ९१ ज्ञानावरनीयनी ५ दर्शणावरणीनी ९ वेदनी २ मोहनी २८ नाम कर्म ४२ अंतराय ५ सर्व मिली ९१ उत्तर प्रकृति कही। इति ९१ समवाय
थयो ॥ ९१ ॥ हिवे ९२ लिखेछे। ९२ भेदें प्रतिमा अभिग्रह विशेष पहिलो ५ प्रतिमा समाधि प्रतिमा १ उपधान प्रतिमा विवेक प्रतिमा ३
प्रतिसंलीनप्रतिमा ४ एक विहार प्रतिमा ५ पहिलो समाधिप्रतिमाना २ भेद श्रुतसमाधि प्रतिमा चारित्र समाधि प्रतिमा चारित्र समाधि प्रतिमाना ६२
भेद आचारांगे प्रथमश्रुतस्कंधे ५ बीजे ३७ ठाणांगे १६ व्यवहारे ४ सर्वमिली ६२ भेदथया। उपधान प्रतिमा २३ यतिनी १२ श्रावकनी ११ एवं २३ विवेकाको

॥ टीका ॥

तत्र श्रुतसमाधिप्रतिमा द्विषष्टिभेदा कथं आचारे प्रथमे श्रुतस्कन्धे पंच द्वितीये सप्तविंशत् स्थानांगे षोडश व्यवहारे चतस्र इत्येता द्विषष्टि एतास्च चारित्रस्वभावा अपि विशिष्ट श्रुतवतां भवन्तीति श्रुतप्रधानतया श्रुतसमाधिप्रतिमात्वेनोपदिष्टा इतिसम्भावयाम: पंचसामायिकच्छेदोपस्थापनीयाद्या चारित्रसमाधिप्रतिमा उपधानप्रतिमा द्विविधा भिक्षुश्रावकभेदात्तत्र भिक्षुप्रतिमा मासाईसत्तंताइत्यादिना भिहितस्वरूपा द्वादश उपासकप्रतिमास्तु दंसणवए इत्यादिना भिहितस्वरूपा एकादशेति सर्वास्त्रयोविंशति विवेकप्रतिमा त्वेका क्रोधादेराभ्यन्तरस्य गणशरीरोपधिभक्तपानादे र्बाह्यस्य विवेचनीयस्यानेकत्वे प्येकत्वविवक्षणादिति प्रतिसंलीनताप्रतिमाप्येकैव इन्द्रियस्वरूपस्य पञ्चविधस्य नोइन्द्रियस्वभावस्यच योगकषायविविक्तशयनासनभेदत स्त्रिविधस्य प्रतिसंलीनताविषयस्य भेदेनाविवक्षणादिति पञ्चस्येकविहारप्रतिमैकैव नचेह सा भेदेन विवक्षिता भिक्षुप्रतिमास्वन्तर्भावितत्वादित्येवंद्विषष्टि: पञ्च त्रयोविंशति रेका एकाच द्विनवति स्ता भवन्तीति स्थविरइन्द्रभूति र्महावीरस्य प्रथमगणनायक: सच गृहस्थपर्यायं पञ्चाशतं वर्षाणि त्रिंशतिं छद्मस्थपर्यायं द्वादशच केवलित्व म्पालयित्वा सिद्धइति सर्वाणि द्विनवतिरिति मंदर

॥ मूल ॥

इत्ता सिद्धे बुद्धे मंदरस्सणं पव्वयस्स बहुमज्झदेसभागाउ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लेचरमंते

॥ भाषा ॥

प्रतिमाना भेद १ एवं ६२ पांच त्रेवीस एकएक सर्वमिली ९२ भेद प्रतिमाना धादिकनो त्याग एकभेद प्रतिसंलीन तायें इन्द्रियनो गोपिवो एकभेद एकविहार प्रतिमा भेद १ एवं ६२ पांच त्रेवीस एकएक सर्वमिली ९२ भेद प्रतिमाना थया। स्थविर इंद्रभूति महावीरनो प्रथम गणधर गृहाश्रमे ५० वर्ष छद्मस्थ पर्याये ३० वर्ष १२ वर्ष केवल पर्याये सगलो ९२ वर्षनो आउखोपालीने सिद्धथया मोक्ष पहुंता तत्वना ज्ञानीथया। मेरुपर्वतनो बहुमध्यदेशभाग ५ सहस्त्र योजन तेहथकी ५ हजार योजननी जगतीइहां तेहथकी वेलंधर नागराजानो आ

॥ टीका ॥

॥ १५९ ॥ खेत्यादि भावार्थः मेरुमध्यभागात् जम्बूद्वीपस्य पञ्चाशत्सहस्राणि ततो द्विचत्वारिंशत् सहस्राण्यतिक्रम्य गोस्तुभपर्वतः इति सूत्रोक्तमन्तरं भवतीति एवं शेषा णामपि ॥ ९२ ॥ अथ त्रिनवतिस्थानके किमपि वितन्यते। तेणउइमंडलेत्यादि तत्र अतिवर्त्तमानोवा सर्वबाह्यात् सर्वाभ्यन्तरम्प्रति गच्छन् नि वर्त्तमानोवा सर्वाभ्यन्तरात् सर्वबाह्यंप्रति गच्छन् व्रत्ययोवा व्यात्येयः समम्होरात्रं विषमं करोतीत्यर्थः अहश्च रात्रिश्च अहोरात्रं तयोः समता तदा भवति यदापञ्चदशमुहूर्त्ता उभयोरपि भवन्ति तत्र सर्वाभ्यंतरमण्डले अष्टादश मुहूर्त्तमह भवति रात्रिश्च द्वादशमुहूर्त्ता सर्वबाह्ये तु व्रत्ययः तथा द्वयोर्त्वविकमण्ड लगते द्वौद्वावेकषष्टिभागौ वर्द्धते हीयेतेच यदाच दिनवृद्धि स्तदा रात्रिहानिः रात्रिवृद्धौच दिनहानिरिति तत्र त्रिनवतितमे मण्डले प्रतिमण्डलं मुहूर्त्तकाय

॥ मूल ॥

एसणं वाणउइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवंचउरहंवि आवासपव्वयाणं ॥ ९२ ॥

चंदप्पहस्सणं अरहओ तेणउइगणा तेणउइगणहरा होत्था संतिस्सणं अरहओ तेणउइ चउद्दसपुव्विसया

॥ भाषा ॥

वास गोस्तूभपर्वत पूर्वसमुद्र मांहि ४२ हजार योजनहुयो तो मेरुनामध्यभागथकी गोस्तूभ आवास पर्वतनो पश्चिमचरमांत ९२ हजार योजन आबाधाये विचाले आंतरो कह्यो। मेरु पर्वतना दक्षिण पासना चरमांत दगभास पर्वतनो उत्तरपासनो छेहलो भाग ९२ हजार योजन आबाधायें विचाले आंतरो कह्यो। मेरुपर्वतना पश्चिम चरमांतथो शंखआवास पर्वतनो पूर्वाभिमुख चरमांत ९२ सहस्र योजन अबाधायें विचाले आंतरोकह्यो। मेरुपर्वतना उत्तराभि मुख चरमांतथो दगसीम आवास पर्वतना दक्षिण दिशनो चरमांत ९२ सहस्रयोजन अबाधायें विचाले आंतरो कह्यो। इति ९२ समवायथयो ॥ ९२ ॥ हिवे ९३ मोलिखेछे। चंद्रप्रभ आठमा अरिहंतना ९३ गछ ९३ गणधरहुया। शांतिनाथ सोलमा अरिहंतने ९३ से चौदहपूर्वधर हुवा। सूर्यनो एकसोचौ

ष्टिभागद्वयवृद्धा यथोमुहूर्त्ता एकेनैकषष्टिभागेनाधिका: वर्द्धन्ते वा हीयन्ते वा तेषुच द्वादशमुहूर्त्तेषु मध्येचितेषु अष्टादशभ्यो पसारितेषु वा पञ्चदशमुहूर्त्ता उभयचैकेनैकषष्टिभागेनाधिका हीनावा भवंत्यतो त्रिनवतितममण्डलस्याहि समाहोरात्रता तस्यैवचांते विषमाहोरात्रता भवति त्रिनवतितमलण्डलं चादित आरभ्य त्रिनवतितममण्डले यथोक्तसूत्रार्थ इति ॥ ९३ ॥ अथ चतुर्नवतिस्थानके किञ्चिद्विलिख्यते । निसहेत्यादि दृढपादाना सम्वादगाथा ॥ टीका ॥

होत्था तेणउइमंडलगतेणं सूरिए अनिवट्टमाणे विनिवट्टमाणे वा समंअहोरत्तं विसमंकरेइ ॥ ९३ ॥ ॥ मूल ॥

राश्मिमो मांडलो समुद्रमांहि तेसर्ववाह्य मंडलतेहयकी सूर्यअनिवर्त्तमान सर्वाभ्यंतर मंडलभणी उत्तरायणि जातो तथा निषधमाथै सर्वाभ्यंतर मंडल तेहय ॥ भाषा ॥
को दक्षिणायन सर्ववाह्य मांडलाप्रति जायछे तेवारे ९३ मे मंडले सूर्य गयो थको दिवसने रात्रिने विषमकरे एतले अषाढो पूनिमे सर्वाभ्यन्तर मंडले नि षधमाथे सूर्यउगे तेवारे दिवस ३६ रात्रि चौवीसो पछे श्रावणवदी १ दिने बीजेमांडले सूर्यआवे तेवारे एकमुहूर्तना ६१ भाग कीये तेहवा प्रतिमांडले प्र ति दिन बे बे भाग दिवस घटाडी रात्रो वधारो दक्षिणायने चालतां ३१ मेमांडले एक मुहूर्त दिवसघटे रात्रिवधे । वली तेमज एकसठिया बेबेभाग दिवस घटाडो एमकरतां ९२ मांडलेजाय तिवारे आसोजीपुनिमें ३० दिवस ३० रात्रि समदिवस समरात्रिकरेपछे ९३ मेमांडले सूर्य जाय तेवारे दिवमघटे रात्रि वधे तेमाटे दिनरात्रि विसमकरे अने सूर्य सर्ववाह्यमांडले दिवस २४ रात्रि ३६ पोसोपूनिमेकरी उत्तरायणभणी चाल्यो तांहो एक मुहूर्तना एकसठिया २ भाग प्रतिदिवस दिनवधारे रात्रिघटाडे ९२ मेमांडले चैत्रोपूनिमे सम दिवसरात्रि ३० दिवस ३० रात्रोकरी ९३ मांडले दिवसरात्रि विषमकरे दिवस वधे रात्रिघटे एभावार्थ जाणिवो । इति ९३ मो समवाय थयो ॥ ९३ ॥ हिवे ९४ लिखेछे । बीजोवर्षधर निषध पर्वत चौथो नीलवंत एबेहनी जो

॥ टीका ॥

चउणउइसहस्साइं छप्पणइयंसयंकलादोय जीवानिसहस्सेसत्ति ॥ ९४ ॥ अथ पंचनवतिस्थानके किंचिल्लिख्यते। लवणसमुद्रस्योभयपार्श्वतोपि पंचनवतिः २ प्रदेशाउद्वेधोत्सेधपरिहानिभ्यांविषये प्रज्ञप्ताः अयमत्रभावार्थः लवणसमुद्रमध्ये दशसाहस्त्रिकक्षेत्रस्य समधरणीतलापेक्षया सहस्रमुद्वेधउण्डत्व मित्यर्थः तदनन्तर पंचनवतिप्रदेशानतिक्रम्योद्वेधस्य प्रदेशाहीयन्ते ततोपिपंचनवतिं प्रदेशान् गत्वा उद्वेधस्य प्रदेशाः परिहीयन्ते एवं पंचनवति २ प्रदेशाति क्रमे प्रदेशमात्रस्योद्वेधस्य हान्या पंचनवत्यांयोजनसहस्रेष्वतिक्रांतेषु समुद्रतटप्रदेशेषु उद्वेधतः सहस्रस्यापिपरिहानिर्भवतीत्यर्थः समभूतलत्वम्भवतीति तथा समुद्रमध्यभागापेक्षया तत्तटस्य साहस्त्रिकउत्सेधोभवति उत्सेधश्चोच्चत्वं तत्र समधरणीतलरूपा तत्तटा त्पंचनवतिप्रदेशानतिक्रम्य एकप्रदेशिका उत्सेधस्य

॥ मूल ॥

निसह नीलवंतियाउणं जीवाउ चउणउइ जोयणसहस्साइं एक्कं छप्पन्नं जोयणसयं दोन्निय एगूणवीसइ भागे जोयणस्स आयामेणं प० अजियस्सणं अरहउ चउणउइ उहिनाणिसया होत्था ॥ ९४ ॥ सुपासस्सणं अरहउ पंचाणउइगणा पंचाणउइगणहरा होत्था जंबूद्दीवस्स णं द्दीवस्स चरमंताउ चउद्दि

॥ भाषा ॥

वा ९४ हजार योजन एकसोछप्पन योजन उपरि बे उगुणीसहाइया भाग एकयोजनना ९४१५६ योजन १९ कला आयामपणे लांबपणेकही। अजितनाथ अरिहंतने ९४ से अवधिज्ञानी हुआ। इति ९४ मो समवाय थयो ॥ ९४ ॥ हिवे ९५ मो लिखेछे। सुपार्श्व सातमा अरिहंतने ९५ गच्छ ९५ गणधर हुया। जंबूद्वीपना चरमांतथकी पूर्वादिक चिहुंदिशि लवण समुद्रमांहि ९५ हजार योजन लगे गाहीने प्रवेश करीने चार महापाताल कलश कह्या। तेकहेछे। पूर्व मुद्रमांहि बडवामुख। दक्षिणे केतुक। पश्चिमें यूपक। उत्तरे ईसर। धातकीखंडथकी समुद्रमांहि उरहामध्यभाग भणी ९५ सहस्र

परिहानिर्भवति ततोपि पंचनवतिंप्रदेशान् गत्वा प्रादेशिक्ये चोत्सेधहानि र्भवति एवं पंचनवतिपंचनवतिप्रदेशा तिक्रमेणैवप्रादेशिक्या उत्सेधहान्या पंचनव ॥ टीका ॥
त्यांयोजनसहस्रेष्वतिक्रांतेषु समुद्रमध्यभागे सहस्रमपि उत्सेधस्य परिहीयते एवंसाहस्रिकोत्सेधपरिहानौ साहस्रिकोद्वेधता भवति लवणस्सेत्ति अथचोद्वेधा
र्थं योत्सेधपरिहानिस्तस्यांपंचनवतिः प्रदेशाः प्रज्ञप्ता स्तेष्वतिलङ्घितेषु उत्सेधतः प्रदेशैहान्यामुद्वेधः प्रादेशिको भवतीति तथा कुंथुनाथस्य समदशतीर्थंकरस्य
कुमारत्वमांडलिकत्वचक्रवर्त्तित्वानगारत्वेषु प्रत्येकं त्रयोविंशते र्वर्षसहस्राणा मर्द्धाष्टमवर्षशतानां च भावात्सर्वायुः पंचनवतिर्वर्षसहस्राणि भवन्तीति तथा

सिं लवणसमुद्दं पंचाणउइ पंचाणउइ जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता चत्तारिमहापायालकलसा प० तं० वल ॥ मूल ॥
या मुहे केऊए जूए ईसरे लवणसमुद्दस्स उभओ पासंपि पंचाणउयं पंचाणउयं पदेसाओ उव्वेऊस्सेहपरिहा

योजन आवी जंबूद्वीपथकी परहा ६५हजार योजन लगे परहो मध्यभाग भणी जईयेंतो विहुं ६५ मिलो ? लाख ६० हजार योजन थया विचाले दस स ॥ भाषा ॥
हस्र योजन लगे समोपीठिकानेरूपे पाणीछे तिहां पृथ्वी तलनी अपेचायें १ हजार योजननो ऊंडो खाड पडोछे १ हजार योजन लगे ऊंचोपाणी चढ्यां
पछे पिहुला १० हजार योजन लगेछे तेहने दगमालकहियें तांते मध्यपिंड १० हजार योजनलगे दगमालथको उभयपासे धातकी खंड भणीजाय। त
था जंबूद्वीप भणी उरहाआवीयेंतोही ६५ आंगुले एकअंगुल तथा ६५ हाते १ हात ६५ योजने १ योजन एम ६५ हजार योजन १ हजार योजनप्रदेशें २
मात्रायें २ उव्वेधपणो ऊंडपणोघटाडोयें एमकरतां ६५ सहस्र योजन अतिक्रमेथके समुद्रनोपाणी अनेभूमिबराबरीथाय ऊंडपण सगलोटले तथा समुद्रतट
थको ६५ आंगुले योजन २ समुद्रमध्यभागभणी जातां २ तट भूमिनो उत्सेधनो ऊंचपणो प्रदेशें २ मात्रायें २ हानिकरो भूमिऊंडोकरतांजईये एमकरतां

॥ टीका ॥

मौर्यपुत्रो महावीरस्यसप्तमगणधरस्तस्य पंचनवतिर्वर्षाणि सर्वायुः कथं गृहस्थत्व छद्मस्थत्व केवलित्वेषुक्रमेण पंचषष्टिचतुर्दशषोडशानां वर्षाणांभावादिति ॥ ९५ ॥ अथ षण्णवतिस्थानके किमपि व्याख्यायते वायुकुमाराणांषण्णवतिर्भवनलक्षाणि दक्षिणस्यां पंचाशत् उत्तरस्यांच षट्चत्वारिंशतो भावादिति वाव

॥१५१॥ हारिएत्ति व्यावहारिको येन गव्यूतादिप्रमाणं चिंत्यते अव्यावहारिको लघुर्दीर्घो वा भवत्युक्तप्रमाणात् दंडोहि चतुःकरउक्तः करश्चतुर्विंशत्यंगुलः एवं चतुर्विं

॥ मूल ॥

णीए प० कुंथूणं अरहा पंचाणउइवाससहस्साइं परमाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे थेरेणं मोरियपुत्ते पंचाणउइवासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे ॥ ९५ ॥ एगमेगस्सणं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स छन्नउइं छन्नउइं गामकोडीओ होत्था वायुकुमाराणं छन्नउइभवणावाससयसह

॥ भाषा ॥

९५ हजार योजन अतिक्रमीयके तटभूमिनोऊंचपणो हजार योजननोटले १ हजारनो ऊंडपणो समुद्रनोथाय एतलो। कुन्थुनाथ अरिहंत२ ३ सहस्र अने७५० वर्ष कुमार पणे एतलाज वर्ष मांडलीक राजपणे एतलाजवर्ष चक्रवर्तिपणे एतलाज वर्ष तीर्थंकरपणे सगलामिली ९५ सहस्र वर्ष उत्कृष्टो आउखोपालीने सिद्धथया तत्वनाजाण थया सर्वदुःख रहित थया। स्थविर मोर्य पुत्र महावीरनो सातमो गणधर९५ वर्ष सर्वायुपालीने सिद्धथया। गृहाश्रमे ६५ छद्मस्थपणे १४ केवली पणे १६ सर्वमिली ९५ वर्षथया। इति ९५ मो समवाय थयो ॥ ९५ ॥ हिवे ९६ समवाय लिखेछे। एकेक चातुरंतचक्रवर्तीने ९६ कोडी गाम थया। वायुकुमार भवनपतीने ९६ लाख भवनावासा कह्या। दक्षिणदिशे ५० लाखउत्तरदिशे ४६ लाख बिहुंमिली ९६ लाख थया। व्यवहारिक दंड

॥ टीका ॥

शतो चतुर्गुणिताायां षसवतिः स्यादेवेति अभंतराओ इत्यादि अभ्यन्तरादभ्यन्तरमण्डलमाश्रित्येत्यर्थः आदिमुहूर्त्तः षसवत्यंगुलच्छायः प्रज्ञप्तः अयमत्रभावार्थः सर्वाभ्यन्तरमण्डलेयच्चदिने सूर्यश्चरति तस्यदिनस्य प्रथमो मुहूर्त्तोद्वादशांगुलमानं शंकुमाश्रित्य षसवत्यंगुलच्छायो भवति तथाहि तद्दिनमष्टादशमुहूर्त्त प्रमाण भवतीति मुहूर्त्तोष्टादशभागो दिनस्य भवति ततश्चच्छायागणितप्रक्रिययाच्छेदेनाष्टादश लक्षणेन द्वादशांगुलः शंकुर्गुण्यते इति ततोद्वे शते षोडशोत्तरे भवतः २१६ तयोरर्द्धीकृतयो रष्टोत्तरं शत भवति १०८ ततश्च शङ्कुप्रमाणे १२ पनीते षसवतिरंगुलानि लभ्यन्ते इति ॥ ९६ ॥ अथ सप्तनवतिस्थानके

॥ मूल ॥

रसा प० ववहारिएणं दंडे छसउइअंगुलमाणेणं एवं धणू नालिया जुगे अरके मुसलेवि अभिंतरउ आइ मुहुत्ते छसउइ अंगुलच्छाए प० ॥ ९६ ॥ मंदरस्सणं पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाउ चरमंताउ

॥ भाषा ॥

तेजेणे गाउकोस चिंतवीयें अव्यवहारिक नान्होपणि होय मोटोपणि होय ते व्यवहारिक दंड ९६ अंगुल प्रमाणि कह्यो २४ अंगुल नोहाथहोय चिहुंहाथे १ दंड होय एम करतां ९६ अंगुल कह्या। एम ९६ अंगुलनोधनुषनालिका यूप भूमरी अच्च मुंशलएहसर्व ९६। ९६ अंगुलनो होय। निषधने माथे सर्वाभ्यं तर मांडले दिवस अठारह मुहूर्तनो होय तो सर्वाभ्यंतर मंडले सूर्यउगे तिवारे पहिलो मुहूर्त ९६ अंगुल छाया प्रमाणि होय १२ अंगुलनो छणजभोकरीये तेहनी छाया ९६ अंगुल होय तिवारे कर्क संक्रांतिनो पहिलो मुहूर्त कहिये एतले ९६ अंगुल २ घडो दिवस कहिये तेकेम १८ मुहूर्त दिवसनाते १२ अं गुल छण चिगुण कीजे एतले १८ बार गुणा कीजे तो २१६ होय तेहनो अर्द्ध १०८ एह आंकमांहि छण प्रमाण अंगुल १२ काढो पूठो ९६ अंगुल उगरे ॥ इति ९६ मो संपूर्ण ॥ ९६ ॥ हिवे ९७ मो लिखेछे। मेरु पर्वत १० सहस्र पिहुलो तेहथको पूर्वनी जमती ४५ सहस्र योजन तेहथी ४२ सह

किञ्चिदभिधीयते । मंदरेत्यादि भावार्थोयं मेरोः पश्चिमान्तात् जम्बूद्दीपांतः पञ्चपञ्चाशत्सहस्राणि ततो द्विचत्वारिंशतो गोस्तुभइति यथोक्तमेवान्तर मिति ॥ टीका ॥
हरिषेणो दशमचक्रवर्त्ती देशोनानि सप्तनवतिम्वर्षशतानि गृहमध्युषित स्त्रीणिचाधिकानि प्रव्रज्यां पालितवान् दशवर्षसहस्रत्वा त्तदायुष्कस्येति ॥
९७ ॥ अथाष्टनवतिस्थानके किंचिदभिधीयते नंदणवणेत्यादि भावार्थोयं नन्दनवन मेरोः पंचयोजनशतोच्छ्रितप्रथममेखलाभावि पंचयोजनशतोच्छ्रि

॥ १५२ ॥ गोथुभस्सणं आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरमंते एसणं सत्ताणउइ जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० ॥ मूल ॥
एवं चउदिसिंपि अठण्हं कम्मपगडीणं सत्ताणउइ उत्तरपगडीउ प० हरिसेणेणं राया चाउरंतचक्कवट्टी दे
सूणाइं सत्ताणउइवाससयाइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ताणं जाव पव्वइए ॥ ९७ ॥
नंदणवणस्सणं उवरिल्लाउ चरमंताउ पंडयवणस्स हेठिल्ले चरमंते एसणं अठाणउइजोयणसहस्साइं अबा

स्रयोजन गोस्तूभपर्वत मेरुपर्वतना पश्चिम चरमांतथकी वेलंधर नागराजानो गोस्तूभ आवास पर्वतनो पश्चिमचरमांतएह ९७ सहस्र योजन आबाधाये ॥ भाषा ॥
विचाले आंतरो कह्यो । एमज चिहुंदिशि दक्षिण समुद्रमांहि दगभास पश्चिमेशंख उत्तरे दगसीम एह ४ नो आंतरोकह्यो आठे कर्मनी ९७ उत्तर
प्रकृति कही नाणावरणी ५ दरसनावरणी ९ वेदनी २ मोहनी २८ आउखा ४ नामकर्म४२ गोत्र २ अंतराय ५ सर्वमिली ९७ उत्तरप्रकृति हुई । नमिनाथ
अरिहंतने वारे हरिषेण दशमोचक्रवर्ती राजा देशोन कांइकऊणां ९७ सेवर्षलगे गृहस्थाश्रमे वसीने मुंडथईने अगारथकी साधुपणूं पाम्यो ३०० वर्षझांझेरा
दीक्षापाली १० हजारवर्ष सर्वायुपालो सीधोमोक्षपहुंतो ॥ इति ९७ मोसमवायथयो ॥ ९७ ॥ हिवे ९८ मोलिखेछे। मेरुनो नंदनवनपहिलो मेख

तं तावतपञ्चयोजनशतोच्छ्रितकूटाष्टकस्य तद्रूपेण ग्रहणात् तथा पण्डकवनंच मेरुशिखरव्यवस्थितम् तो नवनवत्यामेरो रुश्चैत्वस्य मध्ये सहस्रे अपकृष्टे यथो ॥ टीका ॥
क्तमन्तर भवतीति गोस्तुभसूत्रभावार्थः पूर्वव अवरं गोस्तुभविष्कम्भसहस्रे क्षिप्ते यथोक्तमन्तर भवतीति वेयट्टस्सणमित्यादि यः केषुचित्पुस्तकेषु दृश्यते सोप
पाठः सम्यक्पाठ स्वायं दाहिणभरहद्धस्सणं धणुपिट्ठे अट्ठाणउइं जोयणसयाइं किंचूणाइं आयामेणं पण्णत्ते इति यतोन्यत्रोक्तं नवचेवसहस्साइं छावट्ठाइं सया
इं सत्तभवे सविसेसकलाचेगा दहिणभरहधणुपट्ठंति वैताढ्यधनुः पृष्टं लवमुक्त मन्यत्र दसचेवसहस्साइं सत्तेवसयाहवंतितेयाला धणुपट्ठंवेयड्ढे कलायपस्सर

हाए अंतरे प० मंदरस्सणं पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाउ चरमंताउ गोथुभस्स पुरत्थिमिल्ले चरमंते एसणं अठा
णउइजोयणसहस्साइं अवाहाए अंतरे प० एवं चउदिसिंपि दाहिणभरहस्सणं धणुप्पिठे अठाणउइजोयण

लायें भूमिथकी ५०० योजन ऊंचोछे तेमांहि ५०० योजनना कूटऊंचाछे तोभूमीथकी तेकूटनां शिखर १ सहस्रयोजनऊंचा तिहांलगि नंदनवनकहीये मेरुपर्वत ॥ भाषा ॥
लाख योजनकह्यो तेमांहि १ हजार योजन भूमिमांहि १ सहस्रनो नंदनवन एवं २ सहस्रनोकल्या लाखमांहियो तेमाटे नंदनवननो उपरिलो चर
मांत मेरुने माथे पंडकवनछे तेहनो हेठिलो चरमांत एह ९८ सहस्र योजन अवाधाये विचाले आंतरोकह्यो। मेरुपर्वत थकी ४५ हजार योजन जगती हुई ते
थकी पूर्व समुद्रमांहि गोस्तूभ पर्वत ४२ हजारयोजन १ हजारयोजन तेपिहुलोछे। मेरुपर्वत १० हजार योजन जाडोछे तोमेरुपर्वतना पश्चिम चरमांतथी
वेलंधर नाग राजानो आवास गोस्तूभ पर्वत पूर्वसमुद्रमांहिछे। तेहनो पूर्वचरमांत ९८ हजार योजन अवाधाये विचाले आंतरोकह्यो। एमचिहुंदिशि दक्षि
ण समुद्रमांहि दगभास पश्चिमसमुद्रमांहि शंख उत्तरसमुद्रमांहि दगसीम एहचिहुंनोआंतरोगोस्तुभनीपरेजाणवो दक्षिणार्द्ध भरतक्षेत्रनो धनुपृष्ट ९८।

१५३ ॥

॥ टीका ॥

सइवंति उत्तराभीषमित्यादि भावार्थः पूर्वोक्तानुसारेणावसेयः नवरं मिह एकत्तालीसइमे इति केषुचित्पुस्तकेषु दृश्यते सोपपाठः एगूणपंचासइमेत्ति एको

॥ मूल ॥

सयाइं किंचूणाइं आयामेणं प० उत्तराउ कठाउ सूरिए पढमं छम्मासं अयमाणे एगूणपन्नासतिमे मंडल गते अट्ठाणउइ एकसठिभागे मुहुत्तस्स दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढित्ताणं सूरिए चारं चरइ दक्खिणाउणं कठाउ सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे एगूणपन्नासइमे मंडलगते अट्ठाणउइ एक

॥ भाषा ॥

से योजन कांइ ओछो लांबपणे कह्यो । उत्तर दिसथको सर्वाभ्यंतर मांडलाथको सर्वाभ्यंतर मांडले निषधने माथे आषाढी पूनिमे अठारह मुहूर्तनो दिवस १२ मुहूर्तनी रात्रि हुये पछे श्रावण वदी १ दिने सूर्य उत्तर दिशिथको दक्षिणायने चाल्यो तिवारे बीजे मांडले आयो तेवारे १ मुहूर्तना ६१ या भाग कीजे एहवा प्रतिदिन मांडले बेबेभाग दिवस घटाडे रात्रिवधारे चोसमे मांडले जाय तेवारे १ मुहूर्त दिवस घटे रात्रि वधे एमज सर्वबाह्य मंडला लगें कीजे सर्वबाह्य मंडले दिवस १२ मुहूर्त रात्रि १८ मुहूर्त वलीफरी मांडी उत्तरायणे सूर्य चाल्यो तिवारे बीजामांडलाथको मुहूर्तना ६१ या बेबे भाग प्रति दिन दिवस वधारे रात्रि घटाडे साठि भागे मुहूर्त एक वांधीये सर्वाभ्यंतर मंडल लगे पछे सर्वाभ्यंतर मंडले १८ मुहूर्त दिवस १२ मुहूर्तरात्री हुये सूर्य प हिले छमासे दक्षिणायन भणी आवतोथको एकोनपंचासे मांडले गयोथको ९८ एकसठिया भाग एक मुहूर्तना दिवसनो खेत्र दिवसे घटाडो रात्रीनूं खेत्र रात्रियेवधारी सूर्य चारचरे । सर्वबाह्य मंडल थको दक्षिणायनथको सूर्य बीजे छम्मासे उत्तरायनभणी आवतोथको एकोनपंचासमे मंडले गयोथको ९८ एक सठिया भाग एक मुहूर्तना रजनीनां खेत्रने घटाडीने दिवसनोखेत्रने वधारीने सूर्य चारचरे एतले उत्तरायणे रात्रि घटे दिवस वधे दक्षिणायने रात्रि वधे

नपंचाशतो द्विगुणत्वे अष्टनवतिर्भवति इयगुणनंच प्रतिमण्डलं मुहूर्त्तैकषष्टिभागद्वयस्यदि दिनस्यरात्रे र्वैति । रेवईत्यादि रेवतिः प्रथमायेषां तानि रेवतिप्रथमानि तथाज्येष्ठापर्यवसानानीति तानिचतानिचेति कर्म्मधारयः तेषामेकोनविंशते र्नक्षत्राणामष्टनवतिस्तारा स्तारापरिमाणेन प्रज्ञप्ता स्तथाहि रेवतिनक्षत्रं द्वाविंशत्तारं अश्विनीत्रितारं कृत्तिकाषट्तारं रोहिणीपंचतारं मृगशिरस्त्रितारं आर्द्राएकतारं पुनर्वसुः पंचतारं पुष्यस्त्रितारं अश्लेषा षट्तारं मघा सप्ततारं पूर्वाफाल्गुनीद्वितारं उत्तराफाल्गुनीद्वितारं हस्तः पंचतारं चित्राएकतारं स्वातिरेकतारं विशाखापंचतारं अनुराधाचतुस्तारं ज्येष्ठात्रितारमित्येवं सर्वतारामीलने यथोक्तं तारायमेकोनं ग्रंथांतराभिप्रायेण भवति अधिकृतग्रंथाभिप्रायेण त्वेषा मेकतरस्य एकताराधिकत्वम् सम्भाव्यते ततो यथोक्ता स्तत्संख्याभवतीति ॥ ॥ टीका ॥

सठिनाए मुहुत्तस्स रयणिक्खित्तस्स वुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिनिवुड्ढित्ता णं सूरिए चारं चरइ रेवईपढम जेठापज्जवसाणाणं एगूणवीसाए नक्खत्ताणं अट्ठाणउइतारात्तं तारग्गेणं प० ॥ ९८ ॥ ॥ मूल ॥

दिवस घटे प्रतिदिवस १ मुहूर्तना ६१ या बेबेभाग प्रति मंडले घटाडीये वधारिये । रेवतीनक्षत्रके पहिलो ज्येष्टानक्षत्रके पर्यवसान छेहडो जेहने एहवा उगणीसनक्षत्र ने ९८ तारा तारायेणंतारापरिमाणे कह्या । रेवतीनक्षत्रना ३२ तारा । अश्विनीना ३ तारा । भरणीना ३ । क्रतिकाना ६ । रोहिणीना ५ मृगसिरना ३ । आर्द्रानो १ । पुनर्वसुना ५ । पुष्यना ३ । अश्लेषाना ६ । मघाना ७ । पूर्वाफाल्गुनीना २ । उत्तराफाल्गुनीना २ । हस्तना ५ । चित्रानो १ । स्वातो १ । विशाखाना ५ । अनुराधाना ४ । जेष्टाना ३ । एह १९ नां सर्वमिली ९८ ताराथया । इति ९८ मो थयो ॥ ९८ ॥ हिवे ९९ मो लिखेछे ॥ भाषा ॥

॥ १५४ ॥

॥ टीका ॥

९८ ॥ अथ नवनवतिस्थानके किमपि लिख्यते । नंदनवणेत्यादि अस्यभावार्थः मेरुविष्कम्भो मूले दशसहस्राणि नन्दनवनस्थानेतु नवनवतिर्योजनश तानि चतुःपंचाशच्चयोजनानि षट्योजनैकादशभागा बाह्योगिरिविष्कम्भो नन्दनवनाभ्यन्तरस्तु मेरुविष्कम्भ एकोननवति शतानि चतुःपंचाशदधिकानि ष ट्चैकादशभागा स्तथा पंचशतानि नन्दनवनविष्कम्भः तदेवमभ्यन्तरगिरिविष्कंभो द्विगुणं नन्दनवनविष्कम्भश्चमीलितो यथोक्तमन्तर मायोभवति पढमसूरिय

॥ मूल ॥

मंदरेणं पव्वएणवणउइजोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० नंदणवणस्सणं पुरत्थिमिल्लाउ चरमंताउ पच्चत्थि मिल्ले चरमंते एसणं नवनउइजोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० एवं दक्खिणाउ चरमंताउ उत्तरिल्लेचरमंते एसणंणवणउइ जोयणसयाइं अवाहाए अंतरे प० उत्तरे पढमसूरियमंडले नवणउइजोयणसहस्साइं

॥ भाषा ॥

मेरुपर्वत ९९ सहस्र योजन ऊंचो ऊंचपणे कह्यो । भूमिथकी ५०० योजन मेरुने विषे ऊंचा चढीये पहिलो मेखला तिहां नंदनबन पामीये तेह नंदन बन ५०० योजन पिहुलो छे नंदनवननो पूर्व चरमांत तेहथी पश्चिम चरमांत लगे ९९०० से योजन आबाधाये बिचाले आंतरो कह्यो । मेरुनो विष्कंभ मूले १०००० योजन नंदनबन स्थाने बाह्य गिरि विष्कंभ ९९०० योजन १ योजनना ११ हिया ६ भाग नंदनवन मांहि मेरुनो विष्कंभपणो ८९ से योजन ५४ योजने ११ हीया ६ भाग नंदनवन ५०० योजन पिहुलोते दुगणोलीजे अनेमेरुनो अभ्यंतर विष्कंभपणो लीजेतो ९९०० योजन आंतरो हुयो। एमज नंदनवननां दक्षिण चरमांनथकी नंदनवननो उत्तर चरमांतनो आंतरो ९९०० से योजन थयो । निषधने माथे सर्वाभ्यंतर मांडलोछे तेहपूर्व दिशनो तेहीज कंकणने

मंडलेत्ति इहजम्बूद्वीपप्रमाणस्याशीत्युत्तरशते द्विगुणिते अपहृते योराशिः सप्रथममण्डलस्यायामविष्कंभः सच नवनवतिसहस्राणि षट्च शतानि चत्वारिंशद ॥ टीका ॥
धिकानि द्वितीयस्तु नवनवतिः सहस्राणि षट्शतानि पंचचत्वारिंशच्च योजनानि योजनस्यच पंचत्रिंशदेकषष्टिभागाः कथं मण्डलस्यमण्डलस्यचान्तरं द्वेद्वेयोज
ने सूर्यविमानविष्कम्भ श्चाष्टचत्वारिंशदेकषष्टिभागाः एतद्विगुणितं पंचयोजनानि पंचत्रिंशदेकषष्टिभागाश्चेति जातमेतच्च पूर्वमण्डलविष्कंभे क्षिप्तं जातमुक्तप्र

साइरेगाइं आयामविक्खंभेणं प० दोच्चे सूरियमंडले नवनउइजोयणसहस्साइं साहियाइं आयामविक्खं ॥ मूल ॥

आकारे फिरतो पश्चिमनोनीलवंत ने माथे ते सर्वाभ्यंतर मांडलो जम्बूद्वीपमांही १८० योजनछे पूर्वदिशिनो अने पश्चिमनो पणि एतलोजछे तो जंबूद्वीपन ॥ भाषा ॥
जीवा लांबपणे लाख योजनछे ते मांहि थी ३६० योजन मांडलो भूमिमांकाढो लाख योजनमांहि थी पूठें पूर्वसर्वाभ्यंतर मंडल अने पश्चिम सर्वा
भ्यंतर मंडलने ९९४० योजन आंतरो थयो। पहिलो सर्वाभ्यंतर सूर्यना मांडलो ९९ सहस्र योजन सातिरेक भाझेरा ते ६४० योजन आयाम पश्चिमे लांब
पणे दक्षिण उत्तरे विष्कंभपिहुलपणे आंतरो जाणिवो लाख योजन मांहिथी ३६० योजन काढो पूठें ९९६४० योजन ऊगरे पहिले मांडले पूर्वनो बीजो
मांडलो अने पश्चिमनो बीजो मांडलो ९९६४५ योजन १ योजनना ६१ या भाग ३५ लांबपणे पिहुलपणे आंतरो। तेकेम पहिला मांडलाथी बीजो मांड
लो २ योजन अने मांडलानुं पिहुलपणुं १ योजनना ६१ या ४८ भाग पश्चिमनो पणि एतलोजविहुंदिशमिलो पहिला बीजामांडलानो आंतरानो योजन
मंडल पिहुलपणो मिलो ५ योजन भाग ३५ एह सर्वाभ्यंतर मांडलाना प्रथमना आंकमांहि घातिये एतले ९९६४० योजन मांही ५ योजन ६१ यापैंत्रीस
भाग घातिये तिवारे ९९६४५ १ योजन ६१ या ३५ भाग आंतरोबीजामांडलानो हुवे हिवेसूर्यनो पूर्व पश्चिमनो बीजो मांडलो ९९६५१ योजन ६१। ९

माषमिति तृतीयमण्डलविष्कभोप्येत्रमेवावसेय: सच नवनवतिसहस्राणि षट्शतानि एकपंचाशत्योजनानिं नवैकषष्टिभागाश्चेति इमीसेणमित्यादि भावा ॥ टीका
र्थीयं अष्वनकाण्डंदशमं तत्रच रत्नप्रभोपरिमांतारच्छतं शतानां भवति प्रथमकाण्डे प्रथमशते व्यन्तरनगराणि सन्तीति तस्मिन्नपसारिते नवनवतिशतान्य
॥ १५५ ॥ न्तरं सूत्रोक्तं भवतीति ॥ ९९ ॥ अथ शतस्थानके किञ्चिल्लिख्यते। तत्र दशदशमदिनानि यस्यां सा दशदशमिका याहि दिनानांदशदशका

न्नेणं प० तइएसूरियमंडले नवनउइजोयणसहस्साइं साहियाइं आयामविक्खंनेणं प० इमीसेणं रयणप्प ॥ मूल ॥
नाए पुढवीए अंजणस्स कंडस्स हेठिल्लाउ चरमंताउ वाणमंतरनोमेज्जाविहाराणं उवरिमंते एसणं नव
नउइजोयणसयाइं अवाहाए अंतरे प० ॥ ९९ ॥ दसदसमियाणं निक्खुपडिमा एगेणं रा

भाग पूर्व अने पश्चिमनां मंडलने आंतरो दक्षिणने उत्तर मंडले आंतरो तेहीपिण बीजामांडलानीपरे ५ योजन भाग ३५ त्रीजेमांडलेवधारिये ९९६४५ यो ॥ भाषा
जन भाग ३५ माहिघातिये तिवारे ९९६५१ योजन ६१। ९ भाग आंतरो थाय। त्रीजो मांडलो आयाम लांबपणे विस्कंभ पिहुलपणे कह्यो। एणीये रत्न
प्रभा पृथिवी ये ३ कांड मांहिपहिलोकांड १६ हजारनो १६ जाति रत्ननो तेकांडप्रत्येकें १ सहस्रनोछे तो रत्नप्रभानो दशमो अंजन कांड तेहनो हेठिलो
चरमांत समभूतलथी १० हजारयोजनछे तिहांथकीमांडी उपरि रत्नप्रभामा १०० योजन मांहीवानव्यंतरनाभूमि संबंधी विहार क्रीडा नगरछे तेहनोउ
परिलो चरमांत ९९०० से योजनआवाधाये विचाले आंतरो कह्यो। एतले १० हजार योजन मांहिथी व्यंतर संबंधी १०० योजन वाहिर काढीये तिवारे
९९ से योजन उगरे। इति ९९ मोसमवाय थयो ॥ ९९ ॥ हिवे १०० मोलिखेछे। पहिला दस दिहाडा लगे एकेको भिक्षा दातीले पछे बीजे

न्ति भवन्ति तत्रभवन्ति दशदशमदिनानि शतञ्च दिनाना मतउच्यते एकेनरात्रिंदिवसशतेने ति यस्यांच प्रथमेदशके प्रतिदिनमेकैकाभिक्षा द्वितीयेद्वेद्वे एवं यावद्दशमेदशदशेत्येवं सर्वभिक्षासंकलने सूत्रोक्तसंख्याभवत्येव इति पार्श्वनाथ स्त्रिंशद्वर्षाणि कुमारत्वं सप्ततिचानगारत्वमित्येवं शतमायुः पालयित्वा सिद्धः एवं थेरेविअज्जसुहम्मेत्ति आर्यसुधर्मामहावीरस्य पंचमोगणधरः सोपि वर्षशतं सर्वायुः पालयित्वा सिद्ध स्तथाच तस्यागारवासः पंचाशद्वर्षाणि छद्मस्थपर्याय। ॥ टीका ॥

इंदियसतेणं अट्ठछठेहिं भिक्खासतेहिं अहासुत्तं जावआराहियाविभवइ सयहिस्सिया नक्खत्ते एक्कसय तारे प० सुविहीपुप्फदंतेणं अरहा एगंधणुसयं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था पासेणंअरहापुरिसादाणीए एक्कंवा ससयं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धेजावप्पहीणे एवं थेरेवि अज्जसुहम्मे सव्वेविणं दीहवेयड्ढपव्वयाएगमेगं गा ॥ मूल ॥

दशके बे बे भिक्षा एम दस दसक लगे एकेक भिक्षावधारीये ते प्रतिमा दश दशमिका कहीये। तेप्रतिमा दश दशमिका भिक्षा प्रतिमा एकरात्रि दिवस सते एतले १०० अहोरात्रियें अने साढे पांच से भिक्षाये करी यथा सूत्रोक्त प्रकारे यथा मार्गें आराधी होय एणे प्रकारे। शतभिषा नक्षत्रना एक सो तारा कह्या। नवम सुविधिनाथ बीजोनाम पुष्पदंत अरिहंत १०० धनुष ऊंचा ऊंच पणे हुया पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषादानीय महासोभागी ३० वर्ष गृहाश्रमे कुमारपणे ७० वर्ष यतिपणे १०० वर्ष सगलो आउखोपालीने सिद्ध थया समस्तदुःखथकी प्रक्षीणथया। एमज श्री महावीरनो पांचमो गणधर आर्य सुधर्म स्वामी गृहाश्रमे ५० वर्ष छद्मस्थपणे ४२ वर्ष केवलीपणे ८ वर्ष सर्वमिली १०० आउखोपालीने सिद्धथया। जंबूद्वीप मांहि ३२ विजयना ३२ भ ॥ भाषा ॥

विपलारिंश लोवलिपर्यायोष्टौभवति वैतद्राशिवयमीलने वर्षशतमिति वैताब्याद्रिषूच्चलम् चतुर्थांशउद्वेधः कांचनका उत्तरकुरुषु देवकुरुषु क्रमव्यवस्थितानां पंचानां महाह्रदाना मुभयतो दशव्यवस्थिता स्तेच जंबूद्वीपे शतद्वयसंख्यासमवसेया इति ॥ १०० ॥ अथैकोत्तरस्थानवृद्धा सूत्ररचनां परित्यज्य ॥ टीका ॥

उयसयं उढ्ढं उच्चत्तेणं प० सव्वेविणं चुल्लहिमवंतसिहरीवासहरपव्वया एगमेगंजोयणसयं उढ्ढंउत्तेणं प० ॥ मूल ॥

॥ १५६ ॥ एगमेगं गाउयसयं उव्वेहेणं प० सव्वेविणं कंचणगपव्वया एगमेगं जोयणसयं उढ्ढं उच्चत्तेणं प० एगमेगं

गाउयसयं उव्वेहेणं प० एगमेगं जोयणसयं मूले विक्खंभेणं प० ॥ १०० ॥ चंदप्पभेणं अरहा

रत ऐरवतनां २ एवं ३४ दीर्घवैताब्य एह बेगुणा धात की खंड पुष्करार्द्ध मांहि तो सगला दीर्घ वैताब्य पर्वत एकेक सो गाउ ऊंचपणें कह्या । एतले ॥ भाषा ॥

वैताब्य पर्वत २५ योजन ऊंचा तेहनागाउ १०० हुया अने ऊंचपणानो चौथो भाग भूमि मांहिहोय । सगलाही अढीद्वीप मांहिला चुल्ल लघु हिमवंत

वर्षधर पर्वत वर्ष कहतां क्षेत्रतेहनो मर्यादाना करणहार ५ अने शिखरीपर्वत ५ एकेक १०० योजन ऊंचा जाणिवा । अने एकेक १०० गाऊ उद्वेधपणे

भूमि मांहि ऊंडपणें कह्या । उत्तर कुरु मांहि नीलवंतादिक ५ द्रहछे एकेक द्रहने विहुंपासे दस दस कांचन गिरिछे सर्वमिली १०० थया । देवकुरुमां

हि निषधादिक ५ द्रहछे एकेक द्रहने विहुंपासे दस दस कांचनगिरिछे सर्वमिली १०० योजन देवकुरु उत्तरकुरु मिली २०० कांचनगिरि छे । जंबूद्वीप

मांहि बेगुणा धातकी खंड पुष्करार्द्धमांही तेसगलाई सो सो योजन ऊंचा कह्या । एकेकसो गाउ उद्वेधें भूमि मांहि ऊंडा एकेकसो योजन मूलें एतला

पिहुला कह्या । इति १०० मो समवाय थयो ॥ १०० ॥ हिवे १५० मो समवाय लिखेछे । चंद्रप्रभ आठमा अरिहंत १५० धनुष ऊंचा ऊं

॥ टीका॥

.पद्माप्रच्छतादि हृद्या तां कुर्व्वंनाह चंदप्पहेत्यादि सुगमञ्च सर्वमाद्यादृशाङ्गगणिपिटकसूत्रा मवरं ॥ १५० ॥ २०० ॥ पासायवडिंसयत्ति अवतंसका: शेखरका: कर्ण पूराणिवा अवतंसका: प्रधानाइत्यर्थ: प्रासादाश्च ते अवतंसका: प्रासादानाम्वा मध्ये अवतंसका: प्रासादावतंसका: ॥ २५० ॥ तथा पंचधणुसतियस्सणमित्यादि

॥ मूल ॥

दिवड्ढं धणुसयं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्या आरणे कप्पे दिवड्ढं विमाणावाससयं प० एवं अच्चुएवि ॥ १५० ॥ सुपासेणं अरहा दोधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्या सव्वेविणं महाहिमवंतरुप्पीवासहरपव्वया दो दो जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० दोदोगाउयसयाइं उव्वेहेणं प० जंबूद्दीवेणं द्दीवे दोकंचणपव्वयसया प० पउमप्पन्नेणं अरहा अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्या असुरकुमाराणं देवाणं पासायवडिंसगा अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० ॥ २५० ॥ सुमईणं अरहा तिन्नि धणुसयाइं उड्ढं

॥ भाषा ॥

चपणें हुया। इग्यारमा आरणदेव लोकने विषे १५० विमाना वासा कह्या। बारमेअच्युतकल्पे १५० विमान बिहूंमिली ३०० विमानछे। इति १५० नो थयो ॥ १५० ॥ हिवे २०० नो लिखेछे। सातमा सुपार्श्व अरिहंत २०० धनुष ऊंचा ऊंच पणें थया। सगला महाहिमवंत पांच रूपी वर्षधर अढाई द्वीप मांहिला बेबेसो योजन ऊंचा ऊंच पणें हुया। बेबेसे गाऊ उद्वेधपणे भूमिमांहि ऊंड पणें कह्या। जंबूद्वीपने विषे २०० कांचन पर्वत ते पूर्वे कह्याछे॥ इति २०० मो थयो ॥ २०० ॥ हिवे २५० मो लिखेछे। छठ्ठा पद्मप्रभ अरिहंत २५० धनुष ऊंचाऊंच पणें हुया। असुरकुमार ते भवनपति देवतानां प्रासादावतंसक मोटाप्रासाद २५० योजन ऊंचाऊंच पणें कह्या॥ इति २५० मो थयो ॥ २५० ॥ हिवे ३००

पञ्चधनु: शतप्रमाणस्य अंतिमसारीरियस्सत्ति चरमशरीरस्य सिद्धिङ्गतस्य सातिरेकाणि त्रीणिशतानि धनुषां जीवप्रदेशावगाहना प्रज्ञप्ता यतोसौ शैलेशीकर णसमये शरीररन्ध्रपूरणेन देहत्रिभाग स्विमुच्य घनप्रदेशोभूत्वा देहत्रिभागद्वयावगाहन: सिद्धिमुपगच्छति सातिरेकत्वञ्चैवं तिन्निसयातित्तीसा धणुत्तिभागोय ॥ टीका ॥

॥ १५७ ॥ उच्चत्तेणं होत्था अरिठनेमीणं अरहा तिन्निवाससयाइं कुमारवासमज्झे वसित्ता मुंडे नवित्ता जाव पव्व इए वेमाणियाणं देवाणं विमाणपागारा तिन्नि तिन्नि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० समणस्स नगवत्त महावीरस्स तिन्निसयाणि चोद्दसपुव्वीणं होत्था पंचधणुसइयस्सणं अंतिमसारीरियस्स सिद्धिगयस्स साति रेगाणि तिन्निधणुसयाणि जीवप्पदेसोगाहणा प० ॥ ३०० ॥ पासस्सणं अरहत्त पुरिसादा ॥ मूल ॥

मो लिखेछे । पांचमा सुमतिनाथ अरिहंत ३०० धनुष ऊंचा ऊंच पणेंहुया । बावीसमा अरिष्टनेमी अरिहंत ३०० वर्ष कुमारपणें वसी मुंडथया ७०० वर्ष दीक्षापाली सिद्धथया सर्वदुःख प्रक्षीण थया । वैमानिक देवताना विमाननाप्राकार गढ ३०० योजनऊंचा उंचपणें कह्या । श्रमण भगवंत श्री महावीरनें ३०० चौदह पूर्वधरहुया । ५०० धनुष जेहनूं शरीर होय अंतिम शारीरी होय चरमशरीरी होय चरम सिद्धियें पहुतो होय तेहने सिद्धिने विषे ३०० धनुष झाझेरा तेउपरि ३३ धनुष जीवप्रदेशनी अवगाहणाकही । केवलीनांजेतलो शरीर होय उंचपणें तेहनां ३०० भाग करीयें त्रीजे भागे नासिका कर्णादिक ना शरीरांतर्गत पोलार पूरीयें पछे २ भाग जीव सिद्धिउपर योजनने २४ मे भागे आकाश प्रदेश छांईनेरहेतो ५०० धनुष त्रिभागोक्षत शरीरना ३३३ ध नुषभावे एतला सिद्धना जीवनो अवगाहणा जीव प्रदेश समान इति ३०० मो समवायथयो ॥ ३०० ॥ हिवे ३५० मो लिखेछे पार्श्वनाथ अरिहंत पुरु ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

. ह्योद्दबोधब्बो एसाखलुसिद्धाणं उक्कोसोमाहणाभणियत्ति ॥१॥ ३०० ॥ ३५० ॥ सव्वेविणंवक्खारपव्वएत्यादि वक्षस्कारपर्वता एकमेरुप्रतिबद्धाविंशति स्तेच वर्षधरा

॥ मूल ॥

णीयस्स अछ्ठसयाइं चोद्दसपुव्वीणं होत्था अभिनंदणेणं अरहा अछ्ठाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥ ३५० ॥ संभवेणं अरहा चत्तारिधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था सव्वेविणं णिसहनीलवंतावासहरपव्वया चत्तारि चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं चत्तारि चत्तारि गाउयसयाइं उब्वेहेणं प० सव्वेविणं वखार पव्वयाणिसढनीलवंत वासहरपव्वयएणं चत्तारि चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं चत्तारि चत्तारि गाउसयाइं उब्वेहेणं प० आणयपाणएसु दोसु कप्पेसु चत्तारिविमाणसया प० समणस्सणं भगवओ

॥ भाषा ॥

पादानो महा सोभागी तेहना ३५० चौदह पूर्वधर हुया । चौथा अभिनंदन अरिहंत ३५० धनुष ऊंचा ऊंच पणे कह्या । इति ३५० नो थयो ॥ ३५० ॥ हिवे ४०० नो लिखे छे । त्रीजा संभवनाथ अरिहंत ४०० धनुष ऊंचा ऊंच पणे हुया । सगलाही अढाई द्वीप मांहिला ५ निषध ५ नीलवंतवर्षधरपर्वत क्षेत्र मर्यादा कारी चार चार से योजन ऊंचा ऊंच पणे हुया । चार चार से गाउ उद्वेध पणे ऊंडपणे कह्या । जंबूद्वीप मांहि सगलाई वीस वक्षस्कार पर्वत छे ते किम महाविदेह मांहि ३२ विजय १२ अंतर नदी १६ वक्षस्कार ४ गजदंत छे तो १६ वक्षस्कार अने ४ गजदंत छे तो १६ वक्षस्कार अने ४ गजदंत मिली २० वक्षस्कार पर्वत कह्या । निषध नीलवंत वर्षधर एह पर्वत चार चार से योजन ऊंचा ऊंच पणे कह्या । सीता नदीने पासे मेरुने पासे ५०० योजन ऊंचा छे चार चार से गाउ उद्वेध पणे भूमि मांहि ऊंड पणे कह्या । आनत प्राणत नवमा दसमा देवलोकने विषे ४०० विमान कह्या ।

सत्तो चतुःचतुश्शतोच्चाः ॥४००॥४५०॥ शीतादिनदीप्रत्यासत्तौ मेरुप्रत्यासत्तौ च पञ्चशतोच्चा इति तथा सव्वेविणंवक्खारेत्यादि तत्र वर्षधरकूटानि शतद्वयमशीत्य ॥ टीका ॥

महावीरस्स चत्तारिसया वाईणं सदेवमणुयासुरंमि लोगंमि वाए अपराजियाणं उक्कोसिया वाइसंपया होत्था ॥ ४०० ॥ अजितेणं अरहा अद्धपंचमाइं धणुसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं होत्था सागरेणं रायाचाउरंतचक्कवट्टी अद्धपंचमाइं धणुसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं होत्था ॥ ४५० ॥ सव्वेविणं वक्खारपव्वयासीओ सीओआउ महानईउ मंदरेणं वापव्वएणं पंच पंच जोयणसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं पंच पंच गाउसयाइं उव्वेहेणं प० सव्वे विणं वासहरकूडा पंच पंच जोयणसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं मूले पंच पंच ॥ मूल ॥

श्रमण तपस्वी भगवंत श्रीमहावीरने ४०० वादीनी संपदा हुई। ते वादी केहवा छे। देवतायें करी सहित जे मनुष्य अने असुर भवनपत्यादिक लोक ते हने विषे अपराजित छे केहथी जीत्या न जाय एहवी उत्कृष्टी वादीनी संपदा हुई। इति ४०० नो समवाय संपूर्ण ॥ ४०० ॥ हिवे ४५० नो लिखे छे। अजितनाथ अरिहंत अर्द्ध पंचम साढा चार से धनुष उंचा उंच पणे हुया। सगर बीजो चक्रवर्ती राजा चिंहु दिशना अंतनो धणी ते ४५० धनुष उंचा उंच पणे हुया इति ४५० नो समवाय थयो ॥ ४५० ॥ हिवे ५०० नो लिखे छे। महा विदेह दीठ ३२ विजय मर्यादा कारी १६ वक्खार पर्वत अने ४ गजदंत एवं २० वक्खार निषध नीलवंतने पासे उंचा ४०० योजन अने शीता शीतोदा महानदीने पासे मेरुने पासे पांच पांचसे योजन उंचा उंच पणे ते २० वक्खार निषध नीलवंतने पासे ४०० गाउ उंडा भूमि मांहि अने मेरुने पासे ५०० सेगाउ उद्वेध पणे उंड पणे कह्या। वर्षधर ॥ भाषा ॥

धिकं कथं लघुहिमवन्तिसहे एक्कारसअठ्ठनगयकूडाइं नीलाद्सुतिसुनवगं अठ्ठिक्कारसजहासंखं एतेषा म्यश्वगुणत्वात् वक्षस्कारकूटानि त्वशीत्यधिकचतुः शतीसंख्या ॥ टीका ॥
नि कथं विज्जुपंहमालवंते नवनवसेसेसुसत्तसत्तेव सोलसवक्खारेमुं चउरोचउरोयकूडाइं एतेषा म्यचगुणत्वात् पंचगुणत्वं जम्बूद्वीपादिमिरूपलक्षितद्वैपाणां पंच

जोयणसयाइं विक्खंभेणं प० उसभेणं अरहा कोसलिए पंचधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था भरहेणं राया ॥ मूल ॥
चाउरंतचक्कवट्टी पंचधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था सोमणसगंधमादणविज्जुप्पभमालवंताणं वक्खारप
व्वयाणं मंदरपव्वयंतेणं पंच २ जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पंच पंच गाउयसयाइं उव्वेहेणं प० सव्वेविणं व
क्खारपव्वयकूडा हरिहरिस्सहकूडवज्जा पंच पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं मूले पंच पंच जोयणसयाइं

र कहिये हिमवंतादिक ६ कुलगिरी तेह उपरि कूट किहां इंक ११ छे किहां इंक ८ छे तो सगला वर्षधर कूट २८० छे ते पांच पांच से योजन उंचा ॥ भाषा ॥
मूले पांच पांचसे योजन विष्कंभपणे पिहुल पणे कह्या। आदिनाथ अरिहंत कोसल देसना उपना ५ से धनुष उंचा उंच पणे हुया। भरत राजा चातुरत
चक्रवर्ती ५ से धनुष उंचा उंच पणे हुया। मेरु पर्वत थको विदिशि थकी नीकल्या ४ गजदंत एहवा कह्या सोमनस १ गंधमादन २ विद्युत्प्रभ ३ मालवंत
४ एह चार वक्खार पर्वत मेरु पर्वतने पासे पांच पांच से योजन उंचा उंच पणे पांच पांच से गाउ उद्वेध पणे भूमि मांहि उंडपणे कह्या। सगलाई
वक्खार पर्वतना कूट पणि हरिकूट हरिसहकूट वर्जीने एतले एह २ कूट। गजदंत संबंधीकूट सहस्र योजन उंचा छे। ते माटे एह २ टालीने बीज
कूट पांच से योजन उंचा उंच पणे कह्या। मूलने विषे पांच पांच से योजन लांब पणे पिहुल पणे कह्या। सगलाई नंदनवनना कूट पणि दलकूट वर्जीने

॥ १५९ ॥

स्या अर्वाक्षेतानि पंचशतोच्छ्रितानि एवंमानुषोत्तराद्रिष्वपि वैताढ्यकूटानितु सक्रोशषट्योजनोच्छ्रयाणि वर्षकूटानितु ऋषभकूटादीन्यष्टयोजनोच्छ्रितानीति ॥ टीका ॥
हरिकूट हरिस्सहकूट वर्जनलिहतयो: सहस्रोच्चत्वात् आहच विज्जुप्पहहरिकूडो हरिस्सहोमालवंतवक्खारो तहनंदणवणकूडो उब्बिहाजोयणसहस्सांति ॥
५०० ॥ चुल्लहिमवंत कूडस्सेत्यादि इहभावार्थो हिमवान् योजनशतोच्छ्रित स्तत्कूट मपंचशतोच्छ्रितं इति सूत्रोक्तमन्तर भवतीति अभिचंदेणंकुलकरेत्ति

आयामविक्खंभेणं प० सब्वेविणं नंदणकूडावलकूडवज्जापंच २ जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं मूले पंच २ ॥ मूल ॥
जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु विमाणा पंचजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० ॥
५०० ॥ सणंकुमारमाहिंदेसु कप्पेसु विमाणा छजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० चुल्लहिमवंतकूड
स्स णं उवरिल्लाउ चरमंताउ चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स समधरणितलेएसणं छजोयणसयाइं अबा
हाए अंतरे प० एवं सिहरीकूडस्सवि पासस्सणं अरहउ छसयावाईणं सदेव मणुयासुरेलोए वाए अप
राजियाणं उक्कोसिया वाईसंपया होत्था अभिचंदेणं कुलगरे छधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था वासुपुज्जेणं

एतले बलकूट ते सहस्र योजन उंचा छे मोटाई टालीने बीजा सातकूट पांचपांचसे योजन उंचा उंच पणे मूलने विषे ५ से योजन लांबपणे पिहुलपणे ॥ भाषा ॥
कह्या । सौधर्म ईशान पहिले बीजे कल्पे विमान पांच पांच से योजन प्रमाणे उंचा उंच पणे कह्या । इति ५ से नो समवाय थयो ॥ ५०० ॥
हिवे ६ स्से नो लिखेछे । सनत्कुमार माहेन्द्र त्रीजे चौथा देवलोके विमान ६ स्से योजन उंचा उंचपणेकह्या। चूल्ल हिमवंत कूटनी उपरिली चरमांत

अभिचन्द्रः कुलकरो ऽस्यामवसर्पिण्यां सप्तानां कुलकराणां चतुर्थः तस्योच्छ्रयः षट्धनुःशतानि पंचाशदधिकानि । ६०० । श्रमणस्य भगवतोम ॥ टीका ॥
हावीरस्य सप्तजिनशतानि केवलिशतानीत्यर्थः तथा श्रमणस्य भगवतोमहावीरस्य सप्तवैक्रियशतानि वैक्रियलब्धिमत्साधुशतानीत्यर्थः अरिट्ठेत्यादि देसूणाइंति

अरहा छहिंपुरिससएहिं सद्धिं मुंडे भवित्ता अगाराउ अणगारियं पव्वइए ॥ ६०० ॥ ॥ मूल ॥
बंभलंतएसु कप्पेसु विमाणासत्त सत्त जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० समणस्सणं भगवउ महावीरस्स
सत्तजिणसया होत्था समणस्स भगवउ महावीरस्स सत्तवेउव्वियसया होत्था अरिट्ठनेमीणं अरहा सत्त

अने लघुहिमवंतवर्षधर पर्वतनो समोधरणीतल भूमिभाग ६ स्से योजन आबाधायें विचाले आंतरो कह्यो । एतले हिमवंत पर्वत १ सो योजन ऊंचोछे उप ॥ भाषा ॥
रि पांचसेनोकूटछे सर्वमिली ६ स्से योजन थया । वलीएमज छठा शिखरि पर्वत ने उपरिकूटछे तेहनो उपरिलोभाग तेहथकी पृथ्वीतल ६ स्से योजन थ
यो । पार्श्वनाथ अरिहंतने ६ स्से वादीथया तेकेहवा । देवता सहित मनुष्य तथा असुर भवनपत्यादिकछे जिहां एहवो त्रिहुंभुवन लक्षण लोकतेहने विषे
अपराजित जीत्यानजाय एहवा वादीनो उत्कृष्टी संपदा हुई । एह अवसर्पिणी कालने विषे सात कुलकर मांहि चौथो कुलकर अभिचंद्रनामा ६ स्से
धनुष ऊंचा ऊंच पणे हुया । बारमा वासु पूज्य अरिहंत ६ स्से पुरुष साथे मुंडथई गृहाश्रमथकी अनगार पणो पाम्या ॥ इति ६ स्से मो समवाय थयो
॥ ६०० ॥ हिवे ७ से मो लिखेछे । ब्रह्मलांतक पांचमे छठे देवलोके विमान सातसे योजन ऊंचा ऊंचपणे कह्या । श्रमण तपस्वी भगवंत महा
वीरना सातसे जिन केवली थया । श्रमण भगवंत महावीरने ७ से वैक्रिय लब्धिनाधणी हुया । बावीसमा अरिष्टनेमी अरिहंत १ से वर्ष कुमारपणे ७ से

वतु:पंचशताद्दिमानममूलानि तत्प्रमाणत्वाच्छस्यकालस्येति महाहिमवंतेत्यादौ भावार्थोयं हिमवान् योजनशतद्वयोच्छित तत्कूटंच पंचशतोच्छितमिति ॥ टीका ॥

वाससयाइं देसूणाइं केवलपरियागं पाउणित्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे महाहिमवंतकूडस्स णं उवरिल्लाउ ॥ मूल ॥
चरमंताउ महाहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स समधरणितले एसणं सत्तजोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प०
एवं रुप्पिकूडस्सवि ॥ ७०० ॥ महासुक्कसहस्सारेसु दोसुकप्पेसु विमाणा अठजोयणस
याइं उद्धं उच्चत्तेणं प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए पढमेकंडे अठसु जोयणसएसु वाणमंतरभोमेज्ज

वर्ष देशोन ५४ दिन ऊणा केवली पर्याय चारित्रपालीने संपूर्ण १ हजार वर्ष आऊखोपालीने सिद्धथया बुद्धतत्वना जाणथया सर्वदुःखथकी प्रचीण थया। ॥ भाषा ॥
महाहिमवंतवर्षधर २ से योजन ऊंचोछे ते ऊपरि ५ से योजन महाहिमवंत कूटछे सर्वमिली भूमि लगे ७ से योजन महाहिमवंत कूटनो उपरिलो चर
मांत तेहथकी महाहिमवंतवर्षधर पर्वतनो समोधरणो तल भूमिभाग ७ से योजन आवाधायें विचाले आंतरो कह्यो। एमज रूपी कूट ५ से योजन ऊंचो
रूपी पर्वत २ से योजन उंचो सर्वमिली ७ से योजन थया ॥ इति ७ से नो थयो ॥ ७०० ॥ हिवे ८ से नोलिखेछे। महा शुक्र सहस्त्रार सात
मे आठमे देवलोके विमान ८ से योजन उंचा उंच पणे कह्या। एह रत्नप्रभा पृथिवीना त्रिणकांड छे ते मांहि पहिलो खरकांड तेहना १६ विभाग तेह
मीं पहिलो रत्नकांड १ हजार योजन पिंड छे। ते मांहि १ सो योजन हेठे मूंकिए १ सो योजन उपर मूंकिये विचाले ८ से योजन ते मांहि काल पिशा
चादिक वान व्यंतर कह्या। ते केहवा छे भौम कहतां भूमि संबंधी नगर तिहां विहार क्रीडा करे व्यंतर देवता ते माटे वान व्यंतर भौमेयक विहार

सुवीतामगंतरभवतीति ॥ ७१० ॥ इमीसेणमित्यादि प्रथमंकाण्डं खरकाण्डं खरकाण्डस्य षोडशविभागस्य प्रथमविभागरूपं रत्नकाण्डं तत्र योज नसहस्रप्रमाणे अधउपरिच योजनशतद्वय म्विमुक्त्वाम्येष्वष्टसु योजनशतेषु वनेषु भवा यान स्तेच ते व्यन्तराश्च तेषां सम्बन्धिनः भूमिविकारत्वा द्भौमेयका स्तेच ते विहरन्ति क्रीडन्ति तेष्विति विहाराश्च नगराणि वानव्यन्तरभौमेयकविहारा इति अठ्ठसयत्ति अष्टशतानि केषामित्याह अणुत्तरोववाइयाणंदेवाणंति देवे षूत्पत्स्यमानत्वा द्देवा द्रव्यदेवा इत्यर्थः तेषाङ्गति देवगति लक्षणा कल्याणं येषान्ते गतिकल्याणा स्तेषामेवस्थिति स्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमलक्षणः कल्याणं येषांति ॥ टीका ॥

विहारा प० समणस्स णं भगवउ महावीरस्स अठ्ठसया अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं गइकल्लाणाणं ठिइ कल्लाणाणं आगमेसिभद्दाणं उक्कोसिया अणुत्तरोववाइया संपया होत्था इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए ॥ मूल ॥

कह्या छे। श्रमण तपस्वी भगवंत महावीरने ८ से यती अनुत्तर विमाने उपपात ऊपजवो छे जेहनो एहवा देवता तथागति देवगति लक्षण कल्याण छे जेहनो स्थिति कल्याण छे जेहनो। आगामिये कालें एक भवने आंतरे भद्र मोक्ष गमन लक्षण छे जेहने उत्कृष्टी एहवी अनुत्तरोपपातिक साधुनी संपदा हुई। एणीये रत्नप्रभा पहिली पृथिवी नो घणो समरमणीक भूमि भाग तेह थकी ८ सो योजन सूर्य चारचरे एतले समभूमिभाग थकी ७ से नेउ योजने तारा मंडल छे तेह उपरि दश योजन सूर्य सर्व मिली ८ सो योजन थया। अरिहंत अरिष्टनेमी बावीसमा तीर्थंकर ने ८ सो वादीनी संपदा हुई ते आशी जेहवा छे देवताये करी सहित मनुष्यलो असुर भवनपत्यादिक लोक एतले त्रिहुं भुवने वादने विषे अपराजित जीत्याम जाय एहवो ॥ भाषा ॥

॥ १६१ ॥

तथा तेषांतथाव्रतवृत्तामाममिध्यदागामिभद्रं कल्याणं निर्वाणगमनलक्षणं येषान्ते भागमिष्यद्भद्राः तेषां किमित्याह उक्कोसिएत्यादि ॥ ८०० ॥ ॥ टीका ॥

वज्जसमरमणिज्जाउ भूमिजागाउ अठहिं जोयणसएहिं सूर चारंचरति अरहउणं अरिठनेमिस्स अठस याइं वाईणं सदेवमणुयासुरंमि लोगंमि वाएअपराजियाणं उक्कोसिया वाईसंपया होत्था ॥ ८०० ॥ आणयपाणय आरणअच्चुएसु कप्पेसु विमाणा नवजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० निसढकूडस्सणं उवरि ल्लाउ सिहरतलाउ णिसढस्स वासहरपव्वयस्स समेधरणितले एसणं नवजोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० एवं नीलवंतकूडस्सवि विमलवाहणेणं नवधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था इमीसेणं रयणप्पभाए वज्जसमरम ॥ मूल ॥

उत्कृष्टी वादोनी संपदा हुई ॥ इति ८ सो नो थयो ॥ ८०० ॥ हिवे नौ से नो लिखे छे। आनत ९ प्राणत १० आरण ११ अच्युत १२ एह ॥ भाषा ॥
विहुं कल्पने विषे विमान नौ से योजन ऊंचा ऊंच पणे कह्या। निषध पर्वत चार से योजन ऊंचो तेह उपरि पांच से योजन निषध कूट छे सर्वमिली नवसे योजन थया। तो निषध कूटनो उपरिलो शिखरनो तलो तेहथकी निषध पर्वतनो वर्षधर पर्वतनो समोभूमितल नौ से योजन अवाधायें विचाले आंतरो कह्यो। एमज नीलवंत कूटथकी पणि धरणीतल नौसे योजन आंतरो उपरिलो शिखरनोतलो तेहथकी निषध पर्वतनो समो भूमितल नौसे योज न आंतरो कह्यो। एह अवसर्पिणी ये विमल वाहन पहिलो कुलगर ९ से धनुष ऊंचा ऊंच पणे हुया। एणीये रत्नप्रभा पृथिवीनो पहिलो घणो समरम णीक भूमिभाग तेह थकी ८ से योजने सर्व उपरिलो तारा रूप शनैश्चरनो तारो चार चरे छे। समभूतल थकी ७ से नव्वे योजन उपर तारा मंडल छे तेह

॥ टीका ॥

निसढकूडस्सणंमित्यादि इहायमावः निषधकूटस्य शतोच्छ्रितं निषधश्चतुःशतोच्छ्रितइति शतोत्तमन्तरम्भवतीति ॥ ९०० ॥ सव्वेविणंजमगेत्यादि उत्तरकुरुषु नीलवद्वर्षधरस्य दक्षिणतः शीतायामहानद्या उभयोः कूलयो र्द्वौ यमकाभिधानौ पर्वतौस्तः तेच पंचस्वप्युत्तरकुरुषु द्वयोर्द्वयो र्भावाद्दश एवं चित्त

॥ मूल ॥

णिज्ञाउ नूमिन्नागाउ नवहिंजोयणसएहिं सव्वुवरिमे ताराऊवे चारंचरइ निसढस्सणं वासहरपव्वयस्स उवरि ल्लाउ सिहरतलाउ इमीसेणं रयणप्पन्नाए पुढवीए पढमस्सकंमस्स वज्ञमज्ञदेसन्नाए एसणं नवजोयणसयाइं

॥ भाषा ॥

ने दस योजन उपरि सूर्य चरे छे तेह उपर ८० यो योजने चंद्रमा चरे छे तेह थी ४ योजने २८ नक्षत्र छे तेह थी ४ योजने बुधनो तारो छे। तेह थी ३ योजने शुक्र नो तारो छे तेह थी ३ योजन बृहस्पति नो तारो छे तेहने ३ योजन उपर मंगल नो तारो छे तेहथी ३ योजन उपर शनैश्वर नो तारो छे एवं नौ से योजन थया। निषध वर्षधर पर्वतना उपरला शिखरना तलथकी रत्नप्रभा पहिली पृथ्वी नो पहिलो कांडनो बहुमध्य देश भाग एह ९ से यो जन आवाधाये विचाले आंतरो कह्यो। एतले निषध पर्वत ४ से योजन ऊंचो अने रत्नप्रभानो पहिलो कांड हजार योजन तेहनो अर्द्ध ५ से योजननो एवं ९ से योजन थया। एमज नीलवंतना शिखरतल थी रत्नप्रभाना रत्नकांड नो मध्यभाग ९ से योजन जाणिवो॥ इति ९ से नो समवाय थयो ॥ ९०० ॥ हिवे हजार नो समवाय लिखे छे। सगलाई ९ ग्रैवेयक ना विमान ३१८ छे ते हजार योजन ऊंचा ऊंच पणे कह्या। सगलाई यमक पर्वत उत्तर कुरुने विषे नीलवंत पर्वत थो दक्षिण पासे शीता नदी ने बिहुं पासे २ यमक पर्वत छे मेरुदीठ बे बे करता ५ मेरुने पासे दस थाय ते दससे

॥ टीका ॥

विचित्रकूटा वति पंचसुदेवकुरुषु यमकवत्तत्क्षावात्पंचचित्रकूटाः पंच विचित्रकूटा इति सव्वेविणमित्यादि सर्वेपिहत्ता वैताढ्या विंशतिः शब्दापात्यादयः
सव्वेविणंहरीत्यादि हरिकूट भिद्युत्प्रभाभिधानेगजदन्ताकारवक्षस्कारपर्वते हरिसहकूटन्तुमाल्यवद्वक्षस्कारे तानिच पंचस्वपि मन्दरेषुभावात् पञ्चपञ्चभवन्ति

॥ मूल ॥

अबाहाए अंतरे प० एवंनीलवंतस्स वि ॥ १०० ॥ सव्वेविणं गेवेज्जाविमाणे दस दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० सव्वेविणं जमगपव्वया दस दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० दस दस गाउयसयाइं उव्वेहेणं प० मूले दस दस जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं प० एवं चित्तविचित्तकूडावि भाणियव्वा सव्वेविणं वट्टवेयड्ढपव्वया दस दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० दस दस गाउयसयाइं उव्वेहेणं प०

॥ भाषा ॥

योजन उंचा उंच पणे कह्या । दश दश से कोस उद्वेध पणे भूमि मांहि दश दश से योजन लगे आयाम विष्कंभ पणे लांबपणे पिहुलपणे कह्या । एमज ५ देवकुरुने विषे निषध थको उत्तरदिशे शीतोदा महानदीने बिहुंपासे सर्वमिलो दशचित्र विचित्रकूट यमक पर्वतनी परें जाणिवा । सगलाई वृत्त वैताढ्य बीस छे तेकिम जंबूद्वीप मांहि हिमवंत चेत्र मांहि रम्यक चेत्र ऐरवण्यत चेत्र मिलो बीस एवं ४ वृत्त वैताढ्य थया । ८ धातकी खंडमांहि ८ पुष्करार्द्धमां हि सर्वमिलो बीस शब्दापाती प्रमुख दश दश से योजन उंचा उंच पणे कह्या । दश दश से कोस उद्वेधपणे भूमिमांहि उंडपणे मूलने विषे हजार योजन पिहुलपणे । सगलाई समा गुर्जरदेश मांहि धानभरिवानो पालो तेहने संस्थाने संस्थित छे । १ हजार योजन आयाम विष्कंभपणे कह्या । मेरु पर्वत ने

सहस्रोच्छ्रितानि वक्खारकूडवज्जत्ति शेषवक्षस्कारकूटेष्वेव सुचलं नास्त्येतेष्वेवास्तीत्यर्थः एवंबलकूडाविति पंचसुमन्दरेषु पंचनन्दनवनानि तेषु प्रत्येकमैशान्या ॥ टीका ॥
न्दिशि बलकूटाभिधानं कूटमस्ति ततः पंचशतानि सहस्रोच्छ्रितानि च नंदनकूडवज्जत्ति शेषाणि नन्दनवनेषु प्रत्येकं पूर्वादिदिग्विदिग्व्यवस्थितानि चत्वारिंश

मूले दसेवजोयणसयाइं विक्खंभेणं प० सव्वत्यसमा पल्लयसंठाणसंठिया सव्वेविणं हरिहारिस्सहकूडावक्खार ॥ मूल ॥
पव्वयकूडवज्जा दस दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० मूले दसजोयणसयाइं विक्खंभेणं एवं बलकूडावि
नंदणकूडवज्जा अरहाविअरिट्ठनेमी दसवाससयाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धेजावसव्वदुक्खप्पहीणे पा
सस्सणं अरहओ दससयाइं जिणाणं होत्था पासस्सणं अरहओ दस अंतेवासीसयाइं कालगयाइं जावस

विहुंपासे चार गजदंत के आकारे पर्वतछे तेमांहि विद्युत्प्रभ गजदंतने उपर हरिकूटछे। माल्यवंत ने उपर हरिसहकूटछे। एहकूट पांचसे योजननांछे ॥ भाषा ॥
मेरु पर्वत मिलो १ हजार योजन उंचा उंच पणे कह्या। मूले मेरु १ हजार योजन पिहुल पणे छे शेष थाकता वक्षस्कार कूट वर्जी नें वक्षस्कार कूट
हजार योजन उंचा नथी तेहथो ते वर्जी ने कह्या। एमज ५ मेरुने विषे ५ नंदन वन छे। दिशि विदिशि ने विषे प्रत्येकें बलकूट नामें करी कूट छे । ते
५ बलकूट हजार योजन ना उंचा छे नंदन वन कूट वर्जी ने नंदन वनने विषे पूर्वादिक दिशे विदिशें ४० कूट छे ते हजार योजन उंचा नथी ए माटे
छोडीने कह्या। अरिहंत अरिष्टनेमी तीनसे वर्ष कुमार पणे सात से दीक्षा एवं हजार वर्षनो सगलो आयु पालीने सिद्ध थया तत्वना जाण थया सर्वदुः
ख प्रक्षीण थया। पार्श्वनाथ अरिहंतने १ हजार केवलीनो संपदा थई। पार्श्वनाथ अरिहंतना १ हजार शिष्य कालगत थको सीधा यावत् सर्वकरी स

संख्यानि नन्दनकूटानि वर्जयित्वा तानि साहस्रिकाणि न भवन्तीत्यर्थः अरहंतेत्यादि कुमारत्वे चीणिवर्षशता न्यनगारत्वे समेत्येवं दशशतानि पउमद्दहपुंडरी यद्दहत्ति पद्मद्रदः श्रीदेवीनिवासो हिमवद्वर्षधरपर्वतोपरिवर्त्ती पुण्डरीकद्रदो लक्ष्मीदेवीनिवासः शिखरिवर्षधरोपरिवर्त्तीति ॥ १००० ॥ ११०० ॥ तथा म ॥ टीका ॥

व्वदुक्खप्पहीणाइं पउमद्दहपुंडरीयद्दहा दस दस जोयणसयाइं आयामेणं प० ॥ १००० ॥ अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं विमाणा एक्कारसजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० पासस्सणं अरहओ इक्कारस सयाइं वेउव्वियाणं होत्था ॥ ११०० ॥ महापउममहापुंडरीयदहाणं दो दो जोयणसह ॥ मूल ॥

वदुःख प्रचीण थया। लघुहिमवंत पर्वत उपर पद्मद्रह छे शिखरी पर्वत उपर पुंडरीक द्रह छे एह बिहुं द्रह श्री अनें लक्ष्मी देवीना निवास भूत छे ते १ हजार योजन लांबपणे कह्या इति १ हजार नो समवाय थयो ॥ १००० ॥ हिवे ११ से नो लिखे छे। अनुत्तरोपपातिक देवताना विमान इग्यारह से योजन उंचा उंच पणे कह्या। पार्श्वनाथ अरिहंतने इग्यारह से वैक्रिय लब्धिवंत थया इति इग्यारह से समवाय थयो ॥ ११०० ॥ हिवे २ हजार नो लिखे छे। महाहिमवंत उपर महापद्मद्रह छे रुपी पर्वत उपर महा पुंडरीकद्रह छे ते श्री बुद्धि देवीना निवास भूत छे ते बे हजार योजन लांबपणे कह्यां। इति बे हजार नो समवाय थयो ॥ २००० ॥ हिवे ३ हजार नो लिखे छे। रत्नप्रभा पृथिवीना वज्रकांडना उपरला चरमांत थी लोहिताच कांडनो हेठिलो चरमांत तेह तीन हजार योजन अबाधायें विचाले आंतरो कह्यो। इति तीन हजार नो समवाय थयो ॥ ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

हापद्ममहापुण्डरीकह्रदौ महाहिमवद्रुक्मिवर्षधरयोरुपरिवर्त्तिनौ ह्रीबुद्धिदेव्योर्निवासभूताविति ॥ . २००० ॥ इमीसेणंरयणेत्यादि अयमिहभावार्थः रत्नप्रभापृथिव्याः प्रथमस्य षोडशविभागस्य खरकाण्डाभिधानकाण्डस्य वज्रकाण्डं नामरत्नकाण्डं द्वितीयं वैडूर्यकाण्डं तृतीयं लोहिताक्षकाण्डं चतुर्थं तानिच प्रत्येकं साहस्रिकाणीति तयाणां यथोक्तमन्तरम्भवतीति ॥ ३००० ॥ तिगिच्छिकेसरिह्रदौ निषधनीलवर्षधरोपरिस्थितौ धृतिकीर्त्तिदेवीनिवासाविति ४००० ॥ धरणितलेइत्यादि धरणीतले धरण्यांसमेभूभागइत्यर्थः रुचयनाभीओत्ति अट्ठपएसोरुयगो तिरियंलोगस्समज्झयारंमि एसपहवोदिसाणं एसे

॥ मूल ॥

स्साइं आयामेणं प० ॥ २००० ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए वयरकंडस्सउवरिल्लाउ चरमंताउ लोहियक्खकंडस्स हेठिल्ले चरमंत एसणं तिन्निजोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरं प० ॥ ३००० ॥ तिगिच्छिकेसरिदहा चत्तारि चत्तारि जोयणसहस्साइं आयामेणं प० ॥ ४००० ॥ धरणितलेमंदरस्सणं पव्वयस्स बहुमज्झदेसभाए रुययनाभीउ चउदिसि पंच २ जोयणसहस्साइं अबाहाए

॥ भाषा ॥

३००० ॥ हिवे ४ हजार नो लिखे छे। तिगिच्छिद्रह निषधने उपर नीलवंतने उपर केसरीद्रह ए बिहुं धृति देवी कीर्त्ति देवी ना निवास भूत छे ते ४ हजारयोजन लांब पणे कह्या इति ४ हजार नो समवाय थयो ॥ ४००० ॥ † × † × † + † × † ×

हिवे ५ हजार नो लिखेछे। धरणीनेविषें मेरु पर्वतनो बहुमध्य देश भाग रुचक तेहीज नाभिचक्र तुंबानी परे आठ प्रदेशी रुचक नाभि कह्या नाभिथकी चिंहुदिशि विदिशिपांच पांच सहस्र योजन अवाधाये विचाले आतरो कह्यो। मेरु पर्वत दश हजार योजन जाडो छे तेमाटे मध्यभाग थकी चिंहुदिशि

वभवेमणुदिसायंति ॥१॥ रुचकएव नाभि चक्रस्य तुंवमिवेति रुचकनाभि स्ततस्ततश्चत्वपिदिक्षु पंचसहस्राणि मेरु स्तस्य दशसहस्रविष्कभत्वादिति ॥ ५००० ॥ टीका ॥
००० ॥ इमीसेणमित्यादि रत्नकाण्डंप्रथमं पुलककांडंसप्तममिति सप्तसहस्राणि ॥ ७००० ॥ हरिवासेत्यादि इहार्थे गाथार्द्धं हरिवासेइग

॥१६४॥ मंदरपव्वए प० ॥ ५०० ॥ सहस्सारे कप्पे छविमाणावाससहस्सा प० ॥ ६००० ॥ ॥ मूल ॥
इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए रयणस्स कंडस्स उवरिल्लाउ चरमंताउ पुलगस्स कंडस्स हेठिल्ले चरमंते एसणं सत्तजोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ७००० ॥ हरिवासरम्मयाणं वासा अठ जोयणसहस्साइं साइरेगाइं वित्थरेणं प० ॥ ८००० ॥ दाहिणड्ढभरहस्स णं जीवा पाईण

पांचपांच हजार योजन पामीये। इति पांच हजारनो थयो ॥ ५००० ॥ हिवे ६ हजार नो लिखे छे। सहस्रार आठमे देव लोकें ६ हजार वि ॥ भाषा ॥
मान कह्या इति ६ हजार नो समवाय थयो ॥ ६००० ॥ हिवे ७ हजार नो लिखेछे। एणी ये रत्नप्रभा पृथिवी नो पहिलो रत्नकांड तेहनो उपरिलो चरमांत तेहथकी पुलककांड सातमो तेहने हेठिलो चरमांत सातहजार योजन लगे आबाधाये विचाले आंतरो कह्यो ॥ इति सात हजार नो थयो ॥ ७००० ॥ हिवे आठ हजारनो लिखेछे। एह प्रत्येक हजार योजन छे तेमाटे युगलियाना हरिवर्ष अने रम्यक वासक्षेत्र ८ सहस्र योजन सातिरेक झांझेरा एतले एकवीस योजन उगणिसहाइया एककला विस्तारपणे पिहुलपणे कह्या ॥ इतिआठ हजारनो थयो ॥ ८००० ॥

वीसा चुलसीवसयाकलायएकायत्ति ॥ ८००० ॥ दाहिणेत्यादि दक्षिणीभागो भरतस्येति दक्षिणार्द्धभरतं तस्य जीवैवजीवा ऋज्वीसीमा प्राचीन म्पूर्वतः प्रतीचीन म्पश्चिमत आयता दीर्घा प्राचीनप्रतीचीनायता दुहओत्ति उभयतः पूर्वापरपार्श्वयोरित्यर्थः समुद्रं लवणसमुद्रं स्पृष्टा शुभवतोनवसहस्राण्यायामत इत्योक्ता स्थानान्तरेतु तद्विशेषोऽयं नवसहस्राणि सप्तशतान्यष्टचत्वारिंशदधिकानिद्वादशच कला इति ॥ ८००० ॥ १०००० ॥ ॥ टीका ॥

पडीणायया दुहउ समुद्दं पुठा नवजोयणसहस्साइं आयामेणं प० ॥ ९००० ॥ मंदरेणं पव्वए धरणितले दसजोयणसहस्साइं विक्खंभेणं प० ॥ १००० ॥ जंबूद्दीवेणं दीवे एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं प० ॥ १००००० ॥ लवणेणं समुद्दे दोजोयणसयसहस्साइं ॥ मूल ॥

हिवे नवहजार नो लिखेछे। दक्षिणार्द्ध भरतनी जीवा सरल समा प्राचीन पूर्वथकी मांडी प्रतीचीन पश्चिमें आयत लांबी पूर्व समुद्र अने पश्चिम समुद्र लगी स्पर्शीछेते नवसहस्र योजन आयामपणे लांबपणेकह्यो इति ९ हजारनोथयो ॥ ९००० ॥ हिवे दश हजार नो लिखेछे। मेरुपर्वत धरणीतले दश सहस्र योजन पिहुलपणें कह्यो इति दश हजार नो थयो ॥ १०००० ॥ हिवे लाख नो लिखेछे। असंख्यात द्वीप मांहि मध्य जंबूद्वीप शतसहस्र एतले लाख योजन लांबपणें पिहुलपणें कह्यो इति लाखनो थयो ॥ १००००० ॥ हिवे बे लाखनो लिखेछे। लवण समुद्र पहिलो बे लाख योजन पिहुल पणें चक्रवाल चक्राकारे जंबूद्वीपने वीटो रह्यो छे॥ इति बे लाख नो थयो ॥ २००००० ॥ हिवे त्रिण लाख नो लिखे छे। ॥ भाषा ॥

१०००० ॥ २००००० ॥ ३००००० ॥ ४००००० ॥ लवणेत्यादि तत्र जम्बूद्वीपस्य लक्षं चत्वारि च लवणस्येति पंच ॥ ५००००० ॥ ॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

चक्कवाल विक्खंभेणं प० ॥ २००००० ॥ पासस्सणं अरहत तिन्निसयसाहस्सीउ सत्तावी

॥१६५॥ संचसहस्साइं उक्कोसिया साविया संपया होत्था ॥ ३००००० ॥ धायइखंडेणं दीवे चत्तारि

जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं प० ॥ ४००००० ॥ लवणस्स णं समुद्दस्स पुरत्थिमिल्लाउ

चरमंताउ पच्चत्थिमिल्ले चरमंते एसणं पंचजोयणसयसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ५००००० ॥

भरहेणं राया चाउरंतचक्कवट्टी छपुव्वसयसहस्साइं रज्जमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता अगाराउ अणगारियं

॥ भाषा ॥

पार्श्वनाथ अरिहंतने त्रिण लाख उपरि वली सत्तावीस हजार उत्कृष्टी श्राविकानी संपदा हुई ॥ इति त्रिण लाखनो थयो ॥ ३००००० ॥
हिवे चार लाखनो लिखे छे। बीजो धातकी खंड द्वीप चार लाख योजन चक्रवाल विष्कंभपणें पिहूलपणें कह्यो ॥ इति चार लाख नो थयो ॥ ४००००० ॥ हिवे पांच लाखनो लिखेछे। लवण समुद्र ना पूर्व चरमांत थकी पश्चिम चरमांत पांच लाख योजन अबाधाये विचाले आंतरो कह्यो ॥ पूर्व लवण समुद्र ना बेलाख लीजे अने पश्चिम समुद्र लवणपणि बेलाख विचे जंबूद्वीप लाख सर्वमिली पांच लाख योजन थया ॥ इति पांच लाखनो थयो ॥ ५००००० ॥ हिवे छ लाखनो लिखेछे। श्री आदीश्वरनो वृद्ध पुत्र भरत राजा चातुरंत चक्रवर्ती सतहुत्तरी पूर्व लाख वर्ष कुमारपणें रह्या छ लाख पूर्व महाराज पणें वसीने मुंड थया अगार थकी अनगारी थया। एतले यतीपणो पाम्या। इति छ लाखनो थयो ॥ ६०००००

६००००० ॥ जंबूद्दीवस्सेत्यादि तत्र सप्त जंबूद्वीपस्य द्वे लवणस्य चत्वारि धातकीखण्डस्येति सप्तलक्षाण्यन्तरं सूत्रोक्तं भवतीति ॥ ७००००० ॥ ॥ टीका ॥
८००००० ॥ अजितस्यार्हत: सातिरेकाणि नवावधिज्ञानि सहस्राण्यतिरेकश्च चत्वारिंशतानि इदं सहस्रस्थानकमपि सप्तलक्षस्थानकाधिकारे यदधी

पन्नइए ॥ ६००००० ॥ जंबूद्दीवस्सणं दीवस्स पुरत्थिमिल्लाउ वेइयंताउ धायइखंडचक्कवा
लस्स पच्चत्थिमिल्ले चरमंते सत्तजोयणसयसहस्साइं अवाहाए अंतरे प० ॥ ७००००० ॥ मा
हिंदेणं कप्पे अठविमाणवाससयसहस्सा प० ॥ ८००००० ॥ अजियस्सणं अरहउ साइरेगा
इं नवउहिनाणिसहस्साइं होत्था ॥ ९००० ॥ पुरिससीहेणं वासुदेवे दसवाससयसहस्साइं ॥ मूल ॥

हिवे सात लाखनो लिखेछे। जंबूद्वीपना पूर्वदिशिना वेदिकानां प्रांतथकीमांडी धातकी खंड चक्रवालरूप तेहनो पश्चिम चरमांत सातलाख योजन आवा ॥ भाषा ॥
धायें विचाले आंतरो कह्यो तेकेम। जंबूद्वीप १ लाख योजन लवण समुद्र २ लाख धातकीखंड ४ लाख सर्वमिली ७ लाख योजन थया। इति ७ लाखनो
थयो ॥ ७००००० ॥ हिवे ८ लाखनो लिखेछे। माहेंद्र चोथे कल्पे ८ लाख विमान कह्या ॥ इति ८ लाख नो थयो ॥ ८००००० ॥
हिवे ९ हजार नो लिखेछे। अजितनाथ अरिहंतना सातिरेके ४० अधिक ९ सहस्र अवधि ज्ञानी हुआ। लाख लगी संख्या कहइ वली उपराठा ९ सहस्र
कह्या ते सूत्रनी गति विचित्र छे एहवी अथवा लेखकने प्रमाद थो जाणिवा ॥ इति ९ हजारनो थयो ॥ ९००० ॥ हिवे दश लाखनो लिखे छे

॥ टीका ॥

तन्नत् सहस्रशब्दसाधर्म्यो द्विचित्वाद्वा सूत्रगते लेखकदोषाद्वेति ॥ ८००० ॥ पुरुषसिंहः पञ्चमवासुदेवः ॥ १०००००० ॥ समणेत्यादि किलभगवान्पोटिलाभिधानो राजपुत्रो बभूव तत्र वर्षकोटिम्प्रव्रज्या म्पालितवानित्येकोभवः ततो देवोभूदिति द्वितीय स्ततोनन्दनाभिधानो राजसूनुः छत्राग्रनगर्यां जज्ञे इति तृतीयः तत्र वर्षलक्षम् सर्वदा मासक्षपणेन तप स्तप्त्वा दशमदेव लोके पुष्पोत्तरवरविजयपुण्डरीकाभिधाने विमाने देवोभवदिति चतुर्थ स्ततो ब्राह्मणकुण्डग्रामे ऋषभदत्तब्राह्मणस्य भार्याया देवानन्दाभिधानायाः कुक्षावुत्पन्न इति पञ्चम स्तत स्त्र्यशीतितमे दिवसे क्षत्रियकुण्डग्रामे नगरे सिद्धार्थमहाराजस्य त्रिशलाभिधानभार्यायाः कुक्षाविन्द्रवचनकारिणा हरिनैगमेषि नाम्ना देवेन संहृत स्तीर्थकरतया च जातइति षष्ठः उक्तभव

॥ मूल ॥

सव्वाउयं पालइत्ता पंचमाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ने ॥ १०००००० ॥ समणेभगवंमहावीरे तित्थगरभवग्गहणाउ छट्ठे पोट्टिलभवग्गहणे एगं वासकोडिं सामन्नपरियागं पाउणित्ता

॥ भाषा ।

धर्मनाथ कालीन पुरुषसिंह पांच मो वासुदेव दश लाख वर्ष लगे सगलो आउखो पालीने पांचमी धूमप्रभा पृथिवीने विषे नारकीपणें ऊपनोछे ॥ इतिदश लाख नो थयो ॥ १०००००० ॥ हिवे एक कोटिनो लिखेछे। श्रमण भगवंत महावीर तीर्थंकर पणो उपार्ज्यो ते भवनाग्रणहथकी एतले तेभवथकी पोटिलाना भवग्रहणे एक कोटिवर्ष लगे सामान्य पर्याय दीक्षापालीने आठमें देवलोके सर्वार्थ सिद्ध विमाने देवतापणें ऊपना ते छट्ठो भव केम श्रीमहावीर नो जीव पूर्व भवे पोटिलनाम राजा हुआ थो एक भव १ तिहां कोटि वर्ष प्रमाणे चारित्र पालीने बीजे सहस्रारे देव लोके देवता हुआ थो बीजो भव तिहां थी त्रीजे भवे छत्राग्र नगरीये नंद राजा हुया तिहां गृहस्थपणे २४ लाख वर्ष रह्या। पछे १० लाख वर्ष चारित्र पाली ११ लाख ८५ सहस्र ६ से ४५

ग्रहणं हि विना नान्यद्भवग्रहणं षष्ठं श्रूयते भगवत इत्येतदेव षष्ठभवग्रहणतया व्याख्यातं यस्माच्च भवग्रहणा दिदं षष्ठं तदप्येतस्मात्षष्ठमेवेति सुष्ठूच्यते तीर्थंक रभवग्रहणात्षष्ठे पोट्टिलभवग्रहणे इति ॥ १००००००० ॥ उसभेत्यादि उसभसिरिस्सत्ति प्राकृतत्वेनश्रीऋषभ इति वाच्येव्यत्ययेननिर्देशः कृतः एकसागरोपमकोटाकोटी द्विचत्वारिंशता वर्षसहस्रैः किञ्चिदूनाधिकैरूनाप्यसत्या द्विशेषस्या विशेषितोक्तेति ॥ + ॥ इहयएतेअनंतरं संख्याक्रमस म्बन्धमात्रेण सम्बद्धाविविधा वस्तुविशेषाउक्ता स्तएवविशिष्टतरसम्बन्ध संबद्धा द्वादशांगे प्ररूप्यन्तइति द्वादशाङ्गस्यैव स्वरूपमभिधित्सुराह ॥ दुवाल संगेइत्यादि अथ चोत्तरोत्तरसंख्याक्रमसंबद्धार्थ प्ररूपणमनन्तरमकारि साम्प्रतंसंख्यामात्रसंबद्धपदार्थ प्ररूपणायोपक्रम्यते दुवालसंगेइत्यादि तच्चश्रुतपरमपुरुष ॥ टीका ॥

सहस्सारे कप्पे सवठ विमाणे देवत्ताए उववन्ने ॥ १००००००० ॥ उसभस्स भगवउ महावीरस्स य एगासागरोवमकोडाकोडी अबाहाए अंतरे प० ॥ ॥ दुवालसंगे गणिपिडए ॥ मूल ॥

मास खमण करी चौथे भवे दसमे देव लोके देव हुया । तिहां थकी पांचमे भवे ब्राह्मण कुंड ग्रामे नगरे ऋषभदत्त ब्राह्मणनी भार्या देवानंदाने कूखेंउप ना ५ तिहां थकी ८३ मे दिने खत्रीयकुंड ग्राम नगरे सिद्धार्थ राजाने घरे इन्द्रनी आज्ञाये हरिणे गमेषी देवें त्रिशला देवीनो कूखें अवतर्या एह छठो भव आणवो इति एक कोटी नो थयो ॥ १००००००० ॥ हिवे सागरोपमनो लिखे छे। श्री आदिनाथ भगवंतने छेहला श्रीमहावीरने बेंयालीस सहस्र ऊणो एक सागरोपम कोडा कोडी आवाधायें विचाले आंतरो कह्यो। एकदकी मांडी कोडा कोडीनो संख्या कही ॥ ॥ हिवे द्वादशांग ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

स्वांगानी वाङ्गानि द्वादशाङ्गानि आचारादीनि यस्मिंस्तद्द्वादशांगं गुणानांगणोस्यास्तीतिगणी आचार्यस्तस्यं पिटकमिवपिटकं सर्वस्वभाजनं गणिपिटकं अथ वा गणिशब्दः परिच्छेदवचन स्तथाचोक्तम् आयारंमिअहीए जंनाओहोइसमणधम्मोउ तम्हाआयारधरो भण्णइपढमंगणिठ्ठाणं परिच्छेदस्थानमित्यर्थः ततश्च

॥ १६७ ॥ परिच्छेदसमूहो गणिपटकमथवैवंपदघटना यदेतद्गणिपिटकं तत्द्वादशांगंप्रज्ञप्तम् तद्यथा आचारः सूत्रकृतइत्यादि सेकिंतमित्यादि अथ किंतदाचारवस्तु यद्वा अथ कोयमाचारः आचरणमाचारः आचार्यत इति वा आचारः साध्वाचरितो ज्ञानाद्यासेवनविधिरिति भावार्थः एतत्प्रतिपादकोग्रन्थोप्याचारएवोच्यते आयारेणंति अनेनाचारेण करणभूतेन श्रमणानामाचारोव्याख्यायत इति योगः अथवा चारेधिकरण भूते णमितिवाक्यालंकारे श्रमणानां तपःश्रीसमालिं

॥ मूल ॥

प० तं० आयारे सूयगडे ठाणे समवाए विवाहपन्नत्ती णायाधम्मकहाउ उवासगदसाउ अंतगडदसाउ अणुत्तरोववाइयदसाउ पराहावागरणाइं विवागसुए दिठिवाए सेकिंतं आयारे आयारेणं समणाणं निग्गं

॥ भाषा ॥

नो वर्णन करे छे। इग्यारह अंग बारमो पूर्व एवं श्रुत रूप परम पुरुष ने १२ अंगसरीखाअंग वली केहवाछे गणीकहीये आचार्य तेहने पेटी सरीखो दर्शन चारित्र तेहनो स्थान कह्यो। तेकहेछे। आचारांग १ सूयगडांग २ ठाणांग ३ समवाय ४ विवाहपन्नती एतले भगवतीसूत्र ५ ज्ञाताधर्मकथा ६ उपासकदशा ७ अंतगडदशांग ८ अनुत्तरोपपातिक दशा ९ प्रश्नव्याकरण १० विपाक सूत्र ११ दृष्टिवादपूर्व १२ अथ स्यूंते आचार वस्तु अथवा कोण ते आचार। आचरवो ते आचार। अथवा आचरिये ते आचार ज्ञानादिक आसेवनविधि तेहनो प्रतिपादक ग्रंथ पणि आचार कहिये ते आचारांगने विषे श्रमण तपस्वी तेह निर्ग्रंथ बाह्याभ्यंतर ग्रंथि रहित तेहना आचार तेज्ञानादिक आचार गोचरतेभिक्षा ग्रहण ज्ञानादिक तेविनय वैनयक तेहनोफलकर्मक्ष

गितानां निर्ग्रन्थानां सबाह्याभ्यन्तरग्रन्थरहितानां श्रमणानां निर्ग्रन्थाएवभवन्तीति विशेषणं किमर्थमित्युच्यते शाक्यादिव्यवच्छेदार्थं मुक्ताश्च निर्ग्रंथसक्कतावस गेरुयआजीवपंचहासमणत्ति तत्राचारो ज्ञानाद्यनेकभेदभिन्नः गोचरोभिक्षाग्रहणविधिलक्षणो विनयोज्ञानादिविनयः वैनयिकं तत्फलं कर्मक्षयादिस्थानं कायोत्सर्गोपवेशनशयनभेदा त्रिरूपं गमनं विहारभूम्यादिषु गतिश्चंक्रमणमुपाश्रयांतरे शरीरश्रमव्यपोहार्थमितस्ततः सञ्चरणं प्रमाणं भक्तपानाद्यवहारोपध्या देर्मानं नियोजनं स्वाध्यायप्रत्युपेक्षणादिव्यापारेषु परेषां नियोजनं भाषासंयतस्य भाषासत्याऽसत्या मृषारूपाः समितयईर्यासमित्याद्याःपञ्च गुप्तयोमनोगुप्त्या दयस्त्रिस्रः तथाच शय्याचवसतिरुपधिश्च वस्त्रादिकोभक्तं चाशनादिपानं चोष्णोदकादीतिद्वंद्व स्तथा उद्गमोत्पादनैषणा लक्षणानांदोषाणां विशुद्धिरभाव उद्ग मोत्पादनैषणाविशुद्धि स्ततः शय्यादीनामुद्गमादि विशुद्धाशुद्धानां तथा विधकारणे ऽशुद्धानांचग्रहणं शय्यादिग्रहणं तथा व्रतानि मूलगुणा नियमाउत्तरगु ॥ टीका ॥

थाणं आयारगोयरविणयवेणइयठाणगमणचंकमणपमाणजोगजुंजणभासासमितिगुत्तीसेज्जोवहिभत्तपाणउ ॥ मूल ॥

य स्थापना कायोत्सर्ग गमन विहार भूमिचालवो । चंक्रमण उपाश्रयांतरे उपाध्यायादिकने अर्थे भमिवो । प्रमाण भक्तपानोपध्यादिकनो मान । योग योजन प्रतिलेखनादिकनेविषे परने योजवो व्यापारिवो । भाषासंयत मिश्र मृषाभाषात्यागरूप समिति ईर्यासमित्यादिक ५ गुप्ति गोपिवो । शय्यावसतिउप धि वस्त्रादिक । भात अशनादिक पान उष्णादिक पाणी उद्गमदोष १६ उत्पादनदोष १६ एषणा गवेशणा लक्षण दोषनी विशोधी अभाव । शुद्धभक्तपानादि कनो ग्रहिवो । तथा कारणे अशुद्धनो शय्यादिकनो ग्रहिवो । व्रत मूलगुण नियम उत्तरगुण । तपउपधान ते १२ बारे भेदे तप । एहसर्व सुप्रशस्तभलो जेह आचारांग ने विषे कह्यो जायछे । ते आचार संक्षेपे करी पांच प्रकारे कह्यो । तेकहेछे । ज्ञानाचार श्रुतज्ञान विषयी कालाध्ययनादिक रूप आठप्रका ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

चास्तपउपधानं द्वादशविधंतपः तत आचारश्च गोचरश्चेत्यादि यावक्षुमयश्च शय्यादिगृहणं चव्रतानिच नियमाश्च तपउपधानं चेतिसमाहारद्वंद्व स्तञ्चतत्सुप्रश
स्तंचेति कर्म्मधारयः एतत्सर्वमाख्यायते भिधीयते एतेषु चाचारादिपदेषु यत्क्वचिदन्यतरोपादाने अन्यतरगतार्थस्याभिधानं तत्सर्वंतत्प्राधान्यख्यापनार्थमेवेत्यवसेय
मिति सेसमासइत्यादि स आचरोयमधिकृत्य गृन्यस्याचारइतिसंज्ञाप्रवर्त्तते समासतः संक्षेपतः पञ्चविधः प्रज्ञप्त स्तद्यथा ज्ञानाचारइत्यादि तत्रज्ञानाचारः श्रु
तज्ञानविषयः कालाध्ययनविनयाध्ययनादिरूपो व्यवहारोऽष्टधा दर्शनाचारः सम्यक्त्ववतांव्यवहारो निःशंकितादिरूपोऽष्टधा चारित्राचारश्चारित्रिणां समि
त्यादि पालनात्मकोव्यवहारः तपः आचारो द्वादशविधतपोविशेषानुष्टितिः वीर्याचारो ज्ञानादिप्रयोजनेषुवीर्यस्यागोपनमिति आयारत्ति आचारगृन्यस्य ण
मित्यलङ्कारे परित्तासंख्येया आद्यन्तोपलब्धे र्नानन्ताभवन्तीत्यर्थः कावाचना सूत्रार्थप्रदानलक्षणा अवसर्प्पिण्युत्सर्प्पिणीकालं वा प्रतीत्यपरीतेति संख्येयान्यनु

॥ मूल ॥

गमउप्पायएसणाविसोहिसुद्धासुद्धग्गहणवयणियमतवोवहाणसुप्पसत्थमाहिज्जइसे समासउ पंचविहो प०
तं० णाणायारे दंसणायारे चरित्तायारेतवायारे वीरियायारे आयारस्सणंपरित्तावायणा संखेज्जाअणुउगदारा
संखेज्जाउपडिवत्तीउ संक्केज्जावेढा संक्केज्जासिलोगा संक्केज्जाउनिज्जुत्तीउ सेणंअंगठयाए पढमेअंगेदो

॥ भाषा ॥

रे १ दर्शनाचार निःशंकितादिरूप आठप्रकारे २ चारित्राचार आठप्रवचनमातारूप समिति गुप्ति लक्षण ३ तपआचार १२ भेदें तपनो करिवो ४ वीर्या
चार ज्ञानादिक प्रयोजन ने विषे वीर्यनो अगोपिवो ५ आचारांगगृंथना संख्याता वाचना सूत्रार्थप्रदानरूप संख्याता अनुयोग द्वार अनुयोगव्याख्या तेहनो
द्वार उपक्रमादिक । संख्याता प्रतिपत्ति द्रव्यादिक पदार्थनो मतांतर तेप्रतिपत्ति । संख्यातावेढा छंद विशेष२ संख्याता श्लोक अनुष्टुप आदिक । संख्याता

॥ टीका ॥

योगद्वाराणि उपक्रमादीनि अध्ययनानामेव संख्येयत्वात् प्रज्ञापकवचनगोचरत्वाच्च संक्खेज्जाओपडिवत्तीओत्ति द्रव्यादिपदार्थाभ्युपगमा मतान्तराणीत्यर्थः प्रतिमाद्यभिगृहविशेषा वा संखेज्जावेढत्ति वेष्टकाश्छन्दोविशेषा एकार्थप्रतिबद्धवचनसंकलिकेत्यन्ये संक्खेज्जासिलोगत्ति श्लोका अनुष्टुप्छन्दांसि संख्यातानिर्युक्तयः निर्युक्तानां सूत्रेभिधेयतया व्यवस्थापितानामर्थानां युक्तिर्घटनाविशिष्टायोजना निर्युक्तियुक्ति रेतस्मिंश्चवाच्ये युक्तशब्दलोपान्निर्युक्तिरित्युच्यते एताश्चनिक्षेपनिर्युक्त्याद्याः संख्येयाइति सेणमित्यादि स आचाराणमित्यलङ्कारे अंगार्थतया अङ्गलक्षणवस्तुत्वेन प्रथममंगं स्थापनामधिकृत्य रचनापेक्षयातुद्वादशमंगं प्रथमं पूर्वन्तस्य सर्वप्रवचनात्पूर्वं क्रियमाणत्वादिति द्वौश्रुतस्कन्धावध्ययनसमुदायलक्षणौ पञ्चविंशतिरध्ययनानि तद्यथा सत्थपरिन्ना १ लोगविजओ २ सीओसणिज्ज सम्मत्तं ४ आवंति ५ धुयविमोहो ७ महापरिन्नो ८ वहाणसुयं ९ इति प्रथमश्रुतस्कन्धः पिंडेसण १ सेज्जिरिया ३ भासेज्जायाय ४ वत्थ ५ पाएसा ६ उग्गहपडिमा ७ सत्त सत्तिकया १४ भावण १५ विमुत्तो १६ इति द्वितीय श्रुतस्कन्धः एवमेतानिनिशीथवर्जानि पञ्चविंशतिरध्ययनानि तथा पञ्चाशीतिरुद्देशनकालाः कथमुच्यते अङ्गस्य श्रुतस्कन्धस्याध्ययनस्योद्देशकस्य चैतेषां चतुर्णामप्येक एवोद्देशनकालः एवंशस्त्रपरिज्ञादिषु पंचविंशतावध्ययनेषु क्रमेण सप्त १

॥ मूल ॥

सुयखंधापणवीसंअज्झयणा पंचासीइं उद्देसणकालापंचासी समुद्देसणकाला अठारसपदसहस्साइं पदग्गे

॥ भाषा ॥

निर्युक्ति सूत्रने विषे कहिवा पणियाप्या अर्थनो जोडिवोते युक्ति विशिष्ट घटनाये योजवो तेनिर्युक्ति। ते आचारांग अंगार्थपणे अंगलक्षण वस्तुपणे। पहिले अंगे बेश्रुतस्कंधछे पंचवीस अध्ययनछे तेकेहा सत्यपरिक्षा १ लोग विजय २ सिओसणिज्जं ३ संमत्तं४ आवंति ५ धुय ६ विमोहा ७ महापरिन्नो ८ वहाणसुयंति ९ इति प्रथम स्कंध ॥ पिंडेसण १ सिज्जि २ रिया ३ भासज्जाया ४ वत्थ ५ पाएसा ६ उग्गहपडिमा ७ सत्तसत्तिकिया १४भावण१५ विमुक्ति १६ इति

॥ टीका ॥

षट् २ चतु ३ चतुः ४ षट् ५ पंच ६ अष्ट ७ सप्त ८ चतु ९ एकादश १० त्रि ११ त्रि १२ द्वि १३ द्वि १४ द्वि १५ द्वि १६ संख्याताउद्देशनकालाः षोडशस्वध्ययनेषु शेषेषुनवसुनवैवेति इह संग्रहगाथा सत्तयछचउचउरो छपंचअट्ठेवसत्तचउरोय एक्कारातितिदोदो दोदोसत्तेक्कएक्कोयत्ति एवंसमुद्देशनकाला अपिभणितव्याः अष्टादशपदसहस्राणि पदाग्रेणप्रमाणतः इहयत्रार्थोपलब्धिस्तत्पदं ननुयदि द्वौश्रुतस्कन्धौ पंचविंशतिरध्ययनान्यष्टादश पदसहस्राणि पदाग्रेणभवन्ति ततो यद्भणितं नवबंभचेरगुत्तोणो अट्ठारसपदसहस्सिओवेओत्ति तत्कथं नविरुध्यते उच्यते यत्द्वौश्रुतस्कन्धाविल्यादि तदाचारस्य प्रमाण भणितं यत्पुनरष्टादश पदसहस्राणि तन्नवब्रह्मचर्याध्ययनात्मकस्य प्रथमश्रुतस्कन्धस्य प्रमाणं विशेषार्थबद्धानिचसूत्राणि गुरूपदेशतस्तेषामर्थोवसेय इति संख्येयानि अक्षराणि वेष्टकादीनां संख्येयत्वात् अनंतागमाः इहगमा अर्थगमा गृह्यन्ते अर्थपरिच्छेदाइत्यर्थः तेचानन्ताः एकस्मादेवसूत्रात्तद्धर्म्मविशिष्टानंतधर्म्मात्मकवस्तुप्रतिपत्तेः

॥ मूल ॥

णासंखेज्जाअक्खरा अणंतागमा अणंतापज्जवा परित्तातसाअणंताथावरा सासयाकडानिबद्धाणिकाइया

॥ भाषा ॥

द्वितीयश्रुतस्कंध ॥ ८५ शास्त्र परिज्ञादिक २५ अध्ययनने विषे अनुक्रमे उद्देशा सप्त १ षट् २ चतुः ३ चतुः ४ षट् ५ पंच ६ अष्ट ७ सप्त ८ चतुः ९ एकादश १० त्रि ११ त्रि १२ द्वि १३ द्वि १४ द्वि १५ द्वि १६ एतले पहिले २श्रुतस्कंधना ८ अध्ययनना ४४ उद्देशा नवमो अध्ययन उद्देशा १६ विच्छेदथया । एवं ६० उद्देशा पहिले श्रुतस्कंधे अने बीजे २५ सर्व मिली ८५ उद्देशा थया । कालते अवसर जेतला उद्देशाना काल अवसर तेतला समुद्देशाना अवसर कह्या । अठारह सहस्रपद पदाग्रे पदने परिमाणे जिहां सूत्रार्थनी समाप्ति होय तेपदकहिये ते प्रथम श्रुतस्कंधे नव अध्ययनना १८ सहस्र पद । संख्याता अक्षर लिपिन्यास अनन्तागमाअर्थपरिछेद । अनन्तापर्यव अक्षर पदार्थना पर्याय भेद जिहां परित्ता एतले अनन्ता नही एहवात्रसजीववेंद्रियादिक कहीये । अनंतस्थावर

अन्येतुव्याचक्षते अभिधानाभिधेयवशतोंगमाभवन्ति तेचानन्ता: अनन्ता: पर्याया: स्वपरभेदभिन्ना अक्षरपदार्थपर्याया इत्यर्थ: परीतास्त्रसाआख्ययन्त इति योग: असन्तीति असाद्दींद्रियादयस्तेच परीतानानंता एवंरूपत्वादेव तेशां अनंता: स्थावरावनस्पतिकायसहिता: किंभूताएतेसासयाकडानिवद्धा निकाइयत्ति शाश्वता: द्रव्यार्थतया अविच्छेदेन प्रवृत्ते: कृता: पर्यायार्थतया प्रतिसमयमन्यथाभावात्ते निंवद्धा: सूत्रएवग्रथिता निकाचिता: निर्युक्तिसंग्रहणि हेतूदाहरणादिभि: प्रतिष्टिताजिनै: प्रज्ञप्ता भावा: पदार्था अन्वेष्यजीवादय: आघविज्जंतित्ति प्राकृतशैल्याआख्यायंते सामान्यविशेषाभ्यां कथ्यंतइत्यर्थ: प्रज्ञाप्यन्तेनामादिभेदाभिधानेन प्ररूप्यन्ते नामादिस्वरूपकथनेन यथापज्जायाणभिधेयमित्यादि दर्श्यन्ते उपमामात्रत: यथागौर्गवय स्तथा इत्यादि निदर्श्यन्ते हेतुदृष्टान्तोपन्यासेन उपदर्श्यन्ते उपनयनिगमनाभ्यांसकलनयाभिप्रायतोवेति सांप्रतमाचाराङ्गग्रहणफलप्रतिपादनायाह सेएवमित्यादि सइत्याचारांगग्राहको ॥ टीका ॥

जिणपन्नत्ताभावा आघविज्जंति पन्नविज्जंतिपरूविज्जंति नंदिस्संति उवदंसिज्जा सेएवंणाए एवंविन्नाए ए ॥ मूल ॥

वनस्पति सहित एह भाव। केहवाछे द्रव्यार्थनयें करी अविच्छेदपणें शास्वताछे वली केहवाछे कडाकहतां पर्यायार्थपणे प्रतिसमें अन्यथापणिहोय निवद्धासूत्र थकी गूंथ्या । निर्युक्ति संग्रहणी हेतु उदाहरणे करी निकाचित निविड पणें प्रतिष्ठ्या । जिनवीतरागें प्रज्ञप्ता कह्या। एहवा भाव पदार्थ अनेरापणि अजीव पदार्थ जिहां सामान्यविशेष पणि कहिये। नामादिक भेदनो कहिवो तेणेकरी प्ररूपिये। उपमाने करी देखाडिये। यथा गोस्तथागवय हेतु दृष्टान्तोपन्यासे करी निर्देसियेदेखाडिये। उपनय निगमने करी सकलनयें करी उपदेशिये। ते आचारांग एहवोछे। एम एहभणी ने ज्ञाता ॥ भाषा ॥

गृह्यत एवंनायत्ति अस्मिन्भावतः सम्यगधीते सत्येवमात्माभवति तदुक्तक्रियापरिणामाव्यतिरेकात् सएवभवतीत्यर्थः इदंचसूत्रंपुस्तकेषु नदृष्टं नंद्यांतुदृश्यते
इतीहव्याख्यातमिति एवं क्रियासारमेवज्ञानमितिख्यापनार्थंक्रियापरिणाममभिधायाधुनाज्ञानमधिकृत्याह एवंनायत्ति इदमधीत्य एवं ज्ञाताभवति
यथैवेहोक्तमिति एवंविन्नायत्ति विविधोविशिष्टोवा ज्ञाताविज्ञाताएवं विज्ञाताभवति तंत्रांतरीयज्ञाताभवति,तंत्रांतरीयज्ञातृभ्यः प्रधानतरइत्यर्थः एवमित्यादि
निगमनवाक्यंएवमनेन प्रकारेणाचारगोचरविनयाद्यभिधानरूपेण चरणकरणप्ररूपणता आख्यायत इति चरणं व्रतश्रमणधर्मसंयमाद्यनेकविधं करणंपिण्ड
विशुद्धि समित्याद्यनेकविधं तयोः प्ररूपणता प्ररूपणैव आख्यायतेइत्यादि पूर्ववदिति सेत्तआयारेत्ति तदिदमाचारवस्तु अथवा सोयमाचारोयः पूर्वदृष्टइति
१ ॥ सेकिंतंसूयगडे सूत्रार्थासूचनात् सूत्रं सूत्रेणकृतं सूत्रकृतमिति सुष्ठूच्यते सूयगडेणंति सूत्रकृतेन सूत्रकृतेवास्वसमयाः सूच्यंते इत्यादिकंव्यं तथा

वंचरणकरणपरूवणया आघविज्जंति परूविज्जंति नंदिसिज्जंति उवदंसिज्जंति सेत्तंआयारो ॥ १ ॥
सेकिंतंसूयगडे सूयगडेणं ससमयासूइज्जंति परसमयासूइज्जंति ससमयपरसमयासूइज्जंति जीवासूइ

जाण होय। एवंविन्नतेत्ति विज्ञाताहोयअन्यशास्त्रन शास्त्रनाजाणतेहथकी पिण घणो जाणहोय। एम एणे प्रकारे आचार गोचर विनयादिकने कहिवा
येकरी चरण श्रमण धर्म करण पिंडविशुद्धि तेहनी प्ररूपणाआख्यायते कहिये प्ररूपिये निर्देशीयेउपदेशिये पूर्ववत्। एह आचारांगकह्यो ॥ १ ॥
अथस्यूंतेसूत्रकृतांग। सूत्रसूत्रवाथकी सूत्रेकीधो तेसूत्रकृत जेणे सूयगडांग स्वसमयजिनमत सूचवियेकहिये परसमयपरमत सूचवीयेकहिये जीवपदार्थ सूचवी
ये चेतनालक्षणजीव एहवो कहिये। अजीवपदार्थ धर्मास्तिकायादिक जिहांसूचवीये जीव अजीव बिहुंपदार्थ जिहांकहिये पंचास्तिकायमयलोकसूचविये

॥ टीका ॥

सूत्रकृतेन जीवाजीवपुण्यपापाश्रवसंवरनिर्जराबंधमोक्षावसानाः पदार्थाः सूच्यंते तथा समणाणमित्यादि अत्र श्रमणानां मतिगुणविशोधनार्थं स्वसमयः स्थाप्य तइतिवाक्यार्थः तत्र श्रमणानां किंभूतानां अचिरकालप्रव्रजितानां चिरप्रव्रजितादि निर्म्मलमतयोभवंत्यहर्निशमागमपरिचया हद्दश्रुतसंपर्काश्चेति पुनः किंभूतानां कुसमयमोहमइ मोहियाणंति कुत्सितः समयः सिद्धांतोयेषांते कुसमयाः कुतीर्थिकास्तेषांमोहः पदार्थेष्वयथाववोधः कुसमयमोहस्तस्माद्योमोहः श्रोद्य मनोमूढता तेनमतिर्मोहिता मूढतांनीता येषांतेकुसमयमोहमतिर्मोहिताः अथवा कुसमयाः कुसिद्धांतास्तेषामोघः संघो मकारस्तुप्राकृतत्वात् तस्माद्योमोहोमूढतातेनमतिर्मोहिता येषांते कुसमयौघमोहमतिर्मोहिताः अथवा कुसमयानां कुतीर्थिकानां मोघोमोघोवा शुभफलापेक्षया निष्फलोयोमोहस्तेनमतिर्मोहिता येषांते कुसमयमोघमोहमतिर्मोहिताः कुसमयमोहमतिर्मोहितावा तेषांतथासंदेहा वस्तुतत्वम्प्रतिसंशयाः कुसमयमोह २ मतिर्मोहितानामि

॥ मूल ॥

ज्जंति अजीवासूइज्जंति जीवाजीवासूइज्जंति लोगेसूइज्जंति अलोगेसूइज्जंति लोगालोगेसूइज्जंति सूअगडेणं जीवाजीवे पुण्णपावासवसंवरनिज्जरणबंधमोक्खावसाणापयत्थासूइज्जंति समणाणं अचिरकालपव्वइयाणं कुसमयमोहमइमोहियाणं संदेहजायसहजबुद्धिपरिणामसंसइयाणं पावकरमइलमइगुणविसोहणत्थं

॥ भाषा ॥

पंचास्तिकायरहितअलोक सूचविये लोकालोक बेहुं सूचवीये सूयगडांगसूत्रे चेतनावंतजीव १ चेतनारहितअजीव २ सत्कर्मपुद्गलतेपुन्य ३ अशुभकर्मपुद्गलते पाप ४ कर्मनोसंचिवो तेआश्रव ५ कर्मनिरोध तेसंवर ६ कर्मनो निर्जरवो वेगलोकरिवो तेनिर्जरा ७ नवोकर्म उपार्जवो तेबंध ८ सकलकर्मथकी मूंकाविबो ते मोक्ष ९ मोक्षछे अवसानछेहडे एहवा नवपदार्थ सूचवीये । श्रमण यतीने मतिगुणविसोधिवाने अर्थे स्वसमय स्थापिये ते श्रमण केहवाछे । अचिरकाल

॥ टीका ॥

तिविशेषणसामिथ्यात् कुसमयेभ्य: सकाशात् येषान्ते सन्देहजाता: तथासहजा त्स्वभावसम्पन्ना नकुसमयश्रवणसम्पन्ना बुद्धिपरिणामा मतिस्वभावात् संश योजातो येषांते सहजबुद्धिपरिणामसंशयिता: सन्देहजाताश्च सहजबुद्धिपरिणाम संशयिताश्च ये ते तथा तेषां श्रमणानामिति प्रक्रम: किमतश्राह पाप करो विपर्ययशंसयात्मकत्वेन कुत्सितप्रवृत्तिनिबंधनत्वादशुभकर्म्महेतु रतएव च मलिन: स्वरूपाच्छादनाच्छादनिर्म्मलोयोमतिगुणोबुद्धिपर्यायस्तस्य विशोधना यनिर्म्मलत्वाधानाय पापकरमलिनमतिगुणविशोधनार्थं असीयस्तक्रियावादयसयस्सत्ति अशीत्यधिकस्य क्रियावादिशतस्य व्यूहं कृत्वा स्वसमय: स्थाप्यत इतियोग: एवं शेषेष्वपि पदेषु क्रियायोजनीयेति तत्र न कर्त्तारंविना क्रियासम्भवतीति ता मात्मसमयवायिनीं वदन्ति ये तच्छिलाश्च ते क्रियावादिन: ते पुन रात्माद्यस्तित्वप्रतिपत्तिलक्षणा अमुनोपायेनाशीत्यधिकस्य शतस्य संख्याविज्ञेया: जीवाजीवास्रवबन्धसम्वरनिर्ज्जरापुण्यापुण्यमोक्षाख्यान्नवपदार्थान् विरचय्य परिपाट्या जीवपदार्थस्याध: स्वपरभेदावुपन्यसनीयौ तयोरधो नित्यानित्यभेदौ तयोरप्यध: कालेश्वरात्मनियतिस्वभावभेदा: पञ्च न्यसनीया: पुन रित्थं वि कल्पा: कर्त्तव्या अस्तिजीव: स्वतोनित्य: कालत इत्येको विकल्पो विकल्पार्थश्चायं विद्यते खल्वात्मास्वेनरूपेण नित्यश्च कालवादिन: उक्तेनैवाभिलापेन द्विती

॥ मूल ॥

असीअस्सकिरिआवाइयसयस्स चउरासीए अकिरियवाईणं सत्तठीए असाणियवाईणं वत्तीसाए वेणइय

॥ भाषा ॥

मी थोडाकालनोछे प्रवज्या जेहनो एतले नवदीक्षितछे वली तेश्रमणकेहवाछे कुत्सितछे समय सिद्धांत जेहना तेकुसमय कुतीर्थीतेहनो मोह सत्य भावना यें विषे अयथार्थाव बोध तेहथको ऊपनो मोह मूढता तेणेकरी मति मोहित छे जेहनो एहवाछे । कुत्सितशास्त्र श्रवणथको संदेह ऊपनोछे । तथा सहज स्वभावनो बुद्धिमति तेहनोपरिणामतेहथको संशयऊपनोछे जेहने एहवा नवदीक्षित श्रमण साधुछे तेहने एहवो कहे । पापनो करणहार महलो जे म

॥ टीका ॥

योविकल्प ईश्वरकारिणिकस्य तृतीयः आत्मवादिनश्चतुर्थो नियतिवादिनः पञ्चमः स्वभाववादिनः एवं स्वत इत्यपरित्यजता लब्धाः पञ्चविकल्पाः परत इ
त्यनेनापि पञ्च लभ्यन्ते नित्यत्वापरित्यागेन चैते दश विकल्पा एव मनित्यत्वेनापि दशैवेत्येकत्र विंशतिर्जीवपदार्थेन लब्धा अजीवादिष्वप्यष्टास्वेवमेव प्रतिप
दं विंशतिविकल्पाना मतोविंशति र्नवगुणा शतमशीत्युत्तरक्रियावादिनामिति चउरासीए अकिरियवाईणंति एतेषांच स्वरूपं यथा नंद्यादिषु तथावाच्यं नवर
मेतद्व्याख्याने पुण्यापुण्यवर्जाः सप्तपदार्था स्थाप्यंते तदधः स्वतः परतश्चेति पदद्वयं तदधः कालादीनांषष्टीयदृच्छा न्यस्यते ततश्च नास्तिजीवः स्वतः कालत
इत्येको विकल्प एवमेते चतुरशीति र्भवन्ति सत्तट्ठीएअन्नाणियवाईणंति एतेपि तथैव नवरं जीवादी नवपदार्था नुत्पत्ति दशमा नुपरि व्यवस्थाप्याधः सप्तस
दादयः स्थाप्याः तद्यथा सत्व मसत्वं सदसत्व मवाच्यत्वं सदवाच्यत्व मसदवाच्यत्वं सदसदवाच्यत्वमिति तत्र कोजानाति जीवस्य सत्व मित्येकोविकल्पः एवमस
त्वमित्यादि तत एते सप्तनवका स्त्रिषष्टिरुत्पत्ते स्त्वाद्याएव चत्वारोवाच्या इत्येवं सप्तषष्टिरिति तथाबत्तीसाएवेणइयवाईणंति एतेचैवं सुरनृपतिज्ञातियति
स्थविराधममातृपितृणाम्प्रत्येकं कायवाङ्मनोदानैश्चतुर्द्धा विनयः कार्य इत्यभ्युपगमवन्तो द्वात्रिंशदिति एवं चैतेषां चतुर्णां वादिप्रकाराणां मीलने त्रीणि त्रिषष्ट्य
धिकानि मन्यदृष्टिशतानि भवंत्यत उच्यते तिषट्ठमित्यादि वृहंकिञ्चत्ति प्रतिक्षेपं कृत्वा स्वसमयो जैनसिद्धान्तः स्थाप्यते यतएवं सूत्रकृतेन विधीयते अत स्त
त्सूत्रार्थयोः स्वरूपमाह नाणेत्यादि नाना अनेकविधा बहुभिःप्रकारै रित्यर्थः दिट्ठंतवयणनिस्सारंति स्थाद्वादिना पूर्वपक्षीकृतानां प्रवादिना स्वपक्षस्थापनाय

॥ भाषा ॥

ति गुण बुद्धि पर्याय तेहने विशोधिवाने अर्थे पापकरे मलिन मने विशोधनार्थ अशीअधिक १०० क्रियावादी तेहनो व्यूहकरीने स्वसमय स्थापीये एहक्रिया
पद आगलि कयले लेवो कर्ताविना क्रिया पुण्यपापरूप नहोय तथा एहवो जेवदे तेक्रियावादी जीवने क्रिया पुण्यपापरूप नथी लागती ते अक्रियावादी

॥ टीका ॥

यानि दृष्टान्तवचनान्युपलक्षणत्वाद्धेतुवचनानि तदपेक्षया निःसारं सारताशून्यं परेषां मतमितिगम्यते सुष्टुपुनरपि प्रतिक्षेपणीयत्वेन दर्शयन्तौ प्रकटयन्तौ तथा विविधश्चासौ सत्पदप्ररूपणाद्यनेकानुयोगद्वाराश्रितत्वेन विस्तारानुगमनीयानेकजीवादितत्वानां विस्तरप्रतिपादनं विविधविस्तारानुगमः तथा परमसद्भावो त्यंतसत्यता वस्तूना मैदम्पर्यमित्यर्थं स्तावेव गुणौ ताभ्यां विशिष्टौ विविधविस्तारानुगमपरमसद्भावगुणविशिष्टौ मोक्खपहोयारगत्ति मोक्षपथावतारकौ सम्यग्दर्शनादिषुप्राणिनाम्प्रवर्त्तका वित्यर्थः उदारत्ति उदारौ सकलसूत्रार्थदोषरहितत्वेन निखिलतद्गुणसहितत्वेन च तथा ऽज्ञानमेव तमोंधकारमात्यन्तिकांधकार मथवा प्रकृष्टमज्ञानमज्ञानतमं तदेवांधकार मज्ञानतमोंधकारम्वा तेन ये दुर्गा दुरधिगमा स्ते तथा तेषु तत्वमार्गेष्वितिगम्यते दीवभूयत्ति प्रकाश

॥ मूल ॥

वाईणं तिरहंतेसठाणं ञ्जुणदिठियसयाणं वूढकिच्चा ससमएठाविज्जंति णाणादिठंतवयणणिस्सारंसुठुदरिसयं
ता विविहवित्थराणुगमपरमसब्भावगुणविसिठा मोरकपहोयारगाउदारा ञ्जस्राणतमंधकारदुग्गेसुदीवभूञ्जा

॥ भाषा ॥

एतले नास्तिकमती ८४ भेद जाणिवा तेहना आत्मानेअजाणपणो ते श्रेय एहवो जेवदे तेअज्ञानवादी तेहनामत ६७ तेहनो । मनुष्यपशुपंखी सहूनोविनय करिवोजे वदेतेविनयवादी तेहना ३२ भेद तेहनो । विशेषेवलठअधिक अन्यदृष्टि मिथ्यादृष्टिना मत सईकडां तेहनोव्यूह तिरस्कारकरीने । स्वसमयजिनमतने स्थापिये । नाना अनेकप्रकारेदृष्टांतवचन तेणेकरी परमतनेनिःसार असारकरीनेस्थापें । सुठुभलो आदरिवापणे दरिसयंति प्रगटता अनेकप्रकारसत्पदप्ररूपणादिक अनेक अनुयोग द्वाराश्रित पणे । विस्तरानुगम जीवादितत्वनो विस्तार प्रतिपादवो तेविविध विस्तरानुगम । तथा परमसद्भाव अत्यंतवस्तुनोसत्यपणे तेहीजहिगुण तेणेकरी विशिष्ट विविध विस्तरानुगम परम सद्भाव गुणविशिष्ट मोक्षपथे अवतारक सम्यकदर्शनमेविषे प्राणीनेप्रवर्तक सकल

॥ टीका ॥

कारित्वा द्वीपोपमो सोपाणाचेवत्ति सोपानानीव उत्तरारोहणमार्गविशेषाइव सिद्धिसुगतिगृहोत्तमस्य सिद्धिलक्षणासुगतिः सिद्धिसुगति रथवा सिद्धिश्च सुगतिश्च सुदेवत्वसुमानुषत्वलक्षणा सिद्धिसुगती तल्लक्षणं यद्गृहाणामुत्तमं गृहोत्तमं वरप्रासादश्च स्तस्य सिद्धिसुगतिगृहोत्तमस्य रोहण इतिगम्यते निक्खोभ निप्पकंपत्ति निक्षोभौ वादिना क्षोभयितुमशक्यत्वात् निःप्रकंपौ स्वरूपतोपीषद्व्यभिचारलक्षणकम्पाभावात् कावित्याह सूत्रार्थौ सूत्रंचार्थश्च निर्युक्ति भाष्य

॥ मूल ॥

सोवाणाचेवसिद्धिसुगइगिहुत्तमस्स णिक्खोभनिप्पकंपा सुत्तत्था सूयगडस्सणं परित्तावायणासंखेज्जा अणुओगदारा संखेज्जाओपडिवत्तीओ संखेज्जावेढा संखेज्जासिलोगा संखेज्जाओनिज्जुत्तीओ सेणंअंगठयाए दोच्चे अंगे दोसुयखंधा तेवीसंअज्झयणा तेत्तीसंउद्देसणकाला तेत्तीसंसमुद्देसणकाला छत्तीसंपदसहस्साइं पयग्गेणं प० संखेज्जाअक्खरा अणंतागमा अणंतापज्जवा परित्तातसा अणंताथावरा सासयाकडाणिबद्धा णिकाइ

॥ भाषा ॥

सूत्रार्थदोषरहितपणे उदारप्रधानछे सूत्रार्थजेहनेविषेअज्ञान तेहोज तमअंधकार तेणेकरीदुर्ग्रह दुरधिगम दुःखसाध्य जेमश्चमार्ग तेहनेविषे जेसूत्रार्थ दीवाभूत प्रकाशकारी छे अज्ञानांधकारनो निषेधकारी ज्ञानरूप उद्योत प्रकाश करे दीवासमान छे। सिद्धिलक्षण सुगति तल्लक्षणघर मंदिर उत्तम प्रधानछे तेहने चाढियाने अर्थे सोपान पाउडीया रूपसूत्रार्थछे। वादीपुरुषे निक्षोभ चालिवाअशक्य निष्प्रकंप थोडोईकोईएक पाछोसकेनही एहवा सूत्रार्थ जिहां सूयगडांग सूत्रनां परित्ता संख्याता वाचना सूत्रार्थप्रदानरूप संख्याता अनुयोगद्वार उपक्रमादिक जाणिवा । संख्याती प्रतिपत्ति वादीहय मतांतरते प्रतिपत्ति संख्यातावेढा छंदविशेष संख्याता श्लोक अनुष्टुपछंद संख्याता निर्युक्ति सूत्रनेविषे अर्थनो योजवो तेनिर्युक्ति विशिष्टघटना ते निर्युक्ति ते अंगार्थपणे

॥ टीका ॥

संग्रहणिवृत्तिचूर्णिपंजिकादिरूपइति सूत्रार्थौ शेषंकण्ठ्यं यावत् सेत्तंसूयगडेति नवरं चयरिवंशदुद्देशनकालाः चउतियचउरोदोदो एक्कारसचेवहुंतिएक्कसरा स त्तेवमहज्झयणा एगसरावीयसुयखंधे इत्यतोगाथातो वसेया इति ॥ २ ॥ सेकिंतंठाणे इत्यादि अथकिन्तत् स्थानं तिष्टंत्यस्मिन्प्रतिपाद्यतया जीवादय इतिस्थानं तथाचाह ठाणेणमित्यादि स्थानेन स्थानेवा जीवाः स्थाप्यंते यथावस्थितस्वरूपप्रतिपादनाये ति हृदयं शेषं प्रायोनिगदसिद्धमेव नवरं

॥ मूल ॥

जिणपसत्ताभावा आघविज्जंति पसविज्जंति परूविज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति सेणंणाए एवंवि साए एवंचरणकरण परूवणया आघविज्जंति परूविज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति सेत्तंसूअगडे ॥ २ सेकिंतंठाणे ठाणेणंससमयाठाविज्जंति परसमयाठाविज्जंतिससमयपरसमयाठाविज्जंतिजीवाठाविज्जंति अजी

॥ भाषा ॥

यंगलक्षण वस्तुपणे। बीजे अंगे बेश्रुतस्कंध तेवीसअध्ययन तेत्रीसउद्देशनकाल उद्देशनाअवसर तेत्रीस समुद्देशनकाल जेतला उद्देशतेतला समुद्देश। ३६ सहस्र पद सूत्रार्थ नो समाप्ति जिहांते पद पद परिमाणें कह्यो। संख्याता अक्षर तिमज पूर्वनो परे परित्ता। अनंता नही। त्रस बेइन्द्रियादिक अनंता स्थाव र वनस्पतिविशेष द्रव्यार्थनयेकरी शास्वता छे एह सूयगडांगने विषे एहवा भाव कह्या। तेकेहवा पर्यायार्थपणें कृताकीधा निबद्धा सूत्रार्थ पणें गूंथ्या। नि काचिता तेहने उदाहरणे करी प्रतिष्ठ्या जिनवीतरागे प्रज्ञप्ता कह्या। भाव पदार्थ आख्यायते कहियेछे। तेमज पूर्वनो परेंजाणीवा। निर्देशियें उपदेशि ये पूर्ववत् तेसूयगडांग एहवो छे। एवं एम एहभणीने ज्ञाता जाणहोय एम विज्ञाता घणोजाण होय। एम चरण ते श्रमणव्रत करण ते पिंडविशुद्धा दिक तेहनी प्ररूपणा जिहां आख्यायते कहिये निर्देशिये उपदेशिये ते सूयगडांग बीजोअंग ॥ २ ॥ अथ स्थं ते ठाणांग। जीवादिकपदार्थ

ठाणेण इत्यस्य पुनरुच्चारणं सामान्येनैव पूर्वोक्तस्यैव स्थापनाय विशेषप्रतिपादनायच वाक्यांतरमितिज्ञापनार्थं तत्र दव्वगुणक्खेत्तकालपज्जवत्ति प्रथमाबहुवच नलोपा द्रव्यगुणक्षेत्रकालपर्यवा: पदार्थानां जीवादीनां स्थाने स्थाप्यन्ते इतिप्रक्रमः तत्र द्रव्यं द्रव्यार्थतया यथा जीवास्तिकायो ऽनन्तानि द्रव्याणि गुणः स्वभा वो यथोपयोगस्वभावोजीवः क्षेत्रंयथा संख्येयप्रदेशावगाहनो ऽसौ कालोयया अनाद्यपर्यवसितः पर्यवाः कालकृता अवस्था यथा नारकत्वादयो बालत्वादयो वेति सेलाइत्यादि गाथाविशेष स्तत्र शैलाहिमवदादिपर्वता स्थाप्यन्ते स्थानेनेतियोगः सर्वत्र सलिलाय गङ्गाद्यामहानद्यः समुद्रालवणादयः सूराः आदित्या भवनाद्यसुरादीनां विमानानि चन्द्रादीनां आकाराः सुवर्णाद्युत्पत्तिभूमयो नद्यः सामान्यामहीकोसीप्रभृतयो निधय श्चक्रवर्त्तिसम्बन्धिनो नैसर्पादयो नव पुरिसजायत्ति पुरुषप्रकाराउन्नतप्रणतादिभेदाः पाठांतरेण पुरिसजायत्ति उपलक्षणत्वा तुष्यादिनक्षत्राणां चन्द्रेणसह पश्चिमायांमिमोभयप्रमर्द्दकादियोगाः स्व

वाठाविज्जंति जीवाजीवा लोगा अलोगा लोगालागावा ठाविज्जंति ठाणेणं दव्वगुणखेत्तकालपज्जयपयत्थाणं सेलसलिलायसमुद्दसूरभवणविमाणआगराणदीउणिहीउपुरिसजायसरायगोत्तायजोइसंचाले एक्कविहवत्तव्व

जिहांतिष्ठे रहे तेठाणांग। स्वसमय जिनमत थापिये परसमय अन्यमत उथापीये स्वसमय थापीये परसमय उथापिये । जीवपदार्थ थापिये अजीवनो अजीवपणो स्थापिये। जीहां जीवाजीव बिहूं स्थापिये लोक थापिये अलोक थापिये लोकालोक बिहूंस्थापिये। ठाणांगे द्रव्य गुण क्षेत्र काल पर्यवा जीवा दिक पदार्थना ठाणांगे स्थापिया द्रव्य ते द्रव्यादिकार्थ पणे जीवास्तिकाय अने द्रव्य के गुण तेस्वभाव यथा उपयोग स्वभाव जीव प्रति क्षेत्र असंख्य प्रदेशाव गाही जीव काल ते अनादि अपर्यवसित पर्यव ते कालकृतावस्था बालकपणादिक। तथा नारकपणादिक पदार्थ ने ठाणांगे स्थापिये। शैलहिमवंतादिक

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

राव षड्जादयः सप्त गोत्राणि च काश्यपादीनि एकोनपञ्चाशत् जोइसंचालयन्ति ज्योतिषः तारकरूपस्य संचालनानि तिहिंठाणेहिं ताराहवे चलेज्जा इ त्यादिना सूत्रेण स्थाप्यन्ते स्थानेनेतिप्रक्रमः तथा एकविधस्य तद्वक्तव्यस्य तदभिधेयमित्येकविधवक्तव्यकं प्रथमेअध्ययने स्थाप्यतइतियोगः एवं द्विविधवक्तव्यकं द्विती येध्ययने एवं तृतीयादिषु यावद्दशविधवक्तव्यकं दशमे ध्ययने तथा जीवानां पुद्गलानां च प्ररूपणताख्यायतइतियोगः तथा लोगट्ठाइं चणंति लोकस्थायिनांच धर्मास्तिकायादीनांप्ररूपणता प्रज्ञापना शेष माचरसूत्रव्याख्यानादवसेयं नवर मेकविंशति रुद्देशनकालाः कथं द्वितीयतृतीयचतुर्थेष्वध्ययनेषु चत्वारश्चत्वार उद्देशकाः पचमे चय इत्येते पंचदश शेषास्तु षट् षणामध्ययनानां षट्उद्देशनकालत्वारिंशति बावत्तरिंपदसहस्साइंति अष्टादशपदसहस्रमानादाचाराद्दिगुण

॥ मूल ॥

यंदुविहजावदसविहवत्तव्वयंजीवाणपोग्गलाणयलोगट्ठाइंचणंपरूवणयाआघविज्जंतिठाणस्सणंपरित्तावायणा संखेज्जाअणुओगदारा संखेज्जाओपडिवत्तीओ संखेज्जावेढा संखेज्जासिलोगा संखेज्जाओसंगहणीओ सेणंअंगठ्याए तइएअंगेएगेसुयखंधे दसअज्झयणा एक्कवीसंउद्देसणकाला बावत्तरिसहस्साइं पयग्गेणं प० संखेज्जाअ

॥ भाषा ॥

पर्वत सलिला नदी गंगादिक समुद्र लवणादिक सूर सूर्य भवनते असुरना विमान चंद्रमादिकना आगर सुवर्णोत्पत्तिभूमी नदी सामान्यनदी निधी ते नै सर्पादिक निधान पुरिस जात उन्नत प्रनत भेदे पुरुष प्रकार स्वर ते षड्जादिक ७ गोत्र काश्यपादिक ४८ ज्योतिष तारारूप तेहना संचालन तिहिंठाणे हिं। तारा रूपे चले इत्यादिक एतला स्थानांगे थापिये। एक विधिनो कहिवो द्विविधनो जिहां लगे दसविध ठाणालगे कहिवो। जीवनी पुद्गलनी प्ररूप णाठाणांगे करी। लोकस्थायीये धर्मास्तिकायनी प्ररूपणा ठाणांगे कही। वाचना सूत्रार्थ प्रदानरूपं कही अनुयोगद्वार उपक्रमादिक संख्याती प्रतिपत्ति

॥ टीका ॥

त्वात् सूत्रकृतस्य ततोऽपि द्विगुणत्वात् स्थानस्येति ॥ २ ॥ सेकिंतमित्यादि अथ कोसौ समवाय: सूत्रेतु प्राकृतत्वेन वकारलोपात् समाये इत्युक्तं समवायनं समवाय: सम्यक्परिच्छेदइत्यर्थ: तद्धेतुश्च ग्रंथोपि समवाय स्तथाचाह समवायेन सम्वायेवा स्वसमया: सूच्यन्ते इत्यादिकंव्यं तथा समवायेन समवायेवा एगाइयाणंति एकद्विवित्रिचतुरादीनां शतान्तानां कोटाकोट्यंतानां वाएगत्थाणंति एकेचतेअर्थाश्चेत्येकार्था स्तेषां अयमर्थ: एकेषां केषाञ्चि न सर्वेषां

॥ मूल ॥

एकराश्रणंतागमा श्रणंतापज्जवा परित्तातसा श्रणंताथावरा सासयाकडा णिवद्धा णिकाइया जिणपसत्ताभा वाश्राघविज्जांति पसविज्जांति परूविज्जांति निदंसिज्जांति उवदंसिज्जांति सेणंणाए एवंविसाए एवंचरणकरणपरू वणयाश्राघविज्जांति सेत्तंठाणे ॥ ३ ॥ सेकिंतंसमवाए समवाएणं ससमयासूइज्जांति परसमयासूइज्जां

॥ भाषा ॥

वादीहयमतांतरप्रतिपत्ति। संख्याता वेढा छंदविशेष। संख्याता श्लोक अनुष्टुपछंद। संख्यातो संग्रहणी । ते अंगार्थपणे त्रीजेअंग एक श्रुतस्कंधमा दस अध्ययन एकवीस उद्देशन काल उद्देशना अवसर। बहुत्तरि सहस्रपद पदने परिमाणें कह्या संख्याता अक्षर तिमज पूर्वनीपरें परित्ता अनंतागमही त्रस वेइन्द्रियादिक अनंतास्थावर वनस्पत्यादिक द्रव्यार्थनयेकरी सास्वताछे। पर्यायार्थपणे कीधा सूत्रार्थपणें गूंथ्या। उदाहरणें करी प्रतिष्ठ्या । वीतरागें कह्या भाव पदार्थ कहिये छे। नामादिकभेदनो कहिवो तेणेकरी प्ररूपिये। सर्वदा निर्देशिये उपदेशिये। तेठाणांग एहवोछे। एहभणीने जाण एम घणोजाण होय। एम चरण साधुव्रतरूप करण पिंडविशुद्ध्यादिकनो प्ररूपणा कहीजाय तेठाणांग ॥ २ ॥ अथ स्यूं तेसमवाय। सम्यकप्रकारे जाणिवो तेसमवाय समवायांगसूत्रे स्वसमय जिनमत सूचवीयेछे। एम परसमय सूचवीयेछे स्वमतपरमत सूचवीयेछे समवायांगे करी। एकछे प्रथम जेहने एहवावे

॥ टीका ॥

निखिलानां स्वसमयव्यत्वा दर्थानां जीवादीनां मेगुत्तरियत्ति एकउत्तरोयस्यांसा एकोत्तरा सैव एकोत्तरिका इह प्राकृतत्वात् कस्वत्व म्परिवुड्ढियत्ति परिवृद्धि श्चेति समनुगीयते समवायेनेति योग: तत्र च परिवर्द्धनं संख्याया: समवसेयं चशब्दस्य चान्यत्र सम्बन्धादेकोत्तरिका अनेकोत्तरिका च तत्रशतं यावदेकोत्त रिका परतो ऽनेकोत्तरिकेति तथाद्वादशाङ्गस्य च गणिपिटकस्य पल्लवग्गंति पर्यवपरिमाणं अभिधेयादि तद्धर्मसंख्यानं यथा परित्तातसाइत्यादि पर्यवशब्द स्यच पल्लवत्ति निर्देश: प्राकृतत्वात् पर्यंक: पल्यंक इत्यादिवदिति अथवा पल्लवाइव पल्लवा: अवयवा स्तत्परिमाणं समणुगाइज्जंति समनुगीयते प्रतिपाद्यते

॥१७५॥ पूर्वोक्तमेवार्थं प्रपञ्चयन्नाह ठाणगेत्यादि ठाणगसयस्सत्ति स्थानकशतस्यैकादीनां शतानां संख्यास्थानाना न्तद्विशेषितात्मादिपदार्थानामित्यर्थ: तथा द्वाद शविधो विस्तरो यस्याचारादिभेदेन तत्द्वादशविधविस्तरं तस्य श्रुतज्ञानस्य जिनप्रवचनस्य किम्भूतस्य जगज्जीवहितस्य भगवत: श्रुतातिशययुक्तस्य समा

॥ मूल ॥

ति ससमयपरसमयासूइज्जंति समवाएणं एकाइयाणं एगठाणं एगुत्तरियंपरिवुड्ढीए दुवालसंगस्सयगणिपिड गस्स पल्लवग्गेसमणुगाइज्जइ ठाणगसयस्सयबारसविहवित्थरस्ससुयणाणस्स जगजीवहियस्सभगवउ समासे

॥ भाषा ॥

त्रिणचार आदि कोटिलगे एकअर्थे जीवादिक पदार्थनो इकेक आगलि २ परें वधारिवो ते समवायांग कहिये। द्वादशांग केहवो छे। गणी आचार्य तेह ने पिटकरत्नकरंडीया सरीखो छे तेहनो पल्लव अवयव तेहनो परिमाण जिहां कहिये स्थानक शत एक आदि सो छे केहडे जेहने एहवो संख्या स्थानक तेहनो बारे प्रकारे विस्तारवो एहवो श्रुतज्ञानछे। ते श्रुतज्ञान केहवो छे। ते श्रुतज्ञान जगतना जीवने हितरूपछे। वली पूज्यछे। एहवा श्रुतज्ञाननो संक्षेपे समाचार स्थानक २ प्रति भंग भग प्रति अनेक प्रकारे कहिवा योग्य लक्षण व्यवहार कहिये छे। ते समवायांग ने विषे नाना विध जीव अजीव

॥ टीका ॥

संक्षेपेण समाचारः प्रतिस्थानं प्रत्यक्षश्च विविधाभिधेयाभिधायकत्वलक्षणो व्यवहारः आहिज्जइत्ति आख्यायते अथसमाचाराभिधानानन्तरं तत्र यदुक्तं त
दभिधातुमाह तत्थयेत्यादि तत्थयत्ति तत्रैव समवाये इतियोगः नानाविधः प्रकारो येषान्ते नानाविधप्रकाराः तथा ह्येकेन्द्रियादिभेदेन पंचप्रकारा जीवाः
पुनरेकैकप्रकारः पर्याप्तापर्याप्तादिभेदेन नानाविधः जीवाजीवायत्ति जीवाश्चजीवाश्च वर्णिता विस्तरेण महतावचनसन्दर्भेण अपरेपिच बहुविधा 'वशेषा
जीवाजीवधर्म्मावर्णिता इतियोगः तानेवलेशतआह नरयेत्यादि नरयत्ति निवासनिवासिनामभेदोपचारा नारका स्ततश्च नारकतिर्यग्मनुजसुरगणानां स
म्बन्धिन आहारादय स्तत्र आहारओज आहारादि राभोगिकानाभोगिकस्वरूपोनेकधा उत्स्वासोऽनुसमयादिकालभेदेनानेकधा लेश्याकृष्णादिकाषोढा आ
वाससंख्या यथा नारकावासानां चतुरशीतिर्लक्षाणीत्यादिका आयतप्रमाणमावासानामिवसंख्यातासंख्यातयोजनायामता उपलक्षणत्वा दस्य विष्कम्भबाहल्य
परिधिमानान्यप्यत्र द्रष्टव्यानि उपपातएक एकएवसमये नैतावतामेतावतावा कालव्यवधानेनोत्पत्तिः च्यवनमेकसमये नैतावतामियतावा कालव्यवधानेन

॥ मूल ॥

णं समायारे आहिज्जतितत्थयणाणाविहप्पगारा जीवाजीवायवन्नियावित्थरेण अवरेविअ बहुविहाविसेसा
नरगतिरियमणुअसुरगणाणं आहारुस्सासलेसा आवाससंखआययप्पमाण उववायचवणउग्गहणोवहिवेय

॥ भाषा ॥

पदार्थ वर्णव्या विस्तारेकरी। अनेरापणि घणेप्रकारे विशेष जीवाजीव धर्म्म वर्णव्या। नरकगति तिर्यंच मनुष्य देवना गण संबंधीना आहार आभोगिक
अनाभोगिक ओजलोमादिक भेदें करी अनेक प्रकार। तथा उक्कासोक्कास लेश्या कृष्णादिक आवास संख्या नरकावासा ८४ लक्ष आयतप्रमाण आयाम
विष्कंभ परिधि प्रमाण। उपपात एकेसमे केतला एक नारकादिक जीव ऊपजे। एके केतला मरे। अवे अवगाहना शरीरनोप्रमाण अवधि अंगुलने अ

मरणं अवगाहना शरीरप्रमाणमङ्गुलासंख्येयभागादि अवधि रंगुलासंख्येयभागस्तैवविषयादि वेदना शुभाशुभस्वभावा विधानानिभेदा यथा सप्तविधा नारका इत्यादि उपयोग आभिनिबोधिकादि द्वादशविध: योग: पञ्चदशविध इन्द्रियाणि पञ्च द्रव्यादिभेदात् विंशतिर्वा श्रोत्रादिच्छिद्राद्यपेक्षयाष्टौवा कषाया: क्रोधादय: आहारश्वोच्छासश्वेत्यादिद्वन्द्व स्तत: कषायशब्दा प्रथमाबहुवचनलोपोद्रष्टव्य: तथा विविधाच जीवयोनि: सचित्तादिकं जीवानां तथा विष्कम्भोत्सेधपरिचय: प्रमाणं विधिविशेषाश्च मन्दरादीनां महीधराणामिति तत्र विष्कम्भो विस्तारउत्सेधउच्चत्वं परिरय: परिधि: विधविशेषा इति योग: तथा वर्षाणांविधयो भेदा यथा मन्दरा जम्बूद्वीपीयधातकीखण्डीयपौष्करार्द्धिकभेदा त्रिधा तद्विशेषस्तु जंबूद्वीपको लक्षोच्च: शेषास्तु पंचाशीतिसहस्रोच्छ्रिता इत्येवमन्येष्वपि भावनीयं तथा कुलकरतीर्थंकरगणधराणां तथा समस्तभरताधिपानां चक्रिणांचैव तथा चक्रधरहलधराणां च विधिविशेषा इतियोग: तथा

॥ १७६ ॥

णाविहाणउवउगजोगा इंदियकसायविविहायजीवजोणी विक्खंभुस्सेहपरिरयप्पमाणं विहिविसेसायमंदरादीणं महीधराणं कुलगरतित्थगरगणहराणं सम्मत्तभरहाहिवाणचक्कीणंचेव चक्कहरहलहराणय वासाणयनि

संख्येयभागस्तैव विषयादि वेदना शुभाशुभ स्वभावनो विधान भेद उपयोग मतिज्ञानादिक १२ भेदे योग १५ भेदे इंद्रिय ५ कषाय क्रोधादिक विविध अनेक प्रकार जीवायोनि जीवोत्पत्तिस्थानक विष्कंभ पिहुल पणो। उत्सेध ऊंचपणो। परिधिप्रमाण विधि विशेष विखंभ उत्सेध परिधि इत्यादिक भेदें मंदरादिक पर्वतनो कुलगर विमलवाहनादिक तीर्थंकर ऋषभादिक गणधर गौतमादिकनो सगलाई भरत चक्रवर्तीनो चक्रधर वासुदेव हलधर बलदेव

वर्णाणाञ्च भरतादिदेशाणां निर्गमाः पूर्वेभ्यः उत्तरेषामाधिक्यानि समायन्ति समवाये चतुर्थेअङ्गे.वर्णिता इतिप्रक्रमः अथैतन्निगमयन्नाह एतेचोक्ताः पदार्था अन्येचघनतनुवातादयः पदार्था एवमादयः एवंप्रकाराः अत्रसमवाये विस्तरेणार्थाः समाश्रीयन्ते· अविपरीतस्वरूपगुणभूषिता बुद्धांगीक्रियंतइत्यर्थः अथवा समस्यन्ते कुप्ररूपणाभ्यः सम्यक्प्ररूपणायां क्षिप्यन्ते शेषंनिगदसिद्धमानिगमनादिति ॥ ४ ॥ सेकिंतंवियाहेइत्यादि अथकेयं व्याख्या व्याख्या ॥ टीका

गमायसमाए एएअण्णयेएवमाइत्थावित्थरेणं अत्थासमाहिज्जति समवायस्सणं परित्तावायणाजावसेणं अंगट्ठयाए चउत्थेअंगे एगेअज्झयणे एगेसुयरकंधे एगेउद्देसणकाले एगेसमुद्देसणकाले एगेचउयाले पदसहस्से पदग्गेणंप० संखेज्जाणिअरकराणि जावचरणकरणपरूवणया आघविज्जति सेत्तंसमवाए ॥ ४ ॥ ॥ मूल ॥

नो वर्ष क्षेत्रनो नैर्गमा पहिलाथकी अगिलानो अधिकारपणे समवायांग पणे। चौथे अंगे एह पूर्वोक्त पदार्थ वर्णव्या एह पूर्वे कह्या तेअनेरापणि पदार्थ घन तनु वातादिक समवायांगे विस्तारपणे पदार्थ आश्रीये । समवायांगनो वाचना सूत्रार्थ दानरूप । यावत् शब्दे वेढालगे जाणवो श्लोक संख्याता इत्यादिक आचारांगनी परे सर्व कहिवो तेअंगार्थपणे चौथे अंगे एक अध्ययन एकश्रुतस्कंध एक एक उद्देशनकाल एक एक समुद्देशनकाल एकला ख ४४ हजार पद पदपरिमाणे कह्या। संख्यात अक्षर जाव यावत् शब्दे एमचरणसाधुव्रतरूप करण पिंडविशुद्धादिकनो प्ररूपणा कहियेछे । तेसमवायांग चौथो ॥ ४ ॥ अथ स्यं एह व्याख्या बखाणिये अर्थ जेहने विषे तेव्याख्या भगवतीये सूत्रे स्वसमय जिनमत कहियेछे। परमत कहियेछे ॥ भाषा

यंते अर्था यस्यां सा व्याख्या वियाहेइतिच पुल्लिङ्गनिर्देशः प्राकृतत्वात् वियाहेणंतिव्याख्यायाव्याख्यायां वा ससमयाइत्यादीनि नवपदानि सूत्रकृतवर्णकव्या ख्यातत्वा दिहकपठ्यानि वियाहेणंति व्याख्यामित्यादि नानाविधैः सुरैः नरेन्द्रैः राजऋषिभिश्च विविहसंसइयत्ति विविधसंशयवद्भिः पृष्टानि यानितानि तथा तेषां नानाविधसुरेन्द्रराज ऋषिविविधसंशयितपृष्टानां व्याकरणानां षट्त्रिंशत्सहस्राणां दर्शनात् श्रुतार्था व्याख्यायन्तइति पूर्वापरेणवाक्यसम्बन्धः पुनः कि

॥ टीका ॥

से किं तं वियाहे वियाहेणं ससमयावि आहिज्जंति परसमयावि आहिज्जंति ससमय परसमयावि आ हिज्जंति जीवाविआहिज्जंति अजीवाविआहिज्जंति जीवाजीवाविआहिज्जंति लोगेविआहिज्जइ अलो गेविआहिज्जइ लोगालोगेविआहिज्जइ वियाहेणं नाणाविहसुरनरिंदरायरिसि [illegible] जिणाणं वित्थरेण भासियाणं दव्वगुणखेत्तकालपज्जव पदेसपरिणाम जहत्थिभावअणुगमनिक्खेवणयप्प

॥ मूल ॥

स्वमत परमत बिहूं कहियेछे। जीव कहियेछे अजीव कहियेछे जीवा जीव बिहुं कहियेछे। लोक कहियेछे अलोक कहियेछे लोकालोक बिहूं कहियेछे ए णी व्याख्याये भगवती अनेक प्रकारे सुर देवता नरेंद्र राजऋषि तेणे विविध प्रकारे संशय पूछ्याछे। ३६ सहस्र प्रश्न पूछ्याछे। तेहने विषे जिनवीतरागी म हावीर स्वामीये विस्तरे करी भाखितछे। जेह प्रश्न वली केहवा तेप्रश्न द्रव्य धर्मास्तिकायादिक गुणज्ञानवर्णादि क्षेत्रआकाशादिक काल समयादिक पर्यव स्वर भेद भिन्न धर्मा अथवा काल कृतावस्था नव पुराणादिक पर्याय प्रदेश ते विभागरहित परिणाम ते अवस्थाये जाणिवा जेणें प्रकारे अस्तिभाव छताभा व अनुगम संहितादि व्याख्यानप्रकाररूप निक्षेप नामस्थापना द्रव्य भावे करी थापवो नयते नैगमादिक प्रमाण प्रत्यक्षादिक मुनिगुण अति सूक्ष्म उपक्र

॥ भाषा ॥

भूतानां जिनेनेति भगवता महावीरेण वित्थरेणभासियाणं विस्तारेणभणितानामित्यर्थः पुनः किंभूतानां द्रव्येत्यादि द्रव्यगुणक्षेत्रकालपर्यवप्रदेशपरिणामानां यथास्तिभावोनुगमनिक्षेपनयप्रमाणसुनिपुणोपक्रमै र्विविधप्रकारैः प्रकटः प्रदर्शितायै व्याकरणैस्तानितथा तेषां तत्र द्रव्याणि धर्मास्तिकायादीनि गुणा ज्ञानवर्णादयः क्षेत्रमाकाशं कालः समयादिः पर्यवाः स्वपरभेदभिन्नाधर्म्माः अथवा कालकृता अवस्था नवपुराणादयः पर्यवाः प्रदेशा निरंशावयवाः परिणा मा अवस्थातोवस्थान्तरगमनानि यथा येनप्रकारेणास्तिभावोऽस्तित्वं सत्ता यथास्तिभावः अनुगमः संहितादिव्याख्यानप्रकाररूपं उद्देशनिर्देशनिर्गमादिद्वा रकलापात्मको वा निक्षेपो नामस्थापनाद्रव्यभावै र्वस्तुनोन्यासः नयप्रमाणं नया नैगमादयः सप्त द्रव्यास्तिकपर्यायास्तिकभेदात् ज्ञाननयक्रियानयभेदाद्वा द्वौ तेएव तावेव वा प्रमाणं वस्तुतत्वपरिच्छेदनं नयप्रमाणं तथासुनिपुणः सुसूक्ष्मः सुनिपुणोवा सुष्टुनिश्चितगुण उपक्रमः आनुपूर्व्यादि विविधप्रकारता चैषां भेद भणनत एवोपदर्शितेति पुनः किंभूतानां व्याकरणानां लोकालोकौ प्रकाशितौ येषुतानि तथा भवारसमुद्दरुंदउत्तरणसमत्थाणंति संसारसमुद्रस्य विस्तीर्णस्य उत्तारणे तारणे समर्थानामित्यर्थः अतएव सुरपतिसम्पूजितानां प्रश्नकनिर्णायकपूजनात् सूत्तलिन श्लाघितत्वाद्वा तथा भवियजणपयहियया भिणंदियाणंति ॥ टीका ।

माण सुनिउणोवक्कम विविहप्पकारपगडपयासियाणं लोगालोगपयासियाणं संसारसमुद्दरुंदउत्तरण सम त्थाणं सुरवइसंपूजियाणं भवियजणपयहिययाभिनंदियाणं तमरयविद्धंसणाणं सुदिठदीवभूय ईहामति ॥ मूल ॥

म आनुपूर्व्यादि अनेकप्रकारे प्रगट पणें प्रकाश्याछे । वली प्रश्न केहवा छे लोकालोकनो छे प्रकाश जेहने विषे । वली केहवा संसार चतुर्गतिकतद्रूपण समुद्र वंद अतिविस्तीर्ण तेहने उतरवा समर्थछे । वली केहवा सुरपति इंद्र तेणे संपूजितछे । भविकजनपदलोक तेहनो हृदय चित्त तेणेकरी अभि ॥ भाषा ।

॥ टीका ॥

भव्यजनानां भव्यप्राणिना मजालोको भव्यजनप्रजा भव्यजनपदोवा तस्या स्तस्य वा हृदये श्चित्तैरभिनन्दिताना मनुमोदिताना मितिविग्रहः तथा तमोरज सौ अज्ञानपातके विध्वंसयति नाशयति यत्तत्तमोरजोविध्वंसं तच्च तदज्ञानञ्च तमोरजोविध्वंसज्ञानं तेन सुदृष्टष्टानि निर्णीतानि यानि तानि तथा अतएव तानिच तानि दीपभूतानिचेति अतएवच तानि ईहामतिबुद्धिवर्द्धनानि चेति तेषां तमोरजोविध्वंसज्ञानसुदृष्टदीपभूते हामतिबुद्धिवर्द्धनाना मत्र ईहा वितर्को मतिरवायो निश्चयइत्यर्थः बुद्धिरौत्पत्तिक्यादिचतुर्विधेति अथवा तमोरजोविध्वंसनानामिति पृथगेवपद मपाठान्तरेण सुदृष्टदीपभूतानामितिच तथा छत्तीस सहस्समणूणयाणंति अन्यूनकानि षट्त्रिंशत्सहस्राणि येषान्तानि तथा इहमकारोऽन्यथापादनिपातश्च प्राकृतत्वादनवद्यइति वागरणाणंति व्याक्रियन्ते प्रश्नानन्तरमुत्तरतया भिधीयन्ते निर्णायकेन यानि तानि व्याकरणानि तेषांदर्शनात्प्रकाशनादुपनिबन्धनादित्यर्थः अथवा तेषां दर्शना उपदर्शका इत्यर्थः कइत्याह सुयत्थबहुविहप्पयारेत्ति श्रुतविषया अर्थाः श्रुतार्था अभिलाप्यार्थविशेषाइत्यर्थः श्रुतावा कथिता जिनसकाशेगरधरेण ये अर्था स्तेश्रुतार्थाः अथवा श्रुतमिति सूत्रं अर्था निर्युक्त्यादय इति श्रुतार्था स्तेच ते बहुविधप्रकाराश्चेति विग्रहः श्रुतार्थानां वा बहुविधाः प्रकारा इतिविग्रहः किमर्थं तेव्याख्यायंत इत्याह शिष्या

॥ मूल ॥

बुद्धिवद्धमाणाणं छत्तीससहस्समणूणयाणं वागरणाणं दंसणाउ सुयत्थबहुविहप्पगारा सीसहियत्था गुण

॥ भाषा ॥

नंदित अनुमोद्याछे । वली केहवा तम अज्ञानरूपरज अज्ञान पातक तेहनो विध्वंसक नाशक छे रूडीपरें निर्णय कीधा एणे कारणेदीवारूप एणे कारणे ईहा वितर्क मतिते अवाय निश्चयार्थबुद्धि ते औत्पत्तिक्यादि चिहुं प्रकारे तेहने वधारेछे एहवा छत्रीस हजार ऊणामही संपूर्ण प्रश्न ने देखाडता थका सूत्रार्थपणें शिष्यने हितना अर्थ भणो गुणरूप अर्थ प्रास्यादिक लक्षण हाय सरीखो प्रधानहांय । भगवती सूत्रना गणित वाचना । संख्याता अनुयोग

थां हितमनर्थप्रतिघातार्थं प्रातिरूप्य मदेवार्थः प्रार्थ्यमानत्वा तस्य तस्मै इति किंभूतास्ते अतआह गुणहस्ता गुणएवार्थ प्राप्त्यादिलक्षणो हस्तइवहस्तः प्रधानावयवो येषांते तथा वियाहस्सेत्यादितु निगमनांतंसूत्रसिद्धं नवरं अतमिहाध्ययनस्य संज्ञा चतुरशीतिः पदसहस्राणि पदाग्रेणेति समवायापेक्षया द्विगु ॥ टीका ॥

हत्था वियाहस्सणं परित्तावायणा संखेज्जा अणुओगदारा संखेज्जाओपडिवत्तीओ संखेज्जावेढा संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ सेणं अंगठयाएपंचमे अंगे एगेसुयक्खंधे एगेसाइरेगे अज्झयणसते दसउद्देसगसहस्साइं दससमुद्देसगसहस्साइं छत्तीसंवागरणसहस्साइं चउरासीइपयसहस्साइं पयग्गेणं पन्नत्ता संखेज्जाइं अक्खराइं अणंतागमा अणंतापज्जवापरित्तातसाअणंताथावरा सासयाकडा णिबद्धा णिकाइया जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जंतिपन्नविज्जंति परूविज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति सेणंणाए एवंवि ॥ मूल ॥

द्वार उपक्रमादिक । संख्याती प्रतिपत्ती । संख्यातावेढाछंदविशेष । संख्याताश्लोक अनुष्टुपादिक । संख्याती निर्युक्ति । तेह अंगार्थपणे पांचमेअंगे १ श्रुतस्कंध १ अधिक १०० अध्ययन दशहजार उद्देशा दशहजार समुद्देशा ३६ हजार प्रश्न ८४ हजार पद समवायांगनी अपेक्षायें बेगुणाकीजे ती टीकाख ८८ हजार पदथाय । ते इहां नलेवा । संख्याता अक्षर । अनन्तागमा । अनन्ता पर्याय । त्रसवेइन्द्रियादिक । अनन्ताथावर वनस्पती द्रव्यार्थे करी शाश्वताछे । पर्यायार्थ पणें कीधाछे । सूत्रार्थपणें गुंथ्या निकाचित ते हेतु उदाहरणे करी प्रतिष्ठ्या । जिन वीतरागे कह्या जे पदार्थ ते कहियेछे । नामादिक भेदें करीप्ररूपियेछे । सद्भावे उपदेश करियेछे । ते भगवती सूत्रने विषे शाश्वता कीधा शाश्वतादिक पदनीव्याख्या आचारांगाधिकारे कीधीछे जिहां ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

चताया द्दाणाश्रयचा दन्यथा तद्दिगुणत्वे द्दत्वे अष्टाशीतिःसहस्राणिचभवन्तीति ॥ ५ ॥ सेकिंतमित्यादि अथ का सा ज्ञाताधर्मकथा ज्ञाता न्युदाहरणानि तत्प्रधाना धर्मकथा ज्ञाताधर्मकथा दीर्घत्वं संज्ञात्वात् अथवा प्रथमश्रुतस्कंधे ज्ञाताभिधायकत्वात् ज्ञातानि द्वितीयस्तु तथैव धर्मकथा स्वत च ज्ञाता।निच धर्मकथाच ज्ञाताधर्मकथा स्तच प्रथमव्युत्पत्त्यर्थं सूत्रकारो दर्शयन्नाह नायाधम्मकहासुणमित्यादि ज्ञातानामुदाहरणभूतानां मेघकुमारादी नां नगरादीन्याख्यायंते नगरादीनि द्वाविंशतिपदानि कंठ्यानिच नवर मुद्यानं पत्रपुष्पफल[illegible]पशोभितं वि[illegible]समानच बहुजनो यत्र भोजनार्थं यातीति चैत्यं व्यंतरायतनं वनखंडो नेकजातीयैरुत्तमैर्वृक्षैरुपशोभितमिति आघविज्जंति इहयावत्करणा दन्यानि पंचपदानि दृश्यानि यावदंसणया

॥ मूल ॥

ञ्जाए एवं चरणकरण परूवणया आघविज्जंति सेत्तंवियाहे ॥ ५ ॥ सेकिंतंणायाधम्मकहाउ णायाधम्मकहासुणं णायाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइआइं वणखंडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाउ इहलोइअ परलोइअइड्ढीविसेसाभोगपरिच्चाया पव्वज्जाउ सुयपरिग्गहा तवोव

॥ भाषा ॥

तगे। चरण श्रमण धर्मव्रत करण पिंडविशुद्धयादिकनी प्ररूपणा ते भगवती सूत्र ने विषे कहिये ते व्याख्यायांग एतले भगवती अंगपांचमो जाणिवो ॥ ५ ॥ स्यूंते ज्ञाता धर्मकथांग। ज्ञाता उदाहरण तत्प्रधान जेकथा ते ज्ञाताधर्मकथा अथवा पहिले श्रुतस्कंधे ज्ञाता मेघकुमारादिकना नगर नाम। उद्यान पत्र पुष्प फलेकरी शोभित चैत्य व्यंतरायतन। अनेक जाति ना वृक्षे करी शोभित बनखंड। राजा। माता। पिता। एहनानाम समोसरण घणांनो एकत्र मीलन। धर्माचार्यनाम। धर्मनी कथा। इहलोक मनुष्यलोक। परलोक देवगति तेहनी ऋधि विशेषनो भोग तेहनो त्या

वयवो यथा नायाधम्मेत्यादि तत्र ज्ञाताधर्मकथासु णमित्यलंकारे प्रव्रजितानां क्व विनयकरणजिनस्वामिशासनवरे कर्मविनयकरजिननाथसंबंधिनि शेषप्रव चनापेक्षया प्रधानेप्रवचने इत्यर्थः पाठांतरेण समणाणंविणयकरणजिणसासणंमि पवरे किंभूतानां संयमप्रतिज्ञा संयमाभ्युपगमः सैव दुरधिगम्यत्वात् कात रनरक्षोभकत्वा द्गंभीरत्वाच्च पातालमिवपातालं तत्र धृतिमतिव्यवसाया दुर्लभा येषांते तथा पाठांतरेण संयमप्रतिज्ञापालने ये धृतिमतिव्यवसाया स्तेषु दु र्बलाये ते तथा तेषां तत्र धृतिश्चित्तस्वास्थ्यं मतिर्बुद्धिव्यवसायो ऽनुष्ठानोत्साहइति तथा तपसि नियमोऽवश्यंकरण स्तपोनियंत्रितं तपः सच तपउपधानंचा ॥ टीका ॥

हाणाइं परियागा संलेहणाउ भत्तपच्चक्खाणाइं पावोवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाया पुणबोहि लाभो अंतकिरियाउय आघविज्जंति जावनायाधम्मकहासुणं पव्वइयाणं विणयकरणजिणसामिसासणवरे संजमपइन्नापालणधिइमइववसायदुब्बलाणं तवनियमतवोवहाणरणदुद्धरभरभग्गयाणिस्सहयाणिसिठाणं घो ॥ मूल ॥

ग। प्रव्रज्यादीक्षा। सूत्रनो मेलवो । तपोपधान १२ भेदे तपनो करिवो । पर्याय दीक्षानो काल । संलेखणानों करिवो । भात पाणीनो पचखवो । पादपोपगमन छेदीवक्षोडचपाखा जिम हालेचाले नही तिम ते यती संथारो कर्यापछे हलोचाले नही। देवलोकनो आइवो। उत्तम कुलें अवतार। वली बोधिलाभ धर्मनी प्राप्ति। अंतक्रिया संसारना अंतनो करिवो। एह सर्व वस्तु ज्ञाताविषे कहियेछे । जिहां लगे ज्ञाताधर्म कथाने विषें प्रव्रजित यती नो विनयनो करिवो तिहांलगे। जिन स्वामि वीतराग देवना प्रधान शासन विषें संयमपालवाभणी कीधी प्रतिज्ञानो पालवो। धृति चित्तनो स्वस्थपणो मति बुद्धि व्यवसाय तेह अनुष्ठान विषें उत्साह तेहने विषे दुर्बल कातर थयाछे तेपुरुषाने तप तथा नियम अवश्यकरणीय तपोपधान बारे भेदे तप तेहिज ॥ भाषा ॥

१८० ॥

निर्वंचितं तपएव श्रुतोपचारतपोवा तपोनियमतपउपधाने तेएव रणव कातरजनक्षोभकत्वात् संग्रामो दुद्धरभरत्ति श्रमकारवत्वा दुर्धरभरव दुर्वहलोहादि भार स्ताभ्यां भग्ना इति भग्नका:पराङ्मुखीभूता स्तथा निसहाधम्ति नि:सहा नितरामशक्तास्तएव नि:सहका निश्चष्टांगा मुक्तांगा ये ते तपोनियमतपउ पधानरणदुर्द्धरभरभग्नकनि: सहकनिसृष्टा: पाठांतरेण नि:सहकनिविष्टा स्तेषां मिश्चच प्राकृतत्वेन वकारलोपसंधिकरणाभ्यांभग्ना इत्यादौ दीर्घत्व मवसेय तथा घोरपरीषहै: पराजिता वासमर्था: सन्त: प्रारब्धाय परीषहैरेव वशीकर्तुं रुद्धाय मोक्षमार्गगमने ये ते घोरपरीषहपराजिता सहप्रारब्धरुद्धा: अतएव सिद्धालयमार्गात् ज्ञानादे र्निर्गता: प्रतिपातिता ये ते तथा तेचतेचेति तेषां घोरपरीषहपराजितासहप्रारब्धरुद्धसिद्धालयमार्गनिर्गतानां पाठांतरेण घोरपरी षहपराजितानां तथा सह युगपदेव परीषहै र्विशिष्टगुणश्रेणिमारोहंत: प्ररुद्धरुद्धा: अतिरुद्धा सिद्धालयमार्गनिर्गताश्च ये ते तथा तेषां सहप्ररुद्धसिद्धालय मा र्गनिर्गतानां तथा विषयसुखेषु तुच्छेषु स्वरूपत: आशावशदोषेणमनोरथ पारतंत्र्यवैगुण्येन मूर्च्छिता अभ्युपपन्ना येते तथा तेषांविषयसुखतुच्छाशावशदोषमू र्च्छितानां पाठांतरेण विषयसुखेया महेच्छा:कस्यांचिदवस्थायां या चावस्थांतरे तुच्छाशा तयो र्वश: पारतंत्र्यं तल्लक्षणेनदोषेण मूर्च्छिता ये ते तथा तेषांविषय ॥ टीका

रपरीसहपराजियाणं सहपारद्धरुद्धसिद्धालयमग्गनिग्गयाणं विसयसुहतुच्छआसावसदोसमुच्छियाणं विरा ॥ मूल ॥

दुर्वह भार रण संग्राम तेणें करी भग्न उपराठा थयाछे अत्यर्थ अशक्तछे संयम मार्गे थाकाछे वली घोर रुद्र उपद्रव करी भागाछे एहवा असह असम र्थछे प्रारब्धा परीषह वसिकरिवाने रुंध्याछे । वली सिद्धालयमार्ग ते मोक्षमार्ग ज्ञान दर्शन चारित्र थकी नीकल्याछे । तुच्छ विषय सुखनी आशा रूप दो षे करी वसथई तेमूर्च्छित थयाछे । विराध्याछे दर्शनज्ञानचारित्र । यतीना अनेक प्रकारना मूलगुण उत्तरगुणरूप गुण तेहने विषे निस्सार तेणेकरी शून्य ॥ भाषा ।

॥ टीका ॥

सुखमहेच्छातुच्छाशयावद्यदोषमूर्छितानां तथा विराधितानि चारित्रज्ञानदर्शनानि यैस्ते तथा तथा यतिगुणेषु विविधप्रकारेषु मूलगुणोत्तरगुणरूपेषु निःसारा सारवर्जिता प्रलंजिप्रायगुणधान्याइत्यर्थः तथा तैरेव यतिगुणैः शून्यकाः सर्वथा अभावा ये ते तथेति पदद्वयस्य चकर्मधारयोऽतस्तेषां विराधितचारित्रज्ञान दर्शनयतिगुणविविधप्रकारनिःसारशून्यकानां किमतआह संसारे संसृतौ अपारदुःखा अनन्तक्लेशा ये दुर्गतिषु नारकतिर्यक्षु मानुषकुदेवरूपासु भवा भवग्रहणानि तेषां ये विविधाः परंपराः पारंपर्याणि तासांयेप्रपंचा स्ते संसाराऽपारदुःखदुर्गतिभवविविधपरंपरप्रपंचा आख्यायंते इतिपूर्वेणयोग स्तथा धीराणांच महासत्वानां किंभूतानां जितपरीषहकषायसैन्यं यै स्ते तथा धृतेर्मनःस्वास्थ्यस्य धनिकाः स्वामिनो धृतिधनिकाः तथा संयमे उत्साहो वीर्यं निश्चितो ऽवश्यंभावी येषांते संयमोत्साहनिश्चिताःततः पदत्रयस्य कर्मधारयो ऽत स्तेषां जितपरीषहकषायसैन्यधृतिधनिकसंयमोत्साहनिश्चितानां तथा राधिता ज्ञानदर्शन चारित्रयोगा यैस्ते तथा निःशल्यो मिथ्यादर्शनादिरहितः शुद्धश्चातीचारविमुक्तो यः सिद्धालयश्च सिद्धिमार्ग स्तस्याभिमुखा येते तथा ततः पदद्वयस्य कर्मधार

॥ मूल ॥

हियचरित्तनाणदंसणजइगुणविविहप्पयारनिस्सारसुन्नयाणं संसारअपारदुक्खदुग्गइ भवविविहपरंपरापवं
धा धीराणयजियपरीसहकसायसेन्नधिइधणियसंजमउच्छाहनिच्छियाणं आराहियनाणदंसणचरित्तजोगनि

॥ भाषा ॥

छे। एहवा भाव ज्ञाताने विषे कह्याछे। संसारनेविषे अपार दुख दुर्गति ने विषे उपजवो तेहनो जे अनेक प्रकारनी परंपरा संतति तेहना विस्तारने विषे जेधीर महासत्वनाधणी वली जेणे परीषह कषायनी सेना जीती छे। तेहना प्रबन्ध ज्ञाताने विषे कहिदेछे। वली धृति जे मननो स्वस्थपणो तेहीजछे धन जेहने एतले धृतिना स्वामी। तथा संयमने विषे उत्साह वीर्य निश्चित छे जेहना। जेणे ज्ञानदर्शन चारित्रनायोग आराध्याछे। जे निःशल्य मिथ्यात्व

॥ टीका ॥

निर्वर्तितं तपएव श्रुतोपचारतपोवा तपोनियमतपउपधाने तेएव रणश्च कातरजनक्षोभकत्वात् संग्रामो दुद्धरभरत्ति अमकारश्चला दुर्धरभरश्च दुर्वहलोहादि भार स्ताभ्यां भग्ना इति भग्नकाःपराङ्मुखीभूता स्तथा निसहाचन्ति निःसहा नितरामशक्तास्तएव निःसहका निसृष्टांगा मुक्तांगा ये ते तपोनियमतपउ पधानरणदुर्द्धरभरभग्नकनिःसहकनिसृष्टाः पाठांतरेण निःसहकनिविष्टा स्तेषां मिहच प्राकृतत्वेन वकारलोपसंधिकरणाभ्यांभग्ना इत्यादौ दीर्घत्व मवसेयं तथा घोरपरीषहैः पराजिता वासमर्थाः सन्तः प्रारब्धाश्च परीषहैरेव वशीकर्तुं रुद्धाश्च मोक्षमार्गगमने ये ते घोरपरीषहपराजिता सहप्रारब्धरुद्धाः अतएव सिद्धालयमार्गात् ज्ञानादे र्निर्गताः प्रतिपातिता ये ते तथा तेचतेचेति तेषां घोरपरीषहपराजितासहप्रारब्धरुद्धसिद्धालयमार्गनिर्गतानां पाठांतरेण घोरपरी षहपराजितानां तथा सह युगपदेव परीषहै र्विशिष्टगुणश्रेणिमारोहंतः प्ररुद्धरुद्धाः प्रतिरुद्धा सिद्धालयमार्गनिर्गताश्च ये ते तथा तेषां सहप्ररुद्धसिद्धालय मा र्गनिर्गतानां तथा विषयसुखेषु तुच्छेषु स्वरूपतः आशावशदोषेणमनोरथ पारतंत्र्यवैगुण्येन मूर्च्छिता अभ्युपपन्ना येते तथा तेषांविषयसुखतुच्छाशावशदोषमू र्च्छितानां पाठांतरेण विषयसुखे या महेच्छाःकस्यांचिदवस्थायां या चावस्थांतरे तुच्छाशा तयो र्वशः पारतंत्र्यं तल्लक्षणेनदोषेण मूर्च्छिता ये ते तथा तेषांविषय

॥ मूल ॥

रपरीसहपराजियाणं सहपारद्धरुद्धसिद्धालयमग्गनिग्गयाणं विसयसुहतुच्छआसावसदोसमुच्छियाणं विरा

॥ भाषा ॥

दुर्वह भार रण संग्राम तेणें करी भग्न उपराठा थयाछे अत्यर्थ अशक्तछे संयम मार्गे थाकाछे वली घोर रुद्र उपद्रव करी भागाछे एहवा असह असम र्थई प्रारब्धा परीषह वशिकरिवाने रुंध्याछे । वली सिद्धालयमार्ग ते मोक्षमार्ग ज्ञान दर्शन चारित्र थकी नीकल्याछे । तुच्छ विषय सुखनी आशा रूप दो षे करी वशथई तेमूर्च्छित थयाछे । विराध्याछे दर्शनज्ञानचारित्र । यतीना अनेक प्रकारना मूलगुण उत्तरगुणरूप गुण तेहने विषे निस्सार तेणेकरी शून्य

॥ टीका ॥

सुखमहेच्छातुच्छायावमदोषमूर्छितानां तथा विराधितानि चारित्रज्ञानदर्शनानि यैस्ते तथा तथा यतिगुणेषु विविधप्रकारेषु मूलगुणोत्तरगुणरूपेषु निःसारा सारवर्जिता प्रसंजिप्रायगुणधान्याद्दत्यर्थः तथा तैरेव यतिगुणैः शून्यकाः सर्वथा अभावा ये ते तथेति पदद्वयस्य कर्मधारयोऽतस्तेषां विराधितचारित्रज्ञान दर्शनयतिगुणविविधप्रकारनिःसारशून्यकानां किमतआह संसारे संसृतौ अपारदुःखा अनन्तक्लेशा ये दुर्गतिषु नारकतिर्यक्षु मानुषकुदेवरूपासु भवा भवग्रहणानि तेषां ये विविधाः परंपराः पारंपर्याणि तासां ये प्रपंचास्ते संसाराऽपारदुःखदुर्गतिभवविविधपरंपरप्रपंचा आख्यायंते इतिपूर्वेणयोग स्तथा धीराणांच महासत्वानां किंभूतानां जितंपरीषहकषायसैन्यं यैस्ते तथा धृतेर्मनःस्वास्थ्यस्य धनिकाः स्वामिनो धृतिधनिकाः तथा संयमे उत्साहो वीर्यं निश्चितो ऽवश्यंभावी येषांते संयमोत्साहनिश्चिताःततः पदत्रयस्य कर्मधारयोऽतस्तेषां जितपरीषहकषायसैन्यधृतिधनिकसंयमोत्साहनिश्चितानां तथा राधिता ज्ञानदर्शन चारित्रयोगा यैस्ते तथा निःशल्यो मिथ्यादर्शनादिरहितः शुद्धस्यातीचारविमुक्तो यः सिद्धालयस्य सिद्धिमार्ग स्तस्याभिमुखा येते तथा ततः पदद्वयस्य कर्मधार

॥ मूल ॥

हियचरित्तनाणदंसणजइगुणविविहप्पयारनिस्सारसुन्नयाणं संसारअपारदुक्कदुग्गइ नवविविहपरंपरापवं

धा धीराणयजियपरीसहकसायसेन्नधिइधणियसंजमउच्छाहनिच्छियाणं आराहियनाणदंसणचरित्तजोगनि

॥ भाषा ॥

छे। एहवा भाव ज्ञाताने विषे कह्याछे। संसारनेविषे अपार दुख दुर्गति ने विषे उपजवो तेहनो जे अनेक प्रकारनी परंपरा संतति तेहना विस्तारने विषे जेधीर महासत्वनाधणी वली जेणे परीषह कषायनी सेना जीती छे। तेहना प्रबन्ध ज्ञाताने विषे कहिएछे। वली धृति जे मननो स्वस्थपणो तेहीजछे धन जेहने एतले धृतिना स्वामी। तथा संयमनेविषे उत्साह वीर्य निश्चित छे जेहना। जेणे ज्ञानदर्शन चारित्रनायोग आराध्याछे। जे निःशल्य मिथ्यात्व

॥ १८१ ॥

॥ टीका ॥

य अतस्तेषामाराधितज्ञानदर्शनचारित्रयोगनि:शल्यशुद्धसिद्धालयमार्गाभिमुखानां किमतआह सुरभवने देवतयोत्पादे यानिविमानसौख्यानि तानि सुरभवन विमानसौख्यानि अनुपमानि ज्ञाताधर्मकथाख्यायंत इति प्रक्रम इहच भवनशब्देन भवनपतिभवनानि व्याख्याता न्यविराधितसंयमप्रव्रजितप्रस्तावात् तेहि भवनपतिषु नोत्पद्यन्तइति तथा भुक्त्वा चिर भोगान् मनोज्ञशब्दादीन् तथाविधान् दिव्यान् स्वर्गभवान् महार्हान् महतमात्यन्तिकान् अर्हान् प्रशस्त तया पूज्यानितिभाव: ततश्च देवलोकात् कालक्रमच्युतानां यथाच पुनर्लब्धसिद्धिमार्गाणा मनुजगता ववाप्तज्ञानादीना मन्तक्रिया मोक्षो भवति तथा ख्यायतइतिप्रक्रम: तथा चलितानाञ्च कथञ्चित्कर्मवशत: परीषहादा वधीरतया संयमप्रतिज्ञाया: प्रभ्रष्टानां सहदेवै र्मानुषा: सदेवमानुषा स्तेषां सम्बन्धी नि धीरकरणे धीरत्वोत्पादने यानि कारणानि ज्ञातानि तानि सदेवमानुषधीरकरणकारणानि आख्यायन्तइतिप्रक्रम: इयमत्रभावना यथा आर्याषाढो देवे नधीरीकृतो यथावा मेघकुमारो भगवता शैलकाचार्यो वा पान्थकसाधुना धीरीकृत एवं धीरकरणकारणानि तत्राख्यायन्ते किम्भूतानि तानीत्याह बोधना

॥ मूल ॥

रसल्लसुद्धसिद्धालयमग्गमभिमुहाणं सुरभवणविमाणसुरकाइं अणोवमाइं भुत्तूणचिरंच भोगभोगाणि ताणि दिव्वाणि महरिहाणि ततोयकालक्कमचुयाणं जहयपुणो लद्धसिद्धिमग्गाणं अंतकिरिया चलियाणयसदेवमा

॥ भाषा ॥

दर्शनादि रहित अतीचार रहित थको सिद्धिना मार्गने अभिमुख छे तेहने देवताना भवने विषे विमानना अनुपम सुख ज्ञाताने विषे कहियेछे। तेह मनोज्ञ शब्दादिक पंचेंद्रियना विषय महर्घ्य देवतासंबंधी चिरकाललगे भोगीने कालक्रमे देवलोकथीचव्यो तथा वलीपाम्योछे सिद्धिनो मार्ग जेणे । एह पूर्वोक्त सहुने अंतक्रिया ज्ञाताने विषे कहीछे । कोइक कर्मना वशथी जे चल्याछे संयमनी प्रतिज्ञाथी भ्रष्टथया छे देवता सहित मनुष्य तत्संबन्धी धीर

॥ टीका ॥

नुशासनानि बोधनानि मार्गभ्रष्टस्य मार्गसंस्थानानि अनुशासनानि दुःखस्य सुखतासम्पादनानि अथवा बोधनमामंत्रणं तत्पूर्वकान्यनुशासनानि बोधनानुशासनानि तथा गुणदोषदर्शनानि संयमाराधनायां गुणा इतरत्र दोषा भवन्तीत्येव न्दर्शनानि वरवान्याख्यायन्त इतियोगः तथा दृष्टान्तान् ज्ञातानि प्रत्ययांश्च बोधिकारणभूतानि वाक्यानि श्रुत्वा लोकमुनयः शुकपरिव्राजकादयो यथा येनप्रकारेण स्थिताः शासने जरामरणनाशनकरे जिनानांसम्बन्धिनीति भावः तथाख्यायन्तइतियोगः तथा आराहितसंजमत्ति एतएव लौकिकमुनयः संयमम्पालिताश्च जिनप्रवचनम्प्रपन्नाः पुनः परिपालितसंयमाश्च सुरलोक गत्वा चैते सुरलोकप्रतिनिवृत्ता उपयन्ति यथा शाश्वतं सदाभाविनं शिवमबाधकं सर्वदुःखमोक्ष निर्वाणमित्यर्थः एतेचोक्तलक्षणाः अन्येच एवमादय आदि

॥ मूल ॥

णुसधीरकरणकारणाणि बोधणअणुसासणाणि गुणदोसदरिसणाणि दिठंते पच्चयसोऊणलोगमुणिणो जह ठियसासणम्मि जरमरणनासणकरे आराहिअसंजमाय सुरलोगपडिनियत्ता उवेन्ति जहसासयं सिवं सव्वदु

॥ भाषा ॥

करिवाने अर्थे जेकारण उदाहरण ज्ञातानेविषें कह्याछे। जिम मेघकुमारने हाथीना उदाहरणथी थिरकीधो तथा बोधन जे मार्गथकी भ्रष्ट तेहने मार्ग थापिवो तथा शिक्षा देवी। गुणवली दोषनी देखाडवी। तथा प्रतिबोधना कारणभूत दृष्टांत सुणीने लोकमुनी शुकपरिव्राजकादिक जेणे प्रकारे जरा मरणनो नाश करणहार एहवा जिन शासन ने विषे रह्या। तेज्ञातने विषे कह्याछे। आराध्योछे संयम जेणे एहवा एहीज लोकमुनी देवलोक पाम्या तथो देवलोक थो उपराठा आवे वली धर्म आराधीने जिम शाश्वत सदाभावि बाधारहित सर्वदुःखमोक्ष एतले निर्वाण। इत्यादिक पूर्वे कह्याते अथवा

अन्दस्य प्रकारार्थत्वा देवंप्रकारार्था: पदार्था: विस्तरेणयन्ति विस्तरेण चशब्दात्कचित्कचित् संक्षेपेण आख्यायन्त इतिक्रियायोग: नायाधम्मकहासुणमित्या दि कथ्यमानिगमना ववर मेत्रत्तोसमज्झयणत्ति प्रथमश्रुतस्कन्धे एकोनविंशतिर्द्वितीयेच दशेति दशधम्मकहाणंवग्गा इत्यादौ भावनेय मिहैकोनविंशतिर्ज्ञा ताध्ययनानि दार्ष्टान्तिकार्थज्ञापनलक्षणज्ञातप्रतिपादकत्वा त्तानि प्रथमश्रुतस्कन्धे द्वितीयेत्वहिंसादिलक्षणस्य धर्मस्य कथा आख्यानकानौ त्युक्तम्भवति तासां च दशवर्गा वर्गइतिसमूह स्ततश्चार्थाधिकारसमूहात्मकान्यध्ययनान्येवं दशवर्गाद्रष्टव्या स्तत्रज्ञातेष्वादिमानि दशज्ञातानि ज्ञातान्येव नतेष्वाख्यायिकादिस

सकमोरकं एए अस्सेय एवमाइस्थवित्थरेणय णायाधम्मकहासुणं परित्तावायणा संखेज्जा अणुत्तगदाराजावसं खेज्जाउ संगहणीउ सेणं अंगठयाए छठे अंगेदोसुअरकंधा एगूणतीसं अज्झयणा ते समासउ दुविहा पसत्ता

अन्यभी विस्तार थी तथा संक्षेप थी ज्ञाताने विषे कह्याछे। ज्ञाताने विषे संख्याती वाचना सूत्रार्थ प्रदानरूप। संख्याता अनुयोगद्वार उपक्रमादिक। या वत् संख्याती संग्रहणी लगें जाणिवो सूत्र थोडो अर्थ घणो ते संग्रहणी। तेह अंगार्थ पणे। एम छठे अंगे बे श्रुतस्कंध पहिले श्रुतस्कंधे उगणीस अध्ययन ते १८ ज्ञाताध्ययन संक्षेपथी बे प्रकारे कह्या। ते कहेछे। केईक अध्ययन मेघकुमारादिक चरित्ररूप। कईक जल्पितरूप समुद्रना अने कूवाना मोडको वा तकोधो। इत्यादिक। बीजे श्रुतस्कंधे दश धर्मकथानावर्ग समूह तिहां एकेकोये धर्मकथायें अधिकारना समूहात्मकअध्ययन ते मांहि ज्ञातानेविषे पहिला दश वर्ग ज्ञाता उदाहरण रूपतेहने विषे आख्यायिकादिकनो संभवनथी शेष ८ ज्ञाताने विषे एकेक ज्ञातामांहि पँतालीस २ अधिक अख्यायिकना सैंकडा

॥ टीका ॥

अथ: शेषाणि नवशतानि तेषु पुनरेकैकस्मिन् पञ्चपञ्चचत्वारिंशदधिकानि आख्यायिकाशतानि तत्राप्येकैकस्या माख्यायिकायां पञ्चपञ्चोपाख्यायिकाशता नि तत्राप्येकैकस्यामुपाख्यायिकायां पंचपंचाख्यायिकोपाख्यायिकाशतानि एवमेतानि संपिण्डितानि किंसङ्ख्यातं इगवीसंकोडिसयं लक्खापन्नासमेवबोधव्वा २१५००००००० एवंठिएसमाणे अहिगयसुत्तस्सपत्थारो ॥ १ ॥ तद्यथा दसधम्मकहाणंवग्गा तत्थणंएगमेगाएधम्मकहाए पंचपंचअक्खाइयासयाइं एगमेगाए अक्खाइयाएपंचपंचउवक्खाइयासयाइं एगमेगाएउवक्खाइयाएपंचपंचअक्खाइउवक्खाइसयाइंति एवमेतानि सम्पिण्डितानि किंसङ्ख्यातं पणवीसंकोडिसयं २५०००००० एत्थयसमलक्खणाइयाजम्हा नवनाययसंबद्धा अक्खाइयमाइयातिणं ॥ १ ॥ तेराहिज्जंतिफुडं इमाउरासीउवेगलाणंतु पुणरुत्तवज्जियाणं पमाणमेयं

॥ मूल ॥

तंजहा चरित्ताय कप्पियाय दसधम्मकहाणं वग्गा तत्थणं एगमेगाए धम्मकहाए पंच पंच अक्खाइयासयाइं एगमेगाए अक्खाइयाए पंच पंच उवक्खाइयासयाइं एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइअउवक्खाइ

॥ भाषा ॥

कहिवा। तिहां एकेक आख्यायिकनेविषें पांच पांच सो उपाख्यायिक छे। तिहां वली एकेक उपाख्यायिकनेविषे पांचपांच आख्यायिक उपाख्यायिकना सेंकडाछे। तिहां आख्यायिक नाम कथा उपाख्यायिक ते उपकथा एह सर्व एकठी करतां। इगवीसंकोडिसयं लक्खापन्नासमेवबोधव्वा। २१५०००००० एवं ठिए समाणे अहिगयसुत्तस्सपत्थारो ॥ १ ॥ तद्यथा। दस धम्मकहाणंवग्गा तत्थणंएगमेगाएधम्मकहाए पंच पंच अक्खाइयासयाइं एगमेगाएअक्खाइया ए पंच पंच उवक्खाइयासयाइं एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइउवक्खाइयासयाइंति। एसर्व एकठाकीधा तिवारे २५०००००० पंचवीस कोटि थई ते मांहिथी पाछली थोक एकवीस किरोड पंचास लाख पुनरुक्तपणामाटे बाहिर काढिये तो साढे ३ कोटि कथाहोय तेमाटे कहेछे। एव मेव सपूर्वा

॥ १८३ ॥

॥ टीका ॥

विधिहिते ॥ २ ॥ सोधितेचैतस्मिन् सति अर्द्धचतुर्थाएव कथानककोट्यो भवन्तीति अतएवाह एवमेवसपुव्वावरेणंति भणितप्रकारेण गुणनशोधनेकृते सतीत्युक्त भवति अद्धुट्ठाओ अक्खाइयाकोडीओभवंतीति मक्खाओत्ति आख्यायिकाकथानकानि एताएवमेतत्संख्याभवंतीतिकृत्वा आख्याता भगवतामहावीरेणेति तथा संख्यातानि पदसयसहस्साणीति किल पञ्चलक्षाणि षट्सप्ततिश्वसहस्राणि पदाग्रेण अथवा सूत्रालापकपदाग्रेण संख्यातान्येवपदशतसहस्राणि भवन्ती त्येवं सर्वत्र भावयितव्यमिति ॥ ६ ॥ सेकिंतमित्यादि अथ का स्ता उपासकदशा उपासकाः श्रावका स्तद्गतक्रियाकलापप्रतिबद्धा दशा दशा

॥ मूल ॥

अ्सयाइं एवामेवसपुव्वावरेणं अद्धुठाउ अक्खाइयकोडीउ भवंतीति मक्खायाउ एगूणतीसं उद्देसणकाला एगूणतीसं समुद्देसणकाला संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं पण्णत्ता तंजहा संखेज्जाअक्खरा जावचरणकर णपरूवणया आघविज्जंति सेत्तं णायाधम्मकहाउ ॥ ६ ॥ सेकिंतंउवासगदसाउ उवासगदसासुणं

॥ भाषा ॥

पर तेणें प्रकारे पहिलो गुणाकार करिये। पछे पाछला आंके आगलोआंक सोधिये तिवारे साडे ३ कोटिकथानो थाय। तेभगवान महावीर स्वामीये क ह्यो। ज्ञाताने विषे उगुणत्रीस उद्देशन काल उद्देशाना अवसर कह्या। उगुणत्रीस समुद्देशनकाल। संख्याता पदना सत सहस्र ५ लाख ७६ हजार पद परिमाणें कह्या। ते कहेछे। वली संख्याता अक्षर यावत् शब्देंकरी संख्याता वेढा संख्याता श्लोक ज्ञाताने विषे चरण श्रमणधर्म करण पिंडविशुद्ध्यादि कनी प्ररूपणा कहिये ते ज्ञाताधर्मकथा छट्ठो अंग ॥ ६ ॥ स्यूंतेउपासक दशांग। उपासक श्रावकनी क्रियाकलाप प्रतिबद्ध दश अध्ययनछे

॥ टीका ॥

ध्ययनोपलक्षिता उपासकदशा स्तथाचाह उपासकदसासुणं उपासकानां नगराणि उद्यानानि चैत्यानि वनखण्डा राजानः अम्बापितरौ समवसरणानि धर्माचार्या धर्मकथा ऐहलौकिकपारलौकिकाऋद्धिविशेषा उपासकानाञ्च शीलव्रतविरमणगुणप्रत्याख्यानपौषधोपवासप्रतिपादनता स्तत्र शीलव्रतान्यणुव्रतानि विरमणानि रागादिविरतयः गुणा गुणव्रतानि प्रत्याख्यानानि नमस्कारसहितादीनि पौषध मष्टम्यादिपर्वदिनं तत्रोपवसनमाहारशरीरसत्कारादित्यागः पौषधोपवासःततोद्वन्द्वस्तत्येतेषाम्प्रतिपादनताप्रतिपत्तय इतिविग्रहः श्रुतपरिग्रह स्तपउपधानानिचप्रतीतानि पडिमाश्रोत्ति एकादशउपासकप्रतिमाः कायोत्सर्गावा उपसर्गादेवादिकृतोपद्रवाः संलेखना भक्तपानप्रत्याख्यानानि पादपोपगमनानि देवलोकगमनानि सुकुलेप्रत्यायाति पुनर्बोधिलाभोऽन्तक्रिया

॥ मूल ॥

उवासयाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइआइं वणखंडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्म कहाउ इहलोइयपरलोइयइड्ढिविसेसा उवासयाणं सीलव्वयवेरमणगुणपच्चक्खाणपोसहोववासपडिवज्जियाउ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं पडिमाउ उवसग्गा संलेहणाउ भत्तपच्चक्खाणाइं पावोवगमणाइं देवलोग

॥ भाषा ॥

ते उपासक दशा कहिये। तेहने विषे श्रावकना नगर नाम उद्याननाम चैत्यनाम वनखंडनाम राजानाम माता पितानाम समोसरण धर्माचार्य नाम धर्मकथा इहलोक परलोक संबंधी ऋद्धि विशेष। श्रावकना शील शुभाचार व्रत १२ अणुव्रत रागादिकनो विरति गुणव्रतप्र त्याख्यान ते नवकारसी प्रमुख पौषध अष्टम्यादि पर्वतिथिये उपवास करिवो ते पौषधोपवासनो प्रतिपादवो कहिवो। श्रुतनो सांभलिवो। तथा बार भेदे तपनो करिवो। प्रतिमा ११ श्रावकनी उपसर्ग देवताना कीधा। संलेखणा तपें करी शरीरने कषाय दुर्बल करिवो। भातपाणीनो पचखवो। संथारो। देवलोके जाइवो

॥ टीका ॥

ख्याप्यन्ते पूर्वोक्तमेव अतोविशेषत आह उवासगेत्यादि तत्र ऋद्धिविशेषा अनेककोटीसंख्यद्रव्यादिसम्पद्विशेषाः तथा परिषदः परिवारविशेषा यथा माता पितृपुत्रादिका ऽभ्यन्तरपरिषत् दासीदासमित्रादिका बाह्यपरिषदिति विस्तरधर्मश्रवणानि महावीरसन्निधौ ततो बोधिलाभो भिगमः सम्यक्त्वस्य विशुद्धता स्थिरत्वं सम्यक्त्वशुद्धिरेव मूलगुणोत्तरगुणा अणुव्रतादयः अतिचारा स्तेषामेव वधबन्धादितः खण्डनानि स्थितिविशेषा श्वोपासकपर्यायस्य कालमानभेदाः बहुविशेषाः प्रतिमाः प्रभूतभेदाः सम्यग्दर्शनादिप्रतिमाः अभिगृहग्रहणानि तेषामेवच पालनानि उपसर्गाधिसहनानि निरुपसर्गश्चोपसर्गाभावस्येत्यर्थः तपां

॥ मूल ॥

गमणाइं सुकुलपच्चाया पुणोबोहिलाभो अंतकिरियाउ आघविज्जंति उवासगदसासुणं उवासयाणं रिद्धिविसेसा परिसाविच्छरधम्मसवणाणि बोहिलाभ अभिगमणे सम्मत्तविसुद्धया थिरत्तं मूलगुणउत्तरगुणाइयारा ठिईविसेसा बहुविसेसा पडिमाभिग्गहग्गहणउवसग्गाहियासणणिरुवसग्गा तवोय चित्ता सीलव्वयगुणवेर

॥ भाषा ॥

अने भलीसुकुले उपजवो । भली बोधनी प्राप्ति । अंतक्रिया करिवी । एहसर्व उपासक दशामांहि कहियेछे । उपाशक दशाने विषे श्रावकनी ऋद्धिविशेष अनेक धन कोटि संख्या विशेष । परिषदा परिवारनो विस्तार । भगवंत महावीरने पासे धर्मनो सांभलिवो । धर्मनो प्राप्ति । धर्मनो आदरिवो । सम्यक्त्वनी विशुद्धता निर्मलता । धर्मने विषे स्थिरपणो । मूलगुण उत्तरगुणना अतीचार वध बंधादिक । स्थिति विशेष । श्रावकपणांना कालनी मर्यादा । सम्यग्दर्शन प्रतिमा अभिग्रहनो बहु विशेष कहिये बहुत भेदनो पहिवो पालवो उपसर्गनो सहिवो । तथा निरुपसर्ग उपसर्ग विना पणि चित्र विचित्र अने

शिव विचार्णि शीलव्रतादयो उत्तरोत्तररूपा अपश्चिमा: पश्चात्कालभाविन्य: अकारस्त्वमङ्गलपरिहारार्थ: मरणरूपे अन्ते भवा मारणान्तिक्य: आत्मशरीर स्य जीवस्य च संलेखना: तपसा रोगादिजयेनच कृशीकरणानि आत्मन: संलेखना: तत: पदत्रयस्य कर्मधारय स्तासां जोसणंति जोषणा: सेवना: करणा नीत्यर्थ: ताभिरपश्चिममारणान्तिकात्मसंलेखनाजोषणाभि रात्मानं यथाच भावयित्वाबह्वनिभक्तानि अनशनतया च निर्भोजनतया च्छेदयित्वा व्यवच्छेद्य उ पपन्ना स्युरितिगम्यते केषु कल्पवरेषु यानि विमानोत्तमानि तेषु यथानुभवन्ति सुरवरविमानानि वरपुंडरीकाणीव वरपुण्डरीकाणि यानि तेषु कानि सौख्या न्यनुपमानि क्रमेण भुक्तोत्तमानि तत: आयुष्कक्षयेण च्युता: सन्तो यथा जिनमते बोधिं लब्धा इतिविशेष: यथाच संयमोत्तम मधानं संयमं तमोरजओघ ॥ टीका ॥

मण पच्चक्खाणपोसहोववासा अपच्छिममारणंतियाय संलेहणा झोसणाहिं अप्पाणं जहय भावइत्ता बहूणि भत्ताणि अणसणाए च्छेअइत्ता उववन्ना कप्पवरविमाणुत्तमेसु जह अणुभवंति सुरवरविमाणवरपोंडरीएसु सोक्खाइं अणोवमाइं कमेण भुत्तूण उत्तमाइं तओ आउक्खएचुआसमाणा जहजिणमयम्मि बोहिलद्धूणय सं ॥ मूल ॥

क प्रकारे शील शुभाचार व्रत अणुव्रतादिक विरति प्रत्याख्यान नवकारसी प्रमुख तथा पौषधोपवास छेहले काले मरणांतिक संलेखना मरणरूप अं तकाले होय एहवी संलेखना आत्माने कर्मथी हलुको करिवो। तेहनो जोषणो तेहनो सेविवो तेणे आपणा आत्माने भावियें जिमघणे प्रकारे अनसने करी कर्मछेदीने उपनोछे प्रधान उत्तम देवलोक ने विषे सुख अनुभवेछे। देवता संबंधी प्रधान विमान प्रधान पुंडरीक कमलनीपरें उत्तम तेहने विषें कल्याण जाय एहवा अनुपम सुखप्रतें क्रमें अनुक्रमें भोगवीने देवलोक थकी आयुक्षयथी चव्याथका जिम जिन मतने विषें बोधि श्रीजिनधर्मनो प्राप्ति ॥ भाषा ॥

विप्रमुक्ता अज्ञानकर्मप्रवाहविमुक्ता उपयन्ति यथा अक्षयं अपुनरावृत्तिकं सर्वदुःखमोक्षं कर्मक्षयमित्यर्थः तथोपासकदशास्वाख्यायन्त इतिप्रक्रमः एतेचान्ये चेत्यादि प्राग्वं नवरं संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणंति किलैकादशलक्षाणि द्विपञ्चाशच्चसहस्राणि पदानामिति ॥ ७ ॥ सेकिंतमित्यादि अथ ॥ टीका ॥

जमुत्तमं तमरयोघविप्पमुक्का वेंति जहअक्खयसव्वदुक्खमोक्खं एते अन्नेय एवमाइ उवासयदसासुणं परित्ता वायणा संखेज्जाअणुजगदारा जाव संखेज्जाउ संगहणीउ सेणं अंगठयाए सत्तमे अंगे एगेसुयखंधे दसअ ज्झयणा दसउद्देसणकाला दससमुद्देसणकाला संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेणं प० संखेज्जाइं अक्खरा इं जाव एवं चरण करणपरूवणा आघविज्जंति सेत्तं उवासगदसाउ ॥ ७ ॥ सेकिंतं अंतग ॥ मूल ॥

होय वली उत्तम संयम आराधीने अज्ञानरूप अंधकार तत्क्षण राजा तेहथी मूंकाणा जिम अक्षय अपुनरावृत्तिक सर्वदुःखक्षय लक्षण मोक्षपावे। इत्यादिक पूर्वोक्त तथा अनेरापिण पदार्थ उपासक दशाने विषें कहियेछे। परित्ता संख्याती वाचना। वली संख्याता अनुयोगद्वार। यावत् संख्याती संग्रहणी लगे जाणिवो। तेह अंगार्थपणें सातमो अंग तेहने विषें १ श्रुतस्कंध आनन्दादिक १० श्रावकना १० अध्ययन। दश उद्देशनकाल वली १० स मुद्देशन काल। संख्याता पदना सहस्र पदाग्रे पद परिमाणें कह्या। संख्याता अक्षर इहांथी चरण साधुव्रत करणपिंड विशुद्ध्यादिक इहांतक पूर्वो क्त पाठ कहिवो। ते उपासक दशा मांहि कहिये ते उपासकदशा सातमो अंग ॥ ७ ॥ सूंते अंतगडदशा संसारनो अंत कहिये नाश को ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

का स्ता अन्तकृद्दशाः तत्रान्तोविनाशः सच कर्म्मण स्तत्फलस्यवा संसारस्य कृतो यैस्ते अन्तकृता स्तेच तीर्थकरादय स्तेषां दशाः प्रथमवर्गे दशाध्ययनानीति तत्संख्यया अन्तकृतदशा स्तथाचाह अंतगडदसासुणमित्यादि कण्ठ्यं नवरं नगरादीनि चतुर्दशपदानिषष्ठाङ्गवर्णकाभिहितान्येव तथा पडिमाओत्ति द्वाद श भिक्षुप्रतिमा मासिक्यादयो बहुविधाः तथा क्षमा मार्दवं आर्जवंच शौचञ्च सत्यसहितं तत्रशौचम्परद्रव्यापहारमालिन्याभावलक्षणं सप्तदशविधश्च संयम उत्तमञ्च ब्रह्ममैथुनविरतिरूपं आकिंचणियत्ति आकिंचन्यं तप स्त्यागइति आगमोक्तं दानं समितयो गुप्तयश्चैव तथा अप्रमादयोगः स्वाध्यायध्यानयोश्च उत्त

॥ मूल ॥

अंतगडदसासु णं अंतगडाणं णगराइं उज्जाणचेइयवणरायाअम्मापियसमोसरणधम्माधम्मकहा इह लोइअपरलोइअ इड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाउ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं पडिमाउ बहुविहाउ खमाअज्जवं मद्दवंचसोअंच सच्चसहियं सत्तरसविहोयसंजमो उत्तमंचबंभं आकिंचिणया तवो किरियाउ समि

॥ भाषा ॥

धो जेणे ते अंतकृत् तेहनी दशा जे संख्या जिम पहिले वर्गे दश अध्ययन इत्यादिक ते अंतगडदशा अंतगडदशाने विषे संसार अंतकारी जीवना नगर उ द्यान चैत्य वनखंड राजा माता पिता समोसरण धर्माचार्य धर्मकथा कहियेछे। इहलोक परलोक संबंधी ऋद्धि विशेष भोग भोगीने पछे प्रव्रज्यादी क्षा लीधी। श्रुतनो भणिवो तपनो करिवो १२ भिक्षुप्रतिमा अनेक प्रकारे। क्षमा क्रोधनोजीतवो। आर्जव मायानो छांडिवो। मार्दव माननो त्याग। शौच कर्ममलनोछांडिवो। सत्यकरी सहित। सतरह भेदे संजम जाणिवो। उत्तम ब्रह्मचर्यनो पालवो मैथुननो अभाव। आकिंचनता निद्रव्यपणो। तप

मयो द्वयोरपि लक्षणानि स्वरूपाणि तत्र स्वाध्यायस्य लक्षणं सज्झाएणपसत्यंझाणमित्यादि ध्यानलक्षणं यथा अंतोमुहुत्तमित्तं चित्तावत्थाणमेगवत्थुमित्यादि व्याख्यायन्त इति सर्वत्रयोगः तथा प्राप्तानाञ्च संयमोत्तमं सर्वविरति जितपरीषहाणां चतुर्विधकर्म्मक्षये घातिक्षयेसति यथा केवलस्य ज्ञानादे र्लाभः पर्यायः प्रव्रज्यायाः लक्षणो यावांश्च यावद्वर्षादिप्रमाणो यथा येनतपोविशेषाद्यनशनादिना प्रकारेण पालितो मुनिभिः पादपोपगमनञ्च पादपोपगमाभिधानमनशनं प्रतिपन्नो योमुनि यंत्र शत्रुंजयपर्वतादौ यावन्तिच भक्तानि भोजनानि च्छेदयित्वा अनशनिनांहि प्रतिदिन भक्तद्वयच्छेदो भवति अन्तकृतो मुनिवरो जातस्तिमेवः तमोरजओघविप्रमुक्तएवंच सर्वेपि चेत्रकालादिविशेषिता मुनयो मोक्षसुखमनुत्तरञ्च प्राप्ता आख्यायन्त इति क्रियायोगः एते अन्ये चेत्यादि ॥ टीका ॥

इगुत्ताउ चेव तहअप्पमायजोगो सज्झायज्झाणेणयउत्तमाणं दोण्हंपि लक्खणाइं पत्ताणयसंजमुत्तमं जियपरीसहाणं चउव्विहकम्मक्खयम्मि जहकेवलस्सलंभो परियाउ जत्तिउयजहपालिउ मुणीहिंपावोवगउय जहिं जत्तियाणिभत्ताणि छेयइत्ता अंतगओमुणिवरो तमरयोघविमुक्को मोक्खसुहमणंतरंचपत्ता एए अन्नेय एव ॥ मूल ॥

१२ भेदे। क्रिया अनुष्ठान। समितिगुप्ति। तिमज अप्रमादना योग। स्वाध्याय सिद्धांत नूं भणवो। ध्यान धर्म ध्यानादि मुहूर्त लगे चित्तनूं एकाग्रपणोते स्वाध्यायध्यान। उत्तम एह बिहुंनालक्षण अंतगडदशा मांहि कहिये छे। संयमप्रते जेह पाम्या जेणे परीषह जीत्या घाति ४ कर्म ज्ञानावरणीय १ दर्शनावरणीय २ मोहनीय ३ अंतराय ४ एहनोनाशकरे जिम केवल ज्ञाननो लाभहोय प्राप्तिहोय। पर्याय ते दीक्षानोकाल जेणे मुनीश्वरें जेतला जेतला वर्ष प्रमाणें संयम पाल्यो होय। पादपोप गमन अनशनादिक जेह जेणें प्रकारे जेतलाभात पाणी छेदीने अतकृत् संसारना अंतकारक मुनिवर तम ॥ भाषा ।

प्राप्नत् नवरं दस अज्झयणत्ति प्रथमवर्गापेक्षयेव घटन्ते नन्द्यां तथैव व्याख्यातत्वात् यच्चेह पठ्यते सत्तवग्गत्ति तत्प्रथमवर्गादन्यवर्गापेक्षया यतोऽत्र सर्वेऽप्यष्ट व र्गाःसंख्यामपि तथापठितत्वा सदृहत्तिश्चेयं अट्ठवग्गत्ति अत्र वर्गः समूहः सचान्तकृताना मध्ययनानां वा सर्वाणिचैकवर्गगतानि युगपदुद्दिश्यन्ते ततोभणितं अट्ठ उद्देसणकालाइत्यादि इहच दशउद्देशनकाला अधीयन्ते इति नास्याभिप्रायमवगच्छामः तथा संख्यातानि पदशतसहस्राणि पदाग्रेणेति तानिच किल त्रयो विंशति र्लक्षाणि चत्वारिचसहस्राणीति ॥ ८ ॥ सेकिंतमित्यादि नास्मादुत्तरोविद्यते इत्यनुत्तर उपपतनमुपपातो जन्मेत्यर्थः अनुत्तरः प्रधान

माइत्थवित्थरेणं परूवेइ अंतगडदसासुणं परित्तावायणा संखेज्जाअणुओगदारा जावसंखेज्जाउसंगहणीउ सेणंअंगठयाएअठमेअंगेएगेसुयक्खंधे दसअज्झयणा सत्तवग्गा दसउद्देसणकाला दससमुद्देसणकाला संखे ज्जाइं पयसहस्साइंपयग्गेणं पन्नत्ते संखेज्जाअक्खरा जावएवंचरणकरणपरूवणया आघविज्जंति सेत्तं अंतग

अंधकार अज्ञानरूप रजणो मूंकाणो अनुत्तर प्रधान मोक्ष सुखप्रते पाम्यो। एह पूर्व कह्याते तथा अनेरापणि पदार्थ इहां अंतगडदशा मांहि कहिये छे। प्ररूपियेछे। संख्याता वाचना। संख्याता अनुयोगद्वार। जिहांलगि संख्याती संग्रहणी होय तिहांलगि जाणिवो। अंगार्थपणे आठमें अंगे एक श्रुतस्कं ध दश अध्ययन सात वर्ग तेप्रथम वर्गनी अपेक्षाये बीजा ७ एतले ८ वर्ग समूह। दश उद्देशनकाल दश समुद्देशन काल। संख्याता पदना सत सहस्र एतले २३ लाख ४ हजार पद परिमाणें कह्या। संख्याता अक्षर इहां थोमांडो चरण साधुव्रत करण पिंड विशुद्ध्यादिक लगें पूर्वनी परें पाठ कहि वो। इत्यादिक पदार्थ जिहां कहिये ते अंतगडदशा ८ मो अंग ॥ ८ ॥ अंते अणुत्तरोववाई नथी उत्तर कहिये प्रधान जेहथी तेहवा

संसारे मन्यस्य तथाविधस्या भावादुपपातो येषाम्ते तथा तएवानुत्तरोपपातिकाः तद्वक्तव्यताप्रतिबद्धा दशाध्ययनोपलक्षिता अनुत्तरोपपातिकदशा स्तथा चाह अणुत्तरोववाइयदसासुणमित्यादि तथानुत्तरोपपातिकानामिति साधूनां नगरादीनि द्वाविंशतिः पदानि ज्ञाताधर्मकथावर्णोक्तानि यथातथा एतेषा मेवच प्रपञ्चं रचयताह अणुत्तरोपपातिकदशासु तीर्थंकरसमवसरणानि किंभूतानि परममङ्गल्यजगद्धितानि जिनातिशेषाश्च बहुविशेषाश्च देहंविमलसुगंधमि

ऊदसाउ ॥ ८ ॥ सेकिंतं अणुत्तरोववाइयदसाउ अणुत्तरोववाइयदसासुणं अणुत्तरोववाइयाणं न गराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणखंडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाउ इहलोग परलोअइड्ढिविसेसा नोगपरिच्चाया पव्वज्जाउ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं परियागो पडिमाउ संलेहणाउ न त्तपाणपच्चख्काणाइं पाउवगमणाइं अणुत्तरोववाउ सुकुलपच्चायापुणोवोहिलाहोअंतकिरियाउ आघविज्जं ति अणुत्तरोववाइयदसासुणं तित्थकरसमोसरणाइं परममंगल्लजगहियाणि जिणातिसेसायबहुविसेसा जिण

दश अध्ययन प्रतिबद्ध दशाते अनुत्तरोपपातिक दशा। तेहने विषे अनुत्तर विमाने ऊपना जे साधु तेहनां नगर उद्यान् चैत्य यथायतन वनखंड राजा माता पिता समोसरण धर्माचार्य धर्मकथा इहलोक परलोक संबंधी ऋद्धि विशेष भोगनो परित्याग दीक्षा श्रुतनो भणिवो। तप १२ भेद उपधान वली भिक्षुप्रतिमा संलेखना तेकिसी भातपाणीना पच्चखाण पादपोप गमन अनुत्तर विमाने ऊपनो वली सुकुल ने विषे अवतरिवो। वली बोधिलाभ जिन धर्मनी प्राप्ति। अंतक्रिया एतलो वस्तु एहनें विषें कहिये छे। वली तीर्थंकरना समोसरण ते समोसरण केहवो छे। परम मंगलीकपणें जगतने हित

त्यादय चतुस्त्रिंशदधिकतरावा तथा जिनशिष्याणांचैव गणधरादीनां किंभूताना मतआह श्रमणगणप्रवरगन्धहस्तिनां श्रमणोत्तमानामित्यर्थः तथास्थिर ॥ टीका ॥
यशसां तथा परीषहसैन्यमेवपरीषहवृन्दमेव रिपुबल मरचक्रं तत्प्रमर्द्दनानां तथा दववह्नावाग्निरिव दीप्तान्युज्ज्वलानि पाठान्तरेण तपोदीप्तानि यानि चा
रित्रज्ञानसम्यक्त्वानि तैः साराः सफलाः विविधप्रकारविस्तारा अनेकविधप्रपञ्चाः प्रशस्ताश्च ये क्षमादयोगुणा स्तैः संयुतानां क्वचित्गुणध्वजाना मितिपाठः
तथा अनगाराश्च ते महर्षयश्चेत्यनगारमहर्षय स्तेषा मनगारगुणानां वर्णकः श्लाघा आख्यायत इतियोगः पुनः किंभूतानां जिनशिष्याणा मुत्तमाश्च ते ज्या
त्यादिभि र्वरतपसश्च तेचते विशिष्टज्ञानयोगयुक्ताश्चे त्यत स्तेषा मुत्तमवरतपोविशिष्टज्ञानयोगयुक्तानां किंचापरे यथा च जगद्धित भगवत इत्वम जिनस्यश्रा
सनमितिगम्यते यादृशाश्च ऋद्धिविशेषा देवासुरमानुषाणां रत्नोज्ज्वललक्षयोजनमानविमानरचनं सामानिकाद्यनेकदेवदेवीकोटिसमवायनं मणिखण्डमण्डि

सीसाणंचेव समणगणपवरगंधहत्थीणं थिरजसाणं परिसहसेण्णरिउबलपमद्दणाणं तवदित्तचरित्तणाणसम्म ॥ मूल ॥
त्तसारविविहप्पगारपसत्थगुणसंजुयाणं अणगारमहरिसीणं अणगारगुणाणवण्णउ उत्तमवरतवविसिठणा

कारी छे। जिनना अतिशय देहंविमलसुगन्ध इत्यादिक चउत्रीस छे जिनेंद्र ना शिष्य गणधरादिक ते केहवा छे श्रमण समूह मांहि प्रधान वर गन्ध ॥ भाषा ॥
हाथी ने समानछे। ते थिर जस निश्चलयशछे। परीषह सेनारूप शत्रुनी सेनाने प्रमर्द्दकछे। तपें करीदीप्त तेजवंत जे चारित्र ज्ञान सम्यक्त तेणें
करी सार सफल विविध अनेक प्रकार भलाजे गुणवंत लक्षण छे ध्वजा जेहने तेहनो। अनगार एहवाजे महर्षिते अनगारमहर्षि तेहना एहवा जे
अणगार तेहना गुण तेहनो वर्णक श्लाघा कीजे अंगे कहिये। वली केहवाछे। जात्यादिके करी उत्तम प्रधान तपशाश्वतो विशिष्ट ज्ञान योगे करी यु

[illegible] प्रकाशित [illegible] विविधातीपमादगमनामीमपूरत्व देवादि [illegible] ॥

सुर [illegible] परिवारत्व [illegible] चामरमहाध्वजादिमहाराजचिह्नप्रकाशनं चैवमाद्यश्च सम्बद्धिशेषाः समवसरणगमनप्रवृत्तानां वैमानिकज्योतिष्कादीनां [illegible]

[illegible] राजादिमनुजानां च अथवा अनुत्तरोपपातिकसाधूनां च ऋद्धिविशेषा देवादिसम्बन्धिन स्तादृशा आख्यायन्त इतिक्रियायोगः तथा पर्षदां [illegible]

वैमानिकी [illegible] प्रमुखेषपर्षद्विशेषोवीर मित्यादिनो [illegible] रूपाणा प्रादुर्भावाश्च आगमनानि च जिणवरसमीवन्ति जिनसमीपे यथाच येनप्रकारेण पञ्चविध

भिगमादिना उपासते सेवन्ते राजादयो जिनवरं तथाख्यायतइतियोगः यथाच परिकथयति धर्मं लोकगुरु रिति जिनवरो ऽमरनरासुरगणानां श्रुत्वा च

तस्येति जिनवरस्य भाषितं अवशेषाणि क्षीणप्रायाणि कर्म्माणि येषांते तथा तेचते विषयविरक्ताश्चेति अवशेषकर्मविषयविरक्ताः के नराः किं यथा अभ्युपय

णजोगजुत्ताणं जहयजगहियं जगवउ जारिसाइड्ढिविसेसा देवासुरमाणुसाणं परिसाणं पाउब्भावाय जिणस

मीवं जहयउवासंतिजिणवरं जहयपरिकहंतिधम्मंलोगगुरू अमरनरसुरगणाणं सोऊणयतस्सभासियं अव

सेसकम्मविसयविरत्तानरा जहा अब्भुवेंति धम्ममुरालं संजमं तवंचाविबहुविहप्पगारं जहबहूणिवासा

तथे जेम जगतने विषे जिन शासन हितकारी छे। जेहवा ऋद्धिना विशेष छे। देव वैमानिक असुर ते भवन पत्यादिक तथा मनुष्य तेहनी [illegible]

दा नो प्रादुर्भाव आविवो उपासयंति पंचविध अभिगम ने करी सेवा करवी। जिनने समीपे सेवा करे। जिनवर लोक गुरु जिम देवता नर सुरगण

नेधर्म कथा प्रते कहे। तेह जिनवरनो भाषित सांभलीने। क्षीण प्रायछे कर्म जेहना। वली विषयथी विरक्त एहवा नर मनुष्य जिम धर्म धर्म उदार

त्ति यथामुदारं विशिष्टरूपं मतमाह संयम तपश्चापि किंभूतमित्याह बहुविधप्रकारं तथा यथा बहूनि वर्षाणि अनुचरित्वा अनुपाल्य संयमं आराध्य इति वर्तते तत आराधितज्ञानदर्शनचारित्रयोगा तथा जिणवयणमणुगयमहियं भासियत्ति जिनवचन माचारादिमनुमतं सम्यग् ...
... पूजितमधिकं वा भावितं ये स्थापनादिना ते तथा पाठान्तरे जिनवचनमनुमत्यानुकूल्येन सुष्टुभावितं ये ते जिनवचनानुमतिसुभाविताः तथा जिणवराण
... तेन जिनवरान् हृदयेन मनसा अनुनीय प्राप्य ध्यात्वेतियावत् येच यत्र यावन्ति च भक्तानि छेदयित्वा ...
... उत्तमं ध्यानयोगयुक्ता उपपन्ना मुनिवरोत्तमा यथा अनुत्तरेषु तथाख्यायत इतिप्रक्रमः तथा प्राप्नुवन्ति यथानुत्तरं तत्रत्ति अनुत्तरविमानेषु विषय
सुखं तथा च्युतास्ते तत्तोयत्ति अनुत्तरविमानेभ्यश्च्युताः क्रमेण करिष्यन्ति संयता यथा चान्तः क्रियन्ते तथा ख्यायन्ते अनुत्तरोपपातिकदशाख्यांगे प्रकृतमि

णि अणुचरित्ता आराहियनाणदंसणचरित्तजोगा जिणवयणमणुगयमहियं भासित्ता जिणवराण हियएण मणुणेत्ता जेयजहिं जत्तियाणि भत्ताणि छेयइत्ता लद्धूणयसमाहिमुत्तमज्झाणजोगजुत्ता उववन्ना मुणिवरोत्तमा जहअणुत्तरेसुपावंति जह अणुत्तरं तत्थविसयसोक्खं तत्तोयचुआक्कमेण काहिंतिसंजया जहायअंतकिरियं

प्रधान संयम तप घणें प्रकारे सर्व विरति रूप। जिम घणा वर्ष लगे अणुचरी सेवीने आराध्याछे ज्ञान दर्शन चारित्र योग जेणें जिनवचन आचा
रांगादिने अनुमतसंमिलित महित पूजित भावित जेणे। जिन वरनें हृदयें करी मनेंकरी अनुनीध्याईने। जेह जिहां जेतला भात छेदीने ...
... उत्तम ध्यानयोग युक्त थके ऊपना मुनिवर अनुत्तर विमानने विषे जिम ... तिहां अनुत्तर विमानथी चवीने ...

तेषाम्वेवेत्यानि पूर्ववत् नवरं दसअज्झयणातिन्निवग्गत्ति दशाध्ययनसमूहो वर्गो वर्गेचदशाध्ययनानि वर्गश्च युगपदेवोद्दिश्यते इत्यत स्त्रयएवोद्देशनकाला भवंती ॥ टीका ॥
त्येवमेवच मंधा मभिधीयन्ते इहतु दृश्यन्ते दशेत्यत्राभिप्रायो नज्ञायत इति तथा संख्यातानि पदसयसहस्साइं पयग्गेणंति किल षट्चत्वारिंशल्लक्षाण्यष्टौच
सहस्राणि ॥ ८ ॥ सेकिंतमित्यादि प्रश्नः प्रतीत स्तन्निर्वचनं व्याकरणं प्रश्नानाश्च व्याकरणानाश्च योगात्प्रश्नव्याकरणानि तेषु अठुत्तरम्पसिणसयं

एए अन्नेय एवमाइत्थ वित्थरेण अणुत्तरोववाइयदसासुणं परित्तावायणा संखेज्जाअणुत्तगदारा संखेज्जात ॥ मूल ॥
संगहणीत्तसेणं अंगठयाए नवमेअंगे एगेसुयखंधे दसअज्झयणातिन्निवग्गा दसउद्देसणकाला दससमुद्देसणका
ला संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेणं प० संखेज्जाणि अखराणि जावएवंचरणकरण परूवणया आघवि
ज्जंति सेत्तं अणुत्तरोववाइय दसात ॥ ९ ॥ सेकिंतं पण्हावागरणाणि पण्हावागरणेसु अठुत्तरं

सें मुनिवर अंतक्रिया। एह पूर्वेजे कह्याते अनेरापणि एवमादिक पदार्थ इहां अनुत्तरोपपातिक दशामांहि कहियेछे। एणेंसूत्रें परित्ता वाचना। ॥ भाषा ॥
संख्याता अनुयोग द्वारउपक्रमादिक। यावत् संख्याती संग्रहणी लगें जाणवी। तेह अंगार्थपणें नवमे अंगे एक श्रुत स्कंधना दश अध्ययन त्रिण वर्ग
वली दश उद्देशन काल। दश समुद्देशनकाल। संख्याता पदनां शत सहस्र ४६ लाख ८ हजार पदने परिमाणें कह्यो। संख्याता अक्षर थी जिहां स
गे चरणसाधुव्रतनी प्ररूपणा होय तिहां लगे कहिवो। इत्यादि पूर्वोक्त पदार्थ जिहां कहिये ते अनुत्तरोपपातिक दशा नौमो अंग जाणिवो
॥ ८ ॥ अथ सूं ते प्रश्न व्याकरण प्रश्ननो व्याकरण कहिवोते प्रश्नव्याकरण प्रश्नव्याकरणने विषे अनुत्तर सर्वोत्तम प्रश्ननां अंगुष्ठबाहु प्र

॥ टीका ॥

तथाङ्गुष्ठबाहुप्रश्नादिका मंत्रविद्याः प्रश्ना याः पुनर्विधिनाजप्यमाना अपृष्टाएव शुभाशुभं कथयन्ति एताः अप्रश्नाः तथाङ्गुष्ठादिप्रश्नभावं तदभावं च प्रतीत्य या विद्याः शुभाशुभं कथयन्ति ताःप्रश्नाप्रश्ना विज्जाइसयत्ति तथा अन्ये विद्यातिशयाः स्तम्भस्तोभवशीकरणविद्वेषीकरणोच्चाटनादयः नागसुपर्णैश्च सह भवनपतिविशेषै रुपलक्षणत्वा द्यक्षादिभिश्च सह साधकस्ये तिगम्यते दिव्यास्तात्विकाः सम्वादाः शुभाशुभगताः संलापा आख्यायन्ते एतदेव प्रायः प्रपञ्चयन्नाह पण्हावागरणदसेत्यादि स्वसमयपरसमयप्रज्ञापका ये प्रत्येकबुद्धा स्तैः करकण्ड्वादिसदृशै र्विविधार्थायकाभाषा गम्भीरेत्यर्थ स्तया भाषिता गदिताः स्वसमयपरसमयप्रज्ञापकप्रत्येकबुद्धविविधार्थभाषाभाषिता स्तासां किमादर्शाङ्गुष्ठादीनां सम्बन्धिनीना मश्नानाम्विविधगुणमहार्थाः प्रश्नव्याकरणदशास्वाख्यायन्त

॥ मूल ॥

पसिणसयं अठुत्तरं अपसिणसयं अठुत्तरंपसिणापसिणसयं विज्जाइसया नागसुवन्नेहिं सद्धिंदिव्वासंवाया आघविज्जंति पण्हावागरणदसासुणं ससमय परसमय पन्नवय पत्तेअबुद्ध विविहत्थभासाभासियाणं अइसयगुण उवसमणाणप्पगार आयरियभासियाणं वित्थरेण वीरमहेसीहिं विविह वित्थार भासियाणंच जगहि

॥ भाषा ॥

श्नादिक मंत्र विद्यानां पाठांतरें अंगुष्ठादिक प्रश्न अठोतरसो तथा विधिपूर्वक जे विद्या जपीथकी अष्टष्ट थई शुभाशुभ प्रश्न कहेते अप्रश्नविद्या तेहना सेंकडा तथा अनेरापणि विद्यानां अतिशय थंभनो वशीकरणी उच्चाटनी इत्यादिक। नाग सुपर्ण भवनपति विशेषने साथे दिव्यते तात्विक संवाद शुभाशुभ संलापक प्रश्न व्याकरण दशाने विषे कहियेछे। प्रश्न व्याकरण दशाने विषे स्वसमय जिनमत परसमय परमतना प्रज्ञापक कथक जे प्रत्येक बुद्ध करकंडुप्रादिक विविधार्थ अनेक प्रकारना अर्थ छे जेहना एहवी भाषायें कह्या। अदृष्ट अंगुष्ठादिक संबंधी भाषाना विविध गुण कहिये। ते

[illegible] विपुलाना [illegible] आयरियभासियाणंति अतिशयसामर्थ्यौषध्यादयो गुणाश्च ज्ञानादय उपशमश्च स्वपरभेदभिन्ना एषां प्रकाराः भेदास्ते तथा तेच ते आचार्यैश्च ते भाषिता या एता तथा तासां कथ भाषितानां मित्याह वित्थरेणंति विस्तरेण महावचनसन्दर्भेण तथा [illegible] र्षिभिः पाठान्तरे वीरमहर्षिभिः विविहवित्थारभासियाणंचत्ति विविधविस्तरेण भाषितानाञ्च चकारस्तृतीयप्रकारकभेदसमुच्चयार्थः पुनः कथम्भूतानां [illegible] यानां जगहियाणं जगद्धितानां पुरुषार्थोपयोगित्वात् किंसम्बन्धिनीना मित्याह अद्दागत्ति आदर्श अङ्गुष्ठश्च बाहुश्च असिश्च मणिश्च वस्त्रं आदित्यश्चेति द्वन्द्व एते आदि येषां कुड्यशङ्खघण्टादीनां ते तथा तेषां सम्बन्धिनीनां प्रश्नविद्यानि रादर्शकादीनां मावेशनात् किम्भूतानां प्रश्नानां मतआह विविधम हाप्रश्नविद्याश्च वाचैव प्रश्नेसत्युत्तरदायिन्यः मनः प्रश्नविद्याश्च मनः प्रश्नितार्थोत्तरदायिन्य स्तासां दैवतानि तदधिष्ठातृदेवता स्तेषां प्रयोगप्राधान्येन तद्या

याणं अद्दागंगुठबाहुअसिमणिखोमआइच्चमाइयाणं विविहमहापसिणविज्जमणपसिणविज्जा देवयंपयोग

॥ सू० ॥

प्रश्न वेदवाछे । अतिशय आमर्षौषध्यादिक १ । गुण ज्ञानादिक २ । तथा उपशम पोताने परने उपशमाविवो ३ । एह नाना प्रकारछे जेहने एहवाछे आचार्य तेणें विस्तार करी कह्याछे । वीर महर्षि मोटायतीयें अनेक प्रकार जेविस्तार वचनसंदर्भ करी भाष्याछे । वली जगतने हित रूपछे । आरी सो अंगुठ बाह खड्ग मणिरत्न इत्यादिक वली वस्त्र आदित्यसूर्य वलीशंख घंटादिक एहने आमलि प्रश्न पूछे तिवारे अधिष्ठायक विद्यादेवी पूर्वोक्त पदार्थ अधिष्ठान करीने उत्तरदे । तेमाटे ते प्रश्नविद्यायें करी भाषित छे । विविध प्रकारना महाप्रश्नविद्या पूछें थकें तत्काल उत्तर देते महाप्रश्नविद्या कही । मनःप्रश्नविद्या मननों चिंतित अर्थ कहे एहवी विद्या तेहना अधिष्ठाता देवताना प्रयोगनो व्यापार प्रधानपणे विविधार्थनो प्रकाशक । तथा

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

पारप्रधानतया गुण ल्विविधार्थं सम्वाटलक्षण मकाशयन्ति लोके व्यञ्जयन्ति या स्ता विविधमहाप्रश्नविद्यामनं: प्रश्नविद्यादेवतप्रयोगप्राधान्यगुणप्रकाशिका स्तासां पुन:किंभूतानां प्रश्नानां समुद्भूतेन तात्विकेन द्विगुणेन उपलक्षणत्वा लौकिकप्रश्नविद्याप्रभावापेक्षया बहुगुणेन पाठान्तरे विविधगुणेन विद्याप्रभावेन माहात्म्येन नरगणमतीमनुजसमुदयबुद्धीविस्मयकार्य्यश्चमत्कारहेतवो या: प्रश्ना स्ता: सद्भूतद्विगुणप्रभावनरगणमति विस्मयकार्य स्तासां पुन: किंभूतानां तासा मतिसयमतीतकालसमयेत्ति अतिशयेन यातीत: काल: समय: स तथा तत्र अतिव्यवहिते काले इत्यर्थ: दम: शम स्तत्प्रधानं तीर्थंकराणां दर्शनान्तरशा स्तृणा मुत्तमो य: स तथा भगवान्जिन स्तस्य तीर्थंकरोत्तमस्य स्थितिकारणं स्थापनं आसीदतीतकाले सातिशयज्ञानाद्विगुणयुक्त: सकलप्रणायकशिर: शेखर कल्प: पुरुषविशेष: एवंविधप्रश्नाना मन्यथानुपपत्ते रियेवरूप तस्य कारणानि हेतवो या स्तास्तथा तासां पुनस्ताएव विशिनष्टि दुरभिगमं दुरवबोधं गम्भी रं सूक्ष्मार्थत्वेन दुरवगाह श्च दु:खाध्येय सूत्रमङ्कलायतस्य सर्वेषां सर्वज्ञानां सम्मतनिष्टं सर्वमवेक्षसम्मतं अथवा सर्वज्ञ तत्सर्वज्ञसम्मतश्चेति सर्वसर्वज्ञसम्मत मव

॥ मूल ॥

पाहाणगुणप्पगासियाणं सब्भूयदुगुणप्पभावनरगणमइविम्हयकराणं अइसयमईयकालदमसमतित्थकरुत्तम स्सठिइकरणकारणाणं दुरहिगमदुरवगाहस्स सव्वसव्वन्नुसम्मअस्स अवुहजणवोहकरस्स पच्चक्खयपच्चयकरा

॥ भाषा ।

सद्भूत तात्विकपणें द्विगुण लौकिक प्रश्न विद्यानी अपेक्षायें घणोंजे प्रभाव माहात्म्य तेणें करी मनुष्य समूहनी बुद्धिने विस्मय करेछे चमत्कार उपजा वेछे। अतिशयें करी अतीतकाल समय अत्यंत व्यवहित काले दम शम तेणें करी सहित तीर्थं करोत्तमनी स्थितिनो करण स्थापिवो तेहना कारणछे। दुरभिगम दु:खे जाणिये। गंभीर सूक्ष्मार्थ पणें दुरवगाह दु:खे ग्रहीसके। सर्व सर्वज्ञने मान्य। तथा अबुधजन मूर्ख जेनने प्रबोध ना कारण। प्रत्यक्ष प

घनतत्वमित्यर्थः तस्य भव्यजनविबोधनकरस्य एकांतहितस्येतिभावः पच्चक्खयपच्चयकराणंति प्रत्यक्षकेन ज्ञानेन साक्षादित्यर्थो यः प्रत्ययः सर्वातिशयनिधा ॥ टीका ॥
नमतीन्द्रियार्थोपदर्शनाव्यभिचारिचेदं जिनप्रवचन मित्येवंरूपा प्रतिपत्तिः अथवा प्रत्यक्षेणैवा नेनार्थाः प्रतीयन्त इति प्रत्यक्षमिवेद मित्येवं प्रतीतिः प्रत्यक्ष
कप्रत्यय स्तत् करणशीलाः प्रत्यक्षकप्रत्ययकार्यैः प्रत्यक्षताप्रत्ययकार्यैवा तासा मप्यक्षकप्रत्ययकारीणां प्रत्यक्षताप्रत्ययकारीणां कासामित्याह प्रश्नानां प्रश्न
विद्याना मुपलक्षणत्वा दन्यासाञ्च यासा मष्टोत्तरशतान्यादौ प्रतिपादितानि विविधगुणा बहुविधप्रभावा स्तेच ते महार्थाश्च महान्तोभिधेयाः पदार्थाः शुभा
शुभ सूचनादयो विविधगुणमहार्थाः किम्भूता जिनवरप्रणीताः किमित्याह आघविज्जंतित्ति आख्यायन्ते शेषम्पूर्ववत् नवरं यद्यपीहाध्ययनानां दशत्वाद्दशैवो
द्देशनकाला भवन्ति तथापि वाचनान्तरापेक्षया पञ्चचत्वारिंशदिति सम्भाव्यते इति पणयालीस मित्याद्यविरुद्ध मिति संखेज्जाणिपयसयसहस्साणि पयग्गेणंति

णं पराहाणं विविहगुणमहत्थाजिणवरप्पणीया आघविज्जंति पराहावागरणेसुणं परित्तावायणा संखेज्जाअणु ॥ मूल ॥
ओगदारा जावसंखेज्जाओ संगहणीओ सेणंअंगठ्याएदसमेअंगे एगेसुयखंधेपणयालीसं उद्देसणकाला पणयाली
संसमुद्देसणकाला संखेज्जाणि पयसयसहस्साणि पयग्गेणं प० संखेज्जाअक्खरा अणंतागमा जावचरणकरण

पें प्रतीतना करणहार छे एतले प्रत्यक्षपणें मानिवा योग्य छे। एहवा प्रश्नना अनेक गुण अनेक प्रभाव मोटा पदार्थ शुभाशुभना सूचक जिनवरेंप्रणी ॥ भाषा ॥
त भाषित एहवा भाव पदार्थ प्रश्न व्याकरणनें विषें कहियेछे। प्रश्न व्याकरणने विषें संख्याती वाचना। संख्याता अनुयोग द्वारथी यावत् संख्याती संग्रह
णी लगे पाठ कहिवो। तेणें अंगार्थपणें दशमें अंगे एक श्रुतस्कंध तेने विषें ४५ उद्देशनकाल ४५ समुद्देशनकाल संख्यातापदना शत सहस्र एतले ८२

तानि च किल. द्विनवति लक्षाणि षोडशच सहस्राणीति ॥ १० ॥ सेकिंतमित्यादि विपचनं विपाकः शुभाशुभकर्मपरिणाम स्तत्प्रतिपादकं श्रुत ॥ टीका ॥
विपाकश्रुतं विवागसुएणमित्यादि कंठ्यं नवरं फलविवागेत्ति फलरूपोविपाकः फलविपाकः तथानंगरगमणाइंति भगवतो गौतमस्य भिक्षाद्यर्थं नगरप्रवेश

परूवणया आघविज्जंति सेत्तंपरहावागरणाइं ॥ १० ॥ सेकिंतं विवागसुए विवागसुएणं सुक्क ॥ मूल ॥
डदुक्कडाणं कम्माणं फलविवागे आघविज्जंति सेसमासउ दुविहे पन्नत्ते तंजहा दुहविवागे सुहविवागेचेव
तत्थणं दसदुहविवागाणि दससुहविवागाणि सेकिंतं दुहविवागाणि दुहविवागेसुणं दुहविवागाणं नगराइं उ
ज्जाणाइं चेइयाइं वणखंडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाउ णगरगमणाइं

लाख १६ हजार पद पदने परिमाणें कह्या। संख्याता अक्षर। अनंता गमा। अनंता पर्याय यावत् चरण करण श्रमणव्रत पिंडविशुद्ध्यादिक लगी ॥ भाषा ॥
जाणिवो। इत्यादिक पदार्थ जेहने विषे कहिये ते प्रश्नव्याकरण दशमांअंग ॥ १० ॥ अथस्यूंतेविपाक श्रुत। विपाकजे शुभाशुभ कर्म
ना परिणाम तेहनो प्रतिपादक कथक जे श्रुत ते विपाक श्रुत। विपाक श्रुतने विषे शुभ अशुभ कर्मना फलविपाक फलरूपविपाक परिपाक कहि
येछे। ते विपाक श्रुत संक्षेपे बेप्रकारनो कह्यो। तेकहेछे। दुख विपाक अने सुख विपाक। ते विहुंमांहि मृगापुत्रादिकना दश दुख विपाक अने सुबा
हु कुमारादिकना दश सुख विपाक। अथ किस्याते दुःखविपाक। दुःख विपाक ने विषे पापीजीव मृगापुत्रादिकना नगर। उद्यान। चैत्य। वनखंड।
राजा माता। पिता। समोसरण। धर्माचार्य। धर्मकथा। नगर गमन। भगवंत गौतम भिक्षार्थें नगरमांहि प्रवेश करे। संसारनो प्रबंध विस्तार। दुः

॥ १९२ ॥ ॥ टीका ॥

नानीति एतदेवपूर्वोक्तं प्रपञ्चयन्नाह दुहविवागेसुणमित्यादि तत्र प्राणातिपातालीकवचनचौर्यकरणपरदारमैथुनैः सह ससंगयाएत्तिया ससङ्गता सपरिग्रह
ता तया संचितानां कर्म्मणामितियोगः महातीव्रकषायेंद्रियप्रमाद पापप्रयोगा शुभाध्यवसायानां संचितानां कर्मणां पापकानां पापानुभागा अशुभरसा ये
फलविपाका विपाकोदया स्ते तथा आख्यायन्त इतियोगः केषामित्याह निरयगतौ तिर्यग्योनौच ये बहुविधव्यसनशतपरम्पराभिः प्रबद्धाः ते तथा तेषां जो

॥ मूल ॥

संसारपवंधे दुहपरंपराउय आघविज्जंति सेत्तंदुहविवागाणि सेकिंतंसुहविवागाणि सुहविवागेसुणं सुहविवा
गाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणखंडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाउ इह
लोय परलोय इड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाउ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं परियागा पडिमाउ संले
हणाउ भत्तपच्चक्खाणाइं पावोवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चाया पुणबोहिलाहो अंतकिरियाउ आ
घविज्जंति दुहविवागेसुणं पाणाइवायअलियवयणचोरिक्ककरणपरदारमेहुणससंगयाए महतिव्वकसायइं

॥ भाषा ॥

खनो श्रेणी कहिये छे ते दुःख विपाक। अथ सूं ते सुखविपाक। सुख विपाकने विषे सुख विपाकिया सुबाहु कुमारादिकना। नगर। उद्यान। चैत्य।
वनखंड। राजा। माता। पिता। समोसरण। धर्माचार्य। धर्मकथा। इहलोक परलोक संबंधी ऋद्धि विशेष। भोगनो परित्याग। दीक्षा। सुतनो भ
णवो। तपोपधान करिवो। पर्याय। प्रतिमा। संलेखना। भात पाणीनो पच्चक्खाण। पादपोपगमन। देवलोके उपजिवो। तिहां थकी चवी
ने सुकुलेउपजिवो। वली जिन धर्मनो प्राप्ति। अंतःक्रिया। एह जिहां कहिये ते सुख विपाक। दुःख विपाकने विषे। हिंसानो करिवो। अलीक वच

॥ टीका ॥

बाना मितिगम्यते तथा मणुयत्तेत्ति · मनुजत्वे प्यागतानां यथा पापकर्म्मशेषेण पापका भवन्ति फलविपाका अशुभाविपाकोदया स्ते तथा ते आख्यायन्त इतिप्रक्रतं तथाहि वधो यष्ट्यादिताडनं वृषणविनाशो वर्द्धितककरणं तथा नासयोश्च कर्णयोश्च ओष्ठस्यचाङ्गुलानां अङ्गुष्ठानांच करयोश्च चरणयोश्च नखानांच यच्छेदनं तत्तथा जिह्वाच्छेदनं अंजणत्ति अञ्जनं तप्ताय: शलाकया नेत्रयो: क्षत्तणं वा देहस्य क्षारतैलादिना कडग्गिदाहणंति कडानां विदलवंशादिमयाना मग्नि: कटाग्नि स्तेन दाहनं कटाग्निदाहनं कटेन परिवेष्टितस्य बोधनमित्यर्थ: तथा गजचलनमलनम्फालन म्विदारणं उल्लम्बनं वृक्षशाखादावुद्बंध

॥ मूल ॥

दियप्पमायपावप्पउत्तय असुहज्झवसाणसंचियाणं कम्माणं पावगाणं पावअणुभागफलविवागाणि णरगति रिक्खजोणियविविहविसणपरंपरावद्धाणं मणुयत्तेवि आगयाणंजहापावकम्मसेसेणपावगा होंतिफलविवागाणरगतिरिक्खजोणियविविहवसणविणासकन्नुठंगुठ करचरणनहछेयण जिब्भछेअण अंजणकडग्गिदाह

॥ भाषा ॥

न मुखथी कूडो बोलवो। चोरीनो करिवो। परस्त्री मैथुन संगमनो करिवो। परिग्रहनो धारण करिवो। महातीव्रकषाय। इंद्रिय प्रमाद। तथा। पाप प्रयोग। पापव्यापार। एह थको ऊपनो अशुभ अध्यवसाय तेणे करी मेल्या पापरूप कर्म तेहना पापरूप अनुभाग अशुभरस जेफलविपाक फलनो उदय। दुःख विपाक ने विषे कहिये। नरक तीर्यंच योनिने विषे अनेक प्रकार कष्टनो श्रेणी तेणे करी बंधाणा जेजीव तेहनो। तथा मनुष्यपणे पणि आव्या थका जिम पापकर्म शेषेंकरी पापीहोय। फलनाविपाक अशुभ विपाकनो उदय। तथा नरकतीर्यंचयोनिने विषे अनेक प्रकारना कष्ट विनाश कान ओठ अंगूठा हात पग नख एहना छेदन। तथा जिह्वा जीभ छेदन। तथा अंजन लोहनी शलाका नेत्रने विषे घालवो। तथा कट बांसनो बेफाड तेह

॥ १९२ ॥

॥ टीका ॥

मं तथा मूलेन लतया लकुटेन यष्ट्याच भञ्जनं गात्राणां तथा त्रपुणा धातुविशेषेण सीसकेणच तेनैव तप्तेन तैलेनच कलकलत्ति सशब्देना भिषेचनं तथा कुंभ्यां भाजनविशेषे पाकः कुम्भीपाकः कम्पनं शीतलजलाच्छोटनादिना शीतकाले गात्रोत्कंपजननं तथा स्थिरबन्धनं निविडनियंत्रणं वेधः कुन्तादिना शस्त्रेण भेदनं वर्द्धकर्त्तनं त्वगुत्पाटनं प्रतिभयकर भयजननं तत्करप्रदीपनञ्च वसनावेष्टितस्य तैलाभिषिक्तस्य करयो रग्निप्रबोधनमिति कर्म्मधारयः ततश्च वधश्चद्वषणविना शश्चेत्यादि यावत्प्रतिभयकरप्रदीपनं चेति द्वन्द्वः तत्स्तानि आदि र्येषां दुःखानां तानिच तानि दारुणानि चेति कर्म्मधारयः कानीमानीत्याह दुःखानि किंभूता न्यनुपमानि दुःखविपाकेषाख्यायन्त इतिप्रक्रमः तथेद माख्यायते बहुविविधपरम्पराभिः दुःखानामितिगम्यते अनुबद्धाः सन्ततमालिङ्गिता बहुविधपरम्पराणुबद्धा जीवाइतिगम्यते नमुच्यन्ते तत्याज्यन्ते कयापापकर्मवल्या दुःखफलसम्पादिकया किमित्याह यतो ऽवेदयित्वा अननुभूयकर्मफलमितिगम्यते

॥ मूल ॥

गयचलणमलणफालणउल्लंबणसूललयालउडलठिभंजण तउसीसगतत्ततेल्लकलकलञ्जहिसिंचण कुंभिपागकंपण थिरबंधणवेहवज्झकत्तण पतिभयकरपल्लीवणाइं दारुणाणि दुक्खाणि अणोवमाणि बहुविविहपरंपराणुव

॥ भाषा ॥

नी अग्नीयें करी बालिवो। तथा हाथीना पगने हेठें मर्दिवो। कोहाडें करी बेफाड करिवो। वृक्षशाखाने विषें ऊंचो बांधिवो। शूलें करी लतायें करी लाकडी लठी लाठीये करी गात्रनो भांजिवो। तथा तातो सीसो कडकडायमान तेल तेणे करी स्नान करिवो। कुंभी भाजनमांहि पचाविवो। शीतल जलें करी शरीर छांटे तेहथकी उपनो कंप। निगड बंधन। भालादिकें करी वींधवो। चामडानो छोडिवो। भयोत्पादक तेलें करी भीनोवस्त्र शरीरमां लपेटी ने अग्निनो लगाडिवो। इत्यादिक दारुण अनोपम एहवा दुःख विपाकने विषे कहिये। अनेक प्रकार दुःखनी श्रेणीयें करी निरंतर आलिंग्या

॥ टीका ॥

र्पुर्यस्मादर्थे नास्ति भवति मोक्षो वियोगः कर्म्मणः सकाशात् जीवाना मितिगम्यते किं सर्वथाने त्याह तपसा अनशनादिना किंभूतेन धृतिश्चित्तसमाधानं तद्रूपा धणियत्ति अत्यर्थं वद्दा निःपोडिता कच्छाबन्धविशेषो यत्र तत्तया तेन धृतिबलयुक्तेनेत्यर्थः. शोधनमुपनयनं तस्य कर्म्मविशेषस्य वावित्ति सम्भावना यां शोक्षा सम्पद्येत नाम्यो मोक्षोपायो स्तोति भावः एत्तोयेत्यादि इत स्थानन्तरं सुखविपाकेषु द्वितोयश्रुतस्कन्धाध्ययनेष्वित्यर्थः यदाख्यायते तदभिधीयत इतिशेषः शोलं ब्रह्मचर्यं समाधिर्वा संयमः प्राणातिपातविरति नियमा अभिग्रहविशेषाः गुणाः शेषमूलगुणाः उत्तरगुणाश्च तपो ऽनशनादि एतेषा मुपधानं विधानं येषान्ते तथा अत स्तेषु शीलसंयमनियमगुणतपउपधानेषु केष्वित्याह साधुषु यतिषु किंभूतेषु सुष्टुविहित मनुष्ठितं येषांते सुविहिता स्तेषु भक्तादि दत्वा यथा वोविलाभादि निवर्त्तयंति तथेहाख्यायत इतिसम्बन्धः इहच सम्प्रदाने सप्तमी नदुष्टा विषयस्य विवक्षणात् अनुकम्पा अनुक्रोश स्तत्प्रधान आश्र य चित्तं तस्य प्रयोगो व्यावृत्ति रनुकंपाशयाप्रयोग स्तेन तथा तिकालमतित्ति त्रिषु कालेषु या मति र्बुद्धि र्यदुत दास्यामोति परितोषोदीयमानेपरितोषो

॥ मूल ॥

ण्हाणमुंचंति पावकम्मवल्लीयवेयइत्ता ऊणात्थिमोरको तवेणधिइधणियवद्धकच्छेण सोहणंतस्सवाविइज्जा
एत्तोयसुहविवागेसुणं सीलसंजमणियमसुयतवोवहाणेसु साहूसु सुविहिएसु अणुकंपासयप्पओग तिकालमइ

॥ भाषा ॥

थका नमूकाये न छूट्या। पापकर्म वल्ली दुख फलदायक वेलडीथी तेपापी जीवनछूटे। विना भोगे निश्चयथी मोक्ष नहोय। सर्वथापि छूटिवो नथी। एम नही तो केम। तपेंकरी तथा धृति चित्तनी समाधान तेणे करी अत्यंत बहकच्छ थईने शोधवो बेगलो थाईवो ते कर्मनो होय। इहां थकी वीजाश्रुत स्कंध सुखविपाक ने विषे जे कहिये तेलिखेछे। शील संयम नियम श्रुत तपोपधान छे जेहने। एहवा सुविहित साधूने विषे दयाभावे करी सहित जे चित्त

दत्तेच परितोष इति सा त्रिकालमति स्तयाच यानि विशुद्धानि तानि यथा तानिचतानि भक्तपानानि चेति अनुकंपाशयप्रयोगत्रिकालमतिविशुद्धभक्तपा ॥ टीका ॥
नानि प्रदाये तियोग: केनप्रदायेत्याह प्रयतमनसा आदरपूर्वचेतसा हितो ऽनर्थपरिहाररूपत्वात् सुखहेतुत्वात् सुख: शुभोवा नौसेसत्ति नि:श्रेयस: कल्याण
॥ १८४ ॥ करत्वात् तीव्र: प्रकृष्ट: परिणामो ऽध्यवसान यस्यां सा तया सा निश्चिता असंशया मति बुद्धि र्यथाते हितसुखनि:श्रेयसतीव्रपरिणामनिश्चितमतय: किं पय
च्छिऊणंति प्रदाय किंभूतानि भक्तपानानि प्रयोगविशुद्धानि दायकदानव्यापारापेक्षया सकलाशंसादि दोषरहितानि ग्राहकग्रहणव्यापारापेक्षया चोद्गमा
दिदोषवर्जितानि तत: किं यथाच येनच प्रकारेण पारंपर्येण मोक्षसाधकत्वलक्षणेन निवर्त्तयन्ति भव्या: जीवा इति गम्यते तृप्यन्ती भाषामात्रार्थ: बोधिलाभं

विसुद्धभत्तपाणाइं पययमणसा हियसुहनीसेसतिव्वपरिणामनिच्छियमइपयच्छिऊणं पयोगसुद्धाइं जहनिव्वत्ते ॥ मूल ॥
तिओ वोहिलाभंजहयपरित्तीकरंति नरनरयतिरियसुरगमणविपुलपरियट्ट अरतिभयविसायसोगमिच्छत्त

तेहनो व्यापार तेणेंकरी त्रिहुंकालने विषें विशुद्ध भात पाणी देवानी बुद्धि करे। देइने आदर पूर्वितचित्ते करी तेहना अनर्थ टाले तेमाटे। तथा सु ॥ भाषा ॥
खनो हेतु निश्रेयस कल्याणवंत एहवो तीव्र प्रकृष्ट परिणाम अध्यवसाय छे जेहनो एहवा निश्चय मति संशय रहित बुद्धि छे जेहनो तेह देइने तेह
भातपाणी केहवा छे प्रयोग शुद्ध छे प्रयोगने विषें दायक दान व्यापारनो अपेक्षाये शुद्ध छे संशयादिक दूषण रहितछे। जिम जेणें प्रकारे परंपराये
मोक्ष साधक लक्षणें निवर्तावे निपजावे बोधिलाभ भव्यजीव जिम परित्तकरे संसार सागर थोडोकरे। तेसंसार सागर केहवोछे। मनुष्य नरकतिर्यंच
देवता एह चिहुंनो गतिने विषे जीवनो एहवो गजाउवो भमिवो विपुल विस्तीर्ण परिवर्तमत्स्यादिकनो अनेक प्रकारे संचरण जिहां। अरति भय वि

यथाच वर्त्तोनुवर्त्तंति प्रलंतामनन्ति संसारसागर मितियोग: किंभूतं नरनिरयतिर्यक्सुरगतिषु यज्जीवानां गमन मारिभ्रमणं तदेव विपुलो विस्तीर्णः प
रिवर्त्तो मत्स्यादीनां परिवर्त्तन मनेकधा संचरणं यत्र स तथा तथा अरतिभयविषादशोकमिथ्यात्वान्येव शैलाः पर्वताः तैः संकटः संकीर्णो यः स तथा
ततः कर्मधारयो ऽत स्तं दृश्य विषादो दैन्यमात्रं शोक स्त्वाक्रन्दनादिचिह्न इति तथा अज्ञानमेवतमोंधकारं महान्धकारं यत्र स तथा अत स्तं चिक्खिल
सुदुत्तारंति चिक्खिलं कर्दमः संसारपक्षेतु विषयधनस्वजनादिप्रतिबन्ध स्तेन सुदुस्तरो दुःखोत्तार्योंयः स तथातं तथा जरामरणयोनय एव संक्षुभितं महा.
मत्स्यमकराद्यनेकजलजंतुजातिसंमर्द्देन प्रविलोडितं चक्रवालं जलपारिमांडिल्यं यत्र स तथा तं तथा षोडश कषाया एव स्वापदानि मकरगाहादीनि प्रच
ण्डं चण्डानि अत्यर्थं रौद्राणि यत्र स तथा तं अनादिक मनवदग्र मनन्तं संसारसागरमिमं प्रत्यक्षमित्यर्थः तथा यथाच सागरोपमादिना प्रकारेण निब

सेलसंकडं अन्नाणतमंधकारचिक्खिल्लसुदुत्तारं जरमरणजोणिसंखुभियचक्कवालं सोलसकसायसावयपयंडचंडं

अणाइअं अणवदग्गं संसारसागरमिणं जहयणिबंधंति आउगंसुरगणेसु जहयअणुभवंति सुरगणविमाण

भाद शोक मिथ्यात्वतद्रूप शैलपर्वते करी संकोर्ण सांकडोछे। वली केहवोछे। अज्ञान तेहीज तम अंधकार छे जिहां। विषय धन स्वजनादिक प्रति
बंध तद्रूप चिक्खिलकर्दमतेणेंकरी सुदुत्तार अत्यर्थं उत्तारछे दोहिलोजेहनो । जरामरण योनि तेहिज संक्षुभित महामत्स्य ने आहुवे पाडुवे करी वि
लोड्यो चक्रवाल पाणीनो चाकलो जिहां। तथा सोले कषाय अनंतानुबंध्यादिक भेदें क्रोध मान माया लोभ तद्रूप स्वापद मकरादिक प्रचंड अत्यर्थ
रौद्रछे जेहने। वली अनादि अनंत छे। [illegible] तथा अनंत छे। एहवा संसार सागर प्रत्यक्ष एहवो संसार समुद्र तरे जेम जिम सागरो

॥ टीका ॥

संत्यायु: सुरगणेषु साधुदानप्रत्ययमितिभाव: यथा चानुभवन्ति सुरगणविमानसौख्यानि अनुपमानि ततश्च कालान्तरेण च्युताना मिहैववर्त्ति तिर्यग्लोके नर
लोक मागताना मायुर्वपुर्वर्णरूपजातिकुलजन्मारोग्यबुद्धिमेधा विशेषा आख्यायन्त इतियोग: तत्रायुषो विशेष इतरजीवायुष: सकाशात् शुभत्वं दीर्घत्वं च
एवं वपु: शरीर तस्य स्थिरसंहननता वर्णस्यौदारगौरत्वं रूपस्यातिसुन्दरता जाते रुत्तमत्वं कुलस्याप्येवं जन्मनो विशिष्टक्षेत्रकालनिराबाधत्वं आरोग्यस्य प्रक
र्ष: बुद्धि रौत्पत्तिक्यादिका तस्या: प्रकृष्टता मेधा पूर्वश्रुतग्रहणशक्ति स्तस्या विशेष: प्रकृष्टतैवेति तथा मित्रजन: सुहृल्लोक: स्वजन: पितृपितृव्यादि: धनधा
न्यरूपो यो विभवो लक्ष्मी: स धनधान्यविभव स्तया समृद्धि: पुरान्त: पुरकोशकोष्टागारबलवाहनरूपा या: सम्पदो यानि साराणि प्रधानानि वस्तूनि तेषां

॥ मूल ॥

सोक्खाणि अणोवमाणि ततोयकालंतरचुआणं इहेवनरलोगमागयाणं आउवपुवसरूवजातिकुलजम्मआरो
ग्गबुद्धिमेहाविसेसामित्तजणसयणधणधन्नविभवसमिद्धिसारसमुदयविसेसा बहुविहकाममोगुब्भवाणसोक्खा

॥ भाषा ॥

पमादिक जेणे प्रकारे बांधे आउखो सुरगण ने विषे जिम अनुभवे भोगवे देवताना समूह विमानना सुखप्रतें ते सुख केहवाछे अनोपम कह्या न
आव ते देवलोक थको कालांतरे चव्या चवीने इहां मनुष्यलोक मांहि आव्या तेहनो पूरो आउखो उत्तम वपुशरीर वर्णभलो रूप ते पंचेंद्रिय पूरा जा
तिकुलजन्म जिहां जाति ते भलो मातृपक्ष कुल ते भलो पितृपक्ष तिहां जन्म आरोग्यते निरोगपणो बुद्धिते औत्पातिक्यादय मेधा विशेष ते पंडिताई
मित्रजन सुहृल्लोक स्वजनपितृ पितृव्यादिक धनते लक्ष्मी सुवर्णादि धान्यते २४ अन्नादिलक्षण कह्या विभव संपदा घणी समृद्धि ते पुरान्त:पुर कोठार बल
वाहनरूप समृद्धि संग्रहा सार प्रधान वस्तु तेहनो समुदाय समूह एहना विशेष प्रकृष्टपणो तथा घणे प्रकारे कह्या । कामभोग तेहथो ऊपना सुख

यः समुदयः समूहः स तथा इत्येतेषां द्वंद्व स्ततः एषां ये विशेषा प्रकर्षा स्ते तथा तथा बहुविधकामभोगोद्भवानां सौख्याना म्विशेषा इतीहापि सम्बन्धनी यं शुभविपाक उत्तमा येषा स्ते शुभविपाकोत्तमा स्तेषु जीवेष्विति गम्यं इहचेयं षष्ठ्यर्थे सप्तमी तेन शुभविपाकाध्ययनवाच्यानां साधूना मायुष्कादिविशेषाः शुभविपाकाध्ययनेष्वाख्यायन्ते इतिप्रकृतं अथ प्रत्येकं श्रुतस्कन्धयो रभिधेये पुण्यपापविपाकरूपे प्रतिपादयतयोरेव योगपद्येन ते आह अणुवरयेत्यादि अनुपर तम् अविच्छिन्ना ये परम्परानुबद्धा के विपाका इतियोगः केषा मशुभानां शुभानांचैव कर्मणा प्रथमद्वितीयश्रुतस्कन्धयोः क्रमेणैवच भाषिताः उक्ता बहुविधा विपाकाः विपाकश्रुते एकादशाङ्गे भगवता जिनवरेण सम्वेगकारणार्थाः सम्वेगहेतवो भावाः अन्येपिचैवमादिका आख्यायन्त इति पूर्वोक्तक्रियया वचनपरिणा मा दोत्तरक्रियया योगः एवञ्च बहुविधा विस्तरेणार्थ प्ररूपणता आख्यायत इति शेषं कण्ठ्यं नवरं संख्यातानि पदशतसहस्राणि पदाग्रेणेति तत्र किल ए

॥ टीका ॥

णसुहविवागोत्तमेसु अणुवरयपरंपराणुबद्धा असुभाणचेवकम्माणभासिआवहुविवागा विवागसुयम्मि भगवयाजिणवरेण संवेगकारणत्था अन्नेविय एवमाइयावहुविहाविच्छरेणं अच्छपरूवणया आघविज्जंति

॥ मूल ॥

मा विशेष ते सुखविपाक उत्तमने विषे कहिये। निरंतर परंपराये घणाभवलगे बांध्या। अशुभ तथा शुभ कर्मना पहिले तथा बीजे भाषाश्रुतस्कंधे क्रमे कह्या घणे प्रकारे विपाक ते कर्मफलोदय तेह विपाकश्रुत इग्यारमे अङ्गे भगवंत जिनवरे संवेगकारणनाअर्थ संवेगनाहेतुनाभाव अनेरापणि एवंमा दिक घणे अने घणे प्रकारे विस्तारे अर्थनी प्ररूपणा आख्यायते कहिये। विपाक श्रुतना परित्ता गणतीयें वाचना सूत्रार्थनी देवी संख्याता अनुयोग

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

खापदकोटी चतुरशीतिश्च लक्षाणि द्वात्रिंशच्च सहस्राणीति ॥ ११ ॥ सेकिंतंदिठ्ठिवाएत्ति दृष्टयो दर्शनानि वदनम्वादो दृष्टीनां वादोदृष्टिवा द: दृष्टीनां वा पातो यत्रासौ दृष्टिपात: सर्वनयदृष्टय एवेहाख्यायन्त इत्यर्थ: तथाचाह दिठ्ठिवाएणमित्यादि दृष्टिवादेन दृष्टिपातेन वा सर्वभावप्ररूपणा ख्यायते सेसमासओपंचविहेत्यादि सर्वमिदं प्रायो व्यवच्छिन्नं तथापि यथादृष्टं किमपिलिख्यते तत्र सूत्रादिग्रहणयोग्यता सम्पादनसमर्थानि परिकर्माणि

॥ मूल ॥

विवागसुअस्सणं परित्तावायणा संखेज्जाअणुओगदारा जावसंखेज्जाओ संगहणीओ सेणं अंगठयाए एक्कारसमे अंगे वीसंअज्झयणा वीसंउद्देसणकाला वीसंसमुद्देसणकाला संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेणं प० संखे ज्जाणिअक्खराणि अणंतागमा अणंतापज्जवा जावएवंचरणकरणपरूवणया आघविज्जंति सेत्तंविवागसुए ॥ ११ ॥ सेकिंतंदिठ्ठिवाए दिठ्ठिवाएणं सव्वभावपरूवणया आघविज्जंतिसेसमासओ पंचविहे प० तं०

॥ भाषा ॥

द्वार जाव संख्यात संग्रहणी तेह अंगार्थपणे इग्यारमे अंगे वीस अध्ययन दली २० उद्देशनकाला २० समुद्देसनकाला संख्याता पदना लाख एतले १ कोटि ८४ लाख ३२ हजार पदने परिमाणें कह्या। संख्याता अक्षर। अनन्तागमा। अनन्तापर्याय। जाव चरण ते साधुनां महाव्रत करण ते पिंड विशुद्ध्या दिकनो प्ररूपणा आख्यायते कहिये। तेह विपाकश्रुत इग्यारमो अंग ॥ ११ ॥ अथ स्युंते दृष्टिवाद दृष्टिते दर्शन तेहनो वदवो कहिवोछे जि हांते दृष्टिवाद सर्वभाव सकल नयादिक भाव तेहनो प्ररूपणा पूर्वने विषे कहिये तेह पूर्व संक्षेप थकी पांच प्रकारे कह्या ते कहे छे। परिकर्म १ सूत्र २

॥ टीका ॥

गृहीतपरिकर्म्मवत् तच्च परिकर्म्मश्रुतं सिद्धश्रेणिकादिपरिकर्म्ममूलभेदतः सप्तविधं उत्तरभेदतस्तु त्र्यशीतिविधं मातृकापदादि एतच्च सर्वं समूलोत्तरभे दं सूत्रार्थतो व्यवच्छिन्नं एतेषाञ्च परिकर्म्मणां षट् आदिमानि परिकर्म्माणि स्वसामयिकान्येव गोशालकप्रवर्त्तिताजीविकपाखण्डिकसिद्धान्तमतेन पुनः

॥ मूल ॥

परिकम्मं सुत्ताइं पुव्वगयं अणुओगो चूलिया सेकिंतंपरिकम्मे परिकम्मेसत्तविहे प० तं० सिद्धसेणियापरिकम्मे मणुस्ससेणियापरिकम्मे पुट्ठसेणियापरिकम्मे ओगाहणसेणियापरिकम्मे उवसंपज्जसेणियापरिकम्मे विप्पजहसेणियापरिकम्मे चुआचुअसेणियापरिकम्मे सेकिंतंसिद्धसेणियापरिकम्मे सिद्धसेणिआपरिकम्मे चोद्दसविहे प० तं० माउयापयाणि एगट्ठियपयाणि पादोट्ठपयाणि आगासपयाणि केउभूयं रासिबद्धं एगगुणं दुगुणं तिगुणं केउभूए पडिग्गहे संसारपडिग्गहे नंदावत्तं सिद्धावत्तंसेत्तंसिद्धसेणिआपरिकम्मे सेकिंतंमणुस्ससेणिया

॥ भाषा ॥

पूर्वगत ३ अनुयोग ४ चूलिका ५ अथ सूत्रे परिकर्म। परिकर्म पूर्व साते भेदें कह्या। तेकहेछे। परिकर्म शब्दे गणती गणना विशेष सिद्ध श्रेणीनो परिकर्म गणना १ मनुष्य श्रेणीनो गणना २ पृष्ट श्रेणीगणना ३ ओगाहणाश्रेणीगणना ४ उपसंपादन श्रेणी गणना ५ विप्पजहश्रेणी गणना ६ च्युता च्युत श्रेणी गणना ७ एहना अर्थ गुरुभाग थको जाणिवा। सिद्ध श्रेणी परिकर्मना वली १४ भेद कह्या। ते कहेछे। त्यांमो भेदे मातृका पद १ एक स्थितिपद २ पाद अर्थपद ३ आगास पद ४ केतुभूत ५ राशिबद्ध ६ एकगुण ७ द्विगुण ८ त्रिगुण ९ केतुभूत १० प्रतिग्रह ११ संसार प्रतिग्रह १२ नंदावर्त्त १३ सिद्धावर्त्त १४ एह सिद्ध श्रेणिका परिकर्म। अथ सूत्रे मनुष्य श्रेणी परिकर्म। मनुष्य श्रेणी परिकर्म १४ भेदे कह्या। ते कहेछे। मातृकापद १ एक स्थितिपद २ पाद अ

॥ टीका ॥

चुताचुतश्रेणिकापरिकर्मसहितानि सप्त प्रज्ञाप्यन्ते इदानीं परिकर्मसु नयचिन्ता तत्र नैगमोद्विविधः सांग्राहिकोऽसांग्राहिकश्च तत्र सांग्राहिकः संगृहप्र विष्टो ऽसांग्राहिकश्च व्यवहारं तस्मात्तु संगृहो व्यवहारऋजुसूत्रशब्दादय श्चैकएवेत्येवं चत्वारो नया एतै श्चतुर्भिर्नयैः षट्स्वसामयिकानि परिकर्माणि चिंत्यन्ते ग्रतो भणित छचउक्कनयाइति भवन्ति तएवचाजीविकास्त्रैराशिका भणिताः कस्मादुच्यते यस्मात्ते सर्वं त्र्यात्मकं इच्छन्ति तथा जीवो ऽजी वो जीवाजीवः लोको ऽलोको लोकालोकः सत् असत् सदसत् इत्येवमादि नयचिन्तायामपि ते त्रिविधं नयमिच्छंति तद्यथा द्रव्यार्थिकः पर्यायार्थिकः उभयार्थिकः अतोभणितं सत्ततेरासियत्ति सप्तपरिकर्माणि त्रैराशिकपाखण्डिका स्त्रिविधया नयचिन्तया नयांश्चिन्तयन्तीत्यर्थः सेत्तंपरिकम्मेत्ति निगमनं

॥ मूल ॥

परिकम्मे मणुस्ससेणियापरिकम्मे चोद्दसविहे पन्नत्ते तंजहा ताइंचेव माउयापयाणि जावनंदावत्तं मणु स्सबद्धं सेत्तंमणुस्ससेणियापरिकम्मे अवसेसपरिकम्माइं पुट्ठाइयाइं एक्कारसविहाइं पन्नत्ता इच्चेयाइं सत्त परिकम्माइं ससमइयाइं सत्तआजीवियाइं छचउक्कणइयाइं सत्ततेरासियाइं एवामेव सपुव्वावरेणं सत्तप

॥ भाषा ॥

र्थं पद ३ आगाशपद ४ केतुभूत ५ राशिबद्ध ६ एकगुण ७ द्विगुण ८ त्रिगुण ९ केतुभूत १० प्रतिग्रह ११ संसार प्रतिग्रह १२ नंदावर्त्त १३ मणुस्सबद्ध १ तेह मनुष्य श्रेणी परिकर्म। शेषथाकता परिकर्म पांच पुष्टादिक इग्यारह भेदें कह्या। इत्यादिक सात परिकर्म मांहि पहिला छ परिकर्म स्वसमयप्रतिबद्ध जिनमतानुयायी सात परिकर्म च्युताच्युतश्रेणी परिकर्म लगि आजीविक गोशालमतानुयायी जाणिवा। धुरना छ परिकर्म चारनयें करी सहितछे संग्रह १ व्यवहार २ ऋजुसूत्र ३ शब्द ४ एहचारनय प्रतिबंद्धछे सात परिकर्म त्रिराशिक मतानुयायी जीव १ अजीव २ जीवाजीव एहत्रिराशिकना मतने विषे

सेकिंतंसुत्ताइमित्यादि तत्र सर्वद्रव्यपर्यायनयाद्यर्थसूचनात्सूत्राणि अष्टाशीत्यपिच सूत्रार्थतो व्यवच्छिन्नानि तथापि दृष्टानुसारतः किंचिल्लिख्यते एतानि किल ऋजुकादीनि द्वाविंशतिः सूत्राणि तान्येव विभागतो ऽष्टाशीति भवन्ति कथ मुच्यते इच्चेइयाइं बावीसंसुत्ताइं छिन्नछेयनइयाइं ससमयसुत्तपरिवाडीए त्ति इह योनयः सूत्रं छिन्नं छेदेनेच्छति सच्छिन्न च्छेदनयो यथा धम्मोमंगलमुक्कठमित्यादि श्लोकः सूत्रार्थतः प्रत्येकच्छेदनस्थितो न द्वितीयादिश्लोक मपेक्षते प्रत्येककल्पितपर्यन्त इत्यर्थः एतान्येव द्वाविंशतिः स्वसमयसूत्रपरिपाट्या सूत्राणि स्थितानि तथा इत्येतानि द्वाविंशति सूत्राणि अच्छिन्नच्छेदनयिका न्या

रिकम्माइं भवंतीतिमरकायाइं । सेत्तंपरिकम्माइं । सेकिंतं सुत्ताइं सुत्ताइं अठासीति भवंतीति मरकायाइं तंजहा । उज्जुगं परिणयापरिणयं बहुभंगियं विप्पच्चइयं अणंतरं परंपरसमाणं संजूहं भिन्नं अहछायं सो वत्थियं घंटं णंदावत्तं बहुलं पुठापुठं वियावत्तं एवंभूय दुआवत्तं वत्तमाणुप्पयं समभिरूढं सव्वतुभद्दं पणु मं दुपडिग्गहं इच्चेयाइं बावीसंसुत्ताइं छिणछेअणइआइं ससमयसुत्त परिवाडीए इच्चेआइं बावीसंसुत्ताइं

सात परिकर्म एणीपरे आगलो पाछलो मिलो सात परिकर्म होय भगवंते कह्या । ते पहिलो भेद पूर्वनो परिकर्म नाम कह्या अथसूत्र सूत्र । पूर्वनो बीजोभेद सूत्र तेहना ८८ भेद होय । भगवंते कह्या तेकहेछे । ऋजुसंग १ परिणता परिणत २ बहुभंगिय ३ विप्रत्ययिक ४ अनन्तर ५ परंपरसमान ६ संयूथ ७ भिन्न ८ यथात्याग ९ सौवस्तिक १० घंट ११ नंदावर्त्त १२ बहुल १३ पृष्टापृष्ट १४ वियावर्त्त १५ एवंभूत १६ द्विकावर्त्त १७ वर्त्तमानोत्पतक १८ समभिरू ढ १९ सर्वतोभद्र २० प्रशामंत २१ द्विप्रतिग्रह २२ इत्यादिक बावीससूत्र छेद्या छेद्यं करी नय जिहां तेछिन्न छेदनयिक जिम धम्मोमंगल इत्यादिक श्लोक

जीविकसूत्रपरिपाव्येति अयमर्थः इह यो नयः सूत्रमच्छिन्नच्छेदेनेच्छति सोऽच्छिन्नच्छेदनयो यथा धम्मोमंगलमुक्कट्ठमित्यादि श्लोकएवार्थतो द्वितीयादिश्लोक म पेक्षमाणो द्वितीयादयश्च प्रथममिति अन्योन्यसापेक्षा इत्यर्थः एतानि द्वाविंशति राजोविकगोशालकप्रवर्त्तितप्राखण्डसूत्रपरिपाव्या अक्षररचनाविभागस्थिता न्यप्यर्थतो ऽन्योन्यमपेक्षमाणानि भवन्ति इच्चेइयाइं इत्यादि सूत्रं तत्र तिकनइयाइंति नयत्रिकाभिप्रायतश्चिंत्यन्तइत्यर्थं स्त्रैराशिकाश्चाजीविका एवोच्यन्ते इति यथा इच्चेइयाइं इत्यादि सूत्रं ततः चउक्कनइयाइंति नयचतुष्काभिप्रायतश्चिंत्यंत इति भावनाएवमेवेत्यादि सूत्रं एवश्चतस्रो द्वाविंशतयोऽष्टाशीतिसूत्रा

आजीवियसुत्तपरिवाडीए इच्चेआइं बावीसंसुत्ताइं तिकणइयाइं तेरासियसुत्तपरिवाडीए इच्चेआइं बावीसंसुत्ताइं चउक्कणयससमयसुत्तपरिवाडीए एवामेवसपुव्वावरेणं अठासीयं सुत्ताइं भवंतीति मक्खायाइं ।

सूत्रार्थ थको प्रत्येक छेदथको छेद्यो बीजा श्लोकनी अपेक्षा नकरे ससमय जिनमतना सूत्रनो परिपाटीये अनुक्रमे पामीये एह ऋजु अंगादिक २२ सूत्र नथी छेद्या छेदेकरी नय जिहां ते अछिन्न छेदनयिक जिम धम्मोमंगल मुक्किट्ठ इत्यादि श्लोक बीजा श्लोकनी अपेक्षा करे । एह बावीस सूत्र आजीविक गोशालमतनी परिपाटीयें पामीये । इच्चेइयाइं एह २२ सूत्र त्रिण नय समेत जीव अजीव नोजीव एह त्रिणनय जिहां ते त्रिकनयिक त्रिरा शिक पाखंडीना सूत्रनी परिपाटीयें पामीये । ऋजुअंग प्रमुख २२ सूत्र चतुष्क नयिक संग्रह १ व्यवहार २ ऋजु ३ शब्द ४ एह चार नय समेत तेह स्वस मय जिनमतनी सूत्र परिपाटीये पामिये । एम आगलो पाछलो मिलो २२ चोका अठ्यासी सूत्र होय ते भगवंते कह्या । एह पूर्वनो बीजो भेद सूत्र कह्यो

णि भवन्ति सेत्तंसुत्ताइंति निगमनवाक्यं सेकिंतंपुव्वगएइत्यादि अथ किन्तत्पूर्वगतमुच्यते यस्मा तीर्थंकरः तीर्थप्रवर्त्तनाकाले गणधराणां सर्वसूत्राधारत्वेन पूर्वं पूर्वगतसूत्रार्थं भाषते तस्मात्पूर्वाणीति भणितानि गणधराः पुनःश्रुतरचनां विदधाना आचारादिक्रमेण रचयन्ति स्थापयन्तिच मतान्तरेणतु पूर्वगतसूत्रार्थः पूर्वमर्हता भाषितो गणधरैरपि पूर्वगतश्रुतमेव पूर्वंरचितं पश्चादाचारादि नत्वेवं यदाचारनिर्युक्त्या मभिहितं सव्वेसिंआयारोपढमो इत्यादि तत्कथमुच्यते तत्स्थापनामाश्रित्य तथोक्त मिहत्वक्षररचनां प्रतीत्य भणितं पूर्वं पूर्वाणि कृतानीति तच्च पूर्वगतं चतुर्दशविधं प्रज्ञप्तं तद्यथा उप्पायेत्यादि तत्रोत्पादपूर्वं प्रथमं तत्र च सर्वद्रव्याणां पर्यवाणां चोत्पादभावमङ्गीकृत्य प्रज्ञापना कृता तस्यच पदपरिमाणं मेकाकोटी अग्गणीयं द्वितीयं तत्रापि सर्वेषां द्रव्याणां पर्यवाणां जीवविशेषाणां चाग्रं परिमाणं वर्ण्यत इत्यग्रणीयं तस्य पदपरिमाणं षण्णवतिपदशतसहस्राणि वीरियंति वीर्यप्रवादं तृतीयं तत्राप्यजीवानांजीवानांच सकर्मेतराणां वीर्यं प्रोच्यत इति वीर्यप्रवादं तस्यापि सप्ततिः पदशतसहस्राणि परिमाणं अस्तिनास्तिप्रवादं चतुर्थं यत्लोके यथास्ति यथावा ना

सेत्तंसुत्ताइं। सेकिंतं पुव्वगयं। पुव्वगयं चउद्दसविहे पन्नत्ते। तंजहा उप्पाय पुव्वं अग्गणीयं वीरियं अ

कह्यो। अथ सूत्रे पूर्वनो बीजो भेद पूर्वगत। ते चौदह भेदें कह्यो तेकहेछे उत्पाद पूर्व १ तीर्थंकर तीर्थ प्रवर्त्तना काले गणधरने पूर्व पहिलो सूत्रार्थ भाख्यो तेमाटे पूर्व कह्यो। सर्व द्रव्य पर्यायनो उत्पादव भाव अंगीकार करीने जेकह्यो तेउत्पाद पूर्व इग्यारह कोडि पद परिमाण १ बीजो अग्रणीय तेमांहि सर्वद्रव्य पर्याय जीवनो अग्र परिमाण पामिये तेहनो पद परिमाण ९६ लाख पद २। त्रीजो वीर्यप्रवाद तिहां जीवाजीवना वीर्य कह्या। पदसंख्या ७० लाख पद ३। चौथो अस्तिनास्तिप्रवाद जिहां स्याद्वादाभिप्राय अस्ति नास्ति कहिये ते अस्तिनास्तिप्रवाद पद संख्या ६० लाख पद ४। पांचमो ज्ञानप्रवाद

स्ति अथवा स्याद्वादाभिप्रायतः तदेवास्ति तदेवनास्तीत्येवं प्रवदतीति अस्तिनास्तिप्रवाद भणितं तदपि पदपरिमाणतः षष्टिपदशतसहस्राणि ज्ञानप्रवाद पञ्चमं तत्रमतिज्ञानादि पञ्चकस्य भेदप्ररूपणायस्मात् तत् ज्ञानप्रवादं तस्मिन्पदपरिमाण मेकाकोटीएकपदोनेति सत्यप्रवादं षष्ठं सत्यसंयमः सत्यवचनम्वा तच्च सभेदं सप्रतिपक्षञ्च वर्ण्यते तत्सत्यप्रवादं तस्य पदपरिमाणं एकापदकोटीषट्चपदानीति आत्मप्रवादं सप्तमं आयत्ति आत्मा सोनेकधा यत्र नयदर्शनै र्वर्ण्यते तदात्मप्रवादं तस्य पदपरिमाणं षट्विंशतिपदकोट्यः कर्म्मप्रवादमष्टमं ज्ञानावरणादिक मष्टविधं कर्म्म प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशादिभि र्भेदै रन्यैश्चोत्तरोत्तरभेदै र्यत्रवर्ण्यते तत्कर्म्मप्रवादं तत्परिमाण मेकापदकोटीअशीतिश्चसहस्राणीति प्रत्याख्यानं नवमं तत्रसर्वप्रत्याख्यानस्वरूप म्वर्ण्यत इति प्रत्याख्यानप्रवादं तत्परिमाणं चतुरशीतिः पदशतसहस्राणीति विद्यानुप्रवादं दशमं तत्रानेके विद्यातिशया वर्णिता स्तत्परिमाण मेकापदको टी दशचपदशतसहस्राणीति अवंध्य मेकादशं बंध्यंनाम निष्फलं नवंध्य मवंध्यं सफलमित्यर्थः तत्रहि सर्वेज्ञानतपः संयमयोगाः शुभफलेन सफला व

त्थिणत्थिप्पवायं नाणप्पवायं सच्चप्पवायं आयप्पवायं कम्मप्पवायं पच्चक्खाणप्पवायं विज्जाणुप्पवायं अवंझं

तिहांमत्यादि ५। ज्ञान सविस्तर पणे कह्या पद संख्या एकूण एक कोडीपद ५। छट्ठो सत्यप्रवाद तिहां सत्यसंयम तथा सत्य वचन सभेदें कह्यो ते सत्य प्रवाद पद संख्या एककोडी छ पद ६। इति षट् पूर्व। सातमो आत्म प्रवाद तिहां अनेक भेदें आत्मा वर्णव्यो ते आत्म प्रवाद पदसंख्या २६ कोडी पद ७ आठमो कर्मप्रवाद तिहां आठकर्म प्रकृतिनीप्ररूपणांकरी पद संख्या १ कोडी ८० हजार पद ८। नौमो प्रत्याख्यान प्रवाद तिहांप्रत्याख्यानस्वरूप वर्णव्यो पदसंख्या ८४ लाखपद ९। दशमो विद्यानुप्रवाद तिहां अनेक प्रकारनी अतिशायिनी विद्या वर्णवीके पद संख्या १ कोडी १५ हजार पद १०। इग्यारह

थंमी अप्रमत्तत्व.प्रमादादिकाः सर्वे भयंभफला वर्ण्यन्ते भतोऽवंध्यं तस्य च परिमाणं षट्विंशतिपदकोटयः प्राणायु र्द्वादश तत्राप्यायुः प्राणविधानं सर्वं स भेद मन्येच प्राणावर्णिता तत्परिमाण मेकापदकोटीषट्पञ्चाशच्चपदशतसहस्राणीति क्रियाविशालं चयोदशं तत्र कायिक्यादयः क्रिया विशालत्ति सभेदाः संयमक्रियाच्छन्दक्रियाविधानानिच वर्ण्यन्त इति क्रियाविशालं तत्पदपरिमाणं नवपदकोट्यः लोकबिन्दुसार श्चतुर्दशमं तत्रास्मिन्लोके श्रुतलोकेवा बिन्दुरि वाक्षरस्य सर्वोत्तममिति सर्वाक्षरसन्निपातप्रतिष्ठितत्वेनच लोकबिन्दुसार भणितं तत्प्रमाण मर्द्धचयोदशपदकोट्यइति उप्पायपुव्वस्सेत्यादिकंतु नवरं वस्तुनिय तार्थाधिकारप्रतिबद्धो ग्रन्थविशेषो ध्ययनवदिति तथाचूडाइवचूडा इहदृष्टिवादे परिकर्मसूत्रपूर्वगतानुयोगोक्तानुक्तार्थ संग्रहपरा ग्रंथपद्धतय चूडाइति सेतं ॥ टीका ॥

पाणाउ किरियाविसालं लोगविंदुसारं १४ उप्पायपुव्वस्सणं दसवत्थू चत्तारिचूलियावत्थू प० अग्गेणिय रस्सणंपुव्वस्स चोद्दसवत्थू बारसचूलियावत्थू प० । वीरियपुव्वस्सणंपुव्वस्स अट्ठवत्थू अट्ठचूलियावत्थू प० । ॥ मूल ॥

मो भवंध्य तिहां तप संयमना फल बंध्यनथी अफलनथी एहवो वर्णव्यो पद संख्या २६ कोडी पद ११ । बारमो प्राणायु तिहां आउखानो भेद सर्व जीवनो कह्यो पद संख्या १ कोडी ५६ लाख पद १२ । तेरमो क्रियाविशाल तिहां कायिक्यादिक क्रिया सत्तर भेदें वर्णवी पद संख्या ९ कोडी पद १३ । चौदमो लोक बिंदुसार लोकने विषे बिंदुसरीखो बिंदु सघलामांही उत्तम तेहनी पद संख्या साढी बारह कोडीपद १४ । एतले पूर्वनो चौजो भेद वर्णो कह्यो । प्रथम उत्पाद पूर्वना दश वस्तु अध्ययन चार चूलिका वस्तु चूडा चोटली ते सरीखा तेहना वस्तु कह्या । बचवी बीजा पूर्वना चौदे वस्तु बारे चूलिका वस्तु कह्या । वीर्य प्रवाद पूर्वना आठ वस्तु आठ चूलिका वस्तु कह्या । अस्तिनास्ति प्रवाद चौथा पूर्वना अठारह वस्तु १० चूलिका वस्तु कह्या ४ । ज्ञान प्रवाद ॥ भाषा ॥

पुव्वगतेति निमयमं वैशिष्ट्यमित्यादि अनुयोगोऽनुयोगोवायोगो गुयोत: सूत्रस्य निजेनाभिधेयेन सार्धमनुरूप: सम्बन्धरूपत्वर्थ: स च द्विविध: प्रज्ञप्त: तद्यथा मूल

अत्थिणत्थिप्पवायस्सणंपुव्वस्स अठारसवत्थू दसचूलियावत्थू प० । नाणप्पवायस्सणं पुव्वस्स वारसवत्थू प० । सच्चस्सणं पुव्वस्स दोवत्थू प० । आयप्पवायस्सणं पुव्वस्स सोलसवत्थू प० । कम्मप्पवायस्सणं पुव्वस्स तीसंवत्थू प० । पच्चक्खाणस्सणं पुव्वस्स वीसंवत्थू प० । विज्जाणुप्पवायस्सणं पुव्वस्स पनरसवत्थू प० । अवंझस्सणं पुव्वस्स वारसवत्थू प० पाणाउस्सणं पुव्वस्स तेरसवत्थू प० । किरियाविसालस्सणं पुव्वस्सतीसंवत्थू प० । लोगविंदुसारस्सणं पुव्वस्स पणवीसंवत्थू प० । सेत्तंपुव्वगयं । सेकिंतंअणुओगे । अणुओगे दु

पांचमा पूर्वनां बारह वस्तू कह्या । ५ । सत्य प्रवाद छठा पूर्वना बिहुं वस्तु कह्या ६ । आत्म प्रवाद सातमा पूर्वना १६ वस्तु कह्या ७ । कर्म प्रवाद आठमा पूर्वना ३० वस्तु कह्या ८ । प्रत्याख्यान नवमा पूर्वना २० वस्तु कह्या ९ । विद्यानुप्रवाद दशमा पूर्वना १५ वस्तु १० । अवंध्य इग्यारहमा पूर्वना १२ वस्तु कह्या ११ । प्राणायु बारमा पूर्वना १३ वस्तु कह्या १२ । क्रियाविशाल तेरमा पूर्वना ३० वस्तुकह्या १३ । लोक विंदुसार चौदमा पूर्वना २५ वस्तुकह्या १४ । दसचउदसअठ्ठठा रसेवबारसदुवेयवत्थूणि सोलसतीसावीसा पन्नरसअणुप्पवायंति ॥ १ ॥ बारसएक्कारसमे बारसमेतेरसेववत्थूणि तीसापुणतेरसमे चउदसमे पणवीसाओ ॥ २ ॥ चत्तारिदुवालस अठ्ठचेवदसचेवचूलवत्थूणि आइल्लाणचउण्हं सेसाणंचूलिआनत्थि. ॥ ३ ॥ धुरना चिहूं पूर्वनी चूलिका कही जाणिवी । शेष बाकता दश पूर्वनी चूलिका नथी एह पूर्वगत चौथो भेद पूर्वनो कह्यो ॥ अथ स्यूं ते अनुयोग चौथोभेद पूर्वनो । अनुरूप अनुकूल योग ते अनुयोग सूत्र

॥ टीका ॥
॥ सूत्र ॥
॥ भाषा ॥

प्रथमानुयोग च गण्डिकानुयोगच सेकिंतमित्यादि इदञ्चप्रश्नवचनात् मूलं तावत्तीर्थंकरा स्तेषां प्रथमसम्यक्त्वावाप्तिलक्षणपूर्वभवादिगोचरो नुयोगो मूलप्रथ मानुयोग स्तथाह सेकिंतं मूलपढमाणुयोगे इत्यादि सूत्रसिद्धं यावत् सेत्तंमूलपढमाणुयोगे सेकिंतमित्यादि इहैकवक्तव्यतार्थाधिकारानुगता वाक्यपद्धतयो ग

विहे पन्नत्ते । तंजहा । मूलपढमाणुउगे गंडियाणुउगे सेकिंतंमूलपढमाणुउगे एत्थणं अरहंताणंभगवंताणं पुव्वभवदेवलोगगमणाणि आउवयणाणि जम्मणाणिअभिसेयरायवरासिरीउ सीआओ पव्वज्जाउ तवोयभ त्ताकेवलणाणुप्पयआ तित्थपवत्ताणाणिअ संघयणसंठाणउच्चत्तआउवन्नविभागो सीसागणागणहराय अज्जा पवत्तणीउ संघस्सचउव्विहस्स जंवावि परिणामं जिणा मणपज्जवउहिनाणिसम्मत्तसुयनाणिणोय वाईअणुत्त

नेविषे अर्थने विषे सरीखा संबंध तेकहेछे । मूल प्रथमानुयोग १ गंडिकानुयोग । अथ स्यूंते मूल प्रथमानुयोग । मूल प्रथमानुयोगने विषे इहां धर्मनाप्ररूपक पणा थकी मूल ते तीर्थंकर देव ते अरिहंत भगवंतनो प्रथम पहिलो पूर्वभव तप संयम सूचक अनुयोग व्याख्या ते मूल प्रथमानुयोग कहिये ते अनुयोग बहु प्रकारे कह्यो अरिहंतना पूर्व भव देवलोक गमन जाइवो । आउखो च्यवन जन्म राज्याभिषेक राज्यवर श्री जिमभोगवे शिबिका दीक्षा दीक्षानोपाल वो तपना भक्त चोथभक्त छट्ठभक्त इत्यादि । केवल ज्ञाननो उपजवो । तीर्थ चतुर्विध संघ तेहनो प्रवर्तावबो । संघयण वज्रऋषभादिक । संस्थान समचतुर स्र । शरीरनो उंचपणो । आउखो । वर्ण गौरादिक । तेहनो विभा कांति । शिष्य गण गछ । गणधर ते प्रथम शिष्य । आर्या साधवी प्रवर्तिनी बडी सा ध्वी तेहना नायक । संघ चातुर्विध साधु साध्वी श्रावक श्राविका तेहनो तेहनो परिमाण आचार विचार । जिन केवलीनो संख्या । मनपर्यवज्ञानी अवधि

भाष्य ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

॥ २०१ ॥

ण्डिका उच्यते तासामनुयोगोऽर्थकथनविधि गंडिकानुयोगः तथाचाह गंडियाणुओगेअणेगेत्यादि तत्र कुलकरगण्डिकासु कुलकराणां विमलवाहनादीनां पूर्वभवाद्यभिधीयते इति एवं शेषास्वपि अभिधानवशतो भावनीयं यावच्चित्रान्तरगण्डिका नवरं दशार्हाः समुद्रविजयादयो दश वसुदेवान्ताः तथा चित्रा

रगइय जत्तियासिद्धापावोवगत्तय जो जहिंजत्तियाइं भत्ताइं छेअइत्ता अंतगडोमुणिवरुत्तमो तमरत्तघवि प्पमुक्कासिद्धिपहमणुत्तरंचपत्ता एए अन्नेय एवमाइया भावामूलपढमाणुत्तगकहिआ आघविज्जंति पत्नवि ज्जंति सेत्तंमूलपढमाणुत्तगे सेकिंतंगंडियाणुत्तगे गंडियाणुत्तगे अणेगविहे पत्नत्ते तंजहा कुलगरगंडियात्त तित्थगरगंडियात्त गणहरगंडियात्त चक्कहरगंडियात्त दसारगंडियात्त बलदेवगंडियात्त हरिवंसगंडियात्त

ज्ञानी मतिज्ञानी श्रुतज्ञानी । सम्यक जे यती तिहां जई ऊपना ते उपपात अनुत्तर विमान गतियें जाई ऊपना तेहनो गतिनो कहिवो । जेतला २ यती सिद्ध सकल कर्मक्षय करी मोक्ष गया । पादपोपगमन । अनशन करिवानो अधिकार जेहयती जिहां २ जेणे २ ठामे जेतलो २ भात छेदीने अंत कृत सं सारनो अंत कीधो । मुनिवर उत्तम । तम अज्ञान रूप रज पापरज थकी मूकांणा । सिद्धिपंथ मोक्षमार्ग अनुत्तर प्रधान तेह प्रते पाम्या । एह पूर्वे कह्या ते तथा अनेरा पणि । एवमादिक भाव पदार्थ प्रथमानुयोगने विषे कह्या । ते जिहां चौथा पूर्वना भेद मांहि आख्यायते कहिये प्रज्ञापिये आघवीये तेह मूलप्रथमानुयोग कहिवो ॥ अथ स्यूंते गंडिकानुयोग । इहां एकवक्तव्यतार्थाधिकार तेहने अनुगतसरीखी वाक्यपद्धति ते गंडिका क हिये तेहनो अनुयोग अर्थकहिवानो विधि ते गंडिकानुयोग । ते गंडिकानुयोग अनेक प्रकारें कह्यो । तेकहेछे । कुलकर ते विमलवाहनादिक तेहनी गंडि

॥ टीका ॥

मनेकार्था मन्तरे ऋषभाजिततीर्थकरान्तरे गण्डिका एकवक्तव्यतार्थाधिकारानुगता स्ततश्च चित्राश्च ता अन्तरगण्डिका श्च चित्रान्तरगण्डिकाः एतदुक्तं भ वति ऋषभाजिततीर्थकरान्तरे सद्वंशज भूपतीनां शेषगतिगमनव्युदासेन शिवगमनानुत्तरोपपातप्राप्ति रितिप्रतिपादिका चित्रांतरगण्डिका इति ताश्च पोइगलक्खालिया निवईवेबोयहोइसव्वट्ठे एक्केक्कठाणे पुरिसजुगाइंतिसंखेज्जेत्यादिना ग्रंथेन नन्दिटीकाया मभिहिता स्तत एवावधार्या इह सूत्रगमनिका

॥ मूल ॥

तित्थयरगंडियाओ गणहरगंडियाओ चक्कवट्टिगंडियाओ दसारगंडियाओ बलदेवगंडियाओ वासुदेवगंडियाओ हरिवंसगंडियाओ भद्दबाहुगंडियाओ तवोकम्मगंडियाओ चित्तंतरगंडियाओ उस्सप्पिणीगंडियाओ ओसप्पिणीगंडियाओ अमरनरतिरियनिरयगइगमणविविहपरियट्टणाणुओगे एवमाइयाओगंडियाओ आघविज्जंति पन्नविज्जंति परूविज्जंति सेत्तंगंडियाणुओगे सेकिंतंचूलियाओ जंआइल्लाणं चउण्हंपुव्वाणंचूलियाओ सेसाइंपुव्वाइं अचूलियाइं दिठिवा

॥ भाषा ॥

तीर्थंकरना संबंध गणधर संबंध चक्रव का पूर्वजआदि संबंधी जिहां कही ते कुलकरगंडिका । एमज सर्वत्र कहिवो । जिहांलगे चित्रांतरगंडिकाआवे । तीर्थंकरना संबंध गणधर संबंध चक्रव र्त्तिसंबंध।दस समुद्रविजयादिक दशदशार तेहना प्रबंध । बलदेव बलभद्रादिकनासंबंध। हरिवंश यदुवंशनी उत्पत्ति । भद्रकल्याण घणाजिम एह पाम्या। केहडे केहवा तपकर्मकीधा । तेचित्रांतरगंडिका चित्रअनेकार्थ अंतरने आदिनाथ अने अजितनाथने आंतरे विचाले जिम आदीश्वरना पाट असंख्याता मो क्षपहुंता । तथा । सर्वार्थसिद्ध पहुंता। तेसर्व भावना कहणहार तेचित्रांतरगंडिका । उत्सर्पिणी ते चढतोसमय तेहनाभाव । अवसर्पिणी तेघटतोकाल तेह नाभाव । देवतानागरसमूह । तथा नरमनुष्यतिर्यंच नारकी एचिहूंनीगति जिहां विविध प्रकारे परिवर्तन संसारमांहि फिरवो तेहनो अनुयोग व्याख्यान प्रथमादिक गंडिका अर्थाधिकार । तिहां चोथा पूर्वना भेदने विषे कहिये गंडिका चोथो भेद पूर्वनो ॥ अथ ते स्युं चूलिकानुयोग । जे आदिना चारना

[illegible] पूर्वोक्त [illegible] बीजबुद्धि [illegible] संखेज्जासु [illegible]

[illegible] संखेज्जा अणुओगदारा संखेज्जाउ पडिवत्तीउ संखेज्जाउ निज्जुत्तीउ संखेज्जा वेढा संखे

ज्जा सिलोगा संखेज्जाउ संगहणीउ सेणं अंगठ्याए इग्यारसमे अंगे एगे सुयखंधे चउद्दसपुव्वाइं संखेज्जा वत्थू संखे

ज्जा चूलवत्थू संखेज्जा पाहुडा संखेज्जा पाहुडपाहुडा संखेज्जाउ पाहुडियाउ संखेज्जाउ पाहुडपाहुडियाउ

संखेज्जाणि पयसयसहस्साणि पयग्गेणं पन्नत्ता संखेज्जा अक्खरा अणंतागमा अणंतापज्जवा परित्तातसा

अणंताथावरा सासयाकडाणिबद्धाणिकाइया जिणपन्नत्ताभावा आघविज्जंति पन्नविज्जंति परुविज्जंति

पूर्व तेहने चूलिका छे ते चूडे कही छे । शेष बाकता दश पूर्व चूलिका रहित छे ते चूलिका पूर्वनो पांचमो भेद दृष्टिवाद पूर्व तेहना परित्ता [illegible]

[illegible] संख्याता अनुयोग द्वार उपक्रमादिक। संख्याती प्रज्ञप्ति। संख्याता वेढा। संख्याता श्लोक। संख्याती संग्रहणी। संख्याती निर्युक्ति [illegible] विषे

[illegible]। तेह [illegible] पणें [illegible] पणें बारमें अंगे एक श्रुतस्कंधने विषे १४ पूर्व। संख्याती २२५ वस्तु। संख्याता [illegible] १४। संख्याता [illegible]

[illegible]। संख्याता प्राभृतप्राभृत अधिकार विशेष। संख्याती प्राभृतिका। संख्याती प्राभृतप्राभृतिका। संख्याता [illegible]

[illegible] छे ते पूर्वे। संख्याता अक्षर [illegible]। अनंतागमा [illegible] परिच्छेद। अनंता पर्याय अक्षर [illegible] भेद। परित्ता [illegible] २ [illegible]

[illegible] पूर्व आदि भाव पदार्थ [illegible] द्रव्यार्थ पणें विच्छेद रहित छे वली पर्याय पणें समे २ प्रति

॥ टीका ॥

साम्प्रतं द्वादशाङ्गविराधनानिष्पन्नं त्रैकालिकं फलमुपदर्शयन्नाह इच्चेयमित्यादि इत्येतत् द्वादशाङ्गं गणिपिटकमतीतकाले अनन्ताजीवा आज्ञया विराध्य चतुरन्तं संसारकान्तारं अणुपरियट्टिंसुत्ति अनुपरिवृत्तवन्तः इदं हि द्वादशाङ्गं सूत्रार्थोभयभेदेन त्रिविधं ततश्च आज्ञया सूत्राज्ञया अभिनिवेशतो न्यथापाठादिलक्षणया अ तीतकाले अनन्ता जीवाश्चतुरन्तं संसारकान्तारं नारकतिर्यङ्नरामरविविधवृक्षजालदुस्तर भवाटवीगहन मित्यर्थः अनुपरावृत्तवंतो जमालिवत् अर्थाज्ञया पुनरभिनिवेशतोऽन्यथाप्ररूपणादिलक्षणया गोष्ठामाहिलवत् उभयाज्ञया पुनः पञ्चविधाचारपरिज्ञानकरणोद्यतगुर्वादेशादे रन्यथाकरणलक्षणया गुरुप्रत्यनी कइव द्रव्यलिङ्गधार्यनेकश्रमणवत् सूत्रार्थोभये विराध्येत्यर्थः अथवाद्रव्यक्षेत्रकालभावापेक्षयाऽऽगमोक्तानुष्ठान मेवाज्ञातया तदकरणेनेत्यर्थः इच्चेयमित्यादि गता

॥ मूल ॥

निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति एवंणाए एवं विणाए एवं चरणकरणपरूवणया आघविज्जंति सेत्तंदिठिवाए॥ सेत्तंदुवालसंगेगणिपिडगे ॥ १२ ॥ इच्चेइयं दुवालसंगंगणिपिडगं अतीतकाले अणंताजीवाआणाए विरा

॥ भाषा ॥

अन्यथा पणे कडा कीधा छे निबद्दा सूत्र थकी गूंथ्या छे। हेतूदाहरणे करी प्रतिपाद्या छे जिनने प्रज्ञाप्या जणाव्या भाव पदार्थ कहीजे। नाम भेद जणावे करी। निर्देशीये देखाडिये विशेष पणे युक्ति देखाडी सामान्य पणे एम पूर्व भणी ते ज्ञाता जाण्या। एम विशेष पणे जाण्या। चरण ते पांच·महाव्रत रूप करण ते पिण्डविशुद्ध्यादिकनी प्ररूपणा। जिहां कहिये ते दृष्टिवाद बारमो अंग जाणिवो ॥ १२ ॥ एह बारे अंग केहवाछे। गणी कह तां आचार्य तेहने पेटी रत्नकरंड समानछे। इत्यादि द्वादशांग एहने आचार्यने पेटी समान एहने अतीत गयेकाले अनन्ताजीव आज्ञाने विराधी खंडी ने चार अंत छेहडाछे नरकादिक लक्षण एहवो संसार कांतार गहन अटवी तेह प्रति अनुपरिव्रुतवंत भमता हुआ एह द्वादशांग गणि पिडगप्रते व

र्थमेव नवरं परित्ताजीवाइति संख्येयाजीवा वर्त्तमानविशिष्टविराधकमनुष्यजीवानां संख्येयत्वात् अणुपरियट्टंतित्ति अनुपरावर्त्तन्ते भ्रमन्तीत्यर्थः इच्चेयमित्या ॥ टीका ॥
दि इदमपिभावितार्थ मेव नवर मणुपरियट्टिस्संतित्ति अनुपरावर्त्तिष्यन्ते पर्यटिष्यंतीत्यर्थः इच्चेयमित्यादि कंठ्यं नवरं विइवयंसुत्ति व्यतिव्रजितवन्तः चतुर्ग
तिकसंसारोल्लङ्घनेन मुक्तिमवाप्ता इत्यर्थः एवं प्रत्युत्पन्नेपि नवर मय म्विशेषः वीइवयंतित्ति व्यतिव्रजन्ति व्यतिक्रामन्तीत्यर्थः अनागते प्येवं नवरं वीवइस्संति
त्ति व्यतिव्रजिष्यन्ति व्यतिक्रमिष्यंतीत्यर्थः यदिद मनिष्टेतरभेदभिन्नं फल मतिपादित मेतत्सदावस्थायित्वे सति द्वादशाङ्गस्यो पजायत इत्याह दुवालसंगे इ

हित्ता चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टिंसु इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पण्णेकाले परित्ताजीवा आणाए ॥ मूल ॥
विराहित्ता चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टंति इच्चेइयं दुवालसंगंगणिपिडगं अणागएकाले अणंताजीवा
आणाए विराहित्ता चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टिस्संति इच्चेइयं दुवालसंगंगणिपिडगं अतीतेकाले
अणंताजीवा आणाए आराहित्ता चाउरंतसंसारकंतारं विइवइंसु एवंपडुप्पण्णेवि अणागएवि दुवालसंगं

र्तमानकाले परित्तासंख्याता जीव मनुष्य आज्ञामे विराधीने चातुरंत संसार कांतार प्रति अनुपरावर्तें भ्रमे छे। एह द्वादशांग गणिपिडगने। अनागत ॥ भाषा ॥
भविष्यकाले अनंताजीव आज्ञानें विराधीने चातुरंत संसार कांतारप्रतें भ्रमस्ये। एहवा द्वादशांग गणिपिडगप्रतें अतीतकाले अनंताजीव आज्ञाने अराधी
ने चातुरंत संसार कांतारप्रते पार पांमताहुआ। एम वर्तमानकाले पार पामे छे। एम भविष्यकाले पार पामस्ये। एह द्वादशांग गणिपिटक। नहो क
दाचित् किवारे वर्तमानकाले नथी एमनहो। नही किवारे अतीतकाले नासीत् नहुतो एमनही। तथा भविष्यकाले तिवारे नही होय एम नहीकेहवो

त्यादि द्वादशाङ्गं गणिमित्यलङ्कारे गणिपिटकं नकदाचिन्नासी दनादित्वा नकदाचिन्नभवति सदैवभावात् नकदाचिन्नभविष्यति अपर्यवसितत्वात् किंतर्हि भु ॥ टीका ॥
विंचेत्यादि अभूच भवतिच भविष्यतिच ततश्चेदं त्रिकालभावित्वादचलत्वाच्च ध्रुवं मेर्वादिवत् ध्रुवत्वादेव नियत म्पञ्चास्तिकायेषु लोकवचनवत् नियतत्वादेव
शाश्वतं समयावलिकादिषु कालवचनवत् शाश्वतत्वादेव वाचनादिप्रदानेप्य चयं गङ्गासिन्धुप्रवाहेपि पद्मह्रदवत् अचयत्वादेवा व्ययं मानुषोत्तराहहिः समु
द्रवत् अव्ययत्वादेव स्वप्रमाणे ऽवस्थितं जम्बूद्वीपादिवत् अवस्थितत्वादेव नित्यमाकाशवदिति साम्प्रतं दृष्टान्त मनार्थ आह सेजहानामएइत्यादि तद्यथा
नामपञ्चास्तिकाया धर्मास्तिकायादयः न कदाचिन्नास न्नित्यादि प्राग्वत् एवमेवेत्यादि दार्ष्टान्तिकयोजना निगदमिद्धैवेति एयणमित्यादि अत्र द्वादशाङ्ग

गणिपिडगं णकयाइणत्थि णकयाइणासी णकयाइणभविस्सइ भुवंच भवति भविस्सतिय धुवेणितिए ॥ मूल ॥
सासए अक्खए अव्वए अवठिए णिच्चे सेजहाणामए पंच अत्थिकाया णकयाइ णआसि णकयाइ णत्थी

नही तेमाटे हुतो तोस्यूं। एह द्वादशांग पूर्वेहुता हिवडा छे आगलि होस्ये एतले त्रिहुंकाले पामिये एह द्वादशांग ध्रुव निश्चलछे वली नियतछे। सदाभावी ॥ भाषा ।
पंचास्तिकायनीपरे चयनही व्ययनही विनाशनही चार समुद्रवत् शाश्वतछे समयादिकालनीपरे वली अचय पद्मद्रहने विषे गंगासिंधुना प्रवाहनीपरे पंचा
स्तिकायनीपरे वली अवस्थित जंबूद्वीपनीपरें वली नित्य आकाशनीपरे सांप्रत दृष्टांत देखाडीयेछे। तेयथानाम जिम पंचास्तिकाय धर्मास्तिकायादि किवा
रे अतीतकाले नही न हुतो एम वर्तमान काले किवारे नथी एमनही। तथा भविष्यकाले किवारे नही हुस्ये एमनही। एह पंचास्तिकाय हुतो अतीत
काले आगलिकाले होस्ये। वर्तमानकालेछे। ध्रुव नियत शाश्वत नित्य। एह पदार्थ वखाण्याछे।.एणे दृष्टांते द्वादशांग गणिपिटक किवारे अतीतकाले न

॥ टीका ॥

गणिपिटके अनन्ताभावा आख्यायन्त इतियोगः तत्रभवन्तीतिभावा जीवादयः पदार्थाः एतेच जीवपुद्गलानामनन्तत्वा दनन्ता इति तथा अनन्ता अभावाः सर्वभावानामेव पररूपेणासत्वा त्तएवानंता अभावा इति स्वपरसत्ताभावाभावोभयाधीनत्वाद्वस्तुतत्वस्य तथाहि जीवो जीवात्मनाभावो ऽजीवात्मनाचाभावो ऽन्यथा ऽजीवत्वप्रसङ्गादिति अन्येतु धर्म्मापिचया अनंताभावाः अनंताऽभावाः प्रतिवस्त्वस्तित्वनास्तित्वाभ्या मतिबद्दा इति व्याचचन्ते तथा ऽनन्ताहेतवः तत्र हि

॥ मूल ॥

॥ २०७ ॥ णकयाइ ण नविस्संति नुविं नवंतिय नविस्संतिय धुवा णितिया सासया अक्कया अव्वया अवठि या णिच्चा एवामेव दुवालसंगे गणिपिडगे णकयाइ ण आसि णकयाइणत्थी णकयाइणनविस्सइ नुविं च नवत्ति नविस्सइय धुवे जावअवठिए णिच्चे एत्थणं दुवालसंगे गणिपिडगे अणंतानावा अणंताअना वा अणंताहेऊ अणंताअहेऊ अणंताकारणा अणंताअकारणा अणंताजीवा अणंताअजीवा अणंतानव

॥ भाषा ॥

हुतो एम नही । वर्तमानकाले किवारे नथी एमनही । भविष्यकाले किवारे नहोय एमनही । हुतो छे होस्ये एतले त्रिकालभाव । ध्रुवादिक पद सघला क हिवा जिहां लगे अवस्थित तथा नित्य पद आवे तिहांलगे कहिवो । एणि द्वादशांग गणिपिटकने विषे अनन्ताभाव जीव पुद्गलादिक भावपदार्थ अनंता छे । अनन्ता अभाव पोतानी अपेक्षाये आपणपो परने विषे नही एह अभाव तेही अनन्ता । हेतु ते जाणवा रूप वस्तु धर्मविशिष्ट अर्थने पामें ते हेतु व स्तु पणि अनंतछे । तद्विशिष्ट अर्थपणि अनंतछे । हेतुनालक्षणथी विपरीत अहेतु तेही अनंत छे । मृत्पिंडादिक जिम घटना कारण तेही अनंत छे । जिम मृत्पिंडादिक घटना कारण तेपटना अकारण छे तेही अनंतछे । जीव अनंतछे । अजीव स्थाणुकादिक पुद्गल तेही अनंतछे । भव्य जीव अनंतछे । अभव्य

॥ टीका ॥

नीति गमयति जिज्ञासितधर्मविशिष्टानर्थानिति हेतुः सोचानन्ता वस्तुनो नन्तधर्मात्मकत्वात् तत्प्रतिबद्धधर्मविशिष्टवस्तुगमकत्वाच्च हेतोः सूत्रस्य वानन्यगमपर्या
यात्मकत्वात् यथोक्तहेतुप्रतिपक्षतो ऽनन्ता अहेतवस्तथा अनन्तानि कारणानि मृत्पिण्डतन्त्वादीनि घटपटादिनिवर्त्तकानि तथा अनन्तान्यकारणानि सर्वकार
णानामेव कार्यान्तराकारणत्वा न हि मृत्पिण्डः पटं निवर्त्तयतीति तथा अनन्ता जीवाः प्राणिन एवमजीवा द्व्यणुकादयः भवसिद्धिका भव्याः सिद्धा निष्ठिता
र्था इतरे संसारिण आघविज्जंती त्यादि पूर्ववदिति द्वादशाङ्गस्य स्वरूपमनन्तरमभिहित मथ तदभिधेयस्य राशिद्वयान्तर्भावतः स्वरूपमभिधित्सुराह दुवेरा
सीत्यादि इहच प्रज्ञापनायाः प्रथमपद मप्रज्ञापनाख्यं सर्व न्तदत्र मध्येतव्यं किमवसानमित्याह जावसेकिंतमित्यादि केवल मस्य प्रज्ञापना सूत्रस्य चाय
म्विशेषः इहदुवेरासीपन्नत्ता इत्यभिलाप स्तत्रतु दुविहापन्नवणापन्नत्ता जीवपन्नवणा अजीवपन्नवणायत्ति अनिर्दिष्टस्यच सूत्रतः सर्वस्य प्रज्ञापनापदस्य ले

॥ मूल ॥

सिद्धिया अणंताअभवसिद्धिया अणंतासिद्धा अणंताअसिद्धा आघविज्जंति पन्नविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति एवंदुवालसंगंगणिपिडगं इति दुवेरासी पन्नत्ता तंजहा जीवरासी अजीवरासीय अजीवरासी दुविहा पन्नत्ता तंजहा रूवीअजीवरासी अरूवीअजीवरासीय सेकिंतंअरूवी

॥ भाषा ॥

जीव अनन्त छे। सिद्ध अनंतछे। एहसर्वभाव पूर्वने विषे कहिये। जणावीये देखाडिये विशेषपणे देखाडीये। उपदेश करिये। द्वादशांग स्वरूप कहीने
हिवे तेहोजमां वेराशी कहीछे तेकहेछे। जीव राशि अजीवराशि। अजीवराशि बेप्रकारे छे तेकहेछे। रूपी अजीव राशि। अरूपी अजीवराशि। स्यूंते
अरूपी अजीवराशि अरूपी अजीवराशी दशप्रकारे तेकहे छे। धर्मास्तिकाय स्कंध १ देश २ प्रदेश ३। अधर्मास्तिकाय स्कंध १ देश २ प्रदेश ३ आकाशा

॥ टीका ॥

ख्वितुमशक्यत्वा दर्शतस्तल्लेश उपदर्श्यंते तत्राजीवराशि र्द्विविधों रूप्यरूपिभेदा त्तत्रारूप्यऽजीवराशि र्दशधा धर्म्मास्तिकाय स्तद्देश स्तत्प्रदेशश्चे त्येवधर्म्मास्तिका
याकाशास्तिकायावपि वाच्यावेव मव दशमोऽद्धा समय इति रूप्यजीवराशि श्चतुर्द्धा स्कंधा देशा: प्रदेशा: परमाणवश्चेति तेच वर्णगन्धरसस्पर्शसंस्थानभेदत:
पञ्चविधा: संयोगतो नेकविधा इति जीवराशि र्द्विविध: संसारसमापन्नो ससारसमापन्नश्च तत्रा ऽसंसारसमापन्ना जीवा द्विविधा अनन्तरपरम्परसिद्धभेदा
त् तत्रा नन्तरसिद्धा: पञ्चदशप्रकारा: परम्परसिद्धा स्त्वनंतप्रकाराइति संसारसमापन्नास्तु पञ्चधै केन्द्रियादिभेदेन तत्रै केन्द्रिया: पञ्चविधा: पृथिव्यादिभेदेन
पुन: प्रत्येकं द्विविध: सूक्ष्मबादरभेदेन पुन: पर्याप्तापर्याप्तभेदेन द्विधा एवं द्वित्रिचतुरिन्द्रियाअपि पञ्चेन्द्रिया श्चतुर्द्धा नारकादिभेदा त्तत्रनारका: सप्तवि
धा: रत्नप्रभादिपृथ्वीभेदात् पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च स्त्रिधा जलस्थलखचरभेदात् तत्र जलचरा: पञ्चविधा मत्स्यकच्छपग्राहमकरसुंसुमारभेदात् पुन र्मत्स्या अनेक
धा श्लक्ष्णमत्स्यादिभेदात् कच्छपा द्विधा अस्थिकच्छपमांसकच्छपभेदात् ग्राहा: पञ्चधा दिलिवेष्टकमद्गुपुलकसीमाकारभेदात् मकरामत्स्यविशेषा द्विधा शु
ण्डामकरा करिमकराश्च संसुमारास्त्वेकविधा स्थलचराद्विधा चतुष्पदपरिसर्प्पभेदात् चतुष्पदाश्चतुर्द्धा एकखुरद्विखुरगण्डीपदसनखपदभेदात् क्रमेणचैते अश्व
गोहस्तिसिंहादय: परिसर्प्पाद्विधा उर:परिसर्प्पभुजपरिसर्प्पभेदात् उर:परिसर्प्पाश्चतुर्द्धा अह्यऽजगरा शालिकमहोरगभेदात् तत्राहयोद्विधा दर्वीकरामुकुलि

॥ मूल ॥

अजीवरासी अरूवीअजीवरासी दसविहा पन्नत्ता धम्मत्थिकाए जावअद्धासमए रूवीअजीवरासीअणे

॥ भाषा ॥

स्तिकायस्कंध १ देश २ प्रदेश ३ एवं८ दशमो अद्धा समय काल एवं १०। एमजीवराशि २ प्रकार त्रस १ थादर २। तेहो पणि सूक्ष्म बादर एम पर्याप्ता अपर्याप्ता एणे
विधियें बेइंद्रियं तेइंद्रिय चउरिंद्रय। पर्याप्ता अपर्याप्ता पंचेंद्रिय नरकतिर्यंच मनुष्य देवता भवनपति व्यंतर ज्योतिषी बैमानिक पर्याप्ता अपर्याप्ता॰ एम ति

॥ टीका ॥

श्वैति खचराश्चतुर्धा चर्म्मपक्षिणो लोमपक्षिणः समुद्गपक्षिणो विततपक्षिणश्च तत्राद्यौ द्वौ वल्गुलीहंसादिभेदा वितरौ द्वीपान्तरेष्वेव स्तः सर्वेच पञ्चेन्द्रियति
नश्चेति खचराश्चतुर्धा चर्म्मपक्षिणो लोमपक्षिणः समुद्गपक्षिणो विततपक्षिणश्च तत्राद्यौ द्वौ वल्गुलीहंसादिभेदा वितरौ द्वीपान्तरेष्वेव स्तः सर्वेच पञ्चेन्द्रियति
यश्चो मनुष्याश्च द्विधा संमूर्च्छिमा गर्भव्युत्क्रान्तिकाश्च तत्र संमूर्छिमाः नपुंसकाएव इतरेतु त्रिलिङ्गाइति गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्या स्त्रिधा कर्म्मभूमिजा अकर्म्म
भूमिजा अन्तरद्वीपजाश्चेति कर्म्मभूमिजा द्विविधा आर्या म्लेच्छाश्च आर्याद्वेधा ऋद्धिप्राप्ता इतरेच तत्र प्रथमा अर्हदादयः द्वितीया नवविधा क्षेत्रजातिकुलक
र्म्मशिल्पभाषाज्ञानदर्शनचारित्रभेदात् देवाश्चतुर्विधा भवनवास्यादिभेदा इवनपतयोदशधा असुरनागादयः व्यन्तरा अष्टविधा पिशाचादयः ज्योतिष्काः प
ञ्चधा चन्द्रादयः वैमानिका द्विधा कल्पोपगाः कल्पातीताश्च कल्पोपगाद्वादशधा सौधर्म्मादिभेदात् कल्पातीता द्वेधा ग्रैवेयकाअनुत्तरोपपातिकाश्च ग्रैवेयका
नवधा अनुत्तरोपपातिकाः पंचधेति एतत्समस्तं सूत्रकृतो क्तं जावसेकिंतं अणुत्तरेत्यादि पूर्वोक्तमेवजीवराशिं दण्डकक्रमेण द्विधादर्शयन्नाह दुविहेत्यादि सु

॥ मूल ॥

गविहा ॥ जावसेकिंतंअणुत्तरोववाइआ अणुत्तरोववाइआ पंचविहा पन्नत्ता तंजहा विजय वेजयंत ज
यंत अपराजित सव्वट्ठसिद्धिआ सेत्तंअणुत्तरोववाइआ सेत्तंपंचेंदियसंसारसमावन्नजीवरासी ॥ दुविहाणेर
इया पन्नत्ता तंजहा पज्जत्ताय अपज्जत्ताय एवंदण्डओभाणियव्वो जाववेमाणियत्ति इमीसेणंरयणप्पभाए पुढ

॥ भाषा ॥

हां लगी अनुत्तर विमानआवे। त्यांते अनुत्तरोपपातिका। तेपांच प्रकारे कह्या तेकहेछे। पूर्व दिशि विजय विमान। दक्षिणे वैजयंत। पश्चिमे जयंत। उ
त्तरे अपराजित। तिहुं विचे सर्वार्थ सिद्ध। एह पांच विमानना देवता पर्याप्ता अपर्याप्ता। तेह अनुत्तरोपपातिक देवता। ते पंचेंद्रिय संसार प्राप्त जीव
राशि एक भेद बीजो ते असंसार प्राप्त जीवराशि सिद्धनाजीव। बे प्रकारे नारकी कह्यो ते कहे छे। पर्याप्ता नारकीमांहि आहार १ शरीर २ इंद्रिय ३

गमं नवरं दंडओत्ति नेरइया १ असुराई १० १० पुढवाइ ५ बेइंदियादओ ३ मणुया १ वंतर १ जोइसवेमाणियाय १ अहदंडओएवं ॥ अथानंतरप्रज्ञप्ता नां नारकादीना म्पर्याप्तापर्याप्तभेदानां स्थाननिरूपणायाह इमीसेणमित्यादि अवगाहना सूत्रादर्वाकसर्वं कंठ्यं नवरं तेणंनिरया इत्याद्यत्रच जीवाभिग ॥ टीका ॥

वीए केवइयंखेत्तंउगाहेत्ता केवइयाणिरयावासा पन्नत्ता गोयमा इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्त रजोयणसयसहस्सवाहल्लाए उवरि एगंजोयणसहस्संउगाहेत्ता हेठाचेगंजोयणसहस्संवज्जेत्ता मज्झे अठसत्त रिजोयणसयसहस्से एत्थणं रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयाणंतीसं णिरयावाससयसहस्सा भवंतीतिमक्खाया ॥ मूल ॥

आणपाण ४ भाषा ५ मन ६ एह छ पर्याप्ती पूरीकरी ते पर्याप्ता । छ मांहि ५ पर्याप्ति ४ पर्याप्ति करीने मरे ते अपर्याप्ता १ एम २४ दंडकना जीव पर्याप्ता अपर्याप्ता भणिवा जिहांलगे वैमानिकनो २४ मो दंडक आवे तेहदंडकनीगाथा नेरइया १ असुराइ १० पुढवाइ ५ बेइंदिया ४ मणुया १ वंतर १ जोइस वेमाणियाय १ अहदंडओ एवं एह ठाणांगे बीजे ठाणे जिम जीवनां भेद बेबे कह्याछे पणि इहां सर्व कहिवो । हिवे २४ दंडक मांहि पहिलो नारकीनोछे तेह नारकीने रहिवाना ठाम भगवंत आगलि गौतम स्वामी पूछेछे एणीयें हेभदंत हेपूज्य रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलो क्षेत्र ओगाहीने एतले अवगाहीने वली केतला नरकावासाकह्या । हे गौतम एणी ये रत्नप्रभा पहिलीपृथिवीने विषें ८० हजार योजन उत्तरे आगलीछे जेहने एहवी १ लाख योजन वाहुल्य पणे जाडपणे पृथिवी पिंडछे तेमांहि उपरि एक सहस्र योजन अवगाहीने मूकीने हेठें एक हजार योजन वर्जीने पछे विचे १ लाख अठुत्तर हजार यो जन पृथिवी पिंड राखीये । इहां रत्नप्रभा पृथिवीयें तेरेपाथडाछे तेमांहि नारकीना ३० लाख नरकावासा कह्याछे । तेनरकावासा मांहि वाटला बाहिर ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

मचूर्ण्यनुसारेण लिख्यते किल द्विविधा नरका भवन्ति आवलिकाप्रविष्टाः आवलिकाबाह्याश्च तत्रावलिकाप्रविष्टा अष्टासु दिक्षु भवन्ति तेच वृत्तत्र्यस्रचतुर स्रक्रमेण प्रत्यवगन्तव्याः एतेषांच मध्ये इन्द्रकाः सीमन्तकादयो भवन्ति आवलिकाबाह्यास्तु पुष्पावकीर्णा दिग्विदिशामन्तरालेषु भवन्ति नानासंस्थानसंस्थि ताइति निरयसंस्थानव्यवस्था तत्रच बाहुल्यमङ्गीकृत्येद मभिधीयते अंतोवट्टेत्यादि उक्तंच सूत्रकृद्वृत्तिकृता नरकाः सीमन्तकादिकाः बाहुल्यमङ्गीकृत्यांतर्मध्ये वृत्ता बहिरपि चतुरस्रा अधश्च क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता एतच्च संस्थानं पुष्पावकीर्णकानाश्रित्योक्तं तेषामेव प्रचुरत्वात् आवलिकाप्रविष्टा स्तु वृत्तत्र्यस्रचतुरस्रसं स्थानाभवन्तीति तत्रांतर्वृत्ता मध्ये शुषिरमाश्रित्य बहिश्चचतुरस्राः कुड्यपरिधिमाश्रित्य यावत्करणादिदं दृश्यं यदुत अधः क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता भूतलमाश्रित्य क्षुरप्राकारा स्तद्भूतलस्य संचारिमत्वपादच्छेदकत्वात् अन्येत्वाहु स्तेषामधस्तनांशः क्षुरप्रवदग्रे ऽग्रे प्रतलोविस्तीर्णश्चेति क्षुरप्रसंस्थानता तथा निच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्ताजोइसप्पहामेयवसापूयरुहिरमंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुइवीसापरमदुब्भिगंधाकाऊअगणिवण्णाभाकक्खडफासादुरभियास इति तत्र नित्यं सर्वदा अन्धकारं अन्धताकारक स्वहलवलाहकपटलाच्छादितगगनमंडलामावास्यार्द्धरात्रांधकारव त्तमस्तमिस्रं येषु ते नित्यान्धकारतमसः

॥ मूल ॥

तेणंणिरयावासा अंतोवट्टा बाहिंचउरंसा जावअसुभाणिरया असुभाउणिरएसुवेयणाउ एवंसत्तविभाणिय

॥ भाषा ॥

चउखूणा नरकावासा बेप्रकारना छे। एक आवलिका प्रविष्ट बीजा आवलिकाबाह्य तेमांहि आवलिका प्रविष्ट ते आठ दिशिने विषे छे ते वृत्त त्र्यस्र चतुर स्र क्रमे जाणिवा। एहमांहि इन्द्रक ते वाटला सीमंतादिक अने आवलिकाबाह्य ते पुष्पावकीर्ण दिशि विदिशिने अंतराले नाना संस्थान संस्थित छे। जिहांलगे महा अशुभछे नारको वेदना भोगवेछे। एमज साते नरक पृथिवी भणवी कहिवी जे बाहुल्य पणुं नरकावासा परिमाण पृथिवीयें जोइये तेगाथा

॥ टीका ॥

अथवा नित्येनान्धकारेण सार्वकालिकेनेत्यर्थः तमसस्तमिश्रा नित्यान्धकारतमसः जात्यन्धमेघान्धकाराऽमावास्यानिशीथतुल्याइत्यर्थः कथमित्यतआह व्यपगता अविद्यमाना ग्रहचन्द्रसूरनक्षत्ररूपाणां ज्योतिषां ज्योतिश्चक्रलक्षण विमानविशेषाणां ज्योतिषो वा दीपाद्यग्नेः प्रभा प्रकाशो येषु ते तथा पदृत्ति पथशब्दो वायं व्याख्येयः तथा मेदो वसा पूयरुधिरमांसानि शरीरावयवा स्तेषां यच्चिक्खिल्लं कर्दम स्तेन लिप्त मुपदिग्ध मनुलोपनेन सकृल्लिप्तस्य पुनःपुनर्लेपनेन तल भूमिका येषा न्ते मेदोवसापूयरुधिरमांसचिक्खिल्ललिप्तानुलेपनतला यद्यपिच तत्रमेदः प्रभृतीन्यौदारिकपंचेंद्रियशरीरावयवरूपाणि नसन्ति वैक्रियशरीरत्वान्नारकाणां तथापि तदाकारा स्तदवयवा स्तत्रप्रोच्यन्त इति अशुचयो भिश्राः आमगन्धयः पूतिगंधयइत्यर्थः अतएव परमदुरभिगंधाकाऊअगणिवस्माभत्ति कृष्णाग्निर्लोहादीनां ध्यायमानानां तद्वर्णवदाभा येषान्ते कृष्णाग्निवर्णाभाः तथा कर्कशः स्पर्शो येषांते कर्कशस्पर्शा अतएव दुःखेन कृच्छ्रेणाधिसोढुं शक्यते वेदना येषु ते दुरधिसह्याः अतएवाशुभानरकाश्च शुभानरकेषु वेदना इति एवंसत्तविभाणियव्वत्ति प्रथमा ममुच्चता समइत्युक्तं जंजासुजुज्जइत्ति यत्र यस्या म्पृथिव्यां वाहल्यस्य नरकाणांच परिमाणं युज्यते स्थानान्तरोक्तानुसारेण तत्र तस्यां वाच्यं तच्चेदं असीतंगाहा तीसायगाहा अशीतिसहस्राधिकयोजनलक्षं रत्नप्र

॥ मूल ॥

भाए जंजासुजुज्जइ असीयंबत्तीसं अठावीसंतहेयवीसंच अठारससोलसगं अठुत्तरमेववाहल्लं ॥१॥ तीसा

॥ भाषा ॥

मांहि कहेछे। पहिलोयें १ लाख ८० हजार योजन पृथिवी पिंड। बीजोये १ लाख ३२ हजार योजन पृथिवीपिंड। त्रीजिवे १ लाख २८ हजार योजन पृथिवीपिंड। चौथीये १ लाख २० हजार योजन पृथिवीपिंड। पांचमोयें १ लाख १८ हजार योजन पृथिवीपिंड। छठोये १ लाख १६ हजार योजन पृथिवीपिंड। सांतमोये १ लाख ८ हजार योजन पृथिवीपिंड। पहिलोये ३० लाख नरकावासा । वीजोये २५ लाख त्रीजोये १५ लाख। चौथोये १०

॥ टीका ॥ भायाम्वाहल्यमेवं शेषासुभावनीयं तथा त्रिंशल्लचाणिप्रथमायां नरकावासाना मित्येवं शेषास्वपिनेयमिति आवासपरिमाणं चासुरादीना मपि दशानां सौ धर्म्मादीनां च कल्पेतराणां सूत्रे वक्ष्यतीति तन्निवासपरिमाणसंग्रहः चउसठ्ठीइत्यादि गाथाः पंच एवंचेहसूत्राभिलापोद्दृश्यः सक्करप्पभाएणंपुढवीएकेवइयंभोगा

॥ मूल ॥ यपणवीसा पन्नरसदसेवसयसहस्साइं तिसगंपंचूणं पंचेवअणुत्तरानरगा ॥ २ ॥ चउसठीअसुराणं चउ रासीइंचहोइनागाणं वावत्तरिसुवन्नाणं वाउकुमाराणछन्नउइ ॥ ३ ॥ दीवदिसाउदहीणं विज्जुकुमारिंद थणियमग्गीणं छण्हंपिजुवलयाणं वावत्तरिमोयसयसहस्सा ॥ ४ ॥ वत्तीसाठावीसा वारसअठ्ठचउरोसयस

॥ भाषा ॥ लाख। पांचमीये ३ लाख। छठ्ठीयें ५ ऊणाएक लाख। सातमीये ५ नरकावासा जाणिवा ॥ २ ॥ चमरेंद्रना भवन ३४ लाख वलींद्रना ३० लाख विहुंमि ली ६४ लाख असुरकुमारना भवन। तथा धरणेंद्रना ४४ लाख भूतानेंद्रना ४० लाख विहुंमिली ८४ लाख भवन नागकुमारनां। तथा वेणुदेवना ३८ लाख वेणुदालीनां ३४ लाख विहुंमिली ७२ लाख भवन सुपर्ण कुमारनां। तथा वेलंबना भवन ५० लाख प्रभंजनना ४६ लाख विहुंमिली ८६ लाख वायुकुमार ना भवन। तथा पूर्णना ४० लाख विशिष्ठना ३६ लाख विहुंमिली द्वीपकुमारना ७६ लाख। एक युगल। अमितगति नां ४० लाख अमित वाहनना ३६ विहुंमिली ७६ लाख। दिसाकुमारना। बीजोयुगल। तथा जलकांतना ४० लाख जलप्रभना ३६ लाख उदधिकुमारना। त्रीजुं युगल। हरि कांतना ४० लाख हरिसहना ३६ लाख विहुंमिली ७६ लाख विद्युत कुमारना। चौथो युगल। घोषना ४० लाख महाघोषना ३६ लाख विहुंना मिली स्तनितकुमारना ७६ लाख। पांचमो युगल। अग्निशिखनां ४० लाख अग्निमाणवनां ३६ लाख विहुंमिली अग्निकुमारनां ७६ लाख भवन। एह छठ्ठो युग

॥ टीका ॥

हित्ता केवइयानिरया पन्नत्ता गोयमा सक्करप्पभाएणं पुढवीए बत्तीसुत्तरजोयणसयसहस्स वाहल्लाए उवरिएगंजोयणसहस्सं वज्जेत्तामज्झेतीसुत्तरे जोयणस यसहस्सेएत्थणं सक्करप्पभाए पुढवीएनेरइयाणंपणवीसंनिरयावाससयसहस्साभवंतीति मक्खाया तेणंनिरएइत्यादि एवंगाथानुसारेण न्येपि पच्चालापकावाच्या इत्येतदेवाह दोच्चाएत्यादि वेयणाओ इत्येतदन्तंसुगमं नवरं गाहाहिंतिगाथाभिः करणभूताभिर्गाथानुसारेणे त्यर्थाः भणितव्या वाच्या नरकावासाइति प्र

॥ मूल ॥

हस्सा पन्नाचत्तालीसा छच्चसहस्सासहस्सारे ॥ ५ ॥ आणयपाणयकप्पे चत्तारिसयारणच्चुएतिन्नि । सत्तवि माणसयाइं चउसुविएएसुकप्पेसु ॥ ६ ॥ एक्कारसुत्तरंहे ठिमेसुसत्तुत्तरंचमज्झिमए सयमेगंउवरिमए पंचेवअणु त्तरविमाणा ॥ ७ ॥ दोच्चाएणं पुढवीए तच्चाएणं पुढवीए चउत्थीए पुढवीए पंचमीए पुढवीए छठीए पुढ

॥ भाषा ॥

ल एणी विधियें एह पूर्वोक्त छ युगलना छोत्तर लाख भवन कह्या । हिवे १२ देवलोक ९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तर विमान मांहि सर्वविमान नी संख्या कहैछे । सौधर्म देवलोके ३२ लाख विमान । ईशानें २८ लाख । सनत्कुमारें १२ लाख । माहेंद्रे ८लाख । ब्रह्मदेवलोके ४ लाख । एतलालगे लाख जाणिवा । लांत के ५० हजार विमान । शुक्रे ४० हजार । सहस्रारे ६ हजार विमान । सहस्रारलगे सहस्र कहिये । आनत प्राणत नोमे दशमे देवलोके ४ से बिमान । आरण अच्युतमिली ३०० । नोमा दशमा इग्यारमा बारमा एह चिहुंदेवलोकमिली ७०० बिमान । एकसोइग्यारहविमान नवग्रैवेयकमांहि हेठिलात्रिकने विषे । मध्यमत्रिकमांहि १०७ विमान । उपरिलात्रिकग्रैवेयकें एकसो । अनुत्तरविमाने पांच विमाज । सर्वमिली ८४ लाख ९७ हजार उपरि २३ । बीजी शर्करप्रभा पृथिवीये त्रीजी बालुकप्रभा पृथिवीये चौथी पंकप्रभा पृथिवीये पांचमी धूमप्रभा पृथिवीये छट्ठी तमप्रभा पृथिवीयें सातमी तमतमा पृथिवीयें

क्रम स्या वट्टेयतंसायत्ति मध्यमोहत्त: शेषास्त्यस्रा इति अथा सुराद्यावासविषयमभिलापं दर्शयति केवइत्यादिं सुगमं नवरं तानि भवनानि वहि र्वृत्तानि ॥ टीका ॥

वीए सत्तमीएं पुढवीए गाहाहिंजाणियव्वा सत्तमाए पुढवीए पुच्छा गोयमा सत्तमाए पुढवीए अठुत्तरजो यणसयसहस्साइं वाहल्लाएउवरि अद्धतेवन्नं जोयणसहस्साइं उगाहेत्ता हेठाविअद्धतेवन्नं जोयणसहस्सा इं वज्जित्ता मज्झेतिसुजोयणसहस्सेसु एत्थणं सत्तमाए पुढवीए नेरइयाणं पंचअणुत्तरा महइमहालया महा निरया पन्नत्ता तंजहा काले महाकाले रोरुए महारोरुए अप्पइठाणेनामं पंचमे तेणंनिरया वट्टाय तंसा ॥ मूल ॥

एह सात नरकपृथिवीना नरकावासानी संख्या पिछाडी गाथामांहि कहीछे तिम कहिवी। सातमी नरकपृथिवीनो स्वरूप पूछेछे भगवंतआगलि। भगवंत कहेछे। हेगौतम सातमो पृथिवीने विषे एकलाख अठुत्तर हजार योजन जाडपणे तेमांहि उपरि अर्द्धत्रेपनहजार योजन एतले साढा बावन सहस्र योजन अवगाहीने ऊपर मूकीने वली हेठे पणि साढात्रेपन हजार योजन वर्जीने मध्ये विचाले त्रिण हजार योजनने विषे एक पाथडो इहां सातमी तमतमा पृथिवीये नारकीना पांच अनुत्तर कहतां ते उत्तरे आगले एहवा वीजा नरकावासा नथी तेमाटे अनुत्तर घणाज घणा मोटा महा नरकावासा कह्या तेकहे छे। पूर्वदिशे काल १ दक्षिणे महाकाल २ पश्चिमे रुचक ३ उत्तरे महारुचक ४ पांचमो विचे अप्रतिष्ठान ५ तेह नरकावासा वाटला त्र्यंस त्रिखूणिया एतले पांच नरकावासामांहो अपइठाण ते वाटलो अने चिहुंदिशिना कालादिकना ४ त्रिखूणिया वलीकेहवाछे अहेक्ति हेठे खुरप्र एतले छुरपलाने संस्थाने संस्थितछे। यावत् अछे चन्द्र सूर्य रहित कर्दमभूत अशुभ घणो भूंडो नरक छे । तथा अशुभ घणो भूंडो छे नरकने विषे वेदना। वली ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

वृत्तप्राकारावृतनगरवत् अन्तः समचतुरस्राणि तदवकाशादेतस्य चतुरस्रत्वात् अधः पुष्करकर्णिकासंस्थानसंस्थितानि पुष्करकर्णिकापद्ममध्यभागः साचोन्नत समचित्रबिन्दुकिनीभवतीति तथा उत्कीर्णान्तरविपुलगम्भीर खातपरिखानि उत्कीर्णं भुवनमुत्कीर्य पालीरूपं कृतमन्तरमंतरालं ययोस्ते उत्कीर्णान्तरे ते वि

॥ मूल ॥

य अहेखुरुप्पसंठाणसंठिया जावअसुरानरगा । असुराणं वेयणाणं केवइयाणंनंते असुरकुमारावासा प० गोयमा इमीसेणं रयणप्पनाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स बाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहेत्ता अठहत्तरिजोयणसहस्से एत्थणं रयणप्पनाए पुढवीए चउसठिं असुरकुमारावास सयसहस्सा प० तेणंनवणाबाहिंवट्टा अंतो चउरंसा अहो पोक्खरकसिआ संठाणसंठिया उक्किसंतर विउलगंनीरखाय

॥ भाषा ॥

गौतम पूछे छे । हेभगवंत केतला असुर कुमार भवनपतिना आवास कह्या । अनेकिहांछे । भगवंत कहेछे । हेगौतम । एणीयें रत्नप्रभा पहिली पृथिवी यें ८० हजार उत्तर आगलि १ लाख योजन जाडपणनो छेहडो तेमांहि उपरि १ हजार लगे अवगाहीने वली हेठेंपिण १ हजार योजन लगे वर्जी ने मध्येविचाले ७८ हजार योजन अधिक १ लाख योजनने विषे इहां रत्नप्रभा पृथिवीने विषे ६४ असुरकुमारना शत सहस्र एतले ६४ लाख भवना वास कह्या । ते भवन पतिना भवन घर बाहिर वाटला अंतो घरमांहि चोरस । चोखूणिया हेठें पुष्करकर्णिका कमलमांहिली कर्णिका डोडो तेहने संस्थाने संस्थितछे । उत्कीर्ण पालीरूप कीधो छे अंतराल जेहनो ते उत्कीर्णांतर एहवो विपुल विस्तीर्ण गंभीर ऊंडो खात परिखा खाईछे जेह भवन ने उपरि विशाल हेठें संकुचित ते विहूंने अंतलगे विचे पाछिले एहभाव । अट्टालक गढ उपरि आश्रयविशेष चरिका नगर अने गढने विचाले ८ ।

॥ टीका ॥

पुलगम्भीरे खातपरिखे येषां तानि तत्र खातमधउपरिच सम मरिखाउपरि विशाला अध: संकुचिता तयोरन्तरेषु पालीअस्तीतिभाव: तथा अट्टालका: प्रा कारस्थो पर्याश्रयविशेषा: चरिकानगरप्राकारयोरंतर मष्टहस्तोमार्ग: पाठान्तरेण चतुरयन्ति चतुरका: सभाविशेषा: ग्रामप्रसिद्धा: दारगोउरत्ति गोपुरद्वा राणि प्रतोल्यो नगरस्येव कपाटानि प्रतीतानि तोरणान्यपि तथैव प्रतिद्वाराणि अवांतरद्वाराणि तत एतेषां द्वंद्व एतानि देशलक्षणेषु भागेषु येषांतानि तथा इह देशभागस्थानेकार्थ स्तेतोन्योन्यमनयो विशेषविशेषणभावो दृश्यतइति तथा यंत्राणि पाषाणक्षेपणयंत्राणि मुशलानि प्रतीतानि भुसुंडय: प्रहरणवि शेषा: शतघ्न्य: शतानामुपघातकारिण्यो महाकाया: काष्टशैलस्तंभयष्टय: ताभि: परियारियत्ति परिवारितानि परिकरितानीत्यर्थ: तथा अयोधानि योध यितुं संग्रामयितुं दुर्गतत्वाच्छक्यंते परबले र्यानि तान्ययोधानि अविद्यमानावायोधा: परबलसुभटालि यानि प्रति तान्ययोधानि तथा अडयालकोठगरइय

॥ मूल ॥

फलिहा अट्टालयचरियदारगोउरकवाडतोरणपडिदुवारदेसभागा जंतमुसलमुसंढिसयग्घिपरिवारिया अउ ज्झा अडयालकोठरइया अडयालकयवणमाला लाउल्लोइयमहिया गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिन्नपंचंगु

॥ भाषा ॥

हाथनो मार्ग गोपुरद्वार तेप्रतोली नगरी तेहना कमाड तेह आगली तोरणछे तिमज प्रसिद्ध द्वार मांहिला द्वार एतला देशभागने विषे यथायोग्य स्थान कहेछे जेहने तथा यंत्रतेपाषाणनाखवाना तथा मुशल प्रसिद्ध भुसडि तेप्रहरणविशेष तथा शतघ्नी ते सोमाणसनेमारे एहवीमोटी काष्टनी तथा पा षाणस्तंभरूप लाठी तेणे करी परिवारित सहितछे जेहने एहवा । अयोध्या पर कटके जूझ्या नजाय न भागे एहवा ४८ कोठा बुरज तेणे करी रचित छे । तथा अडतालीस कोधाछे वनमाल तथा अडयालकहिये शोभायमानछे वनमाला पल्लवनोमाला जेहनेविषे जेहवरनोभूमि छाणेकरी लीपो ऊपरिलो

॥ टीका ॥

ति अष्टचत्वारिंशद्भेदभिन्नविचित्रच्छन्दो गोपुररचितानि अन्येभणन्ति अडयालशब्दः किलप्रशंसावाचकः तथा अडयालकयवस्त्रमालत्ति अष्टचत्वारिंशद्भेदभि न्नाः प्रशंसार्हाःकृता वनमाला वनस्पतिपल्लवस्रजो येषु तानि तथालाइयंति यद्भूमेश्छगणादिनोपलेपनं उल्लोइयंति कुड्यमालानां सेटिकादिभिः सम्मृष्टीकरणं ततस्ताभ्यामिव महितानि पूजितानि लाउल्लोइयमहितानि तथा गोशीर्षं चन्दनविशेषः सरसञ्च रसोपेतं यद्रक्तचन्दनं चन्दनविशेषः ताभ्यां दर्दराभ्यां घनाभ्यां दत्ताः पञ्चाङ्गुलय स्तला हस्तकाः कुड्येषु येषु अथवा गोशीर्षसरसस्य रक्तचन्दनस्य सत्का दर्दरेण चपेटाभिघातेन दर्दरेषु वा सोपानवीथीषु दत्ताः पञ्चाङ्गुलयस्तला येषु तानि गोशीर्षसरसरक्तचन्दनदर्दरदत्तपंचाङ्गुलितलानि तथा कालागुरुः कृष्णागुरु गन्धद्रव्यविशेषः प्रवरः प्रधानः कुंदुरुक्क चीडा तुरुष्कः सिल्हकं गन्धद्रव्यमेव एतानिच तानि डज्झंतित्ति दह्यमानानि चेतिविग्रहः तेषां योधूमो मघमघेंतत्ति अनुकरणशब्दोयं मघमघायमानो बहलगंधद्रत्यर्थः तेनोद्धुराणि उत्कटानि तानि तथा तानिच तान्यभिरामाणि रमणीयानीतिसमासः तथा सुगन्धयः सुरभयो ये वरगन्धाः प्रधानवासा स्तेषां गन्ध आमोदो येष्वस्ति तानि सुगन्धिवरगन्धिकानि तथा गंधवर्त्ति गन्धद्रव्याणां गंधयुक्तिशास्त्रोपदेशेन निवर्त्तित गुटिका तद्भूतानि तत्कल्पानीति गंधवर्त्तिभूतानि प्रव

॥ मूल ॥

लितला कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कडज्झंतधूवमघमघेंतगधुद्धुयाभिरामा सुगंधवरगंधिया गंधवट्टिभूया

॥ भाषा ॥

भाग खडोयें करी धोल्यो तेणेकरी महित पूजितछे जेह । गोशीर्षचंदनविशेष रक्तचंदन तेणेहुं दर्दर निविडपणे दीधाछे पंचागुलितला हाथा भींतिने विषे हाथा दीधा छे । कृष्णागरु प्रवर प्रधान चीड तुरुक्कसिल्हारस एह पूर्वोक्त डज्झंतं दह्यमान दाझता तेहनो जे धूप मघमघायमान बहुल गंध तेणे करी उत्कृष्ट अने अभिराम रमणीय एहवा जाणिवा। तथा सुगंधत्ति सुगंध सुरभि वर प्रधान गंध तेणेकरी गंधित छे गंधवंत छे तथा गंधनी वाटी तेह समान

॥ टीका ॥

रगंधगुणानीत्यर्थः तथा अच्छानिआकाशस्फटिकवत् सण्हत्ति श्लक्ष्णानि सूक्ष्मस्कन्धदलनिष्पन्नत्वात् श्लक्ष्णदलनिष्पन्नपटवत् लण्हत्ति मसृणानीत्यर्थः घुटितपटव त् घट्ठत्ति घृष्टानीवघृष्टानि खरशाणयापाषाणप्रतिमावत् मट्ठत्ति मृष्टानीवमृष्टानि सुकुमारशाणयापाषाणप्रतिमेव शोधितानिवा प्रमार्जनिकयेव अतएव नीरयत्ति नीरजांसि रजोरहितत्वात् निम्मलत्ति निर्मलानि कठिनमलाभावात् वितिमिराणि निरन्धकारत्वात् विसुद्धत्ति विशुद्धानि निष्कलङ्कत्वा अचन्द्रव त् सकलंकानीत्यर्थः तथा सप्पहत्ति सप्रभाणि सप्रभावाणि अथवा स्वेनात्मना प्रभान्ति शोभन्ते प्रकाशंते चेति स्वप्रभाणि यतः समरीयत्ति समरीचीनि स किरणानि अतएव सउज्जोयति सहद्योतेन वस्त्वन्तरप्रकाशनेन वर्त्तंतइति सोद्योतानि पासाईयत्ति प्रासादीयानि मनःप्रसत्तिकराणि दरिसणिज्जत्ति दर्शनीयानि तानिहि पश्यं चक्षुषा नश्रमङ्गच्छतीतिभावः अभिरूवत्ति अभिरूपाणि कमनीयानि पडिरूवत्ति प्रतिरूपाणि द्रष्टारंप्रति रमणीयानि नैकस्य कस्यचिदेवेत्यर्थः एवमित्यादि यथा सुरकुमारावाससूत्रे तत्परिमाणमभिहित मेवामेवमिति यथायद्भवनादिपरिमाणं यस्य नागकुमारादिनिकायस्य क्रमते

अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया णिम्मला वितिमिरा विसुद्धा सप्पभा समरीया सउज्जोआ पासा ॥ मूल ॥

छे अच्छआकाशनीपरें स्फटिकनीपरें । सण्हा सूक्ष्म पुद्गलें करी नीपना छे । लण्हत्ति सुकुमाल कोमल छे घंट्या वस्त्रनी परें । घट्ठत्ति खरशाणेंकरी पाषा ॥ भाषा ॥ णप्रतिमानीपरें घस्याछे । मट्ठत्ति घणोसुकुमालशाणेंकरी पाषाणप्रतिमानी परें मठाराछे एणे कारणें नीरज रजरहित निर्मल मलरहितछे । वितिमिरा अंधकार रहित छे । निष्कलंकछे । प्रभाकांति तेणे सहितछे । श्रीशोभा तेणेकरी सहितछे । उद्योत प्रकाश सहितछे । मनने प्रसाद करे तेमाटे देखवायो ग्यछे । कमनीयछे देखणहारप्रतें रमणीकछे । एमज जेहनो जे जे मान प्रमाण मनोहरपणो असुरकुमार भुवने विषे कह्योछे । जे जे भाव गाथायें भण्यो ते

॥ टीका ॥

घटते तत्तस्य वाच्यमिति किंविधं तत्परिमाणमतआह जंजंगाहाहिं भणियं यद्यत्गाथाभिः चउसट्ठिअसुराणमित्यादिकाभि रभिहितं किम्परिमाणमेव तथावाच्यंतहेत्याह तहचेववसओत्ति यथाअसुरकुमारभवनानांवर्णकउक्त स्तथा सर्वेषामसौवाच्यइति तथाहि केवइयाणंभंते नागकुमारावासापणत्ता गोय मा इमीसेणंरयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सपमाणाएउप्पिं एगंजोयणसहस्सं ओगाहेत्ताहेट्ठाचेगंजोयणसहस्सं वज्जेत्ता मज्झेअट्ठहत्तरे जोय

॥ मूल ॥

ईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एवंजंजस्सकमातीतं तस्स जं जं गाहाहिं भणियं तहचेववसम्भ केवइयाणं भंते पुढविकाइयावासा प० गोयमा असंखेज्जा पुढविकाइयावासा प० एवंजाव मणुस्सत्ति के वइयाणं भंते वाणमंतरावासा प० गोयमा इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयण सहस्स वाहल्लस्स उवरिएगंजोयणसयं ओगाहेत्ता हेठाचेगंजोयणसयंवज्जेत्ता मज्झे अठसुजोयणसएसु एत्थ

॥ भाषा ॥

तिमज वर्णनकरिवो। नागकुमारादिनो पणि तिमज वर्णनकरिवो। वली गौतम पूछेछे हेपूज्य केतला पृथिवीकायिकावासा कह्या पृथिवी रहिवानाठाम भगवंत कहेछे हेगौतम। असंख्याता पृथिवीकायिकावासा छे। एमज पाणी अग्नि वायु रहिवाना ठाम असंख्याताछे। एमज बेइन्द्रिय तेरिन्द्रिय चौरि न्द्रिय तिर्यंचपंचेन्द्रिय असंख्याता कहिवा मनुष्यना ठाम असंख्याता कहिवा एतले गर्भज मनुष्यसंख्याता कहिवा। अने समूर्च्छिम मनुष्य असंख्याता क हिवा। वली पूछेछे केतला हेपूज्य वानमंतरावासा व्यंतरनारहियानाठाम। भगवंत कहेछे। हेगौतम एणीयें रत्नप्रभापृथिवीये त्रिणकांडछे तेमांहि पहि लो १६ सहस्र योजन कांड तेमांहि पहिलो १ सहस्र योजन रत्नकांडछे तेह रत्न कांडनो योजन सहस्रनो वाहुल्यपणो तेहने विषे उपर एकसोयोजन

॥ टीका ॥

यसहस्से एत्थणं रयणप्पभाए चुलसीइ नागकुमारावाससयसहस्सा पन्नत्ता तेणंभवणाइत्यादीनि केवइयाणंभंते पुढवीत्यादि गतार्थं नवरं मनुष्याणां गर्भव्यु त्क्रान्तिकानां असंख्यातानामभावात् संख्याताएवावासाः संमूर्च्छिमानांत्वसंख्येयत्वेन प्रतिशरीरमावास भावादसंख्याता इति भावनीयमिति केवइयाण

॥ मूल ॥

णं वाणमंतराणं देवाणं तिरियमसंखेज्जा भोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा प० तेणंभोमेज्जानगरा बाहिंवट्टा अंतोचउरंसा एवंजहाभवणवासीणं तहेवणेयव्वा णवरं पडागमालाउला सुरम्मापासाईया दरिसणिज्जा अभि रूवा पडिरूवा । केवइयाणंभंते जोइसियाणं विमाणावासा प० । गोयमा इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवी ए बहुसमरमणिज्जाउ भूमिभागाउ सत्तनउयाइं जोयणसयाइं उड्ढं उप्पइत्ता एत्थणं दसुत्तरजोयणसय बा हल्ले तिरियं जोइसविसए जोइसियाणं देवाणं असंखेज्जा जोइसियविमाणावासा प० तेणं जोइसियविमाणा

॥ भाषा

वर्जी ने पछे वली हेठे पिण एकसो योजन मूकीने मध्ये विचे आठसे योजन जगस्या इहां वाणव्यंतर देवना तिरिछा लोक मांहि असंख्यात भूमि संबंधी नगरना आवासना लाख कह्या । ते भोमेय नगरवासा बाहिर बाटला मांहि चउरंसा चोखूणा । एमज जिम भवनपतिना घर वर्णव्या तिमइहां पणि नवरं एतलोविशेष तेकिसो पताका विजय वेजयंती तेहनी माला तेणेकरी आकुल व्याप्त छे । वली सुरम्य रमणीकछे । देखवायोग्यछे । वली गौतम पूछेछे । केतलाएक हेपूज्य जोतिषीना विमानावासा कह्या । हेगौतम एणीये रत्नप्रभा पहिली पृथिवीनो घणोज सम रमणीक भूमिभाग तेहथकी सातसेनेउयोजन लगे ऊंचो उत्पतीने जइने इहां १० योजनना बाहुल्यपणां मांहि एतला आकाश प्रदेशना ऊंचपणामांहि जोतिषीनो विषयव्याप्योछे

॥ टीका ॥

भंतेजोइसियाणंविमाणावासाइत्यादि अभुग्गयमुसियपहसियत्ति अभ्युद्गता सन्नाता उत्सृता प्रवलतया सर्वासु दिक्षु प्रसृता या प्रभा दीप्ति स्तया सिताः शुक्ला इत्यभ्युद्गतोत्सृतप्रभासिताः तथा विविधा अनेकप्रकारा मणय चन्द्रकान्तादयो रत्नानि कर्केतनादीनि तेषाम्भक्तयो विच्छित्तिविशेषा स्ताभि श्चित्राश्चि

॥ २१२ ॥ चत्रवन्तः आश्चर्यवन्तोवेति विविधमणिरत्नभक्तिचित्राः तथा वातोद्धूता वातकम्पिता विजयो भ्युदयस्तत्सं सूचिता वैजयन्तीत्यभिधाना याः पताका अथवा वि जयाइति वैजयन्तीनाम्पार्श्वकर्णिकाउच्यन्ते तत्प्रधानायावैजयंत्य स्ताश्च तद्वर्जिताः पताकाश्च छत्रातिच्छत्राणिच उपर्युपरिस्थितातपत्राणि तैः कलिता युक्ता वातोद्धूतविजयवैजयन्तीपताकाछत्रातिछत्रकलिता इति तुंगा उच्चैस्त्वगुणयुक्ता अतएव गगनतलमणुलिहंतसिहरंति गगनतल मम्बरमनुलिखदभिलंघयच्छि

॥ मूल ॥

वासा अब्भुग्गयमुसियपहसिया विविहमणिरयणभत्तिचित्ता वाउध्दुयविजयवेजयंतीपडागछत्ताइछत्तकलि

॥ भाषा ॥

सगला हेठे तारा सगला उपरि शनैश्चर भूमिथकी ७०० नेउयोजन तारामंडलछे तेहथी १० योजने सूर्य ते ऊपरि ८० योजने चंद्रमा ते ऊपरि ४ योजन नक्षत्र ते ऊपरि ४ योजन बुध ते ऊपरि ३ योजन शुक्र ते ऊपरि ३ योजन बृहस्पति ते ऊपरि ३ योजन मंगल ते ऊपरि ३ योजन शनैश्चर छे। तारा मंडलथकी शनैश्चर १०० योजन मांहि सर्व जोतिषीछे। ज्योतिषीना देवता असंख्याता ज्योतिषीना विमानावासाकह्या। तेह जोतिषीना विमानावासा केहवाछे। अभ्युद्गत कहतां ऊपना विहुंदिशि प्रसरी पहत्ति एहवी प्रभा दीप्ति तेणेकरी शुक्ल ऊजला जेहनो एहवा। अनेक प्रकारनी मणि चंद्रकांतादि क रत्नते कर्केतनादिक तेहनी भक्ति भांति तेणेकरी चित्रा चित्रवंत छे। वली केहवा आश्चर्यवंत छे॰। वायरें कंपावी विजय वैजयंती पताका ने उपरि छत्र तेणे करीने कलितछे। एतावता व्यापछे। वली केहवाछे। अति ऊंचाछे गगनतल आकाश तेहने उलंघताछे शिखर जेहमा। घरनी भींतिमे विषे जा

॥ टीका ॥

खरं येषान्ते गगनतलाऽनुलिखच्छिखरा: तथा जालान्तरेषु जालकमध्यभागेषु रत्नानियेषान्ते जालान्तररत्ना: इह प्रथमाबहुवचनलोपो द्रष्टव्य: जालकानि च भवनभित्तिषु लोकेप्रतीतान्येव तदन्तरेषुच शोभार्थं रत्नानि सम्भवंत्येवेति तथा पञ्जरोन्मीलिताइव पञ्जरबहि:कृताइव यथा किलकिञ्चिद्वस्तुपञ्जरा द्वंशा दिमयप्रच्छादनविशेषाद्बहि:कृतमत्यंतमविनष्टच्छायत्वा च्छोभते एवन्तेपीतिभाव: तथा मणिकनकानां सम्बन्धिनो स्तूपिकाशिखरं येषां तेमणिकनकस्तूपि काका स्तथा विकसितानियानि शतपत्रपुण्डरीकाणि द्वारादौ प्रतिकृतित्वेन तिलकाश्च भित्त्यादिषु पुण्ड्राणि रत्नमयाश्चये अर्द्धचन्द्राद्वाराग्रादिषु तैश्चित्रायेते विकसितशतपत्रपुण्डरीकतिलकरत्नार्द्धचन्द्रचित्रा स्तथा अन्तर्बहिश्च श्लक्ष्णा मसृणाइत्यर्थ: तथा तपनीयं सुवर्णविशेष स्तन्मय्या वालुकाया: शिकताया: प्रस्त ट: प्रतरोयेषु ततपनोयवालुकाप्रस्तटा: पाठान्तरे तु सण्हशब्दस्य वालुकाविशेषणत्वात् श्लक्ष्णतपनीयवालुकाप्रस्तटा इतिव्याख्येयं तथा सुखस्पर्शा: शुभस्पर्शा

॥ मूल ॥

या तुंगा गगणतलमणुलिहंतसिहरा जालंतररयणपंजरुम्मिलियव्वमणिकणगथूभियागा वियसियसयवत्त पुं डरीयतिलयरयणद्धचंदचित्ता अंतोवाहिंचसण्हा तवणिज्जवालुआपत्थडा सुहफासा सस्सिरीया पासाईया

॥ भाषा ॥

लियां तेहना यांतराने विषे शोभाने अर्थे रत्नकर्केतनादिक छे। पांजराथकी उन्मीलित वाहिर कीधा जेहवा तेजपुंजहुए तेहवा मणिरत्न सुवर्ण तेहनी थूभिका शिखर छे जेहना। वली केहवाछै विकसित जे शतपत्र कमल पुंडरीक छे द्वार देशने विषें। तथा भींतिने विषें तिलक छे। तथा रत्नमय अर्द्धचंद्र द्वारविभागें छे तेणेंकरी चित्रित छे। अंतो घरमांहि तथा बाहिर श्लक्ष्ण सुकुमाल छे। तपनीय सुवर्ण विशेष तेहनी वालुका तेह पाथरीछे जेहने विषे। वली केहवाछे। सुखस्पर्श सुकुमाल फरसछे। शोभायमानछे।.रूप मनुष्य युग्मादिकना जिहां। वली केहवाछे। चित्तने प्रसन्नकरे वली देखिवा योग्यछे।

॥ टीका ॥

वा तथा सश्रीकं सशोभंरूपमाकारोयेषां अथवा सश्रीकाणि शोभावन्ति रूपाणि नरयुग्मादीनि रूपकाणि येषुते सश्रीकरूपाः प्रासादीया दर्शनीयाः अभि रूपाः प्रतिरूपाइतिपूर्ववत् केवइएत्यादि रत्नप्रभायाः पृथिव्या बहुसमरमणिज्जाओभूमिभागाओत्ति बहुसमरमणीयस्य भूमिभागस्य उड्ढं उपरि तथा चन्द्रमः सूर्यग्रहगणनक्षत्रताराकृपाणि णमित्यलंकारे वीइवइत्तत्ति व्यतिव्रज्य व्यतिक्रम्येत्यर्थः ताराकृपाणि चेह तारका एवेति तथा बहूनीत्यादि किमित्याह

॥ २१३ ॥ उड्ढं मुपरि दूरमत्यर्थंव्यतिव्रज्य चतुरशीति विमानलक्षाणि भवंतीति संबंध इति मक्खायत्ति इति एवंप्रकारा अथवा यतो भवंति तत आख्याताः

॥ मूल ॥

दरिसणिज्जा केवइयाणंभंतेवेमाणियावासा प० । गोयमा इमीसेणंरयणप्पभाएपुढवीएबहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिमसूरियगहगणनक्खत्तताराकृवाणं वीइवइत्ता बहूणिजोयणाणि बहूणिजोयणसयाणि बहूणि जोयणसहस्साणि बहूणिजोयण सयसहस्साणि जोयणकोडीओ जोयणकोडाकोडीओ असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडिओ उड्ढं दूरं वीइवइत्ता एत्थणं वेमाणियाणं देवाणं सोहम्मीसाणसणंकुमारमाहिंदबंभलंतग

॥ भाषा ॥

बली गोतम पूछेछे । केतला हेपूज्य वैमानिकावासा वैमानिक देवताना विमल निर्मल विमानरूप आवासा कह्या । हेगोतम एणीये रत्न प्रभा पहिली पृ थिवीनो वली घणोसम रमणीक भूमिभाग थकीऊंचो चंद्रमा सूर्य ग्रहगण नक्षत्र तारारूपने व्यतिक्रमीने घणांयोजन घणांयोजननासेंकडा घणांयोजन नाहजार घणांयोजननालाख घणांयोजननीकोडी घणीयोजननीकोडाकोडी असंख्यातायोजननीकोडाकोडीने ऊपरि दूरं उल्लंघीने इहां वैमानिकदेवतासौ धर्म ईशान २ लगडाकार बराबरिछे ।,तेऊपरि सनत्कुमार माहेंद्र बराबरिछे । तेउपरि ब्रह्म देवलोक । ते ऊपरि लांतक । तेऊपर शुक्र । ते ऊपर सह

॥ टीका ॥

सर्ववेदिनेति तेषंति तानिविमानानि णमिति वाक्यालंकारे अर्चिमालिप्पभत्ति अर्चिमाली आदित्य स्तद्वत्प्रभांति शोभंते यानि तान्यर्चिमालिप्रभाणि तथा भासानां प्रकाशानां राशि भासराशि रादित्य स्तस्य वर्ण स्तद्वदाभा छाया वर्णो येषां तानि भासराशिवर्णाभानि तथा अरयत्ति अरजांसि स्वाभाविकरजोरहितत्वात् नोरयत्ति नीरजांसि आगंतुकरजोविरहात् निम्मलत्ति निर्म्मलानि कक्खडमलाभावात् वितिमिरत्ति वितिमिराणि अहा यांधकाररहितत्वात् विशुद्धानि स्वाभाविकतमोविरहा त्सकलदोषविरामाद्वा सर्वरत्नमयानि नदार्वादिदलमयानीत्यर्थः अच्छान्याकाशस्फटिकवत् स्लक्ष्णानि

॥ मूल ॥

सुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणअच्चुएसु गेवेज्जगमणुत्तरेसुय चउरासीइं विमाणावाससयसहस्सा सत्ताणउइंचसहस्सा तेवीसंचविमाणाभवंतीतिमरकाया। तेणंविमाणा अच्चिमालिप्पभा भासरासिवण्णाभा अरया नीरया णिम्मला वितिमिरा विसुद्धा सव्वरयणामया अच्छासण्हा लण्हा घठा मठा णिप्पंका णिक्कंकडच्छा

॥ भाषा ॥

स्सार । तेऊपर आनत प्राणत लगडाकारेछे । तेऊपर आरण अच्युत । एवं १२ देवलोक थया । ते ऊपर ९ ग्रैवेयक ऊपरां ऊपर ५ अनुत्तर विमान । ए के प्रतरें चिहुंपासे ४ विजयादिक विमान विचे सर्वार्थसिद्ध । एवं १२ देवलोक ९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तर विमान मिलीने सगला ८४ लाख ९७ हजार २३ विमानछे ते भगवंते कह्याछे । तेविमानकेहवाछे । अर्चिमाली सूर्यनी सरीखी प्रभाछे जेहनी । प्रकाश दीप्तिराशि सरीखा वर्णछे जेहना । स्वाभाविक र जना अभावथी रज रहितछे । कठिन मलना अभावथी निर्मलछे । अंधकार रहितछे । स्वाभाविक अंधकार रहितपणाथी विशुद्धछे । वली सर्वरत्न मयी छे । आकाशनी परें अच्छछे । स्फटिकरत्ननी परें स्लक्ष्ण पुद्गलथी नीपनांछे । सुकुमाल कीधाछे । खरशाणें करी पाषाण प्रतिमानी परें घठास्याछे । सकु

॥ टीका ॥

सूक्ष्मस्कंधमयत्वात् घृष्टानीवघृष्टानि खरशाणया पाषाणप्रतिमेव मृष्टानीवमृष्टानि सुकुमारशाणया पाषाणप्रतिमेवेति निःपंकानि कलंकविकलत्वात् कर्दमविशेषरहितत्वा द्वा । निष्कंकटा निःकंचुका निरावरणा निरुपघातेत्यर्थः । छाया दीप्ति येषां तानि निष्कंकटछायानि सप्रभाणि प्रभावंति समरीचीनि सकिरणानीत्यर्थः सोद्योतानि वस्त्वंतरप्रकाशनकारीणीत्यर्थः पासाइएत्यादिप्राग्वत् सोहम्मेणंभंते कप्पेकेवइयाविमाणावासापन्नत्ता गो यमा बत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा पन्नत्ता एवमीशानादिष्वपि द्रष्टव्यं एतदेवाह एवंईसाणाइसुत्ति एवं गाहाहिं भाणियव्वंति बत्तीसअट्ठवीसा इत्यादि काभिः पूर्वोक्तगाथाभि स्तदनुसारेणेत्यर्थः प्रतिकल्पं भिन्नपरिमाणविमानावासा भणितव्या स्तद्वर्णकसूत्रवाच्यो जावतेणंविमाणेत्यादि यावत्पडिरूवा न

॥ मूल ॥

या सप्पन्ना सस्सिरीया उज्जोया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा। सोहम्मेणंभंतेकप्पे केवइया विमाणावासा प० । गोयमा बत्तीसंविमाणावाससयसहस्सा प० । एवंईसाणाइसु अट्ठावीस बारस अट्ठ चत्तारि एयाइं सयसहस्साइं पन्नासं चत्तालीसं छसहस्साइं चत्तारिसयाइं तिन्निसयाइं गाहाहिंभाणि

॥ भाषा ॥

मार शाणेंकरी पाषाण प्रतिमानी परे घस्याछे। कलंक रहित छे। वली आवरण रहित जेहनी छाया दीप्तिछे। प्रभा सहितछे शोभायमानछे। उ द्योत सहितछे। वली समीप रही वस्तुने प्रकाशे चित्तने प्रसन्न करे एहवाछे। वली गौतमपूछेछे। हेभदंत सौधर्मे पहिले देवलोके केतला विमानावास विमानलक्षण घर कह्या। हेगौतम। बत्तीसलाख विमानावासा कह्या । एम ईशाने अठ्ठावीस लाख। सनत्कुमारे १२ लाख माहेंद्रे ८ लाख। ब्रह्मे ४ ला ख। लांतके ५० हजार। शुक्रे ४० हजार। सहस्रारे ६ हजार । आनत प्राणत मिली ४०० । आरण, अच्युत मिली ३०० विमान। एह सेकडा जिम प

॥ टीका ॥

वर मभिलापभेदोयं यथा ईसाणेणंभंते कप्पे केवइयाविमाणावासापण्णत्ता गोयमा अट्ठावीसं विमाणावांस सयसहस्सा पण्णत्ता तेणंविमाणा जावपडिरूवा एवं सर्वं पूर्वोक्तगाथानुसारेण प्रज्ञापना द्वितीयपदानुसारेण च वाच्यमिति अनंतरं नारकादिजीवानां स्थानान्युक्ता अथ तेषामेव स्थिति मुपदर्शयितु माह नेरइयाणंभंतेइत्यादि सुगमं नवरं स्थिति र्नारकादिपर्यायेण जीवानामवस्थानकाल: अपज्जत्तयाएति नारका: किल लब्धित: पर्याप्तका एव भवंति करणतस्तू पपातकाले अन्तर्मुहूर्त्तं यावदपर्याप्ता भवन्ति तत: पर्याप्तका स्ततएषा मपर्याप्तकत्वेन स्थिति र्जघन्यतो प्युत्कर्षतोपिचां तर्मुहूर्त्तमेव पर्याप्तका ना म्पुनरौघिकैव जघन्योत्कृष्टा चान्तर्मुहूर्त्तोनाभवतीति अथ स्वेहपर्याप्तकापर्याप्तकविभाग: नारयदेवातिरिमणुय गब्भयाजेअसंखेज्जवासाऊ एतेउअपज्ज त्ता उववाए चेवबोधव्वा। सेसायतिरियमणुया लद्धिंपप्पोववायकालेय। दुहओविययभइयव्वा पज्जत्तियरियजिणवयणंति। उक्ता सामान्यतो नारकस्थिति र्विशेष त स्तामभिधातु मिदमाह इमोसेणमित्यादि स्थितिप्रकरणञ्च सर्वम्प्रज्ञापनाप्रभिड मित्यतिदिशन्नाह एवमिति यथाप्रज्ञापनायां सामान्यपर्याप्तकापर्याप्तक लक्षणेन गमत्रयेण नारकाणां नारकविशेषाणां तिर्यगादिकानाञ्च स्थितिरुक्ता एवमिहापिवाच्या कियद्दूरं यावदित्याह जावविजयेत्यादि अनुत्तरसुराणा मौघिकपर्याप्तापर्याप्तकलक्षणं गमत्रयं यावदित्यर्थ: इहचैव मतिदिष्टसूत्राण्यर्थतो वाच्यानि रत्नप्रभानारकाणा भदन्तकियतीतिस्थिति र्गौतम जघन्येन दश

यहुं। नेरइयाणं भंते केवइयंकालं ठिई पन्नत्ता । गोयमा जहन्नेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणंतेत्तीसं ॥ मूल ॥

हिले गाथामांहि कहि आयाछे तिम कहिवो। हिवे २४ दंडकने विषे जेजीव तेहना आउखानो स्वरूप पूछेछे । हेपूज्य नारकीनो केतला काल लगे स्थिति पाउखो कह्यो। हे गौतम सर्वथापि थोडोतो १० हजार वर्षनो स्थिति कह्यो। पहिली नरकनो अपेक्षायें उत्कृष्टोस्थिति तेत्रीस सागरोपमलगे क ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

वर्षसहस्राणि उत्कर्षतः सागरोपमं १ अपर्याप्तकरत्नप्रभापृथिवीनारकाणां भदन्त कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता गौतमो भयथापि अन्तर्मुहूर्त्तमेव स्पर्याप्तका
नां सामान्योक्तयैवांतर्मुहूर्त्तोनावाच्यैवंशेषपृथिवीनारकाणां प्रत्येकंदशानां मसुरादीनां पृथिवीकायिकानां तिरश्चां क्रमेजेतरभेदानां मनुष्याणां व्यन्तराणां म
ष्टविधानां ज्योतिष्काणां मष्टप्रकाराणां सौधर्मादीनां वैमानिकानां च गमत्रय म्वाच्यं इहच विजयादिषु जघन्यतो द्वात्रिंशत्सागरोपमान्युक्तानि गन्धह

॥ २१५ ॥ ॥ मूल ॥

सागरोवमाइं ठिई प० । अपज्जत्तगाणं नेरइयाणं भंते केवइयंकालं ठिई प० । जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्को
सेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तगाणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । उक्कोसेणं तेत्तीसंसागरो
वमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए एवंजावविजयवेजयंतजयंतअपराजियाणं देवाणं

॥ भाषा ॥

स्थी । पणि ३३ सातमीनो अपेक्षायो । वली पूछेछे । हेपूज्य अपर्याप्तावस्थायें केतला काल लगे स्थिति कही । हेगौतम जघन्यपणे अंतर्मुहूर्त्त उत्कृष्टपणे
पणि अंतर्मुहूर्त्त । पछे पर्याप्ता होय । पर्याप्ता नारकीनी हेपूज्य केतला काललगे स्थिति हेगौतम पर्याप्तानी जघन्यपणे १० हजार वर्षनी पहिली नर
कनी अपेक्षायें अंतर्मुहूर्त्त ऊणी । उत्कृष्टी सातमीये अंतर्मुहूर्त्तऊणी तेत्रीस सागरोपमनी । अंतर्मुहूर्त्त अपर्याप्तावस्थानो ऊणो जाणिवो । हे पूज्य एणीयें
रत्नप्रभा पृथिवीयें जघन्य आउखो केतलो हेगौतम जघन्यतो १० हजार वर्षनो उत्कृष्टो १ सागरोपम । एम ५ थावर ३ विकलेंद्री मनुष्य तिर्यंच भवन
पती व्यंतर ज्योतिषी १२ देवलोक ९ ग्रैवेयक लगे जघन्य उत्कृष्टो आउखो ग्रंथांतरथकी कहिवो । अनुत्तर विमान पूछेछे । हे भगवंत विजय वैजयंत ज
यंत अपराजित विमाने केतली देवतानी स्थिति कही । गौतम जघन्यपणें ३२ सागरोपम उत्कृष्टपणें ३३ सागरोपमनी कही । ५ मेसर्वार्थ सिद्ध विमाने

स्थादिष्वपि तथैवदृश्यते प्रज्ञापनायांत्वे कश्चिदुक्तेति मतान्तरमिदं पर्याप्तकापर्याप्तकगमद्वय मिह समूह्यमेवं सर्वार्थसिद्धिस्थितिरपि त्रिभिर्गमै र्वाच्येति अ नन्तरं नारकादिजीवानां स्थितिरुक्ते दानीं तच्छरीराणा मवगाहनाप्रतिपादनायाह कइयाणंभंतेइत्यादि कंठ्यं नवर मेकेंद्रियौदारिकशरीरमित्यादौ याव त्करणा द्विविचतु:पञ्चेन्द्रियौदारिकशरीराणि पृथिव्याद्येकेंद्रियजलचरादिपञ्चेंद्रियभेदेन प्राक्प्रदर्शितजीवराशिक्रमेण वाच्यानि कियद्दूरमित्यादि गब्भवक्कंतिइ ॥ टीका ॥

केवइयंकालं ठिई प० । गोयमा जहन्नेणं बत्तीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं तेत्तीसंसागरोवमाइं सव्वठे अ जहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसंसागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता । कतिणं भंतेसरीरा प० । गोयमा । पंचसरीरा प० तं० । उरालिए वेउव्विए आहारए तेए कम्मए उरालियसरीरेणं भंतेकइविहे प० । गोयमा पंचविहे प० तं० । एगिंदियउरालियसरीरे जावगब्भवक्कंतियमणुस्सपंचिंदियउरालियसरीरेय । उरालियसरीरस्सणं भंते ॥ मूल ॥

जघन्य नथी उत्कृष्ट ३३ सागरोपमनी कही । हिवे स्थितिछे ते शरीराधीनछे । तेमाटे शरीर नूं स्वरूप पूछेछे । हेपूज्य शरीर केतलाकह्या । गौतम ५ श रीर कह्या । ते कहेछे । औदारिक १ वैक्रिय २ आहारक ३ तेजस ४ कार्मण ५ हेपूज्य औदारिक शरीर केतले प्रकारे कह्यो । गौतम ५ प्रकारे । एकेंद्री औदारिक शरीर १ एम बेइंद्री औदारिक शरीर २ तेइंद्री औदारिक ३ चौरिंद्री औदारिक शरीर ४ पंचेंद्री संमूर्च्छिम तिर्यंच औदारिक शरीर गर्भज पचेंद्रिय तिर्यंच औदारिक शरीर समूर्छिम मनुष्य पंचेंद्रिय औदारिक शरीर गर्भव्युत्क्रांत मनुष्य पंचेंद्रिय औदारिकशरीर ५ एह सर्वनो औदारिक शरीर जाणिवो । औदारिकशरीरनो केवडो मोटो अवगाहनां कही, हेगौतम जघन्यपणे अंगुलने असंख्यात मे भाग पृथिवीनो अपेक्षायें । उत्कृष्टसातिरेक भा ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

त्वादि औरालियशरीरमित्यादि तत्रोदार प्रधानं तीर्थंकरादिशरीराणि प्रतीत्य अथवौरालम्बिशालं समधिकयोजनसहस्रप्रमाणत्वात् वनस्पत्यादि प्रतीत्य अथवा उरालंस्वल्पप्रदेशोपचितत्वात् वृहत्वाच्च भाण्डवदिति अथवा मांसास्थिस्नायुवद्धं यच्छरीर न्तत्समयपरिभाषया उरालमिति तत्र तच्छरीरचेति प्राकृत

॥ २१६ ॥ त्वादौरालियंशरीरं तस्याऽवगाहन्ते यस्यांसाऽवगाहना आधारभूतक्षेत्रं शरीराणा मवगाहना शरीरावगाहना अथ वौदारिकशरीरस्य जीवस्य औदारिक शरीररूपावगाहना सा भदन्त केमहालिया किमहती प्रज्ञप्ता तत्र जघन्येनाङ्गुलासंख्येयभागंयावत् पृथिव्याद्यपेक्षया उत्कर्षेण सातिरेकं योजनसहस्रमिति बादरवनस्पत्यपेक्षयेति एवंजावमणुस्सेति इहएवं यावत्करणा दवगाहनासंस्थानाभिधानप्रज्ञापनैकविंशतितमपदाभिहितग्रन्थो ऽर्थतो यमनुसरणीयः तथा हि एकेंद्रियौदारिकस्य पृच्छानिर्वचनच्च तदेव तथा पृथिव्यादीनां चतुर्णां ग्बादरसूक्ष्मपर्याप्तापर्याप्तानां जघन्यत उत्कृष्टतश्चा ङ्गुलासंख्येयभागो वनस्पतीनां बादरपर्याप्ताना मुत्कर्षतः साधिकं योजनसहस्रं शेषाणां त्वङ्गुलासंख्येयभागएव द्वित्रिचतुरिंद्रियाणा म्पर्याप्ताना मुत्कर्षतस्त्वानुक्रमेण द्वादशयोजनानि त्री णिगव्यूतानि चत्वारिचेति पञ्चेंद्रियतिरश्चां जलचराणां पर्याप्तानां गर्भजानां संमूर्च्छनजानां चोत्कर्षतो योजनसहस्रं एवं स्थलचराणां चतुष्पदानां संमूर्छन जाना म्पर्याप्तानां गव्यूतपृथक्त्वं गर्भव्युत्क्रान्तिकानां तेषां षट्गव्यूतानि उरःपरिसर्प्पाणां गर्भव्युत्क्रान्तिकानां योजनसहस्रं एवमेव संमूर्च्छनजानां योजन

॥ मूल ॥

केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता । गोयमा जहन्नेणं अंगुलअसंखेज्जतिभागं उक्कोसेणं साइरेगं जोय

॥ भाषा ॥

केरो योजन सहस्र बादर वनस्पतीनी अपेक्षायें । जिम अवगाहना तिम ५ संस्थान पिण कहिवो । सर्व औदारिक बेइन्द्री तेइन्द्री चोरिन्द्री पंचेन्द्री ति र्यंचनो मान तिमज निरवशेस समस्तपणे तरतमयोगे कहिबो जिहां लगे मनुष्य औदारिक शरीर नो मान उत्कृष्टो ३ गाऊ युगलियानी अपेक्षायें । हिवे

॥ टीका ॥

पृथक्त्वं भुजपरिसर्पाणां गर्भजानां गव्यूतपृथक्त्वम् संमूर्छनजानां धनुः पृथक्त्वं खचराणां गर्भजानां संमूर्छनजानां च धनुःपृथक्त्वमेव तथामनुष्याणां गर्भव्युत्क्रान्ति
कानां गव्यूतत्रयं संमूर्छनजाना मङ्गुलासंख्येयभागः एषएव सर्वत्र जघन्यपदे अपर्याप्तपदेचेति तथा कइविहेणमित्यादि स्पष्टं नवरं विविधा विशिष्टावा
क्रियाविक्रियातस्या भव स्वैक्रिय म्विविध म्विशिष्ट म्वाकुर्वंति तदिति वैकुर्विकं मितिवा तत्रै केन्द्रियवैक्रियशरीर म्वायुकायस्य पञ्चेंद्रियवैक्रियशरीरं
नारकादीनामेवं जावेत्यादेरतिदेशादिदं द्रष्टव्यं यदुत जइएगिंदियवेउव्वियसरीरए किंवाउकाइयएगिंदियवेउव्वियसरीरए अवाउकाइयएगिंदियवेउव्वियश
रीरए गोयमा वाउकाइयएगिंदियसरीरए नोअवाउकाइय इत्यादिना भिलापेना यमर्थोदृश्यः यदिवायोः किंसूक्ष्मस्य वादरस्यवा वादरस्यैव यदि वादरस्य
किम्पर्याप्तकस्या पर्याप्तकस्यवा पर्याप्तकस्य यदि पचेंद्रियस्य किंनारकस्य पंचेंद्रियतिरश्चांमनुजस्यदेवस्यवा गौतम सर्वेषां तत्रनारकस्य सप्तविधस्य पर्याप्तक
स्ये तरस्यच यदितिरश्चः किं सम्मूर्छिमस्य इतरस्यवा इतरस्य तस्यापिसंख्यातवर्षायुषएवपर्याप्तस्य तस्यापिच जलचरादिभेदेन त्रिविधस्यापि तथा मनुष्यस्य

॥ मूल ॥

णसहस्सं एवंजहा उगाहणसंठाणे उरालियपमाणं तहानिरवसेसं एवंजावमणुस्सेत्ति। उक्कोसेणंतिन्निगाउ
याइं। कइविहेणं भंते वेउव्वियसरीरे प०। गोयमादुविहे प०। एगिंदियवेउव्वियसरीरेय पंचिंदियवेउ

॥ भाषा ॥

वैक्रिय शरीरनो मान पूछे छे। हे पूज्य केतले प्रकारे वैक्रिय शरीर कह्यो। हे गौतम बे प्रकारे कह्यो। एकेंद्री वैक्रिय शरीर तेहवायुनी अपेक्षाये। बीजो
पंचेंद्रिय वैक्रिय शरीर तेह पंचेंद्रिय गर्भज तिर्यंच मनुष्यने लब्धि विशेषे होय। भवधारणीय वैक्रिय शरीर नारको भवनपती व्यंतर ज्योतिषी सौधर्म ईशा

॥ टीका ॥

गर्भजस्यैवतस्यापि कर्मभूमिजस्यैव तस्यापि संख्यातवर्षायुषएवं पर्याप्तकस्यैवच तथा देवस्यभवनवास्यादेः तत्रा सुरादेर्दशविधस्य पर्याप्तकस्येतरस्यच एवं व्यंत
रस्याष्टविधस्य ज्योतिष्कस्यपञ्चविधस्य तथा यद्वैमानिकस्य किङ्कल्पोपपन्नस्य कल्पातीतस्य उभयस्यापि पर्याप्तस्या पर्याप्तस्यचेति तथा वैक्रियभ्भदन्तकिंसंस्थि
त' उच्यते नानासंस्थितं तत्र वायोःपताकासंस्थितं नारकाणा भ्भवधारणीय मुत्तरवैक्रियञ्च हुंडसंस्थितं पंचेंद्रियतिर्यग्मनुष्याणां नानासंस्थितं देवाना भ्भवधा
रणीयं समचतुरस्रसंस्थानसंस्थित मुत्तरवैक्रियं नानासंस्थितं केवलं कल्पातीताना भ्भवधारणीयमेव तथा वैक्रियसरीरावगाहना भदन्तकिम्महती गौतम जघ
न्यतोंगुलाऽसंख्येयभाग मुत्कर्षतः सातिरेकं योजनलक्ष स्वायोरुभयथा अङ्गुलासंख्येयभाग एवं नारकस्यजघन्येनभवधारणीय उत्कर्षतः पञ्चधनुः शतानि एषा
च सप्तम्यांषष्ठ्यादिषु त्वियमेवा र्द्धार्द्धहीनेति उत्तरवैक्रियातु जघन्यतः सर्वेषा मप्यङ्गुलासंख्येयभाग मुत्कर्षत स्व नारकस्यभवधारणीयद्विगुणेति पंचेंद्रियतिर
श्चां योजनशतपृथक्त्व मुत्कर्षतः मनुष्याणां तूत्कर्षतः सातिरेकं योजनानां लक्षं देवानांतुलक्षमेवोत्तरवैक्रिय भ्भवधारणीयंतु भवनपतिव्यन्तरज्योतिष्कसौधर्म्मैशा
नानां सप्तहस्ताः सनत्कुमारमाहेंद्रयोः षट् ब्रह्मलान्तकयोः पञ्च महाशुक्रसहस्रारयो श्चत्वार आनतादिषुत्रयो ग्रैवेयकेषुद्वा वनुत्तरेष्वेक इति अनन्तरोक्तं

॥ मूल ॥

व्वियसरीरेत्ति। एवंजाव सणंकुमारेत्ताढत्तं जावअणुत्तराअवधारणिज्जा जावतेसिं रयणीरयणीपरिहायइ।

॥ भाषा ॥

न लगे सात हाथनो होय। सनत्कुमार थी मांडी अनुत्तर विमान लगे भवधारणीय शरीर। बे बे देवलोके एकेक हाथ घटाडिये। ते किम सनत्कुमार
माहेंद्रे ६ हाथनं। ब्रह्मलांतके ५ हाथनो। शुक्रसहस्रारे ४ हाथनो। आनत प्राणत आरण अच्युते ३ हाथनो। नवग्रैवेयके २ हाथनो। पंचानुत्तरे १ हाथ

॥ टीका ॥

सूत्रतएवाह एवंजावसणंकुमारेत्यादि एवमिति दुविहेपन्नत्ते एगिंदियइत्यादिना पूर्वदर्शितक्रमेण प्रज्ञापनोक्तं वैक्रियावगाहनामानसूत्रं वाच्यं कियद्दूरमित्या दि यावत्सनत्कुमारेआरब्ध भवधारणीयवैक्रियशरीरपरिहाणमितिगम्यं ततोपि यावदनुत्तराणि अनुत्तरसुरसम्बन्धीनि भवधारणीयानि शरीराणि यानिभ वन्तितेषांरत्नी रत्नि:परिहीयतइति एतदर्थंसूत्रंभवेत्तावदिति पुस्तकान्तरेत्वि दम्वाक्य मन्यथापि दृश्यते तत्राप्यचरघटनै तदनुसारेणकार्येति आहारयेत्या दि सुगम नवरं एवमिति यथापूर्वं आलापक: परिपूर्णं उच्चारित: एवमुत्तरत्रापि तथाहि जइमणुस्सत्ति जइमणुस्साहारगसरीरे किंगब्भवक्कंतियणुमस्साहार गसरीरे समुच्छिममणुस्साहारगसरीरे गोयमा गब्भवक्कंतियमणुस्साहारगसरीरे नोसमुच्छिममणुस्साहारगसरीरे जइगब्भवक्कंतियइत्यादि सर्वंसूत्रं जावजइप मत्तसंजयअपमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तयसंखेज्जवासाउयकम्मभूमिगब्भवक्कंतियमणुस्साहारगसरीरे किंइड्ढिपत्तपमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तसंखेज्जवासाउयक

॥ मूल ॥

आहारयसरीरेणं भंते कइविहे पन्नत्ते । गोयमा एगाकारे प० । जइएगाकारे प० । किंमणुस्सआहारय सरीरे अमणुस्सआहारयसरीरे । गोयमा मणुस्सआहारगसरीरेणोअमणुस्सआहारगसरीरे । एवंजइमणु

॥ भाषा ॥

नो शरीर । बेहुं गतिना उत्तर वैक्रिय शरीरनो मानगाथाथी कहिवो । नरदेवलक्खमहियं । तिरियाणंजोयणाणिनवसयाइं । दुगुणंतुनारयाणं उक्कोसवेउ व्वियाभणिया ॥ १ ॥ अंतोमुहुत्तनिरए मुहुत्तचत्तारितिरियमणुएसु । देवेसु अद्धमासो उक्कोसवेउव्वियाकालो ॥ २ ॥ आहारक शरीर ते पूर्वधर जिन ऋ द्धिजोइवाने अथवा संदेहपूछिवाने तीर्थंकर पासे जाइवाने अर्थे करे १ हाथनो शरीर अंतर्मुहूर्त्त लगे रहे । ते १ प्रकारे छे । वली गौतम पूछे छे । हेपूज्य १ प्रकारे आहारक शरीर कह्यो ते मनुष्य आहारक शरीर होय किंवा अमनुष्य आहारक शरीर होय । हे गौतम मनुष्यने आहारक शरीर होय । परं

॥ टीका ॥ अभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्साहारगसरीरे अपिड्डिपत्तपमत्तसंजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तयसंखेज्जवासाउयकम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्साहारगसरीरे गोयमा इ

॥ मूल ॥ स्सआहारगसरीरे किंगब्भवक्कंतियमणुस्सआहारगसरीरे समुच्छिममणुस्सआहारगसरीरे गोयमा गब्भवक्कं तियमणुस्सआहारयसरीरे नोसमुच्छिममणुस्सआहारयसरीरे। जइगब्भवक्कंतिया किंकम्मभूमिगा अकम्मभूमिगा गोयमा कम्मभूमिगा नोअकम्मभूमिगा। जइकम्मभूमिग किंसंखेज्जवासाउय असंखेज्जवासाउय। गोयमा नोअसंखेज्जवासाउय। जइसंखेज्जवासाउय किंपज्जत्तया अपज्जत्तया गोयमा पज्जत्तयानोअपज्जत्तया। जइपज्जत्तया किंसम्मदिठी मिच्छदिठी सम्मामिच्छदिठी। गोयमा सम्मदिठी नोमिच्छदिठी नोस

॥ भाषा ॥ अमनुष्यने आहारक नहोय। जोमनुष्यने होय तो गर्भ व्युत्क्रांतनेहोय वा सनूर्च्छिमने होय। हेगौतम गर्भजने होय सनूर्च्छिम ने नहोय। हेपूज्य गर्भजने होय तो १५ कर्मभूमिगतने होय किंवा ३० अकर्म भूमिगतने होय। हे गौतम कर्मभूमिगत मनुष्यने होय अकर्मभूमिगत मनुष्यने न होय। हे पूज्य कर्मभूमिगत मनुष्यने होय तो संख्यात वर्षायुष्कने होय किंवा असंख्यात वर्षायुष्कने होय। हे गौतम संख्यात वर्षायुष्कने होय पणि असंख्यात वर्षायुष्कने न थी। हे भदंत संख्यात वर्षायुष्क ने होय तो पर्याप्ता ने होय किंवा अपर्याप्तने होय। हे गौतम पर्याप्ताने होय पणि अपर्याप्ताने न होय। हे भदंत पर्याप्ता ने होय तो सम्यग्दृष्टीने होय किंवा मिथ्यादृष्टीने। हे गौतम सम्यग्दृष्टीने होय परं मिथ्यादृष्टीने नही। सम्यग्मिथ्यादृष्टीने पणि नहोय। हेभदंत सम्यग्दृष्टी ने होय तो साधु यतीने होय किंवा असंयत अविरतीलोक संयतासंयत श्रावकने होय। हेगौतम संयतीने होय। पणि असंयतीने नहोय। संय

तीयस्सनिषेधः प्रथमस्यचा सुन्ना वाच्या एतदेवाह वयणाविभागियव्वत्ति सूचितवचनान्यप्युक्तन्यायेनसंर्वाणिभणनीयानि विभागेनपूर्णान्युच्चारणीयानीत्यर्थः ॥ टीका ॥
आहारगत्तिआहारगशरीरस्सकेमहालियासरीरोगाहणापस्सत्तागोयमाइत्येतत्सूचितंजहण्णेणंदेसूणारयणीति कथमुच्यते तथाविधप्रयत्नविशेषत स्तथा रम्भक
द्रव्यविशेषत स्व प्रारम्भकाले प्युक्तप्रमाणभावात् नह्यौदारिकादेरिवां गुलासंख्येयभागमात्रता प्रारम्भकाले इतिभावः तेयासरीरेणंभंतेइत्यादि एवं यावत्कर

म्मामिच्छादिठी। जइसम्मदिठी किंसंजया असंजया संजयासंजया गोयमा संजया नोअसंजया नोसंजया ॥ मूल ॥
संजया। जइसंजया किंपमत्तसंजया अपमत्तसंजया। गोयमा पमत्तसंजया नोअपमत्तसंजया। जइपम
त्तसंजया किंइड्ढिपत्ता अणिड्ढिपत्ता गोयमा इड्ढिपत्ता नोअणिड्ढिपत्ता। वयणाविभाणियव्वा आहारयस
रीरे समचउरंससंठाणसंठिए। आहारय सरीरे जहन्नेणं देसूणारयणी उक्कोसेणं पडिपुण्णारयणी। तेअ

ता संयतने पणि न होय। हेपूज्य संयतीनेहोय तो प्रमत्तसंयती ६ ठागुणठाणवालाने होय किंवा अप्रमत्त संयतीने होय। हे गौतम ६ ठागुणठाणवासी ॥ भाषा ॥
प्रमत्तसंयत लब्धि प्रयुंजे तेमाटे प्रमत्तनेहोय। पणि अप्रमत्तलब्धि फोरवे नथी तेमाटे अप्रमत्त ने न होय। जो अप्रमत्तने होय तो ऋद्धिप्राप्तने होय
किम्वा अनृद्धिप्राप्तने होय। हे गौतम शरीर करवानो लब्धिरूपऋद्धि पाईहोय ते ऋद्धिप्राप्तने होय। अनर्द्धिप्राप्तने न होय। उक्तन्याये कह्या वचन सग
ला भणिवा। आहारकशरीर समचउरंस संस्थान संस्थित होय। आहारक शरीर जघन्य थोडो सर्वकाले देसूणा कांईकऊंणा हाथ अने संपूर्ण होयतो
१ हाथहोय। हिवे चौथा तेजस शरीरनो स्वरूप पूछे छे। तेजस शरीर हे भदंत केतले प्रकारे कह्यो॥ हे गौतम तेजस शरीर ५ भेदे कह्यो। एकेंद्रियतेज

॥ टीका ॥

या अप्रज्ञापनासत्कैकविंशतितमपदोक्ता तैजसशरीरवक्तव्यता तद्व्याख्या साचेय मर्थत: एगिंदियतेयगशरीरेणंभंतेकतिविहे गोयमा पंचविहेपन्नत्ते तंजहा पुढवीजाववणस्सइकाइएगिंदियतेयगसरीरे एवं जीवराशिप्ररूपणाऽनुसारेण सूत्र भावनीयं यावत् सव्वट्ठसिद्धगअणुत्तरोववाइयकप्पातीतवेमाणियदेवपं चेंदियतेयगसरीरे तेयगसरीरेणंभंते किंसंठिए नाणासंठिए यस्य पृथिव्यादिजीवस्य यदौदारिकादिशरीरसंस्थानं तदेव तैजसस्य कार्म्मणस्यच तथा जीवस्य

॥ २१९ ॥ मारणान्तिकसमुद्घातगतस्य कियती तैजसी शरीरावगाहना शरीरमात्रा विष्कम्भबाहल्याभ्या मायामतस्तु जघन्येना ङ्गुलस्याऽसंख्येयभाग उत्कर्षत ऊर्द्धमधश्च

॥ मूल ॥

सरीरेणं भंते कतिविहे पन्नत्ते । गोयमा पंचविहेपन्नत्ते । एगिंदिय तेयसरीरे वितिचउपंचएवंजाव गेवेज्ज स्सणं भंते देवस्समारणंतियसमुग्घाएणं समोहयस्ससमाणस्स केमहालियासरीरोगाहणा पन्नत्ता । गोयमा

॥ भाषा ॥

स १ वेइन्द्रीतेजस २ तेरिंद्री तेजस ३ चौरिंद्री तेजस ४ पंचेंद्रीतेजस ५ । तेजस शरीरनो संठाण अनेक प्रकारनो । गौतम पहिले स्कंध बचने पूछेछे । मरणां तिक समुद्घात प्राप्तजीवना तेजसशरीरनो अवगाहनां केतलो । भगवंत कहे छे । विष्कंभपणे बाहल्यपणे तेजस शरीरावगाहना शरीर प्रमाणें । जघन्य अंगुलनो असंख्येयभाग । उत्कृष्ट ऊंचो नीचो हेठिला लोकांतलगे । कार्मणशरीरनो पणि एमज अवगाहना एह एकेंद्रीय आश्रित जाणिवो । उत्पत्तिसमये वेरिंद्रिय तेरिंद्रिय चोरिंद्रियना तेजस शरीरनो अवगाहना उत्कृष्टलांबपणें तिर्यक्लोके लोकांतलगे । एम २३ दंडकना तेजसशरीरनो अवगाहना टीका थीजाणवी जिहां लगे ग्रैवेयकनादेवता मारणांतिकसमुद्घाते संमोहितहोय एतले मरणसमुद्घात करतोहोय तिवारे देवतानो केवडीमोटी तेजस शरीरोगा हना कहिवी । हे गौतम शरीरप्रमाणें जाणवो । विष्कंभपणें पिहुलपणें बाहल्यपणें जाडपणें औदारिकशरीर प्रमाणें तेजस शरीरनो अवगाहना । आयामे

॥ टीका ॥

लोकान्ता लोकान्तंयाव देकेन्द्रियस्य तत स्तत्रोत्पत्ति मङ्गीकृत्येतिभाव: एवं सर्वेषामेवैकेंद्रियाणां द्वीन्द्रियाणान्तु आयामत उत्कर्षेण तिर्यग्लोका ल्लोकांतंयावत्प्राय
स्तिर्यग्लोके द्वीन्द्रियादितिरश्चाभावात् नारकस्य जघन्यतो योजनसहस्रं कथं नारका त्पातालकलशस्य सहस्रमानं कुड्यभित्वा तत्र मत्स्यतयो त्पद्यमानस्य
उत्कर्षेणतु अध: सप्तमींयावत् सप्तमपृथ्वीनारकं समुद्रादिमत्स्येषू त्पद्यमान मतीत्य तिर्यक्स्वयम्भूरमणंयावत् ऊर्द्ध्व मपण्डकवनपुष्करिणींयावत् यतस्तयो
र्नारका उत्पद्यते नपरत: मनुष्यस्य लोकान्तंयावत् भवनपतिव्यन्तरज्योतिष्कसौधर्मेशानदेवानां जघन्यतो ऽङ्गुलासंख्येयभाग: स्वस्थान एव पृथिव्यादितयो
त्पादात् उत्कर्षतस्तु अधस्तृतीयपृथ्वींयावत् तिर्यक्स्वयम्भूरमणवेदिकान्तं ऊर्द्धमीषत्प्राग्भारां यावत् यत एतेषुच पर्याप्तवादरेष्वेव पृथिव्यादिषू त्पद्यन्ते अतो
नपरतोपीति सनत्कुमारादिसहस्रारान्तदेवानान्तु जघन्यतो ऽङ्गुलासंख्येयभाग: कथं पण्डकवनादिपुष्करिणीमज्जनार्थ मवतारे मृतस्य तत्रैव मत्स्यतयो त्पद्य
मानत्वात् पूर्वसम्बन्धिनीम्वा मनुष्योपभुक्तस्त्रिय मपरिष्वज्य मृतस्यतद्गर्भे समुत्पादादिति उत्कर्षतस्तु अधोयाव महापातालकलसानां द्वितीय स्त्रिभाग स्तत्र
हि जलसद्भावात्मत्स्येषूत्पद्यमानत्वात् तिर्यक्स्वयम्भूरमणसमुद्रंयावत् ऊर्द्धमच्युतंयाव त्तत्रहि सङ्गतिकदेवनिश्रयागतस्य मृत्वेहोत्पद्यमानत्वादिति आनता
दीना मच्युतानान्तु जघन्यतो ऽङ्गुलासंख्येयभाग: कथ मिहागतस्य मरणकालविपर्यस्तमते र्मनुष्योपभुक्तस्त्रिय मप्यभिष्वज्य मृतस्य तत्रैवोत्पत्तेरिति उत्कर्षत
स्त्वधोयाव दधोलोकग्रामान् तिर्यग्मनुष्यक्षेत्रे ऊर्द्ध मच्युतविमानानियावत् मनुष्येष्वेवोत्पद्यन्ते इति भावनातथैवकार्या ग्रैवेयकानुत्तरोपपातिदेवानां जघन्य

॥ मूल ॥

सरीरप्पमाणमेत्ती विक्खंभवाहल्लेणं आयामेणं जहन्नेणं जावविज्जाहरसेढीउ उक्कोसेणं अहोलोइयग्गामा

॥ भाषा ॥

लांवपणे जघन्य हेठे विद्याधर श्रेणी लगे। ग्रैवेयक देवताना तैजसनो अवगाहना एतलेमरतीवेला तिहांलगे तैजस कामर्णशरीरना प्रदेश विस्तारे उत्कष्टी

तो विद्याधरश्रेणींयावत् उत्कर्षतो ऽधोयाव दधोलोकग्रामान्' तिर्यग्मनुष्यक्षेत्रं उर्द्ध तद्विमानान्येवेति एवं कार्म्मणस्या प्यवगाहना दृश्या समानत्वा देवतयो रिति उक्तार्थमेव सूत्रांशमाह.। गेवेज्जगस्सणमित्यादि अनन्तरं शरीरिणा मवगाहना धर्म्मंउक्तो ऽधुना त्ववधिधर्म्मप्रतिपादनायाह ॥ भेदेइत्यादि द्वारगाथा तत्र भेदो वधेर्वक्तव्यो यथाद्विविधो वधि भवप्रत्ययः चायोपशमिकश्च तत्र भवप्रत्ययो देवनारकाणां चायोपशमिको मनुष्यतिरश्चामिति तथा विषयो गोचरो ऽवधे र्वाच्यः सच चतुर्द्धा द्रव्यतः चेत्रतः कालतो भावतश्च तत्र द्रव्यतो जघन्येन तेजोभाषयो रग्रहणप्रायोग्यानि द्रव्याणि जानाति उत्कर्षत स्तु सर्वं मेकाणे ॥ टीका ॥

॥ २२० ॥

उ उड्ढं जावसयाइं विमाणाइं तिरियंजावमणुस्सखेत्तं । एवंजावऽणुत्तरोववाइया । एवं कम्मयसरीरंपिजा णियव्वं । भेदेविसयसंठाणे अभिंतरबाहिरेयदेसोही । उहिस्सवुड्ढिहाणी पडिवाईचेवअपडिवाई ॥ १ ॥ कति ॥ मूल ॥

हेठें जिहांलगे आधोग्राम पश्चिम महाविदेह चेत्रना तिहांलगे । ऊंचो जिहांलगे पोतानुंविमान । तिरछो मनुष्य चेत्र लगे ग्रैवेयकदेवनां तैजस शरीरनी अवगाहना । एमजग्रैवेयकनोपरे अनुत्तर विमानवासी देवना तैजस शरीरोगाहना जाणवी । तैजस शरीरनी परें कार्मण शरीरनी अवगाहना जाणवी संठाण पणि तिमज जाणिवो । हिवे अवधिज्ञानना भेद कहेछे । प्रथम अवधिज्ञानना बेभेद एक भवप्रत्यय १ बीजो चायोपसमिक । तेमांहि भवप्रत्यय अवधिज्ञान देवता नारकीनें होय । चायोपसमिक मनुष्य तिर्यंचने होय । तथा अवधिज्ञान गोचर विषय ते चारप्रकारे । द्रव्यतः १ चेत्रतः २ कालतः ३ भावतः ४ तेमांहि द्रव्यथको जघन्यपणें तैजस अनें भाषानें अग्रहणयोग्यद्रव्यजाणें । उत्कृष्ट सर्व एकादिअनंताणुकांत रूपीद्रव्यने जाणे । तथा चेत्रथी जघ न्य अंगुलनो असंख्येयभाग जाणे । उत्कृष्ट असंख्याता अलोकने विषे लोकमात्र खंड जाणें । कालतः जघन्य आवलिकानो असंख्यातमोभाग अतीत अनाग ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

काद्यमत्याणुकान्तं रूपिद्रव्यजातं जानाति चेवं जघन्यतो ऽङ्गुलासंख्येयभागं जानाति उत्कर्षतो ऽसंख्येयान्यलोके लोकमात्राणि खण्डानि जानाति कालं जघन्यत आवलिकाया असंख्येयभाग मतीतमनागतञ्च जानाति उत्कर्षतः संख्यातीता उत्सर्पिण्यवसर्पिणीर्जानाति भावतो जघन्यतः प्रतिद्रव्य चतुरोवर्णादीन् उत्कर्षतः प्रतिद्रव्य मसंख्येयान् सर्वद्रव्यापेक्षया त्वनन्तानिति तथा संस्थान मवधेर्वाच्यं यथा नारकाणां तप्राकारो वधिः पल्याकारो भवनपतीना मपटहाका रो व्यन्तराणां भल्लर्याकृति र्ज्योतिष्काणां मृदङ्गाकारः कल्पोपपन्नानां पुष्पावलीरचितशिखरचंगेर्याकारो ग्रैवेयकानां कन्याचोलकसंस्थानो ऽनुत्तरसुराणां लोकनाल्याकृति रित्यर्थः तिर्यग्मनुष्याणान्तु नानासंस्थानइति तथा अभ्भंतरत्ति के अवधिप्रकाशितक्षेत्रस्या भ्यन्तरे वर्त्तन्ते इतिवाच्यन्तत्र नेरइयदेवतित्थंकरा यओहिस्सबाहिराहुंतीत्यादि तथा बाहिरियत्ति के ववधिक्षेत्रस्य बाह्या भवन्तीति वाच्यम् तत्रनेरइयदेवत्ति शेषाजीवा वाह्यावधयो ऽभ्यन्तरावधयश्च भवन्ति

॥ भाषा ॥

तजाणें। उत्कृष्ट असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी जाणें। भावथकी जघन्यतः द्रव्य द्रव्यप्रति वर्णगंधरसस्पर्श एहचारप्रते जाणे। उत्कृष्टतः द्रव्यद्रव्यप्रति संख्याता सर्वद्रव्यनी अपेक्षायें अनंता वर्णादिकना भेदजाणे। चौजेंबोले अवधिनो संठाण कहेंछे। नारकीनो अवधि त्रापाने आकारें। एतले नावने आ कारे। भवन पतिनो पल्यने आकारें। व्यंतरनो पडहाने आकारें। ज्योतिषीनो झालरने आकारें। वारेदेवलोकना देवतानो मादलने आकारें। ग्रैवेयक देवतानो फूलचंगेरीने आकारें। अनुत्तर देवतानो लोकनालीने आकारें। एतले कन्यानी चोलीने आकारें । तिर्यंच मनुष्यनो अवधि नाना संस्थान। हिवे कोण अवधि प्रकाशित क्षेत्रने अभ्यंतर वर्तेछे। तिहां नेरइयदेवतित्थं करायओहिस्सबाहिराहुंति। इत्यादि। तथा बाहिरत्ति कोण अवधि प्रका शित क्षेत्रने बाहिर होय। शेष थाकता जीव बाह्य अने अभ्यंतरपणि होय। देशोहित्ति अवधि प्रकाशिवा योग्यवस्तुना देशनेप्रकाशे तेदेशावधि तेकोइक

॥ टीका ॥

तथा देशोहित्ति अवधिः प्रकाश्यवस्तुनो देशप्रकाशी अवधि र्देशावधिः स केषा भवतीति वाच्यम् तद्विपरीतस्तु सर्वावधि स्तत्र मनुष्याणां उभय मन्येषां देशावधिरेव यतः सर्वावधिः केवलज्ञानलाभप्रत्यासत्तावेवो त्पद्यत इति तथा वधे र्वृद्धिर्हानिश्च वाच्या योयेषाम्भवति तत्र तिर्यग्मनुष्याणा म्वर्द्धमानोहीय

॥ २२१॥ मानश्च भवति शेषाणामवस्थित एव तत्र वर्द्धमानों गुलासंख्येयभागादि दृष्ट्वा बहुबहुतर म्पश्यति विपरीतस्तु हीयमानइति तथा प्रतिपातीचा प्रतिपाती चावधिर्वाच्यः तत्रोत्कर्षतो लोकमात्रः प्रतिपात्यतः परमप्रतिपाती तत्र भवप्रत्ययः स्वं भवंयाव न्न प्रतिपतति चायोपशमिकस्तूभयथेति एतदेवदर्शयति कइ विहेत्यादि अत्रावसरे प्रज्ञापनाया स्त्रयस्त्रिंशत्तम म्पदमन्यूनमध्येय मिति अनन्तर मुपयोगविशेषः चायोपशमिको जीवपर्यायः उक्तो धुना सएवौदयिकोवे

॥ मूल ॥

विहेणंभंतेवेदणा पन्नत्ता । गोयमा दुविहा पन्नत्ता । भवपच्चइयखओवसमिएय । एवं सव्वंओहिपदं भाणियव्वं ।

॥ भाषा ॥

ने होय । एहथी विपरीतते सर्वावधि । तिहां मनुष्यने देशावधि सर्वावधि एह बिहुंहोय । बीजा सर्वने देशावधि होय । केवलज्ञान ढूंकडोहोय तिवारे सर्वावधि होय । वोहिस्स वुड्डिहाणित्ति । अवधिनी वृद्धि अने हानि कहिवो । तिर्यंचने मनुष्यने हीयमान होय वर्द्धमान पिण होय । देवता नारकीने अवस्थित होय घटे न वधे । वर्द्धमान ते अंगुलनो असंख्यातमोभाग देखीने घणुं घणुं देखे । एहथकी विपरीत तेहीयमान । प्रतिपाती उत्कृष्टो लोकमात्र देखे । अलोकमांहि देखे तेअप्रतिपाती परमावधि । गौतम पूछेछे हेभदंत केतले प्रकारे अवधिज्ञान कह्यो । गौतम बेप्रकारें कह्यो । एकभवप्रत्यय तेदेवता नारकीने पोताना भवने विषे उपजे जिहांथीमरखे तिहांलगे रहे । बीजो चायोपशमिक ते अनंतानुबंधी कषायना उदये उपजे । गर्भजतिर्यंच मनुष्य ने होय । एम सर्वअवधिनोपद पन्नवणासूत्रथकी कहिवो । हिवे उपयोगविशेषचायोपशमिक जीवपर्यायकह्यो । हिवे तेहीजऔदयिकवेदनालचणकहेछे । शीता

॥ टीका ॥

दनालचणाभिधीयते॥ सीयाइत्यादि हारगाथा तत्रसीयायत्ति चशब्दोनुक्तसमुच्चये तेन त्रिविधा वेदना शीता उष्णा शीतोष्णाचेति तत्र शीतामुष्णांचवेदयंति नारकाः शेषास्त्रिविधामपि दव्वत्ति उपलचणत्वा चतुर्विधा वेदना द्रव्यादिभेदेन तत्र पुद्गलद्रव्यसम्बन्धात् द्रव्यवेदना नारकाद्युपपातचेत्रसम्बन्धात् चेत्रवेदना नारकाद्यायुः कालसम्बन्धात् कालवेदना वेदनीयकर्म्मोदया द्भाववेदना तत्र नारकादयो वैमानिकान्ता चतुर्विधामपि वेदनां वेदयन्तीति तथा सारीरत्ति त्रिधा वेदना शारीरी मानसी शारीरमानसीच तत्र संज्ञिपचेंद्रियाः सर्वे त्रिविधामपि इतरेतु शारीरीमेवेति तथा सायत्ति त्रिधावेदना साताश्रसाता सातासातावेति तत्र सर्वेजीवाः त्रिविधामपि वेदयन्तीति तहवेयणाभवेदुक्खत्ति त्रिविधावेदना सुखा दुःखा सुखदुःखाचेति तत्र सर्वेपि त्रिविधामपि वेदयन्ति

॥ मूल ॥

सीयायदव्वसारीर सायातहवेयणाभवेदुक्खं। अब्भुवगमुवक्कमिया णीयाएचेवअणियाए ॥ १ ॥ नेरइया

॥ भाषा ॥

दिकवेदना तीन प्रकारें शीता उष्णा शीतोष्णा तेमांहिनारकी शीतवेदना अने उष्णवेदना वेदे। दव्वत्ति द्रव्यादिकभेदें चारप्रकारें। तेमांहि पुद्गल द्रव्यसंबंधथकी द्रव्यवेदना १ नारकादिक उपपातचेत्र संबंधथकी चेत्रवेदना २ नारकादिश्रायुकाल संबंधथकीकालवेदना ३ वेदनीयनामकर्मनाउदयथकी भाववेदना ४ तिहां नारकादि वैमानिकांतलगें चिहुं प्रकारनी वेदनावेदे। तथासारीरत्ति। तीनप्रकारेंवेदना शारीरी मानसी शारीरमानसी। इहांसंज्ञी पंचेंद्रिय त्रिणवेदनावेदे। बीजासगलाशारीरी वेदनावेदे। तथासायत्ति। तीनप्रकारनीवेदना साता असाता सातासाता सगलाहीजीव चीहुं प्रकारे वेदनावेदे। वेयणाभवेदुःखंति। त्रिप्रकारनीवेदना। सुखा दुःखा सुखदुःखा। सगलाही जीव त्रिणप्रकारे वेदनावेदे। साता असातामांहि अने सुखदुःखमांहिस्यूंविशेष।

नवरं सातासातयोः सुखदुःखयोः स्वायं विशेषः सातासाते क्रमेणोदयप्राप्तवेदनीयकर्म्मपुद्गलानुभवलक्षणे सुखदुःखेतुपरेण उदीर्यमाणवेदनीयकर्म्मानुभवलक्ष
णेतथा अब्भुवगमुवक्कमियत्ति, द्विधावेदना आभ्युपगमिकी औपक्रमिकीचेति तत्राद्यामभ्युपगमतो वेदयन्ति जीवा यथा साधवः शिरोलोचनब्रह्मचर्यादि ॥ टीका ॥
कां द्वितीयांतु स्वयमुदीर्णस्यो दीरणाकरणेन चोदय मुपनीतस्य वेदनीयस्यानुभवतः तत्र पञ्चेंद्रियतिर्यग्मनुष्या द्विविधामपि शेषास्त्वौपक्रमिकी मेववेद
यंतीति तथाणीयाएचेव अणियाएत्ति द्विविधा वेदना तत्र निदयाआभोगत अनिदयात्वनाभोगत स्तत्र संज्ञिन उभयतो ऽसंज्ञिनस्त्व निदयेति एतत्द्वारवि
वरणाय नेरइयाणमित्यादि इहावसरे प्रज्ञापनायाः पञ्चत्रिंशत्तम स्वेदनाख्य स्मद मध्येयमिति अनन्तरं वेदनाप्ररूपिता साच लेश्यावत् एव भवतीति

णंभंते किंसीतंवेयणंवेयंति उसिणं वेयणं। सीतोसिणंवेयणं। गोयमा नेरइयाएवंचेव वेयणापदंभाणियव्वं। ॥ मूल ॥

साता सातते अनुक्रमे उदयप्राप्तवेदनीयकर्मपुद्गलनो भोगिवो। सुखदुःखते परेउदीर्यमाण वेदनीयकर्म पुद्गलनो भोगिवो। तथा अभुवगमुवक्कमियत्ति। विहुं
प्रकार वेदनी अभ्युपगमिका अनेउपक्रमिका। पहिलीवेदना आगमीने ले एतले स्वीकारकरीनेले। जिमयतीशिरलोचादिकनी वेदनावेदे। बीजी सेउदी
रणाकरने तथा पोते आपणे उदयआवी वेदनावेदे। तिहां तिर्यंच पंचेन्द्रिय मनुष्य विहुं वेदना आगमीनेले जिमवेदनावेदे। तथा णीयाएत्ति। विहुं प्रकारे ॥ भाषा ॥
वेदना एकआभोगतः जाणपणेवेदे तेणीयावेदना। बीजो अजाणपणे वेदना तेअणीयावेदना। तिहां संज्ञी पंचेंद्रियणीयावेदनावेदे। असंज्ञीअणीयावेदनावे
दे। हेपूज्यनारकी किम शीतवेदनावेदे। किंवाउष्णवेदनावेदे किंवाशीतोष्ण वेदनावेदे। गीतम नारकीनी वेदना एहपन्नवणाना पैत्रीसमापदथकी भणिवो

॥ टीका ॥

लेश्याप्ररूपणायाह कइणंभंते इत्यादि इहस्थाने प्रज्ञापनायाः सप्तदशं षडुद्देशकं लेश्याभिधानं पद मध्येतव्यं तच्चास्माभि रतिबहुत्वा दर्थतोपि न लिखितमि ति ततएवा वधारणीय मिति अनन्तरं लेश्या उक्ताः सालेश्याएवचाहारयंती त्याहारप्ररूपणाय. अणंतरायेत्यादि द्वारश्लोकमाह तत्र अणंतराय आहारे त्ति अनन्तरावाव्यवधानाद्याहारविषये अनंतराहाराजीवा वाच्याइत्यर्थः तथा हारस्याभोगताअपिचेति वचना दनाभोगताच वाच्या तथा पुद्गला न जा नंत्येव एवकारा न पश्यंतीति चतुर्भङ्गी सूचिता तथा अध्यवसानानि सम्यक्त्वञ्च वाच्यमिति तत्राद्यद्वारार्थमाह नेरइएत्यादि अनंतराहारएत्ति उपपातक्षेत्रप्रा प्तिसमय एवा हारयंतीत्यर्थः ततोनिव्वत्तणयाएइति ततः शरीरनिर्वृत्तिः ततोपरियाइयणयत्ति ततःपर्यापान मङ्गप्रत्यङ्गैः समन्ता त्पानमित्यर्थः ततोपरिणा

॥ मूल ॥

कतिणंभंतेलेसाउ प० गोयमाछलेसाउ प० तं० । किण्हा नीला काउ तेउ पउमा सुक्का । एवंलेसापदंभा णियव्वं । अणंतरायआहारे आहाराभोगणाइया पोग्गलानेवजाणंति अज्झवसाणेयसम्मत्ते ॥ १ ॥ नेरइ याणं भंते अणंतराहारा ततोनिव्वत्तणया ततोपरियाइयणया ततोपरिणामणया ततोपरियारणया ततोपच्छा

॥ भाषा ॥

हेभदंत केतला प्रकारनी लेश्याकही। गौतम ६ प्रकारनी कही। तकहेछे। कृष्णलेश्या १ नीललेश्या २ कापोतलेश्या ३ तेजोलेश्या ४ पद्मलेश्या ५ शु क्ललेश्या ६ एम लेश्या पद सतरमो पन्नवणाथी भणिवो। हिवे आहारनो अधिकार पूछेछे। जीव आंतरा रहित आहार करेछे। आंतरे आंतरे तथा आहारनो आभोगपणो जाणीने ले तेआभोग। बीजो अनाभोग। आहारना पुद्गलने जांणके नजाणे। अध्यवसाय मनना परिणाम। तथा सम्यक्त। ए ह ५ पदकहिवा। नारकी जीव अनंतर आहार करेछे। उपजिवाने क्षेत्रे जइ उपनो तेण समये करे। तिवारे पछे शरीरनोपजावे। तिवारे पछे आ

मयत्ति ततःशब्दादिविषयोपभोगइत्यर्थः ततोपच्छाविउव्वणयत्ति ततःपश्चाद्विक्रिया नानारूपाइत्यर्थः हन्तागौतम एवमेतदितिभावः एवं सर्वेषा म्पञ्चेन्द्रिया णां वक्तव्य नवरं देवानां पूर्वम्विकुर्वणा पश्चात्परिचारणा शेषाणान्तु पूर्वम्परिचारणा पश्चाद्विकुर्व्वणा एकेन्द्रियादीनामप्येव म्प्रश्ने निर्वचनेतु यत्र वैक्रियसम्भवो नास्ति तत्र विकुर्वणा निषेधनीयेति एवमाहारपयंभाणियव्वंति यथा दाहारस्यप्रश्न उक्त स्तथा तदुत्तरंशेषद्वाराणिच भणद्भिः प्रज्ञापनाया श्चतुस्त्रिंशत्तम म्परिचारणापदाख्य म्पदमिहभणितव्यमिति इदञ्चात्राहारविचारप्रधानतया आहारपदमुक्तमिति तत्पुनरेव मर्थतः तत्र आहाराभोगणाइयत्ति एतस्यवि वरणं नारकाणां किमाभोगनिवर्त्तित आहारो ऽनाभोगनिवर्त्तितोवा उभयथापीति निर्वचन मेवं सर्वेषां नवर मेकेन्द्रियाणा मनाभोगनिवर्त्तित एवेति तथापोग्गलामेवजाणंतित्ति अस्यार्थः नारका यान् पुद्गलान् आहारयन्ति तानवधिनापि नजानन्ति अविषयत्वात्तदवधे स्तेषां नपश्यन्ति चक्षुषापि लोमा हारत्वात् तेषा मेव मसुरादय स्त्रीन्द्रियांताः कथमेकेंद्रिया अनाभोगाहारत्वा द्वित्रीन्द्रियाश्च मत्यज्ञानित्वा न्नजानन्ति चक्षुरिन्द्रियाभावाच्च न पश्यन्तीति चतुरिन्द्रियास्तु चक्षुः सद्भावेपि मत्यज्ञानित्वात् प्रक्षेपाहारं नजानन्ति चक्षुषानुपश्यंति तथा तएवलोमाहारमाश्रित्य नजानन्ति नपश्यंतीति व्यपदिश्यते च क्षुषोविषयत्वात्तस्य पञ्चेंद्रियतिर्यञ्चो मनुष्याश्च केचिज्जानंति पश्यन्ति चावधिज्ञानादियुक्ताः लोमाहारं प्रक्षेपाहारञ्च जानंत्यवधिना नपश्यंति चक्षुषा तथा मन्ये न जानंति तत्र नजानंति प्रक्षेपाहारं मत्यज्ञानित्वा त्पश्यंति चक्षुषा तथा अन्ये नजानंति नपश्यन्ति लोमाहारं निरतिशयत्वादिति व्यंतरज्योति ष्का नारकवत् वैमानिकास्तु ये सम्यग्दृष्टय स्ते जानंति विशिष्टावधित्वात् पश्यंतीचक्षुषोपि विशिष्टत्वात् मिथ्यादृष्टयस्तु नजानंति नपश्यन्ति प्रत्यक्षपरोक्ष ज्ञानयो स्तेषा मस्पष्टत्वादिति तयाअज्झवसाणेयत्ति दारं नारकादीना मप्रशस्ता प्रशस्तान्यसंख्येयान्यध्यवसायानीति तथा संमत्तेत्ति दारं तत्र नारकाः किं सम्यक्त्वाभिगमिनो मिथ्यात्वाभिगमिनः सम्यक्त्वमिथ्यात्वाभिगमिनश्चेति त्रिविधा अप्येवं सर्वेपि नवर मेकेंद्रियाः मिथ्यात्वाभिगमिनएवेति अनन्तर माहारमक्तं

यथा कृता हारचायुर्बंधवता मेव भवतीत्यायुर्बंधप्रकृप गाथाह कइविहेत्यादि तत्रायुषो बन्धनिषेक आयुर्बन्धः निषेकश्चप्रतिसमय बहुहीनमहीनतरस्य द॑ ॥ टीका ॥
लिकस्या नुभवनार्थं रचना निधत्तमपोह निषेकउच्यते अतएवाह जाइनामनिधत्ताउए जातिनाम्नासह निधत्तम् निषिक्त मनुभवनार्थं बहुल्यात्पतरक्रमेण
व्यवस्थापितमायु र्जातिनामनिधत्तायुः अथकिमर्थं जात्यादिनामकर्म्मणायु विशेष्यते आयुष्कस्य प्राधान्योपदर्शनार्थं यस्मा न्नारकाद्यायुरुदये सति जात्या
दिनामकर्म्मणा मुदयो भवति नारकादिभवोपग्राहकं चायुरेव यस्मा द्वाख्या प्रज्ञप्त्यामुक्तं नेरइएणंभंतेनेरइएसु उववज्जइ अनेरइए नेरइएसुउववज्जइ गोय
मा नेरइएनेरइएसुउववज्जइ नो अनेरइएनेरइएसुउववज्जइ एतदुक्तंभवति नारकायुः प्रथमसमयसंवेदनकालएव नारक इत्युच्यते तत्सहचारिणाञ्च पञ्चेंद्रिय
जात्यादिनामकर्म्मणा मप्युदय इति तथा गतिनामनिधत्ताउएत्ति गतिर्नारकगत्यादि तल्लक्षणं नामकर्म्म तेनसह निषिक्तमायु र्गतिनामनिषिक्तायुः तथा
ठिईकालनामनिधत्ताउएत्ति स्थिति र्यथास्थातव्यं तेन भाविनायुर्दलिकस्य सैवनामपरिणामोधर्म्मइत्यर्थः स्थितिर्नाम गतिजात्यादिकर्म्मणाञ्च प्रकृत्यादिभेदेन

विकुव्वणया हंतागोयमाएवंआहारपदंभाणियव्वं । कइविहेणं भंते आउगबंधेपन्नत्ते गोयमाछव्विहे पन्नत्ते ॥ मूल ॥

हारलोधोहोय तेशरीरने विषे परिणमावे । तिवारपछे विषय सेविवानी इच्छा । तिवारपछे विकुर्वणा करे । एहवो प्रश्न पूछ्यापछे भगवंत कहेछे । ॥ भाषा ॥
एमहोज हेगौतम जिमतूकहेछे तिमजछे । इहां पन्नवणानो चोत्रीसमो आहार पद भणिवो । केतले प्रकारे हेपूज्य आऊखानोबंध कह्यो । हेगौतम ६ प्र
कारे । तेकहेछे । जातिनाम साथे भोगिवाने अर्थे थाप्यो थोडो तथा घणो ते जातिनामनिधत्तायु १ । एम नरकगत्यादिक लक्षण नामकर्म तेहने साथे
थाप्यो बांध्यो ते गतिनामनिधत्तायु २ । एम आऊखाना दलनो जेणे भवे नियत रहिवोते स्थितिनाम अथवा गति जात्यादि कर्मप्रकृति भेदेकरी जे स्थि

॥ टीका ॥ चतुर्विधानां यः स्थितिरूपोभेद स्तत् स्थितिनाम तेनसह निधत्तमायुः स्थितिनामनिधत्तायुरिति पएसनामनिधत्ताउएत्ति प्रदेशाना ममितपरिणामाना मायुः कर्म दलिकानां नामः परिणामोदयः तथाक्षप्रदेशेषु सम्बन्धनं स प्रदेशनामो जातिगत्यवगाहनाकर्मणा म्वा यत्प्रदेशरूपं नामकर्म तत्प्रदेशनाम तेन सह निधत्तमायुः प्रदेशनामनिधत्तायुरिति तथा अणुभागनिधत्ताउएत्ति अनुभाग आयुः कर्मद्रव्याणां तीव्रादिभेदोरसः सएव तस्य वा नामः परिणामो

॥ २३४ ॥ नुभागनाम अथवा गत्यादीनांनामकर्मणा मनुभागबन्धरूपो भेदो ऽनुभागनाम तेनसह निधत्तमायु रनुभागनामनिधत्तायुरिति तथा ओगाहणानामनिध त्तायुएत्ति अवगाहते जीवो यस्यां सा वगाहना शरीरमौदारिकादि पञ्चविधं तत्कारणं कर्माप्यवगाहना तद्रूपन्नामकर्मा वगाहनानाम तेनसह निधत्तमा युरवगाहनानामनिधत्तायुरिति नेरइयाणमित्यादि स्पष्टं अनन्तरमायुर्बन्धउक्तो ऽधुनाबद्धायुषां नारकादिगतिषूपपातो भवतीति तद्विरहकालप्ररूपणायाह

॥ मूल ॥ तंजहा । जाइनामनिहत्ताउए गतिनामनिहत्ताउए ठिईनामनिहत्ताउए पएसनामनिहत्ताउए अणुभागनाम

॥ भाषा ॥ ति तें स्थिति निधत्तायु ३ । प्रदेश परिमाण जे आऊखानादलनो परिमाण तेहने साथे बांध्यो आयु ते प्रदेश निहत्तायु ४ । आयुकर्मद्रव्यनो तीव्रादिक भेदें जेरस तेअनुभाग तेहने साथे बांध्यो आयु तेह अनुभागनामनिधत्तायु ५ । अवगाहीने रहे जीव जिहां तेअवगाहना औदारिकादि ५ भेदे तेहनो कारण कर्म तेहीपिण अवगाहनारूप नामकर्म अवगाहना ६ । नारकीनो हे पूज्य केतले प्रकारे आऊखानो बंध कहियो । हे गौतम ६ प्रकारे नाकीनो आऊखानो बंध ६ प्रकारे । तेकहेछे । जातिनाम निहत्तायु १ । गतिनाम निहत्तायु २ । स्थितिनाम निहत्तायु ३ । प्रदेशनाम निहत्तायु ४ । अनुभागना म निहत्तायु ५ । जिहांलगे अवगाहना निहत्तायु ६ भेदहोवे ६ । एम २४ दंडके ६ भेदे आऊखानो बंध कहियो जिहांलगे वैमानिक देवता आवे ।

॥ टीका ॥

निरयगतीणमित्यादि कंठ्यं नवरं यद्यपि रत्नप्रभादिषु चतुर्विंशतिमुहूर्त्तादिविरहकालो यथोक्तं चउवीसाइमुहुत्ता सत्तअहोरत्ततहयपन्नरसा मासोयदोयचउ रो छम्मासाविरहकालो उएत्ति ॥ १ ॥ तथापि सामान्यगत्यपेक्षया द्वादशमुहूर्त्ता उक्ताः तथा एवंकरणा द्य त्तिर्यग्मनुष्यगत्योः सामान्येन द्वादशमुहूर्त्ता उक्ताः तद्भव्युत्क्रान्तिकापेक्षया देवगतौतु सामान्यतएव सिद्धिवज्जाउव्वट्टणेत्ति नारकादिगतिषु द्वादशमुहूर्त्तो विरहकाल उद्वर्त्तनाया मिति सिद्धानां तूद

॥ मूल ॥

निहत्ताउए तुगाहणानामनिहत्ताउए । नेरइयाणंभंते कइविहे आउगबंधे पन्नत्ते गोयमा छव्विहे पन्नत्ते । तंजहा । जातिनामगतिनामठिईनामपएसनामअणुभागनामओगाहणानाम एवंजाववेमाणियाणं निरयगईणं भंते केवइयंकालं विरहिया उववाएणं । गोयमा जहन्नेणं एक्कंसमयं उक्कोसेणं बारसमुहुत्ते । एवंतिरियग इ मणुस्सगइ देवगइ सिद्धिगईणं भंते केवइयंकालं विरहिया सिज्झयणा पन्नत्ता । गोयमा जहन्नेणं ए

॥ भाषा ॥

हिवे उपपात विरह च्यवन विरह आश्री प्रश्न करेछे। नरक गतिमांहि हे पूज्य केतलो उपपात विरह। हे गौतम नारकीनो जघन्य उपपात विरह १ समय एक नारकीनें उपनापछी बीजो१ समयनें आंतरे उपजे यद्यपि रत्नप्रभादिकने विषे २४ मुहूर्त्तादिक विरह काल कह्योछे यदाह। चोवीसायमुहुत्ता सत्तअहोरत्ततहयपन्नरसा । मासोयदोयचउरो छम्मासो विरहकालोउत्ति ॥ १ ॥ तोहो पिण सामान्यगति अपेक्षाये १२ मुहूर्त्त कह्या। उत्कृष्टपणे १२ मुहूर्त्त जाणवा। एम तिर्यंचगति मनुष्यगति देवगति नोउपपात जाणिवो। हिवे सिद्धिगतिनो उपपात केतलेकाले सोझवो कह्यो। हेगौतम जघन्य १ समये १ सिद्ध उपनापछे बीजो सिद्ध १ समयमा अंतरथी उपजे। उत्कृष्ट ६ मासनो विरह। एम जिम उपपात विरह तिमहीज च्यवनविरह। एक चव्यां पछे

॥ टीका ॥

॥ २२५ ॥

र्मनैव नास्ति अपुनरावृत्तित्वा त्तेषामिति इमीसेणंरयणप्पभाएपुढवीए नेरइयाकेवइयंकालंविरहियाउववाएणं पणत्ता एवंउववायदंडओभाणियव्वोत्ति सचा यं गोयमा जहणेणंएक्कंसमयं उक्कोसेणंचउवीसंमुहुत्ताइं अनेनाभिलापेन शेषावाच्या: तथाहि सक्करप्पभाए उक्कोसेणंसत्तराइंदियाणि वालुयप्पभाए अद्धमासं पंकप्पभाएमासं धूमप्पभाए दोमासा तमप्पभाए चउरोमासा अहेसत्तमाएछमासत्ति असुरकुमाराचउवीसइमुहुत्ता एवंजावथणियकुमारा पुढविकाइया अवि रहियाउववाएणं एवंसेसावि बेइंदिया अंतोमुहुत्तं एवंतेइंदियचउरिंदियसमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्ख जोणियाविगब्भवक्कंतियतिरियमणुयाय बारसमुहुत्ता समुच्छिमणुस्सा चउवीसाइंमुहुत्ताविरहिया उववाएणं वंतरजोइसियाचउवीसं मुहुत्ताइं एवं सोहम्मीसाणेवि सणंकुमारे णवदिणाइं वीसायमुहुत्ता माहिं दे बारसदिवसाइंदसमुहुत्ता बंभलोए अद्धतेवीसंराइंदियाइं लंतएपणयालीसं महासुक्केअसीइं सहस्सारेदिणसयं आणएसंखेज्जामासा एवंपाणएवि आरणे संखेज्जावासा एवंअच्चुएवि गेवेज्जपत्थडेसुतिसुकमेणसंखेज्जाइं वाससयाइं वाससहस्साइं वाससयसहस्साइं विजयाइसु असंखेज्जंकालं सव्वट्ठसिद्धे पलिओवम स्सासंखेज्जइभागंति एवंउव्वट्टणाइंति उपपातउद्वर्त्तनाचायुर्बंधेएव भवतीत्यायुर्बन्धविशेषप्ररूपणायाह नेरइएत्यादि कंठ्यं नवरं आकर्षोनाम कर्मपुद्गलोपा

॥ मूल ॥

क्कं समयं उक्कोसेणं छम्मासे एवंसिद्धिवज्जा उव्वट्टणा । इमीसेणं भंतेरयणप्पभाए पुढवीए नेरइया केवइयं

॥ भाषा ॥

वीजोपसे । पिण सिद्धने उद्वर्त्तनां च्यवन नथी सिद्धथकी निकलवो नथी । हिवे रत्नप्रभा पहिली नरक पृथिवी आश्री पूछेछे । हेपूज्य एणीये रत्नप्रभाने वि षे केतलो नारकीनो उपपात विरह । जिम ओघवचने पूर्वे कह्यो तिमज कहिवो । जघन्य १ समय उत्कृष्ट २४ मुहूर्त्त एम २४ दंडकनो टीका तथा ग्रं थांतर थकी आणिवो । रत्नप्रभाने विषे जिम उपपात विरह तिम इहां पणि कहिवो । च्यवन विरह पिण कहिवो । हेपूज्य नारकी जातिनाम निद्धत्तायु,

दामं यथा गोःपानीयम्पिबती भयेन पुनःपुनः आकृष्ट्वति एवञ्जीवोपि तीव्रेणायुर्बन्धाध्यवसानेन सकृदेव जातिनामनिधत्तायुः प्रकरोति मन्देनद्वाभ्यामाक र्षाभ्यामन्दतरेणत्रिभिर्मंदतमेन चतुर्भिः पञ्चभिः षड्भिः सप्तभिरष्टाभिर्वानपुनर्नवभिरेवं शेषाण्यपि आउगणित्ति गतिनामनिधत्तायुरादीनिवाच्यानिया वद्वैमानिकाइति अयचैकाद्याकर्ष नियमोजात्यादिना कर्मणानामायुर्बन्धकालएवबंध्यमानानां नशेषकालमायुर्बन्धपरिसमाप्तेरुत्तरकालमपि बन्धोस्त्येवैषां ध्रुवबन्धिनीनाञ्च ज्ञानावरणादिप्रकृतीना मतिसमयमेवबन्धनिवृत्तिर्भवत्येतास्तुपरावृत्त्याबध्यन्तइति अनन्तरञ्जीवानामायुर्बन्धप्रकार उक्तो ऽधुनातेषामेव संहननसंस्थानवेदप्रकारानाह कइविहेणमित्यादि दण्डकत्रयं कंठ्यम् नवरं संहनन मस्थिबन्धविशेषः मर्कटस्थानीयमुभयोः पार्श्वयो रस्थि नाराचं ऋषभस्तु ॥ टीका ॥

कालं विरहिया उववाएणं। एवं उववायदंडजनाणियव्वो। उवट्टणादंडउय। नेरइयाणं भंते जातिनामनि हत्ताउगं कतिआगरिसेहिं पगरंति सिय १ सिय २ ३। ४। ५। ६। ७। सियअट्ठहिं नोचेवणंनव ॥ मूल ॥

करेछे। आकर्ष करी कर्मपुद्गलनो अंगीकार करिवो जिम गाय पाणी पोतीथकी भयेकरी वलीवली हिंसारी करी पीवे तिम जीवपणि तीव्र आयुबंधाध्य वसायेंकरी १ वेला जातिनाम निहत्तायु करे। स्यात्कदाचित् मन्दाध्यवसायें जातिनाम निहत्तायु करे तो बेआकर्षकरे। मंदतरे करेतो त्रिहुयें करे। एम विहुंये।पांचे। छये। साते। आठें करे। पशत्ति शेष थाकता २३ दंडकनाजीवना नारकीनो परे आकर्ष कहिवा जिहांलगे वैमानिक देवता आवे। हिवे पूर्वे आयुबंध कह्यो तेसंघयणमा धणीने होय तेमाटे संघयण कहेछे। केतले प्रकारे हेभदंत संघयण कह्यो। हेगौतम ६ भेदे संघयणअस्थिबंधविशेष कह्यो। तेकहेछे। मर्कटनेठामे बिहुंपासे हाडते नाराच कहिये। ऋषभते पाटो वज्रते कीलिका एत्रिणवाना जिहां होय तेवज्र ऋषभनारायसंघयण कहिये १। ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

पट्टं वस्त्रं कीलिका वज्रश्च ऋषभश्च नाराचश्च यत्रास्ति तद्वज्रर्षभनाराचं संहननं मर्कटकपट्टकीलिकारचनायुक्तः प्रथमो द्वितीयः मर्कटपट्टकीलिकाभ्यां द्विती यः मर्कटयुक्तस्तृतीयः मर्कटकैकदेशबन्धनद्वितीयपार्श्वकीलिकासम्बन्धः चतुर्थः अङ्गुलिद्वयसंयुक्तस्य मध्य कीलिकैवदत्ता यत्र तत्कीलिकासंहननं पञ्चमं यत्रा स्थीनि चर्मणा निकाचितानि केवलं तत्सेवार्त्तं स्नेहपानादीनां नित्यपरिशीलनामेवा तया ऋतं प्राप्तं सेवार्त्तमितिषष्टं छण्हंसंघयणाणंअसंघयणेत्ति उक्ता ॥ २२६ ॥ पाणां षण्णां संहनननामन्यतमस्याप्यभावेन संहनिनो ऽस्थिसंचयरहिता अतएवाह नेवट्ठी नेवछीरा नेवण्हारु त्ति नैवशिराधमन्यः नैवण्हाउत्ति नैवस्नायूनीति कृत्वा संहननाभावः तत्रहितानांहि प्रचुरमपि दुःखमबाधाविधायिस्यात् नारकास्त्वत्यंत शीतादिबाधिता इति नचास्थिसञ्चया भावे शरीरं

॥ मूल ॥

छीहिं एवं सेसाणविग्गलाणुगा करिसाणि जाव वेमाणियाणं । कइविहेणं भंते संघयणे पन्नत्ते । गोयमा छ व्विहे पन्नत्ते । तंजहा वइरोसभनारायसंघयणे रिसभनारायसंघयणे नारायसंघयणे अद्धनारायसंघयणे कीलियासंघयणे छेवट्ठसंघयणे । नेरइयाणं भंते किंसंघयणी । गोयमा छण्हंसंघयणाणंअसंघयणी । णेव

॥ भाषा ॥

बीजो ऋषभनाराच ते मर्कट किलिका सहित २ । त्रीजो नाराच संघयण मर्कट सहित ३ । चउथो अर्द्धनाराच एकेपासे मर्कटबंध बीजेपासेकीलो ४ । पांचमो कीलिका अंगुलबेने संयुक्तने मांहि कीलिका १ जिहांदीधी ते कीलिका संघयण ५ । सेवर्त्त तेजिहां हाडिकाचर्मवींटी छे घृत तेलना सेचेंकरी पाम्यो ते सेवार्त्त संघयण ६ । हिवें नारकी आश्री संघयण पूछेछे । हे भगवंत नारकीमांहि के संघयण पामिये । हे गौतम पूर्वोक्तछहुंमांहि १ छनपामिये हाडनही नाडीनही मोटीनशानथी जेनारकीमा पुद्गलछे तेअनिष्ट अवल्लभ अकांत अप्रिय द्वेषकरवायोग्य अनादेय अशुभ प्रकृतिथीअसुंदर अमनोज्ञ

नोपपद्यते स्वभ्रवत्तदुपपत्तेः अतएवाह जेपोग्गलेत्यादि येपुद्गला अनिष्टा अवल्लभाः सदैवेषां सामान्येन तथा अकान्ता अकमनीयाः सदैव तद्भावेन तथा अ ॥ टीका ॥
प्रिया द्वेष्याः सर्वेषामेव तथा शुभाः प्रकृत्यसुन्दरतया अमनोरमाः कथयापि तथा अमणामा नमनःप्रिया चिन्तयापि तेएवम्भूताः पुद्गला स्तेषां नारकाणां
असंघयणत्ताएत्ति अस्थिसञ्चयविशेषरहितशरीरतया परिणमति कइविहेसंठाणेत्यादि तत्र मानोन्मानप्रमाणानि अन्यूनान्यनतिरिक्तानि अङ्गोपाङ्गानिच
यस्मिन् शरीरसंस्थाने तत्समचतुरस्रं संस्थानं तथा नाभितउपरि सर्वावयवाश्चतुरस्रलक्षणा ऽविसंवादिनो ऽधस्तु तदनुरूपंयत्तद्भवति तन्न्यग्रोधं संस्थानं तथा
नाभितोऽधः सर्वावयवा चतुरस्रलक्षणाअविसम्वादिनो यस्योपरिच यत्तदनुरूपं नभवति तत्सादिसंस्थानं तथाग्रीवाहस्तपादा असमचतुरस्रलक्षणयुक्ता
यत्र संक्षिप्त स्विकृतश्च मध्ये कोष्टं तत्कुब्जं संस्थान न्तथा यत्रलक्षणयुक्तकोष्टं चतुरस्रलक्षणोपेतं ग्रीवाद्यवयवहस्तपादश्च तद्वामन न्तथा यत्र हस्तपादाद्यवयवा

णेवच्छिरा णेवण्हाऊ जेपोग्गलाअणिठा अकंता अप्पिया अणाएज्जा असुभा अमणुन्ना अमणामा ॥ मूल ॥
तेतेसिं असंघयणत्ताए परिणमंति । असुरकुमाराणं किंसंघयणा पन्नत्ता । गोयमा छण्हंसंघयणाणं असं
घयणी णेवठ्ठी णेवच्छिरा णेवण्हाऊ जेपोग्गला इठ्ठा कंता प्पिया मणुन्ना मणाभिरामा तेतेसिं असंघयण

अमनोरम । तेह नारकोने असंघयणपणे परिणमेछे । अस्थिसंचयरहित शरीर परिणामे परिणमे । हेपूज्य असुर कुमार कोण संघयणे कह्या । ॥ भाषा ॥
हे गोतम छ संघयण मांहि असंघयणी हाडनथी शिरानथी छोटोनशनथी बडोनशनथी असुर कुमारना जेह पुद्गल पदार्थ छे तेह इष्ट वल्लभ छे कांतकम
नीय प्रियमनोज्ञ मनोभिराम ते तेहने असंघयणपणे परिणमें । एम नागकुमार थकी मांडी जिहांलगे स्तनितकुमार दशमोनिकाय तिहांलगे असंघय

 त्ताए परिणमंति । एवं जावथणियकुमाराणं पुढवी किंसंघयणी पन्नत्ता । गोयमा छेवठसंघयणी प० एवं जावसमुच्छिम पंचिंदियतिरिक्खजोणियत्ति । गब्भवक्कंतिया छव्विहसंघयणी समुच्छिम मणुस्साणं छेवठ संघयणी गब्भवक्कंतियमणुस्साणं छव्विहे संघयणे प० । जहाअसुरकुमारा तहावाणमंतर जोइसिय वेमाणि

॥ २२७ ॥ याय । कइविहेणं भंते संठाणे पन्नत्ते । गोयमा छव्विहे संठाणे प० तं० । समचउरंसे १ णिग्गोहे २ साइए ३ खुज्जे ४ वामणे ५ हुंडे ६ । णेरइयाणं भंते किंसंठाणी प० । गोयमा हुंडसंठाणी प० । असुर

णी कहिवा । हिवे पृथिवी आश्री पूछेछे । हेपूज्य पृथिवीनो कोण संघयण हेगौतम छेवठो संघयण । एम ५ थावर ३ विकलेंद्री समूर्च्छिम पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिया जीव सर्व छेवठे संघयणे कहिवा । गर्भ व्युत्क्रांत तिर्यंचना ६ संघयण । समूर्च्छिम मनुष्यनो छेवठो संघयण । गर्भजना छहुं संघयण जाणिवा जिम असुर कुमार असंघयणी कह्या तिमज वाणव्यंतर ज्योतिषी वैमानिक देव जाणिवा । हिवे संस्थान आश्री पूछेछे । हेभदंत संस्थान केतलाछे । हे गौतम संस्थान ते आकार विशेष ६ प्रकारे कह्यो । तेकहेछे । मान उन्मान प्रमाणोपेत ओछा अधिकानहो अंगोपांग जेहना तेसमचतुरस्र संस्थान १ तथा नाभि ऊपर सगला अवयव चतुरस्र होय नाभिहेठे आकारमांठो होय ते न्यग्रोध परिमंडल २ । तथा नाभियकीहेठे सगला अवयव चतुरस्र होय नाभि ऊपर मांठाहोय ते सादिसंस्थान ३ । तथा ग्रीवा हाथ पांव समचतुरस्रहोय मध्यकोठो संक्षिप्त होय नानूंहोय ते कुब्ज संस्थान ४ । तथा लक्षणोपेत कोठोहोय अने हाथ पग ग्रीवा तेछोटाहोय तेवामनसंस्थान ५ । तथा हस्त पादादिक अवयव अप्रमाणोपेत होय तेहुंडकसंस्थान ६ । नारकीनो

बहुप्राय। प्रमाणविसम्वादिनश्च तद्धुण्डमित्युच्यते कइविहेवेदेत्यादि तत्र स्त्रीवेदः पुंस्कामिता पुरुषवेदः स्त्रीकामिता नपुंसकवेदः स्त्रीपुंस्कामितेति एतेंच ॥ टीका ।

कुमाराकिंसंठाणी प० गोयमा समचउरंससंठाण संठिया प० एवं जावथणियकुमारा। पुढवी मसूरियसं ॥ मूल ॥
ठाणा प०। आउथिवुयसंठाणा पन्नत्ता। तेऊसूइकलावसंठाणा पन्नत्ता। वाऊपडागसंठाणे पन्नत्ते। वण
स्सई नाणासंठाणसंठिया पन्नत्ता। वेइंदियतेइंदियचउरिंदिय समुच्छिम पंचेंदियतिरिक्खाहुंडसंठाणा प०
गब्भवक्कंतियाछव्विहसंठाणा। समुच्छिम मणुस्सहुंडसंठाणसंठिया पन्नत्ता। गब्भवक्कंतियाणं मणुस्साणं छ
व्विहासंठाणा पन्नत्ता। जहाअसुरकुमारा तहावाणमंतरजोइसियवेमाणिया। कइविहेणं भंतेवेए प०। गो

हे पूज्य कोण संठाणकह्यो। हेगोतम हुंड संस्थान कह्यो। असुर कुमार देवता समचउरंस संस्थान संस्थित कह्या। जिहां लगे दशमो निकायना स्तनि ॥ भाषा ॥
त कुमार आवे। पृथिवी मसूर धान्य ने संस्थाने संस्थित कहो। पांणीनो संस्थान पाणीनापपोटा कह्यो। अग्निनो संस्थान सूचीकलाप सूईना समूहने
संस्थानेकह्यो। वायुनो पताका संस्थान कह्यो। वनस्पती अनेक प्रकारे संस्थितकहो। वेइन्द्री तेइन्द्री चोइन्द्री समूर्च्छिम पंचेंद्री तिर्यंचनो हुंड संस्थान क
ह्यो। गर्भज तिर्यंच ६ संस्थान संस्थित कह्या। समूर्च्छिम मनुष्यनो हुंड संस्थान। गर्भजमनुष्य ६ संस्थान संस्थित कह्या। जिम असुर कुमार समच
उरंस संस्थान संस्थित कह्या तिमज वाणव्यंतर ज्योतिषी अने वैमानिक कहिवा। हे भदंत वेद केतले प्रकारे कह्या। गौतम ३ प्रकारे कह्या। ते कहेछे।

पूर्वोदिता अर्थाः समवसरणस्थितेन भगवता देशिता इति समवसरणवक्तव्यता माह। तेणमित्यादि इह णकारौ वाक्यालङ्कारार्थौ वत स्रे इति प्राकृतत्वात् तस्मिन् काले सामान्ये दुःखमसुखमालक्षणे तस्मिन् समये विशिष्टे यत्र भगवानेव विहरतिस्मेति कप्पस्स समोसरणं नेयव्वंति इहावसरे कल्पभाष्यक्रमेण स ॥ टीका ॥

॥ २२८ ॥ यमा तिविहेवेए प० । इत्थीवेए पुरिसवेए णपुंसगवेए । नेरइयाणं भंते किंइत्थीवेया पुरिसवेया णपुंसग वेया प० । गोयमा णोइत्थीवेया णोपुरिसवेया णपुंसगवेया प०। असुरकुमाराणं भंते किं इत्थीपुरिस न पुंसगवेया । गोयमा इत्थीपुरिसवेया णो णपुंसगवेया । जावथणियकुमारा । पुढवीआऊतेउवाऊवणस्स ई बितिचउरिंदियसमुच्छिम पंचिंदियतिरिक्खसमुच्छिम मणुस्सा णपुंसगा । गब्भवक्कंतियमणुस्सा पंचिंदिय तिरियायतिवेया जहाअसुरा तहावाणमंतरजोइसियवेमाणिया । तेणं कालेणं तेणं समएणं कप्पस्ससमोसर ॥ मूल ॥

स्त्रीवेद १ । पुरुषवेद २ । नपुंसकवेद ३ । नारकीनो हे भदंत स्यूं स्त्रीवेद किंवा पुरुषवेद किवा नपुंसकवेद । हे गौतम स्त्रीवेद नथी पुरुषवेद नथी नपुंस कवेदहोय । असुर कुमारने हे पूज्य किंस्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद होय । गोयमा स्त्रीवेदहोय पुरुषवेदहोय नपुंसकवेद नहोय । एम जिहां लगे स्तनि तकुमार आवे तिहांलगे कहिवो । पृथ्वि आऊ तेज वायू वनस्पत बेइन्द्री तेइन्द्री चौइन्द्री समूर्च्छिम पंचेंद्रियतिर्यंच समूर्च्छिम मनुष्य एतलानो नपुंस कवेद । गर्भजतिर्यंच गर्भज मनुष्य त्रिवेदी । जिम असुर कुमारमांहि पुरुषस्त्री बेवेद कह्या तिम वाण व्यंतर ज्योतिषी वैमानिक मांहि कहिवा । तेणे का ले चउथे आरे तेणें समयें जेणे समये भगवंत विहार करे छे तेणे अवसरे कल्पभाष्यने अनुक्रमें अनुयायी समोसरणनी वक्तव्यता कहिवी । वाचनातरे ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

भवसरणवक्तव्यता ध्येयासा चावश्यकोक्ता या नव्यतिरिच्यते वाचनान्तरेतु पर्युषणाकल्पोक्तक्रमेण त्वभिहितं कियद्दूरमित्याह जावगणेत्यादि तत्र गणधरः प- ञ्चमः सुधर्माख्यः सापत्यः शेषानिरपत्या अविद्यमानशिष्यसन्ततय इत्यर्थः वोच्छिन्नत्ति मिहादिति तथाहि परिनिव्वुयागणहरा जीवन्ते नायएनवजणा आ इंदभूइसुहम्मेय रायगिहेनिव्वुएवीरेत्ति अयञ्च समवसरणनायकः कुलकरवंशोत्पन्नो महापुरुषइति कुलकराणा स्वरूपकथाणाञ्च वक्तव्यतामाह जंबुद्दीवेत्यादि सुगमं नवरं स्पष्टमेषविमलवाहण चक्खुमजससमंचउत्थमभिचंदे तत्तोयपसेणइ र मरुदेवेचेवनाभीयत्ति ॥ १ ॥ तथा चंदजसचंदकन्ता मुरूवपडिरूवचक्खुकंताय

॥ मूल ॥

णं णेयव्वं । जावगणहरा । सावच्चा निरवच्चा वोच्छिन्ना । जंबूद्दीवेणंदीवे भारहेवासे तीयाएउस्सप्पिणी ए सत्तकुलगराहोत्था तं० । मित्तदामेसुदामेय सुपासेयसयंपभे विमलघोसेसुघोसेय महाघोसेयसत्तमे ॥ १ ॥ जंबूद्दीवेणंदीवे भारहेवासे तीयाए उसप्पिणीए दसकुलगराहोत्था तंजहा । सयंजलेसयाऊय जियसेणाणंत सेणय कज्जसेणेभीमसेणे महासेणेयसत्तमे ॥ २ ॥ दढरहे दसरहे सयरहे । जंबूद्दीवेणंदीवे भारहेवासे इमी

॥ भाषा ॥

पर्युषणाकल्पोक्तक में जेकह्याछे स्थविरावलीने अधिकारे तेसर्व कहिवो जिहांलगे पांचमा गणधर सुधर्मास्वामी संतान सहित एतले शिष्य प्रशिष्या दिके युक्त शेष थाकता १० गणधर निरपत्य शिष्यादि संपत्ति रहित हुया । जंबूद्वीपनामा द्वीपने विषे भरतक्षेत्रे गई उत्सर्पिणीयें सात कुलकर हुया । मित्रदाम १ । सुपार्श्व २ । सुदाम ३ । स्वयंप्रभ ४ । वली विमलघोस ५ । सुघोस ६ । महाघोस ७ । सातमो । १ । जबूद्वीपनामा द्वीपने विषे भरतक्षेत्रे गई अवसर्पिणीयें १० । कुलकर हुया । स्वयंजल १ । शतायु २ । अजितसेन ३ । अनंतसेन ४ । कार्यसेन ५ । भीमसेन ६ । महाभीमसेन ७ । दृढरथ ८ । दशरथ

॥ टीका ॥

सिरिकंतामरुदेवी कुलगरपत्तीणनामाइंति ॥ २ ॥ तथा नांभीयजियसत्तूय जियारीसंबरेइय मेहेधरेपइठेय महसेणेयखत्तिए ॥ ३ ॥ सुग्गीवेदढरहेविण्हू वसुपुज्जेयखत्तिए कयवम्मासीहसेणे भाणूयविस्ससेणिय ॥ ४ ॥ सूरंसुदंसणेकुंभे सुमित्तविजएसमुद्दविजयेय रायायआससेणेय सिद्धत्थेच्चियखत्तिएत्ति ॥ ५ ॥

॥ मूल ॥

से उसप्पिणीए समाए सत्तकुलगराहोत्था तंजहा । पढमेत्थविमलवाहण चक्खुमजसमंचउत्थमभिचंदे । त त्तोपसेणइए मरुदेवेचेवनाभीय ॥ ३ ॥ एतेसिणं सत्तण्हंकुलगराणं सत्तभारियाहोत्था तंजहा । चंदजस चंदकंता सरूवपडिरूवचक्खुकंताय । सिरिकंतामरुदेवी कुलगरपत्तीणणामाइं ॥ ४ ॥ जंबूद्दीवेणंदीवे भारहे वासे इमीसेणं उसप्पिणीए चउवीसं तित्थगराणं पियरोहोत्था तंजहा । णाभीयजियसत्तूय जियारीसंवरे विय मेहेधरेपइठेय महसेणेयखत्तिए ॥ ५ ॥ सुग्गीवेदढरहेविण्हू वसुपुज्जेयखत्तिये । कयवम्मासीहसेणे

॥ भाषा ॥

य १ । सतरथ १० ॥ २ ॥ जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रने विषे वर्त्तमान अवसर्पिणीयें सात कुलकर थया । ते कहेछे । पहिला विमलवाहन १ । चक्षुष्मा २ । यशो मान् ३ ।चउथो अभिचंद्र ४ । प्रसेनजित् ५ । मरुदेव ६ । नाभी ७ ॥ ३ ॥ एह सात कुलकरांनो ७ स्त्री थई । तेकहेछे । चंद्रयसा १ । चंद्रकांता २ । सुरूपा प्रतिरूपा ४ । चक्षुष्कांता ५ ५ । सिरिकांता ६ । मरुदेवा ७ । एहकुलकरानी स्त्रीनानाम जाणिवा ॥ ४ ॥ जंबूद्वीप संबंधी भरत क्षेत्रने विषे वर्त्तमान अवस र्पणीयें चोवीस तीर्थंकरांना पिता थया तेकहेछे । नाभि । १ । जितशत्रु २ । जितारि ३ । संवर ४ । मेघ ५ । धर ६ । प्रतिष्ठ ७ । महसेन क्षत्रिय ८ ३ ॥ ५ ॥ सुग्रीव ८ । दृढरथ १० । विष्णु ११ । वसुपूज्य १२ । कृतवर्म्मा १३ । सिंहसेन १४ । भानु १५ । विश्वसेन १६ । सूर १७ सुदर्शन १८ । कुंभ १९ । सु

तथा मरुदेविविजयसेणा सिद्धत्थामंगलासुसीमाय पुहवीलखणारामा नंदाविण्हूजयासामा ॥ ६ ॥ सुजसासुव्वयअइरा सिरिआदेवीपभावईपउमा वप्पासिवा ॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

नाणूयविस्ससेणय ॥ ६ ॥ सूरेसुदंसणेकुंभे सुमित्तविजएसमुद्दविजएय । रायायअससेणेय सिद्धत्थेच्चियखत्ति
ए ॥ ७ ॥ उदितोदियकुलवंसा । विसुद्धवंसागुणेहिउववेया । तित्थप्पवत्तयाणं । एएपियरोजिणवराणं ॥ ८ ॥
जंबूद्दीवेणंदीवे भारहेवासे इमोसेउसप्पिणीए चउवीसंतित्थगराणं मायरोहोत्था तं० । मरुदेवि विजयसेणा
सिद्धत्थामंगलासुसीमाय । पुहवीलखणारामा नंदाविण्हूजयासामा ॥ ९ ॥ सुजसासुव्वयअइरा सिरियादेवी
पभावईपउमा । वप्पासिवायवामा तिसलादेवीयजिणमाया ॥ १० ॥ जंबूद्दीवेभारहेवासे चउवीसंतित्थग

॥ भाषा

मित्र २० । विजय २१ । समुद्रविजय २२ । राजाअश्वसेन २३ । सिद्धार्थ क्षत्रिय २४ ॥ ६ ॥ एह २४ राजा केहवा हुवा उदय प्राप्त घणुं मोटोवंश तेहना विशुद्ध महा निर्दोष वंशछे जेहना । राजानांगुणेकरी सहितछे । तीर्थ धर्मतीर्थना प्रवर्तक तीर्थंकर जिनवीतरागना पिता कह्या ॥ ७ ॥ जंबूद्वीपने विषे भरतक्षेत्रे एणी अवसर्पिणी यें २४ तीर्थंकरानी माताथई । तेकहेछे । मरुदेवी १ । विजया २ सेना ३ । सिद्धार्था ४ । सुमंगला ५ । सुसीमा ६ । पृथिवी ७ । लक्ष्मणा ८ । रामा ९ । नंदा १० । विष्णु ११ । जया १२ । श्यामा १३ । सुयमा १४ । सुव्रता १५ । अचिरा १६ । श्री १७ । देवी १८ । प्रभावती १९ । पद्मावती २० । वप्रा २१ । शिवा २२ । वामा २३ । त्रिशला । २४ । एह जिनमाता २४ कही ॥ ८ ॥ जंबूद्वीप ने विषे भरतक्षेत्रे एणीये अवसर्पिणीये चौबीस तीर्थंकर देवहुया । ते कहेछे । ऋषभ १ । अजित २ । संभव ३ । अभिनंदन ४ । सुमति ५ । पद्मप्रभ ६ । सुपार्श्व ७ । चंद्रप्रभ ८ । सु

राहोत्था तंजहा। उसभअजियसंभव अभिणंदणसुमइ पउमप्पभसुपास चंदप्पभ सुविहिपुप्फदंतसीयल सिज्जंसवासुपुज्ज विमलअणंत धम्मसंतिकुंथु अर मल्लिमुणिसुव्वयणमिणेमि पासवद्धमाणोय। एएसिंचउवी साएतित्थगराणं चउव्वीसं पुव्वभवया णामधेया होत्था तंजहा। पढमेत्थवइरणाभे विमलेतहविमलवाहणे चेव। तत्तोयधम्मसीहे सुमित्ततहधम्ममित्तेय॥ ११ ॥ सुंदरबाहूतहदीह। बाहूजुगबाहूलट्ठबाहूय। दिण्णेयइंददत्ते। सुंदरमाहिंदरेचेव॥ १२ ॥ सीहरहेमेहरहे। रुप्पीअसुदंसणेयबोधव्वा। तत्तोयनंदणेखलु। सीहगिरीचेववीसइमे ॥ १३ ॥ अदीणसत्तुसंखे। सुदंसणेनंदणेयबोधव्वे। इमीसेओसप्पिणीए एएतित्थि

विधि बीजोनाम पुष्पदंत ९। शीतल १०। श्रेयांस ११। वासुपूज्य १२। विमल। अनंत १४। धर्म १५। शांति १६। कुंथु १७। अर १८। मल्लि १९ मुनि सुव्रत २०। नमि २१। नेमि २२। पार्श्व २३। वर्द्धमान २४। एह २४ तीर्थंकरना पूर्व भवनानामधेय एतले। जेणे भवे तीर्थंकर नामकर्म उपार्ज्यो। तेह भवथी ३ भवकरे तेह पूर्व भवथयो। तेकहेछे। प्रथम आदिनाथनो जीव महाविदेह क्षेत्रे ११ मेभवे वज्रनाभचक्रवर्त्तथयो तिहां २० स्थानक आराधीने तीर्थंकर गोत्र उपार्जन कियो तिहांथी सर्वार्थ सिद्ध पहुंता तिहांथीचवी आदिनाथ थया एतले तीर्थंकरना भवथी ३ भवमनुष्यनो तेपूर्व भवने क्रमे २४ कहेछे। पहिलो वज्रनाभ १। विमल २। तथा विमलवाहन ३। ततः धर्मसिंह ४। सुमित्र ५। धर्ममित्र ६। सुंदरबाहु ७। तथादीर्घबाहु ८। युगबाहु ९ लष्ठबाहु १०। दिन्न ११। इन्द्रदत्त १२। सुंदर १३। माहेंद्र १४। सिंहरथ १५ मेघरथ १६। रुपी १७। सुदंसण १८। ततः नंदन १९। सिंहगिरी २०।

यवामा तिसलादेवीयजिणमायत्ति सव्वोउगसुभाएछायाएत्ति सर्वर्त्तुकया सर्वेषु शरदादिषु ऋतुषु सुखदया छायया प्रभया आतपाभावलक्षणया वा युक्ता इति ॥ टीका ॥

करणंतुपुव्वनया । एएसिंचउव्वीसाएतित्थकराणं चउव्वीसंसीयाउहोत्था तंजहा । सीयायसुदंसणासुप्पभाय सिद्धत्थसुप्पसिद्धाय विजयायवेजयंती जयंतीअपराजियाचेव ॥ १४ ॥ अरुणप्पभचंदप्पभ । सूरप्पहअग्गि सप्पभाचेव । विमलायपंचवन्ना । सागरदत्तायणागदत्ताय ॥ १५ ॥ अभयंकरानिव्वुइकरी । मणोरमामणोहराचेव । देवकुरोत्तरकुरा । विसालचंदप्पभातीय ॥ १६ ॥ एआउसीआउ । सव्वेसिंचेवजिणवरिंदाणं । सव्वजगवच्छलाणं । सव्वोउयसुखयछायाए । पुव्विंउखित्तामणु । स्सेहिंसाहठरोमकूवेहिं । पच्छावहंतिसीयं । अ ॥ मूल ॥

अदीनशत्रु २१ । शंख २२ । सुदर्शन २३ । नंदन २४ । एहअनुक्रमे जाणिवा ॥ ८ ॥ एणी अवसर्पिणीये तीर्थंकरानां पूर्व भवनाम जाणिवा एह २४ तीर्थंकरानो २४ शिबिका दीक्षानो पालखीछे । तेकहेछे । सुदर्शना १ । सुप्रभा २ । सिद्धार्था ३ । सुप्रसिद्धा ४ । विजया ५ । वैजयंती ६ । जयंती ७ । अपराजिता ८ ॥ १४ ॥ अरुणप्रभा ९ । चंद्रप्रभा १० । सूर्यप्रभा ११ । अग्निसप्रभा १२ । विमला १३ । पंचवर्णा १४ । सागरदत्ता १५ । नागदत्ता १६ ॥ १६ ॥ अभयंकरा १७ । निवृतिकरी १८ । मनोरमा १९ । मनोहरा २० । देवकुरा २१ । उत्तरकुरा २२ । विशाला २३ । चंद्रप्रभा २४ । एह शिबिकामांबेसीने दीक्षा लीधी तेदीक्षा शिबिका जाणवी । सर्व जगत त्रिभुवन वत्सल महाउपकारी असे जिनेंद्रनो । शिबिका केहवीछे । सर्व शरदादिक ऋतु विषे सुखदायक छाया युक्त आतापना रहित छे । तेह शिबिका पहिले हर्ष करी रोमकूप जेहना खडा थया छे एहवा मनुष्ये करी उपाडी पछे तेह शिबिका प्रते असुरेंद्र चमरा ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

शेष: तथा माहट्ठरोमकूवेहिंति साशिविका यस्यां जिनोध्यारूढ: हृष्टरोमकूपै: समुच्छितरोमभिरित्यर्थ: तथा चलचवलकुंडलधरत्ति चलाश्च ते चपलकुण्डलधराश्चेति वाक्यं तथा स्वच्छन्देन स्वरुचा विकुर्वितानि यान्याभरणानि मुकुटादीनि तानि धारयंति येते तथा असुरेंद्रादयइतियोग: गरुलत्ति गरुडध्वजा: सुपर्णकुमारा इत्यर्थ: तथा सव्वेविएगदूसेण निग्गयाजिणवराचउवीसं नयणामअन्नलिंगे नयगिहिलिंगेकुलिंगेयत्ति दूसेणत्ति एकेनवस्त्रेणेंद्रसमर्पितेनोपधिभूतेन युक्तानि

॥ मूल ॥

सुरिंदसुरिंदनागिंदा ॥ १८ ॥ चलचवलकुंडलधरा । सच्छंविकुव्वियाभरणधारी । सुरअसुरवंदआणं । वहंति सीअंजिणंदाणं ॥ १९ ॥ पुरउवहंतिदेवा । नागादाहिणम्मिपासम्मि । पच्छात्थिमेणअसुरा । गरुलापुण उत्तरपासे ॥ २० ॥ उसभोअविणीयाए । बारवईएअरिठवरणेमी । अवसेसातित्थयरा । निक्कंताजम्मभूमीसु ॥ २१ ॥ सव्वेविएगदूसे । णग्गियाजिणवराचउव्वीसं । णयणामअन्नलिंगे । णयगिहिलिंगेकुलिंगे

॥ भाषा ॥

दिक सुरेंद्र सौधर्मादिक नागेंद्र धरणिन्द्रादिक ॥ १८ ॥ एह असुरेंद्र केहवा छे चल हालता चपल जे कुंडल तेहना धरणहार छे । स्वच्छन्द आपणी रुचीये करी विकुर्व्या आभरण तेहना धरणहार छे । सुर देवता असुर भवनपत्यादिके करी वींच्या छे । एहवा थइने जिनेंद्रनो शिबिकाने उपाडे ॥ १९ ॥ आगलि वाले देवता नागदेवता दक्षिण पासे चाले पिछाडो असुरेंद्र चमरादिक गरुड देवता सुपर्ण कुमार वली उत्तर पासे एतले डावे पासे ॥ २० ॥ ऋषभ आदिनाथे विनीता नगरीयें दीक्षा लीधी । द्वारिकायें अरिष्टनेमीयें दीक्षा लीधी अने जाया सौरीपुरे । शेष २२ तीर्थंकर जन्म भूमियें दीक्षा लीधी ॥ २१ ॥ सवलाई तीर्थंकर देवने इन्द्रे १ देवदुष्य वस्त्र दीधो तेणे सहित नीकल्या अन्य लिंगे नही तथा गृहस्थ लिंगे नही केवली तीर्थंकरने लिंगे कुलिंगी शाक्या

क्रान्ता इत्यर्थः नैवान्यलिङ्गे स्थविरकल्पिकादिलिङ्गे तीर्थंकरलिङ्ग एवेत्यर्थः कुलिङ्गे शाक्यादिलिङ्गे तथा एकोभगवंवीरो पासोमल्लीयतिहिंतिहिंसएहिं भय ॥ टीका ॥
वंपिवासुपुज्जो छहिंपुरिससएहिंनिक्खंत ॥ १ ॥ उग्गाणंभोगाणं राइन्नाणच खत्तियाणच चउहिंसहस्सेहिंउसभो सेसाओसहस्सपरिवारा ॥ २ ॥ सुमइत्थनिच्च
भत्तेण निग्गओवासुपुज्जजिणो चोत्थेणंपुणपासो मल्लीवियअट्ठमेणमेभाओ ॥ ३ ॥ ठठ्ठेणति सुमति रव नित्यभक्तेनानुपोषितो निष्क्रान्तइत्यर्थः तथा सम्वच्छरे

वा ॥ २२ ॥ एक्कोभगवंवीरो । पासोमल्लीयतिहिँतिहिँसएहिं । भगवंपिवासुपुज्जो । छहिँपुरिससएहिँनि ॥ मूल ॥
क्खंतो ॥ २३ ॥ उग्गाणंभोगाणं । राइन्नाणचखत्तियाणंच । चउसहस्सेहिँउसभो । सेसाउसहस्सपरिवारा
॥ १४ ॥ सुमइत्थणिच्चभत्ते । णिग्गतुवासुपुज्जचोत्थेणं । पासोमल्लीयअट्ठ । मेणंसेसाउछठेणं ॥ २५ ॥
एएसिणंचउव्वीसाए तित्थगराणंचउव्वीसं पढमभिक्खादायारोहोत्था तंजहा । सिज्जंसबंभदत्ते सुरिंददत्तेयइं

दिक ने लिंगे नही ॥ ५ ॥ भगवंत महावीर स्वामी एकला दीक्षा लीधी । पार्श्वनाथ अने मल्लिनाथ त्रिण २ से पुरुष साथे दीक्षा लीधी । १२ वासुपूज्य ६ ॥ भाषा ॥
से पुरुष साथे दीक्षा लीधी ॥ २३ ॥ उग्रवंशी भोगवंशी राजाना तथा मोटा क्षत्रिय एहवा ४००० पुरुष साथे आदिनाथे दीक्षा लीधी । शेष १८ । तीर्थ
कर १००० पुरुष साथे दीक्षा लीधी ॥ २४ ॥ सुमति नाथे नित्य भक्ते दीक्षा लीधी । वासुपूज्ये चउत्थ भक्त १ उपवासे दीक्षा लीधी । पार्श्वनाथ मल्लिनाथ त्रि
हुं उपवासे दीक्षा लीधी । शेष २० तीर्थंकरे छठ्ठ भक्त २ उपवासे दीक्षा लीधी ॥ २५ ॥ एह २४ जिनने २४ प्रथम भिक्षा दायक थया । ते कहे छे । श्रेयांस
१ । आदिनाथने श्रेयांसे पारणुं करायो एम २४ जाणवा ॥ ब्रह्मदत्त २ । सुरिन्द्रदत्त ३ । इन्द्रदत्त ३ । पद्म ५ । सोमदेव ६ । माहेंद्र ७ । सोमदत्त ८ ॥ २६

य भिक्खा लद्धाउसभेण लोगनाहेण सेसेहिंबीयदिवसे लद्धाओपढमभिक्खाओत्ति तथा उसभस्सपढमभिक्खा खोयरसोआसिलोगनाहस्स सेसाणंपरमस्सं अमिय ॥ टीका ॥

दद्त्तेय । पउमेयसोमदेवे । माहिंदेसोमदत्तेय ॥ २६ ॥ पुस्सेपुणव्वसूपुण । णंदसुणंदेजयेयविजयेय । तत्तो यधम्मसीहे । सुमित्ततहवग्गसीहेच्च ॥ २७ ॥ अपराजियविससेणे । वीसइमोहोइउसभसेणोय । दिन्नेव रदत्तधणे । बहुलोतहआणुपुव्वीए ॥ २८ ॥ एएविसुद्धलेसा । जिणवरभत्तीइपंजलिउडाउ । तंकालंतंसमयं पडिलाभेइजिणवरिंदे ॥ २९ ॥ संवच्छरेणभिरका । लद्धाउसभेणलोयणाहेण । सेसेहिवीयदिवसे । लद्धाउ पढमभिरकाउ ॥ ३० ॥ उसभस्सपढमभिरका । खोयरसोआसिलोगणाहस्स । सेसाणंपरमन्नं । अमियरस रसोवमंआसि ॥ ३१ ॥ सव्वेसिंपिजिणाणं । जहियंलद्धाउपढमभिरकाउ । वहियंवसुंधराउ । सरीरमेत्ताउ ॥ मूल ॥

पुष्पदन्त ८ । पुनर्वसु १० । नंद ११ । सुनंद १२ । जय १३ । विजय १४ । तिवारपछे धर्मसिंह १५ । सुमित्र १६ । तथा वर्गसिंह १७ ॥ २७ ॥ अपराजित १८ । विश्वसेन १९ । वीसमो ऋषभसेन २० । दिन्न २१ । वरदत्त २२ । धन २३ । बहुल २४ । एह अनुक्रमे २४ ॥ २८ ॥ एह दाताकेहवाछे भली लेश्याना धणी जिनवरनो भक्तियेकरी प्रांजलि हाथजोडो आगलिरह्या छे । तेणे काले तेणे समये जिनवरने आहारपाणीये प्रतिलाभ देता हुया ॥ २९ ॥ ऋषभनाथ परमेश्वरने १ वरसे भिक्षालीधी दीक्षानो पहिलो पारणूं थयो । शेषथाकता २३ तीर्थंकरने बीजेदिन पारणूंथयो । आदिनाथनो । इक्षुरसे करी शेष २३ नेखीरथी परमान्नथी पारणूंथयो तेह परमान्न अमृतरसनी उपमानूंछे ॥ ३१ ॥ सघलाई जिनने जिहां प्रथम भिक्षालीधी तिहां देवता साढे१२ कोडि सोनइयानी वृष्टि ॥ भाषा ॥

रसरसोवमंग्रासि.॥ १ ॥ सरीरमेत्ताउत्ति पुरुषमात्रा चेइयरुक्खेत्ति वद्दपीठवृक्षा येषा मधः केवलान्युत्पन्नानीति बत्तीसाइं धणुयं गाहा निच्चोउगोत्ति नि || ॥ टीका ॥
त्यं सर्वदाऋतुरेव पुष्पादिकालो यस्यस नित्यर्तुकः असोगोत्ति अशोकाभिधानो यः समवसरणभूमिमध्ये भवति ओच्छन्नोसालरुक्खेणंति अवच्छन्नः शालवृक्षे

वड्ढाउ ॥ ३२ ॥ एएसिंचउव्वीसाएतित्थगराणंचउव्वीसं चेइयरुक्खाहोत्था तंजहा । णिग्गोहसत्तिवन्नेसाले पियएपियंगुछत्ताए । सरिसेयणागरुक्खे । मालीयपिलुंकरुक्खेय ॥ ३३ ॥ तंदुलपाफलजंबू । ञ्चासत्थेखलुतहेवदहिवन्ने । णंदीरुक्खेतिलए । ञ्चंवगरुक्खेञ्चसोगेय ॥ ३४ ॥ चंपयवउलेयतहा । वतसिरुक्खेयधायईरुक्खे सालेयवद्धमाणे । चेइयरुक्खाजिणवराणं ॥ ३५ ॥ वत्तीसाइंधणुइं । चेइयरुक्खोयवद्धमाणस्स । णिच्चोञ्चगो ञ्चसोगो । नच्छन्नोसालरुक्खेणं ॥ ३६ ॥ तिन्नेवगाउञ्चाइं । चेइयरुक्खोजिणस्सउसभस्स । सेसाणंपुणरुक्खा ॥ मूल ॥

शरीर प्रमाणे उंचोकरी॥ ३२ ॥ एह २४ जिनने २४ चैत्यवृक्ष पूज्यवृक्ष जेहेठे केवलज्ञान ऊपनो ते कहेछे। आदिनाथने न्यग्रोध १। वडनां पेडनीचे केवलज्ञान ॥ भाषा ॥
उपनो एमअनुक्रमे २४जगे कहिवो। सप्तपर्ण २। शालवृक्ष ३। प्रियालु ४। प्रियंगु ५। छत्रवृक्ष ६। सरस ७। नाग ८। मालवी ९। पीलुख १०। टींबरु ११। पाडल १२। जंबू १३। पीपल १४। दधिपर्ण १५। नंदीवृक्ष१६। तिलक १७। आम्बा १८। अशोक १९। चंपा २०। बकुल २१। वेतस २२। धातकीआवला २३। शालिवृक्ष २४ वर्द्धमानस्वामीनो चैत्यवृक्ष २४ जिनना कह्या ॥ ३५ ॥ ३२ धनुषप्रमाणे चैत्यवृक्ष जे हेठे पृथिवीशिलापट्ट तिहांबेसी भगवंतवर्द्धमानस्वामी व्याख्यान करे। नित्य बारेमासे फल्यो फूल्यो अशोकवृक्ष शालवृक्षे करी व्याप्त एतले अशोकवृक्षने ऊपर शालवृक्षछे। आदिनाथनो चैत्यवृक्ष ३ कोस ऊंचो एतले

॥ टीका ॥

षेत्यत एववचना दशांकस्योपरि शालवृक्षापि कथं चिदस्तीत्यवसीयत इति तिस्सेवगाउयाइं गाहा ऋषभस्वामिनो द्वादशगुणइत्यर्थः सवेइयत्ति वेदिकायुता एतेचाशोकाः समवसरणसम्बन्धिनः सभाग्यन्तइति तहा भरहोसगरोमघवं सणंकुमारोयरायसद्दूलो संतोकुंथूयअरोह वइसुभूमोयकोरव्वो ॥ १ ॥ नवमोय

॥ मूल ॥

सरीरत्तु बारसगुणाउ ॥ ३७ ॥ सच्छत्तासपडागा । सवेइयातोरणेहिं उववेया । सुरअसुरगरुलमहिया । चेइयरुक्खाजिणवराणं ॥ ३८ ॥ एएसिंचउवीसाए तित्थगराणं चउवीसंपढमसीसाहोत्था तंजहा । पढमेत्थउसभसेणे वीएपुणहोइसीहसेणेय । चारूयवज्जणाभे । चमरेतहसुव्वएविदभेय ॥ ३९ ॥ दिन्नेवाराहेपुणआणंदेगोथुभेसुहम्मेय । मंदरजसेअरिठे । चक्काउहसंबकुंभअभिगवेय ॥ ४० ॥ इंदकुंभेयसुभे वरदत्तेदिन्नइंदभूईय ॥ उदितोदिनकुलवंसा विसुद्धवंसागुणेहिउववेया । तित्थप्पवत्तयाणं । पढमासिस्साजिणवराणं ॥

॥ भाषा ॥

भगवतथी १२ गुणो ऊंचोथयो शेष २३ तीर्थ करनावृक्ष पोतानां शरीरथी १२ गुणां कहिवा ॥ ३७ ॥ तेवृक्ष ३ छत्र सहित ध्वजा सहित वेदिका सहित तोरणयुक्त सुरवैमानिकदेव असुर भवनपत्यादिक सुपर्णादिकदेवें करी पूजितछे एहवा जिनेंद्रना चैत्यवृक्ष जाणिवा ॥ ३८ ॥ २४ जिनना २४ प्रथम शिष्य वडागणधरथया तेकहेछे । आदिनाथनो वडोशिष्य ऋषभसेन १ । सिंहसेन २ । चारुरूप ३ । वज्रनाभ ४ । चमर ५ । सुव्रत ६ । बीजोनाम प्रद्योतन ६ विदर्भ ७ ॥ ३९ ॥ दिन्न ८ । वाराह ९ । आनंद बीजोनाम पद्मनंदी १० । गोस्तुभ बीजोनाम कृतार्थ ११ सुधर्मा बीजोनामसुभूम १२ । मंदर १३ । यशोधर १४ अरिष्ट १५ चक्रायुध १६ । साम्ब १७ । कुंभ १८ । अभिनय १९ ॥ ४० ॥ इन्द्रकुंभ बीजोनाम मल्ली २० । शुभ २१ । वरदत्त २२ । आर्यदिन्न २३ । इन्द्रभूति २४

४१ ॥ एएसिणंचउवीसाए तित्थगराणं चउवीसं पढमसिस्सणीहोत्था तंजहा । बंभीयफग्गुसामा । अजिया कासवीरईसोमा । सुमणावारुणिसुलसा । धारणिधरणीयधरणिधरा ॥ ४२ ॥ पउमासिवासुयीतह । अंजुया भावयप्पायरक्खीय । बंधुमतीपुप्फवती । अजाअमिलायआहिया ॥ ४३ ॥ जक्खिणीपुप्फचूलाय चंदण जायआहिया ॥ उदितोदियकुलवंससागाहा । जंबूदीवेणं भारहेवासे इमीसेउसप्पिणीए बारसचक्कवट्टिपिय रोहोत्था तंजहा । उसभेसुमित्तविजए समुद्दविजएयअस्ससेणेय । विस्ससेणेयसूरे । सुदंसणेकत्तवीरिएचेव ॥ ४४ ॥ पउमुत्तरेमहाहरी । विजएरायातहेवय । बंभेबारसमेउत्ते । पिउनामाचक्कवट्टिणं ॥ ४५ ॥ जंबूदीवे ॥ मूल ॥

एह २४ गणधर उदितोदित कुलवंशछे । इत्यादि पूर्वगाथा कहिवी ॥ ४१ ॥ एह २४ जिनवरानी २४ प्रथम शिष्यणी बडी साध्वीथई तेकहेछे । ब्राह्मी १ । फलगुनी २ । श्यामा ३ । अजिता ४ । काश्यपी ५ । रती ६ । सोमा ७ । सुमना ८ । वारुणी ९ । सुलसा १० । धारणी ११ । धरणी १२ । धरणीधरा १३ । ॥ ४२ ॥ पद्मा १४ । शिवा १५ । श्रुति १६ । अंजुका बीजोनाम दामिनी १७ । भावितात्मा एहवी रचिता १८ । बंधुमती १९ । पुष्पवती २० । अमिला २१ । ४३ ॥ यक्षिणी २२ । पुष्पचूला २३ । चंदनबाला २४ ॥ एह साध्वी बोहवी छे उदयप्राप्तवंशमे उपनी छे । इत्यादि पूर्वनी गाथा जाणवी ॥ जंबूद्वीप ने विषे भरत क्षेत्रे एणी वर्त्तमान अवसर्प्पिणीयें १२ चक्रवर्त्तिना पिताहुया । ते कहेछे । भरतनो पिता ऋषभ १ । सुमतिविजय २ । समुद्रविजय ३ । अश्वसेन ४ । विश्वसेन ५ । सूर ६ । सुदर्शन ७ । कार्त्तवीर्य ८ । पद्मोत्तर ९ । महाहरी १० । राजाविजय ११ । ब्रह्म १२ एह १२ चक्रवर्त्तिपितानानाम ॥ ४५ ॥ भाषा ॥

महापउमो हरिसेणोचेवरायसद्दूलो जयनामोयनरवई बारसमोबंभदत्तोय ॥ २ ॥ तथा पयावतीयबंभो सोमोरुद्दोसिवोमहसिरोय· अग्गिसिहोयदसरहो न ॥ मूल ॥

भारहेवासे इमीसेउसप्पिणीए बारसचक्कवहिमायरोहोत्था तंजहा । सुमंगलाजसवती भद्दासहदेवी अइरा ॥ टीका ॥
सिरिदेवीतारा जालामेरावप्पाचुल्लणीअपच्छिमा ॥ ॥ जंबूद्दीवे० । बारसचक्कवट्टीहोत्था तंजहा । भरहे
सगरेमघवं । सणंकुमारोयरायसद्दूलो । संतीकुंथूयअरो । हवइसुभूमोयकोरव्वो ॥ ४६ ॥ नवमोयमहापउ
मो । हरिसेणोचेवरायसद्दूलो । जयनामोयनरवई । बारसमोबंभदत्तोय ॥ ४७ ॥ एएसिंबारसरहंचक्कवट्टी
णं बारसइत्थिरयणाहोत्था तंजहा । पढमाहोइसुभद्दा । भद्दसुणंदाजयायविजयाय । किण्हसिरीसूरसिरी
पउमसिरीवसुंधरादेवी ॥ ४८ ॥ लच्छिमईकुरुमई इच्छीरयणाणणामाइं ॥ जंबूद्दीवे० नवबलदेवनववासु

जंबूद्वीपने विषे भरतक्षेत्रे वर्त्तमान अवसर्प्पिणीये १२ चक्रवर्त्ति मातायई ते कहेछे । सुमंगला १ । यशोमती २ । भद्रा ३ । सहदेवी ४ । अचिरा ५ । श्री ६ ॥ भाषा ॥
देवी ७ । तारा ८ ज्वाला ९ मेरा १० वप्रा ११ छेहलो चुलणी १२ ॥ जंबूद्वीप संबंधी भरत क्षेत्रे वर्त्तमान अवसर्प्पिणीये १२ चक्रवर्त्त थया ते कहे छे भरत १
मगर २ मघवा ३ सनत्कुमार ४ राजा मांहि सिंह समान शांतिनाथ ५ । कुंथु ६ । अर ७ । संभूम ८ ॥ ४६ ॥ महापद्म । हरिसेन १० । जय ११ ब्रह्मदत्त
१२ ॥ ४७ ॥ एह १२ चक्रवर्त्तना १२ स्त्री रत्न थया ते कहेछे सुभद्रा १ भद्रा २ सुनदा ३ जया ४ विजया ५ कृष्णश्री ६ सूर्यश्री ७ पद्मश्री ८ वसुंधरा ९ देवी १०
४८ ॥ लक्ष्मीवती ११ कुरुमती १२ एह स्त्री रत्नना नाम जाणिवा ॥ जंबूद्वीपना भरतने विषे वर्त्तमान अवसर्प्पिणीये ९ बलदेव ९ वासुदेवना पिता थया

॥ टीका ॥

वमोभद्रिभोयवसुदेवोत्ति ॥ १ ॥ जंबूद्दीवेत्यादि दशाराणां वासुदेवानां मण्डलानि बलदेववासुदेवद्वयद्वयलक्षणाः समुदाया दशारमण्डलानि अतएव दोदो रामकेसवत्ति वक्ष्यति दशारमण्डलाव्यतिरिक्तत्वाच्च बलदेववासुदेवानां दशारमण्डलानीति पूर्वमुद्दिष्टापि दशारमण्डलव्यक्तिभूतानां तेषां विशेषणार्थमाह त च्चथेत्यादि तच्चथेति बलदेववासुदेवस्वरूपोपन्यासारम्भार्थः केचित्तु दशारमण्डणा इति तत्र दशाराणां वासुदेवकुलीनप्रजानां मंडनाः शोभाकारिणो दशारमण्ड ना उत्तमपुरुषा इति तीर्थंकरादीनां चतुःपंचाशत् उत्तमपुरुषाणां मध्यवर्त्तित्वात् मध्यमपुरुषा स्तीर्थंकरचक्रिणां प्रतिवासुदेवानां च बलाद्यपेक्षया मध्यवर्त्तित्वात्

॥ मूल ॥

देवापितरोहोत्या तंजहा । पयावईयवंभो सोमोरुद्दोसिवोमहसिरोय । अग्गिसिहोयदसरहो । नवमोभणि अयवसुदेवो ॥ ४९ ॥ जंबूद्दीवेणं० । णववासुदेवमायरोहोत्या तंजहा । मियावईउमाचेव पुहवीसीया यअम्बिया । लच्छिमईसेसमई केकईदेवईतहा ॥ ५० ॥ जंबूद्दीवेणं ० । णवबलदेवमायरोहोत्या तंजहा । भद्दातहसुभद्दाय । सुप्पभायसुदंसणा । विजयावेजयंतीय जयंतीअपराजिया ॥ ५१ ॥ णवमीयारोहिणीय

॥ भाषा ॥

प्रजापति १ ब्रह्म २ सोम ३ रुद्र ४ शिव ५ महेश्वर ६ अग्निसिंह ७ दशरथ८ नवमोवसुदेव ९॥ १ ॥ जम्बूद्वीपना भरत ने विषे वर्त्तमान काले९ वासुदेवनी माता थई तेकहेछे मृगावती १ उमा २ पृथिवी ३ सीता ४ अम्बिका ५ लक्ष्मीवती ६ शेषवती ७ केकई वीजोनाम सुमित्रा ८ देवकी ९ एह नववासुदेवनी माता ॥ हिवे ९ बल देवनीं माता कहेछे ॥ भद्रा १ सुभद्रा २ सुप्रभा ३ सुदर्शना ४ विजया ५ वैजयंती ६ जयंती ७ अपराजिता ८ रोहिणी ९ एह बलदेवनी माता जाणिवी ॥ २ ॥ जंबूद्वीपना भरतने विषे एणी अवसर्प्पिणीये नव दशारना वासुदेवना मंडल वासुदेव बलदेव लक्षण समुदाय ते दशार मंडल थया तेकहे छे। उत्तम

॥ २३५ ॥

प्रधानपुरुषास्तात्कालिक पुरुषाणां शौर्यादिभिः प्रधानत्वात् ओजस्विनो मानसबलोपेतत्वात् तेजस्विनो दीप्तशरीरत्वात् वर्चस्विनः शारीरबलोपेतत्वात् यश ॥ टीका ॥
स्विनः पराक्रमं प्राप्यप्रसिद्धिप्राप्तत्वात् छायंमित्ति प्राकृतत्वात् च्छायावन्तः शोभायमानशरीरा अतएवकान्ताः कान्तियोगात् सौम्या अरौद्राकारत्वात् सुभगा
जनवल्लभत्वात् प्रियदर्शना चक्षुष्यरूपत्वात् सुरूपा समचतुरस्रसंस्थानत्वात् शुभं सुखं स्वा सुखकरत्वा च्छीलं स्वभावो येषान्ते शुभशीलाः सुखशीला वा सुखे
नाभिगम्यन्ते सेव्यन्ते ये शुभशीलत्वादेव ते सुखाभिगम्याः सर्वजननयनानांकान्ता अभिलाष्या येते तथा ततः पदत्रयस्य कर्मधारयः ओघबलाः प्रवाहबलाः अ
व्यवच्छिन्नबलत्वात् अतिबलाः शेषपुरुषबलानामतिक्रमात् महाबलाः प्रशस्तबलाः अनिहता निरुपक्रमायुष्कत्वा दुर्योद्धेच भूम्यामपातितत्वात् अपराजिता

बलदेवाणमायरो ॥ जंबूद्दीवेणं० । णवदसारमंडलाहोत्था तंजहा । उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाणपुरि ॥ मूल ॥
सा उयंसी तेयंसी बच्चंसी जसंसी छायंसी कंता सोमा सुभगा पियदंसणा सुरूवा सुहसीला सुहाभिगम
सव्वजणणयणकंता उहबला अतिबला महाबला अनिहता अपराइयसत्तुमद्दणा रिपुसहस्समाणमहणा सा

पुरुष ते मांहि वर्त्ति ते माटे वली मध्यम पुरुष तीर्थंकर चक्रवर्त्ति तथा प्रतिवासुदेवनी अपेचाये प्रधान पुरुष सौर्यगुणे करी युक्त ओजस्वी मनो ॥ भाषा ॥
बलेकरी सहित तेजस्वी दीप्ति युक्त शरीर थी वर्चस्वी शरीर सम्बंधी बलेकरी सहित यशस्वी जसना धणी शोभायमान शरीरोपेत कांतिवान् रुद्रा
कार नही सहुने वल्लभ देखवा योग्य समचतुरस्र संस्थानो सहुने सुखकारी सुखे सेविवा योग्य सर्व लोकना नेत्रने कांत देखिवा योग्य बल जेहनो
नो तूटे नही शति वलना धणी महाबली निरुपक्रम आयुना धणी वैरीयें पराभव्या न जाय शत्रुनामर्दक रिपु सहस्रना मानने मथनहार नम्र

॥ टीका ॥

स्तैरेवग्रगुणा म्पराजितत्वात् एतदेवाह ग्रथुमर्दना स्तच्छरीरतत्सैन्यकदर्थनाद्रिपुसहस्रमानमथना स्तद्वांछितकार्यविघटनात् सानुक्रोशाः प्रणतेष्वद्रोहकत्वा त् ग्रमत्सराः परगुणलवस्यापि ग्राहकत्वात् ग्रचपला मनोवाक्काय स्थैर्यात् ग्रचण्डा निष्कारणप्रबलकोपरहितत्वात् मिते परिमिते मञ्जुली कोमलप्रलापश्चा लापो हसितंच येषान्ते मितमञ्जुलप्रलापहसिताः गम्भीरमदर्शितरोषतोषशोकादिविकार मेघनादव द्वा मधुरं श्रवणसुखकर मतिपूर्ण मर्थप्रतीतिजनकं सत्य मवितथ म्वचन म्वाक्यं येषान्ते तथा ततः पदद्वयस्यकर्मधारयः ग्रभ्युपगतवत्सला स्तत्समर्थनशीलत्वात् शरण्या स्त्राणकरणेसाधुत्वात् लक्षणानि मानादीनि वज्रस्वस्तिकचक्रादीनि वा व्यञ्जनानि तिलकमषादीनि तेषाङ्गुणा महर्द्धिप्राप्त्यादय स्तै रुपेताःसर्क्कारादिदर्शनादुपपेता युक्ता लक्षणव्यंजनगुणो पपेता मानमुदकद्रोणपरिमाणशरीरता कथ मुदकपूर्णायां द्रोण्यां निविष्टे पुरुषे यज्जलं ततोनिर्गच्छति तद्यदिद्रोणप्रमाणं स्या त्तदा स पुरुषो मानप्राप्त

॥ मूल ॥

णुक्कोसा ग्रमच्छरा ग्रचपला ग्रचंडा मियमंजुलपलावहसियगंभीरमधुरपडिपुन्नसच्चवयणा ग्रब्भुवगय वच्छला सरन्ना । लक्खणवंजणगुणोववेग्रा माणुम्माणपमाणपडिपुन्नसुजायसव्वंगसुंदरंगा ससिसोमागारकं

॥ भाषा ॥

त्रिषे दयावंत परगुण ग्राहक मन वचन कायाये करी धैर्यवान निष्कारण कोप रहित मित ते थोडो मञ्जुल कोमल जे प्रलाप बोलवो ग्रने हसिवो छे जेहनो वली गम्भीर रोष रहित मधुर बोलता सुखकारी प्रतिपूर्ण ग्रर्थनो प्रतीति उत्पादक सांचो विघटे नही एहवो छे वचन जेहनो तथा शरणाग तवत्सल शरण राखिवा समर्थ लक्षण तेस्वस्तिकादिक व्यञ्जन तेतिलक मसादिक तेहना गुण महाऋद्धि प्राप्ति लक्षण तेणे करी युक्त मान ते उदक द्रोण परिमाण शरीरनो उंच पणो उन्मान ते ग्रर्द्ध भार परिमाणता प्रमाण ते ग्रठोत्तर सो ग्रंगुलनो ऊंच पणो तेणे मान १ उन्मान २ प्रमाणे ३

॥ टीका ॥

इत्यभिधीयते उन्मान मर्द्धभारपरिमाणता कथं तुलारोपितस्य पुरुषस्य यद्यर्द्धभार स्तौल्य भवति तदा सावुन्मानप्राप्त उच्यते प्रमाणमष्टोत्तरशतमङ्गुलानामु
च्छ्रय: मानोन्मानप्रमाणै: प्रतिपूर्णमन्यूनंसुजातमागर्भाधानात् पालनविधिनासर्वाङ्गसुन्दरं निखिलावयवप्रधानमंगंशरीरं येषान्ते तथा शशिवत् सौम्याका
रमरौद्रमवीभत्सम्वा कांतंदीप्तं प्रियंजनानां प्रमोदोत्पादकं दर्शनं रूपं येषान्ते तथा अमरिसणत्ति अमर्षणा: प्रयोजनेष्वनलसाअमर्षणावा अपराधिष्वपि
कृतक्षमा: प्राकाण्डउत्कटोदण्डप्रकार आज्ञाविशेषो वा येषान्ते तथा अथवा प्रचण्डोदु:साध्यसाधकत्वा द्दण्डप्रचार: सैन्यविचरणं येषान्ते तथा गम्भीराम्ल
क्षमाणांतर्हसितत्वेन दृश्यन्ते ये ते गम्भीरदर्शनीया स्तत: पदद्वयस्य कर्म्मधारय: प्रचण्डदण्डप्रचारेण वा ये गम्भीरा दृश्यन्ते तथा तालोवृक्षविशेषो ध्वजा
येषान्ते तालध्वजा: वलदेवा उद्विद्धउच्छ्रितो गरुडलक्षित: केतु र्ध्वजो येषान्ते उद्विद्धगरुडकेतवो वासुदेवा: तालध्वजाश्च उद्विद्धगरुडकेतवश्च तालध्वजोद्विद्ध
गरुडकेतव: महाधनुर्विकर्षका: महाप्राणत्वात् महासत्वलक्षणजलस्य सागरा इव सागरा आश्रयत्वा न्महासत्वसागरा: दुर्द्धरा रणाङ्गणे तेषां प्रहरतां केना

॥ मूल ॥

तपियदंसणा अमरिसणा पयंडदंडप्पयारा गंभीरदरसणिज्जा तालज्झउव्विद्धगरुलकेऊ महाधणुविकड्ढया

॥ भाषा ॥

करो प्रतिपूर्ण अन्यून । गर्भाधानथको रुडोविधिये करी भलो नीपनोछे सर्व शरीरावयवें करी सुंदर शरीर जेहनो । चंद्रमाने समान सौम्य अरुद्रछे तेजा
कार कांत दीप्तिवंत । प्रिय प्रेमोत्पादक दर्शनछे जेहनो । कार्यने विषे आलसो नही अथवा अमर्ष रहित । प्रचंड दु:साध्यने साधे एहवोछे दंडप्रचार
सेनानो विचरवो जेहनो । गंभीर कल्याणजाय दर्शन आकार चित्ताभिप्राय जेहनो । तालवृक्ष ध्वजाछे जेहने तेतालध्वज गरुडनो रूपछे ध्वजाने विषे
ध्वजा ऊंचो करीछे जेणे । वलदेवने आगेतालध्वज होय वासुदेवने आगे गरुडध्वजहोय । तथामहाधनुषना खांचणहार । महासत्व लक्षण जलना.

॥ टीका ॥

पि धन्विना धारयितु मशक्यत्वात् धनुर्धराः कोदण्डप्रहरणा धीरैर्षिवैते पुरुषाः पुरुषकारवन्तो न कातरेष्वितिं धीरपुरुषा युद्धजनिता या कीर्त्ति स्तत्प्रधा ना: पुरुषा युद्धकीर्त्तिपुरुषाः विपुलकुलसमुद्भवा इति प्रतीतंमहारत्नं वज्रन्तस्य महाराणतया विघटका अङ्गुष्ठतर्ज्जनीभ्यां चूर्णका महारत्नविघटका वज्रंहि अधिकरण्यां धृत्वा अयोघनेना स्फोयते नच भिद्यते तावैवभिनत्तीति दुर्भेदं तदिति अथवा महनीया यारचनासागरशकटव्यूहादिना प्रकारेण सिसंग्राम विधौ महासैन्यस्य तां रणरङ्गरसिकतया महाबलतया च विघटयंति वियोजयति ये ते महारचनाविघटकाः पाठान्तरेण तु महारणविघटकाः अर्द्धभरत स्वामिनः सौम्या नीरुजः राजकुलवंशतिलकाः अजिताः अजितरथाः हलमुशलकणकपाणय: तत्र हलमुशलेप्रतीते ते प्रहरणतया पाणौ हस्ते येषान्ते बलदेवा येषान्तु कणकाबाणाः पाणौ ते शार्ङ्गधन्वानो वासुदेवाः शङ्खश्च पाञ्चजन्याभिधान श्चक्रन्तु सुदर्शननामकं गदाच कौमोदकी संज्ञा लकुटविशेषः श

॥ मूल ॥

महासत्तसागरा दुद्धरा धणुद्धरा धीरपुरिसा जुद्धकित्तिपुरिसा विउलकुलसमुप्पत्रा महारयणविहाडगा अद्ध भरहसामी सोमा रायकुलवंसतिलया । अजियाअजियरहा हलमुसलकणकपाणी संखचक्कगयसत्तिनंदगधरा

॥ भाषा ॥

समुद्र सरीखा समुद्र । रणांगणे दुर्द्धर कोईथी वास्यानजाय । धनुषनाधरणहार । धैर्ययुक्तछे । युद्धे करी उपार्जी कोर्त्ति तेणे करी प्रधान पुरुषछे बडाकु लना उपना । महारत्न वज्रने अंगूठे करी चूर्णन करणहार । अर्द्ध भरतना ३ खंडना स्वामी । सौम्य अत्यंत ठंडा । राजकुलने वंशने विषे तिलकसमान छे अतकेइथी जोप्या नथी । जेहनारथकेइथी जोप्यानथी । तथा हल मुसलछे हाथने विषे ते बलदेव । अने कणककहीवाणछे हाथने विषे जेहने ते वासु देव । शंख पांचजन्य चक्र सुदर्शन गदा कौमोदकी लकुट विशेष शक्ति त्रिशूल विशेष नंदकनामा खड्गना धरणहारछे । तथा प्रवर प्रधान उजलो कौस्तु

॥ टीका ॥

त्रिय त्रिशूलविशेषो नन्दकश्च नन्दकाभिधानः खड्ग स्तान्धारयन्तीति शङ्खचक्रगदाशक्तिनन्दकधराः वासुदेवाः प्रवरो वरप्रभावयोगा दुज्वलः शुक्लत्वात् स्व च्छतया वा सुकान्तः कान्तियोगात् पाठांतरे सुकृतसुपरिकर्म्मितत्वात् विमलो मलवर्ज्जितत्वात् गोथुभत्ति कौस्तुभाभिधानो यो मणिविशेष स्तं तिरीडंति किरीटंच मुकुटं धारयंति येते तथा कुंडलोद्योतिताननाः पुंडरीकवन्नयने येषांते तथा एकावली आभरणविशेषः सा कंठे ग्रीवायां लगिता विलंबिता सती वक्षसि उरसिवर्त्तते येषांते एकावलीकंठलगितवक्षसः श्रीवत्साभिधानं सुष्ठुलाञ्छनं महापुरुषत्वसूचकं वक्षसि येषांते श्रीवत्सलाञ्छना वरयशसः सर्वत्र विख्यातत्वात् सर्वर्त्तुकानि सर्वऋतुसंभवानि सुरभीणि सुगंधीनि यानिकुसुमानि तैःसुरचिता कृता या प्रलंबा आप्रपदीना शोभितत्ति शोभमाना कांता कमनीया विकसंती फुल्लंती चित्रा पंचवर्णा वरा प्रधाना माला स्रक् रचिता निहिता रतिदा वा सुखकारिका वक्षसि येषान्ते सर्वर्त्तुकसुरभिकुसुमसुर चितप्रलंबशोभमानकांतविकसच्चित्रवरमालारचितवक्षसः तथाअष्टशतसंख्यानि विभक्तानि विविक्तरूपाणि यानि लक्षणानि चक्रादीनि तैः प्रशस्तानि मं

॥ मूल ॥

पवरुज्जलसुकंतविमलगोत्थुभतिरीडधारी कुंडलउज्जोइयाणणा पुंडरीयणयणा। एकावलिकंठलइयवच्छा सि रिवच्छसुलंछणा वरजसा सव्वोउयसुरभिकुसुमरचितपलंबसोभंतकंतविकसंतविचित्तवरमालरइयवच्छा। अठ

॥ भाषा ॥

कांत निर्मल कौस्तुभ मणि विशेष अने मुकुट ने धारण करेछे। कुंडलनी प्रभाये करी उद्योतितछे मुख जेहनो। पुंडरीक कमल सरीखा मनोहर नेत्र छे जेहना एकावली आभरण विशेष तेकंठे लगाडी विलंबितछे वक्षस्थलने विषे जेहने। श्रीवत्स नामा भलो लक्षणछे जेहने। वर प्रधानछे यश जेहनो। सघली ऋतुना सुरभि सुगंध फूल तेणेकरी सुरचित कीधोछे प्रलंबायमानछे शोभायमान कांत कमनीय विकसंती पांचवर्ण नी प्रधान माला तेणेकरी.

गत्यानि सुंदराणिचमनोहराणि विरचितानि विहितानि अंगमंगत्ति अंगोपांगानि शिरोंगुल्यादीनि येषान्ते अष्टशतविभक्तलक्षणप्रशस्तसुंदरविरचितांगोपा. ॥ टीका ॥
गा: तथा मत्तगजवरेन्द्रस्य योललितोमनोहरो विक्रम: संचरणंतद्वद्विलासिता: संजातविलासागतिर्गमनं येषान्ते मत्तगजवरेन्द्रललितविक्रमविलासितगत
य: तथा शरदिभव: शारद: सचासौ नवं स्तनित रसितं यस्मि न्निर्घोषे स नवस्तनित: सचेति समास: सचासौ मधुरो गम्भीरश्च य: क्रौंचनिर्घोष: पक्षि
विशेषनिनाद स्तद्वद्दुन्दुभिस्वरवञ्च स्वरो नादो येषांते शारदनवस्तनितमधुरगम्भीरक्रौंचनिर्घोषदुन्दुभिस्वरा: इहच शरत्कालेहि क्रौंचा माद्यन्ति मधुरध्वन
यश्च भवन्तीति शारदग्रहणं तथा पौन:पुन्येन शब्दप्रवृत्तौ तद्ग्रंगादमनोज्ञता तस्यस्यादिति नवस्तनितग्रहणं स्वरूपोपदर्शनार्थं मधुरगंभीरग्रहणमिति तथा
कटीसूत्र माभरणविशेष स्तत्प्रधानानि नीलानि बलदेवानां पीतानि वासुदेवानां कौशेयकानि वस्त्रविशेषभूतानि वासांसि वसनानि येषांते कटीसूत्रकनी

॥ मूल ॥

सयविन्नत्तलक्खणपसत्थसुंदरविरइयंगमंगा मत्तगयवरिंदललियविक्कमविलसियगई सारयनवथणियमुक्करगं
भीरकुंचनिग्घोसदुंदुभिसरा कडिसुत्तगनीलपीयकोसेज्जवाससा पवरदित्ततेया नरसीहा नरवई नरिंदा न

॥ भाषा ॥

मंडितछे वक्षस्थल जेहनो। तथा १०८ प्रगटरूप जे लक्षण चक्रादिकें करी प्रशस्त मंगलकारी मनोहर कीधाछे सर्व अंगोपांग जेहना। मदोन्मत्त गजेंद्रनो
सुललित मनोहर चालवो तेहनी परे विलास सहितछे गती जेहनी। शरत्काल सम्बन्धी नवीन मेघनो जे गंभीर शब्द तेहवो गंभीरछे कंठनो शब्द दुंदभी
ना शब्द सरीखो मीठो क्रौंचपक्षी शरत्काले मस्त होय तेमाटे तेहना शब्द सरीखो गंभीर स्वरछे जेहनो। कटिसूत्र कणदोर तेणेकरी सहितछे नीलापीला
वस्त्र जेहना बलदेवना नीलावस्त्र वासुदेवना पीलावस्त्र। प्रधान दीप्तिवंत। मनुष्यमांहि विक्रम गुणे करी सिंह समान छे। नरपती छे। नरिन्द्र छे। नर

॥ टीका ॥

सपोतकौशेयवाससः प्रवरदीप्ततेजसो वरप्रभावतया वरदीप्तितयाच नरसिंहा विक्रमयोगा नरपतयः तन्नायकत्वात् नरेन्द्राः परमैश्वर्ययोगात् नरवृषभा उत्क्षिप्तकार्यभारनिर्वाहकत्वात् मरुद्वृषभकल्पाः देवराजोपमा अभ्यधिकं शेषराजेभ्यः राजतेजोलक्ष्म्या दीप्यमानाः नीलकपीतकवसना इति पुनर्भणनं निगमनार्थं कथं तेनवेचाह दुवेदुवेइत्यादि एवच नववासुदेव नवबलदेवा इति तिविठ्ठूय यावत्करणात् दुविठ्ठूय सयंभूपुरिसुत्तमेपुरिससीहे। तहपुरिसपुंडरीयेदत्तेनारायणेकण्हेत्ति॥ १ ॥ अयलेविजयेभद्दे सुप्पभेयसुदंसणे आनंदेणंदणेपउमे रामेयाविअपच्छिमेत्ति॥ २ ॥ कित्तीपुरिसाणंति कीर्त्तिप्रधानपुरुषाणामिति मद्दुरायकणगवत्थू मावथापोयणंवरायगिहं कायदीकासवो महिलपुरीहत्थिणपुरंच तया गाविजुरसंगामे तहइत्थिपराहओरंगे भज्जाणुरागगोठ्ठी परइढीमाउयाइयति तया अ सगावेताएए मेरएमहुकेटभेनिसुंभेय बलिपहिराएतह रावणेयनवमेजरासंधेत्ति॥ ३ ॥ एएखलुपडिसत्तू कित्तीपुरिसाणवासुदेवाणं सव्वेवि

॥ मूल ॥

रवसहा मरुयवसभकप्पा अब्भहियरायतेयलच्छी पदिप्पमाणा नीलगपीयगवसणा दुवेदुवेरामकेसवाभाय
रोहोत्था तंजहा। तिविठ्ठूय जावकण्हे अयले जावरामेय अपच्छिमे एएसिणं णवण्हं बलदेववासु

॥ भाषा ॥

मांहि वृषभ समान छे पाद्यो भार वाहवा समर्थपणां थी। इन्द्र समान छे। अन्य राजा थकी अधिक राजतेज लक्ष्मीयें प्रदीप्तमान छे। नीला अने पीला छे वस्त्र जेहना दो दो राम अने केशव दोनुं भाइ होय राम तेबलभद्र केशव तेवासुदेव दुमात पिताएक दोनुंभाई होय। एणीचोवीसीये ९ बलदेव ९ वासुदेव थया तेकहे छे। त्रिपृष्ठ १। प्रथमथी यावत् शब्दे द्विपृष्ट २। स्वयम्भू ३। पुरुषोत्तम ४। पुरुषसिंह ५। पुरुष पुंडरीक ६। दत्त ७। नारायण ८ कृष्ण ९ इहांलगे जाणवा॥ अचल १। यावत् शब्दे विजय २। भद्र ३। सुप्रभ ४। सुदर्शन ५। आनंद ६। नंद ७। पद्म ८। राम ९। एहबलभद्र जाणि

देवाणं पुव्वभविया नवनामधेज्जाहोत्था तंजहा । विसभूईपव्वयए धणदत्तसमुद्ददत्तइसिवाले । पियमित्तललि यमित्ते पुणव्वसूगंगदत्तेय ॥ ५२ ॥ एयाइंनामाइं पुव्वभवेआसिवासुदेवाणं । एत्तोबलदेवाणं जहक्कमंकित्तइ स्सामि ॥ ५३ ॥ विसनंदीयसुबंधू सागरदत्तेअसोगललिएय वाराहधम्मसेणे अपराइयरायललिएय ॥ ५४ ॥ एएसिंनवण्हं बलदेववासुदेवाणं पुव्वभवियानवधम्मायरियाहोत्था तंजहा । संभूएयसुभद्दे सुदंसणेसेयकण्ह गंगदत्तेअ । सागरसमुद्दनामे दुमसेणेणवमिएहोइ ॥ ५५ ॥ धम्मायरियाकित्ती पुरिसाणंवासुदेवाणं । पुव्वभवेएआसिं जत्थनियाणाइं कासीए ॥ ५६ ॥ एएसिणंनवण्हं वासुदेवाणं पुव्वभवे नवनियाणभूमीओहो ॥ मूल ॥

वा॥ एह बलदेव वासुदेवना पूर्व भवना ९ नामधेय कहे छे । विश्वभूति १ प्रव्रतक २ धनदत्त ३ समुद्रदत्त ४ ऋषिपाल ५ प्रियमित्र ६ ललितमित्र ७ पुन र्वसु ८ गंगदत्त ९ । एह पूर्वभवने विषे वासुदेवना नाम थया । हिवे बलदेवना नाम कहे छे । विश्वनन्दी १ । सुबंधु २ । सागरदत्त ३ अशोक ४ ललित ५ वाराह ६ धर्मसेन ७ अपराजित ८ राजललित ९ । एह ९ बलदेवना वासुदेवना पूर्व भवनेविषे धर्माचार्य हुआ ते कहे छे । संभूति १ सुभद्र २ सुदर्शन ३ श्रेयां स ४ कृष्ण ५ गङ्गदत्त ६ सागर ७ समुद्र ८ द्रुमसेन ९ धर्माचार्य थया कीर्त्तिपुरुष ९ बलदेववासुदेवना । जिहां नियाणाकीधा तेणे समये ९ पूर्वभवने विषे नियाणा भूमि थई ते कहे छे । मथुरा १ यावत् शब्दे कनकवस्तु २ सावत्थी ३ पोतनपुर ४ राजगृह ५ काकंदी ६ कोसंबी ७ मिथिला ८ हस्थणापुर ९ ॥ भाषा ।

॥ टीका ॥

चक्रजोही सव्वेविजयासचक्केहिंति अविवाणकडारामा सव्वेंवियकेसवानियाणकडा उद्ढंगामीरामा केसवसव्वेअहोगामीत्ति आगमिस्सेणंति आगमिष्यता
कालेन आगमेस्साणंति पाठांतरे आगमिष्यता भविष्यता मध्ये सेत्स्यंतीति जंबूद्वीपैरवते अस्या मवसर्प्पिण्यां चतुर्विंशति स्तीर्थंकरा अभूवन् तांश्च स्तुतिद्वा

॥ मूल ॥

स्या तंजहा । मक्कुराजायहत्थिणाउरंच एतेसिणंनवरहं वासुदेवाणं नवनियाणकारणाहोत्था तंजहा । गावी
जुवे जाव माउद्धा । एएसिं नवरहंवासुदेवाणं नवपडिसत्तूहोत्था तंजहा । आसग्गीवेजावजरासंधे । जा
यसचक्केहिं । एक्कोयसत्तमीए पंचयछठीए पंचमीएक्को । एक्कोयचउत्थीए कराहोपुणतच्चपुढवीए ॥ ५७ ॥
अणिदाणकडारामा सव्वेवियकेसवानियाणकडा । उद्धंगामीरामा केसवसव्वेअहोगामी ॥ ५८ ॥ अठंतकडा
रामा एगोपुणबंभलोयकप्पम्मि । एक्कोसेगब्भवसही सिज्झिस्सइ आगमिस्सेणं ॥ ५९ ॥ जंबूद्दीवे० एरवए

॥ भाषा ॥

लगे जाणवो । एह वासुदेवना ९ नियाणाना कारण थया ते कहे छे । गाइ १ यावत्शब्दे यूपस्तंभ २ संग्राम ३ स्त्रीपराभव ४ रंग ५ स्त्रीनोराग ६ गोष्टी ७
परऋद्धी ८ मातापराभव ९ । एह वासुदेवना ९ प्रतिशत्रु प्रतिवासुदेव थया ते कहे छे । अश्वग्रीव १ यावत् शब्देंतारक २ मेरक ३ मधुकैटभ ४ निशुंभ ५ बलि
६ प्रल्हाद ७ रावण ८ जरासंध ९ जाणवा ॥ एहप्रतिशत्रु कीर्त्तिपुरुष वासुदेवथी चक्रेकरी युद्धकरे पोतानाचक्रथी मरे । पहिलो वासुदेव सातमीये गयो पांच
वासुदेव छठीये गया एक वासुदेव पांचमीये गयो १ चउथीये गयो कृष्ण ३ जीये गयो । बलदेव नियाणा न करे सघला वासुदेव नियाणाना करणहार छे उंच
गति जाणहार राम नीचगति जाणहार वासुदेव । आठ राम बलदेव थकी माडी पहिला अंतकृत थया मुक्ति गया । १ बलभद्र ५मे ब्रह्म देवलोके गयो ।

रेणाह तद्यथा वंद्राणणंगाहा चंद्राणणंसुचंदं अग्गिसेणंचनंदिषेणञ्च क्वचिदाग्निसेनोप्ययं दृश्यते ऋषिदिन्नं व्रतधारिणञ्च वंदामहे श्यामचन्द्रञ्च वंदामिगाहा वंदेयुक्तिषेनं क्वचिदयंदीर्घबाहु दीर्घसेनोवोच्यते अजितसेनं क्वचिदयंशतायु रुच्यते तथैव शिवसेनं क्वचिदयं सत्यसेनोभिधीयते सत्यकिश्चेति वुद्धवावगततत्त्वञ्च देवशर्म्माणं देवसेनापरनामकं सततंसदावंदे इति प्रक्कतं निक्षिप्तशस्त्रंच नामांतरत: श्रेयांसं असंजलं गाहा असंज्वलं जिनवृषभं पाठांतरेण स्वयंजलं वंदेअनंत जिन ममितज्ञानिनं सर्वज्ञमित्यर्थ: नामांतरेणायं सिंहसेनइति उपशांतंच उपशान्तसंज्ञं धूतरजसं वन्दे खलु गुप्तिसेनंच अइपासंगाहा अतिपार्श्वंच सुपार्श्वं ॥ टीका ॥

वासे इमीसेउसप्पिणीए चउव्वीसंतित्थगराहोत्था तंजहा । चंदाणणंसुचंदं अग्गीसेणंचनंदिसेणंच । इसिदि ण्णवयहारिं वंदामोसोमचंदंच ॥ ६० ॥ वंदामिजुत्तिसेणं अजियसेणंतहेवसिवसेणं । वुद्धंचदेवसम्मंसिद्धं निखित्तसत्थंच ॥ ६१ ॥ असंजलंजिणवसहं वंदेयअणंतयंअमियणाणिं । उवसंतंचधुवरयं वंदेखलुगुत्तिसे ॥ मूल ॥

१भव वासना अंतरथी मोच जास्ये जंबूद्दीपने विषे ऐरवते एणी अवसर्पिणीये २४ तीर्थंकर हुआ ते कहे छे चंद्रानन १ । सुचन्द्र २ । अग्निसेन ३ । नंदिसेन ४ ऋषिदिन ५ । व्रतधारी ६ । एहोने वादुछुं । सोमचंद्र ७ ॥ ६० ॥ युक्तिसेन ८ । बीजो नाम दीर्घ बाहु दीर्घसेन अजितसेन ९ बीजो नाम शतायु । शिवसेन १० बीजो नाम सत्यसेन । तपना जाण देवशर्म बीजो नाम देवसेन ११ । सीधाछे सकलकार्यजेहना एहवो निक्षिप्त शस्त्र बीजो नाम श्रेयांश १२ ॥ ६१ ॥ असंज्वल १३ जिन वृषभ बीजो नाम स्वयंजल १४ वांदो अनंतक १४ अमित ज्ञानी नामांतरे सिंहसेन उपशांत १५ । कर्मरज रहित वांदो गुप्तिसेन १६ । ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

देवेश्वरवंदितंच मरुदेवं निर्वाणगतं च धरं धरसंज्ञं क्षीणदुःखंश्यामकोष्ठं जियगाहा जितरागमग्निसेनं महासेनमपरनामकं वंदे क्षीणरजस मग्निपु त्रंच व्यवकृष्टप्रेमद्वेषं च वारिषेणं गतं सिद्धमिति स्थानान्तरे किञ्चिदन्यथा प्यानुपूर्वीनाम्ना मुपलभ्यते महापद्मादयो विजयान्ता चतुर्विंशतिः एवमिदं सर्वं

॥ मूल ॥

णंच ॥ ६२ ॥ अतिपासंचसुपासं देवेसरवंदियंचमरुदेवं । निव्वाणगयंचधरं खीणदुहंसामकोठंच ॥ ६३ ॥ जियरागमग्गिसेणं वंदेखीणरयमग्गिउत्तंच वोक्कसियपिज्जदोसं वारिसेणंगयंसिद्धं ॥ ६४ ॥ जंबूद्दीवे० आगमिस्साएउस्सप्पिणीए भारहेवासे सत्तकुलगराभविस्संति तंजहा । मियवाहणेसुभूमेय सुप्पभेयसयंपभे दत्तेसुहुमेसुबंधूय आगमिस्साणहोक्खंति ॥ ६५ ॥ जंबूद्दीवेणंदीवे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए एरवए वासे दसकुलगराभविस्संति तंजहा । विमलवाहणे सीमंकरे सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे दसधणू दढधणू सयधणू

॥ भाषा ॥

॥ ६२ ॥ अतिपार्श्व १७ । सुपार्श्व १८ देवेश्वरेवंदित मरुदेव १९ निर्वाण प्राप्त एहवा धर २० । दुःखरहित एहवा श्यामकोष्ट २१ ॥ ६३ ॥ राग द्वेष रहित अग्निसेन २२ बीजो नाम महासेन क्षय गईछे पापरज जेहनो एहवो अग्निपुत्र २३ । दूर कियाछे राग द्वेष जेणे एहवो वारिसेण २४ ॥ ६४ ॥ जंबूद्वीपना भरतने विषे आगामी उत्सर्पिणीये ७ कुलकर थास्ये ते कहे छे । मितवाहन १ । सुभूम २ । सुप्रभ ३ । स्वयंप्रभ ४ । दत्त ५ सूक्ष्म ६ । सुबंधु ७ । आवती चो वीसीये ७ एह कुलकर थासे ॥ ६५ ॥ जंबूद्वीपना ऐरवतने विषे आगामी काले १० कुलकर थासे ते कहे छे । विमलवाहन १ । सीमंकर २ । सीमंधर ३ ।

॥ मूल ॥

पडिसुई सुमुइइंति जंबूद्दीवेणंदीवे भारहेवासे आगामिस्साए उस्सप्पिणीए चउवीसं तित्थगराभविस्संति तंजहा । महापउमेसूरदेवे सुपासेयसयंपभे । सव्वाणुभूईअरहा देवस्सुएयहोरकई ॥ १ ॥ उदएपेढालपुत्ते य पोट्टिलेसतकित्तिय । मुणिसुव्वएयअरहा सव्वभावविऊजिणो ॥ २ ॥ अममेणिक्कसाएय निप्पुलाएयनि म्ममे । चित्तउत्तेसमाहीय आगामिस्सेणहोरकई ॥ ३ ॥ संवरेअणियट्टीय विवाएविमलेतहा । देवोववाएअ रहा अणंतविजएइय ॥ ४ ॥ एएवुत्ताचउव्वीसं भरहेवासम्मिकेवली आगामिस्सेणहोरकंति धम्मतित्थस्सदेस गा ॥ ५ ॥ एएसिणंचउव्वीसाएतित्थकराणं पुव्वभवियाचउव्वीसंनामधेज्जा भविस्संति तंजहा । सेणियसुपा

॥ भाषा ॥

क्षेमंकर ४ । क्षेमधर ५ । दृढधनु ६ । दशधनु ७ । शतधनु ८ । प्रतिश्रुति ९ । सुमुंचि १० । जंबूद्वीपना भरतनेविषे आगामिकाले २४ तीर्थंकर थासे ते कहेछे । महापद्म १ । सूरदेव २ । सुपार्श्व ३ । स्वयंप्रभ ४ । सर्वानुभूति ५ । देवश्रुत ६ । उदय ७ । पेढाल पुत्र ८ । पोट्टिल ९ । शतकीर्त्ति १० । मुनिसुव्रत ११ । सत्यभाववित् अमम १२ । निष्कसाय १३ । निष्पुलाक १४ । निर्म्मम १५ । चित्रगुप्ति १६ । समाधि १७ । संवर १८ । यशोधर १९ । अनर्द्धिक २० । विजय २१ । विमलबीजोनाममल्ली २२ । देवोपपात २३ । अनंतविजय २४ बीजोनाम अनंतवीर्य ॥ एह कह्या २४ तीर्थंकर भरतक्षेत्रनेविषे आवतीउत्सर्पिणीयेहोस्थे धर्मतीर्थना प्रवर्त्तक धर्मतीर्थना उपदेशक ॥ ॥ एह २४ तीर्थंकरना २४ पूर्वभवना नाम थास्ये तेकहेछे । श्रेणिकराजा १ । सुपास २ । उदय । ३ । पो

॥ मूल ॥

सउदए पोट्टिलअ्रणगारतहदढाऊय । कत्तियसंखेयतहा नंदसुनंदेयसतएय ॥ १ ॥ बोधव्वादेवईय सच्चइत हवासुदेवबलदेवे । रोहिणिसुलसाचेव तत्तोखलुरेवईचेव ॥ २ ॥ तत्तोहवइसयाली बोधव्वेखलुतहाभयाली य । दीवायणेयकराहे तत्तोखलुनारएचेव ॥ ३ ॥ अंबडदारुमडेय साईबुद्धेयहोइवोधव्वे । भावीतित्थगराणं णामाइंपुव्वभवियाइं ॥ ४ ॥ एएसिणंचउव्वीसाए तित्थगराणंपियरोमायरोभविस्संति । चउव्वीसंपढमसीसा भविस्संति । चउव्वीसंपढमसिस्सणीभविस्संति । चउव्वीसंपढमभिक्खादायगाभविस्संति । चउव्वीसंचे इयरुक्खाभविस्संति । जंबूद्दीवेणंदीवे भारहेवासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए बारसचक्कवट्टिणोभविस्संति

॥ भाषा ॥

ट्टिल अणगार ४ । दृढायु ५ । कार्त्तिकसेठ ६ । शंखश्रावक ७ । आनन्द ८ । सुनन्द ९ । शतक १० । देवकी ११ । सत्यकी १२ । कृष्णवासुदेव १३ । बलभद्र १४ । रोहिणी । १५ । सुलसाश्राविका १६ वली रेवतीश्राविका १७ ॥ ॥ सयाल १८ । भयाल १९ । द्वीपायन कृष्णनाम २० । नारद २१ ॥ ॥ अंबड २२ । दारुमृत बीजोनाम अमरजीव२३ स्वातिबुद्ध २४ । एह आगामिउत्सर्प्पिणीये भावी तीर्थंकरपूर्वभवनाम जाणिवा ॥ एह २४ तीर्थंकरना २४ पिता होस्ये । २४ माता होस्ये । २४ प्रथम शिष्य थास्ये । २४ प्रथम साध्वी थास्यें । २४ प्रथम भिक्षादायक थास्यें । २४ चैत्यवृक्षथास्यें । जंबूद्वीपना भरत मे विषे आगामिउ त्सर्प्पिणीये १२ चक्रवर्त्ती थास्यें तेकहेछे । भरत १ । दीर्घदंत २ । गूढदंत ३ । शुद्धदंत ४ । श्रीपुत्र ५ । श्रीभूति ६ । श्रीसोम ७ । पद्म ८ । महापद्म ९ । विम

॥ मूल ॥

तंजहा ।· ञरहेयदीहदंते गूढदंतेयसुद्धदंतेय । सिरिउत्तेसिरिभूई सिरिसोमेयसत्तमेपउमे ॥ १ ॥ महापउमेय
विमल वाहणेविपुलवाहणेचेव रिठ्ठेएसवारसमेतह ञ्चागामिञरहाहिवाउत्ता ॥ २ ॥ एएसिणंबारसएहंचक्कव
ट्टीणं वारसपियरोञविस्संति वारसमायरोञविस्संति । वारसइत्थीरयणाञविस्संति । जंबूद्दीवेणंदीवे ञारहे
वासे ञ्चागमिस्साए उस्सप्पिणीए नववलदेव बासुदेवपियरो ञविस्संति नवबासुदेवमायरो नवबलदेव
मायरो ञविस्संति । नवदसारमंडलाञविस्संति तंजहा । उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाणपुरिसा तेयंसी
एवंसोचेवबसाउ ञाणियव्वा जावनीलगपीतगवसणा । दुवेदुवे रामकेसवाञायरो ञविस्संति तंजहा । नंदेय

॥ भाषा ।

ल वाहन १० । विपुलवाहन ११ । रिष्ट १२ । आवती २४ वोसोये भरतक्षेत्रना अधिपति थास्ये । एह १२ चक्रवर्त्तना १२ पिता अने १२ माता थास्ये ।
१२ स्त्रीरत्न होसे । । आवती उत्सर्प्पिणीये जंबूद्वीपनां भरतक्षेत्रविषे ९ बलदेव ९ वासुदेवनांपिताहोसे । ९ बलदेवनी माता होसे । ९ वासुदेवनी माताहोसे
९ । दशारमंडल होसे । जिम पूठे उत्तम पुरुष मध्यम पुरुष प्रधान पुरुष वर्णव्याछे तेहिज भणिवो जिहांलगे नीला पीला वस्त्रना पहिरणहार ए
ह भावे । दोदो रामते बलदेव केशवते वासुदेव एविहुं भाईहोवे पिता १ माता जुई जुई होय तेकहेछे । नंद १ । नंदमित्र २ । दीर्घबाहु ३ । म
हाबाहु ४ । अतिबल ५ । महाबल ६ । बलभद्र ७ । द्विपृष्ट ८ । त्रिपृष्ट ९ । आवती २४ सीये वासुदेवना नाम जाणिवा हिवे बलदेवनाम कहेछे । ज

नंदमित्ते दीहबाहूमहाबाहू । अइबलेमहाबले बलभद्देयसत्तमे ॥ १ ॥ तिविठूयदुविठूय आगमिस्सेणव
रिहणो । जयंतेविजएभद्दे सुप्पभेयसुदंसणे आणंदे नंदणेपउमे संकरिसणअपच्छिमे ॥ १ ॥ एएसिणंनवराहं
बलदेववासुदेवाणं पुव्वभवियाणवनामधेज्जाभविस्संति । नवधम्मायरियाभविस्संति । नवनियाणभूमीउ
नवनियाणकारणाभविस्संति । नवपडिसत्तूभविस्संति तंजहा । तिलएयलोहजंघे वइरजंघेयकेसरी पल्हा
एअपराजिए भीमसेणेमहाभीमे सुग्गीवेयअपच्छिमे ॥ ॥ एएखलुपडिसत्तू कित्तीपुरिसाणवासुदेवाणं ।
सव्वेविचक्कजोही हम्मिहंतासचक्केहिं ॥ १ ॥ जंबूद्दीवेएरवएवासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए चउव्वीसं ति
त्थकराभविस्संति तंजहा । सुमंगलेअसिद्धत्थे णिव्वाणेयमहाजसे धम्मज्झएयअरहा आगमिस्सेणहोरकई १

य १ । विजय २ । भद्र ३ । सुप्रभ ४ । सुदर्शन ५ । आनन्द ६ । नंदन ७ । पद्म ८ । संकर्षण ९ । एह ९ बलदेव ९ वासुदेवना पूर्व भवनाम होस्ये । नवध
र्माचार्य धर्मगुरू थास्ये । नवनियाणा भूमिहोस्ये । नवनियाणाना कारण होस्ये । ९ प्रतिशत्रु प्रतिवासुदेव होस्ये । तेकहेछे । तिलक १ । लोहजंघ २ ।
वज्रजंघ ३ । केसरी ४ । प्रल्हाद ५ । अपराजित ६ । भीम ७ । महाभीम ८ । सुग्रीव ९ । एह प्रतिशत्रुकीर्ति पुरुष वासुदेव ना सघलाई प्रतिवासुदेव चक्रे
करी युद्धकरे आपणा चक्रथी मरणपावे । जंबूद्वीपना ऐरवत क्षेत्रे आवती उत्सर्पिणीये २४ तीर्थंकरहोस्ये तेकहेछे । सुमंगल १ । अर्थसिद्ध २ । निर्व्वाण ३.

॥ मूल ॥

सिरिचंदेपुप्फकेऊ महाचंदेयकेवली । सुयसागरेयअरहा आगमिस्सेणहोरकई ॥ २ ॥ सिद्धत्थेपुस्सघोसेय
महाघोसेयकेवली । सच्चसेणेयअरहा आगमिस्सेणहोरकई ॥ ३ ॥ सूरसेणेयअरहा महासेणेयकेवली । सव्वा
णंदेयअरहा देवउत्तेयहोरकई ॥ ४ ॥ सुपासेसुव्वएअरिहा अरहेयसुकोसले । अरहाअणंतविजए आगमि
स्सेणहोरकइ ॥ ५ ॥ विमलेउत्तरेअरहा अरहायमहाबले । देवाणंदेयअरहा आगमिस्सेणहोरकई ॥ ६ ॥
एएवुत्ताचउव्वीसं एरवयम्मिकेवली । आगमिस्सेणहोरकंति धम्मातित्थस्सदेसगा ॥ ७ ॥ वारसचक्कवट्टिणो
भविस्संति वारसचक्कवट्टिपियरोभविस्संति । वारसइत्थीरयणा भविस्संति नवबलदेववासुदेवपियरोभवि
स्संति णववासुदेवमायरो णवबलदेवमायरोभविस्संति । णवदसारमंडलाभविस्संति । उत्तमपुरिसा मज्झि

॥ भाषा ॥

महायश ४ । धर्मध्वज ५ । श्रीचन्द्र ६ । पुष्पकेतु ७ । महाचन्द्र ८ । श्रुतसागर ९ । सिद्धार्थ १० । पूर्णघोस ११ । महाघोष १२ । सत्यसेन १३ । सूरसेन १४
सिद्धसेन वीजोनाम । महासेन १५ । सर्वानंद १६ । सुपार्श्व १७ । सुव्रत १८ । सुकोमल १९ अनंतविजय २० विमल २१ । उत्तर २२ । महाबल २३ । देवा
नंद २४ होस्ये । ऐरवतक्षेत्रे २४ तीर्थंकर धर्मना उपदेशक । १२ चक्रवर्त्तना पिताहोस्ये । ९ वासुदेवनी माता ९ बलदेवनीमाता होस्ये । ९ दशारमंडल होस्ये

॥ टीका ॥

सुगमं ग्रंथसमाप्तिं यावत् नवरं आयाएत्ति बलदेवादेरायातं देवलोकादेश्च्युतस्य मनुष्येषूत्पादः सिद्धिश्च यथा रामस्येति एवं दोसुवित्ति भरतैरावतयो रागमिष्यतो वासुदेवादयो भणितव्याः इत्येव मनेकधार्थानुपदर्श्या धिकृतग्रंथस्य यथार्थान्यभिधानानि दर्शयितुमाह इत्येतदधिकृतशास्त्रमेव मनेनाभिधानप्रकारेणाऽऽख्यायते अभिधीयते तद्यथा कुलकरवंशस्य तत्प्रवाहस्य प्रतिपादकत्वात् कुलकरवंश इतिच इतिरुपदर्शने च शब्दः समुच्चये एवंतित्थगरवंसे इयत्ति यथा देशेन कुलकरवंशप्रतिपादकत्वात् कुलकरवंश इत्येतदाख्यायते एवं देशत स्तीर्थकरवंशप्रतिपादकत्वा त्तीर्थकरवंश इति आख्यायते एतदिति एवं चक्रवर्त्तिवंशइति च दशारवंशइति च गणधरवंश इति च गणधरव्यतिरिक्ताः शेषाजिनशिष्या ऋषय स्तद्वंशप्रतिपादकत्वा दृषिवंशइतिच तत्प्रतिपादनंचात्र पर्युषणाकल्पस्य

॥ २४३ ॥

॥ मूल ॥

मपुरिसा पहाणपुरिसा जावदुवेदुवेरामकेसवा आयरोअविस्संति णवपडिसत्तूअविस्संति। णवपुव्वअवणा मधेज्जा णवधम्मायरिया णवणियाणभूमीत णवणियाणकारणा आयाएएरवए आगमिस्साए भाणियव्वा। एवंदोसुवि आगमिस्साए भाणियव्वा इच्चेयएवमाहिज्जंति तंजहा। कुलगरवंसेइय एवंतित्थगरवंसेइय।

॥ भाषा ॥

उत्तमपुरुष मध्यमपुरुष प्रधानपुरुष यावत् शब्दे बलदेव वासुदेव भाई होस्ये। नव प्रतिशत्रुनाम। पूर्वभवनाम। धर्माचार्य। नियाणा भूमि नियाणानो कारण। बलदेवराजा आगामिकाले देवलोकादिक थकी चवी जिम मनुष्यभवे उपजस्ये सिद्धथासे ऐरवतक्षेत्रे तेसर्व भणिवो। एम भरत ऐरवत क्षेत्रे आगामिकाले बलदेववासुदेव होस्ये तेसर्व भणिवो। अनेकप्रकारे एम अंगीकृतशास्त्र एणे प्रकारे कहिये तेकहेछे। कुलकरवंश एम तीर्थंकरवंश चक्रवर्त्तिवंश.

॥ टीका ॥

समस्तस्य ऋषिवंशपर्यवसानस्य समवसरणप्रतिक्रमेण भणितत्वा दतएव यतिवंशो मुनिवंश श्चैतदुच्यते यतिमुनिशब्दयोः ऋषिपर्यायत्वात् तथा श्रुतमिति चैतदाख्यायते परोक्षतया त्रैकालिकार्थविबोधनसहत्वादस्य तथाश्रुतांगमितिवा श्रुतस्य प्रवचनस्य पुरुषरूपस्याङ्ग मवयवइतिकृत्वा तथा श्रुतसमासइति समस्तसूत्रार्थाना मिह संक्षेपेणाभिधानात् श्रुतस्कंधइति वा श्रुतसमुदायरूपत्वादस्य समाएवत्ति समवायइति चासमस्तानां जीवादिपदार्थाना मभिधेय तयेहसमवायनात् मीलनादित्यर्थः तथा एकादिसंख्याप्रधानतया पदार्थप्रतिपादपरत्वादस्य संख्येति व्याख्यायते तथा समस्त म्परिपूर्ण त्वदेतदङ्ग माख्यात भगवता नेह श्रुतस्कन्धद्वयादिखण्डनेना चारादिव दङ्गतेतिभावः तथा अज्झयणंतित्ति समस्त मेतदध्ययन मित्याख्यातं नेहोद्देशकादि खण्डनास्ति मस्त्वप

॥ मूल ॥

सुत्तंगेइवा चक्कवट्टिवंसेइय दसारवंसेइय गणधरवंसेइय इसिवंसेइय जइवंसेइय मुणिवंसेइय सुएइवा

॥ भाषा ॥

एमदशारवंश तेवासुदेव बलदेव वंश गणधरवंश एम ऋषिवंश यतिवंश मुनिवंश एह सर्वनां वंश एह समवायांगने विषे कह्याछे तेमाटेएहना नामकहि वा। यद्यपि यतिवंशमुनिवंश एह बेहुं ऋषिवाचीछे तथापि आचारने विषे यत्नकरे तेयती अर्थ जाणे तेमुनी तेहना ज्ञान एहमांकह्याछे तेमाटे श्रुतकहिये। परोक्षपणे त्रिकालनो अर्थावबोध। श्रुत पुरुष अंगनो अवयव सरीखो अवयव तेमाटेश्रुतांग। समस्त सूत्रमांहि संक्षेपे कहिवाथी श्रुत समास कहिये। श्रुतना अंशनो समुदायरूप तेमाटे श्रुतस्कंध कहिये। समस्त जीवादि पदार्थ एह मांहि अवतरया तेथी समवाय कहिये। एकादिक कोटाकोटि लगे

॥ टीका ॥

रिभ्रादिष्विवे तिभावः इतिशब्दः समाप्तौ बेमित्ति किलसुधर्म्मस्वामी जंबूस्वामिनंप्रत्याहस्मव्रवीमि प्रतिपादयाम्येतत् श्रीमन्महावीरवर्द्धमानस्वामिनः समी पे यदवधारित मित्यनेन गुरुपारम्पर्य मर्थस्य प्रतिपादित भवति एवञ्च शिष्यस्य ग्रन्थे गौरवबुद्धि रुपजनिता भवति आत्मनश्च गुरुषु बहुमानोदर्शि त श्रौद्धत्यञ्च परिहृतं अयमेवार्थः शिष्यस्य सम्पादितोभवति मुमुक्षूणा न्याय मार्ग्ग इत्यावेदितमिति समवायाख्य श्चतुर्थमङ्ग म्वृत्तितः समाप्तम् ॥ * ॥

॥ मूल ॥

सुयसमासेइवा सुयखंधेइवा समएइवा संखेइवा ॥ सम्मत्तमंगमक्कायंअज्झयणत्तित्तिबेमि ॥ ॥

॥ इति समवायं चउत्थमंगं सम्मत्तम् ॥

॥ भाषा ॥

संख्या एहमा कही तेथी संख्यकग्रंथ कहिये। परिपूर्ण एह चौथो अंग भगवंते कह्यो। एह अध्ययन समस्त कह्यो इति शब्द समाप्ति वाचक अर्थे किल सुधर्मास्वामी जंबूस्वामीप्रतें कहिता हुआ ॥ ॥ जिम भगवान महावीर स्वामि समीपे सांभल्यो तिम तुमारे आगलि कह्यो एणे करी गुरुपारंपर्यपणो गुरुने विषे बहुमानपणो देखाड्यो ॥ इति समवायांग सूत्रटव्वार्थ संपूर्णथयो ॥ * ॥ * ॥ * ॥ श्रीपार्श्वचंद्रसूरि संतानीयेन मुनिश्रवणस्य शिष्येण गणि मेघराजेन कृतोयं। टव्वार्थ श्लोक सख्या ५६५७ अस्यैव टीकां विलोक्य प्रज्ञानुसारेण लिखितोयं यद प्रानभावा द्यदहं लिखितं तन्मे मिथ्यादुष्कृतं विशोधनीयं च धोधनै रिति ॥ सूत्रटव्वार्थसंख्या ७१३५ ॥ * ॥ * ॥

नमः श्रीवीरायप्रवरवरपार्श्वायचनमो । नमःश्रीवाग्देव्यैवरकविसभायाश्रपिनमः ॥ नमःश्रीसङ्घायस्फुटगुणगुरुभ्योपिचनमो । नमःसर्वस्मैचप्रकृतविधि-साहाय्यककृते ॥ १ ॥ यस्यग्रन्थवरस्यवाक्यजलधेर्लक्षंसहस्राणिच । चत्वारिंशदहोचतुर्भिरधिकामानम्पदानामभूत् ॥ तस्योच्चैश्चुलुकाकृतिन्निदधतःकालादिदोषात्तथा । दुर्लेखात्खिलतांगतस्यकुधियःकुर्वन्तुकिम्मादृशाः ॥ २ ॥ स्वङ्कष्टेतिनिधायकष्टमधिकम्मामेन्यदाजायतां । व्याख्यानेस्यतथाविवेक्तुमनसामल्पश्रुतानाममुं ॥ इत्यालोचयतातयापिकिमपिप्रोक्तंमयातत्रच । दुर्व्याख्यानविशोधनंविदधतुप्राज्ञाःपरार्थोद्यताः ॥ ३ ॥ इहवचसिविरोधोनास्तिसर्वज्ञवाक्यात् । क्वचनतदवभासोयःसमांद्यात्स्वबुद्धेः ॥ वरगुरुविरहाद्वातीतकालेमुनीशै । र्गणधरवचनानांश्रस्तसङ्घातनाद्वा ॥ ४ ॥ व्याख्यानंयदपीदम्प्रवरकविवचःपारतन्त्र्येणदृष्टं । सम्भाव्येस्मिंस्तथापिक्वचिदपिमनसामोहतोर्थादिभेदः ॥ किन्तुश्रीसङ्घबुद्धेरनुसरणविधेर्भावशुद्धेश्चदोषो । मामेभूदल्पकोपिप्रशमपरमनास्ताश्चदेवोस्तुतस्य ॥ ५ ॥ निःसम्बन्धविहारिहारिचरिताश्रीवर्द्धमानाभिधान् । सूरीन्ध्यातवतोतितीव्रतपसोग्रन्थप्रणीतिप्रभोः ॥ श्रीमत्सूरिजिनेश्वरस्यजयिनोदप्पीयसांवाग्मिनां । तद्बन्धोरपिबुद्धिसागरइतिख्यातस्यसूरेर्भुवि ॥ ६ ॥ शिष्येणाभयदेवाख्य । सूरिणाविवृतिःकृता ॥ श्रीमतःसमवायाख्य तुर्याङ्गस्यसमासतः ॥ ७ ॥ एकादशसुशतेष्वथ । विंशत्यधिकेषुविक्रमसमानां ॥ अणहिलपाटकनगरे । रचितासमवायटीकेयम् ॥ ८ ॥ प्रत्यक्षरंनिरूप्यास्याः । ग्रन्थमानम्विनिश्चितं ॥ त्रीणिश्लोकसहस्राणि । पादन्यूनाचषट्शती ॥ ९ ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥ * ॥ * श्रीरस्तु

सकल भव्यजनोंको सविनय निवेदन करतेहैं कि लुंपकगणोपासक मुर्शिदावाद अजीमगंज निवासी श्रीयुत रायधनपतिसिंह बहादुरने परोपकारार्थ छपवायके जैनागम का संग्रह किया सोऐसा कि ५०० पुस्तक ५०० जगह भंडारकरके स्थापित किये जिस्में साधु श्रावक प्रभृति पठन पाठनादिकरके स्वधर्ममें दृढभक्तियुक्त होय और धर्मवृद्धि ज्ञानवृद्धि होय उस आगम संग्रहका यह समवायांग चतुर्थभागहै इस ग्रंथको हमने बहुत प्रयाससे शोधनकरके छापाहै तथापि कोई जगह मतिमान् लोगोंको यदि अशुद्ध नजर आवे तो वहलोग शुद्धकरलें अशुद्ध रहजानेमें कारण यहहै कि अनेक हाथसे काम होताहै और हमलोगभी प्रमादीहै और प्रायः लेखकदोषसे पुस्तकोंमें नये २ पाठ नजर आतेहैं इस पुस्तकोंमें इस पाठ हैं इसलिये बहुसंमत टीकासंमत और श्रीमदुपाध्याय रामचन्द्रजीगणीके विदित पारंपर्यानुसार पाठ रखके मुद्रितकिया इसमें भूलचूक होय तो आपलोगों को साक्षीसे मिथ्या दुष्कृत है ॥

मुद्रासहस्त्रकिरणै ग्रंन्थानुपलब्धितिमिरसंहारी ।

पुस्तककमलविकासी द्युनिग्रंजैनप्रज्ञाकरोजयतु ॥ १ ॥

———ooo———

॥ इति टीकावार्त्तिकसंवलितं श्रीसमवायाख्यं चतुर्थाङ्गं समाप्तिमगमत् ॥

श्रीयुत रायधनपतिसिंह बहादुर की तरफसे छापागया

बनारस जैनप्रभाकर प्रेस

नानकचंदजती

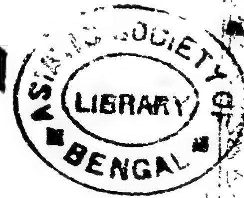
गणधर सुधर्म स्वामि सङ्कलित सूत्र, [तदुपरि श्रीमदभयदेव सूरि कृता संस्कृत टीका और मेघराजगणि कृत भाषा टीका युत

पहिली दफे १००० पुस्तकें
फी पुस्तक दाम १५)

श्रीयुत राय धनपतिसिंह बहादुर के आगमसङ्ग्रह का भाग चउथा ४

अथवा

॥ समवायांग सूत्र चतुर्थाङ्ग ॥



बृहन्नागोरी लोंकागच्छीय वाचनाचार्य श्रीरामचन्द्रगणि शिष्य

ऋषि नानकचन्द से संशोधित होके मुद्रित हुवा

५०० जैनबुक सुसाइटी से
५०० राय धनपतिसिंह बहा०